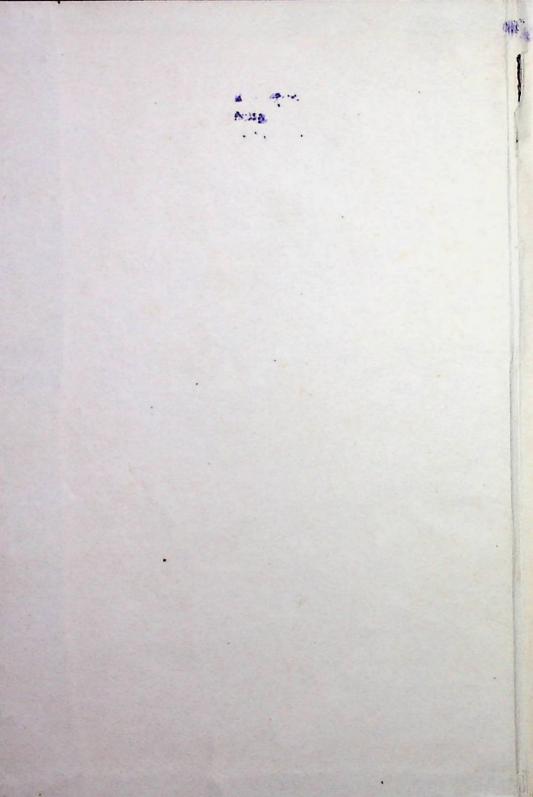
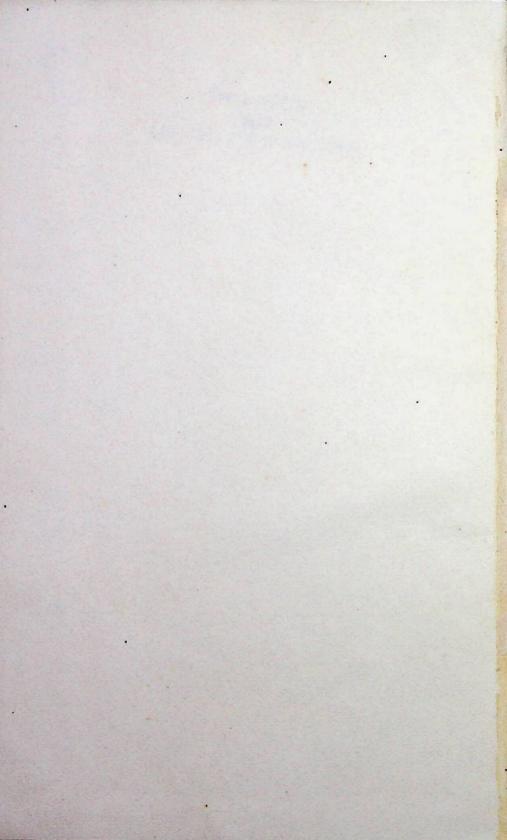
पालि-हिन्दी कोश

हाँ, भएना धादान्य कोसल्यायन

प्रथम संस्करण : 1975



अन्द्रितीय अवस्थी ५६ अध्यक्ष भारायगेरगर वेद वेदान तीनित (च्या)



पालि-हिन्दी कोश

डॉ॰ भदन्त आनन्द कौसल्यायन



ISBN: 978-81-908753-6-3



सिद्धार्थ बुक्स

'चन्दन सदन', सी-263 ए, गली नं.-9, हरदेवपुरी, शाहदरा, दिल्ली-110093 फोन-22810380, 9810173667

संस्करण : 2009

मूल्य : 200.00

मुख पृष्ठ : अनिल कुमार, दिल्ली

बालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित

मेरा पालि-हिन्दी कोश १९७५ मे प्रकाशित हुआ था। वैसे तो पालि अध्येताओं की मांग कई दिनोंसे वारवार आ रही थी। परंतु यह कष्ट साध्य मुद्रण कार्य के लिये अभितक कोई मेरे पास नहीं आया।

इस काम के लिए सुगत बुक डीपो, के व्यवस्थापक श्री. तुलसी पगारे स्वयम् इस कोश का द्वितीय संस्करण निकालना चाहते हैं। यह मेरे लिये विशेष सन्तोषका विषय है। भारत में बोद्ध धमं की किताबें छ।पना तथा प्रकाशित करना इन कामों मे सुगत बुक डीपो सदा अग्रेसर रहा है। इसलिये यह जिम्मेदारी वे पूरी तरह से निभा सकोंगे ऐसा विश्वास है।

में उन्हें इस पालि-हिन्दी कोश के प्रकाशन की सानंद अनुमती देता हूँ। वैसेही वे मेरे सभी प्रकाशित अप्रकाशित तथा अनुपलन्ध किताबों का समय समय पर प्रकाशन करते रहेंगे ऐसी मैं बाशा रखता हूँ।

The state of the s

THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE OWNER.

बुद्ध भूमी, नागपुर ५ नवम्बर १९८७

- आनन्द कोसल्यायन

the first with the contract of the contract of

t i town jum is spin and for spining on principal to

STATUS SELECTION STREET,

AND THE P

प्रस्तावना

स्वर्गीय महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के पास एक दिन किसी जर्मन विद्वान् का जर्मन भाषा में लिखा एक पत्र ग्राया। उसके साथ एक जर्मन-ग्रंग्रेजी कोश मी था। विद्वान् लेखक ने मान लिया था कि यदि राहुल जी को जर्मन माषा नहीं मी ग्राती होगी, तो वे कोश की सहायता से पत्र का भावार्थ समक्र ही लेंगे।

हुम्रा भी ऐसा ही !

किसी भी भाषा के भ्रष्ट्ययन के लिए कोश ग्रनिवार्य है। वास्तव में भाषा के भ्रष्ट्ययन का मतलव ही है, भाषा-विशेष के शब्दों का चलता-फिरता संग्रह बन जाना।

पाल के मर्मज्ञ धर्मानन्द कोसाम्बी ने अपनी एक कृति की भूमिका में लिखा है कि जब कलकत्ता विश्वविद्यालय में पालि के एक अध्यापक के नाते उनकी नियुक्ति हुई, तो उनके किसी मित्र ने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि उस महा-विद्यालय में पालि सिखाने के लिए आवश्यक यंत्रादि (apparatus) हैं या नहीं?

उनका वह मित्र पालि को कुछ ऐसा ही शिल्प-विशेष मानता था।

लोग प्रश्न करते हैं कि पालि कौन-सी माषा है ? उसका संस्कृत तथा जैनों की अधंमागधी से क्या सम्बन्ध है ? और इस माषा का नाम पालि ही क्यों पड़ा ? संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि पालि उत्तर मारत और विशेष रूप से मगध जनपद की एक प्राचीन प्राकृत है । इसे मागधी भी कहते हैं । जैनों की अधंमागधी की अपेक्षा यह संस्कृत के कुछ अधिक समीप है । अधंमागधी में व्यञ्जनों के स्वर मी हो जाते हैं, लेकिन पालि में व्यञ्जनों के स्वर नहीं होते, जैसे संस्कृत शब्द 'शकुन्तला' का अधंमागधी रूप होगा 'सडन्दले' और पालि-रूप होगा 'सकुन्तला'। पालि में ताल्ब्य 'श्' और मूर्धन्य 'ष्' होते ही नहीं।

इस मापा के नाम के सम्बन्ध में ग्रेनेक ग्रेटकलें लगाई गई हैं। उन सब में जो सर्वाधिक बुद्धि-संगत व्याख्या प्रतीत होती है, वह यही है कि पालि 'बुद्ध-वचन' का पर्याय है। जिस प्रकार रामायणी लोग संतकवि तुलसीदास का उद्धरण देते हैं, तो कहते हैं कि यह तुलसीदास की पाति (पंक्ति) है। ठीक उसी प्रकार 'बहुवचन' ग्रथवा मूल तिपिटक पर जो ग्रट्ठकथाएं लिखी गई हैं, उनमें जहां कहीं बुद्ध-वचन उद्धत होता है, वहां बहुधा लिखा रहता है—'पालियं बुत्त',

धर्थात् यह पालि में कहा गया है, प्रधीत् यह बुद्ध-वचन है।

मंगवान् बुद्ध बुक्ष भीर उसके निरोध के अपने सन्देश को घर-घर पहुँ बाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने वैदिक छान्दस को न अपनाकर लोकमाथा का ही आश्रय लिया। जहाँ एक भीर उन्होंने अपने उपदेशों का छान्दस में अनुवाद करना तक निषद्ध ठहराया, वहाँ दूसरी भीर "अनुजानामि, भिवस्बेत, सकाय निरुत्तिया" कहकर सभी प्राकृतों में अपने उपदेशों का उल्या करने की सुली अनुमति दी। पालि-परम्परा में 'मांगधी' को 'मूल माधा' कहा गया है। इससे हम यह मान सकते हैं कि कदाचित् वर्तमान तिपिटक ही वह मूल-तिपिटक है, जिससे घनेक दूसरी लोकमाधाओं में उसके रूपान्तर किये गये होंगे। घाज हम इन रूपान्तरित तिपिटकों की कल्पना मात्र कर सकते हैं, क्योंकि घाज जो भी बुद्ध-वचन हमें उपलब्ध है वह मात्र वर्तमान तिपिटक ही है। महायान-परम्परा के कुछ ग्रन्थों के नाम तिपिटक के कुछ ग्रन्थों के नामों से मिलते-जुलते हैं। इससे हम इस निष्कषं पर भी पहुंच सकते हैं कि धमं-प्रचार की प्रावश्यकताओं से मजबूर होकर उत्तरकाल में या तो किसी ग्रन्य तिपिटक से संस्कृत पें अनुवाद हुए होंगे ग्रथवा वे ग्रन्य तिपिटक के ही किन्हीं ग्रन्थों के संस्कृत रूपान्तर मात्र हैं।

हमारे देश में जितने राज्य हैं, प्रत्येक राज्य में जितने जिले हैं, उन जिलों में जितने शहर व तहसीलें हैं, उनकी संख्या से भी अधिक संस्कृत पाठशालाएँ इस देश में विद्यमान हैं। बेचारी पालि या तो कहीं विधिवत् पढ़ाई ही नहीं जाती या फिर कहीं संस्कृत के साथ जुड़ी हुई है तो कहीं अधंमागधी के साथ मराठवाड़ा ही शायद एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसमें पालि के अध्ययन-

अध्यापन का अपना एक स्वतन्त्र विभाग है।

श्रनेक लोग भारतीय वाङ्गय को परलोक-परक मानते हैं श्रीर हम लोग भी विदेशियों के द्वारा दिये गये इस सर्टिफिकेट को धपनी बहुत बड़ी प्रशंसा मानकर तोते की तरह दोहराते रहते हैं। हम दूसरे किसी भी भारतीय वाङ्गय के वारे में निश्चयात्मक रूप से कुछ कह सकें या न कह सकें लेकिन बौद्ध-वाङ्मय मय के बारे में तो हम ग्रसंदिग्ध रूप से कह सकते हैं कि इस वाङ्मय ने इह-लोक तथा परलोक में समत्व स्थापित किया है। इहलोक को यथार्थ सत्य माना गया है, उसे मुलाया नहीं गया है, श्रीर दूसरी श्रोर परलोक की भी उपेक्षा नहीं हुई है। पालि के ही बारे में एक विदेशी विद्वान् का कहना है, "जिसे पालि का

ज्ञान है, उसे फिर यन्य कहीं से भी प्रकाश की ग्रावश्यकता नहीं।"

जो लोग पालि पढ़ना चाहते हैं वे प्रायः पूछते हैं कि क्या पालि संस्कृत की अपेक्षा आसान है और क्या पालि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करना अनिवायं है ? पहले प्रश्न का उत्तर 'हों' है तथा दूसरे कर 'नहीं'। संस्कृत की अपेक्षा पालि निश्चयात्मक रूप से आसान है। संस्कृत के पाणिनिव्याकरण में जहां लगमग चार हजार सृत्र हैं, वहां पालि के सबसे बड़े व्याकरण, मोगल्लान व्याकरण, की सूत्र-संख्या ग्राठ सो के ही श्रासपास है। किसी को यदि पहले से संस्कृत का ज्ञान हो, तो उसके लिए पालि का ज्ञान प्राप्त करना निश्चयात्मक रूप से आसान होता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पालि का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक हर विद्यार्थी को पहले से संस्कृत का ज्ञान होना ही चाहिए। कमी-कमी तो ऐसा लगता है कि संस्कृत का पूर्व-ज्ञान पालि के विद्याय्यों को गूमराह कर देता है।

किसी भी भाषा का कोश तैयार करना ग्रासान काम नहीं। उस माषा-विश्चेप के साहित्य से शब्दों का संकलन करना, उनकी ब्युत्पत्तियाँ, उनके स्याकरण-स्वरूप ग्रीर उनके ग्रयं लिखकर फिर उन्हें ग्रकारादि कम से सजाना सचमुच कठिन कार्य है। श्रीलंका में पिछले लगमग पचास वर्ष से सिहल माषा का एक महान कोश तैयार किया जा रहा है, जिसके ग्रोर-छोर का ग्रमी तक पता नहीं है। इसी प्रकार के कुछ बड़े श्रायोजन पालि-कोशों को लेकर भी चल रहे हैं। वे कोश सम्पूर्ण रूप से सम्पादित भीर मुद्रित होकर निकट भविष्य में देखने को मिल सकेंगे, इसकी कोई ग्राशा नहीं। इन पंक्तियों के लेखक की कुछ वैसी महत्त्वाकांक्षा नहीं रही है। वैसी महत्त्वाकांक्षा को साकार करने के लिए जो साधन चाहिए, उनका भी सर्वथा ग्रमाव ही रहा है। उत्तरप्रदेश भौर अन्य राज्यों के कुछ स्कूलों व महाविद्यालयों के पालि पढ्नेवाले विद्यापियों को काफी समय से एक सामान्य पालि-हिन्दी कोश का समाव खटकता रहा है।

उसी अमाव की पूर्ति करने का यह कृति एक विनम्न प्रयास है।

बड़े कोशों में शब्दों की व्यूत्पत्ति के ग्रतिरिक्त, उनके एक से ग्रधिक ग्रयौ के द्योतक शब्द-प्रयोगों के उदाहरण भी दिए रहते हैं। ऐसा होने से उन कोशों का कलेवर बहुत अधिक बढ़ जाता है। इसीलिए यथा-लाम सन्तोषी की तरह यथा-बल सन्तोष का ग्राश्रय लेकर इस कोश में शब्दों के मिल्न-मिल्न ग्रयों के चोतक प्रयोगों के उदाहरण नहीं दिए गए हैं। सामान्यतया कोश-ग्रन्थों में संज्ञा पदों (Proper Nouns) को नहीं ही लिया जाता। इस कीश में प्रसिद्ध च्यवितयों, स्थानों तथा ग्रन्थों के नामों ग्रादि के द्योतक संज्ञा-पदों को भी

श्चन्तर्भत कर लिया गया है।

इस पालि-हिन्दी कोश को तैयार करते समय हमारे सामने रीस डेविड्स तथा डब्ल्॰ टी॰ स्टीड द्वारा सम्पादित पालि-म्रंग्रेजी कोश, श्रीर बृद्धदत्त महास्थविर द्वारा रचित पालि-ग्रंग्रेजी कोश रहे हैं। ये दोनों कोश ही एक प्रकार से इस विद्यमान पालि-हिन्दी कोश के ग्राधार वने हैं। हमारी सीमित जानकारी में किसी भी भारतीय भाषा में यही पालि-हिन्दी कोश प्रथम पालि-कोश है। हर प्रयम प्रयास जहाँ प्रथम होने के नाते थोडे-से श्रेय का अधिकारी माना जाता है, वहीं उसे उसके बाद में किये जाने वाले प्रयासों द्वारा अपने पर सबक़त लिये जाने के लिए भी तैयार रहना ही चाहिए। १९५८ से १९६८ तक मैं श्रीलंका के विद्यालंकार विश्वविद्यालय में हिन्दीं-विमाग का प्रघ्यक्ष रहा। लोगों को कहते सुना है कि जो जिस विषय का अधिकारी विद्वान हो उसे ही उस विषय पर कलम चलानी चाहिए। मेरा ग्रपना कम रहा है कि मुक्ते जो विषय सीखना रहा है, उसी पर एक ग्रन्थ तैयार करने का प्रयास करके उस विषय की अल्प-स्वल्प जानकारी प्राप्त कर ली है। महामोग्गल्लान व्याकरण के सूत्रों की वृत्ति की हिन्दी-टीका मैंने इसी दृष्टि से तैयार की ग्रीर 'सिहल माषा श्रीर उसका साहित्य प्रनथ भी इसी दृष्टि से लिखा गया। यह पालि-हिन्दी कोश भी इसी दृष्टि से किया गया एक ग्रीर प्रयास है।

पालि में संस्कृत के ग्रमरकोश के ढंग पर तैयार किया गया 'ग्रमिधानप्प-दीपिका' नाम का एक ग्रन्य भी है। युग-विशेष में जब लोगों को चुने हुए कुछ प्रन्य ही पढ़ने पड़ते थे ग्रीर वे उन सभी करणों-प्रन्थों को कंठस्य कर सकते थे, उस समय के लिए अभिधानप्पदीपिका बहुत काम की चीज थी। आज के विद्यार्थी को तो आधुनिक ढंग के किसी पालि-हिन्दी कोश की ही नितान्त धावश्यकता है। यही समभकर इस कोश का संकलन किया गया है।

यह पालि-कोश श्रीलंका में रहते समय ही पूरा हो यया था। इसकी तैयारी में मिक्षु सावंगी मेघंकर तथा डॉ॰ तेलवन्ने राहुल प्रमुख मेरे प्रनेक भिक्ष- मित्रों और विद्यापियों का सहयोग मिला था। सभी को घन्यवाद न दे सक्ने की मजबूरी धौर सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता स्वीकार करने की इच्छा के बीच यही समफौता हो सकता है कि किसी को भी भौपचारिक घन्यवाद न दिया

जाय । प्रपनों को धन्यवाद देना लगता भी न जाने कैसा-सा है ।

प्रत्य की लिखाई जितना ही कष्टसाच्य कार्य है, उतना ही कष्टसाच्य है उसका मुद्रण। प्राज के युग में प्रत्येक प्रकाशक प्रपनी पूंजी का सूद सहित प्रतिफल कल ही प्राप्त करना चाहता है, तो किसी प्रकाशक का भी पालि-हिन्दी कोश जैसे ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए तैयार होना सामान्य बात नहीं। इस कोश के इतने लम्बे प्ररसे तक प्रप्रकाशित रहने का प्रधान कारण यही है। राजकमल प्रकाशन थीर उसकी व्यवस्थापिका श्रीमती शीला सन्यू इस दृष्टि से मेरे विशेष धन्यवाद की पात्र हैं। यदि उन्होंने पालि-विद्यायियों के लिए प्रानिवायं रूप से एक पालि-हिन्दी कोश की प्रावश्यकता की भीर घ्यान न दिया होता, तो यह कोश भी प्रन्य बहुत-से प्रप्रकाशित ग्रन्थों की तरह कहीं यूँ ही पड़ा रहता। इस कोश को प्रकाशित करके श्रीमती शीला सन्यू ने पालि

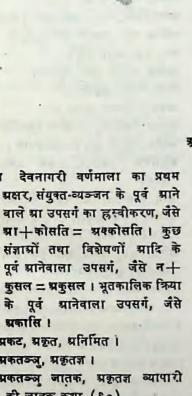
के सभी हिन्दी-जानकार विद्यायियों को अपना ऋणी बनाया है।

कोश के विशेष विलम्ब से प्रकाशित होने का एक दूसरा कारण भी है घीर वह यह कि संकलन-कर्ता कहीं, घीर मुद्रण-व्यवस्था कहीं। जिन लोगों को किसी भी ग्रन्थ को छपवाने का कुछ भी धनुभव होगा, वे मुक्तसे इस बात में सहमत होंगे कि मुद्रण के समय प्रूफ देखने का कार्य कमरे में भाड़ लगाने जैसा ही होता है। जितनी बार भाड़ लगायी जाय, हर बार कुछ-न-कुछ कुड़ा-करकट निकल प्राता है। शुरू में इस कोश के प्रफ नागपुर भेजे जाते थे। किन्तू शीघ्र ही यह प्रनुभव हुमा कि दिल्ली-नागपुर के बावागमन के बीच कोश-मुद्रण के कार्य की यह बेल शायद ही कभी सिरे चढ़ सके। इसे सिरे चढ़ाने का सारा श्रेय मेरे गुरुमाई मिक्ष जगदीश काश्यप जी के अन्तेवासी, दिल्ली विश्वविद्यालय के बौद्ध प्रध्ययन विभाग (Department of Buddhist Studies) के रीडर डॉ॰ संघसेन तथा राजकमल प्रकाशन के श्री मोहन गुप्त को है। इन दोनों धनुजों ने परस्पर सहयोग से पालि-कोश की इस नैया को मुद्रण-रूपी मैं ऋघार में न सेया होता, तो शायद ही यह कमी किनारे लगी होती। डॉ॰ संघसेन ने न केवल श्रम-साध्य प्रफ ही देखने का कार्य किया, विल्क जहाँ कहीं भी कुछ स्खलन रह गए थे, उनका मार्जन कर पाण्ड्लिपि को भी यथासम्भव निर्दोष बना दिया। उन्होंने इस कोश को अपना मानकर जो जिम्मेदारी उठाई थी, उसे पूरा निमा दिया । ऐसा करके उन्होंने एक पुष्य-कार्य तो सम्पन्न किया ही, साय-ही-साथ मेरे ही नहीं, बल्कि सभी पालि-विद्यार्थियों के कृतज्ञता-माजन बने । यही मेरे लिए विशेष सन्तोष का विषय है।

यह कोश किन्हीं भी पालि-प्रध्येताओं के कुछ भी काम प्रा सका, तो इन

पंक्तियों का लेखक प्रपने-प्रापको कृत-कृत्य मानेगा।

भिक्षु-निवास बीक्षा भूमि, नागपुर-१० २४-११-७४ —ग्रानन्द कौसल्यायन



ग्रकासि । प्रकट, ग्रकृत, ध्रनिमित । श्रकतञ्जु, श्रकृतज्ञ । प्रकतञ्जू जातक, प्रकृतज्ञ व्यापारी की जातक कया (६०) ब्रकतिद्व देव, पांच शुद्धावासों में से उच्चतम ग्रावास में रहनेवाले देवता-गण।

ग्रकम्पिय, विशेषण, स्थिर। ग्रकाच, विशेषण, निर्दोष । ध्रकालरावी जातक, ग्रसमय बांग देने

वाले मुगें की जातक कथा (११६) ध्रकामक, विशेषण, ग्रनिच्छुक । धकाल, पुल्लिङ्ग, असमय । श्रकासि, भूतकालिक किया, किया। श्रकिति, एक उदार-जानी की जातक-कथा (४८०) ग्रकिरिय, ग्र-किया (- वाद), किसी कमं का कोई फल नहीं होता, यह प्रकिञ्चन, विशेषण, जिसके पास कुछ प्रकिलासु, वि०, कियाशील, ग्रप्रमादी। प्रकृटिल, वि०, जो कृटिल नहीं। प्रकृतोमय, वि॰, जिसे किसी ग्रोर से भी भय न हो। धकुप्प, वि॰, स्थिर, धचञ्चल। धकुसल, नपुं०, पाप-कर्म । धकोविद, वि०, ग्रदक्ष, जो हश्यार नहीं।

प्रक्क, पुल्लिङ्ग, ग्रकं (= सूयं), एक पौदा-विशेष । भ्रवकन्त, क्रिया-विशेषण, ग्राकान्त । ग्रयकन्दति, किया, रोता है, चिल्लाता है। भवकोस, पुल्लिङ्ग, भाकोश, भ्रपमान । ध्रक्कोस, भारद्वाज, राजगृह का एक ब्राह्मण, जिसने भगवान् बुद्ध का ग्रपमान किया था। धक्ल, ग्रक्ष (गाड़ी की घुरी), ग्रक्ष (जुए का पासा), ग्रक्ष (ग्रांख)। ग्रवस्तक, नपुं०, हंसली। भ्रवलग, पुल्लिग, ग्रक्षण, ग्रनुचित समय। प्रक्लण-वेधी, पुल्लिंग, विजली चम-कने भर के समय में तीर मारने भ्रक्खत, वि०, ग्रक्षय, जिसे चोट न लगी हो। ग्रव्हवदस्स, पु०, न्यायाधीश, निर्णायक । श्रक्खध्त, वि०, जुग्रारी। श्रक्लय, वि०, ग्रक्षम, जिसका क्षय न हो। लिखने की स्लेट या बोर्ड (-समय) लिखने तथा पढ़ने की विद्या। ग्रक्खर, नपु॰, ग्रक्षय, (-फलक) लिखने की स्लेट या वोडं (-समय) लिखने तथा पढने की विद्या। भ्रवसरमाला, पालि तथा सिहाली वर्ण माला के बारे में एक पालि छन्दोबद्ध रचना । भ्रवसात, क्रिया-विशेषण, कहा गया, व्याख्या किया गया।

भवसातार, क्रिया-विशेषण, कहने

वाला, मार्ग प्रदिशत करने वाला। श्रक्खाति, किया, कहता है, सुनाता है, समभाता है। ग्रक्खान, नपुं०, ग्राख्यान, कथा-वार्ता (मारत-रामायणादि) ग्रविख, नपुं०, ग्रक्षि, ग्रौख। श्रवलोभिनी, स्त्री० ग्रक्षोहिणी (सेना) ग्रखेत्त, नपुं०, ग्रक्षेत्र, वंजर-भूमि। भ्रग, पुं०, पर्वत, वृक्ष। श्रगति, स्त्री॰, कुपथ, पक्षपात । म्रगद, नवुं०, ग्रीपधि। श्रगर, विशेषण, हलका। ध्रगाध, विशेषण, ग्रत्यधिक गहरा। ग्रगार, नपुं॰, घर, निवास-स्यान। ध्रगारिक, विशेषण, घर गृहस्थ । ग्रग्ग, विशेषण, ग्रग्न, प्रथम, श्रेष्ठतम । श्रगाल, नपुं०, ग्रगंल, दरवाजे के पीछे लगाई हुई डण्डी। ग्राग्त, पु०, ग्राग्त, ग्राग (-करवन्ध) ग्राग की ढेरी, (-परिचरण) श्रग्नि-नूजा, (-साला) ग्रग्नि-शाला, (-शिखा) ग्राग की ली, (-हुत्त) यज्ञ। श्रिगिक-जातक, उस गीदड़ की जातक-कथा, जिसके सिर के वाल जंगल की ग्राग से जल गए थे (१२६) ग्रागिक-भारद्वाज, भारद्वाज गोत्र का श्रावस्ती का एक ब्राह्मण। ग्रग्गि ब्रह्मा, संघमित्रा का पति तथा ग्रशोक का जामाता। उसने ग्रशोक के भाई तिस्सकुमार के प्रव्रजित होने कें दिन ही प्रवज्या ग्रहण की थी। म्राघ, पु०, म्रघं, मूल्य (- कारक)

मूल्य निर्घारण करने वाला। ध्राचित, किया, उतने मूल्य का होना । ग्रन्धिक, नपुं०, पुष्प-मालाग्रों सुसज्जित स्तम्भ। श्रघ, नपुं०, आकाश, दुःख, ददं, दुर्भाग्य। श्रङ्क, पु०, गोद, चिह्न, संख्या। श्रङ्कुर, पु०, ग्रखुगा। ्रश्रङ्क्, स, पु०, श्रंकुश। श्रङ्के ति, किया, चिह्न लगाता है। श्रङ्ग, पु०, सोलह महा जनएदों में से एक। ग्रङ्ग, नपु०, (शरीर का) ग्रङ्ग, भाग, (-पच्चक्न') शरीर के सभी छोटे-वड़े अङ्ग, (-राग) शरीर पर लगाने का पौडर या उबटन। श्रङ्गजात, नपुं ०, पुरुषेन्द्रिय । श्रङ्गण, नपुं०, ग्रांगन । श्रंगद, नपुं०, बाजूबंद। भ्रङ्गना, स्त्री० गौरत। धङ्गार, पुल्लिग, जलता हुआ कोयला। श्रङ्गीरस, पु॰, बुद्ध का एक नाम। अङ्ग द्ठ, पु०, अंगूठा । ग्रङ्ग् तर-निकाय, पु०, सुत्त-पिटक के पांच निकायों में से एक निकाय। ग्रङ्ग-तरद्रकथा, स्त्री०, ग्रंगुत्तर निकाय की भ्रट्ठकथा। ग्रङ्गुल, नपुं० १. मंगुल, २. उंगली-भर का माप। ग्रङ्गुली-माल, प्रसिद्ध डाकू, जो वुद्धा-नुभाव से एक ग्रहंत् हुग्रा। ग्रङ्ग लोयक, (-लेय्यक), नप्०, यङ्ग्ठी। श्रचल वि०, स्थिर, ग्रपने स्थान से न

हिलनेवाला। धचिर, वि०, जो ग्रभी-ग्रभी हुमा हो, (-प्पभा), विजली। ग्रचिरवती, (नदी), पाँच महानदियों में से एक, वर्तमान राप्ति। श्रचेतन, वि ०, बेहोश, जड़। ध्रचेल, वि०, निवंस्त्र, नंगा, (-क) नग्न रहने वाला साघु। ग्रच्चगा, क्रिया-पद, लांघ गया। ध्रच्चना, स्त्री०, ग्रचंना, पूजा। ग्रच्चन्त, वि०, निरन्तर, लगातार, ग्रत्यन्त । भ्रच्चय, पु०, धपराध, दोष। ग्रच्चायिक, वि०, तुरन्त करने का कायं। ग्रच्चासन्न, वि०, ग्रति समीप। स्त्री॰, ग्रर्ची, ज्वाला, ग्रचिच, (-मन्त्) पु० ग्रग्नि ग्रक्चित, वि०, ग्रचित, पूजित, सम्मा-नित। ग्रच्चुग्गत, वि०, ग्रत्यन्त ऊँचा। प्रच्चुण्ह, वि०, प्रत्यन्त ऊप्ण, बहुत गर्म । म्र च्चुत, वि०, (-पद) निर्वाण । ग्रच्चोगाळह वि०, ग्रत्यधिक प्रंचुरता में गया हुआ। ग्रच्चोदक, नपुं०, ग्रत्यधिक जल। वि०, प्रच्छा, साफ। ग्रन्छक, पु॰, भालु, रीछ। ग्रच्छम्भी, वि०, निभंय। मञ्जूरा, स्त्री॰ ग्रप्सरा; (-संघात) चुटकी वजाना। म्रच्छरिय, नपुं०, माश्चर्य ।

भ्रच्छादन, नपुं०, वस्त्र, परिधान। ग्रन्छिन्दति, किया, लूटता है। ग्रच्छेछि, भूतकालिक किया, काट दिया, नप्ट कर दिया। म्रज, पु०. वकरी, (-पाल) बकरी चराने वाला (-लिण्डका) बकरी की मींगन। भ्रजातसत्तु, मगध नरेश विम्बसार का पुत्र । ग्रजानन, नपुं०, ग्रज्ञान। म्रजिन, नपुं०, चीता । ग्रजिनपत्ता, स्त्री०, चिमगादड् । श्रजिनि, किया, जीत लिया। ध्रजीरक, नपुं०, बदहजमी। म्रजेय्य, वि०, जिसे जीता नजा सके। ग्रज्ज, ग्रव्यय, ग्राज (-तग्गे) ग्राज से, (-तन) ग्राधुनिक। म्रज्जित, किया, मर्जन करता है, कमाता है। द्यज्जव, पु०, ग्राजंव, सीधापन। ग्रज्जित, वि०, ग्रजित, कमाया हुग्रा। मज्जुन, पुं०,(१) मर्जुन नाम का वृक्ष, (२) पाँच पाण्डवों में से एक भाई ग्रर्जुन । ग्रन्भगा, क्रिया, प्राप्त किया। ग्रज्भत्त, वि०, स्वकीय। ग्रज्भत्तिक, वि० ग्रपने ग्राप सम्बन्धी। ब्रज्भयन, नपुं०, ब्रघ्ययन । ब्रज्भाचार, पु०, सीमातिक्रमण, मैथुन-किया। म्रज्भा चिण्ण, क्रिया-विशेषण, म्रम्यस्त । धरभापन, नपुं०, ध्रध्यापन, पढ़ाना-लिखाना ।

ग्रज्भाय, पु०, ग्रध्याय, परिच्छेद । ध्रज्भायक, पु०, ग्रध्यापक, शिक्षक। ध्रज्भावसति, किया, घर में वास करता है। भ्रज्भासय, पु०, भ्राशय, इरादा। म्रज्झुपगच्छति, क्रिया, प्राप्त होता है, सहमत होता है। ग्रज्झुपेक्खति, किया, उपेक्षा करता है। भ्रज्झुवेति, क्रिया, समीप पहुँ बता है। ध्रज्झेन, नपुं०, ध्रध्ययन । ध्रज्भोकास, पु०, खुला ग्राकाश। ग्रज्झोसान, नपुं०, ग्रासक्ति। धन्भोहरण, नप्ं०, निगलना । भ्रञ्जित, क्रिया, ग्रांख में ग्रञ्जन लगाना । ध्रञ्जन, नपुं०, सुरमा (-वण्ण) काला। भ्रञ्जन, संज्ञा, शुद्धोदन की दोनों रानियों महामाया तथा महाप्रजापति गौतमी के पिता। म्रञ्जलि, स्त्री०, हाथ जोड़ना, (-पुट) कोई चीज लेने के लिए दोनों हाथों को मिलाकर बनाया जानेवाला डुना । ग्रञ्जस, नपुं०, रास्ता, मार्ग, पय। भ्रञ्जा, सर्वनाम, भ्रन्य, दूसरा । म्रञ्जातम, सर्वनाम-विशेषण, ग्रन्यतम, ग्रनेकों में से एक। भ्रञ्जातिरिथय, पु०, भ्रन्य सम्प्रदाय का अनुयायी। ग्रञ्जात्थ, ग्रञ्जात्र, ग्रव्यय, ग्रन्यत्र। भ्रञ्डायत्त, नपुं ०, मन का ग्रन्यथा-माव को प्राप्त होना।

ग्रञ्जाया, ग्रव्यय, ग्रन्यथा, दूसरी तरह । श्रञ्जादत्यु, श्रव्यय, निश्चय से । भ्राञ्जादा, भ्रव्यय, ग्रन्यदा, दूसरे दिन। श्रञ्जमञ्जा, श्रञ्जोञ्जा,वि० परस्पर । धङ्गा, स्त्री०, सम्पूर्णज्ञान, ग्रहंत्व । धञ्ञाण, नपुं०, ग्रज्ञान। भ्रञ्जात, वि०, जात ग्रयवा जाता। भ्रञ्जात, कोण्डञ्जा, सं० भगवान बुद्ध का प्रथम प्रवृजित शिष्य । श्रञ्जातक, वि०, जो सगा-सम्बन्धी नहीं। भ्रञ्जातावी, पु०, जानकार। श्रञ्जातुकाम, वि०, जानने की इच्छा रखनेवाला। ष्रटवि, स्त्री०, जंगल। भ्रट्ट, नपुं०, मुकद्मा। श्रद्वाल, नपुं०, श्रद्वालिका, श्रदारी। श्रद्व, वि०, ग्राठ। प्रद्रक, वि०, ग्राठगुणा। ग्रटुकथाचार्यं, पुल्लिग, ग्रथंकथाचार्यं। ब्रद्धक्तिक, पुं०, ग्रव्टांगिक, ग्राठ ग्रंगों वाला। श्रव्रपद, नपुं॰, शतरंज का तस्ता। श्रद्वंस, नपुं०, श्रठकोना । श्रद्वान, नपुं०, ग्रस्थान, ग्रसम्भव। ग्रद्वारस, वि०, ग्रद्वारह। श्रद्धि, नपुं०, हड्डी। श्रद्धि-कत्वा, पूर्व-क्रिया, ध्यान देकर। श्रद्धि-सङ्घाट, पुं०, ग्रस्थि-पञ्जर। श्रिहिसेन जातक, राजा के उद्यान में रहते हुए, उससे कुछ भी याचना न करने वाले तपस्वी की जातक-कथा (४०३) भाड्द, वि०, धनाद्य।

म्रड्ढतिय, वि०, ढाई। घड्ढरत्त, नपुं०, घर्ध-रात्रि । ग्रड्दुडढ, पुं०, साढे तीन। ध्रण, (ऋण), ध्रनणो, पुं, ऋण-रहित। भ्रणु, छोटे से छोटा कण। भ्रण्ड, नपुं०, भ्रण्डा। ग्रण्डभूत-जातक, स्त्रियों की 'स्वाभा-विक' चरित्रहीनता का जापन करने वाली जातक-कथा (६२)। भ्रण्ण, पुं०, जल। भ्राण्णव, नपुं०, समुद्र। अण्ह, पुं०, दिन, पूर्वीह्न तथा अप-राह्न। श्रतच्छ, नपुं०, मिथ्या, श्रययार्थ । श्रति, उपसर्ग, अधिकता का अर्थ लिये हुए। श्रतिखिप्पं, क्रिया-विशेषण, ग्रति शीघ्र । धतिगाळह, वि.०, धति निकट। म्रतित्त, वि०, मतुप्त। प्रतिथि, पु॰, ग्रतिथि, मेहमान। श्रतिदिवा, ग्रन्थय, दिन चढ़े। प्रतिदेव, पु॰, श्रेष्ठतर देवता। प्रतिधमति, किया, ढोल को या तो बहुत जोर से या वार-बार बजाता मतिघावति, किया, दौड़कर भागे बढ़ जाता है। ध्रतिनामेति, क्रिया, समय गुजारता है। श्रतिनिग्गण्हाति, क्रिया, अधिक डाँटता-डपटता है। म्रतिपपञ्च, पु॰, म्रत्यधिक विलम्ब।

धतिपात, पु॰, मार डालना, हत्या करना। ग्रतिप्पगो, ग्रच्यय, बहुत जल्दी। श्रतिबहल, विशेषण, बहुत मोटा। म्रतिबाळहं, किया-विशेषण, म्रत्यधिक। प्रतिबाहेति, किया, मगा देता है, बाहर कर देता है। ग्रतिभगिनी, स्त्री ०, ग्रत्यन्त प्रिय बहन । म्रतिमारिय, विशेषण; ग्रत्यन्त मारी, ग्रत्यन्त गम्भीर। प्रतिमञ्जाति, किया, घुणा करता है। म्रतिमनाप, वि०, म्रत्यन्त प्रिय। श्रतिमत्त, वि॰ श्रतिमात्र, ग्रत्यधिक। म्रतिमहन्त, वि०, बहुत बड़ा। ग्रतिमान, पु॰, ग्रमिमान, ग्रहंकार। प्रतिमुखर, वि०, ग्रत्यन्त वाचाल। श्रतिमुत्तक, सं०, एक पीदे का नाम । ग्रतिमुदुक, वि०, ग्रत्यन्त मृदु । प्रतियक्ख, पु०, भाड़-फूंक करनेवाला ग्रोभा। श्रतियाचक, वि०, श्रत्यन्त याचना करने वाला। म्रतियति, किया, लांघ जाता है। प्रतिरत्ति, किया-विशेषण, ग्रधिक रात बीते। प्रतिरिच्चति, क्रिया, छूट जाता है, (शेष) रहता है। म्रतिरित्त, विशेषण, म्रतिरिक्त। धतिरिव, प्रव्यय, प्रत्यधिक । म्रतिरेक, वि०, म्रतिरिक्त। प्रतिरोचित, किया ।, प्रधिक चमकता है। म्रतिलुद्ध, वि०; म्रत्यन्त लोमी।

श्रतिविद्भन्, वि०, ग्रत्यन्त टेढ़ा। म्रतिवत्त, क्रिया-विशेषण, विजित। म्रतिवत्तिः, किया, लांघ जाता है, पार कर जाता है। म्रतिवस, वि , किसी के वश में, किसी ' पर निर्भर। म्रतिवस्तति, क्रिया, खूब वरसता है। श्रतिवास्य, नपुं०, ग्रपशब्द, गाली। श्रतिवात, पुं०, आंधी-तूफान। म्रतिवायति, (सुगन्धि) लेकर जाता ग्रतिवाहक, पुं०, भार वहन करने वाला। म्रतिविकाल, वि ं , ग्रत्यन्त ग्रसमय। अतिविज्ञाति, क्रिया, बींघ देता है, ग्रार-पार देखता है। ग्रतिविय, क्रिया-विशेषण, ग्रत्यन्त । म्रतिविस्सट्ठ, वि०; वकवक करने वाला। म्रतिविस्सासिक, वि०, ग्रत्यन्तं रहस्य-पूर्ण । म्रतिविस्सुत, वि०, ग्रत्यन्त प्रसिद्ध। प्रतिवेलं, त्रिया-विशेषण, ग्रधिक समय बीत जाना। प्रतिसण्ह, वि०, ग्रति-सूक्ष्म, ग्रति चिकना। म्रतिसम्बाध, वि०, जहाँ चहुत भीड़-भाड़ हो, जो रास्ता तंग हो। श्रतिसय, पु॰, ग्रतिशय, ग्राधिनय। प्रतिसायं, क्रिया-विशेषण, ग्रत्यन्त सायंकाल। प्रतिसार, पुल्लिग, सीमोल्लंघन, दस्त लग जाना।

श्रतिसिथल, वि०, ग्रत्यन्त शिथल। श्रतिहट्ठ, वि०, ग्रत्यन्त प्रसन्नचित्त । श्रतिहीन, वि०, ग्रत्यन्त दरिद्र। श्रतिहोलेति, किया, घुणा करता है। श्रतीत, वि०, भूत-काल। ग्रतीव, ग्रव्यय, बहुत ग्रधिक। ग्रतो, ग्रव्यय, ग्रतः, इसके बाद। ग्रत्त, पु०, ग्रपना-ग्राप। म्रत-काम, पु०, ग्रात्म-प्रेम। म्रत-किलमथ, पू०, काय-क्लेश। ग्रत्त-गृत्ति, स्त्री०, ग्रात्म-संयम। ग्रत्त-घञ्ज, नपुं०, ग्रात्म-विनाश। श्रत्तदत्थ, पु०, द्यात्म-हित । ग्रतदन्त, वि; ग्रात्म-दिमत। ब्रत्त-दिद्विठ, स्त्री०, ब्रात्म-दृष्टि, 'ब्रात्मा' का ग्रस्तित्व मानना । श्रत-भाव, पु०, व्यक्तित्व। ग्रत्त-वाद, पु०, 'ग्रात्मा' के सम्बन्ध का पक्ष या मत। श्रत्त-वध, पु०; ग्रात्म-विनाश। ग्रत्त-हित, नपुं०, ग्रात्म-हित। श्रतज, वि०; श्रात्मज, पुत्र। श्रत्तदोप, वि०; ग्रात्म-दोप, ग्रात्म-निभंर। ग्रत्तनीय, वि०, ग्रपने-ग्राप सम्बन्धी भ्रथवा भ्रात्मा-सम्बन्धी। म्रतंतप, वि०, ग्रपने-ग्रापको तपाने वाला। श्रत्तपच्चवल, वि०, श्रात्म-प्रत्यक्ष, श्रात्म-साक्षी। श्रत्तपटिलाम, पु०; श्रात्म-प्रतिलाभ, जन्म। धतमन, वि०; प्रसन्न-वदन।

श्रत्तसम्भव, वि; ग्रात्म-सम्भव, ग्रपने-ग्रापसे उत्पन्न । श्रत्तहेतु, ग्रव्यय, भ्रात्म-हेतु, अपने ग्रापके लिये। श्रत्ताण, वि०, विना त्राण के, विना संरक्षण के। ग्रत्थ, पु०, कत्याण, लाभ, धन यांवश्यकता, इच्छा, उपयोग, ग्रथं, विनाश। ग्रत्थक्खायी, वि०, हितकर वात कहने ग्रत्थकर, वि०, हितकारी। ग्रत्यकाम, वि०, हितचिन्तक। ग्रत्थकुसल, वि०, हितकर बात का पता लगाने में दक्ष, ग्रथं बताने में दक्ष। घ्रत्थचर, वि०, परोपकारी। म्रत्थचरिया, स्त्री०, परोपकार। श्रत्थदस्सी, वि०, हितचितक। ग्रत्थभञ्जक, वि०, ग्रहितकारी। ग्रत्यवादी, वि०, हितकर बात कहने वाला। भ्रत्य, किया, भ्रत्यि का बहुवचन । ग्रत्थकथा, स्त्रीट, ग्रयों की व्याख्या, भाष्य । go, ग्रस्तगत घ्रत्थगम, होना, छिप जाना, श्रांख से ग्रोभल होना । म्रत्थञ्जु, वि०, मर्थं का जानकार, हित-कर बात का जानकार। घ्रत्थरत, किया-विशेषण ; ऊपर विछाया गया। म्रत्यर, पु०; म्रास्तरण। ग्रत्यरक, पु०, बिछाने वाला।

ध्रत्यरण, नपं॰, बिस्तर की चादर। मत्यरति, किया, बिछाता है। भत्यरापेति, किया, विख्वाता है। म्रत्यवस, प्०, कारण, उपयोग। घ्रत्यसालिनी. ग्रभिधम्मपिटक धम्मसंगनी प्रकरण पर बुद्ध घोष द्वारा रचित ग्रट्ठकथा। भ्रत्थस्सद्वार जातक. वाराणसी के सेठ के पुत्र की जातक-कथा, जो सात वर्षं की ग्राय में ही सुपथगामी बना (48)1 ग्रत्याय, ग्रत्य की चतुर्थी; के लिए। किमत्थाय, किसलिए? म्रत्यि, किया; है। म्रत्यि-भाव, प्ं०, म्रस्तित्व। म्रात्थक, वि०, मर्थी, किसी चीज की इच्छा करनेवाला। म्रत्र, वि०, यहाँ। धत्रज, पुं०, पुत्र, ग्रत्रजा, स्त्री०; पुत्री। म्रत्रिच्छ, वि०, ग्रत्यन्त लोभी। ग्रति-च्छता, स्त्री॰, श्रत्यन्त लोभ । ्र प्रथ, प्रव्यय; तव। वयस्वण, पुं ०, भ्रथवे-वेद । ब्रथो, ग्रय, निपात मात्र । प्रदक, वि०, खाने वाला। घदति, किया, खाता है। भदन, नपुं ०, खाना, भोजन। घदरसन, नपूं ०, दिलाई न देना । श्रदिट्ठ, वि॰ श्रह्ट, जो दिखाई दिया हो। श्रदिन्न, वि०, जो दिया न गय हो। श्रदिस्समान, वि०; जो दिखाई न दे।

मद्, नपुं; ममुक । प्रदूभक, वि०, जो विश्वासघाती नहीं घट्सक, वि॰, निर्दोष, निरपराध। ग्रह, नपं, काई, गीलापन । श्रद्दक, नपं; श्रदरक। ग्रद्दिख, भूतकालिक किया; देखा। प्रदूसा, भूतकालिक किया, देखा। म्रहि,, पू॰, पर्वत । क्रिया-विशेषण: ब्रहित, गया । श्रद्धं, पू॰, श्राघा । (-मास), पुं॰; ग्राघा-महीना, एक पक्ष । भ्रद्धगत, वि०, जीवन-पथ का यात्री। ब्रद्धगु, पू॰, यात्री। ब्रद्धनिय, वि, यात्रा करने योग्य; चिरकाल तक बना रहने वाला। घदा, प्रव्यय, निश्चयात्मक रूप से। ग्रद्धा, पुं०, मार्ग, समय । श्रद्धान, नपुं ०, लम्बा रास्ता या दीर्घ समय। ग्रद्धिक, पुं०, यात्री। म्रद्ध्व, वि०, म्रध्य, मस्यर। म्रहेज्य, वि०, म्रसंदिग्ध । मधम, वि॰, नीच, पापी। श्रधम्म, पु॰, दुराचार, मिथ्या-मत। भ्रघर, पु॰, होंठ, वि॰, नीचे का। ग्रधि, उपसगं, तक, पर। ग्रधिकत, वि०, ग्रधिकृत, कारणी भूत। श्रधिकरण, नपुं, मुकद्मा। श्रधिकरण-समय, पु०, मुकट्टमे का फैसला । श्रधिकरणिक, पु०, न्यायाधीश। मधिकरणी, स्त्री०, लोहार की निहाई। मधिकार, पु॰, पद, माकांक्षा ।

ग्रधिकोटटन, नप्ं, जल्लाद का थड़ा। ग्रधिकोधित, वि०, ग्रत्यन्त कोधित। ष्यिगच्छति, किया, प्राप्त करता है। ग्रधिगच्छि, भूतकालिक किया, प्राप्त किया। श्रिधिगण्हाति, क्रिया, पार कर जाता है, प्राप्त करता है, लीघ जाता है। ग्रधिगम, पू॰, प्राप्ति, ज्ञान । ग्रधिचित्त, नपुं०, चित्त को एकाग्र करने की साधना। ग्रधिच्च, पूर्व-ऋिया, पढ्कर या पाठ करके। ग्रधिच्च, समुप्पन्न, वि०, उत्पन्न । ब्रधिट्ठाति, किया, हढ़ संकल्प करता है। म्रधिट्ठातब्व, कृदन्त, म्रधिष्ठान करने योग्य । ग्रिघट्ठायक, वि०, निरीक्षक। ग्रधिप (ग्रधिपति), प्०, स्वामी, शासक। ब्रधिपञ्जा, स्त्री०, श्रेष्ठ प्रज्ञा। प्रधिपतन, नपुं, भाक्रमण, ऊपर भा पडना, उछलना-कदना । अधिपन्न, वि०, गृहीत । अधिपात, प्र॰, टुकड़े-टुकड़े हो जाना, विनाश। अधिपातक, पु॰, भींगुर, ग्रेंब-फोड़वा। श्रिधपातेति, किया, नाश कर डालता है। श्रिधिपघरति, किया, चुता है। ग्रधिप्पाय, पु०, ग्रभिप्राय, इरादा। ग्रधिभवति, किया, नीचे दबा देता है।

पिमत्त, वि०, प्रत्यिषक मात्रा।

ग्राधमन, पुं॰, चित्त की एकाग्रता। ग्रविमान, प्०, ग्रभिमान, ग्रहङ्कार। ग्रधिमानिक, वि॰; ऐसा व्यक्ति जो भठ-मूठ ही समभता है कि उसने कोई सिद्धि प्राप्त कर ली है। ग्रधिमुच्चति, किया, मुकता है, मनु-रक्त होता है। ग्रिधमुच्चन, नपुं०, संकल्प करना, इरादा करना। ग्रधिमृत्ति, स्त्री, संकल्प, भुकाव। ग्रधिमोक्ल पू०, हुढ़ निश्चय। ग्रिघरोहनी, स्त्री, सीढ़ी। प्रधिवचन, नपं, संज्ञा, नामकरण। ग्रधिवत्तति, क्रिया, ग्रतिक्रमण कर जाता है, परास्त कर देता है। ग्रधिवत्थ, वि॰, रहने वाला। ग्रधिवसति, किया, रहता है। ग्रधिवासक, वि ०, सहनशील। ग्रिघवासना, स्त्री॰, सहनशीलता। ग्रधिवासेति, क्रिया, सहन करता है। प्रधिसील, नपुं, श्रेष्ठतर सदाचार। ग्रिंघसेति, किया, लेटता है, बैठता है, रहता है, प्रनुकरण करता है। ध्रधीन, वि०, निभंर। ब्रधीर्यात, ऋया, ब्रध्ययन करता है, कण्ठस्य करता है। प्रधुना, विशेषण, प्रव, प्रविरकास पूर्व । म्रघो, म्रव्यय, नीचे। प्रयोकत, वि, नीचे किया गया। ग्रघोगम, वि॰ पतनोनमुख । प्रयोमाग, पु॰ नीचे का हिस्सा । प्रयो-मुख, वि०, नीचे मुंह किये। मनङ्गण; वि०; राग-द्वेष रहित,

निर्दोष । मनण, वि०, ऋण-मुक्त। मनत, वि०, भ्रनातम (-शिद्धान्त)। धनतमन, वि०, धसन्तुष्ट। मनत्य, पु०, हानि, दुर्भाग्य। **धनधिवर, प्ः** तथागत, वृद्ध । धनन् च्छविक, वि०, ग्रनुचित, ग्रयोग्य। मनन सोचिय जातक, वाराणसी में घनी ब्राह्मण के रूप में बोधिसत्व की जातक-कथा (३२८)। मनन्त, वि०, सीमा-रहित। धनन्तर, वि०, इसके बाद। म्रनपेक्ख, वि०, ग्रपेक्षा-रहित । धनवाव, (धन्+धभाव) पु०, जन्म-मरण का सम्पूर्ण ग्रमाव। धनभिरत, वि०, रस न लेता हुया, रमण न करता हुन्ना। धनभिरति जातक, (१) स्त्रियों को निजी सम्पत्ति मानना अनुचित है, प्रसंग की जातक-कथा (६५), (३) ग्रच्छी स्मरण-शक्ति के लिये चित्त की स्थिरता यावदयक है, प्रसंग की जातक-कथा (१८५) धनमतग्ग, वि ०, जिसका ध्रज्ञात है। म्रनय, पु॰, दुर्भाग्य। धनरिय, वि०, ग्रसम्य, गँवार। धनल, पु०, ग्रग्नि। ध्रनलंकत, वि०, (१) यसंतुष्ठ, (२) भ्रलंकृत नहीं किया गया। अनवद्ठित, वि०, अनवस्थित, अस्थिर। धनवय, वि०, न्यून नहीं, सम्पूर्ण। धनंबरत, वि०, लगातार, निरंतर। धनवसेस, वि०, निरवशेष, सम्पूर्ण।

म्रनवोसित, वि०, ग्रसमाप्त, ग्रसम्पूर्ण। भ्रनसन, नपुं० भ्राहार-त्याग, व्रत । ग्रनस्सासिक, वि०, ग्राश्वासन-रहित। श्रनाकूल, वि०, उलभन-रहित। धनागत, वि०, भावी। म्रनागत वंस, चोल देश के वासी काश्यप स्थविर द्वारा भावी मैत्रेय वृद्ध के वारे में रची गई एक पद्य-बद्ध रचना। भ्रनागमन, नपुं०, भ्रागमन का निपंध। ब्रनागामी, पुं॰, फिर इस संसार में लीटकर न ग्राने वाला। ग्रनाचार, पु०, दुराचार। श्रनाजानीय, वि०, ग्रच्छी नसल का नहीं। ग्रनाय, वि०, दुखी, ग्रसहाय। ग्रनाथ पिण्डिक, श्रावस्ती का प्रसिद्ध दानी सेठ सुदत्त (ग्रनाथिपिण्डक)। म्रनादर, पु०, ग्रगौरव। श्रनादा, पूर्विकया, विना लिये। श्रनापादा, वि०, श्रविवाहिता। श्रनापुच्छा, पूर्व-िक्रया, विना पूछे। श्रनाबाध, वि०, वाधा-रहित,सुरक्षित। म्रनामन्त, वि०, ग्रनिमंत्रित, ग्रप्ठ, जिससे कुछ पूछा न गया हो। धनामय, वि०, रोग-मुक्त। ध्रनामसित, वि०, जो छुद्रा न गया हो, ग्रस्पुष्ट । म्रनायतन, नपुं०, म्रयोग्य स्थान धनायास, वि०, विना कप्ट के, ग्रासानी से। धनारम्भ, वि०, विना परिश्रम के, बिना कुछ भी खट-पट किये। मनाराधक, वि०, मसफल।

ग्रालम्बन-रहित, ग्रनालम्ब, वि०, ग्राघार-रहित । श्रनालय, वि०, ग्रासिवत-रहित। धनावट, वि०, धनावृत, विना ढका हुग्रा, खुला। धनावत्ती, पु०, जो न लौटने वाला हो। धनावास, वि०, जहाँ किसी का निवास न हो। ध्रनावरण, वि०, जो ढका न हो। ग्रनाविल, वि०, जो गन्दला न हो, साफ हो। ध्रनावुत्य, वि०, जहां कोई रहा न हो। धनासक, वि०, निराहार, ब्रती। ध्रनासव, वि०, ग्रास्तव-रहित, चित्त-मैल रहित। धनाळिहक, वि०, गरीव। ग्रनिक्कसाव,वि०, काषाय म्रथात् चित्त-मलों से युक्त। श्रनिखात, वि०, जो खोदा नहीं गया। ग्रनिघ, वि०, दुःख-रहित। ग्रनिच्च, वि०, ग्रस्थिर, ग्रनित्य। ग्रनिच्छमान, क्रिया-विशेषण; इच्छा न करे। प्रनिच्छा, स्त्री०, ग्रहचि। धनिञ्जन, नपुं०, स्थिरता। धनिट्ठ, वि०, धनिष्ठ, जिसकी इच्छा न हो। म्मनिट्ठत, वि०, मसमाप्त । म्मनिन्दित, वि॰ निन्दा-रहित। म्रनिन्दिय, वि०, म्रनिन्दनीय। ग्रनिमिस, वि०, बिना पलक अपके। मनियत, वि०, मनिश्चित ।

म्रनिल, पु॰, हवा म्रनिल-पय, पु०, म्राकाश। म्रनिवत्तन, नपुं०, रुकने का मभाव। ग्रनिसम्मकारी, वि०, विना विचार किये करने वाला, जल्दवाज । ग्रनिस्सर, वि०, ईश्वर के विना, ऐश्वयं के बिना। ग्रनीक, नपुं०, सेना भ्रनीघ, देखें ग्रानिघ। ग्रनीतिक, वि०, हानि-रहित। ग्रनीतिह, वि०, सुनी-सुनाई बात नहीं, स्वानुभव से ज्ञात। ग्रनुकंली, वि०, ग्राकांक्षा करने वाला इच्छा करने.वाला। अनुकंतति, क्रिया; फाड़ता है, काटता है, चीरता है। दयालु, ग्रनुकम्पा ग्रनुकम्पक वि०, करने वाला। ग्रनुकम्पति, क्रिया, ग्रनुकम्पा करता ब्रनुकरोति, क्रिया, नकल करता है। भ्रनुकस्सति, क्रिया, खींचता है दुहराता ग्रनुकार, पुल्लिंग, नकल, ग्रनुकृति । मनुकिण्ण, क्रिया-विशेशण, बिखेरा हुमा । ग्रनुकूल, वि, प्रतिकूल न होना, प्रनु-भाव, पु॰, प्रताप, अनुवात, पु॰, अनुकूल वायु। ग्रनुक्कम, पु०, कम । ग्रनुक्कमेन, वि०; कमानुसार। ग्रनुखुद्दक, वि०, कम महत्व की चीज। ग्रनुग, वि॰, पीछे चलनेवाला, जिसका मनुगमन होता हो।

धनुगच्छति, वि, पीछे चलता है। अनुगत, क्रिया-विशेषण, जिसका कोई घनुगामी हो। धनुगति, स्त्री०, धनुगमन करना। धनुगामिक, विशेषण, धनुगामी अनुगायति, किया, दूसरे गाने वाले के साथ-साय गाता है। धनुगाहति, किया, गोता लगाता है। धनुगिज्मति, किया, लोम करता है। धनुगण्णहाति, किया, धनुग्रह करता है। धनुगहित, किया-विशेषण, धनुगृहीत । अनुग्गाहक, विशेषण, अनुग्रह करने म्नुग्गिरन्त, क्रिया-विशेषण, न बोलते श्रनुग्घाटेति, क्रिया, उद्घाटन करता है। मनुबङ्गमित, क्रिया, साथ या पीछे-पीछे चंकमण करता है। धनुचर, पुल्लिग, धनुगामी। धनुचरण, न्पं०, ग्रम्यास । प्रनुचरित, क्रिया-विशेषण; प्रम्यस्त । अनुचिनाति, किया, संग्रह करता है धनुचिन्तेति, क्रिया, विचार करता है। अनुक्वारित, क्रिया-विशेशण, उच्चा-रण न किया गया। ध्रनुच्चिटठ,वि०, ऐसा मोजन जो जूठा नहीं किया गया। श्रनुच्छविक, वि०, योग्य, समीचीन । ध्रनुज, पु॰, भाई। ग्रनुजा, स्त्री०, बहन। धनुजात, वि०, धनन्तर उत्पन्न । धनुजानाति, किया, धनुमति देता है। यनुजीवात, किया, जीवित रहता है।

धनुजीवी, वि॰ जिसका जीवन किसी दूसरे पर निमंर हो। श्रनुजु, वि०, जो ऋजु न हो, टेढ़ा। श्रनुञ्जा, स्त्री०, श्रनुमति। श्रनुटठान, नपुं०, ग्रकिया-शीलता । अनुडसति, किया, डंक मारता है। ध्रनुडहति, क्रिया, जलाता है। ग्रनुतप्पति, किया, पछतावा करता है। ध्रनुतिट्ठति, क्रिया, १. पास खड़ा होता है, २. सहमत होता है अनुतीर, नपुं०, किनारे के पास। प्रनुत्तर, नपुं०, जिससे बढ़ककर कुछ नहीं, सर्वोत्तम । श्रनुत्तान,वि०,गहरा, जो उथला नहीं। २. ग्रस्पध्ट । ब्रनुत्युनाति, किया; चिल्लाता है, मनुताप करता है। धनुत्रासी, वि०, जो भयभीत नहीं। म्रन्थेर, पू०; स्थविर के द्वितीय। अनुददाति, क्रिया, देता है। श्रनुदिसा, स्त्री०, श्रनुदिशा। बनुद्या, स्त्री०, बनुकम्पा अनुद्दिटठ, वि०, जिसका संकेत नहीं किया गया, जिसका उच्चारण नहीं किया गया। ब्रनुद्धत, वि०, निरहंकारी। मनुद्धम्म, पु०, धर्मानुसार अनुघावति, किया, पीछे दौड़ता है। म्रन्तय, पु॰ मैत्री-माव। अन्नेति, क्रिया, संतुष्ट करता है। धनुप, धनूप, पु॰, गीली जमीन। धनुपकुट्ठ, वि०, निर्दोष ।

धनुपखज्जति, किया, दसल देता है। धन्पगच्छति, क्रिया, जाता है, वापिस ग्राता है श्रनुपघात, प्र०, श्रहिसा । धनुपचित, वि०, ग्रसंग्रहीत। ग्रनुषञ्जित्त, स्त्री०, उपनियम। ग्रन्पटिपाति, स्त्री०, कम, कमानुसार। श्रनुपटिठंत, वि०, श्रनुपस्थित, गैर-हाजिर। प्रनुपत्ति, स्त्री०, प्राप्ति। भ्रनुपद, वि०, पदानुसार, पीछे-पीछे। श्रनुपद्दव, वि०, उपद्रव का न होना। किया; विचार नहीं श्रन्पघारेति, करता है। ग्रनुपवज्जा, स्त्री०, किसी दूसरे से प्रभावित होकर प्रव्रजित होना। श्रनुपमेय, वि०, जिससे तुलना न की जा सके। ध्रनुपरिगच्छति, क्रिया, चारों भ्रोर घुमता है। ग्रनुपरिवत्तति, क्रिया लुढकता है। भ्रन्परिवेरति, क्रिया, घेर लेता है। ग्रन्पलित्त, वि०, जो लिवाड़ा नहीं, जिसको कुछ लगा नहीं। ग्रन्पवज्ज, वि०, निर्दोष । म्रन्विसति, किया, प्रवेश करता है। श्रनुपसम्पन्न, वि०, जो उपसम्पन्न नहीं हुमा । ग्रनुपस्सक, वि०, द्रष्टा। मनुपस्सति, किया । देखता है, विचार करता है। ग्रनुपस्सना, स्त्री; ग्रनुपश्यना, विचार करना। अनुपद्दत, वि॰ जिसे कुछ हानि नहीं

हुई, जो नष्ट नहीं हुमा। अन्पात, पु०, प्रपशब्द । प्रनुपादाय, पूर्व-िकया, विना विचार किये, विना समभे । ग्रनुपादान, वि०, ग्रनासक्त, विना इँघन के। धनुपादिसेस, वि०, ध्रशेष उपाधि के निरोध वाली (निर्वाण धातु) ग्रन्पापुणाति, किया, प्राप्त करता है। ग्रन्पापेति, किया, प्राप्त कराता है। ध्रनुपाय, पु॰, ध्रनुचित उपाय। धनुपायास, वि०, चिन्ता-रहित। ग्रन्पालेति, किया, पालता है। ग्रन्पाहन, वि०, बिना जुते के। ग्रन्पिय, कपिलवस्तु की पूर्व-दिशा में मल्ल-जनपद का एक नगर। ग्रन्युच्छति, किया, पूछता है, प्रश्न करता है। भ्रनुपुट्ठ, क्रिया-विशेषण, पूछा गया। ग्रन्पुब्ब, वि०, ऋमशः। ग्रन् पेक्खति, क्रिया, ध्यान देता है, विचार करता है। ग्रनुपेक्सना, स्त्री०, घ्यान, विचार। अनुपेसेति, किया, पीछे भेजता है। म्रन्पोसिय, वि०, जिसका पालन-पोषण करना हो। म्रनुप्पत्ति, स्त्री०; प्राप्ति । मन+ उप्पत्ति, जन्म का न होना। भ्रनुप्पबातु, पु॰, दाता, देने वाला। क्रिया, देता है, दे भ्रनुप्पदाति, डालता है। ग्रनुष्पन्न, वि०, जो उत्पन्न नहीं हुमा । मनुष्पीळ, वि; जो पीड़ित नहीं किया

गया, जिसे कष्ट नहीं दिया गया। धनुकरण, नपुं०, व्याप्त होना । धन्क्सोयति, किया; भिगोता है, छिडकता है। मनुबद्ध, किया-विशेषण; जिसका पीछ किया जाता हो। भ्रन्बन्धन, नपुं ०, बंधन, पोछा ध्रनुबल, नपुं; सहायता देना, समर्थन प्रनुबुज्भति, क्रिया, बोघ प्राप्त करता है, समभता है। ग्रन्ब्ज्भन, नपुं ०, बोध,ज्ञान । अनुबुद्ध, किया-विशेषण, बोध-प्राप्त, जानी; घल्पतर बुद्ध। भन्बोध, पु०, समभ, ज्ञान। धनुब्बजति, किया, धनुगमन करता धनुब्बत, वि०, श्रद्धावान्, धनु-वती। अनुव्यञ्जन, नपुं ०, दूसरे दर्जे के चिह्न अनुबृहेति, किया, बढ़ाता है। धनुमवति, किया, धनुभव करता है, खाता है। ध्रनभवन, नपुं०, ध्रनुभव बाना। मनुभाग, नपुं ०, गौण हिस्सा । श्रनुमायति, किया, डरता है। ग्रनुमाव, नपं ०, प्रताप, तेजस्विता। ब्रनुभासति, किया, दोहराता है। धनुभूत, किया-विशेषण; धनुभव में ग्राया हुग्रा। ग्रन्मज्जति, किया; यपयपाता है, ड्वकी लगाता है। गहराई में नीचे उतरता है।

धन्मज्भ, वि०, मध्यस्य। धनुमञ्जति, किया, स्वीकार करता है, सहमत होता है। ग्रन्मति, स्त्री०; सहमति, ग्रनुजा। घनुमान, To, अनुमान (---प्रमाण)। धन्मीयति, किया, धनुमान करता है, परिणाम पर पहुँचता है। ग्रन्मोदक, वि०, ग्रनुमोदन करने वाला, समर्थंक, प्रसन्त होने वाला। ग्रनुम्मत्त, वि०, जो (-पागल) नहीं। भ्रनुयात, किया-विशेषण, जिसके पीछे-पीछे कोई ग्राता हो। अनुयायी, वि०, अनुगामी। म्रन्युज्जति, त्रियां, किसी काम में लगता है। म्रन्युत्त, ऋया-विशेषण; किसी काम में लगा हुमा। ग्रन्योग, पु०, साधना । प्रनुयोगी, त्रिलिगी, साधक। धन्रव्खक, वि, रक्षक । श्रनुरक्लण, नप्, श्रनुरक्षण। मनुरक्खति, क्रिया, रक्षा करता है। धनुरक्खा, स्त्री०, धारक्षा । ग्रनुरक्लीय, वि०, संरक्षणीय। धनुरज्जति, किया, धाकषित होता है, मानन्दित होता है। अनुरत्त, किया-विशेषण; धासकत। यनुरव, पु०, गुंज। धनुरुद्ध स्थविर, ध्रमितोदन शाक्य का पुत्र तथा महानाम का भाई। भगवान् बुद्ध के प्रधान भिक्ष शिष्यों में से एक।

23

ग्रन्हप, वि०, ग्रनुक्ल। ध्रन्रोदति, किया, चिल्लाता है। धनुरोध, पु०, स्वीकृति, धनुकूलता। अनुलिम्पति, किया, अमिसिञ्चन करता है। ग्रनुलोम, वि०, सीधे कम से। धनुलोमेति, किया; कम का धनुगमन करता है। ध्रनुवज्ज, वि०, दोषभागी। श्रनुवत्तक, वि०, श्रनुगामी। श्रनुवत्तेति, किया, उत्तराधिकार होता है, भ्रनुकरण करता है। च्रनुवदति, क्रिया, दोषारोपण करता है। अनुवसति, किया, किसी रहता है। ग्रनुवस्सं, क्रिया-विशेषण, हर वर्षा काल में। य्रनुवस्सिक, वि०, वार्षिक । प्रनुवात, प्ं०, ग्रानुकूल-वायु । भ्रनुदाद, पु॰, दोवारोपण, (एक भाषा से दूसरी भाषा में) रूपान्तर। श्रनुवासेति, क्रिया; सुगन्धित करना। श्रनुविचरति, किया, इधर-उधर घूमता है। श्रनुविचिनाति, किया, विचार करता है, चिन्तन करता है। श्रनुविच्च, पूर्व-िकया, जानकर. परीक्षण कर। श्रनुविज्जक, पुं०, परीक्षक। मनुविज्भति, किया, बींघता है, परीक्षण करता है। ग्रनुवितक्केति, किया, तकं-वितकं करता है, मनन करता है।

म्रनुविधीयति, किया (विधी के) यनुसार याचरण करता है। ग्रनुविलोकेति, किया, निरीक्षण करता श्रनुवुट्ठ, किया-विशेषण, रहता हुमा, वास करता हुमा। ध्रनुब्यञ्जन, नप् ०,छोटे-मोटे चिह्न या लक्षण। ध्र नुसक्कति, किया, एक घोर हट जाता है, पीछे हट जाता है। श्रनुसंवच्छर, क्रिया-विशेषण; प्रति-ध्रनुसंचरति, किया; चलता-फिरता है घूमता है। क्रिया-विशेषण, श्रनुसट, सिञ्चित । ग्रनुसत्थर, पुं ० शिक्षक, उपदेशक। अनुसन्धि, स्त्री, मेल, परिणाम । अनुसय, पु॰, चित्त का भुकाव, चित्त की प्रवृत्ति (कृपथगामी) ग्रनुसरति, किया, ग्रनुगमन करता है, धनुस्मरण करता है। ग्रनुसवति, किया, चूता रहता है, बहता रहता है। भ्रनुसावक, वि०, सुराने वाला, घोषणा करने वाला। भ्रनुसावेति, किया, घोषणा करता है। ध्रनुसासक, पु०, ध्रनुशासन करने वाला, प्रवचन करने वाला। ध्रनुसासिक जातक, एक पेट्र मिक्षुणी के बारे में जेतवन में उपदिष्ट जातक कथा (सं ११५) श्रनुसिक्सति, किया, शिक्षा करता है।

अनुसुणाति, किया, सुनता है। अनुसूयक, वि०, ईर्पा-रहित। भनुसेति, किया, साथ लेटता है। भनुसोचति, क्रिया, सोचता पश्चाताप करता है। ब्रनुसोत, पु॰, स्रोत के धनुसार। प्रनस्सति, स्त्री०, जागरूकता, स्मृति । अनुस्सरण, नपुं०, अनुस्मरण। मनुस्सति, किया, मनुस्मरण करता है। धनुस्तव, पु॰, सुनी-सुनाई वात। ग्रनुस्सुक वि०, जो कुछ करने के लिए उत्सुक नहीं। अनुहसति, किया; हँसता है, मजाक करता है। भ्रन्त, विशेषण, भ्रन्यून, सम्पूर्ण। श्रनुपम, वि ०, जिसकी उपमा नहीं। श्रनूहत, वि०, जिसकी जड़ नहीं खुदी। ध्रनेक, वि०, बहुत से, एक नहीं, म्रनेज, वि०, तृष्णा-विहीन । भ्रनेघ वि०, इंधन-विहीन। धनेळ, वि०, निर्दोष। धनेळ-गल, ध्रनेल-मूग, गूंगा नहीं। भ्रनेसना, स्त्री०; (जीविका) की अनु-चित खोज। ध्रनोक, नपुं०; बे-घर ब्रनोकास, वि०, स्थान, समय या श्रवसर का अभाव। ध्रनोजा, स्त्री॰, नारंगी के रंग के फुलों वाला पौदा या उसके फूल। मनोतत्त,पु॰, हिमालय की कोई भील, सम्भवतः मानसरोवर। धनोतप्प, नपुं०, (पाप करने में) निभंय।

ग्रनोदक, वि०, जल-रहित। श्रनोदिस्सक, वि०, सर्व-सामान्य के लिए। धनोनमति, किया; नहीं भूकता है। ध्रनोम, वि०; श्रेष्ठ। धनोमा, स्त्री०, कपिलवस्त् के पूर्व की ग्रोर की ग्रनोमा नाम की नदी, जिसे गृहत्याग के धनन्तर सिद्धार्थ-गौतम ने सर्व-प्रथम पार किया। ध्रनोमज्जति, किया, (शरीर को हाथ से) मलता है। ध्रनोरपार, वि०, जिसका नहीं, न इस ग्रीर तीर, न उस ग्रीर तीर। ग्रनोवस्सक, वि०, वर्षा से बचा हुग्रा, वर्षा से स्रक्षित। ग्रन्त, पु॰, ग्राखिर, ग्रवसान। ग्रन्त-कर, वि०, ग्रन्तिम । ग्रन्त-गुण, नपुं०, ग्रान्त । ग्रन्तजातक देवदत्त के बारे में वेळ्वन में उपदिष्ट जातक कथा (२६५) धन्तक, पु॰ मृत्यु। श्रन्तमसो, श्रव्यय; श्रन्तिम दर्जे। धन्तर, नपुं० भेद, दूरी, भीतरी। भ्रन्तरकप्प, (दो) कल्पों के बीच। ग्रन्तरघर, नपुं०, घरों के बीच या गौव में। ग्रन्तर-साटक, नपुं • ग्रन्दर का वस्त्र । ग्रन्तरट्ठक, शीत-ऋतु, के ग्रत्यन्त ठण्डे घाठ दिन, जिस समय (भारत में) बर्फ गिरती है। म्रन्तरवन्तरा, क्रिया-विशेषण, जब-धन्तरधान, नवुं०, भ्रहस्य हो जाना,

ग्रन्तरघ्यान हो जाता। ग्रन्तरवासक, पू०, ग्रन्दर का वस्त्र, लुंगी या घोती की तरह पहना जाने वाला, चीवर। धन्तरंस, पु०, दो कन्धों के बीच की दूरी। श्चन्तरा, क्रिया-विशेषण, बीच में। ग्रन्तरा-मग्गे, बीच रास्ते में। धन्तरापण, पु०, दुकानों के बीच, बाजार। धन्तराय, पु०, बाधा, खतरा। भ्रन्तरायिक, वि०, वाधक कारण। अन्तराल, नपुं०, बीच की स्थिति। अन्तरिक, वि०, इसके बाद की स्थिति। अन्तलिक्ख, नपुं०, अन्तरिक्ष, आकाश ग्रौर पृथ्वी के वीच का ग्रवकाश। ग्रन्तवन्त्, वि०, ग्रन्तवान्, जिसका ग्राविर हो। ग्रन्तिक, वि०, सिरे पर; नपुं०, पड़ोस। ग्रन्तेपुर, नपुं०, १. नगर का भीतरी माग। २. महल का भीतरी माग, रनिवास। भ्रन्तेवासी, पु०, भ्राचार्य के रहने वाला, शिष्य। धन्तो, ग्रव्यय, ग्रन्दर। श्चन्दु, पु०, वेड़ी। प्रन्दु-घर, नपुं०, जेलखाना । ग्रन्धक, पु०, मनखी-विशेष। भ्रन्धक, विण, भ्रान्ध-प्रदेश का निवासी। ग्रन्धकविन्द, राजगृह से तीन गन्यूति की दूरी पर मगध-जनपद का एक गाँव। ग्रन्थक (-निकाय), स्थविरवाद से पृथक् हो जाने वाले मिक्षुग्रों का एक सम्प्रदाय। मन्धकार, पु०, ग्रन्धेरा, चिकत हो

जाना। ध्रन्धतम, पू० तथा नपुं०, घुप ग्रन्धेरा। ग्रन्न, नपुं०, मोजन। ग्रन्नद, वि०, भोजन-दाता । भ्रन्न-पान, नप्ं, खाना-पीना । ग्रन्वक्खर, वि०, ग्रक्षरानुसार। ग्रन्वगा, भूतकालिक किया, (वह) गया, उसने अनुगमन किया। अन्वगु, भूतकालिक क्रिया, (वे) गये, उन्होंने अनुगमन किया। ग्रन्वडढमास, क्रिया-विशेषण, हर पन्द्र-हवें दिन। ग्रन्वत्थ, वि०, ग्रयांनुसार। भ्रन्वदेव, भ्रव्यय, पीछे लगा होना । ग्रन्वय, प्०, मार्ग, ऋम, हेतु। भ्रन्वहं, क्रिया-विशेषण, दैनिक । ग्रन्वागच्छति, ऋिया, पीछे-पीछे ग्राता ग्रन्वाय, पूर्व-क्रिया, ग्रन्भव करके, हो करके। भ्रन्वायिक, वि०, नपुं०, भ्रनुगामी, साथी। भ्रन्वाहिण्डति, ऋिया, धूमता है। भ्रन्वेति, ऋया, पीछे-पीछे भाता है। भ्रन्वेसक, वि०, खोजने वाला, भ्रन्वेषक। ध्रन्वेसति, ऋिया, ग्रन्वेषण करता है। म्रन्ह, पु॰, दिन, (पूर्वाह्न, मध्याह्न भप-भ्रपकडढति, क्रिया, वाहर खींच लेता है, दूर खींच ले जाता है। भ्रपकरोति, ऋिया, भ्रपकार करता है। ग्रपकस्तति, क्रिया, एक ग्रोर खींच लेता है, हटा देता है।

प्रपकार, पु॰, बुराई, हानि, दुष्कमं। भ्रयक्कमति, क्रिया, चला जाता है। ध्रपगब्भ, वि०, १. फिर जन्म न ग्रहण करने वाला; २. अप्रगत्म। ध्रपगम, प्०, चले जाना, ध्रद्श्य हो जाना। ध्रपचय, पू०, निरोध, जन्म-मरण का निरोध। अपचायति, क्रिया, भादर करता है, गौरव करता है। ग्रपचायन, नपुं० पूजा, गौरव, ग्रादर। प्रवचायक, पूजा करने वाला। ग्रपच्च, नपुं०, सन्तान । ग्रपच्चक्ख, वि०, जिसका प्रत्यक्ष नहीं हमा। प्रपजित, नपुं०, हार। ग्रपण्णक, वि०, निर्दोष। प्रयण्णक जातक, ग्रनाथ पिन्डिक तथा उसके पाँच सी मित्रों को उपदिष्ट जातक-कथा (१) धपत्यट, वि०, जो फैला नहीं। प्रपत्यद्ध, वि०, उत्तेजना-रहित। प्रपत्थिय, वि०,जिसकी इच्छा करना ग्रयोग्य है। श्रपण, पु०, कुमार्ग । भ्रपद वि०, बिना पाद (= पाँव के चिह्न) के। श्रपदान, नपुं०, जीवनचर्या, ग्रनुश्रुति। धपदान, खुद्दक निकाय के पन्द्रह ग्रन्थों में से एक । इसमें मगवान बुद्ध के समकालीन पांच सी सैतालीस मिक्षुमों तया चालीस मिक्षणियों की जीवन-कथायें संग्रहीत हैं। ध्रपब्स, पु०, साक्षी, गवाही । ध्रपविसति, किया, साक्षी उपस्थित

करता है, उद्युत करता है। घपदेस, पु०, तर्क, कथन। ग्रपधारण, नपं०, ढक्कन । ग्रपनामेति, नपं०, हटाता है, दूर कर देता है। भ्रपनिदहति, त्रिया, छिपाता है। श्रपनिहित, क्रिया-विशेषण, छिपा हुग्रा। म्रपनुदति, त्रिया, हाँक देता है, दूर हटा देता है। म्रपनुदन, नपुं०, हटाना । म्रपनुदितु, पु०, हटाने वाला। भ्रपनेति, किया, दूर हटाता है। भ्रपमार, पु०, मृगी (रोग)। ग्रपयाति, किया, चला जाता है। भ्रपर, वि०, दूसरा, पश्चिमीय । भ्रपर-भागे, (भ्रधि-) बाद में। ग्रपरगोयान, पृथ्वी के चार महाद्वीपों में से एक। ग्रपरज्जु, क्रिया-विशेषण, ग्रगले दिन । भपरज्ञति, क्रिया, भ्रपराध करता है। भ्रपरद्ध, ऋिया-विशेषण, दोषी, ग्रस-फल। अपरंत, तृतीय संगीति के बाद अशोक ने जिन देशों में मिक्षुस्रों को धर्म प्रचारायं भेजा उनमें से एक। भ्रपरप्पच्चय, वि०, जो दूसरों पर निर्भर नहीं। ग्रपरसेलिय, ग्रन्धकों का एक उप-सम्प्रदाय । भ्रपराजित, वि०, जो जीता नहीं गया प्रपराष, पु०, दोष, कसूर। भ्रपरापरिय, वि०, निरन्तर, लगातार अपरिग्गहित, वि०, जिस पर अधिकार न किया गया हो।

ध्रपरिच्छिन्न, वि०, असीम । ग्रपरिमित, वि०, ग्रसीम। श्रपलायी, वि०, जो मागता नहीं। अपलालेति, क्रिया, लाड्-प्यार करता है। ग्रपलिबुद्ध, वि०, बाधा - रहित, स्वतंत्र। भ्रपलेखन, नपुं०, खुरचना, चाटना। श्रपलोकेति, क्रिया, ऊपर देखता है, ग्रनुज्ञा प्राप्त करता है। ऋपवरग, पू०, मुक्ति, निर्वाण । अपवत्तति, किया, घुम जाता है, चला जाता है। अपवदति, क्रिया, दोषारोपण करता है। अपवहति, किया, ले जाता है, हाँकता है। श्चपविद्ध, किया-विशेषण, फेंका गया, त्यागा गया। ग्रपसक्कति, क्रिया, चला जाता है, एक श्रोर चला जाता है। श्रपसब्य, नपुं०, दाहिनी स्रोर। म्रपसादन, नपुं०, निग्रह। ग्रपसादेति, त्रिया, निग्रह करता है। अपस्मार, (अपमार) मृगी। अपस्सय, पु०, ग्राश्रय, सहारा। ग्रपस्सेति, किया, ग्राश्रय ग्रहण करता है, सहारा लेता है। अपस्तेन, (-फलक), नपुं०, सहारे का तस्ता । श्रपहत्तु, पु०, हटाने वाला। अपहरित, किया, लूट ले है।

ग्रपांग, पु०, ग्रक्षि-कोण। ग्रवाकट, वि०, ग्रप्रकट, ग्रजात। ग्रपाकतिक, वि०, ग्रप्राकृतिक, ग्रस्वा-माविक । श्रपाची, स्त्री॰, पश्चिम दिशा। ग्रपाचीन, वि०, पश्चिमीय। श्रपाद, श्रपादक, वि०, बिना पांव के रेंगने वाला। ग्रपादान, नपुं०, पाँचवीं विमन्ति, पृथक्-करण। श्रपान,नपुं०, प्रश्वास । ग्रपापक, वि०, निर्दोष्, पापरहित । ग्रपापूरण, नपुं०, चाबीं। ग्रपापुरति, किया, खोलता है। ग्रपाय-पू०, नरक-लोक । ग्रवाय-गामी, वि०, दुरवस्था को प्राप्त होने वाला। ग्रपाय-मुख, नपुं०, दुरवस्था कारण। फजूलखर्च ग्रपाय-सहाय, 90, साथी। ग्रपार, वि०, विना पार के, विना छोर के। ग्रपारुत, वि०, खुला हुमा। प्रपालम्ब, पु०, गाड़ी के सहारे का तस्ता । द्यपि, ग्रव्वय, भी। ग्रपिच, किन्तु। म्रपित्, प्रश्नवाचक म्रव्यय। भ्रपिनाम, यदि हम । श्रपिस्स्, इतना । ग्रपिधान, नपुं०, ढक्कन । ग्रपिलापन, नपुं०, दोहराना। प्रापहालु, वि०, निर्लोभी।

ग्रपिहित, वि०, दका हुगा। म्रपुच्छ, वि०, स्रप्रश्न । भ्रपेश्लक, वि०, प्रतीक्षा करने वाला। भ्रपेक्खति, किया, प्रतीक्षा करता है। भ्रपेत, क्रिया-विशेषण, चला गया। भ्रपेति, क्रिया, चला जाता है। भ्रपेत्तेय्यता, स्त्री०, पिता की भ्रवज्ञा। प्रपेय्य, वि, जो पीने योग्य न हो। ग्रप्प, वि०, ग्रत्प, थोडा । घरपकसिरेण. क्रिया-विशेषण. कठिनाई से। ग्राप-किच्च वि० जिसे थोड़ा कार्य भ्रत्पिकण्ण, वि०, मीड-रहित, शान्त, बिखरा हमा। व्यपंगबम, वि०, निरमिमानी। भ्राप्यच्य, वि०, ग्रधिक कीमती नहीं। ग्रप्पच्चय, प्०, विना हेत् के। प्रत्यदिखिप, वि०, प्रतिक्षेप करने के ग्रयोग्य। भ्रप्पटिघ, वि॰, बिना विरोध के, बिना क्रोध के। म्रप्पटिपुग्गल, पु०, ऐसा म्रादमी जिसका मकाबला न हो। ग्रप्पटिबद्ध, वि०, ग्रनासक्त । म्रप्पटिभाग, वि०, हिस्सेदार न होना। भ्रत्यदिमाण, वि०, पलटकर उत्तर न देने वाला, चिकत होने वाला। भ्रप्पटिम, वि०, भ्रतुलनीय। ग्रप्यटिवत्तिय, वि०, जो उल्टा घमाया जा सके। भ्रप्पटिबानी वि०, पीछे न हटने वाला। भ्रप्पटिविद्ध वि०, भ्रप्राप्त, भवुद्ध। भ्रपटिसंसा, स्त्री॰, समक्ष या ज्ञान का

ग्रमाव। म्रप्पटिसंधिक, वि०, प्रति सन्धि (= पूनर्जन्म) के अयोग्य। भ्रप्पणा, स्त्री०, किसी वस्तू पर ध्यान एकाग्र करना। ग्रप्पणिहित, वि०. इच्छा-रहित. कामना-रहित । म्रप्पतिट्ठ, वि०, ग्रसहाय । म्रप्पतिस्सव, वि०, विद्रोही। ग्रप्तीत, वि०, ग्रप्रसन्न । श्रप्पद्टठ, वि०, श्रक्तु, श्रद्घ्ट । ग्रप्पधंसीय, वि०, घ्वंश न करने योग्य । म्रप्पमञ्जा, स्त्री०, मैत्री, करुणा, मदिता तथा उपेक्षा. चारों ग्रसीम भावनाएँ। ग्रप्पमत्त, वि०, जागरूक, ग्रप्रमादी। भ्रप्पमाण, वि०, असीम। म्रप्पमाद, वि०, ग्रप्रमाद, जागरूकता। म्रप्पमेय्य, वि०, जो मापा न जा सके । ग्रप्यवत्ति, स्त्री०, ग्रप्रवृत्ति, ग्रमाव। श्रप्यसाद, पू॰, ग्रप्रसाद, ग्रसन्तोष । भ्रप्प-सत्य, वि०, थोडे काफिले वाला। ग्रप्पसत्थ, वि०, ग्रप्रशंसित । ग्रप्यसन्न, वि०, ग्रप्रसन्न । ग्रप्पसमारम्म, वि०, विशेष कष्टकर नहीं। ग्रप्पस्सक, वि०, निर्धन, दरिद्र। भ्रत्पस्साद, वि०, भ्रत्प-भ्रास्वाद। ग्रप्पहीन, वि०, ग्रविनष्ट। भ्रप्पाणक, वि०, प्राण-रहित, कीड़े-मकौड़ों रहित । भ्रप्पातञ्क, वि०, भ्रातंक-रहित, रोग-रहित। भ्राप्पिच्छ, वि०, भ्रत्पेच्छ, भ्रासानी से

संतुष्ट हो जाने वाला। म्राप्पिय, वि०, म्रप्रिय। भ्रप्पेकदा, क्रिया-विशेषण, कभी-कभी। भ्राप्वेव, भ्रष्पेवनाम, भ्रव्यय, भ्रच्छा है, यदि ऐसा हो। ग्रप्पेसक्क, वि०, ग्रधिक प्रभावशाली नहीं। ग्रप्पोसुक्क, वि०, (ग्रल्प + उत्सुक), श्रनुत्साही। म्राप्कट, वि०, ग्रस्पृष्ट, जो छुम्रा नहीं गया । भ्रष्फोटेति, क्रिया, उंगलियां चटखाता है, ताली बजाता है। श्रफल, वि०, निष्फल। ग्रफस्सित, वि०, जिसे स्पर्श नहीं किया। श्रफासु, वि०, ग्रसुविधा, कठिनाई। ऋफेग्यूक, वि०, दुर्बल नहीं, सबल, मज-वूत। ग्रबद्ध, ग्रबन्धन, वि०, बन्धन-मुक्त, स्वतंत्र । ग्रवल, वि०, दुर्वल । ग्रवला, स्त्री० ग्रीरत । खडबण, वि०, ज्ञण-रहित। भ्राब्बत, वि०, भ्र-ब्रत, व्रत-विहीन । भास्त्रद, नपुं०, गर्माधान के पहले या दूसरे महीने में गर्म की स्थिति । ग्रब्बोिकण्ण, वि०, सतत, लगातार, विघ्न-रहित। भ्रव्योच्छिन, वि०, सतत, बाघा-रहित। भ्रब्बोहारिक, वि०, भ्रव्यावहारिक, गैर कान्नी। ग्रब्भ, नपुं०, ग्राकाश, बादल। श्रब्मकूट, नपुं०, बादलों का शिखर। श्राहम-पटल, नपुं०, बादलों का समूह।

ग्रब्मक, नपं०, सीसा, ग्रबरक। ग्रबमक्खाति, किया, निन्दा करता है, विरुद्ध बोलता है। म्रब्भक्खान, नपुं०, मिथ्या दोषारोपण। ग्रवमञ्ज्ञति, क्रिया, तेल की मालिश करता है। ग्रन्भतीत, वि०, जो गुजर गया। श्रवमनुमोवति, क्रिया, श्रत्यधिक संतोष प्रकट करता है। भ्रबभन्तर, नपं०, भीतर, भन्तर। प्रबमन्तर जातक, विम्बादेवी के लिए सारिपुत्र द्वारा ग्राम्न-रस प्राप्त किए जाने के सम्बन्ध में जातक-कथा (2= 2) 1 ग्रब्भागत, त्रिलिङ्गी, ग्रतिथि, मेहमान । श्रवमागमन, नप्०, श्रागमन । श्रदमाघात, नपुं०, (ग्रमि + ग्राघात) वध-स्थल। ग्रब्भाचिक्खति, क्रिया, दोषारोपण करता है। म्राज्यान, नपुं०, मावाहन, प्रायश्चित करने के अनन्तर मिक्ष को वापिस लौटाना । ग्रब्माहत, क्रिया-विशेषण, ग्राक्रमित, जिस पर ग्राक्रमण किया गया। म्रान्ध्रिकरण, नपुं०, बाहर खींचना, सींचना । ग्रब्भुगच्छति, क्रिया, ऊपर जाता है। ध्रक्रुगमन, नपुं०, ऊपर उठना। भ्रब्भुतघम्म, धमं के नौ ग्रंगों में से एक। ग्राइचर्यकर-प्रकरण। ब्रब्भुदेति, क्रिया, ऊपर उठता है। म्राज्यनत, वि०, ऊपर उठा। ग्रब्भूम्मे, ग्रव्यय, ग्रोह !

प्रक्यूय्याति, क्रिया, चढ़ाई करता है। ध्रम्भुसूयक, वि०, उत्साही । भग्मेति, क्रिया, ग्रावाहन करता है। ग्रवमोकास, पुं०, खुला-ग्राकाश । प्रक्रोकरित, क्रिया, सिचन करता है, ग्रमिषेक करता है। ग्रमब्बो, वि०, ग्रयोग्य। प्रभय, वि०, निर्मय। ग्रमाय, पु०, लोप, ग्रदर्शन, न होना। प्रमावित, वि०, ग्रनम्यस्त । ग्रमिकंखति, किया, इच्छा करता है, कामना करता है। ग्रभिकंखन, नपुं०, इच्छा, कामना । मिकिरति, किया, विखेरता है। ग्रमिकीळति, त्रिया, खेलता है। ध्रमिकूजति, क्रिया, गुंजा देता है। श्रभिक्कन्तं, ग्रव्यय, ग्रत्यन्त सुन्दर। म्रभिक्कमति, क्रिया, चल देता है। प्रमिक्खण, वि०, निरन्तर, प्रति-क्षण। ग्रभिक्खणित, त्रिया, खोदता है। म्रमिगज्जति, किया, गर्जता है। श्रमिगज्जन, नपुं०, गर्जना । म्रिमघात, पु०, १. सम्पर्क, २. हत्या । श्रमिघाती, पु०, घात करने वाला, शत्रु। म्रभिचेतसिक, वि०, चित्त-सम्बन्धी। प्रमिचेतेति, क्रिया, सोचता है। मभिजन्म, वि०, ग्रमिजात, उन्नकुलो-त्यन्त । म्रमिजप्पति, ऋया, जाप करता है, इच्छा करता है, प्रार्थना करता है। प्रजिजाति, स्त्री०, १. पुनर्जन्म, २. वर्ग-विशेष। मभिजानन, नपुं०, पहचानना, याद करना।

म्रमिजानाति, क्रिया, सम्यक् प्रकार जानता है। भ्रमिजायति, क्रिया, उत्पन्न होता है। म्रमिजिगिज्भिति, ऋिया, ग्रत्यन्त इच्छा करता है। श्रमिजिगिज्भन, नपुं०, ग्रत्यन्त लोम । म्रमिजिगिसति, किया, जीतने की इच्छा करता है। ग्रमिज्जमान, वि०, जो टूटे नहीं, जो 'पृथक न हो। ग्रभिज्झा, स्त्री०, ग्रत्यन्त लोम। म्रभिज्ञायति, किया, इच्छा करता है। ग्रभिञ्ज, वि०, जानकार। ग्रमिञ्जा, स्त्री०, विशिष्ट ज्ञान। श्रमिञ्जाय, पूर्व-िजया, मली प्रकार जानकर। ग्रमिञ्जात, क्रिया-विशेषण, प्रसिद्ध। ग्रभिण्हजातक, कुत्ते ग्रौर हाथी की कथा, जो ग्रमिन्न मित्र बन गए थे (२७)। ग्रमिण्ह, वि०, लगातार। म्रिमण्डं, क्रिया-विशेषण, प्रायः। म्रिमण्हसो, क्रिया-विशेषण, सदैव । ग्रमितप्त, क्रिया-विशेषणं, तपा हुग्रा। म्रमितप्ति, त्रिया, तपता है। म्रामताप, पु॰, ऊष्णता । ग्रमिताळित, क्रिया-विशेषण, ताड़ित। मिताळे ति, त्रिया, ताड़ता है। म्रमितिट्ठति, ऋिया, बाजी मार ले जाता है, ग्रागे बढ़ जाता है। श्रमितो, प्रव्यय, चारों ग्रोर से। ग्रभितोसेति, किया, ग्रच्छी तरह संतुष्ट करता है। ग्रमियनति, क्रिया, गर्जता है। म्रमियरति, किया, जल्दी करता है।

ग्रभित्यवति, किया, प्रशंसा करता है। श्रमित्यवि, भूत-काल, प्रशंसा की। ग्रभित्युत, किया-विशेषण, प्रशंसित । म्रिमित्युनाति, किया, प्रशंसा करता है। श्रमित्युनि, भूत-काल, प्रशंसा की। श्रभिदोस, पू०, गत-सन्ध्या । ग्रमिदोसिका, वि०, गत-सन्घ्या-सम्बन्धी। श्रमिधमति, क्रिया, बजाता है। श्रमिधम्म, पु०, ग्रमिधम्मपिटक की विश्लेषणात्मक देशना । म्रिमधन्म पिटक, तीन पिटकों में से एक । इसके अन्तर्गत सात अन्थ हैं-(१) धम्मसङ्गिन (२) विभंग। (३) कथावत्यु। (४) पुग्गलपञ्जत्ति । (५) धातु-कथा। (६) यमक (७) पट्ठान । ग्रमिधम्मिक, वि०, ग्रमिधमं जाता। ग्रमिधा, स्त्री०, नाम या संज्ञा। ग्रमिधान, नपुं०, नाम या संज्ञा। ग्रमिधानप्पदीपिका, बारहवीं शताब्दी में लिखा गया पालि-कोश। इसकी रचना संस्कृत ग्रमर-कोश के ढंग पर हुई है। म्रमिघावति, किया, दौड़ता है। म्रमिधेय्य, वि०, नाम वाला। ग्रभिषेय्य, नपुं०, ग्रथं। ग्रमिनदति, त्रिया, नाद करता है।

ग्रभिनदित, नपुं०, ग्रावाज।

श्रमिनन्दति, क्रिया, ग्रानन्दित होतां है।

ग्रमिनन्दी, वि०, ग्रानन्द मनाने वाला। श्रमिनमति, किया, भुकता है। म्रमिनय, नपुं०, नाटक। ग्रमिनयन, नपुं०, १. लाना, २. पूछ-ताछ। भ्रमिनव, वि०, नया, ताजा। श्रभिनादित, गुंजा दिया गया। श्रमिनिक्जित, पितयों की श्रावाज से गंजा दिया गया। ग्रभिनिक्खमित, किया, ग्रभिनिष्कमण करता है, गृह त्याग करता है। म्रिनिक्खमन, नपुं०, ग्रिमिनिप्कमण, गृहत्याग । म्रिनिविखपति, किया, रख देता है। श्रमिनिविखपन, नपुं०, रख देना। म्रमिनियज्जति, ऋया, लेट जाता है। श्रमिनिपतति, किया, नीचे गिरता है, ग्रागे बढ़ता है। म्राभिनिप्पीळे ति, किया, पीड़ा देता है, पीडता है। म्रमिनिष्फज्जति, ऋिया, उत्पन्न होता है, समयं होता है। ग्रभिनिष्फत्ति, स्त्री॰, ग्रमिनिष्पत्ति, उत्पन्न हाना, समर्थ होना। ग्रभिनिष्फादेति, ऋिया, ग्रमिनिष्पादन करता है, उत्पन्न करता है। ग्रमिनिब्बत, किया-विशेषण, उत्पन्न, जन्म ग्रहण किया हुआ। ग्रभिनिब्बत्ति, स्त्री०, जन्म ग्रहण करना, उत्पत्ति। ग्रमिनिब्बत्तेति, क्रिया, जन्म ग्रहण करता है। ग्रमिनिन्बिदा, स्त्री०, वैराग्य। म्रिनिब्बत, वि॰, पूर्ण शान्त, पूर्ण

बुभा हुमा। प्रभिनिमंतेति, किया, निमंत्रण देता है। ग्रमिनिम्मिणाति, किया, उत्पन्न करता है, निर्माण करता है। श्रमिनिरोपन, नपुं०, ग्रपने चित्त को लगाना । म्रभिनिरोपेति, त्रिया, ग्रपने चित्त में स्यान देता है। श्रमिनिविसति, किया, ग्रासक्त होता म्मिनिवेस, पु०, भुकाव। श्रमिनिसीदति, क्रिया, पास बैठता है। श्रमिनीत, त्रिया-विशेषण, लाया गया। ध्रमिनीहट, क्रिया-विशेषण, बाहर लाया गया। मिनीहरति, क्रिया, बाहर लाता है। श्रभिनीहार, पु॰, संकल्प, अधिष्ठान। अभिपत्येति, क्रिया, कामना करता है, इच्छा करता है। श्रमिपालेति, क्रिया, पालन करता है, संरक्षण करता है। मिषीळे ति, किया, पीड़ा पहुँचाता है, पीड़ता है। म्मिपुच्छति, त्रिया, पूछता है। मिमपुरति, किया, पूरा करता है। ममिप्पकीरति, किया, विखेरता है। श्रमिष्पमोदति, क्रिया, श्रानन्दित होता श्रभिष्पसाद, पु॰, श्रद्धा, भक्ति। मिष्पसारेति, किया, पसारता है, फैलाता है। श्रमिप्पसीदति, किया, श्रद्धावान् होता है। धमिमवति, किया, जीत लेता है।

म्रभिमवन, नपुं , जीत। ग्रभिमवनीय, वि०, जिसे जीत लेना चाहिए। श्रभिमू, पु॰, विजेता। म्रभिमृत, क्रिया-विशेषण, विजित । ग्रभिमञ्जल, वि०, माञ्जलिक। श्रमिमण्डित, ऋिया-विशेषण, सजाया गया। म्रामिमत, वि०, इच्छित। धमिमत्यति, किया, मयता है। ग्रिमिमहति, किया, मदंन करता है। श्रमिमद्दन, नपुं०, मर्दन । श्रभिमनाप, वि०, बहुत अच्छा लगने वाला। ध्रमिमान, पु०, स्वामिमान । म्रमिमार, पु०, डाकू। ग्रभिमुख, वि०, उपस्थित,ग्रामने-सामने। ग्रमियाचित, किया, याचना करता है। म्रमियाचन, नपुं०, याचना । श्रमियाति, किया, विरुद्ध जाता है। म्रमियुज्जति, किया, अभ्यास करता है। ग्रमियोग लगाता है। म्रियुज्यति, किया, भगड़ा करता है। श्रमियुञ्जन, नपुं०, मुकद्मा। श्रभियोग, पु०, अभ्यास, दोवारोपण। मनियोगी, पु०, ग्रम्यासी, दोषारोपण करने वाला। ध्रमिरक्खति, किया, रक्षा करता है। ग्रमिरक्सन, नपुं०, रक्षा। मभिरति, स्त्री०, प्रीति, ग्रासक्ति । ग्रमिरदि, स्त्री०, संतोष । मिरमति, किया, रमण करता है, मोग मोगता है। धमिरमन, नपुं०, भोग।

श्रमिरमन श्रभिरमापेति, ऋिया. कराता है। ग्रिभराम, वि०, ग्रनुकूल। म्रमिर्वान, स्त्री०, इच्छा, कामना। ग्रभिरुचिर, वि०, ग्रत्यन्त सुन्दर। श्रभिरुव, वि०, गुंजता हुआ। धिमारूप, वि०, सुन्दर। श्रभिक्हति, किया, ऊपर चढ़ता है। ग्रभिक्हन, नपुं०, चढ़ाई। ग्रमिरोचेति, किया, पसन्द करता है। श्रमिरोपन, नपुं०, चित्त की एकाग्रता। धमिरोपेति, किया, चित्त को एकाग्र करता है। ग्रमिलविखत, किया - विशेषण, चिह्नित। श्रभिलक्खेति, किया, चिह्न लगाता ग्रमिलाप, पु॰ बोलना, बातचीत। श्रभिलासा, स्त्री, श्रमिलाषा। श्रभिलेखेति, ऋिया, चिह्न लगवाता है। म्रिमवञ्चन, नपुं०, ठगी। म्रमिवट्ठ, त्रिया-विशेषण, जिस पर वर्षा हुई हो। म्मिवडढिति, किया, बढ़ता है। म्रमिवडढन, नपुं०, वृद्धि। म्रभिवण्णित, क्रिया-विशेषण, प्रशंसित। ग्रमिवण्णेति, किया, प्रशंसा करता है। म्राभवदति, क्रिया, घोषणा करता है। ग्रभिवंदति, क्रिया, वन्दना करता है। धमिवस्सति, किया, वरसता है। म्रिभवादन, नपुं०, नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत्। म्रभिवादेति, किया, दण्डवत् करता है। ममिबायति, त्रिया, हवा चलती है।

ग्रमिवारेति, किया, रोकता है। भ्रमिविजयति, किया, जीतता है। ग्रमिविञ्जापेति, क्रिया, प्रेरित करता ग्रभिवितति, किया, बाँटता है। म्रमिवितरण, नपुं०, दान। ग्रमिविसिटठ, विशेषण, ग्रत्यन्त विशेष । क्रिया-विशेषण, ग्रमिसंखत, संस्कृत, रचा गया। ग्रभिसंखरोति, किया, रचता है। ग्रमिसङ्घार, पु०, संस्कार। ग्रमिसङ्घारिक,वि०, संस्कार-सम्बन्ध, संस्कार से उत्पन्न। भ्रमिसङ्ग, पु०, भ्रासक्ति। ग्रभिसङ्गि, वि०, ग्रासक्त । श्रभिसज्जति, किया, कोधित होता है। ग्रमिसज्जन, नपुं०, कोघ । ग्रमिसञ्चेतेति, किया, विचार करता है। श्रमिसट, क्रिया-विशेषण, समागत। ग्रमिसत्त, क्रिया-विशेषण, ग्रमिशप्त । ग्रभिसद्दहित, ऋिया, श्रद्धा करता है। श्रमिसंतापेति, किया, जलाता है। म्रमिसंद, पु॰, उतराना, परिणाम । म्रमिसंदहति, क्रिया, जोड़ता है, मेल विठाता है। ग्रभिसंदेति, क्रिया, उतराना करवाता म्रमिसपति, क्रिया, शाप देता है, शपय खाता है। म्रभिसपन, नपुं०, शाप, कसम । ममिसमय, पु०, स्पष्ट ज्ञान ।

म्रिमसमागच्छति, क्रिया, पूर्णरूप से समभ लेता है। ग्रमिसमाचारिक, वि०, सदाचार सम्बन्धी । म्रिभसमेच्च, पूर्व-क्रिया, भली प्रकार समभकर। श्रमिसमेति, किया, सम्पूर्ण रूप से हृदयंगम कर लेता है। म्रिमसम्पराय, प्०, भावी पूनर्जन्म, परलोक। धमिसम्बुज्भति, किया, सम्बोधि प्राप्त करता है। श्रमिसम्बुद्ध, क्रिया-विशेषण, सम्पूर्ण ज्ञानी। ग्रभिसम्बोधि, स्त्रीव, पूर्णज्ञान । धमिसम्भव, क्रिया-विशेषण, दुप्प्राप्य। ध्रमिसम्भूनाति, त्रिया, समर्थं होता है। ग्रभिसम्मति, क्रिया, रुकता है, शान्त होता है। श्रमिसर, अनुयायी (अमिसरण करने वाले)। ममिसाप, पु०, ग्रमिशाप। ग्रमिसारिका, स्त्री०, राज-सेविका। ग्रमिसिञ्चति, किया, ग्रमिषेक करता है, (जल) छिड़कता है। म्रामिसेक, पु०, ग्रमिषेक। ग्रमिहट, क्रिया-विशेषण, लाया गया। ग्रमिहनति, क्रिया, चोट पहुँचाता है, मारता है। ग्रमिहरति, त्रिया, लाता है, मेंट करंता है। श्रमिहार, पु॰, समीप लाना, भेंट। धमिहित, किया-विशेषण, जो कहा

गया। धमीत, वि०, निमंय। ग्रमीरुक, वि०, निर्मीत । म्रभूत, वि०, सत्य, यथार्थ। ध्रमेज्ज, वि०, जो बाँटा न जाय, जो चीरा न जाय। ग्रभोज्ज, वि०, ग्रखाद्य। ग्रमच्च, पु०, १. ग्रमात्य, २. साथी। धमज्ज, नपुं०, ग्रमद्। ग्रमज्जप, वि०, जो शराबी नहीं। ग्रमत, नपुं०, ग्रमृत। ग्रमत्त, वि०, जिसे नशा नहीं चढ़ा। ग्रमत्तञ्ज, वि०, जिसे (भोजन की) मात्रा का ज्ञान नहीं। म्रमत्तेय्य, वि०, माता के प्रति ग्रगौरव। ग्रमनुस्स, पु॰, १. भूत-प्रेत, २. देवता। ग्रमम, वि०, निलॉभी। ग्रमर, वि०, १. जो मरे नहीं, २. देवता। ग्रमरत्त, नपुं०, ग्रमरत्व। ग्रमरा, स्त्री॰, फिसलनी मछली। ग्रमल, वि०, निर्मल। ग्रमस्सुक, वि०, विना दाढ़ी के। ग्रमातापितिक, वि०, मात्-पित् हीन। श्रमातिक, वि०, मात्हीन। ग्रमानुस, वि०, ग्रमनुष्य। ग्रमायाबी, वि०, जो मायाबी नहीं, छल-कपट रहित । ग्रमावसी, स्त्री०, ग्रमावस्या। प्रमित, वि०, ग्रसीम । ग्रमिताभ, वि०, ग्रनन्त ग्रामा वाले। धमिता, सिहहन् की दो पुत्रियों में से एक । श्रुदोधन की बहन । वेववस्त की मा ।

श्रमितोदन, सिहहनु का पुत्र । शुद्धोधन का माई। महानाम तथा भ्रनुरुद्ध का पिता। श्रमिलात, दि०, जो म्लान नहीं, जो मुरभाया नहीं। ग्रमिस्स, वि०, ग्रमिश्रित । श्रमु, सर्वनाम, ग्रमुक । प्रमुच्छित, वि०, ग्रमूढ़, निर्लोमी। श्रमुत्त, वि०, ग्रमुक्त, वन्धन-युक्त। ग्रमुत्र, क्रिया-विशेषण, ग्रमुक स्थान ग्रमोघ, वि०, निष्प्रयोजन नहीं, वेकार नहीं। श्रमोह, पु०, प्रज्ञा। भ्रम्ब, पु०, ग्राम्र, ग्राम । श्रम्ब-श्रंकुर, पु०, ग्राम का ग्रंकुर। भ्रम्ब-परक, नपुं०, पका ग्राम । श्चम्ब-पान, नपुं०, ग्राम का पन्ना। भ्रम्ब-पिण्डी, स्त्री०, ग्रामों गुच्छा। भ्रम्ब-वन, नपुं०, भ्राम्न-वन। ध्रम्ब-सण्ड, पु०, ग्रामों का बगीचा। ग्रम्ब-लद्ठिका, स्त्री॰, ग्राम का पौदा । धम्ब-जातक, सूखे के समय हिमालय में रहने वाले एक तपस्वी ने जानवरों के लिए जल की व्यवस्था की थी। कृतज्ञ जानवर उसके लिए अनेक उपहार लाए थे (१२४)। ग्रम्ब-जातक, बुद्धिमान चाण्डाल से शिल्प सीखने वाले ब्राह्मण की कथा (808) 1 भ्रम्बचोरजातक, ग्राम्नवंन में अपने लिए एक कुटी बनाकर रहने वाले दुष्ट तपस्वी की कथा (३४४)। धम्ब-पाली, वैशाली की प्रसिद्ध गणिका जिसने ग्रपना ग्राम्रवन बुद्ध-प्रमुख मिक्षु-संघ को दान दिया था। ग्रम्बर, नपुं०, १. वस्त्र, २. ग्राकाश। श्रम्बा, स्त्री॰, माँ। ग्रम्बिल, वि०, सट्टा। ग्रम्बु, नपुं०, पानी। ग्रम्बुचारी, पु०, मछली। ग्रम्बुज, वि०, जलज। ग्रम्बुज, नपुं, केवल । भ्रम्बुघर, पु०, बादल। भ्रम्बुजिनी, स्त्री०, कॅवल का तालाव। धम्भो, प्रव्यय, प्ररे पुरुष ! ग्रम्म, ग्रव्यय, मां ! ग्रम्मण, नपुं०, धान का माप-विशेष। ग्रम्मा, स्त्री॰, मां ! ग्रम्ह, सर्वनाम, हम। ग्रम्हि, किया, (मैं) हूँ। म्रम्ह, ग्रम्हा, क्रिया, (हम) हैं। धय, पु०, भाय। भ्रयस्, पु॰ तया नपुं, लोहा या तांबा। भ्रय-कूट जातक, बोधिसत्व ने जान-वरों की हत्या बन्द कराई (३४०)। भ्रयं, सर्वनाम, यह (व्यक्ति)। भ्रयया, ग्रव्यय, ग्रयथायं, मिथ्या । म्रयन, नपुं०, मार्ग, पय। भ्रयस, पु॰ तथा नपुं॰, भ्रपयश । धयुत्त, वि०, ग्रयोग्य । ग्रयुत्त, नपुं०, ग्रन्याय। प्रयो-कूट, लोहे का हयोड़ा। ग्रयो-स्रोल, नपुं०, लोहे का कीला। धयोगुळ, पु॰, लोहे का गोला।

श्रयो-धन, नप्ं, लोहे का धन। मयो-मय, वि०, लोह-निर्मत । भयो-संकु, पु॰ लोहे का काँटा। ध्रयो-घर जातक, बोधिसत्व के लोहे के घर में जन्म ग्रहण करने की कथा (४१०)। श्रयोगा, वि०, श्रयोग्य । ध्रयोज्भ, वि०, जिसके विरुद्ध युद्ध न किया जा सके। म्रयोनिसो, क्रिया-विशेषण, अनुचित तौर पर। चय्य, पु०, ग्रायं, स्वामी । ग्रय्य-पुत्त, पु०, स्वामी-पुत्र । ग्रयक, पु॰, पितामह। ग्रयका, ग्रय्यिका, स्त्री०, पितामही। ग्रय्या, स्त्री०, ग्रार्या, स्वामिनी । भ्रर, नपुं०, पहिये की तीली ग्रारा। धरक जातक, बोधिसत्व ने शिप्यों को चार ब्रह्म-विहारों (मैत्री, करुणा, मुदिता तथा उपेक्षा) की शिक्षा दी (१६६)। सुरक्षित न ग्ररिक्खय, वि०, जिसे रखा जा सकता हो। ग्ररक्लेय्य, वि०, जिसे ग्रारक्षा की ग्रावश्यकता न हो। ग्ररघट्ट, नप्ं, रहट। भ्ररज, वि०, रज-रहित। श्चरञ्ज, नपुं०, श्चरण्य, जंगल। ग्ररञ्जक, वि०, ग्रारण्य में रहने वाला। भ्ररञ्जगत, वि०, जंगल में गया हुआ। भ्ररञ्ज वास, पु०, भ्रारण्य-निवास । ग्ररञ्ज-विहार, पु०, ग्रारण्य-विहार।

अरञ्ज-जातक-मार्या की मृत्यु के ग्रनन्तर बोधिसत्व हिमालय जाकर पुत्र सहित तपस्वी जीवन विताने लगे। वहाँ एक लड़की ने तरुण का शील मञ्ज किया (३४८)। ग्ररञ्जानी, स्त्री०, एक बड़ा जंगल। श्ररण, वि०, शान्त चित्त। भ्ररणि, स्त्री०, रगड़कर आग पैदा करने के लिए लकड़ी का एक ट्कड़ा। भ्ररणि-मथन, नपुं०, भ्राग पैदा करने के लिए लकड़ी के दो टुकड़ों को रगडना । भ्ररणि-सहित, नपुं०, रगड़ने के लिए ऊपर की लकड़ी। धरति, स्त्री०, ग्रहचि । श्ररती, मार की तीन कन्याओं में से एक । शेष दो हैं तण्हा (=तृष्णा) तथा रगा (=राग?)। श्चरविन्द, नपुं०, कॅवल । भ्ररह, वि०, योग्य। श्ररहद्वज, पु०, ग्रहंत्-ध्वजा, भिक्षु का काषायवस्त्र । भ्ररहति, ऋया, योग्य होता है। ग्ररहत्त, नपुं०, ग्रहंत्व। ग्रहंत-फल, नपुं०, ग्रहत्व-फल। ग्ररहत्त-मग्ग, प्०, ग्रहंत्व-प्राप्ति का मार्ग । ग्ररहन्त, पु॰, जिसने ग्रहंत्व-फल प्राप्त कर लिया। घरि, पु०, शत्रु। ग्ररिंदम, त्रिलिङ्गी, विजेता। धरिञ्चमान, वि०, न छोड़ते हुए, सतत प्रयास करते हुए। श्ररिट्ठ, वि०, निदंयी, ग्रमागा। ग्ररिट्ठ, पु०, १. कीग्रा, २. नीम का पेड़, ३. रीठे का पेड़। ग्ररित्त, नपं०, पतवार। ग्ररित, वि०, (ग्र+रिक्त) वेकार नहीं। ग्ररिय, वि०, श्रेष्ठ। म्ररिय, पु०, श्रेष्ठ ग्रादमी। ग्ररिय-कन्त, वि०, श्रेष्ठों के ग्रनुकुल। ग्ररिय-धन, नपुं०, ग्रायों का श्रेष्ठ घन । ग्ररिय-घम्म, प्०, श्रेष्ठ धर्म। ग्ररिय-पुगाल, पु०, श्रेष्ठ व्यक्ति (जिसने ग्रायं-ज्ञान प्राप्त कर लिया)। श्ररिय-मग्ग, पु०, श्रेष्ठ मार्ग । ग्ररिय-सच्च, नपुं०, ग्रायं सत्य। ब्ररिय-सावक, पु०, श्रेष्ठ जनों का शिष्य । पु०, श्रेष्ठजनों ग्ररियुपवाद, ग्रपमान । श्ररिस, नपुं०, बवासीर। ग्रह, नपं०, जरुम, वण। भ्रवण, पु०, सूर्योदय के समय की ललाई। प्रकण-वण्ण, वि०, लाल रंग का। ग्ररूप, वि०, ग्राकार-रहित। ग्ररूप-कायिक, वि०, ग्राकार-रहित जीवों से सम्बन्धित । माकार-रहित To, ग्ररूप-भव, ग्रस्तित्व । ग्ररूप-लोक, पु०, ग्राकार-रहित लोक । ग्ररूपी से वि॰. ग्ररूपावचर, सम्बन्धित । ग्ररूपी, पु॰, ग्राकार रहित जीव। भरे, म्यय, हे, भरे मादि सम्बोधन ।

भ्ररोग, वि०, स्वस्य, रोग रहित। घरोग-भाव, पु॰, स्वास्थ्य। प्रलं, ग्रव्यय, पर्याप्त । ग्रनलं, ग्रव्यय. ग्रपर्याप्त । ग्रलक्क, पू॰, पगला कुत्ता। ग्रलक्खिक, वि०, ग्रमागा। ग्रलक्ली, स्त्री०, दुर्माग्य। म्रलगद्द, पु०, सौप। ग्रलग्ग, वि०, ग्रनासक्त । श्रलग्गन, नपुं०, ग्रनासक्ति। ग्रलङ्कत, क्रिया-विशेषण, सजा हुमा। मलङ्करण, नप्ं, सजावट। धलङ्कार, पु०, गहना, ग्रामरण। ग्रलज्जी, वि०, लज्जा-रहित । म्रलत्तक, नपुं ०, लाख (लाल रंग की)। ग्रलम्ब, वि०, जो लटकता न हो। ग्रलम्बुस जातक, ग्रलम्बुसा नाम की ग्रप्सरा द्वारा ऋषि-पुत्र सिगी के ल्माये जाने की कथा (५२३) म्रलस, वि०, मालसी। ग्रलसता, स्त्री॰, ग्रालस्य । म्रलसक, नपुं०, बदहजमी। ग्रलात, नपुं०, लुग्राठी। म्रलापु मलाबु, नपुं०, लोकी। घलाभ, पु॰, हानि । म्रलाला, म्रव्यय, जो गुंगा नहीं। ग्रिल, पु॰, १. शहद की मक्सी, २. बिच्छ । म्रलिक, नपुं०, मिय्या, भूठ। म्रलीन, वि०, ग्रप्रमादी। ग्रलीन चित्त जातक, बोधिसत्व ने ग्रलीनचित्त नामक वाराणसी-नरेश का जन्म ग्रहण किया था (१५६)।

श्रलोभ, पु॰, निलॉम-माव। प्रलोल, वि०, लोलुप नहीं। भ्रत्ल, वि०, भीगा । अल्ल-दारु, नपं०; भीगी लकड़ी। ग्रत्लकप्प, मगध के समीप का एक प्रदेश । ग्रल्लकप्प के क्षत्रियों ने भी बुद्ध के शरीर के धातुओं पर अपना ग्रधिकार जताया था। ग्रल्लाप, पु॰, बात-चीत, संलाप। ग्रल्लोन, ऋया-विशेषण, ग्रासक्त । घल्लीयति, किया, ग्रासक्त होता है। ग्रल्लीयन, नपुं०, ग्रासक्ति। भ्रवकञ्चनित, किया, भ्राकांक्षा करता है। भवकडढति, किया, पीछे की भोर स्रींचता है। ग्रवकडढन, नपुं०, पीछे की ग्रोर खींचना। प्रवकडिटत, किया,-विशेषण, पीछे की ग्रोर खींचा गया। भ्रवकन्तित, किया, काट डालता है। भवकारक, क्रिया-विशेषण, विखेरना । ध्रवकास, ग्रोकास, पु०, ग्रवसर, स्थान, मोका। भविकरति, किया, उण्डेलता है। ग्रविकरिय, पूर्व-क्रिया, फेंक देकर। धवकुज्ज, वि०, घधोमुख। ध्यवक्कन्ति, स्त्री०, प्रवेश। ग्रवक्कमति, किया, प्रवेश करता है। ग्रवक्कम्म, पूर्व-त्रिया, प्रविप्ट होकर। ग्रवक्कार, पु०, कुड़ा। ग्रवक्कार-पाति, स्त्री०, कूड़ा फेंकने का बतंन। ग्रविष्खपति, क्रिया, नीचे फेंकता है। ग्रवक्लिपन, नपुं०, फेंकना, गिराना ।

ग्रवगच्छति, किया, प्राप्त करता है। भ्रवगण्ड, पु०, मुँह फुलाना । श्रवगत, ऋया-विशेषण, परिचित। भ्रवगाहति, क्रिया, डुवकी लगाता है। श्रवगाह, पु०, ड्वकी। भ्रवगाहन, नपुं०, डुबकी लगाना । म्रवगुण्ठन, वि०, ढका हुम्रा। प्रवगाह, पु॰ वाधा। ध्रवच, वि०, नीचे । ध्रवचनीय, वि०, जिसे कुछ कहना-सुनना न हो। घूमना-फिरना, ग्रवचर, वि०, विचरना। भ्रवचरक, त्रिलिङ्गी, गुप्तचर। ग्रवचरण, नपुं०, व्यवहार । भवन्छिद, क्रिया-विशेषण, छिद्र-युक्त । भ्रवजय, पुं०, हार। भ्रवजात, वि०, दोगला, हरामी। श्रवजानाति, ऋिया, घृणा करता है। भ्रवजिनाति, क्रिया, पुनः जीत लेता है। ग्रवज्ज, वि०, ग्रवद्य, दोष-रहित । ग्रवज्भ, वि०, ग्रवध्य, जिसे मारा न जा सके। ग्रवञ्जा, स्त्री०, ग्रवज्ञा, उपेक्षा, घृणा । भ्रवञ्जात, ऋिया-विशेषण, उपेक्षित । भवट्ठान, नप्ं०, स्थिति । ग्रवडिढ, स्त्री०, ग्रनुन्नति, हानि । भवण्ण, पु०, दुर्गुण। ध्रवतरण, नपुं॰, नीचे उतरना। प्रवतार, पुं०, नीचे उतरने वाला। भ्रवतंस, पुं०, मुकूट-माल। ग्रवतिष्ण, क्रिया-विशेषण, पतित । म्रवत्यरित, किया, ढकता है, घर दबाता है।

भ्रवत्यु, वि०, निराधार। श्रवदात, वि०, सफेद, साफ । ग्रवदान, (देखें, ग्रपदान) भवदायति, किया, अनुकम्पा करता भ्रवधारण, नपुं०, घ्यान देना। श्रवधारेति, क्रिया, चुनाव करता है, स्वीकार करता है। श्रविघ, पु॰, सीमा। श्रवनति, स्त्री०, गिरावट, पतन । ग्रवनि, स्त्री०, पृथ्वी । श्रविपबति, ऋया, पीता है। श्रववुज्कति, किया, समकता है। श्रवबोध, पु॰, ज्ञान। श्रवबोघेति, किया, समभा देता है, वोघ करा देता है। भ्रवभास, पु॰, प्रकाश, प्रकट होना। घ्रवभासति, क्रिया, चमकता है। श्रवभुञ्जति, किया, खा डालता है। श्रवमंगल, नपुं० दुर्माग्य, ग्रपशकुन । भ्रवमञ्ज्ञति, क्रिया, नीची नजर से देखता है। भ्रवमञ्जना, स्त्री०, घृणा, निरादर। भ्रवमानेति, ऋियां, घृणा करता है, उपेक्षा करता है। श्रवयव, पु० ग्रंग, भाग, हिस्सा । भ्रवरज्भति, किया, उपेक्षा करता है, चूक जाता है, घुणा करता है। श्रवरुन्धति, किया, काबू करता है, कैद करता है। भवरोधक, पु०, बाधक। भवरोधन, नपुं०, हकावट, बाधा। भवलक्खण, वि०, कुरूप, भ्रपशकुन वाला।

ग्रवलम्बित, किया, तटकता है, सहारा लेता है। श्रवलम्बन, नपं०, १. लटकना, २. सहायता । ग्रवलिखति, त्रिया, काट-छांट करता है, दुकड़े-दुकड़े कर उालता है। म्रवलिम्पति, क्रिया, लेप करता है। ध्रवलेखन, नपुं०, खुरचना। ग्रवलेपन, नपुं०, लेप। ग्रवलेहन, नपुं०, चाटना । ग्रवस, वि०, शक्ति-होन। ग्रवसर, पु०, मोका। ग्रवसरित, किया, चल देता हैं, पहुँच जाता है। श्रवसान, नपुं०, ग्रन्त । ग्रवसिञ्चति, किया, सींचता है। ग्रवसिट्ठ, ऋिया-विशेषण, ग्रवशेष । भ्रवसिस्सति, ऋया, वाकी बचता है। भ्रवसुस्सति, ऋया, सून्त जाता है। श्रवसुस्सन, नपुं०, सूलना । ग्रवसेस, नपुं०, वाकी । ग्रवस्सं, ऋिया-विशेषण, ग्रनिवायं तौर पर । भ्रवस्सय, पु॰, भ्राश्रय, सहारा। ग्रवस्सावन, नपुं०, पानी छानने का कपड़ा। भवस्सित, क्रिया-विशेषण, भाषारित। ग्रवस्सुत, वि०, चूने वाला, स्नाव-युक्त, त्ष्णा-युक्त । भ्रवहरण, नपुं०, चोरी। ग्रवहरति, क्रिया, चुराता है। ग्रवहस्ति, किया, मुंह चिढ़ाता है। धवहीयति, क्रिया, पीछे छूट जाता है। ग्रवंति, बुद्ध के समय के १६ जनपदों

में से एक। भ्रवंति की राजधानी उज्जेनि यी। प्रवापुरण, नपुं०, चावी। श्रवापुरति, क्रिया, दरवाजा खोलता है। ग्रवारिय जातक, वोधिसत्व द्वारा उप-दिप्ट एक मूखं नाविक की कथा (305) 1 म्रविकम्पी, पू०, स्थिर-चित्त। ग्रविक्लेप, पु०, शान्ति, विक्षेप का ग्रमाव। मविग्गह, पुर, ग्रशरीरी, कामदेव। ध्रविज्जमान, वि०, प्रविद्यमान । श्रविज्जा, स्त्री॰, ग्रविद्या। मविञ्जाणक, वि०, चेतना-रहित। श्रविञ्जात, वि०, श्रजात, श्रप्रसिद्ध। अविदित, वि०, ग्रज्ञात। द्मविदूर, वि०, समीप। श्रविदूरे-निदान, तृषित देव-लोक से च्युत होकर बोधि-वृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त करने तक का गौतम-चरित्र ग्रविदूरे-निदान कहलाता है। ग्रविद्सु, पु०, मूखं। ध्रविनासक, वि०, नाश न करने वाला। द्मविनिक्भोग, वि०, ग्रस्पष्ट, जो पृथक् न किया जा सके। म्रविनीत, वि०, जो विनम्र नहीं। श्रविष्पवास, ए०, उपस्थिति । भविमृत, वि०, ग्रस्पष्ट । ग्रविरुद्ध, वि०, ग्रविरोधी, ग्रनुकुल। धविरुळिह, स्त्री, वृद्धि का न होना । ग्रविरोध, पु०, विरोध का भ्रमाव। धविसंवादक, वि॰ वञ्चा न करने वाला, भूठ न बोलने वाला।

ग्रविसम्पता, स्त्री॰, स्थिर चित्त होना । ग्रविस्सासनिय, वि०, ग्रविश्वसनीय। श्रविलम्बित, किया-विशेषण, जल्दी, शीघता से। ग्रविवटह, वि०, विवाह के ग्रयोग्य। ग्रविसंवाद, प्०, सत्य। ग्रविसंवादक, वि०, सत्यवादी। प्रविहित, वि०, ग्रकृत, जो कभी किया नहीं गया। ग्रविहिंसा, स्त्री०, हिंसा का ग्रमाव, दया । श्रविहेठक, वि०, कष्ट न देने वाला, हैरान न करने वाला। ग्रवीचि, वि०, विना लहर के। ग्रवीचि, स्त्री०, नरक-विशेष। भ्रवीतिक्कम, प्०, नियम के व्यति-कमण का ग्रमाव। ग्रव्टिठक, वि०, वर्षा का ग्रमाव। ग्रवेक्खति, क्रिया, देखता है। भ्रवेच्च, पूर्व-िक्या, जानकर। ग्रवेच्च-पसाद, पु०, हढ़ श्रद्धा । ध्रवेभंगिक, वि०, जो बाँटा न जा सके। ग्रवेर, वि०, ग्रवेर। ग्रवेर, नपुं०, मैत्री। ग्रवेरी, वि०, शत्रुता रहित, मैत्री-पूर्ण । श्रवेला, स्त्री॰, श्रनुचित समय। घ्रब्यत्त, वि०, १. ग्रव्यक्त, २. ग्र-पण्डित । भ्रब्यय, नपुं०, १. सभी वचनों, विभ-क्तियों, पुरुषों में एकरूप रहने वाला शब्द, २. हानि का भ्रमाव। म्रब्ययेन, क्रिया-विशेषण, बिना किसी

खर्च के। भ्रव्ययोभाव, पुरुष, वह सामासिक पद, जिसका किसी ग्रव्यय के साथ समास हो। ग्रव्याकत, वि०, ग्रव्याख्यात, जो नहीं कहा गया। श्रव्यापज्ञ, वि०, रोप-रहित, दु:ख-रहित । ग्रव्यापाद, वि०, ईर्ध्या-रहित। ग्रब्यावंट : वि०, उपेक्षावान् । ग्रव्हय, पु०, नाम। ग्रव्हयति, किया, युलाता है। भ्रव्हात, क्रिया-विशेषण, बुलाया गया। श्रव्हान, नपुं०, नाम, बुलावा। ग्रसंवर, नपुं० ग्रसंयम । ग्रसांक, क्रिया-विशेषण, एक वार से ग्रधिक । ग्रसक्क, वि०, ग्रसमर्थ। ग्रसंकिण्ण, वि०, ग्रसंकीणं, विना मिला-ग्रसंकिय जातक, वोधिसत्व की जाग-हकता के कारण डाकू व्यापारियों को न लूट सके (७६)। ग्रसंकिलिठ्ट, वि०, ग्रलिप्त । ग्रसंखत, वि०, ग्रसंस्कृत। ससंखत-धातु, स्त्री०, ग्रसंस्कृत धातु । ग्रसंखेय्य, वि०, ग्रगणित। श्रसङ्ग, पु॰, ग्रनासक्ति । ग्रसच्च, नपुं०, ग्रसत्य। ग्रसज्जमान, वि०, ग्रनासक्त । ग्रसञ्जी, वि०, चेतना-रहित। ग्रसञ्जत, वि०, संयम-रहित । ग्रसठ, वि०, जो शठ नहीं, ग्रदुष्ट । ग्रसण्ठित, वि०, जो स्थिर नहीं, चंचल। ग्रसति, किया, खाता है। ग्रसति, (ग्रधिकरण), न होने पर। श्रसतिया, किया-विशेषण, श्रनजाने । ग्रसत्त, वि०, ग्रनासक्त। ग्रसत्य, वि०, शस्त्र-रहित । ग्रसदिस, वि०, ग्रसहरा, ग्रनुपम। ग्रसदिस जातक, ग्रसदिस राजकुमार की कया (११८) ग्रसद्धम्म, पु०, १. ग्रधमं, २. मैथुन। ग्रसन, नपुं०, १. खाना, २. भोजन, ३. तीर, ४. पत्थर। ग्रसनि, स्त्री०, वज्र। ग्रसनि-पात, पु०, वज्र-पात। ग्रसन्त, वि०, जिसका ग्रस्तित्व न हो, दुप्ट । ग्रसन्तासी, वि०, निर्भय। ग्रसंतुठ्ट, वि०, ग्रसंतुष्ट । ग्रसंथव, नपुं०, समाज से ग्रलग रहना। ग्रसंधिता, स्त्री०, संधि का ग्रमाव। ग्रसंधिमिता, स्त्री०, ग्रशोक की पटरानी। ग्रसपत्त, वि०, ग्रजात-शत्रु। ग्रसप्पाय, वि०, प्रतिकृल। ग्रसप्पुरिस, पु०, ग्रसत्पुरुष। श्रसवल, वि०, विना धब्वे के । ग्रसब्भ, वि०, ग्रसम्य। श्रसम, वि०, जो समान नहीं। ग्रसमण, पु॰, जो श्रमण नहीं। ग्रसमाहित, वि०, जिसका चित्त एकाग्र नहीं। ग्रसमेक्खकारी, पु०, जल्दवाज, बिना विचारे करने वाला। श्रसमोसरण, नपुं०, न मिलना ।

घसम्पकम्पिय, वि०, कम्पन-रहित। धसम्पज्ञत, नपुं०, ज्ञान के ग्रमाव की स्थिति । धसम्पत्त, वि०, ग्रप्राप्त। श्रसम्पदान जातक, ग्रस्सी करोड़ के घनी संख सेठ की कथा (१३१) ग्रसम्मूळ, वि०, जो मूढ नहीं। ग्रसम्मोस, पु०, मूढता का ग्रमाव। ग्रसयंवसी, वि०, जिसका ग्रपना ग्राप वश में न हो। ग्रसम्ह, वि०, जो सहन न किया जा सके। ग्रसरण, वि०, जिसके लिए कोई शरण नहीं। ग्रसहाय, वि०, ग्रकेला, जिसका कोई सहायक नहीं। ग्रसंवास, वि०, सहवास के ग्रयोग्य। ग्रसंवृत, क्रिया-विशेषण, जो वन्द नहीं। श्रसंसठ्ट, वि०, मिलावट-रहित । ग्रसंहारिम, वि०, जिसे हिलाया न जा सके। ग्रसात, वि०, प्रतिकूल। ग्रसात, नपुं०, दु:ख-कष्ट । श्रसात-मन्त जातक, मां की श्राज्ञानुसार तरण ब्राह्मण ने बोधिसत्त्व से असात-मंत्र सीखे (६१)। ग्रसातरूप जातक, कोशलनरेश तथा काशी-नरेश के परस्पर युद्ध करने की कथा (१००)। ग्रसाब, वि०, ग्रस्वादिष्ट । मसार, वि०, सार-हीन। ग्रसारद, वि०, ग्रनुतेजित । धसाहस, वि०, दुस्साहस का ध्रमाव । यसि, पू॰, तलवार।

श्रसिग्गाहक, पु०, तलवार धारी-। श्रसि-चम्म, नपुं०, ढाल । असि-घारा, स्त्री०, तलवार की घार। श्रसि-पत्त, नपुं०, तलवार का फल। श्रसित, नपुं०, मोजन। श्रसित, वि०, काला। ग्रसित, (काल-देवल), शुद्धोदन का राजगुरु। ग्रसिताभु जातक, राजा ने राजकुमार तया उसकी मार्या ग्रसितामुं को देश-निकाला दिया (२३४)। ग्रसिलक्खण जातक, तलवार को सूंघ कर उसके भाग्य सम्पन्न होने न होने की बात बताने वाले ब्राह्मण की कथा (१२६)। श्रसिथिल, वि०, जो ढीला नहीं। म्रसिनिद्ध, वि०, खुरदुरा, चिकना नहीं। ग्रसीति, स्त्री०, ग्रस्सी। श्रसीतिम, वि०, श्रस्सीवाँ । ग्रस्, वि०, ग्रम्क। ग्रस्क, वि०, ग्रम्क। म्रसुचि, पु॰, गंदगी, वीर्यं। ग्रसुभ, वि०, ग्रशुभ। ब्रसुर, पु॰, देवताग्रों के विरोधी ग्रसुर। म्रसूर, वि०, कायर। ग्रसेरव, वि०, ग्रशैक्ष, ग्रहंत। श्रसेचन, पु॰, सन्तोषप्रद। ग्रसेवना, स्त्री०, संगति न करना। ग्रसेस, वि०, सम्पूर्ण । ग्रसोक, वि०, शोक-रहित। ग्रसोक, पु०, वृक्ष-विशेष । ग्रसोक, विन्दुसार-नरेश का पुत्र मगध-नरेश घशोक। श्रसोकाराम, पाटलिपुत्र का एक प्रसिद्ध

विहार। ग्रसोभन, वि०, ग्रशोमन, कुरूप। श्रस्नाति, ऋिया, खाता है। श्रस्मा, पु०, पत्थर। ग्रस्मि, किया, में हूँ। ग्रस्मिमान, पु०, ग्रहंकार। श्रस्स, पु०, घोड़ा। श्रस्सतर, पु०, खन्चर। ग्रस्स-पोतक, पु०, वछेरा। श्रस्स-मण्डल, नपुं०, घुड़-दौड़ भूमि। श्रस्स-मेध, पु०, ग्रश्वमेध यज्ञ । ब्रस्स-वाणिज, पु०, घोड़ों का व्यापारी। श्रस्स-सेना, स्त्री०, घुड़सवार सेना। श्रस्साजानिय, पु०, श्रच्छी नसल का घोड़ा। श्रस्सक, वि०, गरीव, दरिद्र। श्रस्सक जातक, श्रस्सक नरेश की कथा (२०७) 1 ग्रस्सकण्ण, पु०, १. साल-वृक्ष, २. पर्वत-विशेष। ग्रस्सत्थ, पु०, ग्रश्वत्थ, पीपल का पेड़, बोधि-वृक्ष । ग्रस्सद्ध, वि०, ग्रश्रद्धावान् । श्रस्सम, पु०, ग्राश्रम। घस्समण पु०, जो श्रमण नहीं। श्रस्सयुज, पु०, ग्रसीज (महीना) । ग्रस्सव, पु॰, स्वामी-भक्त। श्रस्सवणता, स्त्री०, घ्यान न देना। ग्रस्सवनीय, वि०, जिसका सुनना ग्रच्छा न लगे। श्रस्संसति, ऋिया, श्राश्वास लेता श्रस्साद, पु०, ग्रास्वाद।

ग्रस्सादेति, ऋिया, स्वाद लेता है। ग्रस्सास, पु०, ग्राश्वास । श्रस्सासक, वि०, सान्त्वना देने वाला। श्रस्सासेति, किया, श्राश्वस्त करता है। ग्रस्सु, नपुं०, ग्रश्रु, ग्रांसू। श्रस्सुत,वि०,ग्रश्रुत, जो सुना नहीं गया । श्रस्तुतवन्त, वि०, ग्रज्ञानी । ग्रह, नपुं०, दिन। श्रहं, सर्वनाम, मैं। ग्रहंकार, पु०, ग्रिममान। ग्रहारिय, वि०, ग्रचल। श्रहि, पु०, सर्प। ग्रहि-गुण्ठिक, संपेरा। ग्रहि-फोण, नपुं०, ग्रफीम । भ्रहिगुण्डिक जातक, वनारस के संपेरे की कथा (३६५)। ग्रहिरिक, वि०, लज्जा-रहित। भ्रहिवातक रोग, पु०, प्लेग (बीमारी)। ब्रहीनिन्द्रिय : वि०, जिसकी समी इन्द्रियौ सम्पूर्ण हों। ग्रहुहालिय, नपुं०, ऊँची हँसी। ग्रहेत्क, वि०, विना हेतु के। म्रहो, म्रव्यय, माश्चयं-वोधक शब्द । ब्रहोगङ्ग, उत्तर-भारत का एक पर्वत। ग्रहोरत्त, दिन-रात। ग्रहोसि, क्रिया, (वह) था। ग्रहोसिकम्म, नपुं०, वह कर्म जो ग्रव फलीभूत न होगा। श्रंस, पु॰ तथा नपुं॰, १. हिस्सा; २. कंघा। ग्रंस-कूट, नपुं०, कंघा । ग्रंसु, पु०, किरण। ग्रंसुक, नपुं०, वस्त्र । ग्रंसु-माली, पु॰, सूर्य।

श्रकतं, नपुं०, निर्वाण । ग्रकल्लं, नपुं०, रोग। म्रकारादि, नपुं० तथा पु०, स्वर, ग्र ग्रा ग्रादि। म्रकारिय, वि०, कद्र, कड्वा। म्रक्लदेवी, पु॰, जुम्रारी, धृतं। श्रक्खरावयव, स्त्री०, मात्रा (प्रमाण), मात्रा (व्यंजन यक्षरों के साथ जुड़ने वाले स्वर)। ग्रक्लग्गकील, स्त्री०, युरे पर लगी हुई कील। ग्रव्होहिणी, स्त्री०, सम्पूर्ण सेना । म्रखात, नपुं०, गड़ा। म्राखिल, वि०, समस्त । श्रगभेद, पु॰, वृक्ष-विशेष। भ्रगळु, नपुं०, मुसन्वर की लकड़ी। भ्रागज, पु०, वड़ा माई। भ्रागञ्ज, वि०, श्रेप्टतम ग्रथवा ग्रग्र-तम। भ्रागता, स्त्री॰, श्रेष्ठता। श्रागतो, नपुं०, सामने । ग्रागळत्थम्भ, पु०, ग्रगंल-स्तम्म । ग्रग्गि-जाल, स्त्री०, धव का फूल। श्रागमन्य, नपुं०, कणिका। श्रिगिसञ्जित, पु०, पित्रक । श्रिग्धिय, नपुं०, ग्रातिथ्य। ग्रङ्कोल, पु०, तिलोचक । श्रंक्य, पु०, एक प्रकार का ढोल। ग्रंग विक्लेप, पु०, नृत्य सम्बन्धी हाव-भाव। श्रंगारकपल्ल, स्त्री०, लुक, लुग्राठी। श्रंगुलिमुद्दा, स्त्री ०, उँगली में पहनने

भ्र (परिशिष्ठ)

की ग्रॅगूठी। श्रंगुली, स्त्री०, उँगली । श्रंगुल्याभरण, नपुं०, श्रंगूठी। श्रन्चयाभाव, पु०, निर्दोप। ग्रन्चिमन्तु, वि०, ग्रन्वान, चमकदार। ग्रिच्छि, नपुं०, ग्रिक्ष, ग्रांख। म्रजगर, पु०, म्रजगर-सांप। म्रजञ्ज, नपुं०, खतरा। अजपालक, पुं०, गड़रिया। भ्रजा, स्त्री०, वकरी। ग्रजिन-योनि, स्त्री०, मृग-विशेष की जाति । ग्रजिम्ह, वि०, सीधा। ग्रजिर, नपुं०, ग्रांगन। ग्रजी, स्त्री०, वकरी। श्रज्जक, पु०, श्वेत पत्र। ग्रज्भवल, पु०, ग्रध्यक्ष । ग्रज्भारोह, पु०, वड़ी मछली। ग्रज्मेसना, स्त्री०, सत्कार। ग्रज्भोहत, कृदन्त, खाया गया । ग्रञ्जली, स्त्री०, हाथ जोड़ना। भ्रञ्जतर, पु॰, ग्रन्यतर, दूसरा। भ्रञ्जतरोपन, पु० तथा नपुं०, लपेट । घञ्जथाभाव, नपुं०, परिवर्तन । धञ्जोञ्ज, ग्रव्यय, परस्पर। ग्रटट, नपुं०, संख्या-विशेष । ग्रटनी: स्त्री॰, चारपाई का पैर की ग्रोर का हिस्सा। ग्रट्टहास, पु०, जोर की हँसी। ग्रहालक: पु॰, ग्रहारी। म्रद्भित, वि०, पीड़ित। घठ्टपुरिसा, स्त्री॰, स्रोतापत्ति-मार्गे,

स्रोतापत्ति-फल ग्रादि प्राप्त ग्राठ प्रकार के लोग। ब्रठ्टानरियवोहार, पु॰, ब्राठ प्रकार का ग्रनायं-व्यवहार। श्रठ्टापद, नपुं०, शतरंज-फलक । श्रड्ढयोग, पु०, महल । श्रण्डज, पु०, पक्षी । भ्रण्डूपक, नपुं०, चुम्बटक, वर्तन के नीचे रखने का कपड़े या रस्सी का वना घेरा। ग्रतिकत, क्रिया-विशेषण, सहसा । श्रतसी, स्त्री॰, ग्रलसी का पौधा। श्रतिक्कम, पु०, ग्रतिक्रमण, सीमा लांघना । श्रतिखिण, वि०, कोमल, मृदु। म्रतिचारिणी, स्त्री०, व्यभिचारिणी। म्रतितण्ह, पु०, ग्रत्यन्त लोभी। श्रतिप्पसत्थ, पु०, ग्रति प्रसिद्ध । श्रतिमुत्त, पु०, माघवी लता। म्रतियुव, त्रिलिङ्गी, ग्रतितरुण। श्रतिविसा, पु०, महोषघ । ग्रतिवुढ, त्रिलिङ्गी, वहुत वूढ़ा, वहुत प्रसिद्ध । श्रतिसन्त, वि०, श्रतिशान्त (पुरुष) । श्रतिसय, पु०, ग्रतिशय, ग्रधिक। श्रतिसुण, पु०, पागल कुत्ता। भ्रत्थना, पु॰, याचना, भिक्षा । ग्रत्थसत्त, पु०, ग्रर्थशास्त्र । श्रदिय, किया, ग्रस्ति, है। भ्रत्यु, क्रिया, ऐसा हो। ग्रत्यप्प, वि०, बहुत कम। भ्रत्राह, त्रिया विशेषण, यहाँ । ग्रदास, पु०, जो 'दास' नहीं रहा। श्रदिति, पु०, देव-माता।

ग्रदुक्खमसुखा, स्त्री०, न-दुख न-सुख (वेदना)। ग्रहा, नपुं०, ग्राद्री नक्षत्र। श्रद्धि, स्त्री०, मार्ग । ग्रधिमण्ण, पु०, ऋणी। ग्रधिगत, वि०, मार्ग-फल प्राप्त। ग्रधिच्चका, स्त्री०, पर्वत-शिखर। ग्रधिठ्टान, नपुं०, ग्रधिष्ठान, संकल्प। श्रिधभू, पु०,स्वामी। ग्रधीन, पु॰, पराधीन । ग्रनच्छ, नपुं०, मैला। ग्रनभिरद्धि, स्त्री० दूसरे को हानि पहुँ-चाने की चिन्ता। अनिरयवोहार, पु०, आठ प्रकार के ग्रनायोंचित व्यवहार। ग्रनामिका, स्त्री०, छिछली उँगुली से वड़ी उँगुली। ग्रनारत, नपुं०, लगातार। ग्रनासव, नपुं०, निर्वाण । म्रनिच्छय, पु०, ग्रनिश्चय । ग्रनिदस्सना, स्त्री०, निर्वाण। ग्रनुट्ठुभ, पु०, काव्य का छन्द-विशेष। ग्रनुताप, पु॰, पश्चाताप। म्रनुपन्छिन्न, वि०, सतत । भ्रनुपुब्वि, स्त्री०, कमानुकूल (कथा)। **प्र**नुमान, नपुं०, सन्देह, ग्रनुमान (प्रमाण)। ग्रनुलाप, पु०, पुनर्कथन । ग्रनुवाद, पु०, निन्दा, दोषारोपण। ग्रनुसासन, नपुं० तथा स्त्रीलिङ्ग, गाजा। मनुसिट्ठ, स्त्री०, उपदेश, मनुशासना । श्रनूनक, वि०, सम्पूर्ण। ग्रनूप, पु॰ तथा स्त्री॰, जल-बहुल भूमि,

दलदल । ग्रनेकत्य, वि०, ग्रनेकार्थ। अन्तग्गत, किया वि०, अन्तगंत, सम्मि-लित । मन्तरकष्प, क्रिया वि०, कल्प-मर, बीच का कल्प। अन्तरीप, नपुं०, द्वीप । मन्तरीय, नपं०, भन्दर का वस्त्र, लुंगी। प्रन्तरेन, क्रिया वि०, विना। मन्तिम, वि०, ग्राखिरी। मन्तोकुच्छि, पु॰ तथा स्त्री॰, कोख के मीतर। ध्रन्नादि, पु०, भोजन। मन्वाचय, पु०, संप्रह, भी। भ्रपक्कम, पु०, पलायन, माग निक-भ्रपट्, वि०, मन्द बुद्धि, अदक्ष । ग्रपण्डित, वि०, मूर्ख । म्रपरण्ण, नपुं०, मूंग म्रादि दालों की फसल । ग्रपवज्जन, नपुं०, परित्याग। भ्रपवाद, पु॰, निन्दा, दोषारोपण। श्रपिनाम, ग्रव्यय, प्रशंसा, निन्दा ग्रादि में व्यवहृत होने वाला निपात। धपुञ्ज, नपुं० पाप। भ्रपूप, नपुं०, पुद्रा, पृष्ठक । ग्रपेक्ला, स्त्री०, ग्रालय, ग्रासक्ति ।

घ्रप्पत्य, पु०, ग्रल्पार्थ। म्रप्पना, स्त्री०, तकं-वितकं । भ्रवव, नपुं०, संख्या विशेष। भ्रवाध, नपुं , बाधा रहित। श्रब्यासेक, नपुं०, सन्तोषप्रद। श्रभिजन, पु॰, सगे सम्बन्धी। ग्रभिजात, पु०, कुलोत्पन्न। म्रभिलाव, पु०, काटना। श्रमिविधि, स्त्री॰, (मर्यादा-) अमि-ग्रिभसङ्खरण, नपुं०, भूमि ग्रादि की सफाई। ग्रिमसंघि, पु०, ग्रिमप्राय। श्रभिस्संग, पु०, ग्रमिशाप। भ्रम्यास, पु०, समीप। श्रमतप, नपुं०, देवता । ग्रमता, स्त्री०, ग्रांवला । ग्रमरावती, पु०, इन्द्रपुरी। श्रमेज्भ, त्रिलिङ्गी, शुक्र, वीर्य। श्रियर, पु०, स्वामी। श्ररुचि, स्त्री०, ग्ररुचिकर, ग्रच्छा न लगना। म्रलहुक, वि०, मारी। श्रवगणित, वि०, श्रपमानित । म्रवाट, पू,० गढ़ा,। ग्रवितय, नपुं ०, सत्य, यथार्थ। भ्रविरत, नपुं॰, लगातार। भवीर, वि०, डरपोक ।

श्रा

भ्रा, उपसर्ग, संयुक्त व्यंजन के पूर्व ग्रा ह्रस्व 'ग्र' हो जाता है। ग्राकङ्क्षाति, क्रिया, इच्छा करता है। श्राकङ्का, स्त्री०, ग्राकांक्षा, इच्छा। म्राकड्ढति, क्रिया, खींचता है। भ्राकड्ढन, नपुं०, खींचना । श्राकप्प, पु०, चाल-ढ़ाल। श्राकप्प-सम्पन्न, वि०, सदाचरण-युक्त। श्राकम्पित, कृदन्त, कांपता हुग्रा। ब्राकर, पु०, खान (सोने-चाँदी की) श्राकस्सति, किया, खींचता है, ग्राकपित करता है। म्राकार, पु०, शक्ल, बनावट। ग्राकास, पु०, ग्राकाश। ग्राकास-गङ्गा, स्त्री०, ग्राकाश-गङ्गा। ग्राकास-चारी, वि०, ग्राकाश में विच-रण करने वाला। श्राकासट्ठ, वि० ग्राकाशस्थित। भ्राकासतल, नपुं०, किसी मकान की छत। भ्राकिञ्चञ्ज, नपुं०, 'कुछ नहीं' की ग्रवस्था । श्राकिण्ण, वि०, भीड़-युक्त श्राकिरति, किया, फैला देता है। भ्राकुल, वि०, उलमा हुमा। म्राकोटन, नपुं०, खटखटाना । म्राखु, पु०, चूहा। ग्राख्या, स्त्री०, नाम, संज्ञा। घास्यात, त्रिलिङ्गी, कहा हुमा, बताया हुग्रा । म्राख्यायिका, स्त्री॰, कहानी।

श्रागच्छति, किया, ग्राता है। श्रागत, कृदन्त, श्राया हुआ। म्रागद, पु०, वचन, मापण। ग्रागन्तु, वि०, ग्राने वाला। श्रागन्त्क, त्रिलिङ्गी, ग्रतिथि, ग्रपरि-चित । म्रागम, पु०, १. म्राना, २. धमं, धमं-ग्रन्थ, ३. मित्र की तरह ग्राकर दो ग्रक्षरों के बीच में बैठ जाने वाला तीसरा व्यञ्जन। श्रागमन, नपुं०, ग्राना। श्रागमेति, किया, प्रतीक्षा करता है। श्रागम्म, पूर्व-क्रिया, पहुँचकर। ग्रागामिक, वि०, ग्राने वाला काल श्रागामी, वि०, ग्राने वाला। श्रागामीकाल, पु०, मविष्य। ग्रागारक, ग्रागारिक, वि०, घर वाला। [भण्डागारिक, खजानची।] ग्रागाळ्ह, वि०, मजवूत, कठोर। श्रागिलायति, किया, पीड़ा देता है। ब्रागु, नपुं०, दोष, अपराध। ग्रागुचारी, पु॰, ग्रपराधी। ब्राघात, पु०, १. रोप, घृणा, २. रगड़। श्राघातन, नपुं०, कसाई-खाना। ब्राचमित, किया, कुल्ला करता है, ग्राब-दस्त लेता है। ब्राचमन, नपुं०, (मुंह) घोना। ब्राचमन-कुम्भी, स्त्री०, मुँह धोने का पात्र । म्राचय, पु०, संग्रहः। ब्राचरति, क्रिया, ब्राचरण है।

माचरिय, पु०, श्राचायं, शिक्षक । माचरिय-धन, नपुं०, ग्राचायं को दी जाने बाली फीस। ब्राचरिय-मुट्ठि, स्त्री०, ब्राचार्यं का ज्ञान-विशेष। माचरिय-वाद, पु०, परम्परागत मत। ब्राचरियानी,स्त्री०, स्त्री-ग्राचार्या ग्रथवा ग्राचायं की मार्या। म्राचाम, पु०, उबलते चावलों की माण्ड या पिच्छा। ब्राचार, पु॰ व्यवहार, स्राचरण। म्राचार-कुसल, वि०, व्यवहार-कुशल, सदाचार-युक्त। म्राचिक्लक, पु०, कहने वाला, वताने म्राचिक्लति, किया, कहता है, बताता म्राचिण्ण, कृदन्त, ग्रम्यस्त । म्राचिण्ण-कप्प, पु०, रिवाज के म्रनु-सार। श्राचित, कृदन्त, संग्रहीत। ब्राचिनाति, किया, इकट्ठा करता है। ब्राचीयति, क्रिया, ढेर हो जाता है। ग्राचेर, पु॰ 'ग्राचरिय' का संक्षिप्त रूप, ग्रघ्यापक। भ्राजञ्ज, वि०, भ्रच्छी नसल का। ग्राजञ्ज जातक, बोधिसत्त्व के श्रेष्ठ नसल के घोड़े की योनि में उत्पन्न होनें की कथा (२४)। म्राजानन, नपुं०, ज्ञान । भ्राजानाति, क्रिया, जानता है। भ्राजानीय, पु०, भ्रच्छी नसल घोड़ा। म्राजि, स्त्री०, युद

म्राजीव, पु०, जीविका, जीविका का साघन । भ्राजीवक, पू०, निवंस्त्र रहने वाले तपस्वियों का एक सम्प्रदाय । म्राजीवन, नपुं०, जीविका। ब्राट, पुं०, पक्षी-विशेष। ्रम्राणा, स्त्री०, आज्ञा। ग्राणा-सम्पन्न, वि०, ग्रधिकृत। म्राणापक, पू०, म्राज्ञा देने वाला। भ्राणापेति, क्रिया, ग्राज्ञा देता है। श्राणि, स्त्री०, मेख । श्राणी, स्त्री०, श्रगंल। म्रातङ्क, पु०, रोग, वीमारी, मय। म्रातत, नपुं०, एक प्रकार का ढोल। श्रातत-वितत, नपुं०, श्रातत-वितत नाम के दोनों प्रकार के ढोल। ब्राततायी, पु०, जो वध ब्रादि श्रात्याचार करने के लिए उद्यत रहे। श्रातत्त, कृदन्त, तप्त, तपाया हुआ। ग्रातपत्त, नपं०, छाता । म्रातप, पु०, धूप। ग्रातपामाव, पू०, धूप का ग्रमाव, छाँव। ब्रातपति, किया, चमकता है। म्रातप्प, पु॰, प्रयत्न, प्रयास । म्राताप, पु०, चमक, गर्मी। द्यातापन, नपुं॰, काय-क्लेश, ग्रात्म-पीड़ा। द्यातापी, वि०, प्रयत्नशील। धातापेति, क्रिया, शारीरिक कष्ट देता है। ब्रातुमा, कुसीनारा तथा श्रावस्ती के बीच का एक नगर।

म्रातुर, वि०, रोगी। म्रातोज्जं, नपुं०, वाजा। श्रादर, पू०, गौरव। भ्रादाति, किया, लेता है। श्रादान, नपुं०, ग्रहण करना। ब्रादायी, पू०, ग्रहण करने वाला। श्रादास, पु०, मुँह देखने का शीशा। ग्रादास-तल, शीशे का तला। म्रादि, पु०, ग्रारम्म। ग्रादि-कम्मिक, पु०, ग्रारम्भ वाला । म्रादि-कल्याण, वि०, भ्रारम्भ में कल्याण-कारक। म्रादिम, वि०, पहला। श्रादिच्च, पू०, सूर्य । ग्रादिच्च-पथ, पू०, ग्राकाश। म्रादिच्च-बन्धु, पु०, सूर्यवंशी, बुद्ध का एक नाम। न्त्रादिच्युपट्ठान जातक, तपस्वियों के ग्राश्रम को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले बन्दर की कथा (१७५)। ग्रादितो, किया-विशेषण, ग्रारम्भ से। श्रादित्त, कृदन्त, जलता हुग्रा। म्रादिल जातक, सोवीर राष्ट्र के रोख्व के राजा भरत की कथा (४२४)। श्रादिन्न, कृदन्त, गृहीत। भादियति, किया, ग्रहण करता है। म्रादिसति, किया, कहता है, घोषणा करता है। ग्रादीनव, पु०, दुष्परिणाम। म्रादु, म्रव्यय, या, लेकिन। श्रादेति, किया, लेता है, ग्रहण करता है ग्रादेय्य, वि०, ग्रनुकूल। आवेय्य-वचन, नपुं०, स्वागत।

ग्रादेवना, स्त्री०, रोना-पीटना । श्रादेस', पु०, श्रादेश। म्रादेस³, ग्रक्षर-विशेष के स्थान पर किसी दूसरे व्यञ्जन का शत्रुवत् ग्रा वैठना । श्रादेसना, स्त्री०,मविष्यद् वाणी करना, ग्रनुमान लगाना। भ्राधान-गाही, पु०, दुराग्रही। ग्राघार. पु०, सहारा। ग्राधावति, किया, दौड़ता है। ग्राघावन, नपुं०, दोड़ । ग्राधिपच्च, नपुं०, स्वामित्व। ब्राधुनाति, किया, धुन डालता है, हिला देता है। भ्राध्त, कृदन्त, हिलाया गया। ग्राधेय्य, वि०, घारण करने योग्य। ग्रान [ग्राण], नपुं०, ग्राश्वास। म्रानक, पु०, भेरी। ग्रानण्य, नपुं०, ऋण-मुक्ति। म्रानन, नपुं०, चेहरा। ग्रानन्तरिक, वि०, ठीक वाद में घटने वाला, विना किसी ग्रन्तर के घटने वाला। म्रानन्द, पु०, प्रीति, प्रसन्नता। म्रानन्द, भगवान वुद्ध के प्रधान शिप्यों में से एक, जिन्होंने अनन्य भाव से भगवान की सेवा की थी। म्रानन्द-बोधि, जेतवन-द्वार पर मिध् ग्रानन्द द्वारा रोपा गया बोधि वृक्ष। भ्रानयति, त्रिया, लाता है। भ्रानापान, नपुं०, ग्राञ्वास-प्रश्वास । म्रानाय, पु०, जाल। म्रानिसंस, पु०, शुभ परिणाम । भ्रानिसद, नपुं ०, नितम्ब, चूतड़ ।

मानीत, कृदन्त, लाया हुमा। ग्रानुपुब्बी, स्त्री०, ऋमशः। मानुभाव, पू०, प्रताप, तेज। ग्रानेञ्जः वि०, स्थिर, ग्रचञ्चल। मानेति, किया, लाता है। म्राप, पू॰ तया नपुं॰, जल, पानी। भ्रापगा, स्त्री०, नदी। धापज्जति, किया, पड़ता है, मेंट करता है। प्रापण, पु०, बाजार। धापण, भ्रंगुत्तराप जनपद का एक नगर, सम्भवतः राजधानी । म्रापणिक, पु०, व्योपारी, दुकानदार। भापतति, किया, गिरता है। म्रापतन, नपुं०, गिरावट। भ्रापत्ति, स्त्री०, विनय का उल्लंघन, अपराध। ध्रापदा, स्त्री०, दु:ख, कष्ट, दुर्माग्य। म्रापन्न, कृदन्त, म्रनुप्राप्त। म्रापन्न-सत्ता, स्त्री०, गर्मिणी। श्रापाण, नपुं०, श्वास लेना, प्रश्वास। म्रापाण-कोटिक, वि०, प्राण रहने तक। म्रापाथ, पु०, इन्द्रिय का गोचर क्षेत्र। वि०, इन्द्रिय-गोचर ग्रापाथ-गत, होना । श्रापादक,पु०, बच्चे की देखमाल करने वाला। म्रापादिका, स्त्री०, दाई। म्रापादेति, ऋया, दूघ पिलाती है। श्रापान, नपुं०, पेय-मवन। भ्रापानक, वि०, पियक्कड़। म्रापानीय, वि०, पीने योग्य। द्मापानीय-कंस, पुं०, सुरा-पात्र। घापायिक, वि०, नारकीय।

भापुच्छति, किया, पूछता है, अनुज्ञा चाहता है। ब्रापुच्छा, स्त्री०, अनुज्ञा । आपूरति, किया, भरता है, सम्पूर्ण होता है। श्रापूरण, नपुं०, पूर्ति । श्रापोघातु, स्त्री०, जलीय तत्त्व। ब्राफुसति, किया, प्राप्त करता है,. साक्षात् करता है। श्राबद्ध, कृदन्त, बँधा हम्रा। ग्राबन्धक, वि०, बाँधने वाला। श्रावन्घति, क्रिया, बाँघता है। श्रावाघ, पु०, रोग। म्रावाधिक, वि०, रोगी। ग्राबाधित, कृदन्त, बाधित, दलित, दबाया हुमा। श्राबाधीत, किया, दबाता है, हैरान करता है। श्राभत, कृदन्त, लाया हुआ। म्राभरण, नपुं०, गहना, ग्रलंकार। धाभरति, क्रिया, लाता है। धाभस्सर, वि०, प्रकाशमान्। ग्राभा, स्त्री०, प्रकाश। धाभाकर, पू०, सूर्य। श्राभास, पु॰, रोशनी। द्याभाति, किया, चमकता है। म्राभावेति, क्रिया, ग्रम्यास करता है। म्राभिदोसिक, वि०, गत रात्रि से सम्बन्धित । श्राभिघम्मिक, वि०, ग्रमिघमं का जानकार। ग्राभिन्दति, क्रिया, काटता है। प्राभिमुख्य, नपुं०, सामने होना । माभिसमाचारिक, नपुं०, छोटे-मोटे

कत्तंव्य । धाभिसेकिक, वि०, ग्रमियेक सम्बन्धी। ग्राभुजति, किया, भुकाता है। धाभुजन, नपुं०, भुकाना । धाभुजी, स्त्री०, मोजपत्र। ग्राभोग, पुं०, विचार। म्राम, ग्रव्यय, हां। भ्राम, भ्रामक, वि०, कच्चा, जो पका नहीं। श्राम-गन्घ, पुं०, मांस । ग्रामगंधि, स्त्री०, कच्चे मांस की-सी गन्ध । श्रामक-सुसान, नपुं०, कच्चा-रमशान। म्रामट्ठ, कृदन्त, स्पृष्ट, छुम्रा हुम्रा, हाथ लगाया हुमा। ग्रामण्ड, पु०, एरण्ड का पौघा। ग्रामण्डलीय, वि०, मण्डल के समान। श्रामत्तिक, नपुं०, मिट्टी का वर्तन। श्रामद्दन, नपुं०, पीसना, मीड़ना। श्रामन्तन, नपुं०, निमंत्रण। भ्रामन्तित्, कृदन्त, निमंत्रित। ध्रामन्तेति, किया, निमंत्रित करता है। ब्रामय, पु० रोग। ष्ट्रामलक, नपुं०, ग्रावला। श्रामसति, क्रिया, स्पर्श करता है। मामसन, नपुं०, स्पर्श करना, मलना। श्रामा, स्त्री॰, दासी। म्यामासय, पु॰, पेट । श्रामिस, नपुं० मोजन, मांस। **प्रामिस-दान, नपुं०, भौतिक ग्रावश्य-**कतायों की पूर्ति। भामुञ्चित्, क्रिया, घारण करता है। षामुत्त, कृदन्त, घारण किये हुए। ब्रामेण्डित, नपुं०, घोषित, घोषणा ।

म्रामो, प्रव्यय, ही। म्रामोव, पु०, म्रानन्दित होना, प्रमुदित होना । ग्रामोवति, किया, प्रमुदित होता है। ध्रामोदना, स्त्री०, प्रमुदित होना । ध्रामोदमान, मानन्दित. कृदन्त, प्रमुदित । धामोदेति, ऋया, प्रमुदित करता है। म्राय, पु॰, ग्रामदनी, लाम। ग्राय-कम्मिक, पु०, ग्राय एकत्र करने वाला। भ्राय-कोसल्ल, नपुं०, ग्रामदनी बढ़ाने में कुशल होना। श्राय-मुख, नपुं०, श्रामदनी का साधन । श्रायत, वि०, लम्बा। श्रायतन, नपुं०, क्षेत्र, इन्द्रिय, स्थिति । प्रायतनिक, वि०, क्षेत्र-सम्बन्धी। ग्रायति, स्त्री०, मविष्य। ग्रायतिक, वि०, मावी। भ्रायतिका, स्त्री०, नली। श्रायत्त, वि०, निर्मृत । भ्रायत्त, नपुं०, मलकीयत । भ्रायस, वि०, लोह-निर्मित । श्रायसक्य, नपुं०, अगोरव, अपमान। भायसमन्त, वि०,भायुष्मान्, भादरणीय। प्रायाग, पु०, यज्ञ सम्बन्धी दान । प्रायाचक, वि०, मांगने वाला, याचना करने वाला। म्रायाचित, किया, मांगता है। ध्रायाचना, स्त्री॰, माँग, प्रायंना । भायाचमान, वि०, प्रार्थना करते हुए, याचना करते हुए। ब्रायाचिका, स्त्री॰, याचना करने वाली स्त्री।

ग्रायाचितभत्त जातक, वृक्ष-देवता ने पशु-हत्या की निन्दा की (१६)। भायात, कृदन्त, भागत। म्रायाति, किया, म्राता है। यायाम, पु०, लम्बाई। द्यायामति, त्रिया, फैलता है। ग्रायास, पु॰, कप्ट, परेशानी। म्रायु, नपुं०, उमर। श्रायुक, वि०, ग्रायुवाला । म्रायु-कप्प, पु०, जीवन-मर। मायु-क्लय, पु०, म्रायु का क्षय। ब्रायु-सङ्ख्य, पु०, ग्रायु-समाप्ति। ग्रायु-सङ्खार, पु०, जीवन, ग्रायु की लम्बाई। श्रायुत्त, कृदन्त, जुता हुग्रा। म्रायुत्तक, पु०, एजेण्ट (मुनीम), ट्रस्टी (धरोहर रखने वाला)। श्रायुध, नपुं०, हथियार। श्रायुवन्त, वि०, ग्रधिक ग्रायु वाला। श्रायुस्स, वि०, श्रायु-सम्बन्धी। श्रायूहक, वि०, ऋियाशील। श्रायूहति, किया, प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है। भ्रायूहन, नपुं०, प्रयत्न, परिश्रम । भायूहापेति : क्रिया, भ्रन्य से प्रयत्न करवाता है। म्रायोग, पु०, ग्रनुरक्ति, प्रयत्न, बन्धन। म्रायोघन, नपुं०, युद्ध । श्चार, पु०, सूई। श्रारग्ग, नपु०, सूई का सिरा। भारपन्य, पु०, सूई का रास्ता। ब्रारकत्त, नपुं०, दूरीपन। मारका, ग्रव्यय, दूरी। भारकूट, पु०, पीतल।

ग्रारक्खक, पु०, पहरेदार। ग्रारक्ला, स्त्री०, पहरा, हिफाजत । श्रारञ्जक, श्रारञ्जिक, वि०, ग्रारण्यक, श्चारण्य (जंगल) में रहने वाला। ग्रारञ्जकत्त, नपुं०, ग्रारण्य में रहने का माव। श्रारञ्जित, नपुं०, खरोंच। श्रारञ्जित, कृदन्त, हल चलाया गया। ग्रारति, स्त्री०, दूरी, त्याग। भ्रारद्ध, कृदन्त, भ्रारम्भ किया गया। श्रारद्ध-चित्त, वि०, जिसने ग्रपना चित्त जीत लिया हो। म्रारद्ध-विरिय, वि०, प्रयत्नशील। म्रारनाळ, नपुं०, काँजी। म्रारब्भ, ग्रव्यय, सम्बन्ध में, वारे में। भ्रारब्भित, किया, १. श्रारम्भ करता है २. वध करता है, ३. कष्ट पहुँचाता है। श्चारभन, नपुं० ग्चारम्म करना। ग्रारम्भ, पु०, शुरू। ग्रारम्मण, नपुं०, इन्द्रियों का विषय, जैसे चक्षु का विषय रूप। ग्रारवा, पु०, चिल्लाहट, रोना। म्रारा, १. ग्रव्यय, दूर; २. स्त्री०, मोची का सूत्रा। भ्राराचारी, त्रिलिङ्गी, दूर रहने वाला। म्राराधक, पु०, प्रसन्न करने वाला। भ्राराधना, स्त्री०, निमन्त्रण, प्रसन्न करना। ब्राराघेति, किया, निमन्त्रण देता है, प्रसन्न रखता है। धाराधित, कृदन्त, निमन्त्रित, प्रसन्न

म्राराम, पु॰, ग्रानन्द, वगीचा, विहार। बाराम-पाल, पु०, माली। ग्रराम-वत्यु, नपुं०, बगीचे का स्थान। ग्रारामिक, १. पु०, विहार-सेवक; २. वि०, विहार सम्वन्धी। ब्रारामता, स्त्री॰, ग्रासक्ति। ब्रारामदूसक जातक, वन्दरों द्वारा सात दिन तक वगीचे के सींचे जाने की कथा (२६८)। ध्यारुण्ण, नपुं०, रोना, पश्चाताप करना । म्रारुप्प, वि० तथा नपुं०, म्राकार रहित, रूप-विहीन स्थिति। ग्रारुहति, क्रिया, चढ़ता है। श्रारुहन, नपुं०, चढ़ाई। श्रारुहन्त, कृदन्त, चढ़ता हुग्रा। श्रारूळ्ह, कृदन्त, चढ़ा हुग्रा। श्रारोग्य, नपुं०, स्वास्य्य। ग्रारोग्य-मद, पु०, स्त्रास्थ्य का ग्रहंकार। श्रारोग्य-साला, स्त्री०, हस्पताल । श्रारोचना, स्त्री०, घोषणा। श्रारोचापन, नपुं०, किसी दूसरे के द्वारा घोषणा कराना। ग्रारोचापेति, किया, किसी दूसरे के द्वारा घोषणा कराता है। धारोचित, कृदन्त, सूचित। ग्रारोचेति, किया, सूचना देता है। म्रारोदना, स्त्री०, रोना-धोना, विलाप करना। म्रारोपन, नपुं०, लगाना । म्रारोपित, कृदन्त, जिस पर दोष लगाया गया हो। मारोपेति, किया, दोपारोपण करता है। बारोह, पु॰, ऊपर चढ़ना, वृद्धि, ऊँचाई।

ग्रारोहक, पु०, चढ़ने वाला। ग्रारोहति, किया, चढ़ता है। भारोहन, नपुं ० चढ़ाई। म्रालकमंदा, स्त्री०, कुवेर की पुरी। ग्रालका, स्त्री०, ग्रलका-पुरी। म्रालिगत, कुदन्त, लगा हुम्रा, लटकता हुग्रा । म्रालग्गेति, किया, लगा रहता है, लटका रहता है। म्रालपति, ऋिया, बातचीत करता है। म्रालपन, नपुं०, बातचीत, सम्बोधन करना। श्रालम्ब, पु०, सहारा, लटके रहने का ग्राघार। म्रालम्बणदण्ड, पु०, हाय की सहारे की लकड़ी। श्रालम्बति, किया, लटकता है। पकड़े रहता है। सहारा लिए रहता है। ग्रालम्बन, नपुं०, इन्द्रिय का विषय, जैसे घ्राण का विषय गन्ध । म्रालम्बर, पु०, एक प्रकार की भेरी। भ्रालय, पु॰, स्थान, इच्छा, ग्रासक्ति, वहाना । ब्रालवालक, नपुं०, उपजाऊ जमीन। श्राळवी, श्रावस्ती से तीस श्रीर बनारस से लगभग वारह योजन की दूरी पर एक नगर। यह श्रावस्ती तथा राज-गृह के वीच में वसा हुमा था। श्रालस, नपुं०, ग्रालस्य । श्रालान, नपुं०, हाथी बाँधने का स्तम्म। म्रालाप, पु॰, वातचीत । म्राळार-कालाम, गृह-त्याग के मनन्तर सिद्धार्थ-कुमार ने सर्वप्रयम घाचायं से शिक्षा ग्रहण की।

द्यालि, स्त्री॰ (?), एक प्रकार की मछली। श्राति, स्त्री०, खाई। भ्रालिखति, ऋिया, भ्रालेखन करता है, चित्र बनाता है। मालिङ्गति, किया, मालिङ्गन करता है। म्रालित, कृदन्त, लिप्त । भ्रालिन्द, प्०, घर का वरामदा। ग्रालिम्पन, नपुं०, लीपना। म्रालिम्पित, कृदन्त, लीपा हुमा। म्रालिम्पेति, किया, लीपता है। ग्राली, स्त्री०, सखी। म्रालु, नपुं०, जमीकन्द, म्रालू (?) म्रालुम्पति, क्रिया, खोद डालता है। श्रानुळति, त्रिया, हलचल है। म्रालेप, म्रालेपन (पु॰ तथा नपुं॰), ग्रालोक, पु०, प्रकाश। म्रालोकन, नपुं०, १. खिड्की, २. बाहर देखना । म्रालोक-सन्घ, पु०, मरोखा। श्रानोकित, कृदन्त, देखा हुया। म्रालोकेति, क्रिया, बाहर देखल है। म्रालोप, पु०, कौर, म्राहार-पिण्ड। म्रालोळ, पु॰, हलचल। श्रालोळेति, क्रिया, हलचल करता है। (छाछ) विलोता है। माळाहन, नपुं०, दाह-क्रिया का स्थान, श्मशान । ग्रावज्जति, किया, ग्रावजन करता है, विचार करता है। भावज्जेति, किया, घ्यान लगाता है।

म्रावट्ट, कृदन्त, म्रावृत्त, ढका हुमा। श्रावट्टति, क्रिया, उलटता है, पलटता म्रावट्टन, नपुं०, १. म्रावर्तन, २. किसी भूत-प्रेत का सिर ग्राना। ग्रावट्टनी, स्त्री०, जादू, ग्रावर्तनी-माया। श्रावट्टेति, किया, जादू कर देता है। म्रावत्त, कृदन्त, पीछे लौटा हुमा। श्रावत्तक, वि०, पीछे लौटने वाला। श्रावत्तति, किया, वापस लीटा है, पीछे मुड़ता है। श्रावत्तन, नपुं०, वापस लौटना । ग्रावत्तिय, वि०, जो वापस लौट सके या वापिस लौटाया जा सके। ब्रावित्यक, वि०, योग्य, मौलिक। श्रावपति, किया, भेंट करता है। भ्रावपन, नपुं०, बोना, बखेरना। भ्रावर, वि०; बाधक। श्रावरण, नपुं०, परदा, ढक्कन। श्रावरणीय, वि०, परदा रखने के योग्य। श्रावरति, क्रिया, वाघा उपस्थित करता है। भ्रावरित, कृदन्त, वाधित। श्रावरिय, पूर्व-िकया, बाघा उपस्थित कर, भरदां डाल। ग्रावलि, स्त्री॰, पाति, कतार। श्रावली, स्त्री०, पंवित, माला। ग्रावसति, किया, वास करता है, रहता ग्रावसय, पु०, निवास-स्थान। भ्रावहति, किया, लाता है। म्रावाट, पु०, गढ़ा। द्यावहन, नपुं०, लाना । धावाप, पु०, कुम्हार का धावा।

श्रावास, पु०, निवास-स्थान, घर। ग्रावासिक, वि०, नैवासिक। श्रावि, ग्रव्यय, प्रकट रूप से, सबकी ग्रांखों के सामने। श्राविज्भति, किया, चारों ग्रोर से घेर लेता है। श्राविज्ञान, नपुं०, चक्कर काटना । श्राविञ्जति, क्रिया, विलोता है। म्राविञ्जनक, वि०, लटकता हुमा। श्राविटठ, कृदन्त, प्रविष्ट । श्राविद्ध, कृदन्त, बींघा गया। घेरा गया। श्राविल, वि०, गन्दला, मलिन । श्राविलत्त, कृदन्त, गन्दला किया गया या विलोया गया। श्राविसति, किया, प्रवेश करता है। श्रावुणाति, क्रिया, पिरोता है, घागा वाँघता है। श्रावत, वि०, घिरा हुग्रा। म्रावुध, नपुं०, हथियार। श्रावुसो, ग्रन्यय, सम्बोधन-पद (मित्र ! ग्रायुष्मान् !) ब्रावेठ्टन, नपुं०, लपेटना । श्रावेठेति, क्रिया, लपेटता है। श्रावेणिक, वि०, विशेष, ग्रसाधारण। श्रावेला, स्त्री॰, फूलों का गजरा। ग्रावेल्लित, कृदन्त, टेढ़ा। ग्रावेसन, नपुं०, प्रवेश-द्वार। भ्रावेसिक, त्रिलिङ्गी, भ्रतिथि। श्रासंक जातक, राजा ने लड़की के नाम का पता लगाकर उसका पाणि-ग्रहण किया। लड़की का नाम था आसंका (350.) 1 घासंकति, किया, शंका करता है, सन्देह

करता है। ग्रासंका, स्त्री०, शंका, सन्देह । भ्रासंकित, कृदन्त, सशंकित। ग्रासंगवचन, नपुं०, ग्रासक्ति। ग्रासंसत्य, पू॰ तथा नपुं॰, ग्राशीर्वाद ग्रथवा प्रशंसा के ग्रयं में। ग्रासज्ज, पूर्व-किया, प्राप्तकर, पहुँच-कर, समीप जाकर। ग्रासज्जित, किया, ग्रासक्त होता है, कोधित होता है, विरोध करता है। ब्रासज्जन, नपुं०, निग्रह करना, अप-मानित करना, ग्रासक्त होना। ग्रासित, ऋया, वैठता है। श्रासत्त, कृदन्त, ग्रासक्त। ब्रासन, नपुं०, बैठने का ब्रासन। श्रासन-साला, स्त्री०, वैठने का स्थान। ग्रासन्दि, स्त्री०, कुर्सी, चौकी। ग्रासन्न, वि०, पास । नपुं०, पड़ोस। म्रासभ, वि०, वृपम-समान। श्रासय, पु०, ग्राशय, निवासस्थान । भ्रासव, पू०, जो बहे, अकुशल-विचार। श्रासव-क्लय, पु०, ग्रास्तवों का क्षय। म्राससान, वि०, इच्छा करते हए। ग्रासा, स्त्री०, ग्राशा। श्रासा-भङ्ग, पु०, निराश होना। ग्रासाटिका, स्त्री०, मक्खी का ग्रण्डा। ग्रासादेति, किया, ग्रपमानित करता है। म्रासार, पु०, म्रतिवृष्टि । म्रासाळ्ह, पु०, ग्रापाढ़ का महीना ग्रासि, किया, (वह) था। भ्रासिञ्चति, किया, छिड़कता है। म्रासिट्ठ, कृदन्त, ग्राशीर्वाद-प्राप्त। ग्रासित्त, कृदन्त, सींचा हुगा।

भ्रासित्तक, नपुं०, मसाला। म्रासिलेसा, स्त्री०, नक्षत्र विशेष। म्रासिविस, पु०, सर्प । ग्रासि, किया, (मैं) था। म्रासिसक, वि०, इच्छा करने वाला, ग्राशान्वित । म्रासिसना, स्त्री०, इच्छा, ग्राशा । श्रासी, स्त्री॰, ग्राशीवीद, साँप का फन। भ्रासीतिक, वि०, ग्रस्सी वर्ष का। म्रासीन, कृदन्त, बैठा हुमा। म्रासीविस , पु॰, सर्प । श्रासु, ग्रव्यय, शीघता से। म्रास्ं, किया, (वे) थे। ब्रासुम्भति, किया, किसी तरल पदार्थ का फेंकना। म्रासेवति, क्रिया, ग्रम्यास करता है, संगति करता है। श्रासेवना, स्त्री॰, श्रम्यास, संगति । म्राह, क्रिया, (उसने) कहा। ब्राहच्च, वि०, जो हटाया जा सके। माहच्च-पाद, नपं०, पलेंग ।

ब्राहच्च, वि०, जो हटाया जा सके ।

ब्राहच्च-पाद, नपुं०, पलेंग ।

इक्क, पु०, रीछ, मालु ।

इक्खणक, नपुं०, देखना ।

इक्खणक, पु०, ज्योतिषी ।

इक्खणिक, वृ०, ज्योतिषी ।

इक्खित, क्रिया, देखता है ।

इक्खित, कृदन्त, दिखाई दिया ।

इङ्ग, पु०, इशारा, संकेत ।

इङ्गित, नपुं०, चेष्टा, इशारा ।

इङ्गित, नपुं०, चेष्टा, इशारा ।

इङ्गिरीलि, ध्रंग्रेजी-माषा के लिए पालि

शब्द ।

इंगुदी, स्त्री०, हिंगोट का पेड़ ।

इङ्घ, ग्रव्यय, इघर देखें ।

भ्राहट, कृदन्त, लाया हुन्ना । भ्राहत, कृदन्त, चोट खाया हुमा। ग्राहनति, किया, चोट पहुँचाता है। म्राहनन, नपुं०, चोट पहुँचाना । म्राहरण, नपुं०, लाना। भ्राहरति, किया, लाता है। भ्राहव, नपुं०, युद्ध। भ्राहवनीय, नपुं०, यज्ञाग्नि । श्राहार, पु०, भोजन। भ्राहारिट्ठतिक, वि०, ग्राहार पर ग्राहारेति, किया, भोजन ग्रहण करता ब्राहाव, नपुं०, कुँए के पास की नाद। श्राहिण्डति, किया, घूमता है, इधर-उधर डोलता है। श्राहति, स्त्री॰, यज्ञ-ग्राहति। म्राहुण, नप्ं०, भेंट। श्राहणेय्य, वि०, भेंट देने के योग्य। ग्राहंदरिक, वि०, ठसाठस । म्राळहक, नप्ं, हाथी बांघने का खूँटा।

इ

इच्छ, वि०, इच्छा करता हुआ। इच्छक, वि०, इच्छा करते वाला। इच्छित, क्रिया, इच्छा करता है। इच्छा, स्त्री०, कामना। इच्छानङ्गल, कोसल जनपद का एक ब्राह्मण गाँव। इज्फ्रांत, क्रिया, सफल होता है, उन्निति करता है। इज्फ्रांत, क्रिया, सफलता, वृद्धि। इञ्जांत, क्रिया, हिलना, कम्पित होना। इञ्जन, नपुं०, हलचल, कम्पन। इट्ठ, वि०, इष्ट, अनुकूल। इट्ठका, इट्ठिका, स्त्री०, इँट। इट्ठगंध, त्रिलिङ्गी, सुगन्धि । इट्ठविपाक, पु०, शुम परिणाम । इट्टस्सासिसना, स्त्री०, ग्राशीर्वाद । इट्ठिय, जो भिक्षु महास्थविर महेन्द्र के साथ सिहल-द्वीप पधारे थे, उनमें से एक मिक्षु विशेष। इण, नपुं०, ऋण। इणट्ठ, वि०, ऋणी। इण-पण्ण, नप्ं०, ऋण-पत्र, हुण्डी। इण-मोक्ख, पु०, ऋण-मोक्ष । इण-सामिक, पु०, ऋण देने वाला। इण-सोधन, नपुं०, ऋण उतारना । इणियक, पु०, ऋणी, कर्जदार। इणुक्खेप, नपुं०, ऋण, उधार। इतर, वि०, दूसरा। इतरीतर, वि०, कोई। इति, ग्रव्यय, वाक्य की समाप्ति.का संकेत। बहुधा इसका ग्रारम्भिक स्वर 'इ' लुप्त रहता है, जैसे ति किर -ऐसा मैंने सुना। इतिवुत्त, नपुं०, वृत्तान्त । इतिवृत्तक, खुद्दक निकाय की ११० पदों की चौथी पुस्तक । इसकी प्रथम पंक्ति एक-विध है --- कहने के अधिकारी भगवान बुद्ध द्वारा यह कहा गया। इतिह, नपुं०, परम्परागत उपदेश। इतिहा, पु॰, पुरावृत्त । इतिहास, पु०, परम्परा का इति-वृत्त। इतो, भ्रव्यय, इससे भागे। इतो-पट्ठाय, म्रव्यय, यहां से म्रारम्म

करके। इत्तर, वि॰, संक्षिप्त, थोड़ा। इत्तर-काल, पुं०, थोड़ा-सा समय। इत्यत्त, नपुं०, १. (इत्य + त्त) वर्तमान ग्रवस्था, २. (इत्थि + त्त) स्त्रीत्व। इत्यं, कि॰ वि॰, इस प्रकार। इत्यं-नाम, वि०, इस नाम का। इत्थं-मूत, वि०, इस प्रकार का। इत्थागार, पु०, स्त्रियों के रहने का हिस्सा । इत्यि, इत्यिका, स्त्री०, ग्रीरत। इत्यि-धुत्त, पु०, स्त्रियों के चक्कर में रहने वाला। इत्यि-लिङ्ग, इत्यिनिमित्त, नपुं०, स्त्रीत्व का चिह्न। इदं, नपुं०, इम (सर्वनाम) का कर्ता, कर्म (एकवचन)। इदपच्चयता, स्त्री०, 'इस' का हेतु होना । इदानि, कि॰ वि॰, ग्रव। इद्ध, कृदन्त, सम्पन्न । इद्धि, स्त्री०, ऋदि। इद्धि-बल, नपुं०, ग्रलौकिक शक्ति । इद्धिमन्तु, वि०, ग्रलौकिक बल सम्पन्न। इद्धि-विसय, पु०, ग्रलीकिक शक्ति का इघ, कि० वि०, यहाँ, इस जन्म में, इस लोक में। इधुम, नपुं॰, जलावन। इन्द, पु०, (वैदिक) इन्द्र, (देवताम्रों का) अधिपति। इन्द-खील, नगर-द्वार के बाहर गड़ा हुग्रा मजबूत खम्मा। इन्व-गज्जित, नपुं०, बादलों का गर्जन ।

इन्द-गोपक, पु॰, वर्षा ऋतु में पृथ्वी से बाहर ग्राने वाले लाल रंग के कीडे, वीर-बहृटियाँ। इन्ब-म्राग्नं, पु०, बिजली । इन्द-जाल, नपुं०, इन्द्र-जाल, जादू। इन्व-जालिक, पु०, जादूगर। इन्द-धनु, नपुं०, इन्द्र-धनुष । इन्द-नील, पु०, नीलम । इन्द-पत्त, कुरु जनपद का एक नगर, इन्द्र-प्रस्थ । -ग्राघुनिक दिल्ली इन्द्र-प्रस्य की भूमि पर ही बसी हुई 意1 इन्द-यव, पु०, इन्द्र जी। इन्द-यावणि, स्त्री०, खीरे, ककड़ी की बेल। इन्दसाल, पु०, इन्द्रसाल (वृक्ष)। इन्दावुध, नपुं०, इन्द्र का वज्र। इन्दोवर, नपुं०, नीलकमल। इन्द्रिय, नपुं०, चक्षु ग्रादि इन्द्रियाँ। इन्द्रिय-गुत्ति, स्त्री०, इन्द्रियों संरक्षण। इन्द्रिय-वयन, नपुं०, इन्द्रियों दमन। इन्द्रिय-संवर, पू०, इन्द्रियों का संयम। इन्द्रिय-जातक, नारद तपस्वी का एक धप्सरा के द्वारा लुगाया जाना (853) 1 इन्द्र, पु०, चन्द्रमा । इन्धन, नपुं०, ईंधन, जलावन । इब्भ, वि०, धनी। इम, पु॰, हाथी। इभ-पिप्फली, स्त्री०, काली मिर्च के समान तिक्त, लम्बाकार भौषध-विशेष ।

इरिण, नपुं०, महान जंगल, रेगिस्तान, बंजर-भूमि। इरियति, किया, हलचल करता है। इरिया, इरियना, स्त्री०, चाल-ढाल। इरिया-पय, पु०, ग्रङ्ग-संचालन । इरीण, नपुं०, कान्तार। इरु, स्त्री०, ऋग्वेद। इरुब्बेद, ऋग्-वेद। इल्ली, स्त्री०, एक छोटी तलवार। इल्लीस जातक, इल्लीस नामक कंजूस सेठ की कथा (७८)। इस, पू॰, सिंह की जाति-विशेष। इसि, पु०, ऋषि। इसि-पब्बज्जा, स्त्री०, ऋषियों के ढंग की प्रव्रज्या। इसिगिलि, राजगृह के भ्रासपास के पाँचों पर्वतों में से एक । इसिपतन, बनारस के पास के प्रसिद्ध मिगदाय की भूमि (वर्तमान सार-नाथ) । यहीं भगवान बुद्ध का धर्म-चक प्रवर्तित हुमा था। इस्स, पु०, मालू। इस्सति, किया, ईर्वा करता है। इस्सत्य, १. नपुं०, धनुविद्या; २. पु० घनुषघारी। इस्सर, पु०, स्वामी, मालिक, ईश्वर (सृष्टि-रचियता)। इस्सर-जन, पू०, घनी या प्रमावशाली लोग। इस्सर-निम्माण, नपुं०, ईश्वर-निर्माण। इस्सर-निम्माण-वादी, त्रिलिंगी, जो ईश्वर के सुष्ट-रचियता होने में विश्वास करता है। इस्सरिय, नपुं०, ऐश्वयं ।

इस्सरिय-मद, पु॰, ऐश्वयं-मद। इस्सरियता, स्त्री॰, ऐश्वयं-भाव। इस्सा, स्त्री॰, ईर्पा। इस्सा-मनक, वि॰, ईर्पालु। इस्सास, पु॰, धनुषधारी। इस्सुकी, वि०, ईर्पालु । इह, म्रव्यय, यहाँ । इह-लोक, नपुं०, यह लोक, यह जन्म । इहलौकिक, पु०, इस लोक से सम्वन्धित ।

중

ईघ, पु०, दु:ख, खतरा ।
ईति, स्त्री०, विपत्ति, ग्रापत्ति ।
ईतिक, वि०, विपत्ति -ग्रस्त ।
ईदिस, व्गि०, ऐसा ।
ईरित, क्रिया, चलाता है, हिलाताडुलाता है ।
ईरित, क्रदन्त, कम्पित ।
ईरेति, क्रिया, बोलता है ।
ईस, पु०, ईश, स्वामी ।
ईसं, ग्रव्यय, थोड़ा, ग्रल्प ।
ईसक, वि०, थोड़ा-सा ।
ईसघर, सिनेदा पर्वत के चारों ग्रोर की

सात पर्वत-श्रृंखलाग्रों में से एक ।
ईसम्पण्डु, वि०, भूरा रंग ।
ईसत्य, पु० तथा नपुं०, थोड़े का
पर्याय ।
ईसदत्य, पु० तथा नपुं०, थोड़े का
पर्यायवाची ।
ईसा, स्त्री०, हल की फाल ।
ईसा-दन्त, वि०, हल की फाल के
समान दान्तों वाला हाथी ।
ईहति, क्रिया, प्रयत्न करता है ।
ईहा, स्त्री०, प्रयत्न, प्रयास ।
ईहान, नपुं०, प्रयत्न, प्रयास ।

उ

उ, प्रालि वर्णमाला का चौथा स्वर । उक्कंस, पु०, उत्कृष्ट होना, श्रेष्ठ होना । उक्कंसक, वि०, वड़ाई करते हुए, प्रशंसा करते हुए । उक्कंसना, स्त्री०, वड़ाई करना, बढ़ावा देना । उक्कंसेति, किया, बड़ाई करता है, बढ़ावा देता है । उक्कंट्ठ, वि०, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ । उक्कंट्ठता, स्त्री०, उत्कृष्टता । उक्कण्ठति, किया, उत्कण्ठित होता है, ग्रसन्तुष्ट होता है। उक्कण्ठना, स्त्री०, उत्कण्ठा, ग्रसंतोष। उक्कण्ठित, कृदन्त, उत्कण्ठित, ग्रसंतुष्ट। उक्कण्ण, वि०, जिसके कान सीघे खड़े हों। उक्कंतित, किया, काटता है, फाड़ डालता है। उक्कमित, किया, एक ग्रोर हट जाता है।

उक्कल, ग्राधुनिक उड़ीसा ही उत्कल-जनपद है। उक्किलिस्सति, ऋिया, पतित होता है। उक्का, स्त्री०, मशाल, उल्का (-पात), लोहार की भट्ठी। उक्काचेति, स्त्री०, उलीचता है। उक्कार, पु०, गोवर, गूंह। उक्कार-मूमि, स्त्री॰, मैला स्थान। उक्कासति, किया, खाँसता है, गला साफ करता है। उक्किण्ण, कृदन्त, खोदा हुग्रा। उक्किलेदेति, क्रिया, कूड़ा साफ करता है। उक्कुज्ज, वि०, सीधा रखा हुआ। उक्कुज्जेति, किया, ग्रींघे को सीधा रखता है। उक्कुटिक, वि०, उकड़ूँ वैठा हुग्रा। उक्कुट्ठि, स्त्री०, चिल्लाना, घोषणा उक्कुस, पु॰, मछली खाने वाला पक्षी । उक्कूल, वि०, ढलवान । उक्कोच, पु॰, भेंट, उपहार। उक्कोटन, नपुं०, रिश्वत लेकर न्याय न करना। उक्कोटेति, क्रिया, किसी मुकद्में को नये सिरे से उठाता है। उक्खिल, स्त्री०, वर्तन। उला, स्त्री॰, बतंन, ऊखली। उक्खलिखका, स्त्री॰, छोटा बर्तन। उक्लित, कृदन्त, उठाया गया या हटाया गया। उक्सित्त-पलिघ, वि०, बाघा-एहित। उक्सिपति, किया, १. ऊपर उठाता

है, घारण करता है, फेंकता है, २. स्थिगत करता है। उक्खिपन, नपुं०, ऊपर फेंकना। उक्खेपक, वि०, ऊपर फॅकने वाला। उक्लाप, पु०, कुड़ा-कचरा। उग्ग, वि०, बड़ा, भयानक, शक्ति-शाली, उग्र। उग्गच्छति, क्रिया, ऊपर जाता है। उग्गज्जित, ऋिया, चिल्लाता है। उगगण्हन नपुं०, सीखना, पढ़ना। उग्गण्हाति, क्रिया, सीखता है, पढ़ता है। उग्गण्हापेति, किया, सिखाता है। उगग्रह, पूर्वं किया, सीखकर। उग्गत, कृदन्त, ऊपर उठा हुमा। उगात्यन, नपुं०, ग्रामरण विशेष। उग्गम, पु॰, ऊपर उठना। उग्गमन, नपुं०, चढ़ाई, वृद्धि । उग्गहित: कृदन्त, सीखा हुआ, ऊपर उठा हुग्रा, ग्रनुचित तौर पर लिया हुआ। उग्गहेतु पु॰, सीखने वाला। उग्गहेत्वा, पूर्वं शिवा, सीखकर। उग्गार, पु॰, उल्टी करना, डकार, वायु को पेट से बाहर निकालना। उग्गाहक, वि०, सीखने वाला। उग्गिरति, किया, मुंह से शब्द निका-लता है, डकार लेता है। उग्गिरण, नपुं०, उद्गार। उग्गिलति, क्रिया, थूकता है, उल्टी करता है। उग्घटित, वि०, प्रयत्नशील। उग्घरति, किया, बूंद-बूंद टपकता है। उग्वंसेति, क्रिया, रगड़ता है। उग्घाटन, नप्ं०, चद्घाटन, विवृत

करना, खोलना। उग्घाटित, कृदन्त, उद्घाटन किया हुआ। उग्घाटेति, किया, उद्घाटन करता है, खोलता है। उग्घात, पु०, भटका । उग्घातित, कृदन्त, भटका खाया हुआ। उग्घातेति, त्रिया, ग्रचानक भटका देता उग्घोसना, स्त्री०, घोपणा । उग्घोसित, कृदन्त, घोषित। उग्घोसेति, ऋिया, घोषणा करता है। उच्च, वि०, ऊँचा, शेष्ठ। उच्चत्त, नपुं०, ऊँचाई। उच्चतरस्सर, पु०, ऊँची ग्रावाज। उच्चय, पू॰, संग्रह । उच्चसद्दन, नपुं०, घोषणा। उच्चा, कि॰ वि॰, ऊँचा। उच्चा-सद्द, ऊँचा शब्द। उच्चासयन, ऊँचा पलङ्ग । उच्चार, पु०, गोबर, गूंह। उच्चारण, नपुं०, १. ऊपर उठाना, २. (शब्द का) उच्चारण। उच्चारित, कृदन्त, जिसका उच्चारण हुआ है। उच्चारेति, किया, उच्चारण करता उच्चालिङ्ग, प्०, भिनगा। उच्चावच, वि०, ऊँचा-नीचा। उच्चिनाति, क्रिया, चुनाव करता है। उच्छङ्ग, पु०, गोद। उच्छंग जातक, स्त्री ने राजा की कैंद से ग्रपने पति तथा पुत्र को भी छोड़ देने की याचना न कर, अपने माई

को छोड़ देने की याचना की (६७)। उच्छादन, नपुं०, वदन का मिलना। उच्छादेति, त्रिया, बदन को रगड़ता है। उच्छिट्ठ, वि०, जूठन। उच्छिद्रभत्त-जातक, स्त्री ने अपने यार का जूठा मात ब्राह्मण को खिलाया (२१२) 1 उच्छिज्जित, क्रिया, नष्ट हो जाता है। उच्छित, वि०, ऊँचा। उच्छिन्दति, किया, तोड डालता है, नाश कर डालता है। उच्छिन्न, कृदन्त, टूटा हुन्ना, नष्ट हुआ। उच्छ, पु०, गन्ना । उच्छ-यन्त, नपुं०, गन्ना पेरने की मशीन। उच्छ-रस, पु०, गन्ने का रस। उच्छेद, पु०, नाश, विनाश। उच्छेद-दिद्ठ, स्त्री०, पुनर्जन्म में ग्रविश्वास । उच्छेदवादी, पु०, पुनर्जन्म को न मानने वाला। उजु, उजुक, वि०, सीधा। उजुता, स्त्री०, सीघापन। उजं, कि॰ वि॰, सीधे। उज्जम्घति, किया, जोर से खिलखिला-कर हसता है। उज्जिप्यिका, स्त्री०, जोर की हँसी। उज्जङ्गल, वि०, बंजर या वालू की जमीन। उज्जल, वि०, उज्ज्वल, चमकदार। उज्जलित, क्रिया, चमकता है। उज्जवति, किया, नदी के ऊपर की

भोर जाता है। उज्जवनिका, स्त्री॰, नदी में ऊपर की भोर जाने वाली नाव। उज्जहति, किया, छोड़ देता है। उज्जेनी, ग्रवन्ति जनपद की राज-घानी। उज्जोत, पु०, प्रकाश। उज्जोतितः, कृदन्त, प्रकाशित । उज्जोतेति, क्रिया, प्रकाशित करता उज्मति, किया, छोड़ देता है। उज्भान, नपुं०, शिकायत। उज्भान-सञ्जी, वि०, दोषारोपण की चेतना-युक्त। उज्भापन, नपुं०, उत्तेजित करना। उज्भापेति, क्रिया, चिढ़ाता है, शिका-यत करता है। उज्भायति, किया, ग्रसन्तोष प्रकट करता है। उज्भित, कृदन्त, त्यक्त, फॅका गया। उञ्छति, त्रिया, फेंकी हुई खाद्य-सामग्री इकट्ठी करता है। उञ्जातन्त्र, कृदन्त, घृणास्पद। उट्ठहति, ऋिया, उठ खड़ा होता है। उट्ठातु, पु॰, उठ खड़े होने वाला। उट्ठान, नपुं०, उत्थान, उठ खड़े होना। उट्ठापेति, किया, उठा देता है, निकाल बाहर करता है। उट्ठायक, वि०, ग्रप्रमादी, क्रिया-शील। उद्ठित, कृदन्त, उठा हुया। उड्डाहति, किया, जलाता है। उड्डेति, किया, उड़ता है।

उण्ण, नपुं०, ऊन । उण्णा, स्त्री०, बुद्ध के मोंहों के बीच के उण्णा-नाभि, पु०, मकड़ी। उण्णामय, वि०, बालों का बुना हुग्रा (बिछावन)। उण्ह, वि०, ऊष्ण, गरम। उण्हत्त, नपुं०, गरमी। उण्हरंसि, पु०, सूर्य। उण्हीस, नपुं०, पगड़ी। उतु, स्त्री०, ऋतु। उतु-काल, पु०, मासिक धर्म का समय। उतु-परिस्सय, पु०, ऋतु-परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले कष्ट । उतु-सप्पाय, पु॰, ऋतु की अनु-क्लता। उतुनी, स्त्री०, ऋतु-स्राव वाली स्त्री। उत्त, कृदन्त, उक्त, कहा गया। उत्तण्डुल, वि०, कुपच (मात)। उत्तत्त, कृदन्त, गरम किया हुआ, चमकता हुमा। उत्तम, वि०, श्रेष्ठ। उत्तमङ्ग, नपुं०, श्रेष्ठ ग्रङ्ग ग्रयात् मस्तिष्क । उत्तमङ्गरुह, नपुं०, सिर के बाल। उत्तमण्ण, पु०, ऋणदाता । उत्तमत्य, पु०, श्रेष्ठतम परमार्थ । उत्तमा, स्त्री॰, श्रेष्ठ स्त्री, सुन्दर नारी। उत्तम-पोरिस, पु॰, श्रेष्ठतम पुरुष । उत्तर, वि०, उच्चतर, उत्तर (दिशा)। उत्तर, नपुं०, (प्रश्न का) उत्तर। उत्तर-कुर, निकायों तथा उत्तरकालीन

पालि वाङ्मय में वर्णित काल्पनिक प्रदेश। उत्तरत्यरण, नपुं०, ऊपर का बिछा-वन । उत्तरच्छद, पु०, चँदवा। उत्तरसुवे, कि०-वि०, परसों। उत्तर-पञ्चाल, राष्ट्र-विशेष, जिसकी राजधानी कम्पिल्ल थी। उत्तरण, नपुं०, पार होना, (परीक्षा में) उत्तीणं होना। उत्तरित, क्रिया, जल से वाहर आता है। उत्तरविपरीत, वि०, ग्रनुत्तरीय। उत्तरा, स्त्री०, उत्तर-दिशा। उत्तरा नन्द-माता, बुद्ध का उपस्थान करने वाली गृहस्य उपासिकाश्रों में प्रमुख। जम्बु द्वीप का उत्तरी उत्तरापय, विभाग। पालि वाङ्मय में इसकी सीमाग्रों का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। हो सकता है कि उत्तरापथ से से तक्षिला तक जाने वाला महामागं ग्रभिप्रेत हो। उत्तरायण, नपुं०, सूर्यं की उत्तरायण, दक्षिणायन दो गतियों में से पहली। उत्तरासङ्गः, पु०, ऊपर का कपड़ा। उत्तरि, उत्तरि, कि॰ वि०, ग्रधिकतर। उत्तरि-करणीय, नपुं०, ग्रागे का कार्य। उत्तरि-भङ्ग, पु॰, मोजन की समाप्ति पर दिया जाने वाला स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ।

उत्तरि-मनुस्स-धम्म, पु॰, परामानुधिक

स्थिति ।

उत्तरि-साटक, पु०, ऊपर का वस्त्र। उत्तरितर, वि०, भ्रधिक श्रेष्ठ। उत्तरिय, नपुं०, १. श्रेष्ठ ग्रवस्था। [धनुत्तरिय, नपुं०, श्रेष्ठतम अवस्था।] २. प्रत्युत्तर। उत्तरीय, नपुं०, ऊपर की चादर। उत्तसति, किया, त्रसित होता है, चौकन्ना हो जाता है। उत्तसन, नपुं०, त्रास, भय। उत्तस्त, कृदन्त, मयमीत, त्रसित। उत्तान, उत्तानक, वि०, ग्राकाश की श्रोर मुंह करके लेटा हुआ। उत्तान-सेय्यक, वि०, बच्चा। उत्तानीकम्म, उत्तानीकरण, नपुं०, स्पष्टीकरण। उत्तानीकरोति, किया, स्पष्ट करता है। उत्तापेति, ऋिया, कष्ट देता है, त्रास देता है। उत्तारित, कृदन्त, पार उतारा हुआ। उत्तारेति, ऋिया, पार उतारता है, रक्षा करता है, सहायता करता है। उत्तास, पू०, त्रास, भय। उत्तासन, नपुं०, त्रास-देना, मृत्यु-दण्ड देना। उत्तासित, कृदन्त, जिसे त्रास दिया गया है, जिसे मृत्यु-दण्ड दिया गया उत्तासेति, किया, त्रास देता है, डराता उत्तिट्ठति, त्रिया, उठ खड़ा होता है। उत्तिण, वि०, तृण-रहित । उत्तिण्ण, कृदन्त, उत्तीणं, उस' पार चला गया। उत्रास, पु॰, त्रास, मय 1

जत्रासी, वि०, त्र सित, भयमीत, कायर। उद, ग्रव्यय, ग्रथवा, या। उवक, नपुं०, पानी । उदफ-काक, पु॰, समुद्री चिड़िया। उदफ-धारा, स्त्री०, जल-धारा। उदक-बिन्दु, नपुं० जल-बिन्दु। उदक-माणिक, पु०, जल रखने का बड़ा बर्तन । उदक-साटिका, स्त्री०, नहाने का वस्त्र। उवकच्छ, नपुं०, दलदल । उदकन्ति, स्त्री०, पानी में उतरना। उवकायतिक, पानी का पाइप। उदकुम्भ, पु०, जल का घड़ा। उदकोघ, प्०, पानी की बाढ़। उवग, वि०, प्रसन्न-चित्त। उदञ्चन, नपुं०, छोटी बाल्टी । जल-पात्र। उदञ्चनी जातक, स्त्री के ग्राकर्षण के वशीभूत हुए पुत्र को पिता ने उसके साय जाने की ब्राज्ञा दी (१०६)। उदण्ह, नपुं ०, सूर्योदय । उद्धा, पु॰, समुद्र। उदपादि, ऋिया ०, उत्पन्न हुमा। उदपान, पु०, कुर्या । उवपान-दूसक जातक, कुएँ के जल को सराब करने वाले गीदड़ की कथा (308)1 उदय, पु०, उन्नति, वृद्धि, भ्राय, सूद। उदय जातक, उदय मह तथा उदय महा की कथा (४५८)। उबंबत्यगम, पू०, उन्नति तथा पतन । उदय-ख्य, पु॰, वृद्धि तथा ह्रास, जन्म तथा मृत्यु । उदयन्त, कृदन्त, उठता हुआ, वृद्धि

को प्राप्त होता हुआ। उदयति, त्रिया, उदय होता है। उदयन, नपुं०, ऊपर उठता है। उदर, नपुं०, पेट। उदरगिंग, पु०, भूख। उदरावदेहकं, ऋि वि०, पेट को गले तक मरना। उदरिय, नपुं०, पेट, पेट का मोजन। उदहारक, पु०, पानी लाने वाला। उदहारिय, वि०, पानी लाने के लिए जाता हमा। उदागच्छति, ऋया, सम्पूर्ण होता है। उदान, गपुं०, उल्लासपूर्ण कयन । उदान, खुदक निकाय का एक ग्रन्य। उदानेति, त्रिया, उल्लास-पूर्ण कथन करता है। उदार, वि०, विशाल-हृदय, महान्। उदासीन, वि०, उपेक्षा-युक्त, यकिया-शील। उदाहट, कृदन्त, उक्त, बोला गया। उदाहरण, नपुं०, मिसाल, उदाहरण। उबाहरति, ऋया, पाठ करता है, उच्चा-रण करता है। उदाहार, पु०, कथन। उदाहु, ग्रन्यय, ग्रयवा, या । उदिक्खति, क्रिया, देखता है, घुमाता है। उदिष्खितु, पु०, देखने वाला, नजर डालने वाला। उदिच्च, वि०, श्रेष्ठ, उत्तरकुलोत्पन्त । उदित, कृदन्त, उदय हुग्रा, ऊपर उठा। उद्गीचि, स्त्री०, उत्तर दिशा। उदीरण, नपुं०, कथन। उदीरित, कृदन्त, कहा गया, कथित

उदीरेति, किया, कहता है, बोलता है। उदुष्खल, पु०, नपुं०, ऊखल। उदुम्बर, पु०, गूलर का वृक्ष । उदुम्बर जातक, एक बन्दर द्वारा दूसरे बन्दर के ठगे जाने की कथा (२६८)। उदेति, किया, उदय होता है, वृद्धि को प्राप्त होता है। उदेन, कोसम्बी-नरेश। उद्द, पु०, ऊद-विलाव। उद्दक-रामपुत्त, गृहत्याग के धनन्तर जिन ब्राचायाँ से गौतम बुद्ध ने शिक्षा ग्रहण की, उनमें से एक । उद्दलोमी, पु०, ऊर्घ्व-लोमी, ऐसा कम्बल जिसके दोनों सिरों पर उसें हों। उद्दरसेति, किया, दिखाता है। उद्दान, नपुं०, सूची-समूह। उद्दाप, पु०, प्राकार की नींव। उद्दाम, वि०, चञ्चल। उद्दालन, नपुं॰, फाड़ डालना। उद्दालक जातक, उद्दालक पुरोहित की कथा (४८७)। उद्दालेति, किया, फाड़ डालता है। उहि ्ठ, कृदन्त, बताया हुम्रा, इशारा विवाहमा। उद्दिसति, किया, नियम करता है, उच्चारण करता है। उद्दिसापेति, किया, नियम कराता है। उद्दीपना, स्त्री०, व्याख्या, तेज करना। उद्देक, (उद्रेक), पु०, डकार। उद्देस, पु॰, संकेत, व्याख्या, पाठ। उद्देसक, पु०, संकेत करने वाला, व्याख्याता, पाठ करने वाला । उद्देहक, वि०, उबलने वाला। उढ, वि०, ऊपर का।

उद्या, वि०, ऊपर की मोर मुंह वाला। उद्धगति, स्त्री॰, ऊर्घ्वंगति । उद्घन्न, नपं०, उद्धतपन । उद्धट, कृदन्त, खींचा हुमा, नष्ट किया हमा। उदत, उदत। उद्ववेहिक, कृदन्त, मृतक-दान, श्राद्ध। उद्धन, नपुं०, चूल्हा। उद्धपाद, वि०, ऊपर की ग्रोर पांव वाला। उद्धम्म, पु०, मिथ्या मत । बढरण, नपुं०, ऊपर उठाना, जड़ खोदना । उदर्रात, किया, उठाता है, जड़ सोदता उद्दं, कि॰ वि॰, ऊपर। उद्धंगम, वि०, ऊपर जाने वाला, ऊर्घ्वंगामी वाय, शरीर में विचरण करने वाली वायु। उद्धंभागिय, वि०, ऊपरी भाग से सम्बन्धित । उद्घं विरेचन, वमन । उद्धं सोत, वि०, जीवन-स्रोत पर ऊपर की भोर चढ़ना। उद सेति, किया, नष्ट करता है, विनाश करता है। उदार, पु०, बाहर खींच लाना । उद्भात, उद्धुमातक, वि०, सूजा हुमा, फूला हुमा। उद्ध मायति, ऋया, सूज जाता है। उद्रय, वि०, कारण होना। उद्रीयति, किया, फूट पड़ता है, टुकड़े-दुकड़े हो जाता है। उद्रीयन, नपुं॰, फूट पड्ना, गिर पड्ना।

उद्रेक, (उद्देक) पु॰, वमन। जन्दु, (उन्दुर, उन्दूर), पु०, चूहा। उन्न, नपुं॰, गीलापन। उन्नत, कृदन्त, ऊपर उठा हुआ। उन्नति, स्त्री०, वृद्धि। उन्नदित, ऋया, चिल्लाता है। उन्नम, पु॰, ऊँचाई। उन्नमति, क्रिया, ऊपर उठता है। उन्नल, वि०, ग्रमिमानी, ग्रहंकारी। उन्नाद, पुंढे, शोर। उन्नावेति, किया, शोर करता है। उप, उपसगं, समीप म्रादि मनेक अथौ का बोधक। उपक (उपग), वि०, समीप जाना। उपकच्छ, नपुं०, बगल। उपकट्ठ, वि०, समीप। उपकड्ढति, क्रिया, खींचता है। उपकण्णक, नंपुं०, ऐसा स्थान, जहाँ से दूसरों की धापसी बातचीत सुनाई दे सके। उपकप्पति, क्रिया, पास जाता है, योग्य होता है, यनुकूल होता है। उपकप्पन, नपुं०, समीप जाना, उप-योगी होना, योग्य होना । उपकरण, नपुं०, साधन। उपकरोति, क्रिया, उपकार करता है। उपकार, पु०, सहायता। उपकारक, पु॰, उपकार करने वाला। उपकिण्ण, कृदन्त, विखेरा हुग्रा। उपक्जित, फिया, (पक्षी) चहचहाता है। उपकूल, वि०, नदी-तट। उपक्ळित, कृदन्त, उबाला हुमा, भूना हुमा ।

उपक्कम, पु॰, साधन, उपाय। उपक्कमति, क्रिया, प्रयास करता है, श्राक्रमण करता है। उपक्कमन, नपुं०, ग्राक्रमण, जाना । उपिकलिट्ठ, वि०, मैला, दागी। उपिकलेस, पु॰, चित्त-मैल। उपक्कीतक, पु॰, क्रीत दास। उपक्कुट्ठ, कृदन्त, जिस पर दोषा-रोपण हुम्रा हो। उपक्कोस, पु॰, दोपारोपण। उपक्कोसति, क्रिया, दोषारोपण करता उपक्लट, वि०, पास लाया हुआ। उपरखर, पु०, रथ का ग्रङ्ग-विशेष। उपक्ललन, नपुं०, स्खलन, पांव लड्-खड़ाना। उपग, वि०, जाता हुग्रा, समीप जाता हुग्रा। उपगच्छति, क्रिया, पास जाता है। उपगत, कृदन्त, पास गया। उपगमन, नपुं०, पास जाना। उपगूहति, त्रिया, गले मिलता है। उपगूहन, नपुं०, गले मिलना। उपग्घात, पु०, भटका। उपघात, पु०, चोट। उपघातकः, वि०, चोट पहुँचाने वाला। उपघाती, वि०, चोट पहुँचाने वाला, जान से मार डालने दाला। उपचय, पु०, संग्रह । उपचरति, किया, व्यवहार करता है, उचत रहता है। उपचरित, कृदन्त, ग्रम्यस्त, सेवित । उपचार, पु॰, पास-पड़ोस, पूर्व-तैयारी। उपचिका, स्त्री॰, दीमक। उपिचण्ण, कृदन्त, ग्रम्यस्त, एकत्रित । उपचित, कृदन्त, ढेर लगा हुग्रा। उपचिनाति, क्रिया, एकत्र करता है। उपच्चगा, किया, लांघ गया, आगे बढ गया, बढ़ निकला। उपिच्छन्दति, किया, तोड़ डालता है, नष्ट कर डालता है, बाधक होता है। उपिन्छन्न, कृदन्त, तोड़ दिया गया, काट दिया गया, नष्ट कर दिया गया । उपच्छेद, पु०, रुकावट, विनाश। उपच्छेदक, वि०, रुकावट डालनेवाला, नष्ट करने वाला । उपजानाति, क्रिया, सीखता है, प्राप्त करता है। उपजीवति, क्रिया, किसी के आश्रय से जीता है। उपजीवी, वि०, किसी के आश्रय से जीने वाला। उपक्रभाय, पु०, उपाध्याय। उपञ्जात, कृदन्त, सीखा हुम्रा, ज्ञात। उपञ्जास, पु०, वचन-क्रम। उपट्ठपेति, किया, समर्पित करता है, सेवा में उपस्थित रहता है। उपट्ठहति, किया, प्रतीक्षा करता है, सेवा करता है, सेवा में उपस्थित रहता है, समभता है, उपस्थान करता है। उपट्ठाक, पु०, सेवक। उपट्ठान, नपुं०, सेवा। उपट्ठान-साल, स्त्री०, सभा भवन। उपट्ठित, कृदन्त, उपस्थित, तैयार। उपट्ठेति, किया, सेवा में रहता है,

गौरव प्रदिशत करता है। उपडय्हति, फिया, जलता है। उपड्ढ, वि॰ तथा नपुं॰, ग्राघा। उपतप्पति, क्रिया, अनुत्तप्त होता है। उपताप, पु०, पश्चाताप । उपतापक, वि०, ग्रनुताप तथा पश्चा-ताप का कारण। उपतापेति, किया, कष्ट देता है, पीड़ा पहुंचाता है। उपतिट्ठति, किया, समीप खड़ा होता है, देखमाल करता है। उपतिस्स, धर्म-सेनापति सारिपुत्र का गृहस्य-नाम 1 उपत्यद्ध, वि०, कड़ा, कठोर, सहारे खड़ा। उपत्यम्भ, पु०, सहारा। उपत्थम्भेति, किया, सहारा देता है। उपत्यर, पु०, दरी, मास्तरण। उपदस्सेति, क्रिया, प्रदिशत करता है। उपदहति, किया, देता है, कारणीभूत होता है। उपदा, नपुं॰, भेंट, उपहार। उपदिट्ठ, कृदन्त, उपदिष्ट । उपदिसति, ऋिया, उपदेश देता है। उपदिसन, नपुं०, उपदेश। उपदिस्सति, किया, प्रकट होता है। उपदेस, पु०, उपदेश। उपद्व, पु०, उपद्रव, दुर्भाग्य। उपहवेति, त्रिया, कप्ट पहुँचाता है। उपहुत, कृदन्त, उपदुत, कष्ट का भागी। उपघान, नपुं०, तकिया। उपधान, वि०, कारण होना। उपधानेति, ऋया, कल्पना करता है,

विचार करता है। उपघारण, नपुं०, दूध का बर्तन । उपधारणा, स्त्री०, विचार। उपधारित, कृदन्त, विचारित। उपघारेति, त्रिया, विचार करता है, परिणाम निकालता है। उपघावति, क्रिया, दौड़ता है। उपघावन, नपुं०, पीछे दौड़ना। उपिष, पु॰, पुनर्जन्म का कारण, मासक्ति। उपनच्चित, क्रिया, नृत्य करता है। उपनत, कृदन्त, भुका हुआ। उपनदति, ऋिया, भ्रावाज देता है। उपनढ, कृदन्त, शत्रु-माव रखना। उपनन्धति, किया, शत्रु-भाव रखता उपनमति, क्रिया, भुकता है। उपनमन, नपुं॰, भुकना, नम्र होना। उपनयन, नपुं०, पास लाना, हिन्दुग्रों का उपनयन-संस्कार। उपनरहति, क्रिया, शत्रु-भाव रखता है। उपनय्हना, स्त्री०, शत्रु-माव। उपनामित, कृदन्त, पास लाया गया, मेंट। उपनामेति, क्रिया, पास लेता है, मेंट लाता है। उपनायिक, वि०, समीप श्राता हुन्ना, लाता हुमा । उपनाह, पु०, वर, शत्रु-माव। उपनाही, वि०, वैरी। उपनिक्लमति, क्रिया, ग्रमिनिष्क्रमण करता है। उपनिक्सित्त, कृदन्त, निक्षिप्त, रखा

उपनिक्खित्तक, पु०, चर-पुरुप। उपनिविखपति, क्रिया, रखता है। उपनिक्खिपन, नपुं०, निक्षेप, रखना। उपनिक्खेप, पु०, निक्षेप, रखना। उपनिघंसति, क्रिया, रगड़ता है, (कोल्ह में) पेरता है। उपनिज्ञान, नपुं०, विचार, मनन। उपनिज्भायति, ऋिया, विचार करता है, मनन करता है। उपनिधा, स्त्री॰, तुलना। उपनिधि, पु०, वचन देना। उपनिधाय, भ्रव्यय, तुलना किया गया। उपनिपज्जति, ऋिया, पास लेट जाता है। उपनिबद्ध, कृदन्त, सटा हुआ। उपनिबन्ध, पु०, नजदीकी सम्बन्ध। उपनिबन्ध, वि०, निर्मृत, सम्बन्धित। उपनिबन्धति, ऋिया, सटाकर बाँधता है, मिन्नत करता है। उपनिबन्धन, नपुं०, नजदीकी सम्बन्ध, ग्रति-विनम्र प्रार्थना । उपनिसा, स्त्री॰, कारण, साधन, समान-उपनिसीदति, क्रिया, समीप बैठता उपनिसेवति, किया, संगति करता है। उपनिस्सय, पु॰, ग्राधार, ग्राश्रय। उपनिस्सवति, किया, संगति करता उपनिस्साय, कि॰ वि॰, पास, समीप, कारण से, साधन से। उपनिस्सित, कृदन्त, निर्मृत, आश्रित। उपनीत, कृदन्त, लाया गया, पाला

गया । उपनीय, पूर्वं किया, लाकर। उपनीयति, किया, लाया जाता है, ले जाया जाता है। उपनील, वि०, नील-वर्ण। उपनेति, किया, पास लाता है, भेंट करता है। उपन्तसेल, पू०, उपत्यका। उपन्तिक, १. विं०, पास । २. नपुं०, पास-पड़ोस । उपपज्जित, क्रिया, पुनर्जन्म ग्रहण करता है। उपपति, नपुं०, यार, जार। उपपत्ति, स्त्री०, जन्म, पुनर्जन्म । उपपन्न, कृदन्त, जन्म ग्रहण किया। उपपरिक्लण, नपुं०, परीक्षा। उपपरिक्खति, क्रिया, परीक्षा लेता है। उपपरिक्ला, स्त्री०, परीक्षा। उपपातिक, वि०, विना माता-पिता के उत्पन्न होने वाले सत्व, जैसे देवता । उपपादित, कृदन्त, समुत्पन्त । उपपादेति, क्रिया, उत्पन्न करता है। उपपारमी, स्त्री॰, छोटी-पारमिताएँ (गूण-विशेष की पराकाष्ठायें)। उपपोळक, वि०, पीड़ा देने वाला, कष्ट देने वाला। उपपीळा, स्त्री०, पीड़ा, कष्ट । उपप्फुसति, क्रिया, स्पशं करता है। जपप्लवति, किया, तैरता है। उपञ्जूजित, ऋिया, जाता है, विदा होता है। उपम्बळ्ह, वि०, मीड़ वाली जगह । उपब्रह्म, नपुं०, वृद्धि । उपब हति, किया, बढ़ाता है, फैलाता

है। उपभुञ्जक, वि०, लाने वाला, भोगने वाला। उपभुञ्जति, ऋिया, मोगता है। उपभोग, पु॰, भोगना । उपभोगी, वि०, उपमोग करने वाला। उपमा, स्त्री॰, समानता। उपमातु, स्त्री॰, दाई। उपमान, नपुं , तुलना, जिससे तुलना की जाये। उपमेति, किया, तुलना करता है। उपमेय्य, वि०, जिसकी तुलना की जाय। उपय, पु०, ग्रासक्ति। उपयम, नपुं॰, विवाह। उपयाचित, किया, याचना करता है, मांगता है। उपयाचितक, नपुं०, याचना, माँग । उपयाति, किया, समीप जाता है। उपयान, नपुं०, पहुँच । उपयानक, नपुं०, केकड़ा। उपयुज्जति, किया, सम्बन्ध जोड़ता है, ग्रम्यास करता है, उपयोग करता है। उपयोग, पु॰, (उप+योग) सम्बन्ध । उपरचित, कृदन्त, निमित। उपरज्ज, नपुं०, उप-राजपना। उपरत, कृदन्त, विरत हुआ। उपरति, स्त्री॰, संयम । ज़परमति, ऋया, विरत रहता है, संयत रहता है। उपराजा, पु॰, वाइसराय, राजा का स्थानापन्न । उपरि, प्रव्यय, ऊपर। उपरिट्ठ, वि०, सर्वोपरि।

उपरि-पासार, पु॰, सबसे ऊपर का तल्ला। उपरिभाग, पु॰, कपर का हिस्सा। उपरि-मुझ, वि॰, ऊपर की घोर मुंह वाला। उपरित्त, कृदन्त, ऊपर होने का भाव। उपरिम, वि०, सर्वोपरि। उपरुज्कति, किया, अवरोध को प्राप्त होता है, रक जाता है। उपरन्धति, क्रिया, रोकता है, रुकावट डालता है। उपस्ळ्ह, कृदंन्त, उगा हुमा। उपरोचित, किया, प्रसन्न करता है। उपरोदति, किया, विलाप करता है। उपरोधेति, किया, बाधा डालता है। उपरोप, नपुं॰ (?), पौधा। उपल, पु०, पत्यर। उपलक्खणा, स्त्री०, विवेक करना। उपलक्खित, कृदन्त, उपलक्षित, विवेक कृत । उपलक्खेति, किया, विवेक करता है। उपलढ, कृदन्त, प्राप्त। उपलढि, स्त्री॰, प्राप्ति। उपलब्भति, ऋिया, प्राप्त होता है, विद्यमान होता है। उपलभति, किया, प्राप्त करता है। उपलापन, नपुं०, प्रेरणा, वकवास । उपलापेति, क्रिया, प्रेरित करता है। उपलालेति, क्रिया, लालन करता है। िश्या, सरोचता है, उपलिक्खति, उत्कीणं करता है। उपलिप्पति, क्रिया, लेप करता है। उपलिम्पति, किया रंग पोतता है। उपलेप, पु॰, लेप।

उपलोहितक, वि०, लाल रंग का। उपवज्ज, वि०, सदोष। उपवण्णेति, ऋिया, वर्णन करता है। उपवत्त, उपवत्तन, हिरण्यवती के तट पर कुसीनारा के मल्लों का शाल-वन। यहीं भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण हुआ था। उपवत्तित, किया, विद्यमान होता है। उपवत्तन, वि०, समीप होना। उपवदति, किया, दोषारोपण करता है, भ्रपमानित करता है। उपवन, नपुं॰, छोटा जंगल, बगीचा। उपवसति, किया, वासं करता है, रहता है। उपवाद, पु०, दोष, ग्रपमान । उपवादक, वि०, दोष देने वाला, ग्रप-मान करने वाला। उपवायति, किया, (हवा) चलती है। उपवास, पु॰, घ्राहार-त्याग, वत । उपवासन, नपुं०, सुगन्धित करना। उपवासित, वि०, सुगन्धित। उपवासेति, किया, सुगन्धित करता है। उपवाहन, नपुं०, ले जाना, वहाकर ले 'जाना । उपविजञ्जा, स्त्री०, ऐसी स्त्री जिसको प्रसव होने ही वाला हो। उपविसति, किया, समीप ग्राता है, समीप बैठ जाता है। उपवीण, पु०, वीणा का सिरा। उपवीत, कृदन्त, बुना हुगा। उपवीयति, किया, बुनता है। क्दन्त, दोपारोपित किया उपवृत्त, गया। उपबृत्य, कृदन्त, (उपोसय-) व्रत

रखागया। उपबेसन, नपुं०, बैठना । उपव्हाति, क्रिया, बुलाता है। उपसंवसति, िज्या, किसी के साथ रहता है। उपसंहरण, नपुं०, पास-पास लाकर एकत्र करना, तुलना करना। उपसंहरति, किया, इकट्ठा करता है, समीप लाता है, ढेर लगाता है। उपसंहार, पू०, एकत्र करना, सार ग्रहण करना, तुलना करना। उपसङ्क्यात, ऋया, पास जाता है। उपसङ्कमन, नपुं०, पहुँच, नजदीक जाना। ✓उपसङ्कित्वा, पूर्वं ० क्रिया, पास जाकर। उपसम्म, पु॰, खतरा, किसी किया के पूर्व में भ्राने वाले वर्ण-समूह (उपसर्ग)। उपसन्त, कृदन्त, शान्त-चित्त । उपसम, पु॰, शान्ति, सन्तोष । उपसमेति, क्रिया, सन्तुष्ट करता है, शान्त करता है। उपसम्पज्ज, कृदन्त, पहुँच जाना, प्रविष्ट होना, उपसम्पन्न-भिक्षु होना। उपसम्पज्जति, किया, पहुँचता है, प्रविष्ट होता है, (भिक्षु) उपसम्पन्न होता है। उपसम्पदा, स्त्री०, बौद्ध-मिक्षु की संघ के द्वारा दी जाने वाली दीक्षा। उपसम्पन्न, कृदन्त, उपसम्पदा प्राप्त । उपसम्पादेति, ऋिया, उपसम्पदा की दीक्षा देता है। उपसम्फरसति, क्रिया, गले मिलता है। उपसम्मति, किया, शान्त होता है, सन्तुष्ट होता है।

उपसाळ्ह जातक, उस ब्राह्मण की कया जिसने प्रपने लड़के को म्रादेश दिया था कि उसकी दाह-किया ऐसी जगह की जाय, जहां पहले किसी की दाह-किया न हुई हो। (१६६) उपसिंघति, किया, नाक वजाता है। उपसिंघन, नपुं॰, नाक बजाना। उपसुस्सति, किया, सूख जाता है। उपमुस्सन, नपुं०, सूख जाना, । उपसेचन, नपुं०, भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए उस पर (नमक-मिर्च) छिडकना । उपसेनिया, स्त्री०, जो लड़की सदैव ग्रपनी माँ के पास रहना चाहे, लाडला । उपसेवति, किया, ग्रम्यास करता है, संगति करता है। उपसेवना, स्त्री॰, ग्रम्यास, संगति। उपसेवित, कृदन्त, जिसने श्रम्यास किया हो, जिसने संगति की हो। उपसेवी, वि०, ग्रम्यास करने वाला, संगति करने वाला। उपसोभित, किया, सुशोमित होता है, सुन्दर लगता है। उपसोभित, कुदन्त, सुशोमित । उपसोभेति, किया, स्शोभित कराता उपसोसेति, किया, सुखाता है ! उपसट्ठ, कृदन्त, दिमत, जिसका दमन किया गया। उपस्सय, पु॰, निवास-स्थान । उपस्सास, पु॰, सांस लेना । उपस्तृति, स्त्री॰, उपश्रृति, दूसरों की

गुप्त बातचीत। उपस्मुतिक, वि०, दूसरों की बातचीत स्नने वाला। उपहञ्जति, किया, अष्ट होता है, चोट साता है। उपहत, कृदन्त, चोट खाया हुमा। उपहत्तु, पु॰, लाने वाला । उपहनति, क्रिया, हानि पहुँचाता है, चोट पहुंचाता है। उपहरण, नपुं॰, मेंट । उपहरति, किया, मेंट लाता है। उपहार, पु॰, मेंट, पुरस्कार। उपहिसति, किया, हानि पहुँचाता है, चोट पहुँचाता है। उपागच्छति, क्रिया, समीप माता है। उपागत, कृदन्त, समीप भ्राया हुमा। उपातिवावति, किया, दौड़ता रहता है। जपातिपन्न, कदन्त, गिरा हुम्रा, शिकार हमा। कृदन्त सीमातिकान्त उपातिवत्त, हुमा। उपातिवत्तति, क्रिया, सीमोल्लंघन करता है। उपादा, कि॰ वि॰, उपादाय का संक्षिप्त रूप, सकारण। उपादान, नपुं०, ग्रासक्ति, ईंघन। उपादानक्लन्ध, पु॰, मासन्ति के रूप, वेदना ग्रादि स्कन्ध। उपावानक्लय, पु०, ग्रासक्ति का क्षय। उपादानिय, वि०, ग्रासन्ति से सम्बन्धित। उपादाय, पूर्व • किया, कारण होकर। उपावि, पु॰, जीवन का इंबन।

उपादि-सेस, वि०, जिसमें रूप, वेदना ग्रादि स्कन्ध ग्रवशेष हों। उपादिन्न, कृदन्त, गृहीत । उपादियति, किया, ग्रहण उपाधि, पु॰, पद, गद्दी। उपान्तम्, स्त्री०, पास की भूमि। उपाय, पू॰, साधन। उपाय-कुसल, वि०, साधन-सम्पन्न । उपाय-कोसल्ल, नपुं० उपाय-कुशलता । उपायन, नपुं०, मेंट। उपायास, पु॰, चिन्ता, दु:ख, पश्चाताप। उपारम्भ, पु०, डांट-डपट। उपालि स्थविर, मगवान बुद्ध के महा-श्रावकों में से एक अत्यन्त प्रसिद्ध महास्यविर। इनका जन्म कपिल-वस्तु के नाई परिवार में हुआ था। बुद्ध के परिनिर्वाण के अनन्तर प्रथम संगीति में उपालि स्थविर ही विनय के विषय में प्रमाण माने गये थे। क्रिया, स्थान ग्रहण उपाविसि. किया। उपासक, पु०, गृहस्य शिष्य। उपासकत्त, नपुं०, उपासक-भाव। उपासति, किया; उपासना करता है, सेवा में रहता है। उपासन, नपुं०, १. सेवा; २. धनुर्विद्या। उपासिका, स्त्री०, स्त्रीधर्मानुयायी । उपासित, कृदन्त, पूजित, सेवित। उपासीन, कृदन्त, पास बैठा हुगा। उपाहत, कृदन्त, जिसे भ्राघात लगा हो, जिसने चोट खाई हो। उपाहन, नपुं ०, जूता । उपेक्सक, वि०, उपेक्षा करने वाला।

उपेक्खति, किया, उपेक्षा करता है। उपेक्खना, स्त्री०, उपेक्षा । उपेक्ला, स्त्री०, उपेक्षा-माव, मध्यस्थ-उपेत, कृदन्त, पास गया हुग्रा, प्राप्त उपेति, क्रिया, पास जाता है, प्राप्त करता है। छपेत्वा, पूर्वं अवा, पास जाकर। उपोग्घात, पु०, उदाहरण। सपोचित, कृदन्त, संग्रहित, ढेर लगा हुआ, सुखद । **छपोसथ**, १. नपुं०, हाथियों का कुल-विशेष; २. पु०, महीने की दोनों भप्टिमयाँ, ग्रमावस्या तथा पूणिमा के चार उपोसथ (-व्रत) के दिन। खपोसथ-कम्म, नपुं०, उपोसथ (-न्नत) का क्रियातमक रूप। हपोसथागार, नपुं०, उपोसथ-भवन। ष्ठपोसियक, वि०, उपोसय (-व्रत) के दिन ग्राठ शील प्रहण करने वाला। रुपक्क, वि०, सूजा हुग्रा, फूला हुग्रा। उप्पच्चित, ऋिया, पकता है। उपपज्जित, किया, उत्पन्न होता है। उपपज्जन, नपुं ०, उत्पन्न होना । उपपज्जमान, कृदन्त, उत्पन्न होने वाला। उप्पिज्जितब्ब, कृदन्त, उत्पन्न होने के उप्पटिपाति, स्त्री ०, कमामाव, ग्रनि-उप्पटिपाटिया, वि०, कम-विरुद्ध ! उपण्डना, स्त्री०, हँसी उड़ाना, मजाक

उड़ाना । उपण्डुकजात, वि०, पीला पड़ गया। उपण्डेति, किया, मुंह चिढ़ाता है। उप्पतित, क्रिया, उड़ता है, ऊपर उछलता है। उप्पतन, नपुं०, उड़ान, उछलन । उप्पतमान, कृदन्त, उड़ता हुग्रा, उछलता हुग्रा । उप्पतित, कृंदन्त, उड़ा, उछला । उप्पतित्वा, पूर्वं वित्या, उड्कर, उछल-कर। उप्पत्ति, स्त्री॰, उत्पत्ति, पुनजंन्म । उप्पत्ति-भूमि, स्त्री०, जन्म-भूमि । उपय, पू०, कुमार्ग । उप्पन्न, कृदन्त, उत्पन्न । उप्पब्बजित, किया, भिक्षु-संघ से निकल जाता है । पुनः गृहस्य हो जाता है । उप्पन्बजित, कृदन्त, भिक्षु-संघ से निकला हुग्रा, पुन: गृहस्थ वना हुग्रा। उप्पद्याजेति, किया, मिक्षु-संघ से निकाल देता है, पुन: गृहस्य बना देता है। उप्पल, नपुं ०, कॅवल । उपलबण्णा थेरी, मगवान बुद्ध की दो प्रधान भिक्षणियों में से एक । वह एक सेठ की पुत्री थी। उसकी चमड़ी उत्पल-वर्ण होने के कारण ही उसका नाम उप्पलवण्णा स्थविरी पड़ा था। उप्पालिनी, कॅवलों से मरा हुआ तालाव। उप्पाटन, नपुं०, उखाड़ना । उप्पाटित, कृदन्त, उलाड़ा गया। उप्पाटेति, ऋिया, उसाड़ता है, छीलता है।

उप्पात, पु॰, ऊपर उड़ना, उल्कापात, घ्रसाधारण घटना उप्पाद, पु॰, उत्पन्न होना, ग्रस्तित्व में याना । उप्पत्क, वि०, उत्पन्न करने वाला। उपादन, नपुं०, उत्पत्ति। उप्पादेति, पु०, उत्पन्न करता है। उप्पादेतु, पु०, उत्पन्न करने वाला। उप्पादेतुं, उत्पन्न करने के लिए। उप्पीळन, नपुं०, पीड़ा देना, दबाना, दमन करना। उप्पीळित, कृदन्त, पीड़ित। उप्पीळेति, किया, पीड़ा देता है, दबाता है, कप्ट देता है। उप्पोठन, नपुं०, भाड़ना, पीटना । उप्पोठेति, किया, भाइता है, पीटता 3 1 उप्त ान, नपुं ०, तैरना। उप्ल⊲ति, किया, तैरता है। उप्लापेति, किया, ड्वकी लगाता है। उप्पालेति, किया, फाइता है। उप्फासुलिक, वि०, पसली मात्र दिखाई देने वाला। बब्बट्टन, नपुं०, बदन को रगड़ना, उबटन लगाना । उद्बद्धित, कृदन्त, मला गया, उबटन लगाया गया। उब्बट्टोत किया, मालिश करता है, उबटन लगाता है। उब्बत्तेति, किया, ऊपर उठता है, फूलता है, सुपय से हट जाता है। उब्बन्धति, क्रिया, मार डालता है। उन्बन्धति, फाँसी लटका देता है, गला घोंट देता है।

उव्बन्धन, गला घोंटना, फाँसी लगा लेना, फांसी लटकाना। उन्बहति, किया, खींचता है, ले जाता है, उठाता है। उब्बहन, नपुं०, खींचना, ले जाना, उठाना । उन्बाळह, कृदन्त, कष्ट-प्राप्त, हैरान किया गया। उब्बिगा, कृदन्त, उद्विग्न। उब्बिज्जित, किया, उद्वेग को प्राप्त होता है। उब्बिज्जना, स्त्री॰, उद्वेग, ग्रशान्ति । उब्बिलावितत्त, नपुं०, ग्रत्यन्त ग्राह्माद। उब्बी, स्त्री०, भूमि। उब्बेग, पुं०, उद्देग, उत्तेजना । उब्बेजेति, क्रिया, उद्वेग उत्पन्न करत है, भयभीत करता है। उन्देघ, पुं०, ऊँचाई। उब्भट्ठक, वि०, सीधा खड़ा हुम्रा। उन्भत, कृदन्त, वापिस ले लिया गया, खींच लिया गया। उग्भव, पु॰, उद्भव, उत्पत्ति । उन्भार, पु०, हटा दिया जाना। उन्भिज्ज, पूर्वं किया, बाहर आकर, ग्रेंखुग्रा फूट निकलकर। उन्मिज्जति, क्रिया, ऊपर उछलता है, ग्रंख्या फूट निकलता है। उब्भिद, १. नपुं०, खाने का नमक; २. पू॰, पानी का चशमा; ३. वि॰, ग्रंकुर निकलता हुगा। उन्भूजित, क्रिया, ऊपर उठाता है। उभ, उभय, सर्वनाम, दोनों। उभतो, भ्रव्यय, दोनों तरह से। उभतो भटठ जातक, एक मछ्वे की

क्या, जो दोनों म्रोर से गया 1 (3 5 9) उभयतोदिक, स्त्री०, दोनों ग्रोर। उभो, सर्वनाम, दोनों। जम्माग, पू०, सूरँग, चोर-रास्ता। उम्मज्जन, नपुं०, शरीर को घोना। उम्मत्त, वि०, पागल। उम्भदन्ती जातक, एक सेठ की लड़की की कथा, जो अपने सौन्दयं के कारण देखने वालों को उन्मत्त बना देती थी (४२७)। उम्मा, स्त्री०, ग्रलसी के बीज। उम्माद, पू॰, उन्माद, पागलपन । उम्मादवन्तु, पू०, पागल। उम्मार, पू॰ देहली, चौखट। उम्मि, स्त्री॰, ऊमि, लहर। उम्मिसति, क्रिया, ग्रांख खोलता है। उम्मिहति, क्रिया, पेशाव करता है। उम्मीलन, नपुं०, उन्मीलन, ग्रांख खोलना । उम्मीलेति, किया, उन्मीलन करता है, यांख खोलता है। उम्मुक, नपुं०, लुग्राठी, मशाल। उम्मुक्क, कृदन्त, गिरा हुआ। उम्मूख, वि०, जिसका मुँह ग्राकाश की ग्रोर हो। उम्मूज्जति, किया, पानी से बाहर निकलता है। उम्मुज्जन, नपुं०, वाहर निकलना । उम्मुज्ज-निमुज्जा, स्त्री०, इतराना-ड्बना । उम्मुज्जतान, कृदन्त, इतराता हुमा। उम्मूल, वि०, उन्मूल। उम्मूलित, कृदन्त, जड़ खोदा हुआ।

उम्मलन, नप्ं, जड़ खोदना । उम्मलेति, किया, जड़ खोदता है। उय्यान, नप्ं, उद्यान । उय्यान-कोळा, स्त्री०, उद्यान-कीड़ा । उय्यान-पाल. प्०, उद्यान-पालक, माली। उय्यान-भूमि, स्त्री०, उद्यान-भूमि । उय्यानवन्त, वि०, ग्रनेक उद्यानों वाला। उय्याम, पु०, उद्यम, प्रयत्न । उय्युज्जित, क्रिया, जुतता है, प्रयास करता है। उय्युज्जन, नपुं०, उद्योग, ऋिया-शीलता । कृदन्त, उद्योग-रत, क्रिया-उय्युजन्त, शील। उय्युत्त, कृदन्त, उत्साही, लगा हुमा। उय्योग, प्०, उद्योग । उय्योजन, नपुं०, प्रेरणा। उय्योजित, कृदन्त, प्रेरित, भेज दिया उय्योजेति, किया, प्रेरित करता है, भेज देता है। उय्योधिक, नप्ं, लड़ाई की योजना, सेना की भठ-मूठ की लड़ाई। उर, पू॰ तथा नपुं॰, छाती। उर-चक्क, नपुं०, छाती पर रखा हुआ लोह-चक । उर-च्छद, पु०, छाती की ढाल। उर-ताळि, कि॰ वि॰, ग्रपनी छाती पीटना । उरग, पु॰, सपं उरग-जातक, सांप तथा गरुड़ का संघर्ष । बोधिसत्व ने दो स्थायी

वैरियों में मैत्री कराई (१५४)। उरग-जातक, पुत्र की मृत्यु पर घर का कोई भी नहीं रोया (३५४)। उरण, पु०, भेड़, मेढ़ा। उरणी, स्त्री०, भेड़ी। उरहम, पु०, मेढ़ां। उरु, वि०, बड़ा, चौड़ा, प्रमुख। उच्वेल कप्प, मल्ल जनपद में मल्लों का एक नगर। उरुवेला, बुद्धगया में, वोधिवृक्ष के समीप, नेरञ्जरा के तट पर एक स्थान। उल्क, पु०, उल्लू । . उल्क-जातक, पिंधयों द्वारा उल्लू को ग्रपना राजा बनाये जाने का प्रस्ताव किया गया (२७०)। बल्लं बन, नपुं०, सीमोल्लंघन । उल्लंघेति, क्रिया, सीमा लाँघ जाता है। उल्लपति, किया, ग्रात्म-प्रशंसा करता है। उल्लपना, स्त्री०, ग्रात्म-प्रशंसा। उल्लिखति, क्रिया, ग्रलग करता है, लकीर खींचता है। उल्लिखन, नपुं०, ग्रलग करना, लकीर खींचना । उल्लित, कृदन्त, उपलिप्त, लेप किया गया। उल्लुम्पति, किया, ऊपर उठाता है, सहायक होता है। उल्लुम्पन, नपुं ०, कपर उठाना, संरक्षण। उल्लोकक, वि०, द्रप्टा। उस्लोकन, नपुं०, दृष्टि, खिड़की।

उल्लोकेति, किया, देखता है। उल्लोच, पु॰ तथा नपुं॰, वितान, चँदुग्रा। उल्लोल, पु०, चलन, वड़ी लहर। उल्लोलेति, क्रिया, हलचल पैदा करता है। उसभ, पू॰, व्षम, श्रेष्ठ पुरुष, दूरी का माप-विशेष। उसभंग, पु०, वृषम का श्रंग। उसीर, नपुं०, खस। उसु, पु॰ तथा स्त्री॰, तीर। उसुकार, पु॰, तीर वनाने वाला। उसुवड्ढकी, पु०, तीर वनाने वाला बढई। उसुयक, वि०, ईर्षा करने वाला। उस्पति, क्रिया, ईर्षा करता है। उसूया, स्त्री०, ईर्षा । उसुयोपगम, पुं०, ईर्षा का आगमन। उस्मा, स्त्री०, ऊष्णता । उस्सङ्की, वि०, शंकालु, भयमीत। उस्सद, उस्सन्न, वि०, विपुल। उस्सन्नता, स्त्री०, विपुलता। उस्सव, पु॰, उत्सव। उस्सहति, त्रिया, कोशिश करता है। उस्सहन, नपुं०, प्रयास, प्रयत्न । उस्सापन, नपुं०, उठाना। उस्सापित, कृदन्त, उठाया गया । उस्सापेति, ऋया, उठाता है, ऊँचा करता है। उस्सारणा, स्त्री , भीड़ । उस्सारित, कृदन्त, एक ग्रोर डकेल दिया गया। उस्सारेति, किया, एक भ्रोर ढकेल देता है।

ऊ

उस्साव, पु०, ग्रोस। उस्साव-बिन्दु, नपुं०, ग्रोस की बूँद। उस्साह, पु०, उत्साह। उस्साहवन्तु, वि०, उत्साही। उस्साहेति, किया, उत्साहित करता है। उस्सिञ्चित, क्रिया, पानी उठाता है, सींचता है। उस्सिञ्चन, नपुं०, पानी उठाना. सींचना । उस्सित, कृदन्त, उठाया गया, ऊँचा किया गया। उस्तीसक, नपुं०, सिर रखने की जगह, तिकया। उस्सुक, वि०, उत्सुक, उत्साही, क्रिया-उस्मुक्क, नपुं०, ग्रीत्मुक्य, उत्साह, क्रिया-शीलता। उस्मुक्फिति, क्रिया, कोशिश करता है,

प्रयत्न करता है। उस्सुक्कापेति, किया, प्रेरित करता है। उस्सुस्सति, किया, सूख जाता है। उस्सूर, वि०, सूर्योदय के बाद का। उस्सूर-सेय्या, स्त्री० सूर्योदय के बाद सोते रहना। उस्सोळही, स्त्री०, उत्साह। उळार, वि०, उदार, विशाल, श्रेष्ठ, प्रमुख। उळारत्त, नपुं०, उदारता, विशालता, श्रेष्ठत्व, प्रमुखत्व । उळु, पु॰, तारा। उळु-राज, पु०, चन्द्रमा । उळुडू, पु०, करछुल। उळ्प्प, पु॰, डोंगी। उळूक, पु०, उल्लू। उल्ळ्क-पक्लिक, नपुं०, उल्लू के पैरों से बना हुग्रा पहनावा।

कका, स्त्री०, जूं, चीलर।
कन, वि०, कम, न्यून।
कनत्त, कनता, नपुं०, स्त्री०, कमी,
न्यूनता।
कमी, किम, स्त्री०, लहर।
उरिट्ठ, नपुं०, जाँघ की हड्डी।
कर, जाँघ।
कर-पब्ब, नपुं०, जाँघ का जोड़।
कस, पु०, खारी मिट्टी।
कसावन्तु, पु०, खारी मिट्टी वाला।
कसा, पु०, खारा पदार्थ।

उत्तर, वि० तया नपुं०, क्षार-युक्त. उत्तर। उत्हल्च, कृदन्त, खींचा गया, हटा दिया गया। उत्हर्वति, किया, साफ करता है, मैल दूर करता है। उत्हल, नपुं०, विचार, संग्रह। उत्हलति, किया, खींचता है, हटाता है। उत्हलति, किया, हसता है, मुंह चिढ़ाता है। उत्हा, स्त्री०, चिन्तन-मनन।

एक, वि॰, संस्थावाचक शब्द । बहुवचन में 'एक' का ग्रर्थ हो जाता है कुछ । एक-चर, एक-चारी, वि०, ग्रकेला रहने वाला ।

एक-देश, प्०, एक विभाग, एक हिस्सा। एक-पट्ट, वि०, एक तह वाला कपड़ा। एकभत्तिक, वि०, दिन में एक ही बार स्नाने वाला। एकक, वि०, ग्रकेला। एककृटयुत, पु॰, एक तल्ला भवन । एकक्खरकोस, सोलहवीं शताब्दी में सदम्म-किति द्वारा रचित पालि शब्द-सूची। एकक्ली, वि०, एक ग्रांस वाला। एकाग, वि ०, एकाग्र। एकग्गता, स्त्री॰, एकाग्रता । एकच्च, एकच्चिय, वि०, कुछ, चन्द । एकज्भं, कि॰ वि॰, एक ही स्थान पर । एकतो, ग्रव्यय, एक ग्रोर। एक्त, नपुं०, १. एकता, २. अकेलापन, ३. धनुकुलता। एकदा, कि॰ वि॰, एक बार। एकन्त, वि०, निश्चय से, पूर्ण निश्चय से, एकतरफा। एकन्त-लोमी, पु०, कम्बल जिसके एक भोर उसें हों। एकन्तरिक, वि०, एक का बीच देकर, एक के बाद एक छोडकर। एकपटलिक, वि०, एक तह वाला कपड़ा। एकपण्ण जातक, बोधिसत्व ने राजकुमार को नीम के पत्ते खिलाकर ग्रपना याचरण सुधारने की शिक्षा दी (388) 1 एकपद जातक, बोधिसत्व ने एक शब्द द्वारा अपने पुत्र को उपदेश दिया।

वह शब्द था दक्खेय्य प्रथति दक्षता

(२३६) 1 एकपदिक-माग, पु०, पगडण्डी। एकमन्तं, कि॰ वि॰, एक ग्रोर। एकमेक, एकेक, वि०, एक-एक करके। एकराज जातक, देखी सेय्यसं जातक, एकराज जातक (३०३)। एकरूप, वि०, ग्रपरिवर्तनशील। एकविघ, वि॰, एक ही तरइ का, समान । एकसो, कि ० वि०, एक-एक करके एकंस, एकंसिक; वि०, १. निश्चित रूप से, २. एक कंधे से सम्वन्धित। एकाकी, त्रिलिङ्गी, यकेला (यादमी)। एकाकिनी, स्त्री०, ग्रकेली (स्त्री)। एकागारिक, पु॰, चोर। एकादस, संख्यावाची वि०, ग्यारह एकायन, पु०, एक ही मार्ग । एकासनिक, वि०, दिन में एक ही बार खाने वाला। एकाह, नपुं०, एक दिन। एकाहिक, वि०, एक ही दिन रहने वाला। एकिका, स्त्री०, ग्रकेली स्त्री। एकीभाव, पु०, एकता, एकान्त । एकोमूत, वि०, एकत्रित, सम्बन्धित। एक्न, वि०, एक कम। एक्नचतालीसति, स्त्री०, उनतालीस। एक्नितिसति, स्त्री॰, उनतीस। एक्नपञ्जास, स्त्री०, उनंचास। एक्नवीसति, स्त्री०, उन्नीस । एक्नसिंह, स्त्री॰, उनसठ। एक्नसत्तित, स्त्री ०, उनहत्तर। एकूननवृति, स्त्री॰, नवासी।

एकूनसत, नपुं०, निन्नानवे । एकूनासीति, स्त्री०, उनास्सी। एकोदिभाव, पु०, एकाग्रता । एजा, स्त्री०, तृष्णा, चलन (हिलना)। एट्ठ, स्त्री॰, तलाश, इच्छा, चाह । एण, पू०, एक प्रकार का हिरण। एणिमिग, एणेय्य, पु०, मृग-विशेष । एणेट्यक, नपुं०, एक प्रकार का कष्ट-दान। एत, सर्वनाम, वह, यह, पु०, एसो, स्त्री०, एसा। एतरहि, कि॰ वि॰, ग्रव। एतादिस, वि०, ऐसा, इस तरह का। एति, किया, ग्राता है। एतिहा, स्त्री०, इति-वृत्त । एतिटय्ह, नपुं०, परम्परागत वृत्तान्त । एत्तक, वि०, इतना। एत्तावता, कि॰ वि॰, यहाँ तक, इतनी दूर तक। एत्तो, ग्रव्यय, यहां से, यहां । एत्थ, ऋ० वि०, यहाँ। एदिस, एदिसक, वि०, ऐसा, प्रकार का। एध, पु०, इँधन, जलावन । एघति, क्रिया, प्राप्त करता है, सफल, होता है। एन, एत (सर्वनाम) का ही रूप। एरक, नपुं०, घास-विशेष। एरक-दुस्स, नपुं०, एरक की बनी चादर। एरण्ड; पु०, रेंड़ । एरावण, पु०, इन्द्र के हाथी का नाम। एरावत, पु॰, नारंगी, संतरा

एरित, कृदन्त, कम्पित । एरेति, क्रिया, हिलता है। एला, स्त्री॰, युक । एव, ग्रव्यय, ही। एवरूप, वि०, ऐसा, इस प्रकार का। एवं, कि॰ वि॰, इस प्रकार। एवं, ग्रव्यय, हो। एवम्पि, ग्रव्यय, इस प्रकार भी। एवमेव, ग्रब्यय, इसी प्रकार। एवंविध, वि०, इस प्रकार। एसति, किया, खोजता है। एसना, स्त्री०, खोज। एसन्त, एसमान, कृदन्त, सोजता हग्रा। एसिकत्थम्भ, पु०, नगर-द्वार के सामने गड़ा हुआ सम्भा। एसित, कृदन्त, खोजा गया। एसितब्ब, कृदन्त, खोजने योग्य। एसी, पु॰, खोजने वाला। एसिनी, स्त्री॰, स्रोजने वाली। वि०, इहलोक एहलोकिक, सम्बन्धी। एहिपस्सिक, वि०, जो धर्म सभी को कहे कि यायो यौर परीक्षा करके देखो । एहि-भिक्ख, प्राचीनतम समय में किसी को मिक्ष बनाने की पद्धति "मिक्षु, ग्रा।" एळक, पु॰, भेड़। एळगल वि॰, जिसके मुंह से लार टप-कती हो। एल्मूग, पु॰, बहरा तथा गूँगा। एळा, स्त्री०, युक । ए ब्रालुक, नपुं ०, सीरा-ककड़ी।

म्रो

भ्रो, पालि वर्णमाला का एक स्वर। कुछ वैयाकरणों का मत है कि पालि में भाठ स्वर होते हैं, भीर कुछ का मत है दस स्वर होते हैं। ग्राठ स्वर के पक्षपाती ए, भ्रो के हस्व तथा दीघं दो स्वरूप नहीं मानते। दस स्वर के पक्षपाती 'ए' तथा 'म्रो' के 'ह्रस्व' तथा 'दीर्घ' दो-दो रूप मानते हैं। संयुक्त वणं से पूर्व व्यवहृत होने वाले 'ए' तथा 'भ्रो' उनके मतानुसार 'हस्व' स्वर होते हैं। श्रोक, नपुं०, १. जल, २. निवास-स्यान। मोकड्दति, क्रिया, सींच लाता है, हटा देता है। भोकन्तति, किया, काटता है। श्रोकप्पति, किया, व्यवस्था करता है, तैयारी करता है, विश्वास करता है। ग्रोकप्पना, स्त्री०, विश्वास करना। भ्रोकप्पनिय, वि०, विश्वसनीय। मोकप्पेति, किया, विश्वास करता है। ग्रोकम्पेति, किया, हिलाता है। भोकार, पु०, नीचपन, विकृति। घोकास, पु०, स्थान, अवसर, अनुज्ञा। भोकास-कम्म, नपुं०, धनुज्ञा, इजाजत। मोकिण्ण, कृदन्त, बिखरा हुमा, ढका हुमा । घोकिरण, नपुं०, बिखेरा जाना, फेंका जाना। भोकिरति, किया, विखेरता है। भोक्कन्त, कृदन्त, भागत, घटित । भोक्कन्ति, स्त्री०, प्रवेश प्रकट होना,

घटित होना। ग्रोक्कन्तिक, वि०, घटित होने वाला। मोक्कमति, किया, प्रवेश करता है, ग्राता है। धोरकमन, नपुं०, प्रवेश, ग्रागमन। म्रोक्कमन्त, कृदन्त, प्रवेश होता हुआ। भ्रोक्कम्म, पूर्व शिक्या, हटकर। मोक्काक, शाक्यों तथा कोलियों का पूर्वज ग्रोकाक्क नरेश। ध्रोक्खित्त, कृदन्त, नीचे गिराये हुए। ग्रोक्खित्त-चक्खु, वि०, नीची-नजर वाला। घोक्खिपति, किया, फेंकता है, गिराता है। ग्रोगच्छति, किया, नीचे जाता है, ग्रस्त होता है, पीछे हटता है। श्रोगण, वि०, गण से पृथक् हुग्रा, ग्रकेला । भ्रोगध, वि०, सम्मिलित, डूबा हुम्रा। घोगव्ह, पूर्वं किया, मिल जाने पर, ड्ब जाने पर। घोगाह, पु०, घोगाहन, नपुं०, डुबकी लगाना । घोगाहति, त्रिया, डुबकी लगाता है। भोगाहमान, कृदन्त, डुवकी लगाते हुए। भ्रोगिलति, क्रिया, निगलता है। म्रोग् जित, कृदन्त, घूंघट निकला हुमा, दका हुया। श्रोगुष्ठेति, किया, धूंघट निकालती है, ढकती है। ब्रोगुम्फेति, किया, (माला) पिरोता है। घोग्गत, कृदन्त, ग्रवगत, ग्रस्त होना ।

स्रोघ, पु०, वाढ़। श्रोध-तिण्ण, ी०, वाढ़ से सुरक्षित। श्रोधनिय, वि॰, जो बाढ़ में ग्रा सकता है। श्रोचरक, पु॰, गुप्तचर। श्रोचिण्ण, कृदन्त, संगृहीत । भ्रोचिनन, नपुं०, संग्रह करना, एकत्र करना। योचिनन्त, कृदन्त, संग्रह करते हुए, एकत्र करते हुए। भोचिनाति, किया, संग्रह करता है, एकत्र करता है। ब्रोछिन्दति, क्रिया, काट डालता है। भ्रोज, पू॰, शरीर-शक्ति। ग्रोजवन्त, वि०, शक्तिवर्धेक । श्रोजवन्तता, स्त्री०, शक्तिवर्धक माव। श्रोजहाति, ऋिया, छोड़ देता है, त्याग देता है। श्रोजा, स्त्री०, शरीर का ग्राघार ग्रोज। श्रोजिनाति, किया, जीतता है, हराता है। म्रोट्ठ, पु॰, १. ऊँट, २. होंठ। भ्रोट्ठुभति, किया, युकता है। श्रीड्डत, कृदन्त, (जाल)फेंका गया। श्रोड्डेति, किया, (जाल) विछाता है। श्रोणमति, किया, भुकता है। श्रोणमनः, नपुं ०, भुकना । ग्रोणमित, कृदन्त, भुका हुग्रा। भ्रोतरण, नपुं०, उतरना, नीचे भ्राना। धोतरति, किया, नीचे उतरता है। श्रोतरन्त, कृदन्त, नीचे उतरते हुए। श्रोतापेति, किया, धूप में तपता है। श्रोतार, पु॰, उतराव, पहुँच, ग्रवसर, दोष।

ग्रोतार-गवेसी, वि०, ग्रवसर खोजने वाला। श्रोतारण, नपुं०, उतराव। म्रोतारेति, किया, उतारता है। ग्रोतिण्ण, कृदन्त, ग्रवतरित । श्रोत्तप्प, नपुं०, पाप-भीस्ता। श्रोत्तप्पति, किया, पाप करने से मय-भीत होता है। ग्रोत्तप्पी, वि०, पाप-मीरू। भ्रोत्यट, कृदन्त, फैला हुम्रा, नीचे गया हमा। म्रोत्यरक, नपुं०, कपड्-छान। म्रोत्थरति, ऋिया, फैलाता है, नीचे जाता है, छानता है। भ्रोदकन्तिक (भ्रोद्रकन्तिक), १. नपुं०, जल-समीप स्थान; २. वि०, जिसका धन्त जल में हो। ध्रोदग्य, नपुं॰ उदग्र भाव, तेजस्वी भाव म्रोदन, नपुं०, तथा पु० पकाया हुमा चावल, मात। म्रोदन-संभव, पु॰ तया नपुं, पिच्छा। म्रोवनिक, पु०, रसोइया। म्रोदनिय, वि०, म्रोदन-सम्बन्धी। घोदरिक, वि०, पेट्र, पेट मरने के लिए जीने वाला। भ्रोबहति, किया, रखता है, घ्यान देता है। ब्रोदहन, नपुं॰, नीचे रखना, घ्याना-वस्थित होना । ग्रोदात, वि०, सफेद, स्वच्छ । भोदात-कसिण, नपुं०, श्वेत रंग का वित्त को एकाग्र करने का साधन। प्रोदात-वसन, वि०, श्वेत बस्त्रघारी। भ्रोदिस्स, कि॰ वि॰, उद्देश्य से।

श्रोदिस्सक, वि०, विशेष रूप से। म्रोद्म्बर, वि०, गूलर-वृक्ष सम्बन्धी । श्रोधि, पु॰, ग्रवधि, सीमा। भोधिसो, ऋि वि०, सीमित मात्रा में। भ्रोधनाति, किया, धनता है। म्रोनद्ध, कृदन्त, बँधा हुमा, दका हुमा, लिपटा हुमा। भ्रोनन्धति, ऋिया, बांधता है, ढकता है, लपेटता है। म्रोनमक, वि०, भूकता हुमा। म्रोनमति, किया, भूकता है। ग्रोनमन, नपु०, भुकना। भ्रोनय्हति, किया, ढकता है, बांध डालता है। म्रोनहन, नप्ं, ढकना। भ्रोनीत, कुदन्त, हटाया गया, ले जाया गया। भ्रोनेति, किया, हटाया जाता है, ले जाया जाता है। भ्रोनोजन, नप्०, बँटवारा, मेंट। भ्रोनोजेति, किया, बाँटता है। भ्रोनोजित, कृदन्त, बाँटा हुमा। ग्रोपक्कमिक, वि०, किसी उपक्रम ग्रथवा उपाय-विशेष से उत्पन्न किया गया कप्ट। भ्रोपक्खी, वि०, जिसके हों। म्रोप्तति, किया, गिरता है, जाता है। श्रोपतित, कृदन्त, गिरा हुश्रा। श्रोपत्त, वि०, पत्र-विहीन, ऐसा पेड़ जिसके पत्ते गिर गये हों। म्रोपधिक, वि०, पुनर्जन्म के म्राधार सम्बन्धी।

म्रोपनियक, वि०, पास वाला। श्रोपपातिक, वि०, प्रत्यक्ष कारण के विना उत्पन्न, सहज रूप से उत्पन्न हुआ। श्रोपम्प, नपुं०, उपमा, तुलना । म्रोपरज्ज, नपु०, उपराजपन। भ्रोपवय्ह, वि०, चढ़ने के योग्य। श्रोपसमिक, वि०, शान्ति-कारक। भ्रोपात, पु०, १. गड्ढा, २. पतन। श्रोपातेति, किया, गिराता है। श्रोपान, नपुं०, कुग्रा । श्रोपारम्भ, वि०, सहायक । भ्रोपायिक, वि०, योग्य। म्रोपिलापित, कृदन्त, तैराया गया। श्रोपिलापेति, ऋिया, तैराता है। म्रोपुणाति, ऋिया, साफ करता है। श्रोपुष्फ, नपुं०, कली। श्रोबंधति, किया, वांधता है। स्रोभग्ग, कृदन्त, दूटा हुस्रा। श्रोमज्जति, किया, तोड़ डालता है। म्रोभत, कृदन्त, ले जाया गया। धोभरति, किया, ले जाता है। ग्रोभास, पु॰, प्रकाश। ग्रोभासति, क्रिया, चमकता है। ग्रोभासन, नपुं०, चमक। ग्रोभासित, कृदन्त, प्रकाशित। श्रोभासेति, क्रिया, चमकाता है। धामासेन्त, कृदन्त, चमकते हुए। लपेटना भुकना, श्रोभोग, पु०, (चीवर का) तह करना। ग्रोम, ग्रोमक, वि०, निम्न कोटि का। भ्रोमट्ठ, कृदन्त, छुग्रा गया, मैला किया गया।

श्रोमद्दति, किया, मलता है, दवाता भ्रोमसति, किया, स्पर्श करता है। ग्रोमसना, स्त्री०, स्पर्श । श्रोमसवाद, पु०, ग्रपमान, निन्दा। भ्रोमान, नपुं०, ग्रगीरव। ग्रोमिस्सक, वि०, मिश्रित। ग्रोमुक्क, वि०, फॅका गया। श्रोमुञ्चति, क्रिया, खोलता (वस्त्र) उतारता है। ग्रोमुत्त, कृदन्त, मुक्त हुग्रा, स्वतन्त्र हुमा । श्रोमुत्तेति, मूत्र करता है। भ्रोयाचित, क्रिया, बुरा चाहता है, शाप देता है। भ्रोर, १. नपुं०, इस भ्रोर का तट, यह संसार; २. वि०, निम्न-स्तर ध्रोर-पार, नपुं०, इहलोक तथा पर-लोक । श्रोर-मत्तक, वि०, तुच्छ, मामूली। श्रोरव्भिक, पु०, भेड़ों का व्यापार करने वाला, या भेड़ मारने वाला कसाई । ष्रोरमति, किया, इधर ही हक जाता धोरमापेति, किया, (किसी अन्य को) रोक देता है। म्रोरम्भागिय, वि०, लोक सम्बन्धी। म्रोरस, वि०, स्वकीय पुत्र। ग्रोरिम, वि०, इस ग्रोर का। भोरिम-तीर, नपुं०, नजदीक का तट। श्रोरद्ध, कृदन्त, जिसके मार्ग में वाधा

डाली गई हो। ब्रोइन्धति, किया, प्राप्त करता है, पत्री बनाता है। भ्रोहळह, पु०, कृदन्त, उतरा हुमा। ब्रोरोध, पु०, रनिवास, वाधा। ग्रोरोपन, नपुं०, उतारना, हटाना । श्रोरोपेति, किया, उतारता है, इटाता भ्रोरोहण, नप्०, उतरना। श्रोरोहति, किया, (नीचे) उतरता है। ब्रोलगोति, किया, रोकता है। श्रोलंघना, स्त्री०, नीचे भुकना। म्रोलंघेति, किया, नीचे कदता है। ब्रोलम्बति, क्रिया, नीचे रोकता है। भ्रोलम्बन, नप्ं, लटकना । भ्रोलिखति, क्रिया, लकीर खींचता है, खरोचता है। द्योलिगल्ल, पु०, चहवच्चा, नावदान। श्रालीन, कुदन्त, प्रमादी, ढीला-ढाला। ग्रोलीयति, क्रिया, प्रमाद करता है। ग्रोलीयना, स्त्री०, ग्रालस्य। श्रोलीयमान, कृदन्त, पीछे छूट गया। म्रोलुगा, कृदन्त, ट्कड़े-ट्कड़ं हो गया। ब्रोलुज्जति, किया, टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। ग्रोलुम्पेति, क्रिया, छिलका उतारता है, पकड़ता है, चुनता है, चुगता है। भ्रोलोकन, नपुं०, देखना । ग्रोलोकनक, नपुं०, खिड़की, भरोसा। ग्रोलोकेति, किया, देखता है। ग्रोळारिक, वि०, स्यूल। भ्रोवज्जमान, कृदन्त, उपदिप्ट, भ्रनु-शासित ।

58

श्रोवद्रिक, स्त्री०, कमरवन्द। म्रोवदति, किया, उपदेश देता है। भ्रोवदन, नपुं०, उपदेश देना । भोवदितब्ब, कृदन्त, उपदेश देने के योग्य । म्रोवमति, त्रिया, उल्टी करता है, के करता है। श्रोवरक, नपुं०, अन्दर का कमरा। भ्रोवरति, क्रिया, रोकता है। श्रोवस्सति, किया, बरसता है। ग्रोबस्सापेति, क्रिया, वारिश मिगवाता है। श्रोवहति, क्रिया, नीचे ले जाता है। भोवाद, पु०, उपदेश। भ्रोवादक, पु॰, उपदेश देने वाला। भ्रोवादक्खम, वि०, शिक्षा-प्रेमी. उपदेश मानने वाला। श्रीविज्ञति, किया, वींधता है। श्रोसक्कति, किया, पीछे हटता है। श्रोसज्जति, किया, छोड़ता, है। श्रोसध, नपुं०, ग्रीपध, दवाई। श्रोसघी, स्त्री०, १. दवाई का पौधा, २. चमकदार तारा-विशेष। ग्रोसघीस, पु०, चन्द्रमा । श्रोसन्न, वि०, त्यक्त। श्रोसप्पति, किया, पीछे हटता है।

श्रोसरण, नपुं०, वापसी । श्रोसरति, किया, वापस श्राता है। श्रोसान, नपुं०, समाप्ति । श्रोसापेति, किया, समाप्त करता है। श्रोसारक, नपुं०, ग्रोसारा। भ्रोसारणा, स्त्री०, पुनर्नियुक्ति। श्रोसारेति, त्रिया, पुनर्नियुक्त करता है। ग्रोसिञ्चति, किया, सींचता है। भ्रोसीवन, नपु०, डूवना। श्रोसीदापन, नपुं०, डुवाना । श्रोसीदापेति, किया. ड्वाता है। म्रोस्सम्म, नपुं०, शिथलीकरण। श्रोस्सजति, किया, ढीला छोड़ता है, मुक्त करता है। श्रोस्सजन, नप्०, मुक्ति, परित्याग। ग्रोहरति, किया, ले जाता है। ब्रोहाय, पूर्व वित्रया, छोड़कर। श्रोहारण, नप्ं , १. हटाना, २ हजामत करना। म्रोहित, कृदन्त, छिपा हुग्रा। म्रोहीन, कुदन्त, पीछे छूटा हुमा। श्रोहीयति, क्रिया, पीछे रह जाता है। श्रोहीयन, नपुं०, पीछे रह जाना । श्रोहीयमान, कृदन्त, पीछे रह जाता हम्रा।

क, पालि वर्णमाला का प्रथम व्यञ्जन, प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कि' का एक रूप, कौन, क्या, कौन-सा। कंस, नपु०, कौसा-घातु। ककच, पु०, ग्रारा। ककचरक, पु०, गिरगिट। ककण्टक जातक, महा-उम्मग जातक में ग्रागत ककण्टक-पञ्ह-कथा। ककु, पु०, शिखर। ककुट्ठा, कुसीनारा के समीप की एक नदी, जिसमें परिनिर्वाण से पूर्व मगवान बुद्ध ने स्नान किया था ग्रीर

जिसका जल ग्रहण किया था। फक्घ, पू०, साण्ड की पीठ का ककुद, ग्रर्जन-वृक्ष । कक्थ-भण्ड, नप्ं, राजकीय चिह्न। कक्क, अपू ०, लेप-विशेष । कक्कट, पु०, केकड़ा। कक्कटक जातक, कुलीरदह में रहने वाले हाथियों को साने वाले केकड़े की कथा (२६७)। कक्कर, तीतर। कक्कर जातक, वृद्धिमान पक्षी की कया (२०६) कक्करता, स्त्री०, ककंश-भाव। कक्कस, वि०, ककंश। कक्कारी, स्त्री०, ककड़ी। कक्कारु जातक, दुर्गुणी पुरोहित द्वारा देवताग्रों द्वारा दी गई माला के पहनने की मांग (२२६)। करकारेति, किया, खखारता है। कक्खळ, वि०, खुरदुरा। कक्खळता, स्त्री०, कठोरपन। कडू, पु०, सारस, वगुला। कंकट, पु०, कवच। कङ्कण, नपुं०, कंगन। कङ्कावितरणी, विनय-पिटक के प्राति-बुद्धशोषाचार्य मोक्ष पर रचित ग्रट्ठकथा। कंखति, क्रिया, सन्देह करता है। कंलना, स्त्री०, सन्देह। कंखनीय, कृदन्त, सन्दिग्ध । कंखा, स्त्री०, सन्देह। कंखी, वि०, सन्देह करने वाला। कङ्ग, स्त्री॰, बाजरा। कच, नपुंठ, बाल।

कचयर, पु०, कूड़ा-करकट। कच्चानि-जातक, धमं के श्राद्ध की कथा (४१७)। कच्चायन-व्याकरण, कच्यायन द्वारा रचित व्याकरण। कच्चि, ग्रव्यय, सन्देहार्थंक-पद । कच्छ, पु॰ तथा नपुं॰, दलदल, वग्रल। कच्छक, पु०, म्रंजीर का पेड़। कच्छन्तर, नपुं०, १. राजा का अपना कमरा, २. वगल के नीचे। कच्छप, पु०, कछुग्रा। कच्छप जातक, एक कछुवे की कथा, जिसने मूला पड़ने पर भी अपना तालाव नहीं छोड़ा या (१७८)। कच्छप जातक, एक कछुवे की कथा, जिसकी दो हंसों से दोस्ती थी (२१४) 1 कच्छप जातक, एक बंदर की कछुवे के साथ की गई शरारत की कथा (२७३) 1 कच्छपुट, बगली बांधकर सौदा बेचने वाला। कच्छबन्धन, नपुं०, कमर-बन्द। कच्छा, स्त्री०, काछ। कच्छु, स्त्री,० खुजलाहट, चमंरोग-विदोप । कजङ्गल, मध्यमण्डल की पूर्वी सीमा। कज्जल, नपुं०, काजल। कञ्चन, नपुं०, स्वणं ! कञ्चन-वण्ण, वि०, सोने के रंग वाला। कञ्चूक, पु०, कञ्चुक, जाकेट, कवच, केंचुल। कञ्चुको, पु०; राजकीय रोवक।

कञ्जिक, नपुं०, कांजी। कञ्जिय, नपं०, कांजी। कञ्जा, स्त्री०, कन्या । कट, १. कृदन्त, कृत, किया गया; २. पूर, चटाई, गाल। कटक, नपं०, वाज्वंद। कटकटायति, किया, (दांतों से) कट-कट करता है। कटच्छ, पु०, कड़छी। कटल्लक, नगं०, कठपुतली। कटसार, पू०, चटाई। कटसी, स्त्रीं०, इमशान-भूमि। कटाह, पू०, कड़ाह । कटाहक जातक, दासी-पत्र कटाहक की कथा (१२५)। कटि, स्त्री०, कमर। कट, वि०, कड़वा। फटक, वि०, तेज, तिक्त, कड़वा। कट्क-भण्ड, नप्०, मसाले । कट्क-विपाक, वि०, दुप्परिणाम। कट्क-रोहिणी, स्त्री०, कटुका। कट्विय कत, त्रि॰, कड्वा। कट्का, स्त्री, कट्रोहिणी। कट्ठ, नपुं०, काष्ठ, लकड़ी। कट्ठक, पु०, बांस का पेड़। कट्ठत्थर, नपुं०, लकड़ी के तस्तों का श्रास्तरण। कट्ठमय, वि०, लकड़ी का बना। कट्ठहारि जातक, दुप्यन्त के शकुन्तला को ग्रंगुठी देने की तरह राजा ने लकड़ी चुनने वाली स्त्री को अपनी ग्रॅगुठी दी (७)। कट्ठिस्स, नपुं०, रेशमी चादर। कठल, नपुं०, ठीकरे।

कठित, नपुं, उवाला हुमा। कठिन, १. वि०, मुश्किल; २. नपुं०, प्रतिवर्ष भिक्षयों को दिया जाने वाला चीवर-विशेष। कठिनत्यार, पुल, कठिन चीवर का भेंट करना। कडूति, किया, खींचता है। कड्दन, नपुं०, खींचना, चूसना। कण, पु०, (चावल के ट्टे) कण। कणय, पु॰, वर्छी। कणवीर, प्०, करवीर, एक विपैला पोधा । कणवेर जातक, सामा नामक राज्य-गणिका द्वारा मृत्यु-दण्ड को प्राप्त कैदी को मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया (३१८)। कणाजक, नप्०, टूटे चावलों की खिचड़ी। कणिका, स्त्री०, कणिका। कणिकार, पू०, फूलदार वृक्ष-विदेय। कणेरिक, नपुं०, भोंपड़ी। कणिट्ठ, वि०, छोटा । कणिट्ठक, पु०, छोटा भाई। कणिटठा, स्त्री०, छोटी वहन । कणेरू, पु॰, हाथी; स्त्री॰, हथिनी। कण्टक, नपुं०, कौटा। कण्टक-ग्रपस्सय, पु०, काँटों विस्तरा। कण्टकाधान, नप्०, काँटों की भाड़ी। कण्टकीफल, पु०, कटहल । कण्ठ, पु०, गला। कण्ठज, वि०, गले से उच्चारित। कण्ड, पु०, १. परिच्छेद, २. तीर। कण्डक, वि०, सूरक्षित ।

कण्डर, नपं, प्रधान शिरा। कण्डरा, स्त्री०, पृट्ठा । कण्डरि ज ।क, रानी किन्नरा के एक कोढ़ी पर आसकत हो जाने की कथा (388) कण्डिन जातक, एक मृग के एक मृगी पर ग्रामक्त होने की कथा (१३)। कण्ड, स्त्री०, खाज, खुजली। कण्ड्ति, स्त्री०, खाज, खुजली। कण्ड्वति, किया, खुजलाता है। कण्डोलिका, स्त्री०, टोकरी। कण्ण, नपं०, कान । कण्ण-कट्क, वि०, सुनने में ग्रप्रिय। कण्ण-गुथ, नप्ं, कान का मैल। कण्ण-छिद्द, नपुं०, कान का छेद । कण्ण-छिन्न, वि०, कान कटा। कण्ण-जप्पक, वि०, कानाफसी करने वाला। कण्ण-जलुका, स्त्री०, कान-खबूरा। कण्ण-भूसा, स्त्री०, कर्णाभूषण। कण्ण-मूल, नपुं०, कान की जड़। कण्ण-विज्ञत, नप्ं ०, कान का वींधना। कण्ण-वेठन, नपुं०, कान का ग्रामरण-विशेष। कण्ण-सक्खलिका, स्त्री०, कान का बाह्य माग। कण्ण-सूख, वि०, सुनने में सुखद। कण्ण-सूल, नप्ं०, कान का दर्व। कण्णधार, नौका की पतवार पकड़ने कण्णिका, स्त्री०, शिखर, कान का म्राभरण। कण्ह, वि०, कृष्ण, काला; पु०, काला रंग।

कण्ह-जातक, कृष्ण-तपस्वी की कथा (880)1 कण्ह-तुण्ड, प्०, बन्दर। कण्ह-दीपायन जातक, कोमाम्बी के दीपायन नथा मण्डब्य नामक दो ब्राह्मणों की कया (४४४)। कण्ह-पक्ख, पु०, महीने का कृष्ण-पक्ष। कण्ह-वत्तनी, पू०, ग्राग। कण्त-विपाक, वि०, दुप्परिणाम। कण्ह-सप्प, पु०, काला साँप। कत, कृदन्त, कृत। कत-कल्याण, वि०, शुम-कर्मी। कत-किच्च, वि०, कृत-कृत्य, जो कर-णीय कर चुका। कतञ्जली, वि०, जिसने दोनों हाथ जोड़ रने हों : कतञ्ज्ञता, स्थी०, कृतज्ञता । कतञ्ज, वि०, कृतज। कत-पटिसंथार, वि०, जिसका स्वागत हुआ हो। कत-परिचय, वि०, ग्रम्यस्त, परिनित। कत-पातरास, वि०, जिसने प्रातःकाल का भोजन किया हो। कत-पुञ्ज, वि०, जिसने पुण्य किये हों। कत-भत्तकिच्च, वि०, जिसने भोजन समाप्त कर लिया। कत-वेदी, वि०, कृतज्ञ। कत-सङ्ग्रह, वि०, जिसे ग्रातिथ्य प्राप्त हुआ। कत-सङ्क्तेत, वि०, कृत-संकेत। कताधिकार, वि०, जिसने कोई संकल्प-विशेष किया हो। कतापराध, वि०, दोपी। कताभिसेक, वि०, जिसका ग्रमियेक

हम्रा हो। कतत्त, नप्०, कतंत्र्य। कतम, वि०, कौन-सा। कतमत्ते, अधिकरण, ज्यों ही कोई कार्य सम्पन्न हमा। कतर, वि०, दोनों में से कौनसा। कति, अव्यय, सर्वनाम, कितने । कति-वस्स, वि०, कितने वर्ष का। कतिविध, वि०, कितने प्रकार का। कतिका, स्त्री॰, वार्तालाप। कतिकावत्त, नपं०, निश्चय, करणीय। कतिपय, वि०, कुछ, कई। कतिपाह, नप्ं, कुछ दिन। कतिपाहं, कि॰ वि॰, कुछ दिन के लिए। कतिमि, वि०, कौन-सी तिथि। कतुपासन, वि०, धनुपविद्या में चतुर। कतुपकार, वि०, उपकृत। कते, कि० वि०, उसके लिए। कतोकास, वि०, ग्राजा-प्राप्त, ग्रवसर-प्राप्त । कत्तब्ब, कृदन्त, कतंव्य। कत्तर, ति०, वहुत छोटा । कत्तर-दण्ड, पु॰, सैर करने की लाठी। कत्तर-यद्ठि स्त्री०, सैर करने की लाठी। कत्तर-मुप्प, पु०, छोटा छाज । कत्तरिका, स्त्री०, केंची। कत्तिक मास, पु०, कार्तिक मास। कत्तिका, स्त्री०, कृत्तिका नक्षत्र। कत्तु, पु॰, कर्ता, लेखक, वाक्य का कर्ता-ग्रंश। कत-काम वि०, करने की इच्छा वाला। कतं, करने के लिए।

कत्थ, कि॰ वि॰, कहाँ। कत्यचि, ग्रव्यय, कहीं न कहीं। कत्थति, किया, शेखी मारता है। कत्थन, नपुं०, प्रशंसा । कत्थना, स्त्री०, शेखी । कत्थी, वि०, शेखी मारने वाला। कथृद्दिका, स्त्री०, कस्तूरी। कथं, क्रिया-विशेषण, कैसे । कथंकथा, स्त्री०, सन्देह। कथंकथी, वि०, सन्देही। कयंकर, वि०, कैसी किया। कथं-भूत, वि०, कैसा, किस प्रकार का। कथं-विध, वि०, किस प्रकार का। कथंसील, वि०, कैसे दील का। कथन, नप्०, बातचीत, कहना। कथा, स्त्री०, बातचीत, कहानी। कथापाभत, नप्ं०, कथा का विषय। कथामग्ग, पू०, कथा का वर्णन । कयावत्थु, नपुं०, विवाद का विषय । कथा-वत्य, ग्रभिधम्म के सात प्रकरणों में से पाँचवाँ ग्रन्थ । कथा-सल्लाप, पु०, मैत्री-पूर्ण वातत्रीत। कयापेति, त्रिया, कहलवाता है, सन्देत्र मेजता है। कथित, कृदन्त, कहा गया। कथेति, किया, कहता है। कथेत्वा, पूर्वं शिया, कहकर। कदन्न, नवं०, खराव ग्रन्न। कदम्ब, पु०, वृक्ष-विशेष । कदम्बक, नपुं०, समूह। कदर, पु०, वृक्ष-विशेष; विं०, खराब हालत वाला। कदरिय, वि०, कंज्स। कदिल, स्त्री०, केले का पेड़ ।

कदलि-फल, नपुं०, केले का फल। कदलि-मिग, पू०, मृग-विशेष, जिसकी चमड़ी मूल्यवान् मानी जाती है। कदा, कि० वि०, कब। कदाचि-करहचि, ग्रव्यय, कभी-कभी। कद्दम, पु०, कर्दम, काँदो। कद्म-बहुल, वि०, जहां कीचड़ का वाहल्य हो। कहमोदक, नपुं०, मटमैला पानी । कनक, नपुं०, सोना। कनकच्छवि, दि०, सुनहरी चमड़ी। कनकप्पभा, स्त्री०, स्वर्ण-प्रभा। कनक-विमान, नपुं०, सुनहरा महल। कनय, पु०, ग्रायुध-विशेष । कनिट्ठ, नवुं०, छोटा भाई। कनिट्ठा, स्त्री०, सबसे छोटी लड्की। कनिय, वि०, छोटा। कनीनिका, स्त्री ०, ग्रांख का तारा। वि०, द्रियकर, अनुकल; पु॰, पति, प्रियतम । कन्तित, किया, कातता है, काटता है। कन्तन, नपुं०, कताई, काट। कन्ता, स्त्री०, ग्रीरत, पत्नी। कन्तार, पु०, जंगल, वियावान। कन्तार-नित्थरण, नपुं०, रेगिस्तान में से गुजरना। कन्ति, स्त्री०, कान्ति, शोमा। कन्तित, कृदन्त, काटा गया। कन्तिमत्त, वि०; चलता हुआ। कन्थक, वह घोड़ा जिस पर बैठकर सिद्धार्थ-गौतम ने महाभिनिष्क्रमण किया था। कन्द, पु०, कन्द-मूल। कन्दगलक जातक, खदिरवनिय नामक

कठफोडे तथा कन्दगलक नामक उसके मित्र की कया (२१०)। कन्दति, किया, चिल्लाता है, रोता है, पश्चाताप करता है। कन्दन्त, कृदन्त, रोता हुआ। कन्दर, पु०, कन्दरा। कन्दरा, स्त्री०, गुफा। कन्दुक, पु०, गेंद। कपण, वि०, दरिद्र; पु०, भिखमंगा। कपल्लक, नपुं०, चूल्हे का तवा। कपल्लक-पूव, पु०, तवे का पुत्रा। कपाल, नपुं०, खोपड़ी। कपि, पु०, बंदर। कपिकच्छ, नपुं०, वृक्ष-विशेष, केवांच। कपि जातक, एक वन्दर तपस्वी का मेप बनाये आ पहुंचा (२५०)। कपि जातक, एक वन्दर ने पुरोहित के में ह में विष्ठा गिरा दी (४०४)। कपिञ्जल, पु०, तीतर की जाति का एक पक्षी। कपित्थ, पु०, कथ। कपिल, वि०, १. भूरा, २. ऋषि का नाम । कपिलवत्थु, शाक्यों की कपिलवस्तु। कपिला, स्त्री०, शीशम का पेड़। कपिसीस, पुं०, ग्रगंल-स्तम्म। कपोत, पु०, कबूतर। कपोत जातक, कौवे ने मांस-लोम से पिजरे में रहने वाले कबूतर से दोस्ती की (४२)। कपोत जातक, बहुत कुछ उक्त जातक के समान ही (३७५)। कपोत-पालिका, स्त्री०, विद्या-

खाना। कपोल, पू०, गाल। कत्प, पु०, कल्प; वि०, योग्य, यनुकुल । क्ष्पक, पु॰, नाई, राजमहल का कमंचारी। कप्पवलय, पुं ०, कल्प का क्षय। कप्पट्ठायी, वि०, कल्पस्थायी। कप्प-स्वल, पु०, कल्प-वृक्ष । कप्प-विनास, पु०, कल्प के अन्त में संसार का विनाश। कप्पट, पु०, पुराना कपड़ा, चीथड़ा। कप्पति, किया, योग्य होता है। कप्पना, स्त्री, व्यवस्थित करना। कप्पविन्दु, मिक्षु के चीतर पर बनः हुम्रा काला निशान। कप्पर, पु०, कोहनी। कप्पास, नपं०, कपास। कप्पास-पटल, कपास की तह। कप्पासिक, वि०, रुई का बना। कप्पासी, पू०, कपास का पौधा। कप्पिक, वि०, कल्प सम्बन्धी। कप्पित, कृदन्त, तैयार किया हुआ। कप्पिय, वि०, योग्य, उचित। कप्पिय-कारक, पु॰, जो व्यक्ति मिक्षुओं की उचित ग्रावश्यकताएँ पूरी करता कप्पिय-भाण्ड, नपुं०, वे बर्तन जिनका उपयोग भिक्षुयों के लिए विहित है। कप्पुर, नपुं०, कपूर। कप्पूर, पु०, कपूर। कप्पेति, किया, तैयार करता है, काटता है, बनाता है, (जीवन) व्यतीत

करता है। कप्पेत्वा, पूर्वं शिया, तैयारी कर, काट-कबर, वि०, चितकवरा। कबरमणि, नपुं० तथा पु०, ल्हुसुनिया कबल, पु॰ तथा नपुं॰, कौर। कवलिकार, पु०, मुंह मरा कौर। कर्वलिकाराहार, पु०, माजन। कब्ब, नपुं०, काव्य, काव्यात्मक रचना। कम, पु०, कम। कमति, क्रिया, जाता है। कमण्डलु, पु० तथा नपुं०, कमण्डल । कमनीय, वि०, वाञ्छनीय, सुन्दर, ग्राक्षंक । कमल, नपुंज, कॅवल। कमल-दल, नपुं०, कॅवल की पंखुड़ी। कमलासन, पु०, कँवल पर भ्रासन लगाय बैठा ब्रह्मा । कमलिनी, स्त्री >, कँवल का तालाव या भील। कमितु, नपुं०, कामुक । कमुक, पु०, सुपारी का पेड़। कम्पक, वि०, कॅपा देने वाला। कम्पति, किया, कांपता है। कम्पमान, कृदन्त, कांपता हुग्रा। कम्पित, कृदन्त, कांप उठा। कम्पिय, वि०, जो कॅपाया जा सके, हिलाया जा सके। कम्पेति, किया, कॅपाता है। कम्पेत्वा, पूर्वं किया, हिलाकर। कम्बल, नपं ०, कंवल। कम्बली, वि०, कंवल वाला। कम्ब, पू० तथा नपुं०, स्वर्ण, शंख ।

कम्बुगीव, वि०, त्रि-रेखा युक्त गर्दन वाला। कम्बोज, पु०, देश-विशेष का नाम। कम्म, नपुं०, कर्म, कार्य। कम्म-कर, कम्मकार, पू०, कर्मकार, मजदूर। कम्म-करण, नपुं ०, परिश्रम, मजदूरी। कम्म-कारणा, स्त्री०, शारीरिक-दण्ड ! कम्म-क्लय, पु०, पूर्व जन्म के कर्मी का क्षय। कम्मज, वि०, कर्म से उत्पन्त । कम्मजात, नपुं०, नाना प्रकार के कर्म। कम्म-दायाद, वि०, कर्म का उत्तरा-धिकारी। कम्म-नानत, नपं०, कर्मो का नाना-विध होना। कम्म-निब्बत्त, वि०, कर्मों के द्वारा उत्पन्न । कम्म-पथ, पु०, कर्म-मार्ग। कम्म-प्पच्चय वि०, कर्माधारित। कम्म-फल, नपं०, कर्म-फल, कर्म का परिणाम । कम्म-बन्यु, वि०, कर्म ही जिसका दन्ध हो। कम्म-बल, नपुं०, कमं ही जिसका बल कम्म-योनि, वि०, कमं से ही जिसकी उत्पत्ति हुई हो। कम्म-बाद, पु॰, कर्मो ग्रीर उनके फलों का मानना। कम्म-वादी, वि०, कमं-वादी। कम्म-विपाक, पु०, कर्मों का फल।

कम्म-वेग, पु०, कर्मों का वेग। कम्म-समुद्रठान, वि०, कर्मोत्पन्त । कम्म-सम्भव, वि०, कर्मों से उत्पन्त। कम्म-सरिवज्ञक, वि०, कर्मों के सहश विपाक । कम्म-सक, वि०, कमं ही जिसका भ्रपना-भ्राप है। कम्मयूहन, नपुं०, कर्मों की ढेरी। कम्म-उपचय, पु०, कर्मो का संप्रह । कम्मज-बात, पु०, प्रसव-वेदना। कम्मञ्ज, वि०, कमाया (चमड़ा)। कम्मञ्जता, स्त्री०, कमाया हुमा होने का माव। कम्मट्ठान, नपुं०, घ्यान का विषय, जिस पर चित्त एकाग्र किया जाता कम्मट्ठानिक, पु०, योगाभ्यास करने वाला । कम्मधारय, पु०, कमंधारय समास। कम्मन्त, नपुं०, काम, कारोबार। कम्मन्तट्ठान, नपं०, कारोबार की जगह। कम्मन्तिक, वि०, मजदूर। कम्मप्पत्त, वि०, ऐसे भिक्षु जो विनय-कमं करने के लिए एकत्र हुए हों। कम्मवाचा, स्त्री०, विनय-कर्म का पाठ। कम्मस्सामी, पु०, कारोबार स्वामी। कम्माघिट्ठायक, पु॰, कारोबार का निरीक्षक। कम्मानुरूप, वि०, कर्मानुसार। कम्मार, पू॰, लोहार या सुनार.।

कम्मारभण्ड, नपुं॰, लोहार का सामान। कम्मार-साला, स्त्री०, लोहार या सुनार की काम करने की जगह। कम्मारम्भ, पु०, कार्य-विशेष ग्रारम्भ करना। कम्मारह, वि०, काम के योग्य। कम्माराम, वि०, कार्य में रस लेना। कम्मारामता, स्त्री०, दुनियाबी कार्यो में मन लगे रहने का भाव। कम्मास, वि०, चितकवरा, वेमेल। कम्मास-दम्म, कुरुग्रों का एक नगर, जहाँ मगवान युद्ध एक से ग्रधिक वार ठहरे ग्रीर जहाँ उन्होंने महासतिपट्ठान-सुत्त सदश महत्त्वपूर्ण सुत्रों का उपदेश दिया। कम्मिक, कम्मी, पु०, करने वाला, मजदूर। कम्यता, स्त्री०, इच्छा। कय, पु०, ऋय, खरीद। कय-विक्कय, पु०, ऋय-विऋय। कय-विक्कयी, पु०, व्यापारी। कयिक, पु०, खरीदार। कर, पु०, १. हाथ, २. किरण, ३. टैक्स, ४. हाथी का सूण्ड। करक, पु०, ग्रनार; नपुं०, जल-पात्र। करका, स्त्री०, ग्रोले। करग्ग, हाथ का सिरा। करज, पु०, हाथ का नाखून। करजकाय, पु॰ गन्दा शरीर। करञ्ज, पु०, करंजुग्रा। करतल, नपुं०, हाथ की हथेली। कर-पुट, पु०, जुड़े हुए हाथ। कर-भुसा, स्त्री०, हाथ का ग्रामरण,

पहुँची, बाजूबंद। करण, नपुं०, १. करना, बनाना, २. उत्पत्ति । करणत्थ, पु०, साधन बनने का माव। करणविभत्ति, स्त्री०, तीसरी विभक्ति। करणीय, वि०, कर्तव्य। करण्डक, पु०, टोकरी, पिटारी। करभ, पु०, १. ऊँट, २. कलाई। करमद्द, पु०, करमदंक। करमर, पु॰, क़ैदी। करमरानीत, वि०, युद्ध-वन्दी। करवीक, पु०, कोयल। करवीक-भाणी, वि०, स्पष्ट तथा मधुर स्वर वाला। करसाखा, स्त्री० ग्रंगुली। करहाट, नपुं०, कन्द, जड़। करिसापण्ण, पु०, कार्यापण। करी, पु०, हाथी। करीयति, क्रिया, किया जाता है। करीयमान, कृदन्त, किया जाता हुआ। करोर, पु०, क्रकच। करीस, नपुं०, गोबर, गुंह। करोस-मग्ग, पु०, गुदा। करणं, ऋ० वि०, करुणा-पूर्वक । करुणा, स्त्री०, दया। करुणायति, क्रिया, दया ग्रनुमव करता करेणु, स्त्री०, हथिनी। करेरि, पु०, वृक्ष-विशेष। करोति, किया, करता है। करोन्त, कृदन्त, करते हुए। कल, पु॰, मधुर ग्रावाज। कलंक, पु॰, चिह्न, दाग्र, घ॰बा। कलण्डुक जातक, बनारस के एक सेठ के

पास कलण्ड्क नाम का दास था। उसने जाली पत्र बना पड़ोसी प्रदेश के एक सेठ की लड़की से विवाह किया (१२७) कलत्त, नपुं०, पत्नी। कलन्दक, पु०, गिलहरी। कलन्दक-निवाप, पु०, वेळ्वन का वह स्थान जहां गिलहरियों को नियम से खाना मिलता था। कलभ, पु०, हाथी का बच्चा। कलल, नप्ठ, कीचड़। कलल-मक्खित, वि०, कीचड़ सना हुग्रा। कलल-रूप, नपुं०, गर्म की ग्रारम्मा-वस्था। कलविक, पू०, चिड्या। कलस, नप्०, कलश, जल-पात्र । ग्रलसन्दा (ग्रलैक्जैण्ड-कलसिगाम, रिया) द्वीप का वह स्थान, जहाँ मिलिन्द नरेश पैदा हुआ था। कलह, पू०, भगड़ा। कलह-कारक, वि०, भगड़ने वाला। कलह-कारण, नपुं०, भगड़े का कारण। कलह-सद्द, पु०, भगड़े की ग्रावाज । कला, स्त्री०, सम्पूर्ण का एक भाग, कला-शिल्प। कलाप, पु०, बण्डल, तरकश, महाभूतों के कणों का समूह ! कलापी, पु०, मोर, तरकश वाला। कलायमुट्ठी जातक, एक वंदर की कथा, जिसने एक मटर के दाने के लिए मुट्ठी के संभी मटर गैंवा दिये थे (१७६)। कलि, पु०, हार, दुर्भाग्य, पाप, कष्ट। कलिका, स्त्री०, फूल की कली।

कलिग्गह, पु०, हार का पाँसा। कलियुग, पु०, सत-युग, त्रेता-युग म्रादि का ग्रंतिम युग। कलिङ्गर, पुं तया नपुं , लट्ठा, लकड़ी का सड़ा हुआ लट्ठा। कलिल, नपुं०, गहन। कलीर, नपुं०, ताड़-वृक्ष के तने का कोमल माग। कलुस, नपुं०, कलुप, पाप-कर्म, अ-पवित्रता। कलेवर, कलेवर, नपुं०, शरीर। कल्याण, वि०, शुम । कल्याण-काम, वि०, मला चाह-वाला। कल्याण-कारी, वि०, शुभ-कर्मी। कल्याण-दस्सन, वि०, सुन्दर। कल्याण-पटिभाण, वि०, शीघ्र-बोध। कल्याण-मित्र, पु०, शुर्मीचतक मित्र । कल्याण-ग्रज्भासय, वि०, शुभ-चेतना । कल्याण-धम्म जातक, सास के बहरेपन के कारण बहु ने कुछ कहा ग्रीर सास ने दूसरा ही समभा (१०१)। कल्याणी, स्त्री०, १. सुन्दर स्त्री, २. लंका की एक नदी तथा एक नगरी। कल्ल, वि०, दक्ष, योग्य, स्वस्य। कल्लता, स्त्री०, दक्षता। वि०, स्वस्य शरीर कल्ल-सरीर, वाला ! कल्लहार, नपुं०, स्वेत केंवल। कल्लोल, पु०, तरङ्ग, बड़ी लहर। कवच, पु०, जिरह-बस्तर, सन्नाह। कवंध, पु०, बिना सिर का धड़। कवाट, पु॰ तथा नपुं॰, खिड़की, दर-वाजे के किवाड।

कवि, पु०, कवि, शायर। कविट्ठ, पु०, कैय। कविता, स्त्री०, काव्य-कृति। कवित्त, नपुं०, कवित्व, कवि की अवस्था या काव्य-सामर्थ्य । कसट, पु०, कूड़ा-करकट, कसैला स्वाद। कसति, किया, हल चलाता है। कसन, नपुं०, हल चलाना। कसंत, कस्समान, कृदन्त, हल चलाता हुग्रा। कसम्बु, पु०, कड़ा-करकट। कसम्बु-जात, वि०, कुड़े-करकट में से उत्पन्न । कसा, स्त्री०, चावुक । कसाहत, वि०, चावुक के ग्राघात प्राप्त। कसाय, नप्ं०, दुछान्दा । कसाव, पु० तथा नपु०, १. कसैला स्वाद, २. कापाय-रंग। कसि, स्त्री०, कृषि, सेती-बाडी। कति-कम्म, नपं०, खेती। कसि-भण्ड, नप्ं, कृषि के श्रीजार। कसि-भारद्वाज, कसि-भारद्वाज गोत्र का एक ब्राह्मण, जो दक्षिणगिरि के एक-नाळ में रहता था। बुद्धत्व-प्राप्ति के ग्यारहवें वर्ष में उसकी भगवान बुद्ध से मेंट हुई थी। कसिण, वि०, कृत्स्न, समस्त नपूं०, चित्त एकाग्र करने का साधन। कसिण-परिकम्म, नपुं०, योगाम्यास की पूर्व-तैयारी। क सिण-मण्डल, नपुं०, योगाम्यास के लिए कागज या दीवार पर खींचा गया चका कसितट्ठान, नप्०, हल चलाई हुई

भूमि। कसित्वा, पूर्वं किया, हल चलाकर। कसिर, वि०, कठिन, नपुं०, कठिनाई। कसिरेन, कि॰ वि॰, कठिनाई से। कस्मीर, उत्तर-भारत का प्रदेश। ग्राधृनिक काश्मीर। कस्सक, प्०, कृपक, किसान। कस्सति, क्रिया, खींचता है। कस्सपमन्दिय जातक, बुडों की तुरुणों के साथ सहनजीलता का वर्ताव करने की शिक्षा (३१२)। कहं, कि० वि०, कहाँ। कहापण, नप्ं, स्वर्ण-मुद्रा, कार्पापण । कहापणक, नपुं०, दण्ड-विधान, जिसमें अपराधी के मांस के कार्यापणों के सगान छोटे-छोटे दुकड़े कर दिये जाते थे। काक, पू०, कौग्रा, राजा चण्ड प्रद्योत का ग्रति शीघ्र चलने वाला दास । काक-पाद, कीवे का पाँव, कांस-चिह्न। काक-पेय्य, वि०, लवालव भरा हुग्रा, ताकि कौवा भी पी सके। काक-वर्ग, वि०, कौवे के रंग का। काक-जातक, राजपरोहित स्नान करके लौट रहा था। कौवे ने उस पर बीट कर दी। राजपुरोहित ने कुद हो सभी कौवों को मरवा डालना चाहा (१४०)। काक-जातक, कीवा तथा उसकी कीवी शराव पीकर मस्त हो गये। कावी को समुद्र की लहर वहा ले गई। कौवे का विलाप सुन सभी कौवे समुद्र के शत्रु वन बैठे (१४६)। काक-जातक, लोमी कीवे ने गांस-लोन

से पिजरे में रहने वाले कबूतर से दोस्ती की ग्रीर रसोई के हाथ पड़ जान गेंवाई। काकच्छति, किया, नाक बजाता है। काकणिका, स्त्री०, काकणी, कोड़ी। नपुं०, काकतालीय-काकतालीय, न्याय, ग्रकस्मात् घटित । काकतिन्द्रक, पु०, काकतिन्द्रक । काकपक्ल, पु०, वालों का गुच्छा, शिखा। काकली, स्त्री०, धीमा स्वर। काकसूर, वि०, कौवे की तरह शूर, निलंडज। काकाति जातक, बनारस के राजा की काकाति नामक पटरानी पर गरुड़ मोहित हो गया ग्रीर उसे उड़ा ले गया (३२७)। काकी, स्त्री ०, कीवी । काकोल, काकोळ, पु०, काला कीवा, जंगली कौग्रा। काच, पु०, काँच। काच-तुम्ब, पु०, काँच की वोतल। काचमय, वि०, कांच-निर्मित। काज, पूर, वहँगी। काज-हारंक, पृ०, बहुँगी ढोने वाला। काट, पुरु, पुरुषेन्द्रिय। काण, वि०, काना, एक ग्रांख का ग्रंधा । कातस्व, नपुंज, कर्तव्य। कातर, वि०, दुखी, दरिद्र। कातवे, कातुं, करने के लिए। कातुकाम, वि०, करने की इच्छा वाला। कादम्ब, पु०, वत्तख-विशेष।

कानन, नपुं०, जंगल। कापिलवत्यव, वि०, कपिलवस्तु का। कापुरिस, पु०, घृणित व्यक्ति। कापोतक, वि०, कबूतर के समान सफेद । कापोतिका, स्त्री०, एक तरह की शराव। काम, पु०, कामना, कामुकता । काम-गिद्ध, इन्द्रिय-सुख का लोभी। काम-गुण, इन्द्रिय सुख। काम-गेध, इन्द्रिय-मुख के प्रति ग्रासिवत । कामच्छन्द, कामुकता। काम-तण्हा, काम-तृष्णा। काम-दद, वि०, इच्छित वस्तु का देना। काम-घात्, इच्छा-लोक । काम-पङ्ग, इच्छात्रों का कीचड़। काम-परिळाह, पु०, काम-ज्वर। काम-भव, पु०, कामनाश्रों का संसार। काम-भोगी, वि०, इन्द्रिय-मुख का भोगने वाला। काम-मुच्छा, स्त्री०, काम-मूर्च्छा। काम-रति, स्त्री०, कामुकता का ग्रानन्द। काम-राग, पु०, काम-चेतना । काम-लोक, पु०, कामनाग्रों का लोक । काम-वितक्क, पू०, कामनाओं सम्बन्धी काम-संकष्प, पु०, कामनाग्रों के सम्बन्ध में संकल्प-विकल्प । काम सञ्जोजन, नपुं ०, कामनाग्रों के बन्धन । काम-मुख, नपुं०, कामेन्द्रिय-जनित सुख ।

काम-सेबना, स्त्री॰, मैथन-धर्म का सेवन। काम जातक, राजकूमार की कामना उत्तरोत्तर बढ गई (४६७)। कामनीत जातक, बहुत कुछ काम जातक के समान ही (२२८)। कामता, स्त्री०, ग्राकांक्षा, इच्छा। कामी, कामेन्द्रिय सुखों के साधनों से सम्पन्न । कामुक, वि०, रागी। कामेति, किया, इच्छा करता है। कामेतब्ब, कृदन्त, इच्छा किये जाने के योग्य। काय, पू०, ढेर, संग्रह, शरीर। काय-कम्म, नपुं ०, शारीरिक कमं। काय-कम्मञ्जता,स्त्री०, शरीर की कम-नीयता (कमाया हुन्ना होना)। काय-गत, वि०, शरीर-सम्बन्धी। काय-गन्य, पू०, शारीरिक बंधन। काय-गत्त, वि०, शरीर से संयत। काय-डाह, पु०. शरीर-ज्वर। काय-दरय, पु॰, शारीरिक कष्ट। काय-दुच्चरित, नपुं०, शारीरिक दुश्वरित्र। काय-द्वार, नपं ० शारीरिक इन्द्रिया । काय-बातु, स्त्री॰, स्पर्शेन्द्रिय । कायप्पकोप, पु०, शारीरिक दुष्कमं । कायप्यवालकं, कि० वि०, शरीर का हिलना-डोलना। काय-पटिबढ, वि०, शरीर से सम्ब-न्धित । काय-प्ययोग, पु०, शारीरिक साधन। काय-परिहारिक, वि० शरीर का पालन ।

काय-प्पसाद, पू०, स्पर्शेन्द्रिय का स्पष्ट बोघ। स्त्री०, इन्द्रियों की काय-प्पसद्धि. शान्ति । काय-पागविभय, नपुं०, शारीरिक प्रगल्मता, शारीरिक असंयम । काय-बंघन, नपं०, कमर की पट्टी। काय-बल, नपं० शारीरिक-बल। काय-मुद्रता, स्त्री०, इन्द्रियों की कोम-लता । काय-लहुता, स्त्री॰, इन्द्रियों का हलका-काय-बद्ध, प्०, टेढ़े कार्य। काय-विकार, पु०, संकेत। काय-विञ्जत्ति, स्त्री०, शारीरिक सूचना। काय-विञ्जाण, नपं०, स्पर्श चेतना । काय-विञ्जेय्य, वि०, स्पर्श जानने योग्य। काय-विवेक, प्०, शारीरिक एकान्त। काय-वेय्यावच्च, नपुं०, शारीरिक सेवा-कार्य। काय-संसम्म, पू०, शारीरिक संसर्ग । काय-सक्ली, वि०, शरीर से सत्य का साक्षात्-कृत। काय-संसार, पु०, शरीर का सूक्म स्वरूप। काय-समाचार, पु०, सदाचरण। काय-सम्फस्स, पु०, स्पर्शेन्द्रिय। काय-सूचरित, नपं०, शारीरिक सदा-चरण। काय-सोचेय्य, नपुं०, शारीरिक पवि-नता ।

कायविच्छिन्व जातक, घार्मिक जीवन विताने का संकल्प करने पर पीलिका रोग चला "या (२६३)। कायिक, वि०, शारीरिक। कायिक-वृश्क्ष, नपुं ०, शारीरिक वेदना। कायुजुकता, स्त्री०, शरीर का सीघा-पन । कायुपग, वि०, शरीर से ग्रासक्त, नया जन्म ग्रहण करने वाला। कायुर, नप्०, बाजूबंदे। कार, पू०, क्रिया, कर्म, सेवा। (रय-) कार; वि०, रथ बनाने वाला। कारक, पु०, कता, करने वाला। व्या-कर्ता-कारक ग्रादि में 'कारक'। कारण, नप्ं, हेतु । कारणा, अपादान (कारक), हेत् से। कि कारणा, किस हेतू से, क्यों ? कारण्डिय जातक, विना किसी की योग्यता-ग्रयोग्यता परखे हर किसी को उपदेश देने वाले माचार्य की कथा (३६६)। कारणा, स्त्री॰, यातना, शारीरिक दण्ड । कारणिक, पू०, यातना देने वाला। कारवेल्ल, पुं०, कारवेल्लक। कारा, स्त्री०, जेल। काराघर, नपं ०, जेलखाना । कारापक, पु०, कराने वाला। कारापिका, स्त्री०, कराने वाली। कारापन, नपं०, करवाना । कारापित, कृदन्त, करवाया गया। कारापेति, क्रिया, करवाता है। कारा-मेदक, वि०, जेल से माग माने

कारिका, स्त्री॰, व्यास्था। कारिय, नपुं ०, कार्यं, कर्तव्य । कारी, पु॰, करने वाला। कारुङ्ग, नपुं०, करुणा। कारुणिक, वि०, दयालु । कारेति, किया, करवाता है। काल, पु०, समय। कालस्सेव, समय रहते। कालेन, ठीक समय पर। कालेन कालं, समय-समय पर। कालं करोति, मर जाता है। कालं कत, (कृदन्त), मर गया। काल-किरिया, स्त्री॰, मृत्यु । काल-कण्णी, पु०, मनहूस । काल-पवेदन, नपं०, समय सूचना। काल-वाबी, वि०, समयोचित बोलने वाला। कालञ्जू, वि॰, (उचित) समय का जानकार। कालंतर, नपुं०, व्यवधान, समय-विमाग। कालिक, वि०, समय सम्बन्धी। कालिङ्ग, पूर्व-भारत का एक जनपद। कालुसिय, नपुं०, मैल (कालुष्य)। कावेय्य, नपुं०, काव्य । कास, प्॰, नरकट, तपेदिक (रोग) कासाय, कासाव, नपुं०, काषाय-वस्त्र; वि०, काषाय-वर्ण युक्त । कासि, सोलह जनपदों में से एक। इसकी राजघानी वाराणसी थी। कासिक, वि०, काशी का, काशी में निमित ।

कासु, स्त्री॰, गड्ढा। काळ, वि०, काला। काल, पु० काला रंग। कूट, पु॰, हिमालय पर्वत का एक शिखर। काळ-केस, वि०, काले बाल वाला। काळ-तिपु, नपुं०, काला सीसा। काळ-पक्स, पु०, कृष्ण-पक्ष । काळ-लोण, नपुं०, काला नमक। काळ-सोह, पु०, काला सिंह। काळ-सुत्त नपुं०, काला सूत्र। काळ-हंस, पु०, काला हंस । काळक, वि०, काला (चिह्न); नप्ं०, धव्दा, धान में काला दाना। काळकण्णी जातक, ग्रनाथ पिण्डक के काळकण्णी मित्र की कथा के समान (==) 1 काळबाहु-जातक, काळ-बाहु वन्दर की कथा (३२६)। काळाम, गोत्र-विशेष । काळामों को ही मगवान् बुद्ध ने प्रसिद्ध काळाम-सुत्त का उपदेश दिया था। नप्ं, काला लोहा काळायस, (तौवा)। काळावक, पु०, एक प्रकार का हाथी। काळिग-बोघि-जातक, काळिग-नरेश के दो पुत्रों की कथा (४७६)। कासाव जातक, काषाय वस्त्र के कारण हाथी ने दुष्ट भ्रादमी को क्षमा कर दिया (२२१)। किकी, पु॰, नील-कष्ठी; स्त्री॰ मुर्गी। किकर, पु०, नौकर, सेवक। किकिणी, स्त्री॰, छोटी घंटी, घुंघरू। किकिणिक-जाल, नपुं०, घुंघरुप्रों की

जाली। किच्च, नपुं०, कृत्य। किच्चकारी, वि०, ग्रपना कर्तव्य निमाने वाला। किच्चाकिच्च, नपुं०, कृत्य तथा अकृत्य, करणीय तथा ग्रकरणीय। किच्छ, वि०, कठिन, दुखद; नपुं०, कठिनाई, दु:ख। किच्छति, क्रिया, कष्ट पाता है। किंचन, नपुं०, कुछ, सांसारिक ग्रासक्ति; वि०, तुच्छ। किंचापि, ग्रव्यय, कुछ भी, कैसे भी, कितना भी, लेकिन। किचि, ग्रव्यय, कुछ। किचिष्ल, नपुं॰, तुच्छ। किजक्ख, पु॰ तथा नपुं०, रेणु। किट्ठ, नपुं०, उगता हुआ धान। किट्ठाद, वि०, धान खाने वाला। किट्ठा-सम्बाध-समय, पु०, खेती पक जाने का समय। किणन्त, कृदन्त, खरीदते हुए। किणित्वा, पूर्व ० क्रिया, खरीदकर। किण्ण, कृदन्त, विखरा हुग्रा; नप्ं०, खमीर। कितव, पु०, ठग। कित्तक, सर्वनाम, कितना, किस सीमा तक, कितने। कित्तन, नपुं०, कीर्तन, प्रशंसा, स्तुति । कित्तावता, कि॰ वि॰, कहाँ तक, किस सम्बन्ध में। कित्ति, स्त्री॰, कीर्ति, प्रसिद्धि। कित्ति-घोस, कित्ति-सद्, पु०, यश। कित्ति-मन्तु, वि०, यशस्वी। कित्तिम, वि०, कृतिम।

कित्तेति, किया, प्रशंसा करता है। किन्नर, पू०, पक्षी-विशेष, जंगल में रहने वा ी जाति-विशेष । किन्नरी, स्त्री०, किन्नर-स्त्री। किपिल्लिका, स्त्री०, चींटी। कि ब्विस, नपुं०, अपराघ। किव्विसकारी, पु०, ग्रपराधी। किमि. पु०, कीड़ा, कृमि। किमि-कुल, नपुं०, कीड़ों का समूह। किमवलायी, वि०, किस उपदेश का उपदेष्टा । किमत्यं, ऋि वि०, किस लिए। किमत्थिय, वि०, किस उद्देश्य से। किमपक्क-फल, नपुं०, ग्राम की शक्ल का जहरीला फल। किम्पुरिस, देखो, किन्नर। किंसुकोपम जातक, बुद्ध द्वारा चार मिक्षुग्रों को चार मिन्त-भिन्न कर्म-स्थान दिये गये चारों ने ग्रहंत्व-लाम किया (२४८)। किच्छन्द जातक, रिशवत लेने वाले न्यायाधीश पुरोहित की (४११)। किर, ग्रव्यय, वास्तव में। किरण, पु॰ तथा नपुं॰, (सूर्य या चन्द्र की) किरण। किरति, क्रियां, बिखेरता है। किरात, पु०, जंगली जाति-विशेष। किरिय, नपुं०, किया। किरियवाद, पु०, कर्म-फल में विश्वास। कमं-फल किरिय-वादी, पु०, विश्वासी। किरीट, नपुं ०, राज-मुकुट। किलञ्जा, स्त्री०, चटाई।

किमन्त, कृदन्त, थका हुआ। किलमति, किया, यकता है। किलमय, पु०, यकावट। किलमन्त, कृदन्त, यकता हुग्रा। किलमित, कुदन्त, यका हुमा । किलमेति, किया, थकाता है। किलास, पु०, छूत का रोग, कोढ़। किलिट्ठ, कृदन्त, मैला। किलिन्न, कृदन्त, भीगा। किलिस्सति, किया, दाग लगता है, मश्द होता है। किलिस्सन, नपुं०, मैला होना, दाग्र लगना। किलेस, प्०, कामुकता। किलेसक्खय, कामुकता का क्षय। किलेसप्पहाण, कामुकता का नाश। किलेस-वत्यु, नपुंज, ग्रासक्ति के पात्र । किलेसेति, क्रिया, घव्वा या दाग लगाता है। किलोमक, नपुं०, फुप्फुस का मावरण। किस, वि०, कुश, दुवला-पतला। कि, सर्वनाम, क्या। को, पु०, कीन पुरुष। का, स्त्री०, कौन स्त्री। कं, नपं०, किस वस्तु को । कि कारणा, कि॰ वि॰, किस कारण किंवादी, वि०, किस कीट, पु०, कीड़ा। कीत, कृदन्त, खरीदा हुमा। कोदिस, वि०, कैसा। कीर, पु॰, तोता। कोल, पु॰, खूंटा। कीव, प्रव्यय, कितना, कब तक। कीळति, किया, खेलता है। कीळनक, नपुं०, खिलीना। कीळना, केळी, स्त्री०, कीड़ा, विनोद। कीळा, स्त्री०, कीड़ा। कीळा-गोलक, नपुं०, खेलने की गेंद। कीळा-पसुत, वि०, खेल में लगा हया । कोळा-भण्डक, नपुं०, खिलौना। कोळा-ध्मण्डल, नपुं०, कोड़ा-भूमि। कोळा-पनक, वि०, खिलाड़ी; नपुं० खिलीना। कीळापेति, किया, खिलाता है। कीळित, कृदन्त, बेला हुग्रा। कुकुत्यक, पु०, एक प्रकार का पक्षी। कुक्कु, पु॰, हाथ भर का माप। कक्कु जातक, राजा ब्रह्मदत्त (बनारस) को समभाने के लिए दी गई यनेक उपमात्रों से युक्त कथा (३६६)। कुरकुच्च, नपुं०, कौकृत्य, पश्चात्ताप । कुक्कुचायति, क्रिया, पश्चात्ताप करता है। कुक्कुट, पु०, मुर्गा। कुक्कुट-जातक, एक बिल्ली ने एक मुगें की पत्नी बनने की बात बना उसे ठगना चाहा। वह उसमें ग्रस-फल हुई (३=३)। कुक्कुट जातक, एक बाज ने एक मुर्गी को ठगना चाहा (४४८)। कुक्कुटी, स्त्री०, मुर्गी। कुक्कुर, पु॰, कुता। कुक्फुर-वितक विं०, कुक्कुर-त्रती।

कुक्कुर-जातक, वनारंस के राजा ने

अपने कुलों के अपराध के कारण

कीवतिक, वि०, कितने । कितना ।

समी दूसरे निरपराध कुत्तों को भी मरवाने की आजा दी (२२)। कुक्कुळ, पु०, गर्म राख। क्ंकुम, नपुं०, केसर। कुच्छि, पु०, पेट। कुच्छिट्ठ, वि०, कुच्छि-स्थित। कुच्छि-दाह, पु०, पेट की जलन। कुच्छित, कृदन्त, कुत्सित, घृणित। कुज, पु०, वृक्ष-विशेष, मङ्गल-ग्रह । कुज्मति, किया, कोधित होता है। कुज्भन, नपुं०, कोध। कुजिभत्वा, पूर्व | क्रिया, कुद्ध होकर। कुञ्चनाद, पु०, कोञ्च-नाद, हाथी की चिघाड़। कुञ्चिका, स्त्री०, चावी। कुञ्चिका-विवर, नपुं०, चाबी का छेंद। कुञ्चित, कृदन्त, मुड़ा हुग्रा। कुञ्ज, नपुं०, घाटी, लताग्रों ग्रादि से ढका स्थान। कुञ्जार, पु०, हाथी। कुट, पु॰ तथा नपुं॰, जल-पात्र । कुटज, पु०, श्रीषथ-विशेष, वूटी-विशेष (कुरैया)। कुटि, स्त्री०, भोंपड़ी। कुटि दूसक जातक, वये ने वरसात में भीगे बन्दर को उपदेश दिया। बन्दर ने बये का घोंसला ही उजाड़ दिया (३२१)। कुटिल, वि०, टेढ़ा। कुटिलता, स्त्री०, टेढ़ापन। कुटुम्ब, नपुं०, परिवार । कुट्टस्बिक, पु॰, परिवार का मुखिया। कूट्ठ, नपूं॰, कुष्ठ, एक पौघा-विशेष। कुट्ठी, पु०, कोढ़ी। कुठारी, स्त्री ०, कुल्हाड़ी । मुड्ब, पु०, मुडब । कुडुमल पु०, कोंपल, मुकुल। कुड्ड, नपुं०, दीवार। कुणप, पु०, लाश। कुणप-गन्ध, पु०, लाश की सड़ांध। कुणाल, पु०, कोयल। कुणाल-जातक, कोयलों के कुणाल नाम के राजा की कथा (४३६)। कुणी, पु०, लंगड़ा। कुण्ठ, विं०, भोयरा। क्षुण्ठेति, क्रिया, कुण्ठित कर देता है। कुण्डक, चावलों के मीतर से प्राप्त चूणें। कुण्डक-पूद, कुण्डक के बने पूए। कुण्डल,, नपुं०, कान की बाली। कुण्डल-केस, वि०, घुंघराले वाल। कुण्डली, वि०, जिसके कान में कुण्डल हो या जिसके बाल धुवराले हों। कृण्डिका, स्त्री०, कूण्डी, मिट्टी का जल-पात्र। कृतूहल, नपुं०, उत्तेजना, कौतूहल । कुतो, कि॰ वि॰, कहाँ से ? कृत, नगुं०, ग्राचरण, नखरा। कुत्तक, नपुं०, बड़ा गलीचा। फुत्ति, स्त्री०, सजावद । खुत्थ, कुन्न, फि॰ वि०, कहाँ ? क्षित, कृदन्त, उवाला गया। भ्दस्सु, ग्रब्यय, कव ? कुदाचन, कुदाचनं, ग्रव्यय, कभी, किसी समय। क्ट्राल, पु०, कुदाली। कुद्दाल जातक, कुद्दाल पण्डित अपनी कुदाली के प्रति असीम आसक्ति के

कारण छह बार गृहस्य बना भौर गृहस्थी के भंभटों के कारण छह बार साधु (७०)। कुद्ध, कृदन्त, ऋद्ध । कुदरूसक, पु०, घान्य-विशेष। कुन्त, पु०, बर्छी, पक्षी-विशेष । कुन्तनी, स्त्री०, सारत, वगुला। फुन्तनी जातक, लड़कों ने वगुली के दो वच्चे मरवा डाले। वगुली ने शेर को कहकर लड़कों को मरवा डाला ग्रीर स्वयं हिमालय की ग्रीर चली गई (३%३)। कुन्तल, पु०, केश-राशि। कृत्य, पु०, चींटी-विदोष। कुन्द, नपुं०, जूही के रामान सफेद फूल । कुन्नदी, स्त्री०, छोटी नदी। क्षय, पु०, कुमागं। कुपित, कृदन्त, ऋड । क्पुरिस, पु०, दुष्ट भावमी। कृष्प, वि०, ग्रस्थिर, चञ्चल । कुप्पति, क्रिया, कोधित होता है, उत्ते-जित होता है। कुप्पन, नपुं०, उत्तेजना, कोध। कु ब्बति, किया, करता है। कुडबनक, नपुं०, छोटा जंगल। कुब्बन्त, कृदन्त, करता हुआ। कुब्बर, गाड़ी के पहियों की धुरी। कुमति, स्त्री०, मिथ्या दृष्टि । कुमार, पु०, लड़का। कुमार-कीळा, स्त्रो०, कुमार-कीड़ा। कुमार-पञ्ह, खुद्दक-निकाय (सुत्त-पिटक) का चौथा परिच्छेद। सात वयं के सोपाक महंत् से पूछे गये

प्रश्न । कुमारिका, स्त्री०, कुंवारी। कुमुद, नपुं ०, श्वेत कवल । कुमुद-णाल, नपुं०, श्वेत केंवल की नलिका। कुमुद-वण्ण, वि०, श्वेत कुंवल के वर्ण कुम्भ, यु०, घड़ा। क्म्भक, नपुं०, जहाज का मस्तूल। कुम्भकार, पु०, कुम्हार। कुम्भकार जातक, बोधिसत्व के कुम्हार की योनि में उत्पन्न होने पर गृह-त्याग की कथा (४०८)। कुम्भकार-साला, स्त्री०, बर्तन बनाने का स्थान। कुम्भ-दासी, स्त्री०, पानी लाने वाली दासी। कुम्भ-जातक, शराव के आरम्भ की कथा (५१२)। क्रम्भण्ड, पु०, दिव्य-लोक के प्राणी-विशेष, नपुं०, कहू। कुम्भी, स्त्री०, वर्तन । कुम्भील, पु०, मगरमच्छ। कुम्म, पु०, कछुगा। कुम्माग, पु०, कुमार्ग। कुम्मास, पु०, कुल्माष । कुम्मासपिण्ड-जातक, कुल्माप-पिण्ड के दान की कथा (४१५)। कुर, नपुं०, मात । कुरण्डक, पु॰, एक पौघा, जिसमें फूल लगते हैं। कुरर, पु॰, कुररी, मछली खाने वाला पक्षी-विशेष।

कुरंग, पु०, मृगों की एक जाति। कुरंग-मिग-जातक, शिकारी ने कुरुंग-मृग को छलकर मारना चाहा। वह उसके छल को भाष गया (२१)। कुरंग-मिग-जातक, मृग, कठफोड़े तथा क ख़ुवे की कथा (२०६)। कुर-धम्म-जातकः, पंचशील ग्रथवा कुरु-धम्म के पालन से जनपद समृद्ध हो गया (२७६)। कुरुमान, कृदन्त, करते हुए। कुरु-रट्ठ, उत्तर-भारत का कुरु राष्ट्र। कुरूर, वि०, कृर, ग्रत्याचारी। कुल, नपुं॰, परिवार, जाति । कुल-गेह, नपुं०, माता-पिता का घर। कुलङ्गार, पु०, कुल-विनाशक । कुल-तन्ति, स्त्री०, कुल-परम्परा। कुल-दूसक, पु०, कुल की वदनामी करने वाला। कुल-धीता, स्त्री ०, कुल की बेटी। कुल-पुत्त, पु०, कुल-पुत्र । कुल-बंस, नपु०, वंश-परम्परा। कुलटा, स्त्री०, कुलटा नारी। कुलत्य, पु०, पौघा-विशेष। कुल-पालिका, स्त्री ०, कुल-स्त्री, कुल का पालन करनेवाली। कुलल, पु०, वाज, गीध। कुलाल, पुं०, कुम्हार। कुलाला-चक्क, नपुं० कुम्हार का चाक। कुलावक-जातक, गांव के उनतीस परिवारों के मुखिया के रूप में मध की समाज-सेवा की कथा (३१)। कुलिस, नपुं०, वज्र (इन्द्रायुध), गदा।

कुलीर, पु०, केकड़ा। कुलूपग, वि०, परिवार-विशेष से सुपरिचित । कुल्ल, पु०, वेडा 1 कुवलय, नपुं०, जल-केंवल। कुवेर, पु०, यक्षाधिपति । कुस, पु०, कुश (दर्भ)। कुसग्ग, नपुं०, कुश का सिरा। कुसचीर, नपुं०, कुश-निर्मित पह-नावा। कुस जातक, स्त्री के प्रति ग्रासक्त हुए एक मिक्षु को सावधान करने के लिए कही गई कथा (५३१)। कुसल, नपुं०, कुशल-कमं; वि०, शुम (कर्म)। कुसल-चेतना, स्त्री०, शुम-चितन। कुसल-धम्म, पु०, कुशल-धर्म, शेष दो हैं अकुशल-धर्म तथा अव्याकृत-धर्म। कुसल-विपाक, शुभ-कर्मों का फल। कुसलता, स्त्री०, कुशलता। कुसा, स्त्री०, नाक की नकेल। कुसि, पु॰, चीवर के ग्रङ्ग। कुसीनारा, मल्लों की राजधानी। कुसीत, वि०, ग्रालसी। कुसीतता, स्त्री०, ग्रालस्य। कुसुम, नपुं०, फूल। कुमुमित, वि०, पुष्पित । कुमुब्भ, नपुं०, छोटा तालाव। कुसुम्भ, नपुं०, केशर। कुसूल, पु०, धान्यागार। कुसेसय, नपुं०, पद्म । कुह, कुहक, वि०, ठग, ढोंगी। कुहक जातक, तपस्वी ने धनी गृहस्य का सोना हड़प जाना चाहा (८१)।

कुहण, नपु०, दोंग। फुहणा, स्त्री०, ढोंग । कुहर, नपुं०, सुराख, छिद्र। फुहि, कि॰ वि॰, कहाँ। कुहेति, किया, ठगता है। क्जिति, किया, क्जिता है। क्जन, नपुं०, पक्षियों की आवाज। कूजंत, कृदन्त, कूजता हुग्रा। कूट, वि०, मिय्या। कूट-गोण, पु०, दुष्ट बैल। क्ट-म्रट्ट, नपुं०, भूठा मुक़ह्मा। क्ट-अट्टकारक, पु०, भूठा मुकद्मा दायर करनेवाला। कूट-जटिल, पु०, ढोंगी तपस्त्री। कूट-वाणिज, पुं०, ठग व्यापारी। कूट वाणिज जातक, पण्डित तथा अपिडत नाम के दो व्यापारियों की कया (६८)। कूट वाणिज जातक, एक सदगृहस्थ ने एक व्यापारी को अपने लोहे के हल सुरक्षित रखने के लिए दिये। वापिस माँगने पर उसका वह मित्र बोला, चूहे खा गये (२१८)। कूटागार, नपुं०, शिखर वाला भवन। कूप, पु०, कुग्रा । कूपक, पु॰, मस्तूल। कूल, नपुं०, किनारा। केका, स्त्री॰, मोर की ग्रावाज। केणि(नि)पात, पु॰, नौका चप्पु । केतकी, स्त्री०, पौघा-विश्वप, जिसके पत्ते कटिदार होते हैं। केतन, नपुं०, पताका। केतव, नपुं॰, शठता।

केतु, पु०, भण्डा, पताका । केतु-कम्यता, स्त्रीः, प्रमुखता की कामना । केतु-मन्तु, वि०, पताकाग्रां से मुस-जिजत । केतं, किया, खरीदने के लिए। केदार पु॰ तया नपुं॰, खेत। केदार-पाळि, स्त्री॰, दो खेतों के बीच का वाध। केयूर, नपुं०, वाजूबंद। केट्य, वि०, खरीदन योग्य। केराटिक, वि०, ठग, ढोंगी। केराटिय, नवं०, ठगी, ढोंग। केलास, पु०, कैलास पर्वत । केळि, स्त्री०, कीड़ा। केळि सील जातक, हँसोड़ राजा को इन्द्र ने लोगों के परिहास का माजन बनाया (२०२)। केवट्ट, पु॰, मछुवा । केवल, वि०, एकान्त, समस्त । केवल-कत्पं, वि०, लगभग सारा। केवल-परिपुण्णं, वि०, सम्पूणं। केवलि, वि०, सम्पूर्णता-प्राप्त, ग्रहंत्। केस, पु०, सिर के वाल। केसोहारक, पु०, नाई। केस-कम्बल, नपुं०, वालों का बना कम्बल। केस-कलाप, पु०, केश-गुच्छ। केस-कल्याण, नपुं०, केशों का सौन्दर्य। केस-धातु, स्त्री०, भगवान् बुद्ध की पवित्र केश-धातु। केसर, नपुं०, रेणु, ग्रयाल (पशुग्रों के कन्धे के बाल)। केसर-सोह, पु॰, केसरी (सिंह)।

केसव, वि०, केशों वाला। केसव, पु०, केशव (वासुदेव कृष्ण)। केसव जातक, तपस्वी को राज-वैद्य ग्रच्छा न कर सके। वह अपने शिष्यों के बीच पहुँचकर विना दवाई के ही अच्छा हो गया (३४६)। केसोरोपन, नपुं०, वालों का काटना। केसोहारण, नपुं०, वाल काटना। को, पु०, कौन। कोक, पु०, भेड़िया। कोकनद, नपुं०, लाल कवल। कोकिल, पू०, कोयल। कोचि, ग्रन्यय, कोई। कोच्छ, नपुं०, १. भाड़ू, २. कुर्सी, काउन। कोज, पु०, कवच। कोजव, पु०, गलीचा। कोकालिक जातक, वाचाल नरेश को वाचालता के विरुद्ध दिया गया शिक्षण (३३१)। कोञ्च, पु०, सारस। कोञ्चनाद, पु०, हाथी की चिघाड़। कोट, नपुं०, शिखर। कोटचिका, स्त्री०, चूत। कोटि, स्त्री०, शिखर, करोड़। कोटिप्पकोटि, स्त्री०, १०,०००, 000,000,000,000,000,00 संख्या । कोटिप्पत्त, वि०, सिरे तक पहुँच भली गया. गया। कोटिल्ल, नपुं०, कृटिलता, टेढ़ापन । कोटिसिम्बलि जातक, गरुड़ ने नाग को पकड़ा। नाग वट-वृक्ष के गिर्द

लिपट गया। गरुड़ वट-बृक्ष को मी उलाड ले गया। (४१२) कोट्म्बर, नपुं०, वस्त्र-विशेष। कोट्टन, नपुं०, कूटना। कोट्ठ, पु०, कोठा। कोट्ठागार, नपुं०, धान्यागार। कोट्ठागारिक, पु०, भाण्डागारिक। कोट्ठासय, वि०, पेट में रहने वाला। कोट्ठक, पु० तथा वि०, १. द्वार, २. छिपने का स्थान। कोट्ठास, पू॰, हिस्सा, माग। कोण, पु०, कोना, सिरा। कोण्डञ्ञ, प्रसिद्ध त्राह्मण-क्षत्रिय गोत्र। कोतूहल, नपुं०, उत्तेजना, जिज्ञासा। कोत्यु, कोत्युक, पु०, गीदड़। कोदण्ड, नपुं०, धनुप। कोध, पु०, क्रांघ, गुस्सा। कोधन, वि०, ग्रसंयत चित्त। कोप, पू०, कोध, गुस्सा। कोपनेय्य, वि०, क्रोध उत्पन्न करने-वाला । कोवी, वि०, कोधी। कोपीन, नपुं०, लॅगोटी। कोपेति, किया, कोध उत्पन्न करता है। कोमल, वि०, नमं। कोमार, वि०, कुमार-सम्बन्धी । कोमारभच्च, १. नपुं०, वच्चों चिकित्सा, २. (राज-)कुमार द्वारा पोपित । कोमाय-पुत्त जातक, कोमाय-पुत्त ने हथिया ग्राश्रम तपस्वियों का लिया (२६६)। कोमुदी, स्त्री०, चाँदनी।

कोरक, पु॰ तथा नपुं॰, कोंपल। कोरब्य, कोरब्य, वि॰ कूरु-वंश का। कोल, पु॰ तथा नपुं॰, रसभरी। कोलक, नपुं०, मिर्च। कोलम्ब, पु०, बड़ा बतंन। कोलाप, पु०; खोखला पेड़। कोलाहल, नपुं०, शोर-गुल। कोलित, मीद्गल्यायन स्थविर का गृहस्थनाम । कोलिय, शाक्यों के समान ही एक दूसरी कोलेय्यक, वि०, ग्रच्छी नस्ल का (विशेष रूप से कृतों की नस्ल)। कोविद, वि०, यक्ष, पण्डित। कोस, पु०, भण्डार, खजाना, म्यान। कोसक, पु॰ तथा नपुं॰, पानी पीने का पात्र। कोसज्ज, नपुं०, ग्रालस्य। कोसम्बी, वत्स्य-देश की राजधानी। कोसल, पु॰, कोशल जनपद। कोसल्ल, नपुं०, कुशलता। कोसारक्ल, पु०, खजानची। कोसिक, पू०, कौशिक, उल्लू। कुसिनारा कोसिनारक, वि०, सम्बन्धी। कोसिय जातक, ब्राह्मणी रोग का बहाना वना दिन-भर लेटी रहती ग्रीर रात को मौज मनाती (१३०)। कोसिय जातक, कौ ओं द्वारा उल्लू के ग्राकान्त होने की कथा (२२६)। कोसी, स्त्री॰, म्यान । कोसोहित, वि॰, ग्रण्डकोश से ढका हुआ। कोहञ्जा, नपुं०, ढोंग ।

क्व, ग्रव्यय, कहा ।

षविच, ग्रव्यय, कहीं।

ख

ख, कवर्गं का दूसरा ग्रक्षर; नपुं०, ग्राकाश। सग, पु०, पक्षी। सगन्तर, पु॰, कठफोड़ा। खगादि, पु०, पक्षी। खगादिबन्धन, पु॰, पक्षियों को फँसाने का जाल। खगा, पु०, तलवार। खग्ग-कोस, पु०, तलवार की म्यान (तलवार रखने का खाना)। खग्ग-गाहक, पु०, तलवार-धारी। खग्ग-तल, नपुं०, तलवार का फलक। खग्ग-घर, वि०, तलवार-धारी। लग्ग-विसाण, पु०, गेण्डा । खचित, क्रिया, जड़ता है, (ग्रॅगूठी में नगीना जड़ता है)। खज्ज, वि०, खाद्य, नपुं०, खाजा। खज्जकन्तर, नपुं०, नानाविध मिठा-इया । खज्जु, स्त्री०, खाज। खज्जूरी, स्त्री०, खजूर। बज्जोपनक, पु॰, जुगनू। बञ्ज, वि०, लॅगड़ा। बञ्जित, क्रिया०, लंगड़ाता है। बञ्जन, नपुं०, लंगड़ाना;पु०, बञ्जन पक्षी । खटक, पु०, मुट्ठी। लण, पु०, क्षण, ग्रवसर। लणेन, ऋ० वि०, क्षण में। सणातीत, वि०, जो ग्रवसर से चूक

गया । सणित, त्रिया॰, खोदता है। खणन, नपुं०, खोदना। खणिक, वि०, क्षणिक। खणित्ती, स्त्री०, खन्ति, कुदाल । खण्ड, पु०, हिस्सा, दुकड़ा। खण्ड-दन्त, वि०, टूटे दांत वाला । खण्ड-फुल्लं, नपुं०, खँडहर। खण्डन, नपुं०, टूटना, टूटा हुग्रा होना । खण्डहाल जातक, रिश्वतखोर पुरोहित ने राजा के पुत्र की हत्या करानी चाही (५४२)। खण्डाखण्ड, वि०, टुकड़े-टुकड़े टूटा हुआ। खण्डिका, स्त्री०, टुकड़ा। खण्डिच्च, नपुं०, खण्डित होना। खण्डेति, किया, दुकड़े-दुकड़े करता है। खत, कृदन्त, खोदा हुम्रा, घायल, चोट लगा हम्रा। बत्त, नपुं०, शासन, ग्रधिकार। खत्त-धम्म, क्षात्र-धमं, राजनीति। बतिय, पु०, क्षत्रिय; वि०, क्षत्रिय-वर्ण का। स्रतिय-कञ्जा, स्त्री०, क्षत्रिय-कन्या । बत्तिय-कुल, नपुं०, क्षत्रिय-कुल। बत्तिय-परिसा, स्त्री०, क्षत्रिय-परिपद्। स्रतिय-महासाल, पु॰, धनी क्षत्रिय। बत्तिय-सुबुमाल, वि०, राजकुमार के

समान कोमल शरीरवाला। खत्तिया, खत्तियानी, स्त्री०, क्षत्रियाणी। खत्तु, पु॰, सारथी, राजा का सलाह-कार। खदिर, पु०, बवूल। खदिरङ्गार, पु०, बबूल की लकड़ी के श्रॅगारे। खदिरङ्गार जातक, सेठ ने जलते कोयलों के गड्ढे में गिर पड़ने का खतरा मोल लेकर मी दान देना चाहा (४०)। खन्ति, स्त्री०, सहनशीलता। खन्ति-बल, नपं०, सहन-शक्ति। खन्तिमन्तु, वि०, सहनशील। खन्तिक, वि०, मत-विशेष का अञ्ज-खन्तिक, ग्रन्य मत का]। खन्ति-वण्ण जातक, एक राजदरबारी ने राजा के रिनवाम में गडवड़ी की थौर उसी राजदरवारी के नौकर ने ग्रपने मालिक के घर में। राजा के सामने मामला पेश हुग्रा, तो राजा ने राजदरवारी को सहनशील वने रहने की सलाह दी (२२४)। खन्तिवादी जातक, कलाव नाम के राजा ने तपस्वी के ग्रंग-ग्रंग कटवा दिये। तपस्वी ने क्षमाशीलता को सीमा पर पहुँचा दिया (३१३)। खन्तु, पु०, क्षमाशील। खन्ध, पु०, स्कन्ध, पेड़ का तना, ढेर, परिच्छेद, रूप-वेदनादि पाँच स्कन्ध । खन्ध-पञ्चक, रूप, वेदना संज्ञा, संस्कार और विज्ञान। खन्धक, पु॰, विमाग, परिच्छेद। खन्धकोट्ठास, पू॰, शरीर का माग।

खन्घदेस, नपुं०, ग्रासन । खन्धवत्त जातक, नियमित मैत्री-मावना करने से सपं-दंश से बचा रहा जा सकता है (२०३)। खन्धावार, प्०, छावनी । खम, वि०, धमाशील। खमति, किया, क्षमा करता है। खमन, नपुं०, क्षमा। खमापन, नपुं०, क्षमा-याचना करना। खमापेति, किया, क्षमा-याचना करता खिमतब्ब, कृदन्त, क्षमा देने योग्य। खिमत्वा, पूर्व श्रिया, क्षमा देकर। खम्भकत, वि०, हाथों को कमर पर रखकर खंभे की तरह खड़ा हया। खय, प्०, क्षय, नाश। खयानुपस्सना, स्त्री०, संसार के क्षय-शील स्वभाव का जान । खर, वि०, कठोर, तेज, दुखद; पू० गदहा । खरपुत्तजातक, राजा ने गाँव के लडकों से नाग की रक्षा की (३८६)। खरत्त, नपुं०, कठोरता। खरादिय जातक, मानजे मुग ने मामा से मुगों की प्राण-रक्षा की विधि नहीं सीखी (१५)। खल, नवुं०, खलिहान। खलग्ग, धान का भूसा निकालने का घारम्म । खलति, क्रिया, स्वलित होता है, लड़-खड़ाता है। खलित, नपुं०, स्खलन, ग्रपराध। खलीन, पु०, (घोड़े की) लगाम। खलु, ग्रव्यय, वास्तव में।

खलुङ्क, पु॰, घटिया किस्म का घोड़ा । खल्लाट, वि०, खल्वाट, गंजा। स्त्री०, एक प्रकार का खलोपि, बतंन। बळ, वि०, कठोर; पु०, दुप्ट पुरुप। लाण, पु॰, पेड़ का ठूँठ। खात, कृदन्त, खोदा हुम्रा। खादक, वि० खानेवाला। खादति, क्रिया, खाता है। खादन, नपुं०, खाना। बादनीय, वि०, खाने योग्य; नपुं०, मिठाई। खादापन, नपुं०, खिलाना । खादापित, कृदन्त, खिलाया गया। खादापेति, किया, खिलाता है। खादित, कृदन्त, खाया गया। खादितब्ब, कृदन्त, खाने योग्य। खादितं, खाने के लिए। खायति, ऋया, प्रतीत होता है। खायित, वि०, खाया गया। बार, पु॰, क्षार, बार। खारी, स्त्री॰, वहंगी से लटकी हुई टोकरी, खरिया। बारो-काज, पु॰ तथा नपुं॰, वहंगी की टोकरी तथा वहंगी। खालेति, किया, धोता है, कुल्ला करता है। बिड्डा, स्त्री०, कोड़ा। खिड्डा-पदोसिक, वि०, खेल-कूद के कारण खराव हुमा। खिड्डा-रति, स्त्री०, कीड़ा में रत होना । बित्त, कृदन्त, फेंका हुमा। बित्त-चित्तं, वि०, विक्षिप्त-चित्त ।

खिप, पु०, जाल, फैलाई गई वस्तु। खिपति, किया, फैलाता है। खिपन, नपुं०, फेंकना, फैलाना। बिपित, कुन्दत, फेंका गया। खिप, वि०, शीघ्र, क्षिप्र। खिल, नपुं०, कठोरता। खीण, कृदन्त, क्षीण, क्षय-प्राप्त । खीण-मच्छ, वि०, मछलियों से रहित। खीण-बीज, वि०, पुनर्जन्म के बीज से रहित। खीणासव, वि०, जिसके, ग्रास्रव ग्रयांत् चित्त-मैल क्षीण हो गये। खीयति, क्रिया, क्षय होता है, नष्ट होता है। खीर, नपुं०, क्षीर, दूव। खोरण्णव, पु०, इवेत समुद्र, क्षीरा-णंव। खीरपक, वि०, दूध तूमता हुमा। खीरोदन, नपुं०, दूध-भात। खोल, पु॰, कील, खूंटा। खुंसेति, किया, गाली देता है। खुज्ज, वि०, कुवड़ा। खुदा, स्त्री०, क्षुघा, भूख। खुद्दक, वि०, छोटा, तुच्छ। खुद्दक-निकाय, पाँचों निकायों में से एक। खुद्दक-पाठ, खुद्क-निकाय की पहली पोथी खुद्दक-पाठ। खुद्दा, स्त्री०, शहद की छोटी मक्ली, क्षद्रा । वि०, छोटे-मोटे ब्हानुबद्दक, (नियम)। खुव्पिपासा, स्त्री॰ भूख ग्रीर प्यास । खुभति, क्रिया, क्षुच्च होता है।

खुर, नपुं०, उस्तरा, पशु का खुर। खुराग, नपुं०, मुण्डन-संस्कार स्यान । खुर-कोस, पु०, उस्तरे का खोल। खुर-चक्क, नपुं०, उस्तरे जैसा तेज चका। खुर-धारा, स्त्री०, उस्तरे की घार। खुर-भण्ड, नपुं०, नाई का सामान। खुर-मुण्ड, मुंडा हुग्रा सिर। खुरप्प, पु०, एक प्रकार का तीर। खुरप्प जातक, जंगल में सार्थवाहों को रास्ता दिखाते समय डाकुग्रों ने म्राक्रमण किया (२६५)। बेट, ढाल। सेटक, ढाल। खेत्त, नपुं०, खेत, क्षेत्र। खेलीपम, नपुं०, क्षेत्र के समान। खेत्त-कम्म, नपुं०, खेत में काम। बेत्त-गोपक, पु०, खेत का रखवाला। खेत्त-सामिक, पु०, खेत का स्वामी। बेत्ताजीव, पु०, किसान।

सेद, पु०, ग्रफसोस । खेप, पु०, फॅक । खेपक, पु०, धनुर्घारी। खेपन, नपुं०, काल-क्षेप। खेपेति, किया, काल-क्षेप करता है। बेम, वि०, क्षेम, शान्ति। खेमट्ठान, नपुं०, शान्ति-स्थान । सेमप्पत्त, वि०, क्षेम-प्राप्त । सेम-मूमि, स्त्री०, कल्याण-भूमि। खेमी, पु०, सुखपूर्वक रहने वाला। बेळ, पु०, यूक। खेळ-मल्लक, पु०, धूकदान, पीकदान। बेळ-सिंघानिका, स्त्री०, युक-सींढ । बेळासिक, वि०, युक चाटने वाला (ग्रपशब्द)। खो, ग्रव्यय, वास्तव में। लोभ, पु०, क्षोम। खोम, नपुं. सन का कपड़ा। स्यात, वि०, प्रसिद्ध । ख्यापन, नपुं०, प्रसिद्धि ।

ग

गगन, नपुं०, झाकाश।
गगन-गामी, वि०, नम-चर, झाकाश
में विचरने वाला।
गग्ग-जातक, छींकने पर 'दीर्घायु हो'
कहना श्रनिवार्य। न कह सकने पर
यक्ष का श्राहार बनना पड़ता था
(१५५)।
गग्गरा, स्त्री०, एक भील का नाम।
गग्गरायति, क्रिया, गर्जता है।
गग्गरी, स्त्री०, लोहार की धौंकनी।

गङ्गा, स्त्री०, नदी, गङ्गा-नदी।
गङ्गा-तीर, नपुं०, गङ्गा-तट।
गङ्गा-द्वार, नपुं०, नदी के समुद्र में
गिरने की जगह।
गङ्गा-घार, पु०, गङ्गा की घारा।
गङ्गा-पार, नपुं०, गङ्गा का दूसरा तट।
गङ्गा-सोत, पु०, गङ्गा का लोत।
गङ्ग-सोत, पु०, गङ्गा का लोत।
गङ्ग-सोत जातक, उपोसय-व्रतधारी
नौकर निराहार रहकर मद्ग गया
(४२१)।

गङ्कोस्य, वि०, गङ्गा सम्बन्धी । गच्छ, पु॰, पौधा, (गाछ)। गच्छति, किया, जाता है। गज, पु॰, हाथी। गज-कुम्भ, पू०, हाथी का सिर। गज-पोतक, पु०, हाथी का बच्चा। गज्जति, किया, गर्जना करता है। गज्जना, स्त्री०, गजना । गज्जित, कृदन्त, गुजित । गज्जितु, पु०, गरजने वाला। गण, पु०, समूह, दल, (मिक्षु-) संघ। गण-पूरक, वि०, जिससे गण-पूर्ति हो। गण-पूरण, नपुं०, गण-पूर्ति । गण-बंघन, नपुं ०, सहयोग । गण-सङ्गणिका, स्त्री०, मण्डली में रहने की इच्छा। गणक, पु०, हिसाब-किताब रखने वाला, मुनीम। गणनपयातीत, वि०, गिनती से बाहर। गणना, स्त्री:, संख्या । गणाचरिय, पु०, ग्रनेकों का शिक्षक। गणारामता, स्त्री०, मण्डली-प्रेम । गणिका, स्त्री०, वेश्या। गाणिकण्टक, पु०, बारहसिंगा। गणित, कृदन्त, गिना गया, गणित-शास्त्र। गणी, पु॰, जिसके अनुयायी हों। गणेति, किया, गिनता है। गण्ठि, स्त्री०, ग्रन्थि। गण्ठिका, स्त्री०, ग्रन्य। गण्ठि-कासाव, नपुं०, ग्रन्थि-युक्त काषाय वस्त्र।

गण्ठिट्ठान, नपुं०, कठिन स्थल। गण्ठिपव, नपुं०, ग्रन्थि-पद, कठिनाई से समक में माने वाला पद। गण्ठिपास, पु०, बेड़ी। गण्ड, पु०, फोड़ा। गण्डक, वि०, फोड़े वाला; पु०, गण्डम्ब, श्रावस्ती के द्वार पर स्थित म्राम्र-वृक्ष, जिसके नीचे मगवान् बुद्ध ने यमक-पाटिहारिय नाम का चमत्कार दिखाया था। गण्डिका, स्त्री, भीतर से खोखला लकड़ी का लट्ठा, जिससे घण्टे वजाने का काम लिया जाता है। गण्डी, स्त्री, घंटा, जल्लाद का ब्लाक, फोडों वाला। गण्डुप्पाद, पु०, पृथ्वी का कीड़ा। गण्डूस, पु०, मुँह-भर, कीर। गण्हाति, किया, ग्रहण करता है। गण्हापेति, क्रिया, ग्रहण कराता है। गण्हितं, लेने के लिए। गत, कृदन्त, गया हुमा। गतक, पू०, संदेशवाहक। गतट्ठान, नपुं०, जाने की जगह। गतद्ध, वि०, जिसने अपना रास्ता पूरा कर लिया। गतदी, वि०, जिसने ग्रपना रास्ता पूरा कर लिया। गतयोब्बन, वि॰, जिसका यौवन चला गया। गति, स्त्री०, जाना । गतिमन्तु, वि०, दक्ष, होशियार। गत्त, नपुं०, शरीर, गात्र। गियत, कृदन्त, बँघा हुमा।

गद, पु०, रोग, वाणी। गदति, किया, बोलता है। गदा, स्त्री०, एक प्रकार का आयुघ। गद्दुल, पु०, चमड़े का पट्टा। गद्दूहन, नपुं०, दुहना। गद्रभ, पु०, गघा। गिवत, देखो गिथत। गन्तब्ब, कृदन्त, जाने योग्य। गन्तु, पु०, जाने वाला। गन्तुं, जाने के लिए। गन्त्वा, पूर्विकया, जाकर। गन्थ, पु०, ग्रन्थ। गन्थकार, पृ०, ग्रन्थकार । गन्यवुर, नपु०, पठन-पाठन का कार्य। गन्यप्पमोचन, नपुं०, वन्धन-मोक्ष । गन्यति, क्रिया, गांठ वाँधता है। गन्यन, नपुं०, ग्रन्थन, गाँठ वांघना । गन्थेति, किया, गाँठ वँधवाता है। गन्ध, पु० (सु)गन्ध। गन्ध-कुटि, स्त्री० भगवान् युद्ध के रहने की कोठिरी। गन्ध-चुण्ण, नपुं०, सुगन्धितचूर्ण। गन्ध-जात, नपुं०, सुगन्धियों के प्रकार। गन्ध-तेल, नपुं०, सुगन्धित तेल । गन्ध-पञ्चङ्गुलिक, नपुं०, सुगन्धित तेल से सनी हुई पाँच ग्रंगुलियों का निशान। गन्धब्ब, पु०, संगीतकार, जन्म ग्रहण करने वाला जीव, गन्धवं। गन्धब्बाधिप, पु॰, गन्धर्वो का प्रधान। गन्धमादन, पु०, हिमालय का एक पर्वत । गन्धवंस, वर्मा में लिखा गया एक पालि-प्रन्थ । यह नन्दपञ्जा भ्रारण्यक

की रचना माना जाता है। गन्ध-सार, पु०, चन्दन, चन्दन-वृक्ष । गन्धापण, पु०, सुगन्धित तेल बेचने वाले की दुकान। गन्धी की दुकान। गन्धार, सोलह जनपदों में से एक। वतंमान कन्घार । इसकी राजधानी तक्षशिला थी। गन्घारी, स्त्री०, गन्घार से सम्बन्धित, जादू-टोना। गन्धिक, वि०, सुगन्धि वाला। गन्धी, वि०, सुगन्धि वाला। गन्धोदक, नपुं०, सुगन्धित जल। गब्वित, वि०, गवित, ग्रहंकारी। गटभ, पु०, ग्रन्दरूनी माग, गर्म । गडभ-गत, वि०, गर्माघान हुम्रा। गब्भ-परिहरण, नपुं०, गर्भ-संरक्षण। गडभ-पातन, नपुं, गर्भ-पात । गडभ-मल, नपुं०, वच्चे के जन्म के समय उसके शरीर के साथ लगा हुग्रा घृणित ग्रंश। गब्भ-बुट्ठान, नपुं०, प्रसव । गब्भर, नपुं०, गुफा। गब्भासय, पु०, बच्चादानी । गढिभनी, स्त्री०, गर्मिणी स्त्री । गभीर, वि०, गहरा। गम, पु०, गमन, यात्रा। गमन, नपुं॰, जाना। गमनन्तराय, पु०, गमन में बाघा। गमन-कारण, नपुं०, जाने का कारण। गमनागमन, नपुं०, जाना-ग्राना। गमनीय, वि०, जाने योग्य। गमिक, वि०, जाने वाला। गमिक-वत्त, नपुं०, यात्रा की तैयारी। गमेति, किया, भेजता है, समभता है। गम्भीर, वि०, गहरा। गम्भीरावभास, वि०, गम्भीरता की प्रतीति । गम्म, वि०; गँवार, ग्राम्य। गया, बोध-वृक्ष तथा बनारस के बीच की सडक पर स्थित प्रसिद्ध नगर। गया-सीस. गया के पास का एक पवंत । गरह, वि०, ग्रहण करने योग्य। गयहति, किया, ग्रहण करता है। गरहति, क्रिया, दोष देता है, निन्दा करता है। गरहन, नपुं०, दोषारोपण । गरहित जातक, एक बंदर कुछ समय तक आदिमयों में रहा। उसने जंगल में वापिस पहुँचकर प्रपने साथियों के सामने ग्रादिमयों के गहित जीवन का वर्णन (385) गरही, पू॰, दोषारोपण करने वाला। गर, मारी, गन्भीर, सम्मान्य। गर-कातब्ब, वि०, सम्मान के योग्य। गर-कार, पु०, सम्मान। गर-गब्भा, स्त्री०, गर्मिणी। गरुट्ठानीय, वि०, ग्राचायं। गरक, वि०, मारी, गम्भीर। गद करोति, क्रिया, ग्रादर करता है। गदल, नपुं०, गुरुत्व। गरळ, पू०, एक काल्पनिक पक्षी। गल, पु०, गला। गलग्गाह, पु०, गले से पकड़ना । गल-नाळी, स्त्री०, गले की नाली। गलपमाण, वि०, गले तक। गल-बाटक, पू०, गले का घेरा।

गलति, किया, बहुता है। गलित, कृदन्त, बहा हुम्रा । गव, पू०, व्यम । गवक्ल, पू॰, गवाक्ष ऋरोखा । गव-घातन, नपुं ०, गो-हत्या । गव-पान, नपुं ०, खीर (दूध-मात)। गवज, देखिये गवय। गवयः, पुं०, नील गाय। गवि, पु०, हन्य-सामग्री, घी। गबेसक, वि०, खोजने वाला। गवेसति, किया, खोजता है। गवेसन, नपुं०, गवेषणा। गवेसी, पू॰, खोजने वाला। गह, पु०, जो ग्रहण करता है, ग्रह (मंगल ग्रह भादि); नपुं०, घर। गह-कारक, पु॰, घर का निर्माता। गह-कट, नंपुं०, घर का शिखर। गहर्ठ, पु०, गृहस्य । गहण, नपुं, ग्रहण करना। गहणिक, वि०, ग्रच्छी पाचन-शिवत गहणी, स्त्री०, पाचन-शक्ति । गहन, न्षं०, घना। गहनट्ठान, नपुं०, जंगल में ऐसा स्थान जहां घुसनां दुष्कर हो। गहपतानी, स्त्री०, गृह-पत्नी। गहपति, पु०, गृहपति । गहपति जातक, एक गृहस्य की पत्नी, गांव के मुखिया से फँसी थी। गृहस्य जान गया। उसने मुखिया को पीटा (१६६)। गहपति महासाल, पु०, घनी गृहपति । गहित, कृदन्त, गृहीत। गळगळायति, क्रिया, गल-गल शब्द

करते हुए बरसता है। गळोचि, स्त्री०, गड्च। गाया, स्त्रीं , दो पंक्तियों का छन्द-विशेष, त्रिपिटक के नी ग्रंगों में से एक। गाच, वि०, गहरा; पु०, गहराई। गाधित, ऋिया, दृढ़ (खड़ा) रहता है। गान, नपुं०, गाना । गाम, पु०, गांव, ग्राम। गामक, पुरु, एक छोटा गाँव। गाम-घात, पु॰, गांव की लूटं। गाम-जेट्ठ, पु॰, गाँव का मुखिया। गाम-दारक, पु०, गांव का लड़का। स्त्री, गाँव गाम-दारिका, की लड़की। गाम-द्वार, नपुं०, गांव का दरवाजा। गाम-धम्म, पू०, ग्राम्य-धर्म, मैथून-धर्म । गाम-भोजक, पु॰, गांव का मुखिया। गाम-वासी, पु०, ग्राम-वासी। गाम-सीमा, स्त्री०, गांव की सीमा। गामणी, पु॰, गांव का मुखिया (ग्रामणी)। गामणी-जातक, देखो संवर-जातक। गामिक, पु॰, ग्रामीण। गामी, वि०, जाने वाला। गायक, पु०, गाने वाला। गायति, किया, गाता है। नपुं०, गाना। गायन, गायिका, स्त्री०, गाने वाली। गारम्ह, वि०, निन्दनीय । गारव, पू॰, गौरव। गाळह, वि०, मजबूत, कसा हुमा।

गावी, स्त्री०, गी। गावुत, नपुं०, गब्यूति, दूरी का माप। गाबो पु॰, पशु। गाह, पु०, १. पकड़, २. दृष्टि, ३. मत। गाहक, वि०, लेने वाला, ग्रहण करने वाला, ग्राहक। गाहति, किया, भीतर जाता है, ड्बकी लगाता है। गाहन, नपुं०, भीतर जाना, दुबकी गाहपच्च, पु०, गाहंपत्य । गाहायक, वि०, ग्रहण कराने वाला। गाहापेति, किया, ग्रहण करवाता है। गाही, वि०, गाहक (ग्राहक)। गाहेति, किया, ग्रहण कराता है। गिगमक, नपुं०, ग्रामरण-विशेष। गिज्म, प्०, गीघ। गिज्य-कूट, राजगृह के पास गृध-कूट पवंत । गिज्भ जातक, कृतज्ञ गीघों ने जहाँ-तहां से लोगों के माभूपण मादि उठा-उठा लाकर सेठ के मकान में गिराने ग्रारम्म किये (१६४)। गिज्य जातक, सुपत्त गीध ने प्रपने पिता का कहना न मान जान गैंवाई (४२७) 1 गिज्अति, किया, लोग करता है। गिञ्जका, स्त्री०, इंट। गिञ्जकावसय, पु०, इंटों का बना घर। गिद्ध, कृदन्त, लुब्ध। गिबि, स्त्री॰, लोम, ग्रासन्ति । गिद्धी, वि॰, लोमी। गिनि, पु०, भग्नि, भाग। निम्ह, पु०, गरमी, ग्रीय्म ऋतु ।

गिम्हान, पु०, ग्रीव्म-ऋतु । गिम्हिक, वि०, ग्रीष्म ऋतु सम्बन्धी । गिराग समज्जा, स्त्री०, समय-समय पर मनाया जाने वाला पहाड़वाला उत्सव । गिरा, स्त्री०, वाणी। गिरि, पु०, पर्वत । गिरि-गब्भर, नपुं , पर्वत-गुफा । गिरि-दन्त जातक, ग्रपने शिक्षक को लॅगड़ाता देख घोड़ा भी लॅगड़ाने लगा (१८४)। गिरिब्बज, मगधों की पूर्व राजधानी। गिरि-राज, पूंठ, सेरु पर्वत । गिरि-सिखर, नपुं०, गिरि-शिखर। गिलति, किया, निगल जाता है। गिलन, नपुं०, निगलना । गिलान, वि०, रोगी। गिलान-पच्चय, पु०, रोगी का पथ्य। गिलान-मत्त, नपुं०, रोगी का मोजन। गिलान-साला, स्त्री०, रोगी-शाला। गिलानालय, पु०, रोग का बहाना। गिलानुपट्ठाक, पु०, रोगी-सेवक। गिलानुपट्ठान, नपुं०, रोगी-सेवा । गिलायति, किया, रोगी होता है, दर्द करता है। गितित, ऋदन्त, खाया हुम्रा। गिहो, बन्धन, नपुं०, गृही-बन्धन । गिही-भोग, पु०, गृहस्थ के मोग। गिही-स्यञ्जन, नपुं०, गृहस्य की विशेषताएँ। गिही-संसाग, पु० गृहस्थों के साथ संसगं । गीत, नपुं॰, गाना। नीत-रब, पु०, गीत की भावाज।

गीत-सद्द, पु०, गीत की म्रावाज। गीवा, स्त्री०, गर्दन, ग्रीवा। गीवेयक, नवुं०, गर्दन का गहना। गुग्गुल्, पु०, गुग्गल । गुङ्जा, स्त्री०, रत्ती-मर (तील)। गुण, पु०, सद्गुण या दुर्गुण, घागा। (दिगुण, दोहरा, द्विगुण)। गुज-कथा, स्त्री० प्रशंसा। गुण-कित्तन, नपुं०, ग्रात्म-प्रशंसा । गुण-गण, पु०, गुणों का समूह। गुणवन्तु, वि०, गुणवान् । गुणानुपेत, वि०, गुणी। गुणहीन, वि०, गुण-रहित। गुण-जातक, शेर को गीदड़ ने दलदल में से निकाला (१५७)। गुणक, वि०, जिसके सिरे पर गाँठ हो। गुण्ठिक, वि०, ढका हुआ। गुण्ठिका, स्त्री०, धागे का गोला। गुण्ठेति, ऋिया, लपेटता है। गुण्डिक, देखो गुण्ठिक। गुणेतर, दोष। गुत्त, कृदन्त, संरक्षित। गुत्त-द्वार, वि०, संयतेन्द्रिय। गुत्ति, स्त्री०, संरक्षक। गुत्तिक, पु॰, चौकीदार। गुत्तिल जातक, ग्राचार्यं गुत्तिल तथा उसके शिष्य मूसिल का मुकाबला (२४३)। गुद, नपुं ०, गुदा । गुम्ब, पु॰, भाड़ी। गुम्बिय जातक, सार्थवाह ने ग्रपने सार्थ को जंगल की कोई भी चीज बिना उससे पूछे खाने के लिए मना किया (358) 1

गुरह, वि०, रहस्य, छिपाने योग्य। गुटह-भण्डक, नपुं०, पुरुष-लिङ्ग अथवा स्त्री-लिङ्ग । गुर, पु॰, शिक्षक। गुरु-दक्षिलणा, स्त्री०, गुरु की दक्षिणा। गुहा, स्त्री॰, गुफा। गुळ, नपुं०, गुड़, गोली, गेंद। गुळ-कोळा, स्त्री०, गोलियों की कीड़ा। गुळिका, स्त्री०, गोली। गूथ, नपुं०, गोबर, गुँह। गूय-पाणक, पु०, गूँह में रहने वाला कीड़ा। ग्य-भक्ख, वि०, गूंह खाने वाला। गूथ-भाणी, पु॰, बुरा बोलने वाला। गूय-पाण जातक, गोवर के कीड़े ने शराव पी ली। उसे नशा चढ़ गया (२२७)। गूहति, किया, छिपाता है। गूहन, नपुं०, छिपाव। गूहित, कृदन्त, छिपा हुग्रा। गूळ्ह, कुदन्त, छिपा हुआ। गेण्डुक, पु०, गेंद। गेघ, पु०, लोम। गेधित, कृदन्त, लुड्य । गेय्य, वि०, गाने योग्य, त्रिपिटिक के नी ग्रंगों में से एक, ग्रंश। गेरक, नपुं०, गेरू का रंग। गेलञ्ज, नपुं० रोग। गेह, पु॰, तथा नपुं॰, घर। गेहङ्गन, नपुं०, घर का ग्रांगन। गेहजन, पु॰, परिवार के सदस्य। गेहट्ठान, नपुं०, घर के लिए जगह।

गेह-द्वार, नपुं०, घर का दरवाजा।

गेह-निस्सित, वि०, घर पर माश्रित। गेहप्पवेसन, नपुं०, गृह-प्रवेध संस्कार। गो, पु॰ तथा स्त्री॰, गाय, बैल, सौंड़, पशु । गो-कण्टक, नपुं०, पशुप्रों के खुर। गो-कुल, नवुं०, गो-घर, गौ-शाला। गो-गण, पु०, पशु-समूह। गो-घातक, पु०, कसाई। गोकुलिक, विजयुत्तकों का एक उप-गोचर, पु०, चरागाह। गोचर-गाम, पु०, मिक्षाटन-क्षेत्र। गोच्छक, पु०, गुच्छा । गोट्ठ, नपुं०, गौग्रों का बाड़ा। गोण, पु॰, वंल, वृपम। गोणक, पु०, एक प्रकार का बैल, ऊन का गलीचा। गोतम, वि०, गोतम-गोत्र सम्बन्धी, शांक्यों का गोत्र। गोतमी, स्त्री०, गोतम गोत्र की। गोत्त, नपुं ०, गोत्र। गोत्रभू, एक पारिमापिक शब्द । वह जो सांसारिक न रहा, विलक निर्वाण जिराका उद्देश्य हो गया हो। गोध जातक, तपस्वी ने गोह-नांस के लोम से गोह की हत्या करनी चाही (१३5) 1 गोध-जातक, गोह-वच्चे ने गिरगिट-वालिका से यारी की (१४१)। गोध-जातक, गोह ने ढोंगी तपस्वी को ग्राश्रम त्यागने पर मजबूर किया (३२४)। गोध-जातक, राजकुमार तथा उसकी भार्या को शिकारियों ने गोह का मांस दिया (३३३)। गोघा, स्त्री०, गोह। गोघावरी, स्त्री०, दक्षिणापय की एक नदी (गोदावरी)। गोघूम, पु०, गहूँ। गोनस, पु०, विपंता सर्प। गोपक, पु०, पहरेदार, चौकीदार। गोपानसी, स्त्री०, कड़ियाँ। गोपो, स्त्री०, ग्वाले या चरवाहे की स्त्री। गोपूर, नपुं०, द्वार। गोपेति, किया, रक्षा करता है।
गोपेतु, पु०, रक्षक।
गोप्कक, नपुं०, गुलेल।
गोमय, नपुं०, गोबर।
गोमिक, वि०, पशुओं का मालिक।
गोमी, वि०, पशुओं का मालिक।
गोमी, वि०, पशुओं का मालिक।
गोमुत्त, नपुं०, गोमृत्र।
गो-यूथ, पु०, गोग्रों का भुण्ड।
गोरक्खा, स्त्री०, गो-रक्षा, गौ-पालन।
गोळक, पु० तथा नपुं०, गेंद।
गोसीस, पु०, पीला चन्दन।

घ

घ, कवगं का चौथा ग्रक्षर। घंसति, किया, रगड्ता है। घच्चा, स्त्री०, विनाश। घट, पु०, घड़ा। घटक, पु॰ तथा नप्॰, छोटा वर्नन । घटजातक, कोसल नरेश के मन्त्री को लेकर सुनाई गई कथा (३५५)। घटजातक, किस प्रकार घट पण्डित ने ग्रपने माई वामुदेव का कष्ट दूर किया, (४५४)। घटति, किया, को जिल करता है, प्रयास करता है। घटना, स्त्री०, मेल। घटा, स्त्री०, भीड़। घटासन जातक, वृक्ष पर रहने वाले पक्षियों को मार डालने के लिए जलाशय में रहने वाले नाग-देवता ने ग्राग मड्काई (१३३)। घटिका, स्त्री०, सुराही। घटी, स्त्री०, जल-पात्र।

घटीकार, पु०, कुम्हार। घटी-यन्त, नपुं०, घटी-यनत्र, रहट । घटीयति, किया, सम्बन्धित होता है। घटेति, किया, प्रयत्न करता है। घट्टन, नपुं०, संघपं। घटटेति, क्रिया, चोट पहुँचाता है, रुप्ट करता है। घण्टा, स्त्री०, (वजाने का) घण्टा। घत, नपुं॰, घृत, घी। घत-सित्त, वि०, जिस पर घी डाला गया हो। घन, वि०, मोटा, स्थूल। घनतम, वि०, बहुत मोटा, ग्रत्यन्त स्थूल। घन-पूरफ, नपुं०, फूलों वाला गलीचा। घनसार, पु॰, कपूर। घनोपल, नपुं०, ग्रोले। घम्म, पु॰, ऊप्णता । घम्म-जल, नपुं०, पसीना । घम्माभितत्त, वि०, गरमी से हैरान। घर, नपुं०, गृह । घर-गोलिका, स्त्री०, छिपकली। घर-वन्धन, नपुं०, विवाह। घर-मानुष, पु०, घर के लोग। घर-सप्प, वि०, चूहा। घराजिर, नपुं०, घर का आंगन। घराबास, पु०, गृहस्य जीवन। घरणी, स्त्री०, गृहिणी। घस, वि०, खाने वाला। चसति, किया, स्राता है। घंसेति, किया, रगड़ता है। घात, पु॰, हत्या। घातन, नपुं०, हत्या। घातक, पु०, हत्यारा, लुटेरा। घाती, पु०, हत्यारा, लुटेरा। घातापेति, क्रिया, हत्या करवाता है, नुटवाता है। घातेति, किया, हत्या करता है, लूटता है।

घाण, नपं०, नाक । घाण-विञ्जाण, नपुं०, घाणेन्द्रिय के माध्यम से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान। घायति, किया, सूंघता है। घायित, कृदन्त, खाया हुमा। घास, जानवरों घास, पु०, ग्राहार। घासच्छादन, नपुं • भोजन-बस्त्र । घास-हारक, वि०, घास लाने वाला। घुट्ठ, कृदन्त, घोषित । घोटक, पु०, बिना सधा हुमा घोड़ा। घोर, ति०, मयानक। घोरतर, वि०, ग्रधिक मयानक। घोस, पु०, घोषणा, शब्द । घोसक, पु०, घोषणा करने वाला। घोसापेति, क्रिया, घोषणा कराता है। घोसिताराम, कोसम्बी का प्रसिद्ध विहार। घोसेति, किया, घोषणा करता है।

च

स, प्रव्यय, घौर तब, प्रव चिकत, वि०, हैरान, मयमीत । चकोर, पु०, चकोर । चक्क, नपुं०, चक, चक्का, पहिया । चक्क-प्रिङ्कत, वि०, चक्कांकित, चक के निशान वाला । चक्क-पाणी, पु०, चक्र-पाणि, विष्णु । चक्क-युग, नपुं०, पहियों का जोड़ा । चक्क-रतन, नपुं०, चक्रवर्ती राजा का रत्न-चक्र । चक्क-सत्ती, पु० चक्रवर्ती राजा । चक्क-समारूद्ध, वि०, चक्कों (गाड़ियों) पर चढ़े हुए।
चक्कवाक, पु०, चकवा।
चक्कवाक जातक, संतोध सौन्दयं प्रदान
करता है जैसे चकवा-चक्कवी का, और
लोग सौन्दयं नष्ट करता है जैसे
कौवे का (४३४)।
चक्कवाक जातक, ऊपरी जातक के
समान (४५१)।
चक्क-वाळ, पु०, चेरा, क्षेत्र।
चक्ककह, पु०, चक्रवाक, चकवा।
चक्किक, एकसाथ स्तुति-पाठ करने
वाले।

चल्द, नपुं०, ग्रांस । चक्लक, वि०, ग्रांख वाला। चक्खदर, वि०, ग्रांख देनेवाला। चक्लु-धातु, स्त्री, दृष्टि । चदल-पथ, पू॰, दृष्टिपथ । चक्ख-भूत, वि०, सम्यक् दृष्टिवाला। चक्लुमन्तु, वि०, ग्रांख वाला। चक्खु-लोल, वि०, ग्रांख का लोमी। चक्ख-विज्ञाण, नपुं०, दृष्टि के द्वारा प्राप्त ज्ञान। चक्ख्-सम्फस्स, पु०, चक्षु-स्पर्श । चक्लस्स, वि०, ग्रांख को ग्रच्छा लगने वाला या भांख के लिए ग्रच्छा। चङ्कम, पु०, चंकमण-भूमि, चंकमण करना। चङ्कप्रन, नपुं०,चंक्रमण करना। चङ्कमित, किया, चंकभण करता है। चङ्गवार, पु०, दूध छानने का कपड़ा या छलनी। चङ्गोटक, पु०, छोटी टोकरी। चच्चर, नपुं०, ग्रांगन, चीरस्ता। चजति, किया, त्याग देता है। चजन, नपं०, त्याग । चञ्चल, वि०, ग्रस्थिर। घटक, पू०, विड्या। चणदा, पु०, चना। चण्ड, वि०, भयानक, प्रचण्ड। घण्डपज्जोत, वुद्ध का समकालीन धवन्ति-नरेश। चण्डासोक, भाइयों की निदंयतापूर्वक हत्या करने के कारण अशोक को दिया गया नाम। चण्डाल, पु०, जाति-बहिष्कृत ग्रथवा घरपृश्य ।

चण्डाल-कुल, नपुं०, नीचतम कुल। घण्डाली, स्त्री०, चण्डाल स्त्री। चण्डिक, नपुं , भयानकता, प्रचण्ड-माव। चतु, वि०, चार। चतुक्कण, वि०, चतुरकोण। चतुक्लत्तुं, क्रिया-विशेषण, चार वार। चतुग्गुण, वि०, चौरना । चत्तालीसति, स्त्री०, चवालीस । चतुज्जाति-गन्ध, पू०, चार प्रकार की स्गन्धि । चतुत्तिसति, स्त्री०, चौतीस। चतुइस, वि०, चौदह। चतुहिसा, स्त्री॰, चारों दिशाएँ। चतुद्वार, वि०, चारों द्वार। चतुनवृति, स्त्री०, चौरानवे । चतुपच्चय, पु०, भिक्षु की चीवर ग्रादि चार ग्रावश्यकताएँ। चतुपण्णास, स्त्री०, चौवन । चतु-परिसा, स्त्री०, चार प्रकार की परिषद् ग्रथांत् मिक्षु, मिक्षुणियां, उपासक तथा उपासिकाएँ। चतु-भूमक, वि०, चार तल्लों का। चतु-मधुर, नपुं०, चार प्रकार के घी, मधु ग्रादि माधुयं। चतुरङ्गिक, वि०, चार हिस्सों वाला । चतुरङ्गिनी, स्त्री०, चार ग्रंगों वाली चतुरङ्गुल, वि०, चार ग्रंगुल भर। चतुरस्स, वि०, चौकोर। चतुरस्सक, पु०, चार तल्ले का महल। चतुरंस, वि०, चतुष्कोण। चतुरासीति, स्त्री०, चौरासी। चतुवीसति, स्त्री॰, चीवीस ।

चतुसद्ठि, स्त्री०, चौंसठ। चतु-सत्तति, स्त्री० चौहत्तर। चतुक्क, भपुं०, चार, चीरस्ता। चतुद्वार-जातक (४३६), इसी कथा का दूसरा नाम महामित्तविन्दक जातक भी है। चतुत्य, वि०, चौथा। चतुत्थी, स्त्री०, पक्ष का चौथा दिन । चतुषा, क्रिया-विशेषण, चार तरह से। चतुपोसियक जातक, ४४१वीं जातक का शीर्षक । वहाँ लिखा है कि यह पुण्णक जातक के यन्तगंत है। इस नाम की कोई जातक कथा नहीं है। चतुष्पद, पु०, चतुष्पाद, चार पैरों वाला जानवर। चतुब्बिधः वि०, चार प्रकार से। चतुभानवार, पांच निकायों में से ग्रीर विशेष रूप से खुद्क-पाठ में से सत्ताईस उद्धरणों का एक संग्रह। चतुमट्ट जातक, चित्रक्ट पर्वत से भाये हंसों की कथा (१८७)। चतुर, वि०, होशियार, बुद्धिनान। चतुरोपधि, पु०, चार प्रकार के बन्धन। चत्त, कृदन्त, त्यक्त, त्यागा हुम्रा । चन, ग्रव्यय, 'कभी कभी' के अर्थ के वाचक 'कुदाचन' शब्द का एक अंश। चनं, देखिये चन । चन्द, प्०, चांद। चन्दरगाह, पु०, चांद-ग्रहण। चन्द-मण्डल, नपुं०, चाँद की तश्तरी। चन्द किन्नर जातक, वनारस-नरेश ने चन्दा किन्नरी पर ग्रासक्त हो चन्दा के पति चन्द किन्नर को मार डाला। चन्दा किन्नरी की स्वामि-

मक्ति (४८५)। चन्दन, पु०, चन्दन का वृक्ष; नपुं०, चन्दन की लकड़ी। चन्दन-सार, पु०, चन्दन का सार। चन्दाभ जातक, चन्द्र तथा सूर्य पर वित्त एकाग्र करने वाले ग्रामास्वर लोक में उत्पन्न होते हैं (१३५)। चन्दनिका, स्त्री०, नावदान । चन्दप्पभा, स्त्री०, चाँदनी। चन्दभागा, चन्द्रभागा नदी। चन्दिका, स्त्री, चौदनी। चन्दिमा, पु०, चांद। चपल, वि०, चंचल, ग्रस्थिर। चपु-चपु-कारकं, क्रिया-विशेषण, चप-चप भ्रावाज करते हुए (भोजन करना)। चमर, पु॰, हिमालय-प्रदेश की मुरा-गाय। चम्, स्त्री॰, सेना। चंमूपति, पु॰, सेनापति । चम्पक, पु०, चम्पा। चम्पा, स्त्री०; इसी नाम की नदी के किनारे का एक नगर। यह ग्रंग की राजधानी था। वर्तमान भागलपुर। चम्पेयक जातक, मगध नरेश ने चम्पा नदी में रहने वाले नागराज की सहायता से अंग-नरेश को हराया (४०६)। चम्म, नपुं०, चमं। चम्मकार, पु॰, चमार। चम्म-खण्ड, पु॰, ग्रासन की तरह उप-योग में माने वाला चमं-खण्ड। चम्म-पसिव्दक, पु०, चमड़े का वंसा ।

चय, प्०, संग्रह, ढेर। चर, पु॰, घूमने वाला, चर-पुरुष (गुप्तचर)। चरक, देखो चर। चरण, नपुं०, चलना-फिरना, श्राचरण। चरति, क्रिया, चलता-फिरता है, ग्राच-रणं करता है। चराचर, नपुं०, चलाचल वस्तु। चरापेति, किया, चलाता है। चरित, नपुं॰, चरित्र, (जीवन-)चरित। चरिम, वि०, ग्रन्तिम। चरिया, स्त्री०, ग्राचरण, चरित। चरिया-पिटक, खुद्दक निकाय के पन्द्रह ग्रन्थों में से एक । यह खुद्दक निकाय का ग्रन्तिम ग्रन्थ माना जाता है। चर, पु०, यज्ञीय द्रव्य । चल, वि०, ग्रस्थिर। चल-चित्त, ग्रस्थिर चित्ता। चलति, किया, चंचल होता है, कांपता चलन, नपुं०, हिलना-डोलना, कांपना। चलनी, पु॰, वात मृग। चवति, किया, गिरता है। चवनं, नपं० पतन, मृत्यु । चसक, नवुं ० तथा पु ०, पान पात्र । चाग, पु॰, भेंट, त्याग । चागानुस्सति, स्त्री०, अपनी उदारता का ग्रनुस्मरण। चागी, पु॰, त्यागी। चाटि, स्त्री, एक वर्तन । चाटुकम्यता, स्त्री०, चाटुकारिता, खुशामद । चातक, पु॰, चातक पक्षी।

चातुइसी, स्त्री०, पक्ष की चतुर्दशी। चातुद्दिस, वि०, चारों दिशाग्रों से सम्बन्धित । चात्रहोपक, वि०, चार द्वीपों पर छाया हुग्रा। चातुम्महापय, पु०, चारों सड़कों के मिलने की जगह, चौरस्ता। चातुम्महाभूतिक, वि०, पृथ्वी, ग्रप, तेज, वायु नाम के चारों महाभूतों से सम्बन्धित । चातुम्महाराजिक, ति०, निम्नतम देव-लोक में रहने वाले चातुमंहाराजिक देवताग्रों से सम्वन्धित । चातुरिय, नपुं०, चतुराई। चाप, पु॰, धनुष। चापल्ल, नपुं०, चपलता। चामर, नपुं०, चंवरी। चामिकर, नपुं ०, स्वर्ण। चार, पु० चलन। चारक, वि०, चलाने वाला; पु०, क़ैद-चारण, नपुं०, चलाया जाना, व्यवस्था। चारिका, स्त्री०, यात्रा। चारित्त, नपुं०, ग्रादत, ग्राचरण, ग्रभ्यास । चारु, वि०, सुन्दर, ग्राकषंक। चारु-दस्सन, वि०, सुन्दर। चारेति, त्रिया, चलाता है, (इन्द्रियों को) दौड़ाता है। चाल, पु॰, ग्राघात। • चालेति, क्रिया, चलाता है। चावना, स्त्री०, गिरावट, हटाना । चावेति, किया, गिराता है। चि (कोचि), ग्रव्यय, कोई।

चिक्खल्ल, नपुं॰, कीचड़, दलदल। चिङ गुलायति, किया, ग्रपने गिदं घमता है। चिटचिटायति, किया, चिट-चिट करता है। चिक्त्वा, स्त्री॰, इमली वृक्ष । चिण्ण, कुदन्ता, ग्रम्यस्त । चिण्ह, नपुं०, चिल्ल, निशान। चित, कृदन्त, एकत्रित। चितक, पू॰, चिता। चिति. स्त्री०, ढेर। चित्त-सम्भत जातक, चित्त तथा सम्भूत दोनों चण्डाल-माइयों के जाति-ग्रमि-मानियों द्वारा पीटे जाने की कथा (88=) 1 चित्त, १. नपं०, चित्त, मन, विचार, २. नपुं०, चित्र, तस्वीर, ३. पु०, चैत्र मास, ४. वि०, नानाविध, सुन्दर। चित्तक्खेप, पू०, दित्त का विक्षेप। चित्तपस्सद्धि, स्त्री०, चित्त की शान्ति। चित्त-मूद्ता, स्त्री०, वित्त की कोमलता। चित्त-समय, पु॰, चित्त की एकाग्रता। चित्तानुपस्सना, स्त्री०, चित्तानुपश्यना । चित्ताभोग, प्०, विचार। चित्तजुकता, स्त्री०, चित्त का सीधा-चित्तुत्रास पु०, चित्त का त्रास, मय। चित्तुप्पाद, पु॰, चित्त की उत्पत्ति। चित्तकत, वि०, सजा हुग्रा, चित्रकृत। चित्तकथिक, वि०, श्रेष्ठ वक्ता। चित्त-कम्म, नपं०, चित्रकला। चित्त-कार, पु०, चित्रकार। चित्ततर, वि०, विचित्र-तर।

चित्तागार, नपुंठ, चित्रागार।

चित्तक, नपुं०, तिलक; पु०, एक प्रकार का मृग। चित्तता, स्त्री०,विचित्रता, चित्त-माव। चित्तीकार, पू०, ग्रादर, सत्कार। चिनाति, किया, ढेर लगाता है, संग्रह करता है। चिन्तक, वि०, सोचने वाला, विचारक। चिन्ता, स्त्री॰, चिन्ता, विचार। चिन्तामणि, प्०, इच्छापूर्ति करने वाली मणि । चिन्तामय, वि०, विचारयुक्त । चिन्तित, कृदन्त, विचार किया हुआ। ग्राविष्कृत । चिन्ती, (समास में) सोचता हम्रा। चिन्तेतब्ब, कदन्त, विचारणीय। चिन्तेति, किया, सोचता है। चिन्तमान, कृदन्त, सोचता हमा। चिन्तेय्य, वि०, विचारणीय। चिमिलिका, स्त्री॰, तिकये का खोल। चिर. वि०, बहत देर तक रहने वाला। चिरकाल, वि०, दीर्घकाल। चिरद्वितिक, वि०, चिर स्थायी। चिरतर, वि०, ग्रीर भी ग्रधिक देर। चिरनिवासी, वि॰, देर से रहने वाला। चिरपब्बजित, वि०, देर से प्रव्रजित। चिरप्पवासी, वि०, चिरकाल से प्रवास पर गया हरा। चिरत्तं, वि०, । रकाल का माव। चिरत्ताय, वि०, चिरकाल के लिए। चिरं. कि॰-वि॰, चिरकाल तक। चिरस्सं, कि०-वि०, धति विलम्ब, ग्रन्त में। चिरातीत, वि॰, चिरभूत (काल)। विराय, कि०-वि०, चिरकाल के

लिए। चिरायति, किया, देर करता है। क्रि॰-वि॰, बहुत समय बाद । चीन-पिट्ठ, नपुं०, लाल सीसा। चीन-रट्ठ, नपुं०, चीन राष्ट्र। चीर, नपुं०, छाल, छाल का कपड़ा। चोरक, देखिये चीर। चीरी, स्त्री०, भींगुर। चीवर, नपुं०, बौद्ध मिक्षु का काषाय-वस्त्र । चीवर-कण्ण, नपुं०, चीवर का कोना। चीवर-कम्म, नपुं०, चीवर का बनाना। चीवर-कार, पु०, चीवर बनाने वाला। चीवऱ-दान, नपुं०,चीवर ग्रथवा चीवरों का देना। चीवर-दुस्स, नपुं०, चीवर बनाने के लिए वस्त्र । चोवर-रज्जु, स्त्री०, चीवर टांगने की रस्सी। चीवर-वंस, पु०, चीवर टांगने के लिए वांस। चुण्ण, नपुं०, चूणं। चुण्ण-विचुण्ण, वि०, चूणं-विचूणं । चुण्णक, नपुं ०, सुगन्धित चूणं । चुण्णक-जात, वि०, चूणंकृत । चुण्णक-चालनी, स्त्री०, चूर्ण-छलनी। चुण्णित, कुदन्त, चूणं किया हुमा। चुण्णेति, किया, चूणं कर डालता है। चत, कृदन्त, गिरा। चृति, स्त्री॰, च्युत होना, भदृश्य हो बुदित, कृदन्त, दोवारोपित। चुदितक, पु॰, दोषारोपित।

चुद्दस, वि०, चौदह। चुन्द, सुनार या लोहार। पावा का निवासी। कुसीनारा के रास्ते में पावा पहुँचने पर मगवान् बुद्ध चुन्द कम्मार-पुत्त के ही प्राम्नवन में ठहरे थे। उसी के यहाँ का मोजन मंगवान् का ग्रन्तिम मोजन सिद्ध हमा। चुन्दकार, पु॰, खरादने वाला। चन्दभण्ड, चुन्द (सुनार) का सामान । चुक, नप्०, ठोड़ी। चुम्बटक, नपुं०, गेण्डुरी। चुम्बति, किया, चूमता है। चुल्ल, वि०, छोटा। चुल्लन्तेवासिक, पु०, छोटा शिष्य। चुल्ल-पितु, पु०, चाचा। चुल्ल-उपट्ठाक, पु०, लघु-सेवक । चुल्लकसेट्ठ जातक, गरी चुहिया से आरम्भ करके, व्योपार द्वारा धनी हो जाने की कथा (४)। चुल्लकालिङ्ग जातक, दन्तपुर नरेश कालिङ्ग की युद्ध-लिप्सा (३०१)। चुल्लकुणाल जातक, देखो कुणाल जातक। चुल्लधनुग्गह जातक, तक्षशिला के ब्राचायं ने अपने धनुर्शारी शिष्य से प्रपनी बिटिया की शादी की (३७४)। चुल्लघम्मपाल जातक, रानी राजा का सत्कार करने के निमित्त खड़ी न हो सकी। राजा ने पुत्र के हाथ-पाँव कटवा दिये (३५०)। चुल्लनन्दिय जातक, ब्राह्मण ने बूढ़ी बंदरी की हत्या की (२२२)।

तपस्वी-पुत्र जातक, चल्लनारद तरुणी पर ग्रासक्त हम्रा (४७७)। चुल्लपद्म जातक, राजा ने ग्रपने समी बेटों को देश-निकाला दिया 1 (\$39) चुल्लवलोभन जातक, राजकुमार को स्त्रियों से घुणा थी। शनै: शनै: एक नतंकी उसे लुभाने में समर्थ हुई (२६३) 1 चुल्लवोधि जातक, माता-पिता के निधन के बाद पति-पत्नी तपस्वी वन गये (४४३)। चुल्लमुतसोम जातक, सोम-रस पेय करने वाले राजकुमार की सोलह हजार रानियों की कथा (५२५)। चल्लहंस जातक, नब्बे हजार सुनहरी वत्तालों के राजा की कथा (५३३)। चुल्ली, स्त्री०, चूल्हा। चुक, नपुं०, स्तन का ग्रगला माग। चलजनक जातक, देखो महाजनक जातक। चल-वग्ग, विनय-पिटक के दोनों खन्धकों में से एक। चूळा, स्त्री०, सिर के बाल, जूड़ा। चूळामणि, पु०, चूड़े या जूड़े में पहनी जाने वाली मणि। चूळिका, स्त्री०, बालों का गुच्छ। चे. ग्रव्यय, यदि। चेट, पू॰, सेवक, बालक। चेटक, पु०, नौकर, गुलाम। चेटिका, स्त्री०, सेविका, बालिका। चेटी, स्त्री०, सेविका, वालिका। चेत, पू॰ तथा नपुं॰, चित्त ।

चेतक, पू०, वन्य जन्तु, बन्धन । चेतना, स्त्री०, इरादा । चेतयति, क्रिया, विचार करता है। चेतस. वि॰, मन (पाप-चेतस = पापी मन)। वि०, चैतसिक, चित्त-चेतिसक, सम्बन्धी । चेतापेति, किया, ग्रदली-बदली करता है। चेतिय, नप्ं , चैत्य, धात्-गर्म । चेतियङ्गण, चैत्य का ग्रांगन। चेतिय-गढभ, चैत्य का गर्भ। चेतिय-पद्यत, चैत्य-पर्वत । चेतिय जातक, चेति-नरेश, ग्रपचर तथा विश्व के प्रथम मिथ्यावादी की कथा (४२२)। चेतेति, देखो चेतयति । चेतोखिल, नपुं०, चित्त-हानि । चेतोपणिधि, स्त्री०, निश्चय। चेतोपरिञ्ञाण, नप्ं, दूसरों के विचारों को जान लेना। चेतोपसाद, पू॰, चित्त की प्रसन्नता। चेतोविमृत्ति, स्त्री॰, चित्त विमुक्ति! चेतोसमथ, पु॰, चित्त की शान्ति। चेल, नपुं०, वस्त्र। चेल-वितान, नपुं ०, चँदवा। चेलुक्खेप, पू॰, वस्त्रों का उछालना । चोच, नपं०, केला (-फल)। चोच-पान, नपुं०, केले का पेय। चोदक, पु०, दोषारोपक। चोदना, स्त्री०, दोवारोपण। चोबित, कृदन्त, दोषारोपित।

चोदेति, किया, दोषारोपण की प्रेरणा करता है। चोपन, नपुं०, चलन। चोर, पु०, चोर, डाकू। चोर-घातक, पु०, जल्लाद। चोर-उपद्दव, पु०, डाकु भों के द्वारा किया जाने वाला ग्राकमण। चोरिका, स्त्री ॰, चोरी । चोरी, स्त्री ॰, चोरिणी, चोट्टी । चोळ, पु॰, वस्त्र । चोळ-रट्ठ, नपुं॰, चोळ राष्ट्र । चोळक, नपुं॰, चीथड़ा । चोळिय, वि॰, चोळ देशका ।

छ

छ, वि०, छह। छक्लत्ं, कि०-वि० छह वार। छचत्तालीसति, स्त्री ०, छियालीस । छद्वारिक, वि०, छह इन्द्रियों से सम्बन्धित । छनवृति, स्त्री०, छियानवे । छपञ्जास, स्त्री०, छप्पन । छन्बिग्य, वि०, षड्वर्गीय मिक्षु । छन्त्रण, वि०, छह वर्णों का । छन्त्रसिक, वि०, छह वापिक। छिबिध, वि०, छह प्रकार का। छब्बीसति, स्त्री०, छन्बीस । छसद्ठि, स्त्री०, छियासठ । छसत्तित, स्त्री०, छिहत्तर। छक, नपुं०, विष्ठा। छकन, नपुं०, ग्रश्वादि की लीद। छकल, पु०, वकरा। छक्क, नपुं०, छह-छह का वण्डल । छट्ठ, वि०, छठा। छट्ठी, स्त्री०, पष्ठी विभक्ति। छडडक, वि०, फेंकने वाला। छड्डन, नप्ं, फॅकना। छडडनीय, वि०, फेंकने योग्य। छडडापेति, किया, फिकवाता है।

छड्डित, कृदन्त, फिकवाया गया, वमन किया गया। छड्डेति, किया, फेंकता है। छण, पु०, त्योहार, उत्सव। छत्त, नपुं ०, छाता ; पु०, छात्र, विद्यार्थी । छत्तकार, पु॰, छाता बनाने वाला। छत्त-गाहक, पु॰, छाता ले चलने वाला। छत्त-नाळि, स्त्री०, छाते का वेत । छत्त-दण्ड, नपुं०, छाते का बेंत । छत्त-पाणि, पु०, छाता ले जाने वाला। छत्त-मङ्गल, नपुं०, छत्र चढ़ाने का उत्सव । छत्त-उस्सापन, नपुं०, राजकीय छत्र का उठाना। छत्तिसति, स्त्री॰, छत्तीस । छद, पु०, छदन, ढांकने का वस्त्र। छदन, नपुं०, छत। छद्दन्त, वि ०, छह दाँतों वाला । छद्दन्त जातक, हस्ति-राज छद्दन्त की कथा (५१४)। छहिका, स्त्री०, वमन। छदा, कि॰-वि॰, छह प्रकार से। छघा, कि०-वि०, छह प्रकार से।

छन्द, पु०, इच्छा, कामना । छन्द-राग, पू०, उत्तेजक कामना। छन्दक, नपुं०, मत, चन्दा। छन्दागति, स्त्री॰, पक्षपात । छन्न, कृदन्त, हका गया; वि०, ठीक, योग्य । छन्न, गौतम बुद्ध का सारयी, (बाद में) साथी। छप्पञ्च, छह या पांच । छप्पद, पू०, शहद की मक्ली। छमा, स्त्री०, क्षमा (पृथ्वी), जमीन। छम्भति, किया, भय से जड़ीमृत हो जाता है। छरस, पु॰, तिक्त, मधुर ग्रादि छह छव, पू०, शव, लाश। छव-कृटिका, स्त्री०, दमशान, । छवट्ठिक, नपुं०, दाव की हड्डी। छव-दाहक, पु०, लाश जलाने वाला। छवालात, नपुं०, चिता की ग्राग। छवक जातक, राजा ने घपने गले का हार चाण्डाल को पहनाया (३०६)। छवि, स्त्री०, चमडी। छवि-कल्याण, नप्०, चमड़ी का सीन्दर्य । छवि-यण्ण, पु०, चमड़ी का रंग। छळाडू, वि०, छह मङ्गों से युक्त । छळभिज्ञा, छह प्रकार के दिव्य-ज्ञान (-ग्रमिज्ञा)। छळंस, वि०, षट्कोण। छा, स्त्री ०, भूख-प्यास । छात, वि०, भूखा। छातक, नपं०, भूख, प्रकाल। छादन, नपं०, ग्रावरण, ग्राच्छादन,

शरीर दकने के वस्त्र । छादना, स्त्री० ग्रावरण, ग्राच्छादन, शरीर ढकने के वस्त्र। छादनीय, कृदन्त, दकने योग्य। छादेति, किया, ढकता है। छाप, पु०, पशु-शावक, पशुग्रों का छोना । छापक, पु०, पशु-शावक, पशुम्रों का छोना । छाया, स्त्री०, छाया, साया । छायामान, नपं,० छाया को नापना। छायारूप, नपं ०, छाया-चित्र, फोटो । छारिका, स्त्री०, राख। छाह, नप्ं, छह दिन । छि, निपात, निश्चयार्थ । छिग्गल, नपुं, छिद्र । छिज्जति, क्रिया, कटता है। छिद, वि०, ट्टता हुआ विन्धन-छिद, बन्धनों को छिन्त-मिन्त वाला]। छिद्द, नपुं० छिद्र, सूराख । छिद्दक, वि०, छिद्र वाला। छिद्दगवेसी, वि०, दूसरों के दोष खोजने वाला। छिद्वाविच्छद्दक, वि०, छिद्रों से मरा हम्रा। छिद्दित, कृदन्त, छेदा हुया । छिन्दति, किया, काटता है। छिन्दिय, वि०, जो काटा जा सके, जो ट्ट सके। छिन्न, कृदन्त, टूटा हुग्रा, नप्ट हुग्रा। छिन्नास, वि०, निराश। छिन्ननास, वि०, जिसकी नाक कटी हो।

छिन्न-मत्त, वि०, जिसे ग्राहार न मिलता हो। छिन्न-वत्य, वि०, जिसके वस्त्र फट गये हों। छिन्न-हत्य, वि० जिसके हाथ काट लिये गये हों। छिन्न-इरियापय, वि० जो चल-फिर न सकता हो। छुढ, कृदन्त, क्षुब्ध, उत्तेजित, प्रक्षिप्त, फेंका गया। छुपति, किया, स्पर्श करंता है। छुपत, नपुं०, स्पर्श। छुपतका [छूरिकामी], स्त्री०, छुरी, चाकु।

खेक, वि०, दक्ष, होशियार ।
खेकता, स्त्री०, दक्षता, होशियारी ।
खेकज, वि०, काट डालने योग्य; नपुं०,
ग्रंग-छेद द्वारा दिया जाने वाला दण्ड ।
खेतब्ब, कृदन्त, काट डालने योग्य ।
खेतु, पु०, काटने वाला ।
खेत्वा, पूर्वं० किया, काटकर ।
खेदवान, पूर्वं० किया, काटकर ।
खेदक, पु०, काट ।
खेदक, पु०, काट ।
खेदक, पु०, काट ।
खेदापन, नपुं०, कटवाना ।
खेदापन, नपुं०, कटवाना ।
खेदापेति, किया, कटवाता है ।
खेप्पा, स्त्री०, पुंछ, दुम ।

ज

जगती, स्त्री०, (जगति, समास पदों में ही), पृथ्वी, दुनिया-। जगतिप्पदेस, पुरु, पृथ्वी-प्रदेश। जगति-छह, पु०, वृक्ष। जग्गति, ऋिया, देख-माल करता है, योपण करता है, जागता रहता है। जिंगत्वा, पूर्वं किया, जागकर। जग्गन, नपुं०, जागरण। जग्घति, क्रिया, मजाक बनाता है। जग्धना, स्त्री०, मजाक। जिंघत, नपुं०, मजाक। जङ्गम, वि०, चल (सम्पत्ति)। जङ्गल, नपुं०, धारण्य, रेगिस्तान। जङ्गमाग, पु०, पगडण्डी । जङ्गपेसनिक, नप्०, संदेश-वाहन;पु०, संदेश-वाहक। जङ्गा, स्त्री० जांघ।

जङ्गा-बल, नपुं०, जाँघ की शक्ति। जङ्घा-विहार, पु०, सैर। जङ्गेय्य, नपुं०, जाँघ-भर ढकने का वस्य । जच्च, वि०, जनम-सम्बन्धी। जच्चन्ध, वि०, जन्म से ग्रन्धा। जच्चा, जन्म से। जज्जर, वि०, जरा से जर्जरित। जङ्जा, वि०, पवित्र, श्रेष्ठ, ग्राकर्षक, कुलीन । जट, नपुं॰, मूठ, मुठिया। जटा, स्त्री०, जटा (-केश), पेड़ों की उलभी डालियाँ, (ग्रालंकारिक ग्रर्थ में) कामनाग्रों जटाघर, पु॰, जटाधारी। जटित, कृदन्त, उलभा हुमा।

जटी, पु०, जटाघारी तपस्वी। जटिल, पु॰, जटाघारी तपस्वी। जठर, पु॰ तथा नपुं॰, पेट। जठरिंग, पु०, जठराग्नि, भूख। जण्णु, पु०, घुटना । जण्णुतग्ध, पु०, घुटने तक गहरा। जण्हु, नवुं व घुटना । जण्हुमत्त, वि०, घुटने तक । जतु, नपुं०, लाख। जतुमट्ठक, नपुं०, लाख-बन्द। जतुका, स्त्री०, चिमगादड़। जत्तु, नपुं०, कंघा, कन्धे की हड्डी। जन, पु०, ग्रादमी, लोग। जन-काय, पु०, जनता। जनपद, पु०, प्रान्त, देश, देहात, काशी-कोसल ग्रादि सोलह जनपद,। जनपद-कल्याणी, स्त्री , देश की सुन्दरतम स्त्री। जनपद-चारिका, स्त्री अ, देश-भ्रमण। जनसम्मद्द, पु०, लोगों की भीड़। जनक, पु॰, उत्पन्न करने वाला, पिता; वि०, उत्पन्न करता हुमा। जनन, नपुं०, उत्पत्ति । जननी, स्त्री०, मां। जनसंघ जातक, जनसंघ की दान-शीलता की कथा (४६८)। जनाधिप, पु॰, राजा। जनालय, पु०, मण्डप। जनिका, स्त्री०, माँ। जनित, कृदन्त, उत्पन्न हुग्रा। जनिन्द, पु०, राजा। जनेति, क्रिया, उत्पन्न करता है। जनेन्त, कृदन्त, उत्पन्न करता हुमा ।

जनेत्वा, पूर्वं शिया, उत्पन्न कर। जनेतु, पु॰, उत्पन्न करने वाला। जनेत्ती, स्त्री०, मां। जन्ताघर, नपुं०, वाष्प-स्नान का घर। जन्तु, पु०, जीव। जप, पु॰, जपना। जपति, किया, जाप करता है। जपित, जप किया हुग्रा। जिपत्वा, जप करके। जपा, स्त्री॰, जवा, ग्रड़हुल। जप्पना, स्त्री०, लोभ, जल्पना। जप्पा, स्त्री॰, लोम, जल्पना। जम्बाली, स्त्री०, गंदा तालाव। जम्बोर, पु०, नीबू। जम्बु, स्त्री०, जामुन। लोमड़ी की जम्बुलादक जातक, खुशामद के चक्कर में कौवे ने लोमड़ी के लिए फल गिराये (838) जम्बुदीप, पु॰, जामुन का देश, चारों महाद्वीपों में से एक। जम्बु-सण्ड, जागुन का वगीचा। जम्बुक, पु०, गीदड़। जम्बुक जातक, गीदड़ ने हाथी पर ग्राक्रमण किया। हाथी ने उसे पैरों तले कुचल दिया (५३५)। जम्बोनद, नपुं०, सोने (स्वणं) का प्रकार। जम्भ, वि०, गँवार, निकृष्ट। जम्भति, क्रिया, ग्रॅंगड़ाई लेता है, जमाई लेता है। जम्भना, स्त्री०, जमाई लेना। जय, पु०, विजय। जयग्गाह, पु॰, विजय, पाँसे का अनु-

कुल पड़ना। जय-पान, नपुं०, विजय-पान। जय-सुमन, नप् ं०, विजय-सुमन। जयतिं, किया, जीतता है। कम्पिल्ल-नरेश जयद्दिस-जातक, पञ्चाल के पुत्रों को एक चुड़ैल दो बार खा गई (४१३)। जया, स्त्री०, पत्नी। जयम्पति, पु॰, पत्नी तथा पति । जर, पु०, ज्वर; वि०, बूढ़ा। जरमाव, पु०; बूढ़ा बैल। जरता, स्त्री०, बुढ़ापा। जरा, स्त्री०, बुढ़ापा। जरा-दुक्ल, नपुं०, बुढ़ापे का दुख । जरा-धम्म, वि०, हास-धर्म। जरा-भय, नपं०, बुढ़ापे का भय। जरदपान जातक, धन के मोह में ग्रधिक ग्रीर ग्रधिक खोटने वाले सार्थों ने प्राण गॅवाये (२५६) । जल, नपुं०, पानी। जल-गोचर, वि०, पानी में रहने वाला। जलचर, पु०, मछली। जलज, नपुं०, कमल। जलद, पु०, बादल। जलिष, पु०, समुद्र। जल-निरगम, पु०, जल का बहाव, नाली। जलनिधि, पु०, समुद्र। बलाघार, पु०, जल-संग्रह-स्थल। बलासय, पु०, भील, जलाशय। जलति, क्रिया, चमकता है, जलता जलन, नपुं०, चमक, जलन।

जलाबु, पु०, गर्माशय। जलाबुज, वि०, गर्म से उत्पन्न होने वाले। जल्का, स्त्री०, जोंक। जल्ल, नपुं०, गन्दगी, मैलापन। जळ, वि०, जड़, अचेतन। जव, पु॰, गति, शक्ति। जवित, क्रिया, दौड़ता है। जवन, नपुं०, दौड़। जवन-पञ्ज, वि०, क्षिप्र-प्रज्ञा । जवन-हंस जातक, हंस-राज तथा बनारस-नरेश की मंत्री की कहानी (808)1 जब-सकुण जातक, कठफोड़े ने शेर के मुँह में फँसी हुई हड्डी निकाली (305)1 जवनिका, स्त्री०, परदा। जवाधिक, पु०, शीघ्रगामी घोड़ा। जहति, ऋिया, छोड़ता है। जागर, वि०, जागने वाला। जागर जातक, वृक्ष-देवता ने तपस्वी से प्रश्न पूछा (४०४)। जागरति, जागता रहता है, पहरा देता है। जागरण, नपुं०, जागते रहना। जागरिय, नपुं०, जाग्रत। जागरियानुयोग, पु०, जागते रहना। जाणु, पु०, घुटना । जाणु-मण्डल, नपुं०, टखना। जाणु,-मत्त, वि०, घुटने तक । जात, कृदन्त, उत्पन्न, घटित; संग्रह, प्रकार। जात-दिवस, पु०, जन्म-दिन। जात-रूप, नप्ं॰, सोना ।

जात-वेद, पु०, ग्रग्नि। जातस्सर, पु॰ तथा नषुं०, एक प्राकृ-तिक भील। जातक, नपुं०, जनमकथा, सुत्तपिटक के खुदक निकाय का दसवी प्रन्थ, जिसमें वृद्ध के पूर्व-जन्मों की कथाग्रों का वणंन है। जातकट्ठकया, जातक की ग्रट्ठकथा। इसमें जातक के पद्य-भाग का सम्ब-निघत गद्य-विस्तार है। जातक-भाणक, प्०, जातक कथा सुनाने वाले। जातत्त, नपुं०, उत्पत्ति-माव। जाति, स्त्री॰, जन्म, पुनर्जन्म, जाति (वंश-परम्परा), (सिहल-) जाति । जाति-कोस, पु०, जावित्री का छिलका। जातिक्खय, पु०, पुनर्जन्म की संमा-वना का न रहना। जातिक्खेत, नपुं०, जन्म-स्थान। जातित्यद्ध, वि०, जन्माभिमानी। जाति-निरोध, पू॰, पूनर्जनम का निरोध। जाति-फल, नपु०, जावित्री। जाति-मन्तु, वि०, ग्रच्छी जाति का, गुणवान। जाति-वाद, पू०, जाति (-वंश पर-म्परा) के सम्बन्ध में विवाद। जाति-सम्पन्न, वि०, ग्रच्छी जाति का । जाति-सुमना, स्त्री०, चमेली। जातिस्सर, वि०, पूर्व जन्मों की स्मृति । जाति-हिंगुलुक, नपुं०, सेंदूर। जातिक, वि०, जातिगत, जाति-

सम्बन्धी। जातु, ग्रव्यय, निश्चय से। जानन, नपं०, जान, पहचान । जाननक, वि०, जानने वाला । जाननीय, वि०, जानने योग्य। जानपद, वि०, जनपद सम्बन्धी; प्०, गॅवार, देहाती। जानपदिक, वि०. जनपद-सम्बन्धी। जानाति, किया, जानता है। जानापेति, किया, जनवाता है। जानि, स्त्री०, हानि, परनी । जानि-पति, पू॰, पत्नी तथा पति । जामातु, पु॰, जँवाई। जायति, क्रिया, उत्पन्न होता है। जायत्तन, नपं०, पत्नीत्व। जायन, नपुं०, जन्म । जाया, स्त्री०, पत्नी। जाया-पति, पु॰, पत्नी तया पति । जार, पु॰, यार, उपपति । जारत्तन, नपुं॰, यारी, उपपतित्व । जारी, स्त्री०, छिनाल, उपपत्नी । जाल, नपुं०, (मछती पकड़ने का) जाल, उलभन। जाल-पूप, पु॰, पुग्रा। जालक, पु॰, छोटा जाल, कोंपल। जालिक्किक, नप्ं, जालरन्छ। जाला, स्त्री॰, ज्वाला। जालाकुल, वि०, ज्वालाग्रों से घरा। जालिक, पु०, जात का उपयोग करने वाला मछुमा। जालिका, स्त्री०, लोह-कवच, बाली का बना कवच। जालिनी, स्त्री॰, तृष्णा। जालेति, क्रिया, जलाता है।

जिगिसक, वि०, इच्छ्क । जिगिसति, किया, इच्छा करता है। जिगुच्छक, वि०, जिगुप्सा करने वाला, घुणा करने वाला। जिगूच्छति, क्रिया, घुणा करता है। जिगुच्छन, नपं०, घुणा। जिगुच्छना, स्त्री०, घृणा, ग्रहचि । जिगुच्छा, स्त्री०, घृणा, ग्रहचि । जिघच्छति, किया, भूखा होता है, स्ताना चाहता है। जिघच्छा, स्त्री०, भूख। जिञ्जूक, पू॰ जंगली धतुरा (?)। जिण्ण, कुदन्त, वूढ़ा । जिण्णवसन, नप्ं, पुराना वस्त्र । जित, कृदन्त, जीता हुमा, जीत लिया गया। जितत्त, नपुं०, जीत; वि०, ग्रात्म-विजयी। जिति, स्त्री०, जय, विजय। जिन, पु०, विजेता, जीतने वाला, बुद्ध । जिन-चक्क, नपुं०, बूद्ध-मत। जिन-पुत्त, पु०, वुद्ध-पुत्र। जिन-सासन, नपुं०, बुद्ध की शिक्षा। जिनाति, किया, जीतता है। जिम्ह, वि०, टेढ़ा, बेईमान। जिया, स्त्री०, धनुप की डोरी। जिव्हा, स्त्री०, जीम। जिव्हरग, नपुं०, जीम का सिरा। जिच्हायतन, नपुं०, रसेन्द्रिय, रसना । जिन्हाविञ्जाण, नपुं०, जिह्ना के द्वारा प्राप्त ज्ञान। जिब्हिन्द्रिय, नपुं०, जिह्ना । जीन, वि०, हीन।

जीमूत, पु०, बादल। जीयति, किया, जरा को प्राप्त होता है, बूढ़ा होता है, पुराना पड़ता है। जीरक, नपुं०, जीरा। जीरति, किया, जरा को प्राप्त होता है, घटता है, पुराना पड़ता है। जीरण, नपुं०, जीणंता। जीरापेति, किया, जरा को प्राप्त होने का कारण होता है, हजम कराता है। जीव, पु०, जीवन, ग्रात्मा, जीव। पु॰, जीवित हाथी के जीव-दन्त, दांत। जीवक, पु०, जीने वाला, (नाम) बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध वैद्य। जीवकम्बवन, राजगृह का वह ग्राम्र-वन, जो जीवक ने बुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को दान कर दिया था। जीवति, ऋया, जीता है। जीवन, नपुं०, जीना। जीविका, स्त्री०, जीवन-यात्रा का साधन (जीविकं कप्पेति, जीविका चलाता है)। जीवित, नपुं०, जीवन । जीवितक्खय, पु०, जीवन की हानि। जीवित-दान, नपुं०, जीवन का दान। जीवित-परिचोसान, नपुं०, जीवन का जीवित-मद, पु०, जीवन मद। जीवित-वृत्ति, स्त्री०, जीविका। जीवित-संखय पु०, जीवन का अन्त। जीवितासा, स्त्री, जीवनाशा। जीवितिन्द्रिय, नपुं०, जान, जीवन । जीवित-संसय, पू०, जीवन के लिए

खतरा। जीवी, पु०, जीने वाला। जुण्ह, वि०, चमकदार। जुण्ह-पक्ख, पु०, धुक्ल पक्ष । जुण्ह, जातक, राजकुमार जुण्ह ने मिक्षा-पात्र तोड़ने के बदले में राजा बनने पर ब्राह्मण को दान दिया (४५६)। जुण्हा, स्त्री॰, चांदनी, चांदनी रात। जुति, स्त्री०, दुति, चमक । जुतिक, वि०, चमकदार। जुतिघर, वि०, प्रकाशमान्। जुतिमन्तु, वि०, प्रकाशमान। जुहति, किया, ग्राहुति डालता है। जुहन, नपुं०, यज्ञ । जूत, नपुं ०, द्यूत, जुम्रा। जूत-कार, पु०, जुग्रारी। जे, नीच कुल की स्त्री को सम्बोधन करने के लिए ग्रव्यय-पद। जेगुच्छ, नि०, घृणित। जेगुच्छी पु०, घुणा करने वाला। जेट्ठ, वि०, ज्येष्ठ । जेट्ठतर, वि०, ज्येष्ठतर।

जेट्ठ-भगिनी, स्त्री ०, बड़ी बहिन । जेट्ठ-मातु, पु॰, बड़ा माई। जेट्ठ-मास, ज्येष्ठ महीना । जेट्ठापचायन, नपुं ०, वड़ों का सम्मान । जेतब्ब, कृदन्त, जीतने योग्य। जेतवन, श्रावस्ती का वह प्रसिद्ध उद्यान, जिसमें प्रनाथ पिण्डिक का जेतवनाराम बना या। जेति, किया जीतता है। जेत्तर, नगर-विशेष। जेतुमिच्छा, स्त्री०, जीतने की इच्छा। जेय्य, कृदन्त, जीतने योग्य। जोतक, वि०, द्योतक। जोतति, किया, चमकता है। जोतन, नपुं०, चमक । जोति, स्त्री॰, ज्योति, प्रकाश; नपुं॰, तारा; पु॰, ग्राग। जोति-पाषाण, पु०, चकमक पत्थर। जोतिसत्य, नपुं०, ज्योतिष शास्त्र । जोतेति, किया, प्रकाशित करता है। ज्या, स्त्री॰, धनुष की डोरी।

和

स्रुक्तरी, स्त्री॰, संस्तट ।
स्रुत्वा, पूर्वं॰ किया, जलाकर ।
स्रुत्विका, स्त्री॰, सिंगुर ।
स्रुत्त, पु॰, मछली ।
स्रुत्ता, स्त्री॰, नागबाला ।
स्राटल, पु॰, वृक्ष-विशेष ।
स्रान, नपुं॰, घ्यान ।
स्रान-मुक्कु, नपुं॰, घ्यान का एक

ग्रञ्ज ।

भान-रत, वि०, घ्यान-रत ।

भान-विमोक्स, पु०, घ्यान द्वारा
विमुक्ति ।

भानसोधक जातक, "न-संज्ञा, नग्रसंज्ञा" की व्याख्या (१३४) ।

भानिक, वि०, जिसने घ्यान प्राप्त
किया है, घ्यान-सम्बन्धी ।

कापक, पु॰, माग लगाने वाला। कापन, नपुं॰, माग लगाना। कापित, कृदन्त, जलाया गया। कापियति; किया, जलाया जाता है। कापेति, किया, जलाता है। कापेत्था, पूवं॰ किया, जलाकर। काबुक, पु॰, पिचुल। काम, वि॰, जला हुमा। भामक, वि०, जला हुम्रा।
भायक, पु०, घ्यानी।
भायति किया, घ्यान लगाता है, ग्राग
जलाता है।
भायन, नपुं०, घ्यान लगाना, ग्राग
जलाना।
भायी, पु० घ्यान लगाने वाला।

ञा

ञत्त, नपुं ०, जात । ब्रत्ति, स्त्री॰, घोषणा । अ:वा, पूर्वं किया, जानकर। ञाण, नपुं०, ज्ञान, बुद्धि। आण-करण, वि०, ज्ञान देने वाला। आण-चक्खु, नपुं०, ज्ञान की ग्रांख। बाण-जाल, नपुं०, ज्ञान का जाल। बाण-दस्सण, नप्०, जान-दर्शन, सम्पूर्ण ज्ञान । ब्राण-विष्पयुत्त, वि०, ज्ञान-शून्य। बाण-सम्पयुत्त, वि०, ज्ञान-युक्त। ञाणी, वि॰, ज्ञानी। बात, कृन्दत, जात, प्रसिद्ध, साक्षात्-कृत। बातक, पु॰, रिश्तेदार। ब्राति, पु॰, रिश्तेदार। न्द्रदेशमं की व्यात-कथा, स्त्री चर्चा। बाति-धम्म, पु०, रिश्तेदारों का

कलंब्य। जाति-परिवट्ट, नपुं०, रिश्तेदारों की मण्डली। ञाति-पेत, पु॰, मृत रिश्तेदार। ञाति-व्यसन, नपुं०, रिश्तेदारों का दुख। ञाति-सङ्गह, पु०, रिश्तेदारों के साथ सद्व्यवहार। जाति-सालोहित, पु०, सम्बन्धी तथा रक्त-सम्बन्धी। जापन, नपुं०, घोपणा। जायेति, किया, प्रकट करता है, घोषित करता है। आय, पु॰, व्यवस्था, पद्धति, उचित दंग। जाय-पटिपन्न, वि०, सुपथगामी। जेया, वि०, जान का विषय। जेय्य-घम्म, पुर, जिसे मीखना य। जानना योग्य हो।

2

टब्क, पु॰, पत्यर काटने की छैनी। टीका, स्त्री॰, ब्याख्या। टीकाचरिय, पु॰, मनुटीकाकार।

ठत्वा, पूर्वं किया, सड़े होक्र ।
ठपन, नपुं क, स्थापित करना ।
ठपापेति, किया, स्थापित कराता है ।
ठपित, कृदन्त, स्थापित ।
ठपेति, किया, रखता है, निश्चित करता है ।
ठपेत्वा, पूर्वं किया, रखकर, एक ग्रोर करके ।
ठान, नपुं क, स्थान, कारण ।
ठानसो, किठ-विठ, सकारण ।
ठानीय, नपुं क, स्थानीय, स्थान देने योग्य ।

ठापक, वि०, खड़ा रहने वाला, स्यापित करने वाला या रखने वाला । ठायो, वि०, स्थाने । ठित, कृदन्त, स्थित । ठितक, वि०, खड़ा होने वाला । ठितट्ठान, नपुं०, जहाँ ग्रादमी खड़ा था । ठितत्त, नपुं०, स्थितत्व; वि०, संयत । ठिति, स्त्री०, स्थिति । ठितिक, वि०, निर्मर, स्थायी । ठिति-भागीय, वि०, स्थायित्व से सम्बन्नियत

3

डसित, किया, डंक मारता है। डसन, नपुं०, डंक मारना। डय्हति, किया, जलाया जाता है। डहित, किया, जलाता है। डस, प्०, डांस। डाक, पु॰ तथा नपुं॰, लाने योग्य पौधे। डाह, पु॰, चमक, गरमी, जलन। डीयन, नपुं॰, उड़ना। डेति, किया, उड़ता है।

त

त, (सर्वनाम) सो, वह, सा, वह (स्त्री), तं, वह (वस्तु)। तक्क, पु॰, दिचार, तकं। तक्क, नपुं॰, तक, मट्ठा, पञ्च गोरस में से एक। तक्क जातक, तपस्वी ने गंगानदी में से डूबती हुई सेठ-कन्या को उबारा (६३)।

तक्कन, नपुं॰, तकं करना, विचार करना। तक्कर, वि॰, कर्ता; पु॰, तस्कर, चोर। तक्कर जातक, देखो कक्कर जातक। तक्कळ जातक, विसट्टक ने प्रपनी मार्या के कहने से प्रपने बूढ़े पिता को मारकर गाड़ देने की तैवारी

की। वसिट्ठक के लड़के ने वाप की प्रांत सोली (४४६)। तक्किसला, स्त्री०, गन्धार की राज-घानी। यहीं प्रसिद्ध तक्षशिला विश्व-विद्यालय था। तक्किसिला जातक, सम्मवतः तेलपत्त जातक का ही एक भीर नाम। तककारी, स्त्री०, वैजयन्ती। तक्काल, नपुं०, उस समय। तककारिय जातक, ब्राह्मण ने अपनी चुप न रह सकने की सामध्यं के कारण ग्रपनी जान को खतरे में डाला (४८१)। तिकक, पु०, ताकिक। तक्की, पु०, ताकिक। तक्केति, किया, सोचता है, तकं करता है। तक्कोल, नपुं०, एक प्रकार की स्गन्धि। तगर, नपुं०, सुगन्धित द्रव्य। तग्गरक, वि०, उधर भुका हुया। तग्घ, भ्रव्यय, यथायं रूप से। तच, पू॰, चमड़ी। तच-गन्ध, पु०, छाल की सुगन्ध। तच-पञ्चक, नपुं०, शरीर के केश, लोम, नख, दन्त तथा त्वचा, पांच प्रवयव । तच-परियोसान, बि:, 'त्वचा' तक सीमित। तचसार जातक, गांव के वैद्य ने लड़कों द्वारा सांप पकड़वाना चाहा। एक बुद्धिमान लड़के ने सौप को मार कर प्रपनी जान बचाई (३६८)। तबुब्भव, वि०, छात-निमित।

तच्छ, वि०, सत्य, यथार्थ; नपुं०, सत्य। तच्छक, पु०, बढ़ई, लकड़ी छीलने वाला। तच्छति, क्रिया, छीलता है। तच्छन, नपुं०, छीलना । तच्छनी, स्त्री०, बसूला। तच्छसूकर जातक, सूग्रर ने अपने साथियों को संगठित कर सुअर को मार डाला (२८६)। तच्छेति, क्रिया, छीलता है। तज्ज, वि०, उससे उत्पन्न। तज्जना, स्त्री०, तजंना, भय का कारण। तज्जनीय, तजंना करने के योग्य। तज्जनी, स्त्री०, तजंनी उँगली। तज्जारी, स्त्री०, छत्तीस ग्रणु । तज्जेति, किया, तर्जना करता है, डराता है, घमकाता है। तट, नपुं०, (नदी का) तट; पु०, पवंत या चट्टान की खड़ी दीवार, कगार। तटतटायति, किया, तट-तट शब्द करता है। तट्टक, नपुं०, थाली, तश्तरी, ताट (मराठी)। तिट्टका, स्त्री०, एक छोटी चटाई। तण्डुल, नपुं०, चावल के दाने। तण्डुलनालि जातक, राजा के मूल्य-निश्चय करने वाले ने पांच सी घोड़ों की कीमत चावल की नली बताई (५)। तण्डुल-मुद्ठि, पु॰, चावल की मुट्ठी। तण्हा, स्त्री०, तृष्णा।

तण्हाक्खय, पू०, तृष्णा का क्षय । तण्हा-जाल, नपुं०, तृष्णा का जाल। तण्हा-दुतिय, वि०, तृष्णा सहित । तण्हा-पच्चय, वि०, तृष्णां के कारण। तण्हा-मूलक, तृष्णा जिनके मूल में हो। तण्हा-विचारित, कृदन्त, तृष्णा का विचार। तण्हा-संखय, पु०, तृष्णा का मूलो-च्छेद । तण्हा-संयोजन, नवुं०, तृष्णा बन्धन। तण्हा-सल्ल, नपुं०, तृष्णा-शल्य। तण्हीयति, ऋया, तृष्णा करता है। तत, कृदन्त, फैला हुग्रा। ततिय, वि०, तृतीय। ततिया, स्त्री०, तृतीया। त्ततियं, कि०-वि०, तीसरी बार। ततो, ग्रव्यय, वहाँ से, उससे, उस लिये। ततो निदानं, कि०-वि०, उस कारण ततो पट्ठाय, ग्रव्यय, उस समय से आरम्भ करके। ततो परं, ग्रव्यय, उसके बाद। तत्त, नपुं०, तत्त्व, वास्तविकता; कृदन्त, तपा हुआ। तत्ततो, ग्रव्यय, वास्तविक रूप से। तत्तक, वि०, उतने तक, उतने माप तत्य (तत्र भी), क्रि०-वि०, वहाँ, उस स्थान पर। तय, वि०, तथ्य; नपुं०, सत्य। तयता, स्त्री॰, सत्यता।

तयत्त, नपुं०, सत्यता । तयवचन, वि०, सत्य वचन। तया, कि०-वि०, वैसे। तयाकारी, वि०, वैसा करने वाला। तथागत, वि०, मगवान् बुद्ध का स्वयं ग्रपने लिए व्यवहृत वचन, जैसे द्याया ग्रयवा जैसे गया। तथागत-बल, नपुं०, तथागत की दस विशिष्ट शक्तिया । तथा-भाव, पु॰, वैसा-पन। तथा-रूप, वि०, इस प्रकार का, इस रूप का। तथेव, कि०-वि०, वैसे ही। तदग्गे, कि०-वि०, इससे आगे। तदङ्ग, वि०, वह ग्रङ्ग, वह प्रकरण। तदत्थं, ग्रव्यय, उस उद्देश्य लिए। तदनुष्टप, वि०, उसके ग्रनुरूप। तदह, तदह, नपुं०, उसी दिन। तदहुपोसथे, उसी उपोसथ-व्रत दिन। तदा, भ्रव्यय, उस समय, तव। तबुपिय, वि०, उसके अनुह्रप, योग्य। तदुपेत, वि०, उसके साथ। तनय, (तनुज भी), पु०, पुत्र, सन्तान। तनया, (तनुजा भी), स्त्री०, लड़की। तनु, वि०, पतला, दुबला; स्त्री० तथा नपुं॰, शरीर। तनुकत, वि०, दुवलाया हुम्रा । तनुकरण, नपुं०, दुवलाना । तनुतर, वि०, दुवंलतर। तनुत्त, नपुं०, पतले होने का भाव। तनुता, स्त्री॰, पतले होने का माव।

तनु-भाव, पु॰, पतला होने का माव। तनु-रूह, नपुं॰, शरीर पर उगे बाल। तनोति, किया, फैलाता है। तन्त, नपुं०, घागा। तन्त-वाय, पु०, जुलाहा । तन्ताकुलकजात, वि०, धागे की गेंद की तरह उलका हुमा। तन्ति, स्त्री०, पंक्ति, परम्परा, पवित्र-ग्रन्थ। तन्ति-घर, वि०, परम्परा-संरक्षक । तन्तिस्सर, पु०, सितार का संगीत। तन्तु, पु०, धागा। तन्दित, वि०, थका हुम्रा, धकियाशील। तन्दी, वि०, घालसी, प्रमादी। तप, पु॰ तथा नपुं॰, तपस्या। तपो-कम्म, नपुं ०, तपस्या की किया। तपो-धन, वि०, तपस्या ही जिसका घन है। तपोवन, नपुं०, तपस्या का स्थान। तपति, त्रिया, चमकता है। तपन, नपुं०, चमक। तपनीय, वि०, मनुताप का कारण; नपुं०, सोना । तपस्सी, वि॰, तपस्वी; पु॰, तपस्वी साधु। तपस्तिनी, स्त्री०, उपस्विनी। तपस्सु, उत्कल (उक्कल) का एक व्योपारी। वह तथा उसका साथी भत्लुक, ये दोनों ही केवल द्वि-शरणागमन से उपासकत्व को प्राप्त हुए थे। तपोदा, राजगृह के बाहर वैभार पवंत के नीचे एक बड़ा जलाशय।

तप्पण, नप्ं०, संतोष, । तप्पति, किया, जलता है, चमकता है, ग्रनुतप्त होता है। तप्पर, वि०, तत्पर, समर्पित । तिष्पत, कृदन्त, संतिष्त, संतुष्ट । तिष्पय, वि०, संतुष्ट होने योग्य; पूर्वं० त्रिया, संतुष्ट होकर। तप्पेति, किया, संतुष्ट होता है। तप्पेतु, पु॰, संतुष्ट होने वाला। तब्बहुल, वि०, ग्रधिकतया वही। तिबयक्ख, वि०, उसके विपक्ष में। तिब्बपरीत, वि०, उसके विपरीत। तब्बिसय, वि०, वही विषय। तब्भाव, पु०, वही माव। तम, पु॰ तथा नपुं॰, अन्धकार, ग्रज्ञान । तमो-लन्ध, पु०, ग्रन्धकार-समूह। तमो-नद्ध, वि०, ग्रन्धकाराच्छन्न। तमोनुद, वि०, ग्रन्धकार को दूर करने तमो-परायण, वि०, ग्रन्धकार में जाने वाला । तमाल, पु॰, वृक्ष-विशेष। तम्ब, नपुं०, तांबा; वि०, तांबे के वर्ण का। तम्ब-केस, वि०, ताम्र-वणं केश। तम्ब-चूल, पु०, मुर्गा। तम्ब-नल, वि०, ताम्र-वर्ण नालून वाला। तम्ब-नेत्त, वि०, ताम्र-वर्ण वाला। तम्ब-भाजन, नपुं०, ताम्र-बर्तन। तम्बपिण, सुप्पारक से विदा होकर राजकुमार विजय तथा

साथियों का लंका में प्रथम पदापंण करने का स्थान। तम्बूल, नपुं०, पान का पता। तम्बूल-पसिब्बक, पु०, पान रखने की यंली। तम्बूल-पेळा, स्त्री०, पान की पेटी। तय, नपुं०, तीन। तयी, स्त्री॰, (वेद-)त्रयी। तयो, वि०, तीन जने। तयोधम्म जातक, बन्दर-पिता अपनी सन्तान की स्वयं हत्या कर डालता या (५८)। तर, पु०, तरणी, नौका। तरङ्ग, पु०, लहर। तरच्छ, पु०, मालू। तरण, नपुं०, (तैरकर) पार जाना, उस ग्रोर पहुँचना। तरणी, स्त्री०, नौका। तरति, किया, तरता है। तरमान-रूप, वि०, जल्दी में। तरल, नपुं०, कांजी, यवागु। तरितु, पु०, पार जाने वाला। तरी, स्त्री०, नाव। तरु, पु०, वृक्ष, पेड़ । तरा-सण्ड, पु० वृक्षों का भुण्ड। तरुण, वि०, नीजवान। तल, नपुं०, नीचे का स्तर, चौपट स्यान, चीपट छत, किसी हथियार का फल। तल-घातक, नपुं०, हाय की चपत। तल-सत्तिक, नपुं०, हाथ की हथेली, जो तलवार जैसी लगे। तळाक, पु॰, तालाब। तळ्ण, देखो तरुण।

तस, वि०, चञ्चल, ग्रस्थिर। तसर, पू॰, फिरकी, जुलाहे की नाल। तसति, किया, कौपता है; मयभीत होता है। तसिना, स्त्री०, तृष्णा। तस्सन, नपुं०, तुषा, पिपासा । तहं, कि॰-वि॰, वहां, उस स्यान तींह, कि०-वि०, वहाँ, उस स्थान ताण, नपुं०, त्राण, शरण। तात, पु॰, पिता, पुत्र (स्नेह-पूर्ण ग्रामन्त्रण बड़ों तथा छोटों, दोनों के लिए)। तादिस, वि०, ताद्श, वैसा। तापन, नपुं०, भ्रात्म-क्लेश । तापस, पु॰, तपस्वी। तापसी, स्त्री॰, तपस्विनी। तापेति, किया, तपाता है, गरमी पहुँ-चाता है। तामबूली, तमोली। तामलिति, जिस पत्तन से प्रशोक ने बोधि वृक्ष की शाखा सिहल भेजी थी । तायति, किया, रक्षा करता है। तायन, नपुं०, संरक्षण। तार, पु०, घत्यन्त ऊँची घावाज। तारका, स्त्री०, (ग्राकाश का) तारा। तारा, स्त्री॰, (ग्राकाश का) तारा। तारा-गण, पु॰, तारा-समूह। तारा-पति, पु०; चन्द्रमा। तारा-पथ, पु०, भ्राकाश। तारेत, पु॰, तरण में सहायक, संरक्षक।

ताल, पु॰, ताइ का वृक्ष । तालट्ठिक, नपुं०, ताड़ के भीतर की गुठली। ताल-कन्द, पुं, ताड़ की कोंपल। तालक्खन्ध, ताड्-वृक्ष का तना। ताल-पक्क, नपुं०, ताड़ का फल। ताल-पण्ण, नपुं०, ताड़ का पत्ता। ताल-बन्त, नपुं०, पंसा। तालावत्युकत, वि०, जड़ से उलाड़ दिया गया। तालु, पु॰, तालु । तालुज, वि०, तालव्य। ताव, भ्रव्यय, तब तक। तावकालिक, वि०, ग्रस्थायी। तावतक, वि०, इतना ही, इतनी देर तक ही। तावता, क्रि०-वि०, तब तक। तावतिस, तैंतीस संख्या, केवल समास-पदों में जहाँ ३३ देंवताग्रों का जिक हो। तार्वातस-देवलोक, चातुम्महाराजिक देव-लोक के बाद दूसरा काल्पनिक देव-लोक (तैंतीस देवताओं का)। तावतिस-भवन, नपुं०, ततीस देवताग्रों का भवन। तावदेव, भ्रव्यय, उस समय, तुरन्त । ताळ, पू॰, चाबी, गीत की ताल। ताळिच्छिग्गल, नपुं०, चाबी का छेद । ताळिच्छिद्, नपुं०, चाबी का छेद। ताळावचर, नपुं०, संगीत; पु०, संगीतज्ञ। ताळन, नपुं॰, ताड्न, चोट पहुंचाना । ताळी, स्त्री॰, चोट। ताळेति, कि॰, ताड़ना देता है। तास, प्०, त्रास, मय, कंपन।

तासेति, ऋ०, त्रासं देता है। ति, वि०, तीन। ति-फट्क, नपुं०, तीन मसाले (दवा-इयां)। तिक्खत्तं, कि०-वि०, तीन बार। तिगावृत, वि०, तीन गव्यूति माप। तिगोचर, पु०, तीन जनों द्वारा सुना गया शब्द। तिचीवर, नपुं०, मिक्षु के तीन चीवर। तिदिव, पू०, दिव्य-लोक । तिदिवाधार, पु०, मेरु पर्वत । तिदिवादिभू, पु०, शक, देवेन्द्र। तिपिटक, नपुं०, पालि त्रिपिटक, १.सुत्त-पिटक, २. विनय-पिटक, ३. ग्रमि-घम्म-पिटक । तिपुटा, पु॰, तेवरी। तिपेटक, तिपेटकी, वि०, त्रिपिटक का ज्ञाता । तियामा, स्त्री०, रात्रि। तियोजन, नपुं०, तीन योजन की दूरी। तिरक्कार, पु०, तिरस्कार, ग्रपमान । तिलिङ्गिक, वि०, जिस शब्द की गिनती तीनों लिङ्गों के अन्तर्गत हो। तितिच्छ, पु०, सपं-विशेष। तिलोक, प्०, तीनों लोक। तिवाग, वि॰ त्रिवर्ग, जीवन के तीन परमायं-धर्म, अर्थ, काम। तिवङ्गिक, वि०,जिसके तीनों ग्रङ्ग हों। तिवस्सिक, वि०, तीन वर्षं का। तिविज्जा, स्त्री०, त्रिविद्या। तिविघ, वि०, त्रिविघ। तिवता, स्त्री॰, शुक्लवणं तेवरी। तिक, नपुं०, तीसरा, जिसके अन्तर्गत नीन हों।

तिकिच्छक, पु०, चिकित्सक । तिकिच्छति, कि०, चिकित्सा करता तिकिच्छा, स्त्री०, चिकित्सा । तिक्ख, वि०, तीक्ष्ण। तिक्खपञ्जा, वि०, तेज प्रज्ञा वाला। तिखिण, वि०, तीक्ष्ण, तेज । तिट्ठति, (ठित, कृदन्त), कि ०, ठहरता है। तिण, नपुं०, तुण। तिणग्रण्ड्रपक, नपुं०, घास का गद्दा। तिण-उक्का, स्त्री०, तिनकों की मशाल। तिण-गहण, नपुं०, तृण-ग्रहण। तिण-जाति, स्त्री०, तिनकों की जाति । तिण-भवल, वि०, तिनके खाकर रहने वाला। तिण-भित्ति, स्त्री०, तिनकों की चटाई। तिण-संयार, पू०, तिनकों का बिछीना। तिण-हारक, पू॰, घास बेचने वाला, घसिय तिणागार, नपुं०, तिनकों की कुटिया। तिन्दुक जातक, देखो तिण्दुक जातक। तिण्ण, कृदन्त, तीणं, पार उतर गया। तिण्ह, वि०, तेज। तितिक्खति, ऋ०, सहन करता है। तितिक्खा, स्त्री॰, सहनशीलता। तित्त, वि०, तिक्त, तीता, कड़्वा; कृदन्त, तृप्त, संतुष्ट । तित्तक, वि०, तिक्त, तीता, कड़्वा। तित्ति, स्त्री॰, तृप्ति । तितिर, पू॰, तीतर। तित्तिर जातक, तीतर, बन्दर मौर हाथी की कथा (३७)। तित्तिर जातक, विना मतलब किसी

को उपदेश देने का दण्ड (११७)। तित्तिर जातक, एक तीतर के प्रावाज करने पर, दूसरे तीतर भी मा इकट्ठे होते श्रीर शिकारी के हाय से मारे जाते (३१६)। तित्तिर जातक, तीतर ने तीनों वेद कण्ठस्य कर लिये (४३८)। तित्य, नपुं०, तीर्थ, पत्तन । तित्यकर, पु०, सम्प्रदाय-विशेष संस्थापक । तित्यायतन, नपुं०, सम्प्रदाय-विशेष के सिद्धान्त । तित्य जातक, राजकीय घोड़े ने घ्रपने स्नान करने की जगह पर दूसरा घोड़ा नहला दिये जाने के कारण वहां नहाने से इनकार कर दिया (२४)। तित्यय, पु०, दूसरे मत का संस्थापक। तित्थिय-सावक, पू०, दूसरे मत का शिष्य । तित्थियाराम, पु०, तपस्वियों ग्राश्रम। तिथि, स्त्री॰, चान्द्र-मास की तिथि। तिदस, पु॰, देवता। तिंदसपुर, नपुं०, देव-नगर। तिदसिन्द, पु०, देवताग्रों का राजा। तिदण्ड, नपुं०, तिपाई। तिघा, कि०-वि०, तीन तरह से। तिन्त, गीला, भीगा। तिन्दुक, पु०, वृक्ष-विशेष। तिन्दुक जातक, तिन्दुक-फल खाने वाले बन्दरों की कथा (१७७)। तिपञ्जास, स्त्री॰, तिरपन। तिपल्लत्य मिग जातक, मृग-पोतक ने

भूठ-मुठ मरने का ढोंग रच जान बचाई (१६)। तिपु, नपुं॰, सीसा । तिपुस, नपुं०, कद्दू। तिप्प, वि०, तीव । तिब्ब, वि०, तीव । तिमि, पु॰, एक बड़ी मछली-विशेष। तिमिगल, पू०, विशाल मछली, जो छोटी मछलियों को निगल जाती है। तिमिर, नपुं०, ग्रंधेरा। तिमिरायितत्त, नपुं०, ग्रेंधेरापन। तिमिस, नपुं०, ग्रंधेरा। तिमिसिका, स्त्री०, ग्रत्यन्त ग्रंघेरी रात। तिम्बर, देखो तिदुक। तिरच्छान, पु०, पशु । तिरच्छान-कथा, स्त्री०, बेकार बात-चीत। तिरच्छानगत, पु०, पशु। तिरच्छान-योनि, स्त्री०, पशु-योनि । तिरियं, ऋ०-वि०, तिरछे। तिरियं-तरण, पार उतरना । तिरीटक, नपं०, छाल का बना ग्राच्छा-तिरीटवच्छ जातक, तिरीटवच्छ तपस्वी ने भवने भाश्रम में राजा का स्वागत किया (२५६)। तिरो, भ्रव्यय, पार, बाह्य। तिरोकरणी, स्त्री०, परदा। तिरोकुड्ड, नपं०, दीवार के बाहर की भ्रोर। तिरोक्कार, पु०, ग्रपमान, तिरस्कार। तिरोघान, नपुं०, ढक्कन। तिरोभाव, पु०, घर्ष्य होना ।

तिल, नपुं॰, तिल । तिल-कक्क, तिल लेप। तिल-पिञ्जाक, नपुं०, तिल की खली। तिल-पिट्ठ, नपुं०, तिल की खली। तिल-मुद्ठ, पु॰, तिलों की मुट्ठी। तिल-मुट्ठ जातक, बुढ़िया के फैलाये हए तिलों को मुट्ठी-मर खाने वाले राजकुमार की कथा (२५२)। तिल-वाह, पु०, गाड़ी-भर तिल। तिल-सङ्ग्रुलिका,स्त्री०,तिल का लड्डू। तिसति, स्त्री०, तीस। तिसा, स्त्री॰, तीस। तीर, नपुं॰, किनारा, तट। तीर-दस्सी, पु॰, तीर-द्रष्टा। तौरण, नपुं०, निर्णय, निश्चय । तीरेति, कि०, निश्चय करता है। तीरित, कृदन्त, निश्चय किया गया। तीरेत्वा, पूर्व ०- कि ०, निश्चय करके। तीह, नपुं०, तीन दिन का समय। तु, ग्रव्यय, जैसे-तैसे, लेकिन, ग्रमी, घव, तव। तुङ्ग, वि०, ऊँचा, प्रसिद्ध। तुंग-नासिक, वि०, ऊँची नाक वाला। तुच्छ, वि०, खाली, व्यथं, त्यक्त। तुट्ठ, कृदन्त, संतुष्ट । तुद्ठ, स्त्री॰, प्रसन्नता, प्रीति । तुण्डक, नपुं०, चोंच । तुण्डिल जातक, महातुण्डिल तथा चुल्ल-तुण्डिल, सुग्रर-पोतकों की कथा, (3==) 1 तुण्ण-कम्म, नपुं०, सिलाई का काम । तुष्ण-वाय, पु०, दर्जी। तुण्हो, ग्रव्यय, चुप । तुष्ही-भाव, पु॰, मोन ।

तुण्ही-मूत, वि०, चृप ।
तुण्हीयति, कि०, चृप रहता है ।
तुन्त, नपुं०, हाथी का अंकुंश ।
तुवति, कि०, चृमोता है ।
तुवति, कृदन्त, चुमोया गया ।
तुवन, नपुं०, चुमोना ।
तुवन, नपुं०, चुमोना ।
तुवन, तपुं०, वड़ा, विशाल ।
तुम्ल, वि०, वड़ा, विशाल ।
तुम्ब, पु० तथा नपुं, तुम्बा ।
तुम्बो, स्त्री०, लोकी ।
तुम्ह, सवंनाम (मध्यम पुष्ठष-बहुवचन),
तुमं ।

तुरग, पु॰, घोड़ा। तुरति, कि॰, जल्दी करता है। तुरित, वि०, शीघ्र। तुरितं, कि ०-वि०, शीघता से। तुरिय, नपुं०, तूर्य-बाजा। तुरियंतर, नपुं०, वाद्य-विशेष। तुरुक्ख, वि०, तुर्कों से सम्बन्धित। तुलना, स्त्री०, तोलना, विचार करना। तुलसी, स्त्री॰, तुलसी का पौघा। तुला, स्त्री॰, तराजु। तुलाकूट, नपुं०, खोटा तराज्। तुला-दण्ड, पु०, तराजू की डण्डी। तुलिय, पु०, चिमगादड़; वि०, समान, जो तोला जा सके। तुलेति, किया, तोलता है। तुल्य, वि०, समान, जो तोला जा सके। तुल्यता, स्त्री०, समानता । तुल्ल, देखो तुल्य। त्त्वं, (त्वं मी), सर्वनाम, तू। तुबटं, कि॰-वि॰, शीघ्रता से। तुबट्टेति, किया, बाँटता है।

तुस्सति, किया, संतुष्ट होता है। तुस्सना, स्त्री, संतोप। तुसित, छह देव-लोकों में से चौथा देव-तुहिन, नपुं०, ग्रोस। तूण, पु०, तरकश। तूणीर, देखी तूण। तूरिय, देखो तुरिय। तूल, नपुं०, कपास। तूलिका, स्त्री॰, चित्रकार की तूलिका, रूई का गदा। ते-प्रसीति, स्त्री॰, तिरासी। ते-किच्छ, वि०, चिकित्सा कर सकने योग्य। ते-चत्तालीसित, स्त्री०, तितालीस। ते-चीवरिक, वि०, त्रिचीवर वाला। तेज, पु॰ तथा नपुं॰, ऊष्णता, प्रकाश । तेजो-धातु, स्त्री ०, ऊष्णता । तेजो-कसिन, नपुं०, घ्यान लगाने के लिए ग्रग्नि-प्रकाश। तेजन, नपुं०, तीर। तेजवन्तु, वि०, तेजयुक्त । तेजित, कृदन्त, तेज किया हुग्रा। तेजेति, ऋिया, ऊप्णता उत्पन्न करता तेत्तिसा, स्त्री०, तैंतीस । तेन. भ्रव्यय, इस कारण से। त-नवुति, स्त्री०, तिरानवे । ते-पञ्जासति, स्त्री०, तिरपन। तेमन, नपुं०, गीला होना, भीग जाना । तेमियति, किया, भीगता है, गीला हो जाता है। तेरस, तेळस, वि०, तेरह। तेरो-बस्सिक, वि०, तीन वर्षं का।

तेल, नपुं०, तेल, स्निग्ध पदायं।
तेल-घट, पु०, तेल का घड़ा।
तेल-घटी, स्त्री०, तेल का बर्तन।
तेल-घूपित, वि०, तेल में छौका गया।
तेल-पदीप, पु०, तेल-लैम्प।
तेल-पदीप, पु०, तेल-लैम्प।
तेल-पक्खन, नपुं०, तेल माखना, तेल लगाना।
तेलक, नपुं०, थोड़ा-सा तेल।
तेल-पत्त जातक, राजकुमार इन्द्रियसुखों के फेर में न पड़कर तक्षशिला
पहुँचा ग्रौर राजा बना (६६)।
तेलिक, पु०, तेली।
तेलोवाब जातक, त्रिकोटि परिशुद्ध मांसमछली का मोजन कर सकने के

बारे में कथा (२४६)।
तेसकुण जातक, राजा ने अण्डों में से
निकले बच्चों को अपनी सन्तान
की तरह पाला-पोसा (५२१)।
तेसिट्ठ, स्त्री०, तिरसठ।
तेसत्तित, स्त्री०, तिहत्तर।
तोमर, पु० तथा नपुं०, बर्छी।
तोय, नपुं०, जल।
तोरण, नपुं०, तोरण-द्वार।
तोस, पु०, प्रसन्नता, प्रीति।
तोसना, स्त्री०, संतोष।
तोसापेति, क्रिया, संतोष देता है।
त्यादो, वि०, बहु, अनेक।

थ

थकन, नपुं०, बन्द करना, ढक्कन। यकेति, क्रिया, बन्द करता है। यकेसि, ग्रतीत०-ऋिया, बन्द किया । पकित, कृदन्त, बन्द किया हुमा। थकेन्त, कृदन्त, बन्द करता हुआ। यकेत्वा, पूर्व०-क्रिया, बन्द करके। थङ्ज, नपुं०, स्तन्य, मौ का दूध। यण्डल, नपुं०, कड़ी जमीन। चण्डिल-सायिका, स्त्री, नंगी जमीन पर लेटना (एक प्रकार तपस्या)। चिंडल-सेय्या, स्त्री०, नंगी जमीन पर बिस्तर। चढ, वि०, कठोर, कड़ा। बद्ध-मच्छरी, पु॰, ग्रत्यन्त कंजूस। थन, नपं०, स्त्री का स्तन, गी-बकरी का स्तन।

यनग्ग, नपुं०, चूची। थनप, पु॰, स्तनपायी, शिशु । थनयति, किया, गर्जता है। धनित नपुं०, गर्जन । थनेति, ऋया, गर्जता है। यनेसि, ग्रतीत०-क्रिया०, गर्जा। थनित, कृदन्त, गर्जा हमा। यनेन्त, कृदन्त, गर्जता हुग्रा। धनेत्वा, पूर्व ०-किया, गर्जंकर। यपति, पु०, बढ़ई। थबक, पू॰, गुच्छा । थम्भ, पु०, खम्मा, स्तम्म । थम्भक, पु॰, वास की मुट्ठी। थर, पु॰, तलवार (या ग्रन्य किसी शस्त्र) की मूठ, तलवार। थल, नपुं०, भूमि, जमीन। यल-गोबर, वि०, स्थल-निवास करने

वाला। थलज, वि०, भूमि से उत्पन्न। थलट्ठ, वि०, भूमि पर स्थित। यलपय, पु०, जमीत पर मार्ग। थव, पु॰, प्रशंसा, स्तुति । थवति, क्रिया, प्रशंसा करता है। यविका, स्त्री०, थैली। थाम, पु०, सामध्यं, शक्ति । थामवन्तु, वि०, सामध्यंवान्, शक्ति-शाली। थाल, पु॰ तथा नपुं॰, थाल। थाली, स्त्री०ं, थाली। थालक, नपुं०, छोटा माजन। थालिका, स्त्री०, नोकदार पात्र। थाली-पाक, पु०, दूध में पका मात या जी। थाबर, वि०, स्थिर, ग्रचल। थावरिय, नपुं०, स्थिरपन, ग्रचलपन। थिर, वि०, दुह । थिरतर, वि०, दृढ़तर। थिरता, स्त्री०, दुढ़तर। थी, स्त्री०, स्त्री। थी-रज, पु० तथा नंपुं०, स्त्रियों का मासिक धर्म । थीन, नपुं०, जड़ता, ग्रालस्य। थुति, स्त्री०, स्तुति । थुति-पाठक, पु०, माट। थुनाति, किया, कराहता है। धुनि, ग्रतीत०-क्रिया, कराहा। थनंत, यूनमान, कृदन्त, कराहता हमा। युनित्वा, पूर्व ०-क्रिया, कराहकर। थुल्ल, वि०, स्थूल, बड़ा, विशाल। थुल्लच्वय, पु०, बड़ा अपराध।

युल्ल-कुमारी, स्त्री०, मोटी लड़की। थुल्ल-फुसितक, वि०, बड़ी-बड़ी बूंदों वाली वर्षा। युल्ल-सरीर, वि०, मांसल, मोटे शरीर वाला। थुस, पु०, भूसी। थुसिंग, पु०, भूसी की घाग। युस-पिन्छ, स्त्री०, भूसी से ठूसी हुई, पक्ती। थुस-सोंडक, नपुं०, सिरके का एक प्रकार। थुस जातक, ग्राचायं ने बनारस राज्य के उत्तराधिकारी अपने शिष्य राज-कुनार को चार गायाएँ सिला दी थीं । उन्होंने ही उसकी जान बचाई (335) 1 यूण, पु०, खम्मा, वध-स्थल, पशुग्रों की वलि देने का स्थान। थुण, मजिमम-देस की पश्चिम-सीमा पर एक गांव। वतंमान थाने-श्वर। थूप, पु०, स्तूप। थूपारह, वि०, स्तूप-निर्माण द्वारा पुज्य। थूप-वंस, वाचिस्सर रचित रचना। इस काव्य के एक ग्रंश में ग्रनुराधपुर के महास्तूप की रचना का वर्णन है। यूपिका, स्त्री०, शिखर। थ्योकत, वि०, स्तूप की तरह कृत। युल, वि०, स्यूल। युलता, स्त्री०, स्यूलता। थूल-साटक, पु०, मोटा वस्त्र । थेत, वि०, विश्वसनीय।

येन, पु॰, चोर। थेनक, पु०, चोर। बेनित, कृदन्त, चोरीकृत। थेनेति, क्रिया, चोरी करता है। थेनेसि, मतीत०-किया, चोरी की। येनेन्त, कृदन्त, चोरी करते हुए। थेनेत्वा, पूर्वं ०-क्रिया, चोरी करके। थेय्य, नपुं०, चोरी। थेय्य-चित्त, नपुं०, चोरी का इरादा। थेय्य-संवासक, वि०, भूठ-मूठ मिक्षुग्रों का वस्त्र घारण कर मिक्ष्यों के साथ रहने वाला। थर, पु॰, ज्येष्ठ मिक्षु, जो कम-से-कम दस वर्ष का उपसम्पन्न मिक्ष हो। थेर-गाया, खुद्दक निकाय का आठवाँ

ग्रन्थ । इसकी गाथाएँ वृद्ध के सम-कालीन मिक्षुयों की रचनाएँ मानी जाती हैं। थेर-वाद, पु०, स्थविर-वाद, स्यविरों का सिद्धान्त। थेरी, स्त्री०, ज्येष्ठ मिक्षुणी, बुढ़िया। थेरी-गाथा, खुद्दक निकाय की नौवों रचना। यह स्यविरियों की काव्य-कृतियों का संग्रह माना जाता है। थेय, पु०, वृंद । थोक, वि०, थोड़ा। थोकं योकं, कि०-वि०, थोड़ा-योडा । थोमन, नपुं०, स्तुति । योमेति, किया, स्तुति करता है।

द

दक, नपुं०, जल। दक-रक्सस, पु०, जल-राक्षस । दक-रक्लस जातक, देली महाउम्मगग जातक (५४६)। दकरक्खस जातक (५१७) नाम की कोई कथा पृथक् रूप से ग्रस्तित्व में नहीं है। दकसीतलिक, नपुं०, सफेद कुदुम का फूल। दक्स, वि०, दक्ष, योग्य। दक्सक, वि०, देखने वाला। दंक्सता, स्त्री०, दक्षता। दक्सति, किया, देखता है। ग्रदक्खि, प्रतीत ०-किया, देखा । वि०, दक्षिण, दाया, विक्सण, दायीं।

दिक्खणनखक, नपुं०, दाहिनी हँसली। विक्खण-दिसा, स्त्री०, दक्षिण-दिसा। दिक्खण-देस, पु०, दक्षिण देश। दिक्खणायम, पु०, मारत का दक्षिणी हिस्सा, वर्तमान दिक्कन। दिक्खणायन, नपुं०, (सूर्यं का) दक्षिणणायन (-पय)। दिक्खणायन, वि०, दक्षिणा के योग्य। दिक्खणायत्त, वि०, दक्षिणा के योग्य। दिक्खणायत्त, वि०, दक्षिणा के योग्य। दक्खिणावत्त, वि०, दक्षिणा के योग्य। दक्खिणावत्त, वि०, दक्षिणा के योग्य। दक्षिणा। दक्षिणानका जला।

दिवलणेय्य, वि०, दक्षिणा देने डे योग्य । दिक्खणेर्य-पुरगस, पु०, दक्षिणा का मधिकारी व्यक्ति। दक्खी, पु०, देखने वाला, अनुमव करने वाला । दट्ठ, कृदन्त, इसा गया। दर्ठर्ठान, नपुं०, वह स्थान जहां इसा गया । दट्ठ-भाव, पु०, इसे जाने की बात। दड्ढ कृदन्त, जला हुमा। दब्ढट्ठान, नपुं०, वह स्थान जो जल बड्ढ-गेह, वि०, ऐसा ग्रादमी जिसका घर जल गया हो। दण्ड, पु०, १. लकड़ी, २. सजा। दण्डक-मधु, नपुं०, लकड़ी पर लटका . हुम्रा मधुका छत्ता। दण्ड-कम्म, नपुं ०, सजा। दण्ड-कोटि, स्त्री०, छड़ी का सिरा। बण्ड-दोपिका, स्त्री०, मशाल। दण्डनीय, वि०, जिसे दण्डित करना उचित हो। बण्डप्पत्त, वि०, जिसे दण्ड दिया गया हो। दण्य-परायण, वि०, जिसे छड़ी का सहारा हो। बण्ड-पाणि, वि०, जिसके हाथ में छड़ी दण्ड-पाणि, अंजन तथा यशोधरा का पुत्र, कपिलवस्तु का शाक्य। शुद्धी-दन की दोनों रानिया, माया तया प्रजापति, इसकी बहुनें थीं। बच्ड-भय, नपुं०, दण्ड का भय।

बण्ड-हत्य, वि०, जिसके हाथ में छड़ी बत्त, कृदन्त, दिया गया। वत्ति, स्त्री॰, भोजन रखने के लिए छोटा-सा बतंन। बल्, पु॰, एक मूखं मादमी। बत्वा, पूर्वं ०-किया, देकर। बब, वि०, देता हुमा। ददित्वा, देली दत्वा। बदाति, किया, देता है। बहुभ जातक, वेल के पेड़ के नीचे पट़े सरगोश ने पेड़ से गिरते फल को देखकर सोचा कि प्रलय होने वाला है। वह मागा (३२२)। दहर जातक, जब गीदड़ भी शेर की तरह गजंने लगे, तो शेर संकोच के मारे चुप हो गये (१७२)। बहर जातक, महादहर तथा चूळदहर नागों की कया (३०४)। बहरी, पु॰, बाद्य-विशेष। बहु, स्त्री ०, दाद । बहुर, पु०, मेंढक। वह् स, नपुं०, स्पंज की तरह नमें ढाँचा, एक प्रकार का चावल। विष, नपुं॰, दही। दिष-घट, पु०, दहीं का घड़ा। दबि-मण्ड(क), नपुं०, मठा, छाछ। द्यधिवाहन जातक, दिघवाहन राजा ने घपने शत्रुघों को दही के समुद्र में ह्वोकर मार डाला था (१८६)। बन्त, नपुं०, दांत; कुदन्त, संयत । बन्त-कट्ठ, नपुं०, दातून। बन्त-कार, पु॰, हायी-दांत का काम करने वाला।

बन्त-पाळि, स्त्री॰, दांतों की पांत। बन्तपोण, पु०, दांत की सफाई करने वाली वस्तु। बन्त-बलय, नपुं॰, हाथी - दाँत की चूड़ी। बन्त-विवंसक, वि०, दांत दिखाने वाला। दन्तावरण, नपुं०, दौत का ढक्कन, होंठ। बन्तपुर, कलिंग राज्य की राजधानी। बन्तता, स्त्री०, संयत माव। दन्तसठ, पु०, नीवू का पेड़, नीवू। बन्ध, वि०, ढीला, मूखं। स्त्री॰, ढिलाई, घालस्य, दन्पता, मूखंता । दनु, पु॰, दानव-माता। दप्प, पु॰, दर्प। दप्पण, नपुं०, दर्पण। दिप्पत, वि०, ग्रहंकारी, ग्रमिमानी। दब्द, वि०, बुद्धिमान, योग्य; नपुं०, लकड़ी, धन, पदायं। दब्ब-जातिक, वि०, समऋदार। दब्द-तिण, नपुं ०, दूव । बब्ब-पुष्फ जातक, रोहित मछली को लेकर दो ऊद-विलाव प्रापस में भगड़ रहे ये। मायावी गीदड़ ने उनका फैसला करने जाकर, मछली का सिर एक को दे दिया, पुंछ दूसरे को दे दी, दोप सारी मछली खुद खा गया (४००)। दब्ब-सम्भार, पू०, मकान बनाने का सामान । दब्बी, स्त्री०, कड़छी। बब्भ, पु॰, कुश घास ।

दमन, नपुं०, संयम । दमक, वि०, संयत, संयत करनेवाला। दमित, कृदन्त, दमन किया गया। दमिळ, दक्षिण भारत की तमिल जाति । दमेति, किया, संयत बनाता है। दमेत्, पु॰, दमन करने वाला। दम्पति, पु॰, पत्नी ग्रीर पति । दम्म, वि०, जिसे दिमत ग्रथवा शिक्षित करना हो। दया, स्त्री०, करुणा। दयालु, वि०, दया करने वाला। दियत, कृदन्त, दयापात्र। दियतब्द, कृदन्त, जिस पर दया करना या जिसके प्रति दया दिखाना योग्य हो। दियता, स्त्री०, भौरत। दर, पु०, दुःख, कष्ट, चिन्ता। दरय, पु०, दु:ख, कष्ट, चिन्ता। बरीमुख जातक, मगघ नरेश के पुत्र ब्रह्मदत्त तथा उसके सहपाठी दरी-मुख की कथा (३७८)। दल, नपुं०, फलक, पत्ता। दलिह, (दळिह भी), वि०, दरिद्र। दळ्ह, वि०, दुढ़। दळ्हपरक्कम, वि०, दृढ़ पराक्रमी, उत्साही। दळ्ह, क्रि०-वि०, दृढ्ता-पूर्वक । बळ्हीकम्म, नपुं०, दृढ़ बनाना। बळ्हधम्म जातक, दळहधम्म नामक बनारस-नरेश के मंत्री की कथा 1 (308). दव, पु०, कीड़ा, भाग, गरमी। दवकम्यता, स्त्री॰, हुँसी-मजाक करने

की रुचि। दयघु, नपुं ०, जलन । दय-डारु, पु०, जंगली द्याग । वस, वि०, दम, देखनेवाजा (देखना या दिखाई पड़ना भी)। वसक, नपुं०, दशाब्द । वसक्खत्तं, कि०-वि०, दस बार। बसघा, कि०-वि०, दस प्रकार से। दस-बल, वि०, दस शक्तियों वाला, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त एक विशेषण-पद। दस-विघ, वि०, दस प्रकार से। दस-सत, नपुं०, सहस्र, हजार। दस-सत-नयन, वि०, सहस्र ग्रींखों (वाला)। दस-सहस्स, नपुं०, दस हजार। बुद्दस, जो कठिनाई से दिखाई दे। दसण्ण, मध्य-मारत का भूमि माग, दशाणंव। दसण्णक जातक, राजा ने पुरोहित-पुत्र को प्रपनी रानी सप्ताह-मर के लिए ही दी थी। वह उसे लेकर माग गया (४०१)। दसबाह्मण जातक, इन्द्रप्रस्य नरेश के दान की सीमा न थी। किन्तु उसका सारा दान दुष्ट घादिमयों के पल्ले पडता था (४६५)। दसरथ जातक, वनवास के समय राम, लक्ष्मण तथा सीता को राजा दशरथ की मृत्यु का समाचार मिला। राम-पण्डित ने ग्रसाधारण सहनशीलता का परिचय दिया (४६१)। बसन, नपुंठ, दात । बसनच्छव, पु०, होंठ।

वसा, स्त्री॰, किनारी, दशा। दिसक-मुत्त, नपुं०, किनारी का घागा। दस्सक, वि०, दिखानेवाला। दस्सति, किया, (वह) देगा, दिखाई, पड़ता है। दस्सन, नपुंo, दर्शन, दृष्टि, प्रन्त:-प्रेरणा। दस्सनीय, वि०, दशंनीय, देखने योग्य। बस्सावी, पु०, देखने वाला, (भय-दस्सावी, मयभीत)। दस्मु, पु०, दस्यु, डाक् । दस्सेति, ऋिया, दिखाता है। दस्सेत, पू॰, दिलानेवाला । दह, पू०, भील, जलाशय। दहति, ऋिया, जलाता है, स्वीका करता है। दहन, नपुं०, जलन; पु०, ग्राग। दहर, वि०, तरुण, लड़का। दहरा, स्त्री०, तरुणी, लड़की। दाडिम, नपुं०, ग्रनार। दाढा, स्त्री०, दाढ । बाढा-धातु, स्त्री०, (बुद्ध के) दन्त-ग्रवशेष । दाढावुध, वि०, दातों को शस्त्र की तरह उपयोग करने वाला। दाढाबली, वि०, दांतों का बलवान । दात, कृदन्त, काटा गया। बातब्ब, कृदन्त, देने योग्य। दातु, पु०, देनेवाला । बातं, देने के लिए। दात्त, नप्ं, दांति, दरांति; कृदन्त, काटा गया। बान, नपुं॰, दान, । दान-कथा, स्त्री , दान-सम्बन्धी उा-

देश। दानग्ग, नपुं०, दान देने का स्थान। बान-पति, पू०, दान-शूर। दान-फल, नपुं०, दान-फल। दान-मय, वि०, दान-मय। दान-बट्ट, नपुं०, सतत दान । दान-वत्यु, नपुं०, दान देने की चीज। वान-बेय्यावटिक, वि०, दान बाँटने दान-साला, स्त्री०, दानशाला। दान-सील, वि०, दानशील। दान-सोण्ड, वि०, दान-प्रिय। दानारह, वि०, दान देने योग्य। बानव, पू॰, राक्षस । बानि, देखो इदानि । दापन, नपुं०, दिलाना। बापेति, क्रिया, दिलाता है। दापेतु, पु॰, दिलाने वाला। दाब्बि, स्त्री०, सूखी हल्दी। बाम, पू॰, माला, रस्सी, जंजीर। दाय, पु०, जंगल, भेंट। दायपाल, पु॰, माली। दायक, पु॰, दाता, सहायक । दायज्ज, नपुं०, उत्तराधिकार। दायज्ज, वि०, उत्तराधिकारी। दायति, क्रिया, काटता है। दायन, नपुं॰, काटना । दायाद, पु०, उत्तराधिकार। दायादक, वि०, उत्तराधिकारी। दायिका, स्त्री ०, देनेवाली । शायी, वि०, देनेवाला । दार, पु०, स्त्री। दार-भरण, नपुं०, स्त्री का पालन-पोपण ।

दारक, पु०, लड़का, बच्चा। बारा, स्त्री०, स्त्री। दारिका, स्त्री०, लड़की, बच्ची। बारित, कृदन्त, चीरा गया, फाड़ा गया । बारेति, फाड़ता है। दारेत्वा, पु॰-क्रिया, फाड़कर, चीरकर। दारेन्त, कृदन्त, फाड़ता हुमा, चीरता हुमा। दारेसि प्रतीतं - किया, फाड़ा, चीरा। दार, नप्ं, लकड़ी। दार-खण्ड, नपुं०, लकड़ी का दुकड़ा। बादक्लन्घ, पु०, लकड़ी का लट्ठा। दार-भण्ड, नपुं०, लकड़ी का सामान। दाइ-मय, वि०, लकड़ी का बना। दार-सङ्गात, पु०, लकड़ी की नाव। दारण, वि०, कठोर। दालन, नपुं०, चीरना-फाड्ना। दालेति, देखो दारेति। दावरिंग, पु०, जंगल की माग। बास, पु॰, गुलाम। बास-गण, पु०, गुलामों का समूह। वासत्त, नपुं ०, दास-माव। बासित्त, नपुं०, दासी-माव। बासी, स्त्री॰, दासी। दाह, पु०, जलन, गर्मी। बाळिद्यि, नपुं०, दरिद्रता । बाळिम, देखो दाडिम। विक्खति, १. देखता है, २. दीक्षा प्रहण करता है। दिक्सित, कृदन्त, दीक्षित। दिगम्बर, पु०, नग्न साधु। दिगुण, वि०, दिगुण, डबल। दिग्धिका, स्त्री०, साई।

दिज, पु०, १. ब्राह्मण, २. पक्षी। दिजगण, पु॰, ब्राह्मणों या पक्षियों का समूह। दिट्ठ, कृदन्त, देखा गया; नपुं०, दृश्य । दिट्ठ-धन्म, पु०, यही संसार; वि०, सत्य का साक्षात्कृत । दिट्ठधम्मिक, वि०, इसी लोक से सम्बन्धित । दिट्ठमङ्गलिक, वि०, शकुन-ग्रपशकुन का विचार करने वाला। दिट्ठसंसन्दन, नपुं०, हष्ट ग्रथवा जात बातों के बारे में तुलनात्मक विवे-दिट्ठानुगति, स्त्री०, हप्ट का धनु-करण। दिट्ठि, स्त्री०, सिद्धान्त, विश्वास । दिट्ठिक, वि०, मत-विशेष को मानने-वाला। दिद्ठ-कन्तार, पु०, मतों का जंगल। दिट्ठिगत, नपुं०, मत, मिथ्या-मत। दिट्ठ-गहन, नपुं०, मतों का जमघट। दिद्ठि-जाल, नपुं०, मतों का जाल। दिट्ठ-विपत्ति, स्त्री०, मत यस-फलता। विद्ठ-विपल्लास, पु०, मतों की विकृति। विद्ठि-विसुद्धि, स्त्री०, स्पष्ट हिष्ट, स्पष्ट मत। दिट्ठ-सम्पन्न, वि०, सम्यक् इष्टि से युक्त। दिट्ठ-संयोजन, नपुं०, ब्ययं के मतों का वंघन। वित्त, कृदन्त, दीप्त ।

वित्ति, स्त्री०, प्रकाश, दीप्ति। विद्य, वि०, दिग्ध. लिपटा हुमा, विष दिया हमा। विन, नपु०, दिन। दिनकर, पु०, सूयं। दिनच्चय, पु०, दिन का मन्त, सन्ध्या। दिन-पति, पु०, सूर्य । दिन्दिभ, पु०, टिटिहिरी। विन्न, कृदन्त, दिया गया। दिन्नादायी, वि०, जो दिया गया हो उसी को ग्रहण करनेवाला। दिन्नक, पु०, दत्तक (पुत्र), दी गई (बस्तु)। दिपद, पु॰, द्विपद, दो पैरों वाला, मनुष्य। दिपदिन्द, पु०, मनुष्येन्द्र, तयागत बुद्ध। दिपदुत्तम, पु॰, मनुष्यों में श्रेष्ठ, तथा-गत बुद्ध । दिप्पति, किया, चमकता है। दिप्पन, नपुं०, चमकना । दिव्द, वि०, दिव्य। दिब्ब-चक्खु, नपुं०, दिव्य-चक्षु । दिब्ब-चक्ख्क, वि०, दिल्य-चक्षु से युक्त। दिब्ब-विहार, पु॰,दिव्य-विहार, करुणा, मुदिता मादि मावनामों में चित्त का लगाना। दिब्ब-सम्पत्ति, स्त्री॰, दिब्य सम्पत्ति । दिव्वत, किया, मनोविनोद करता दियड्ड, पुन, डेढ़ । दिव, पु॰, दिव्यतोक । विवस, पु॰, दिन। विवसकर, पु॰, सूर्य ।

दिवस-माग, पु॰, दिन का समय। दिवा, प्रव्यय, दिन, दिन में । विवाकर, पु०, सूर्य। विवा-ठान, नंपुं०, दिन का समय गुजा-रने की जगह। दिवा-विहार, पु॰, दिन में विश्राम दिवा-सेय्या, स्त्री०, दिन में लेटना । विस, पु०, शत्रु। विसम्पति, पुं०, नरेश। दिसा, स्त्री०, दिशा। विसा-काक, पुढ, स्थल-भूमि की खोज करने के लिए नीका पर रखा हुआ कीग्रा। वि॰, दिशा-ज्ञान में दिसा-कुसल, कुशल। दिसा-पामोक्ल, वि०, लोक-प्रसिद्ध। दिसा-माग, पु॰, दिशा। दिसा-मूळ्ह, वि०, जिसे दिशाग्रों का ज्ञान नहीं। दिसा-वासिक, वि०, देश के विभिन्न भागों में भ्रयवा विदेश में रहने वाला। दिस्सति, किया, ऐसा - दिलाई देता है, ऐसा प्रतीत होता है। वीघ, वि०, लम्बा। दोघड्युलो, वि०, लम्बी ध्रॅगुलियों वाला। दोधजातिक, पु॰, सर्प की जाति का जीव। बीघता, स्त्री०, लम्बाई। बीघत्त, नपुं॰, लम्बाई। बीघ-दस्सी, वि०, दीघं-दर्शी। बीय-निकाय, सुत्तपिटक का पहला

ग्रन्थ, जिसमें लम्बे भ्राकार के ३४ स्त हैं। दोघ-भाणक, पु०, दोघंनिकाय पाठ करनेवाला। दोध-रत्तं, कि०-वि०, दीघं काल दीघ-लोमक, वि०, लम्बे बाल वाला। दीघ-सोत्यिय, नपुं०, सम्पन्नता । दीघ-हत्य, पू०, लम्बे हाथवाला । दीधिति, स्त्री०, प्रकाश, चमक, दीप्ति। दीन, वि०, गरीव, दीनावस्था को प्राप्त । दीनता, स्त्री०, दीनत्व। दीप, १. पु०, दीपक, २. पु० तथा नपुं०, द्वीप, आश्रय, ३. नपुं०, एक प्रकार का यान जो चीते के चमड़े से ढका हो। दीपक, नपुं०, छोटा दीपक या द्वीप; वि०, प्रकट करने वाला। दोपङ्कर, वि०, दीपक जलाने वाला; पु॰, २४ बुद्धों में से सर्वप्रथम । दीपिच्च, स्त्री०, दीपक की ली। दीप-इक्ख, पु॰, दीप स्तम्भ, लैम्प का स्टेंड । दीप-सिखा, स्त्री०, दीपक की ली। दीपालोक, पु०, दीपक का प्रकाश। दीपना, स्त्री०, व्याख्या। बीपनी, स्त्री ०, व्याख्यात्मक टिप्पणी। दोप-वंस, सिहल का प्राचीनतम ऐति-हासिक काव्य। बीपि, पु॰, चीता। दीपिक, पु॰, चीता। बीपि बातक, बकरी ने मीठे शन्दों से

चीते को बहलाना चाहा, किन्तु वह उसे लाही गया (४२६)। दीपिका, त्री०, मशाल, त्र्याख्या। बीपित, कृदन्त, व्याख्यात, जिसकी व्यास्या की गई हो। बीपिनी, स्त्री॰, चीती। दीपेति, किया, प्रकाशित करता है, स्पष्ट करता है। दुक, नपुं०, जोड़ा, जोड़ी। बुकूल, नपुं०, अच्छी किस्म का कपड़ा। बुक्कट, वि०, दुष्कृत; नपुं०, प्रकुशल दुक्कर, वि०, दुष्कर, कठिन। दुक्कर-भाव, पु०, दुष्करता, कठिनता। दुक्ल, नपुं०, कष्ट; वि०, ग्रप्रिय, कष्टदायी। दुक्खं, कि०-वि०, कठिनाई से। द्क्यस्यय, पु०, दु:स का क्षय। ्रव्यवखन्ध, पु॰, दु:ख का समूह। दुक्ख-निदान, नपुं०, दु:ख का मूल। दुक्ल-निरोध, पु०, दुःख का नाश। बुक्ल-निरोध-गामिनी पटिपदा स्त्री०, दु:ख-निरोध की ग्रोर ले जाने वाला मार्ग । बुक्खन्तगू, वि०, जो दु:ख का अन्त कर चुका। दुक्ल-पटिकूल, वि०, दु:ख के प्रति-कुल। बुक्ख-परेत, वि०, दुःख से दुखित। दुक्खप्पत्त, वि०, दुःस-प्राप्त। दुक्खप्पहाण, नपुं०, दुःख का दूर करना। दुक्ख-विपाक, वि०, जिसका फल दुःख हो।

वुक्ल-सच्च, नपुं०, दुःल के सम्बन्ध में बुक्ल-समुदय, पु॰, दु:ल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सत्य। दुक्ख-सम्फस्स, वि०, दु:स का स्पर्श । बुक्खसेय्या, स्त्री ०, बे-म्राराम की नींद। बुषखानुभवन, नपुं०, दण्ड मोगना । दुक्लापगम, पु०, दु:स का हटाना। बुदलापन, नपुं०, कच्ट-प्रद। दुक्लापेति, ऋया, कष्ट देता है, दुलाता दुविखत, वि०, ग्रप्रसन्त । दुक्खी, वि०, भ्रप्रसन्त । दुक्खीयति, किया, दुखी होता है। दुक्खुद्रय, वि०, दु.सद। दुक्लूपसम, पु०, दु:ख का उपशमन। दुग्ग, नपुं , दुगं, क़िला। बुग्गत, वि०, दरिद्र, दुगंति-प्राप्त। बुग्गति, स्त्री०, दुगंति । बुग्गन्घ, पु०, बदबू; वि०, बदबूदार। द्ग्गम, वि०, ऐसी जगह जहां जाना कठिन हो। बुगाहीत, वि०, जिसे ठीक से नहीं समका, मिथ्या-मत। बुग्ग-संचार, पु॰, दुगं तक पहुँचने का रास्ता, दुगंम रास्ता। बुच्चज, वि०, जिसे त्यागना कठिन बुच्चरित, नपुं०, दुराचरण। बुजिब्ह, पु०, सीप। बुज्जह, वि०, जिसे छोड़ना कठिन बुज्जान, वि॰, जिसे जानना कठिन हो।

बुज्जीवित, नपुं॰, मिच्या जीविका। बुट्ठ, वि०, दुप्ट; कृदन्त, द्वेष-युक्त। बुट्ठ-चित्त, नपुं०, दुष्ट चित्त वाला । बुट्ठू, कि॰-वि॰, बुरी तरह से। बुट्ठुल्ल, नपुं०, फूहड़ बातचीत; वि०, घटिया। बुतप्पयं, वि०, जिसे घासानी से सन्तुष्ट न किया जा सके। दुतिय, वि०, द्वितीय, दूसरा। दुतियक, वि०, साथी। बुतियं, कि०-वि०, दूसरी वार। बुतियपलायी जातक, गान्धार नरेश के पलायन की कया (२३०)। बुतिया, स्त्री॰, पत्नी, द्वितीया विमनित, कमंकारक। बुतियिका, स्त्री०, पत्नी। दुत्तर, वि०, जो कठिनाई से पार किया जा सके। बुद्द जातक, तक्षशिला-शिक्षित तपस्वी भीर उनके साथियों के बनारस भाने पर वाराणसी के लोगों ने ग्रन्न-पान से संतर्पत किया (१८०)। बुद्म, वि०, जिसका कठिनाई से दमन किया जा सके। बुद्दस, वि०, जो कठिनाई से दिखाई दे, या समक्त में भाये। बुद्दसतर, वि०, जो भीर भी भधिक कठि-नाई से दिलाई दे, या समक में ग्राये। बुद्दसा, स्त्री॰, दुदंशा, बुरी हालत। बृह्सापन्न, वि०, दुदंशा-प्रस्त । बुद्द्धिक, वि०, बदशक्ल। बुद्दिन, नपुं०, दुदिन, बारिश का दिन या सराव दिन। बुख, नपुं•, दुग्ध, दूध; कुदन्त, दुहा

हुमा । बुंबुभि, स्त्री०, ढोल। बुन्नामक, नपुं०, बवासीर। दुन्निक्सित, वि०, प्रयोग्य ढंग से रखा गया। बुन्निग्गह, वि०, जिसे काबू में रखना कठिन हो। द्गिमित्त, नपुं० ग्रपशकुन। दुन्नीत, वि०, अनुचित ढंग से ले जाया गया। बुपट्ट, वि०, दो तहों वाला । बुप्पञ्जा, वि०, मूखं; पु०, मूखं (ग्रादमी)। दुप्पटिनिस्सिग्गिय, वि०, जिसे छोड़ना कठिन हो। दुप्पटिविज्भ, वि०, जिसे समभना कठिन हो। दुप्पमुञ्च, वि०, जिसे छोड़ना दूमर हो। बुप्परिहारिय, वि०, जिसकी व्यवस्था करना कठिन हो। दुफस्स, पु॰, ग्रप्रिय स्पर्श । बुब्बच, वि०, जो बात न मानता हो, ग्रनाज्ञाकारी। दुब्बच्च जातक, ग्राचार्य ने बोधिसत्व का कहना नहीं माना (११६)। दुब्बण्ण, वि०, दुवंणं। दुब्बल, वि०, दुबंल। दुब्बल-भावं, पु०, कमजोरी। दुक्बल-कट्ठ जातक, जंजीर तोड़कर मागे हुए हाथी की कथा (१०५)। बुम्बा, स्त्री॰, दूर्वा-तृण, दूब। बुबिजान, वि॰, कठिनाई से समक्र में माने योग्य।

दुब्बिनीत, वि०, दुविनीत । दुब्बुद्ठिक, वि०, दुवृंष्टिक, जहाँ बारिश कम हो; नपुं०, ग्रकाल। दुब्भक, वि०, विश्वासघाती । दुब्भित, किया, विश्वासघात करता है, पड्यन्त्र करता है। दुब्मन, नपुं०, द्रोहीपन, विश्वासघात । दुब्भर, वि०, दूमर, जिसका पालन-पोषण कठिन हो। दुब्भासित, नपुं०, ग्रपमानसूचक शब्द, ग्रपशब्द । दुब्भिक्ल, नपुं०, ग्रकाल, ग्राहार की कमी। दुब्भी, वि०, विश्वास घात करने वाला। दुम, पु॰, द्रुम, पेड़। दुमग्ग, नपु०, पेड़ का शिखर। दुमन्तर, नपुं०, नाना प्रकार के पेड़। दुमिन्द, पु०, वृक्षराज, बोधि-वृक्ष। दुमुत्तम, देखो दुमिन्द । दुमुप्पल, पु॰, पीले फूलों वाला वृक्ष-विशेष। दुम्ङ्कु, वि०, जिसे कठिनाई से चुप कराया जा सके। दुम्मतो, पु॰, बुद्धि-भ्रष्ट ग्रादमी। दुम्मन, वि०, ग्रप्रसन्न, दुखी। दुम्मुख, वि०, अप्रमन्न मुख। दुम्मेघ, वि०, कुबुद्धि। दुम्मेध जातक, राजा ने दुष्कमं करने वालों की वलि देने की घोषणा की (40) 1 दुम्मेघ जातक, राजा ने ईर्षावश अपने हस्तिराज को ही मरवा डालना चाहा (१२२)। दुय्योधन, दुर्योधन ।

बुय्हति, क्रिया, दुहा जाता है। दुरक्ल, वि०, जिसका संरक्षण कठिन हो। दुरच्चय, वि०, जिसे लौधना कठिन हो। दुराजान, वि०, जिसे जानना या सम-भना कठिन हो। दुराजान जातक, ग्राचार्य ने ग्रपने शिष्य को सलाह दी कि वह अपनी स्त्री की करतूतों को उपेक्षा की दृष्टि से देखे (६४)। दुरासाद, वि०, जिसके पास पहुँचना कठिन हो। दुरित, नपुं०, पाप, अकुशल कर्म । दुरुत्त, वि०, बुरी त ह से कहा गया; नपुं०, बुरी बात, बुरो बाणी। दुल्लद्ध, वि॰ कठिनाई से प्राप्त। दुल्लिद्ध स्त्री०, मिथ्या-दृष्टि । दल्लभ, वि०, जिसे कठिनाई से प्राप्त किया जा सके। दुवङ्गिक, वि०, दो ग्रङ्गों से युक्त। दुविध, वि०, दो प्रकार का। दुवे, संख्यावाची, दो (ब्रादमी या वस्तुएँ)। दुस्स, नपुं०, कपड़ा। दुस्स-करण्डक, पु०, कपड़ों की पेटी। दुस्स-कोट्ठागार, नपुं०, कपड़ों का मण्डार। दुस्स-युग, कपड़ों का जोड़ा। बुस्स-बट्टि, स्त्री०, कपड़ों का थान, कपड़े की किनारी। बुस्सति, ऋिया, द्वेप करता है, कोधित होता है। दुस्सित्वा, पूर्वं शिया, द्वेष करके।

दुस्सन, नपुं०, द्वेप, विकृति, कोघ। दुस्सह, वि०, जिसका सहन करना कठिन हो। दुस्सील, ति०; दुराचारी। दुहति, किया, (दूध) दुहता है। बुह्न, नपुं०, दुहा जाना । बुहितु, स्त्री॰, बेटी, दुहिता। दूत, पु०, संदेश-वाहक । दूती, स्त्री०, दूतिका। दूतेय्य, नपुं०, संदेश, संदेश-वाहन । दूत जातक, एक लोगी ग्रादमी ग्रपने को 'दूत-दूत' कहता हुआ राजा के खाने की मेज तक पहुँच गया। राजा ने पूछा-"तू किसका दूत है?" द्यादमी का उत्तर था—"मैं पेट का दूत है।" (२६०)। दूत-जातक, गुरु-दक्षिणा देने के लिए इकट्ठी की गई राशि गङ्गा नदी में गिर पड़ी (४७८)। दूभक, देखी दुन्मक । दूर, नपुं०, दूरी; वि०, दूर। दूरङ्गम, वि०, दूर तक जाने वाला। दूरतो, ग्रव्यय, दूर से। दूरत्त, नपुं०, दूरत्व, दूर होने का भाव। दूसक, वि०, दूषित करने वाला, विकृत करने वाला, गन्दा करने वाला। दूसन, नपुं॰, दूषण, विकृति, गन्दगी। दूसित, कृदन्त, दूषित। दूसेति, किया, दूषित करता है, खराब करता है, बदनाम करता है, बुरा व्यवहार करता है। दूहन, नपुं०, डाका डालना, दूघ दुहना। बेड्डुभ, पु॰, जल-सपं। बेण्डिम, पु०, दोण्डी।

देति, किया०, देता है। देव, पु०, देवता, ग्राकाश, वादल,राजा। देव-फञ्जा, स्त्री०, देव-कन्या । देव-काय, पु०, देव-गण। देव-कुभार, पु०, दिव्य राजकुमार। देव-कुसुम, नपुं० देव-लोक के फूल। देव-गण, पु०, देव-समूह। देव-चारिका, स्त्री ०, देव-लोक में भ्रमण। देवच्छरा, स्त्री०, देवप्सरा। देवञ्जतर, वि०, लघु-देवता । देवट्ठान, नपुं०, देवस्थान । देवतभाव, पु०, दैवी शरीर। देवदत्तिक, वि०, देवता द्वारा दिया देव-दुन्दुभि, स्त्री०, गर्जना। देव-दूत, पु०, देवता का दूत । देव-देव, पु०, देवतायों का देवता। देव-धम्म, पु०, दिव्य-गुण, पाप-भीरुता। देव-धीतु, स्त्री०, ग्रप्सरा। देव-नगर, नपुं ०, देवताग्रों का नगर। देव-निकाय, वि०, देवतायों का समूह। देव-परिसा, स्त्री०, देव-परिपद् । देव-पुत्त, पु॰, देवता का पुत्र। देव-पुर, नपुं०, देव-नगर। देव-भवन, नपुं०, देवताग्रों का निवास-गृह । देव-यान, नपुं०, स्वर्ग-मार्ग, हवाई जहाज। देवराजा, पु०, देवताग्रों का राजा शक। देव-रुक्ख, पु॰, देवताग्रों का वृक्ष, पारि-जात। देव-रूप, नपुं०, देवता की मूर्ति। देव-लोक, पु०, स्वगं-लोक। देव-विमान, वि०; देव-लोक का भवत।

देवता, स्त्री०, देव । देवत्त, नपुं ० देवत्व । देवदत्त, शाक्य मुनि गीतम बुद्धं के मामा सुप्रवृद्ध शाक्य का पुत्र, जो जन्म-भर बुद्ध-द्वंषी वना रहा। देवदह, शाक्यों का एक निगम, कस्बा। बुद्ध ने अनेक वार वहाँ पदापंण किया था। देवदार, पु०, देवदार-वृक्ष। देव-धम्म जातक, देव-धम्म ग्रर्थात् पाप से विरति का उपदेश (६)। देवर, पु०, देवर, पति का छोटा भाई। देवसिक, वि०, दैनिक । देवा, पु०, मानवों से कुछ ऊपर के स्तर के प्राणी। तीन प्रकार के देव माने गये हैं-(१) सम्मुति देवा, जिन्हें देवता मान लिया गया, जैसे राजा तथा राजकुमार, (२) विसुद्धि-देवा, पवित्र देवता-गण, जैसे अहंत् तथा बुद्ध, (३) उप्पत्ति-देवा, उत्पन्न हए देवता-गण; सात प्रकार के देवता-समुहों का वर्णन है, जैसे चातुम्महा-राजिक, तावतिस ग्रादि। देवातिदेव, पु॰, देवताग्रों का देवता । देवानुभाव, पु॰, देव-प्रताप। देवानम्पिय तिस्स, धर्माशोक का सम-कालीन तथा मित्र सिंहल नरेश। देविसि, पू०, दिव्य ऋषि। देवी, स्त्री ०, देवी, रानी, महेन्द्र स्थविर तथा संघिमत्रा की माता, अशोक-पत्नी का नाम। देव्पपत्ति, स्त्री॰, देवताग्रों में उत्पत्ति। देस, पु॰ देश, प्रदेश। बेसक, पु॰, देशना करने वाला,

उपदेशक । देसना, स्त्री०, उपदेश। देसना-विलास, पु०, देशना सीन्दयं । देसिक, वि०, प्रदेश-विशेष सम्बन्धित । देसित, कृदन्त, उपदिष्ट । देसेति, किया, उपदेश देता है। देसेत्, देखो देसक। देस्स, वि०, प्रतिकृल। देस्सिय, देखो देस्स। देह, पु० तया नप्०, शरीर। देह-निक्लेप, नपुं०, दारीर-स्याग, मृत्यु । देह-निस्सित, वि०, शरीर-सम्बन्धी। देहनी, स्त्री०, देहली। देहावयव, पु०, शरीर का कोई ग्रंग। देही, पू॰, दंहधारी। दोण, पु० तथा नपुं०, माप-विशेष; पु०, मगवान् बुद्ध का शरीरान्त होने पर उनकी ग्रस्थियों का वँटवारा करने वाला दोण-ब्राह्मण। दोणि, दोणिका, स्त्री०, द्रोणि, नौका। दोणिका, देखो दोणि । दोमनस्स, नपुं ०, यसंतोप, चैतसिक दु:ख। बोला, स्त्री०, भुला। दोलायति, क्रिया, भुलाता है। दोवारिक, पु०, द्वारपाल। दोस, पु॰, द्वेष, कोघ, दोष। दोसक्लान, नपुं०, दोषारोपण । दोसग्गि, पु०, द्वेषाग्नि । दोसञ्जू, पु॰, पण्डित। दोसापगत, वि०, दोष-रहित। दोसिना, स्त्री॰, चौदनी।

दोसो, पु०, रात्रि। 'दोह, पु॰ तथा नपुं०, द्रोह, दूघ दुहना । दोहक, पु॰ तथा नपुं॰, दूघ दुहने वाला, दूध की बाल्टी। दोहळ, पु॰, गिंभणी की बलवती इच्छा, दोहद । दोहळिनी, स्त्री०, दोहद की इच्छा वाली। दोही, वि०, दूध दुहने वाला, द्रोही, श्रकृतज्ञ । द्रव, पु०, रस, तरल पदार्थ। हुङ्गुल, वि०, दो ग्रङ्गुल भर। द्वत्तिक्लत्तं, क्रिया-विशेषण, दो-तीन बार। द्वतिपत्त, नपुं०, दो-तीन पात्र। इत्तिसति, स्त्री०, बत्तीस। द्वन्द, नपुं०, जोड़ा, द्वन्द्व (समास) । द्वय, नपुंठ, दो। द्वाचत्तालीसति, स्त्री०, वयालीस । द्वादस, वि०, बारह। द्वानवृति, स्त्री०, बानवे। द्वार, नपुं०, दरवाजा। द्वार-कवाट, नपुं०, दरवाजे के किवाड़। द्वार-कोट्ठक, नपुं०, दरवाजे के ऊपर का कमरा। द्वार-गाम, पु०, नगर-द्वार के बाहर का गाँव। द्वारपाल, पु॰, चौकीदार, पहरेदार। द्वार-बाहा, स्त्री०, दरवाजे का खम्बा। द्वार-साला, स्त्री॰, दरवाजे के समीप की शाला। द्वारिक, वि०, द्वार से सम्बन्धित;

पु॰, द्वारपाल। द्वाबीसति, स्त्री०, बाईस। द्वासट्ठिदिट्ठ, स्त्री॰, वासठ मिथ्या मत। द्वासत्तति, स्त्री०, बहत्तर। द्वासीति, स्त्री०, वयासी। द्धि, वि०, दो। द्विक, नपुं०, दो की जोड़ी। द्विबल्तुं, क्रिया-विशेषण, दो बार। द्विगुण, वि०, दुगुना। द्विचत्तालीसति, स्त्री०, वयालीस। द्विज, देखो दिज। द्धि-जिब्ह, वि०, दो जीमों वाला (सर्पं)। द्धि-पञ्जासति, स्त्री०, बावन। द्वि-मासिक, वि०, दो ही महीने द्धि-सद्ठि, स्त्री०, बासठ। द्धि-सत, नपुं०, दो सी। द्वि-सत्तति, स्त्री०, बहत्तर। द्धि-सहस्स, नपुं०, दो हजार। द्विगोचर, पु०, दो जनों के बीच की बातचीत। द्विघा, क्रिया-विशेषण, दो तरह। द्विधा-पथ, पु०, सड़क का दो भ्रोर बँट जाना। द्विप, पु॰, हाथी। द्विरब, पु॰, हाथी। द्वीह, नपुं०, दो दिन। द्वीहं, किया-विशेषण, दो दिन में। द्वीह-तीहं, किया-विशेषण, दो या तीन दिन में। हे, संस्थावाची, वि०, दो।

द्वे-वाचिक, वि०, दो शब्द ही दोहराने वाला। द्वेज्फ, नपुं०, सन्देह, विरोध। हेबा, किया-विशेषण, दो तरह से। हेबा-पण, पु०, सड़क का बँटवारा। हेळहक, नपुं०, शक, सन्देह।

घ

धंक, पु॰, कीवा। घंसित, कृदन्त, घ्वस्त । धजं, पु०, ध्वजा । घजग्ग, घ्वजा का सिरा। घजालु, वि०, घ्वजाग्रों से सुसज्जित। घजाहट, वि०, युद्ध में जीतकर लाया हम्रा। घजिबहेठ जातक, दिन में तपस्वी, रात में बनारस के राजा की रानी के पास जाने वाले जादूगर की कथा 1 (935) धजिनी, स्त्री ०, सेना । धञ्जा, नपुं०, धान्य; वि०, सीमाग्य-सम्पन्न । घञ्जा-पिटक, नपुं०; धान्य की टोकरी। घञ्ज-रासि, पू॰, घान्य का ढेर। घञ्जावन्तु, वि०, सीमाग्य-सम्पन्न । घञ्जागार, ग्रनाज का गोदाम । घत, कृदन्त, धृत, धारण किया हुआ, स्मरण रखा हुमा। धन, नपुं०, धन, दौलत । घनग्ग, श्रेष्ठ घन । धनत्थिक, धनार्थी, धन की इच्छा रखने बाला। धनक्लय, पु०, धन का क्षय। धनक्कीत, वि०, धन से खरीदा गया। धनत्यद्ध, वि०, धन का ग्रमिमानी। धन-लोल, वि०, धन का लोमी।

धनवन्तु, वि०, धनवान । धन-हेत्, क्रिया-विशेषण, धन के लिए। घनासा, स्त्री॰, घन की ग्राशा। घनञ्जय जातक, इन्द्रप्रस्य का राजा प्राने योढाओं की बोर घ्यान न दे नये योद्धायों का सम्मान करता था, (883) 1 धनायति, किया, धन समभता है। धनिक, पुर, ऋणदाता। धनित, नपुं०, ग्रावाज; वि०, ध्वनित, ग्रावाज किया गया। धनी, वि०, धनवान; पु० धनी म्रादमी। धनु, नपुं०, धनुष, कमान । धनुक, नपुं०, छोटा धनुष । धनुकार, पु०, धनुष बनाने वाला । धन केतकी, पू०, केतकी । घनुगाह, पु॰, घनुर्घारी। धनुसिप्प, नपुं०, तीरंदाजी। धनुपञ्चसत, नपुं॰, पांच सी घनुष या कोस-भर का फासला। धन्त, कृदन्त, फूंका हुमा। षम, वि०, वजाने वाला । घमक, वि०, वजाने वाला। घमकरक, पु॰, पानी छानने साधन। धमति, क्रिया, बजाता है। धमनि, स्त्री॰, नस, रग। धमनि-संयत-गत्त, जिसके सारे शरीर

पर नसें ही नसें दिखाई दें। धमेति, ऋिया, वजाता है। धमापेति, किया, बजवाता है। धम्म, पु०, धमं, सिद्धान्त, स्वमाव, सत्य, सदाचार। धम्मक्लान, नपं०, धमं की व्यास्या। धम्म-कथा, स्त्री०, धार्मिक कथा। धम्म-कथिक, पु०, उपदेप्टा। धम्म-कम्म, नप्ं, कानूनी कार्वाई, विनय के अनुकूल कार्यवाई। घम्म-काम, वि०, धर्म-प्रिय, धर्म चाहने वाला। धम्म-काय वि०, धमं-काय। धम्म-बलन्य, पूर्, धमं-स्कन्ध । धम्म गण्ठिका, (धम्म-गण्डिका भी), स्त्री०, वलि-देदी। धम्म-गरू, वि०, धर्म का गौरव। धम्म-गुत्त, वि०, धमं द्वारा सुरक्षित । धम्म-घोसक, पु॰, धमं की घोषणा करने वाला। धम्म-चक्क, नपुं०, धर्म-चक्र। धम्म-चक्क-पवत्तन, नप्ं०, धर्म-चक्र-प्रवर्तन, धर्म-देशना । धम्मचक्कपवत्तन-सुत्त, ग्रापाढ्-पूणिमा के दिन इसिपतन के मिगदाय में पञ्च-वर्गीय मिक्षुयों को भगवान् बुद्ध द्वारा दिया गया सर्वप्रयम उपदेश। धम्म-चक्ख्, नपुं०, धमं-चक्षु। घम्म-चरिया, स्त्री०, धर्माचरण। धम्मचारी, पु०, धर्मानुसार धाचरण करने वाला। घम्म-चेतिय, नपुं०, पवित्र धमं-प्रन्थालय। धम्मजातक, घमं तथा ग्रधमं का शास्त्रायं (४५७)।

धम्मजीवी, वि०, धर्मानुसार जीवन वाला । घम्मञ्जा, विल, धमंज्ञ । घम्मट्ठ, वि०, धर्म-स्थित । घम्मंटिठति, स्त्री०, धमं-स्थिति । धम्म-तक्क, प्०, धमं-तकं, सही तकं करना। धम्मता, स्त्री०, स्वामाविक नियम । धम्म-दान, नपुं०, धर्म-दान । यम्म-दायाद, वि०, धर्म का उत्तरा-धिकारी। धम्म-दीप, वि०, धर्म-द्वीप। धम्म-देसना, स्त्री०, धर्म-देशना, धर्म का उपदेश। धम्म-देस्सी, पु०, धर्म-द्वेषी। धम्म-धज, वि०, जो धमं को ही ध्वजा समभे। धम्मद्धज-जातक, वनारस-नरेश रिश्वतलोर काळक पुरोहित तया . धमंद्वज नामक धार्मिक पुरोहित का संघपं (२२०)। घम्मद्वज जातक, धमंच्वजी कौवे ने दूसरे पक्षियों को धोखा देकर उन सबके ग्रण्डे-वच्चे खा डाले (३५४)। धम्मघर, वि०, धमं-घर। धम्म-नियाम, प्०, प्राकृतिक नियम, स्वामाविक नियम। धम्मनी, पू०, गृह-सपं। घम्म-पण्णाकार, पुं०, घमं-मेंट। धम्म-पद, नपुं०, धमं के पद्य, खुद्क-निकाय का दूसरा ग्रन्थ। सम्भवतः यह थेरगाथा व थेरीगाया के बाद का गाया-संकलन है। घम्मपद-ग्रट्ठकथा, धम्मपद की वैसी ही धर्थ-कथा, जैसी जातक धर्थ-कथा

(जातकट्ठकथा)। घम्मप्पमाण, वि०, घमं-माप। घम्म-भण्डागारिक, पु०, खजान्ची, भगवान बुद्ध के निकटतम शिष्य ग्रानन्द के लिए प्रयुक्त । घम्म-भेरि, स्त्री०, धर्म का ढोल । घम्म-रक्खित, वि०, घमं-रक्षित। धम्म-रत, वि०, घमं-रत, घमं-प्रिय। घम्म-रति, स्त्री०, धमं-प्रीति । धम्म-रस, पु०, धर्म-रस। घम्म-राजा, पुं०, धमं-राजा, मगवान् बुद्ध के लिए प्रयुक्त । धम्म-लद्ध, वि०, धमं से प्राप्त । धम्मवर, पु०, धर्म-श्रेष्ठ। धम्मवादी, वि०, धर्मानुसार वोलने वाला। धम्म-विचय, प्०, धमं का चयन, धमं-मीमांसा। घम्म-विदू, वि०, धर्म का जानकार। घम्म-विनिच्छय, पू०, धार्मिक निश्चय । धम्म-सङ्गिण, ग्रमिधम्म-पिटक के सात प्रकरणों में से पहला ग्रन्थ। धम्म-संविभाग, पु०, धर्मानुसार वेंट-वारा। घम्म-संगीति, स्त्री०, धमं-संगायन । धम्म-संगाहक, प्०, धमं का संग्रह करने वाला। धम्म-समादन नपुं०, धमं का ग्रहण। बम्म-सवण, नपुं०, धमं का श्रवण। धम्म-साकच्छा, स्त्री०, धार्मिक चर्चा। धम्म-सेनापति, पु०, धमं-सेनापति, प्रायः भगवान् बुद्ध के अग्रथावक सारिपुत्र के लिए प्रयुक्त । धम्म-सोग्ड, वि०, धमं-प्रेमी।

घम्माधिपति, वि०, धमं को स्वामी मानने वाला। धम्मानुधम्म, पु०, धर्मानुसार ग्राच-घम्मानुवत्ती, वि०, धर्मानुयायी। घम्माभिसमय, पुं०, घमं की समभा। धम्मामत, नवं०, धमं-रूपी ग्रम्त । घम्मादास, पु०, धमं-दर्गण। धम्माधार, वि०, धमं ही सहारा। धम्मासन, नपुं०, धमसिन । धम्मिक, वि०, धार्मिक, धर्मानुकल। धिम्मल्ल, पु०, वालों की गाँठ। धम्मीकथा, स्त्री०, धार्मिक कथा। घर, वि०, धारण करनेवाला। धरण, नपुं०, भार-विशेष; वि०, घारण करने वाला। घरणी, स्त्री०, पृथ्वी। घरति, किया, धारण करता है, जारी रहता है। धरा, स्त्री०, भूमि। धव, पु०, पति, वयूल का पेड़। धवल, वि०, श्वेत, स्वच्छ; पु०, श्वेत रंग। धात, कृदन्त, भरा-पेट, संतुष्ट । घातकी, स्त्री॰, ग्रग्निज्वाला । धाती, स्त्री ०, दाई। स्वामाविक ग्रवस्था, घातु, स्त्री०, पवित्र (ग्रस्थि) घातु, शब्द का मूल-स्वरूप, शारीरिक धातु, इन्द्रिय। घातु-कया, स्त्री०, धातुम्रों की ब्यास्या। ग्रमिधम्मपिटक का तीसरा ग्रन्थ। घातु-घर नपुं०, पवित्र घातु-गृह । धात-नानत्त, नप्ं, धातुयों के नाना प्रकार।

बातु-विभाग, पु॰, घातुमीं का पृथक्-पृथक विश्लेषण। घातुक, वि॰, घातु की प्रकृति लिये। घाना, स्त्रींं, मुना हुम्रा जी। बार. वि॰, घारण करनेवाला। थारक, वि०, घारण करनेवाला, पालन-पोषण करंनेवाला, याद रखने वाला। घारण, नपुं॰, घारण करना। घारा, स्त्री॰, (जल-)घारा। घाराघर, पु०, बादल। धारित, कृदन्त, धारण किया हुआ। घारी, वि०, घारण करनेवाला। घारेति, किया, घारण करता है। धारेतु, पु०, घारण करनेवाला। घारेन्त, कृदन्त, घारण करता हुआ। घारेसि, अतीत० किया, घारण किया। घारेत्वा, पूर्व ० - ऋिया, घारण करके। धावति, किया, दौड़ता है। बाबन्त, कृदन्त, दौड़ता हुग्रा। वावि, ग्रतीत ॰ किया, दौड़ा। घावित, कृदन्त, दौड़ा हुआ। घाविय, पूर्व ०- किया, दोड़कर। घावित्वा, पूर्वं वित्रया, दौड़कर। घावन, नपुं०, दौड़। घावी, वि०, दौड़ने वाला। बि, ग्रब्यय, धिक्कार। धिक्कत, वि०, घृणित। धिति, स्त्री०, धैयं, सहन-शक्ति। षितिमन्तो, वि०, घृतिमान। षी, स्त्री॰, बुद्धि। घीमन्तो, वि०, वुद्धिमान। घीतलिका, स्त्री०, गुड़िया। चीतु, स्त्री॰, घी, बेटी। चीतु-पति, पु॰, जामाता, जैवाई।

घीयति, ऋिया, उत्पन्न होता है। धीयमान, कुदन्त, उत्पन्न होने वाला। धीर, वि०, बुद्धिमान। घीरत्त, नपुं०, घीरज, घीरता, धैयं-माव। धीवर, पु॰, मछुग्रा । घुत, कृदन्त, घुना गया, हटाया गया। घुतङ्ग, नपुं०, तपस्वियों के वत-विशेष। युत-घर, वि०, धुतङ्गधारी। ष्तवादी, पु०, धुतङ्ग-ग्रम्यासी । घुत्त, पु॰, घूतं। घुत्तक, पु०, घूर्त । घुत्तिका, स्त्री०, धूर्तपन। घुत्ती, स्त्री०, घूतंपन । धुनन, नपुं०, हटाना, दूर करना, भाड़ घुनाति, किया, हिलाता है, दूर करता घुनन्त, कृदन्त, घुनता हुमा। घुनितब्ब, कृदन्त, धुनने योग्य। घुनित्वा, पूर्व ०-ऋिया, घुनकर। घुपित, कृदन्त, गर्म किया गया। घुर, नवं०, उत्तरदायित्व। घुर-गाम, पु॰, पड़ोसी ग्राम। घुरंघर, वि०, पदाधिकारी। घर-निक्खेप, पु॰, पद-परित्याग। घुर-भत्त, नपुं०, नियमित मोजन। घुर-वहन, नपुं०, पद-घारण। घुरवाही, पु०, मारवाहक पशु। घुर-विहार, पु॰, पड़ोसी विहार। घुव, वि०, स्थायी। घुवं, ऋया-विशेषण, घ्रुव, लगातार, सिलसिनेवार i

घूत, देखी घुत। घूप, पु॰, धूप (-बत्ती)। घूपन, नपुं०, घूप जलाना, छौंकना । घूपायति, किया, घुम्रा देता है। घूपायी, कृदन्त, घुम्रौ दिया। घूपायन्ति, कृदन्त, घुम्रौ देता हुम्रा । घूपायित, कृदन्त, घुम्रां दिया हुम्रा । घूपेति, कि०, छोंकता है। धूपेसि, अतीत • किया, छोंका। घूपित, कृदन्त, छोंका हुआ। घूपेत्वा, पूर्व ० किया, छौंककर। धूम, पु०, घुआं। धूम-केत्, पु०, धूम-केतु तारा। धूम-जाल, नपुं०, धुएँ का जाल। घूम-नेत्त, नपुं०, घुग्रां निकलने का रास्ता । घूम-सिख, पु॰, घूम्र-शिखा, प्राग।

घूमयति, ऋिया, घूम्रपान करता है, घ्यां करता है। घुमायति, देखो घूमयति । घूमायितत्त, नपुं०, घुंघला करना, ग्रस्पष्ट करना। घुमायि, ग्रतीत० किया, घूम्रपान किया। घूलि, स्त्री०, घूल। घूसर, वि॰, मटमैला। घेनु, स्त्री०, गौ। धेनुष, पु०, दूघ पीता बछड़ा। घोत, कृदन्त, घोया हुमा। घोन, वि०, बुद्धिमान । धोरव्ह वि०, भार वहन करने में समयं। घोवति, किया, घोता है। घोवन, नपुं०, घोना।

न

न, प्रव्यय, नहीं।
नकुल, पु०, नेवला।
नकुल, पु०, नेवला।
नकुल-जातक, साँप तथा नेवले में मी
मंत्री-सम्बन्ध स्थापित होने की कथा
(१६५)।
नक्क, पु०, कछुग्रा।
नक्कत्त, नपुं०, नक्षत्र।
नक्कत्त-कोळा, स्त्री०, नक्षत्र-कीडा।
नक्कत्त-पाठक, पु०, ज्योतिषी।
नक्कत्त-पोग, पु०, नक्षत्रों का योग,
जन्म-पत्री।
नक्कत्त-राज, पु०, चन्द्रमा।
नक्कत्त-राज, पु०, चन्द्रमा।
नक्कत्त-जातक, नक्षत्र के ग्रनुसार शादी
करने जाकर वर-पक्ष वालों ने ग्रपना

काम विगाड़ा (४६) ।
नल्ल, पु॰ तया नपुं॰, नालून ।
नल्ल, पु॰ तया नपुं॰, नालून ।
नल्ल, पु॰, पंजा ।
नरवी, वि॰, पंजों वाला ।
नगर, नपुं॰, छोटा शहर ।
नगर, नपुं॰, छोटा शहर ।
नगर-गुत्तिक, पु॰, नगराधिपति ।
नगर-वासी, पु॰, नगरिक ।
नगर-सोधक, पु॰, नगर-शोधक, शहर
की सफाई करने वाला ।
नगर-सोभिनी, स्त्री॰, नगर-वधू ।
नग्ग, वि॰, नग्न, नंगा ।
नग्ग-वरिया, वि॰, नग्न रहना ।

नग्ग-समण, वि०, नग्न-श्रमण। निगय, नपुं०, नग्नता, नंगापन्। नङ्गल, नपुं०, हल। नङ्गल-फाल, पु०, हल की फाल। नङ्गलीस जातक, मूखं विद्यार्थी हर चीज की उपमा हल की फाल से ही देता था (१२३)। नङ्गुट्ठ, नवं०, प्रा, दुम। नङ्गुट्ठ जातक, ब्रह्मचारी ने ग्राम-देवता को गी की पूछ ही अपित की (888) 1 नङ्ग्राल, पूंछ, दुम। न चिरस्सं, त्रिया-विशेषण, भ्रचिर काल में, घोड़े समय में। नच्च, नपुं०, नृत्य, नाटक । नच्च जातक, हंस-राज ने निलंज्ज मोर को ग्रपनी कन्या नहीं दी (३२)। नच्चट्ठान, नपुं०, न्त्य-स्थान, नाटक-नच्चक, पु०, नाचने वाला, नाटक का नच्चित, क्रिया, नाचता है। निच, ग्रतीत० किया, नाचा। नच्चन्त, कृदन्त, नाचता हुग्रा। निचत्वा, पूर्वं अत्या, नाचकर। नच्चन, नपुं०, नाचना, नाच । नट, पु०, नृत्यकार। नटक, पु०, नृत्यकार नट्ट, नपुं०, नृत्य, नाटक। नट्टक, पु०, नृत्यकार । नट्ठ, कृदन्त, नष्ट हुमा। नत, कृदन्त, भुका हुगा। नति, स्त्री०, नम्रता, भूकाव। नत्त, नपुं ०, नृत्य, नाटक ।

नत्तक, पु०, नृत्यकार। नत्तकी, स्त्री०, नतंकी। नत्तन, नपुं०, नृत्य, नाटक। नत्तमाल, पु॰, वृक्ष-विशेष। नत्तु, पु॰, नाती। नित्थ, किया, नहीं है। नितथक-दिद्ठ, नप्ं०, नास्तिक मत। नित्यक-वादी, पु०, नास्तिक। नित्यता, स्त्री०, नास्तिकता। नित्य-भाव, पु०, न होने का माव। नत्यु, स्त्री०, नाक । नत्यु-कम्म, नपुं०, नाक की चिकित्सा, नाक के माध्यम से चिकित्सा। नदति, किया, गर्जता है। नदि, ग्रतीत० किया, गर्जा। नदन्त, कृदन्त, गर्जता हुमा। नदित, क्दन्त, गर्जा हुआ। नदिरवा, पूर्व ० किया, गर्जकर। नदन, नपुं०, गर्जन। नदी, स्त्री०, नदी, दरिया। नदी-क्ल, नपुं ०, नदी-तट। नदी-दुरग, नपुं०, जहाँ पहुँचने में नदी वाधक हो। नदी-मुख, नपुं०, नदी का मुहाना। नद्ध, कृदन्त, वँधा हुमा। निद्ध, स्त्री०, चमड़े की रस्सी। नन्द थेर, शुद्रोदन तथा महाप्रजापति गौतमी की सन्तान । सिद्धार्थं गौतम का सीतेला भाई। नन्द, नव-नन्द नाम से प्रसिद्ध नौ राजागण। नन्द जातक, पिता ने अपने दास नन्द को ग्रपने गाड़े घन की जगह बता दी

थी ग्रीर कह दिया था कि पुत्र के बड़े होने पर वह उसे बता दे 1 (35) ननन्दा, स्त्री०, ननद। ननु, भ्रव्यय, निश्चय से। नन्दक, वि०, खुशी देनेवाला, ग्रानन्द-दायक। नन्दति, किया, प्रसन्न होता है। निन्द, ग्रतीत ० किया, प्रसन्न हुन्ना । निर्दत, कृदन्त, प्रसन्नचित्त । नन्दमान्, कृदन्त, प्रसन्त होता हुआ। नन्दितव्व, कृदन्त, प्रसन्न करने योग्य। निन्दत्वा, पूर्व ० - क्रिया, प्रसन्न करके । नन्दन, नपुं०, प्रसन्नता, इन्द्र-नगर का उद्यान। नित्र, स्त्री०, मनोविनोद। नन्दिक्खय, पु०, तृष्णा का क्षय। नन्दि-राग, पु०, ग्रनुराग। नन्दि-संयोजन, नपुं०, तृष्णां का बंधन । नन्दियमिंग जातक, नन्दिय मृग की सच्चरित्रता ने उसकी तथा उसके माता-पिता की रक्षा की (३८४)। नन्दि विसाल जातक, नन्दि विसाल व्यम ने शतं जीतकर अपने मालिक को धनी बनाया (२८)। नन्धति, ऋिया, बाँधता है। निःघ, ग्रतीत० किया, बाँघा। नन्त्रित्वा, पूर्वं किया, बांध कर। नपुंसक, पु०, नपुंसक, पुरुपत्व-हीन । नभ, पु॰ तथा नपुं॰, म्राकाश। नमक्कार, पु०, नमस्कार। नमति, किया, भुकता है। निम, धतीत • किया, भुका। नमन्त, कृदन्त, भूकता हुमा।

निमत्वा, पूर्वं वित्या, भूककर। निमतब्ब, कृदन्त, भुकना चाहिए। नमस्सति, क्रिया, नमस्कार करता है। नमस्सि, ग्रतीत० किया, नमस्कार किया। नमस्सित्वा, पूर्व ०-क्रिया, करके। नमस्सिय, कृदन्त, नमस्कार करने योग्य। नमस्कार करने के नमस्सितं, लिए। नमस्सन, नपुं०, नमस्कार। नमस्तना, स्त्री०, नमस्कार। नमुचि, पु०, नष्ट करने वाला, मृत्यु, 'मार' का नाम। नमो, भ्रव्यय, नमस्कार है। नम्यदा, स्त्री०, नमंदा नदी। नय, पु०, ऋम, पद्धति, ढंग, ठीक परि-नयति, क्रिया, ले जाता है, मागं-दर्शन करता है। देखो नेति। नयन, नपुं० ग्रांख, ले जाना,। नयनाव्ध, पु॰, जिसके नयन ही उसके शस्त्र हों-यमराज। नय्हति, क्रिया, बांधता है। नरहन, नपुं०, बंघन, बांधना। निटहत्वा, पूर्व ०-किया, बांघकर। नर, पु॰, ग्रादमी। नरक, नपुं०, नरक, जहन्तुम। नर-देव, पु०, राजा। नर-वोर, पु॰, नरों में वीर, प्राय: मगवान् बुद्ध के लिए प्रयुक्त । नर-सीह, प्०, नरों में सिह, प्रायः

मगवान् बुद्ध के लिए प्रयुक्त । नराधम, पु०, भ्रधम भ्रादमी, नीच पुरुष । नरासभ, पु॰, ग्रादिमयों का स्वामी, प्राय: भगवान् बुद्ध के लिए प्रयुक्त । नरुत्तम, पु०, भादिमयों में श्रेष्ठ, प्रायः भगवान् बृद्ध के लिए प्रयुक्त । नळपान जातक, बंदरों ने सरकण्डे के माध्यम से जलाशय का पानी पिया (20)1 नलाट, नपुं•, ललाट, मस्तक । नितनी, स्त्री०, जलाशय, कमल-जला-नव, वि॰ नया, नी। नव-कम्म, नपुं॰, नया काम, मरम्मत। नव-कम्मिक, वि०, नया काम (भवन-निर्माण) कराने वाला। नवङ्ग, वि०, जिसके नी हिस्से हों। नव-नवृति, स्त्री ०, निन्नानवे । नवक, पु॰, नवागन्तुक, तरुण, जो नया-नवा संघ में प्रविष्ट हुआ हो; नपुं०, नी उन्हों का समूह। नवकतर, वि॰ तरुण से भी तरुण। नवनीत, नपुं०, मक्खन। नवम, वि०, नौवां। नवमी, स्त्री०, चान्द्र मास की नवमी। नवृति, स्त्री०, नब्बे। नस्सति, त्रिया, नष्ट होता है, लुप्त होता है। निस्स, प्रतीत० किया, नष्ट हुग्रा। नस्सन्त, कृन्दत, नष्ट होता हुमा। निस्तत्वा, पूर्व ०-किया, नप्ट होकर। नस्सन, नपुं०, नाश। नहात, कृदन्त, स्नान किया हुमा 1

नहान, नपुं०, स्नान । नहानिय, नपुं०, स्नान-सामग्री। नहापक, पु॰, नहलाने वाला। नहापन, नपुं०, स्नान, धोना । नहापित, पु०, नाई; कृदन्त, नहाया हुमा। नहापेति, क्रिया, नहलाता है। नहापेसि, ग्रतीत • किया, नहलाया। नहापेन्त, कृदन्त, नहाते हुए। नहापत्वा, पूर्व ० - क्रिया, स्नान करके। नहायति, ऋिया, नहाता है। नहायि, ग्रतीत ॰ क्रिया, नहाया। नहायन्त, कृदन्त, नहाते हुए। नहायिन्या, पूर्व ०-क्रिया, नहाकर। नहायितुं, नहाने के लिए। नहायन, नपुं ०-स्नान । नहार, पु०, नस। नहि, भ्रव्यय, नहीं। नहूत, नपुं, दंस हजार। नळ, पुं०, सरकण्डा। नळकार, पुं०, टोकरी बनाने वाला। नळ-कलाप, पुं०, सरकण्डों का ढेर। नळ-मीन, पुं०, समुद्री केकड़ा। नळागार, नपुं०, सरकण्डों की भोंपड़ी। नळिनिका जातक, राजकुमारी नळि-निका को ऋषि शृंग का तप भ्रष्ट करने के लिए भेजा गया (५२६)। नाक, पुं०, स्वगं। नाग, पुं॰, सपं; हाथी, वृक्ष-विशेष, श्रेष्ठ, पुरुष । नाग-दन्त, नपुं०, हाथी दांत की कील या खूंटी। नाग-दोप, सिहलद्वीप का उत्तरी माग, वतमान जाफना।

नाग-बल, वि०, हाथी के बल सद्श वल वाला। नाग-बला, स्त्री०, गंगेरन (लता-विशेष)। नाग-मवन, नपुं०, नागों का निवास-नाग-माणवक, प्०, नाग-तरुण। नाग-माणविका, स्त्री०, नाग-तरुणी, नाग-कुमारी। नाग-राज, पु०, नागों का राजा। नाग-रुक्ख, पु०, नाग-वृक्ष । नाग-लता, स्त्री०, पान की बेल । नाग-लोक, प्०, नाग-संसार। नाग-वन, नप्ं, नागों का वन। नागसेन थेर, मिलिन्द राजा शास्त्रार्थं करने वाले प्रसिद्ध नागसेन म्थविर । नागर, वि०, नगर वाला, शहरी। नागरिक, वि०, नगर से सम्बन्धित। नाटक, नपुं०, ड्रामा। नाटकित्थि, स्त्री०, नृत्य-कुमारी। नानच्छन्द जातक, पुरोहित ने घर के लोगों से परामर्श किया कि वह राजा से क्या चीज माँगे। किसी ने किसी चीज का नाम लिया, किसी ने दूसरी चीज का। इस प्रकार नाना मांगें सामने ग्राई (२८६)। नाथ, पू०, संरक्षण, संरक्षक; लोक-नाथ, पू॰, लोकों के संरक्षक, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त नाम। नाद, पु०, प्रावाज। नानता, स्त्री॰, नानत्व, विविधता। नानत्त, नपुं०, नानत्व, विविधता । नानत्त-काय, वि०, नाना प्रकार के

शरीरों वाला। नाना, ग्रव्यय, भनेक, भिन्न-भिन्न । नाना-कारण, नपुं०, ग्रनेक कारण। नाना-गोत्त, वि०, ग्रनेक गोत्र। नाना-जच्च, वि०, भ्रनेक जातियों का। नाना-जन, प्०, अनेक प्रकार की जनता। नाना-तित्यिय, वि०, नाना सम्प्रदाय के लोग । नाना-प्रकार, वि०, ग्रनेक प्रकार। नाना-रत्त, वि०, नाना वर्ण । नानावाद, प्०, नानावाद । नाना-विध, वि०, नाना प्रकार का। नाना-संवास, वि०, जो ग्रलग-ग्रलग रहते हों। नाभि (नाभी भी), स्त्री॰, नाभी, पेट का मध्य-विन्द्, चक्र का मध्य-भाग। नाम, नप्०, नाम, व्यक्तित्व का चैत-सिक-भाग; वि०, नाम (वाला)। नाम-करण, नपुं०, नाम रखना। नाम-गहण, नपं०, नाम ग्रहण करना। नाम-धेय (नाम-धेय्यं भी),नपुं ०, नाम; वि०, नाम वाला। नाम-पद, नपुं०, नाम, संज्ञा। नामक, वि०, नाम से, नाम मात्र का। नामसिद्धि जातक, शिष्य ग्रच्छा-सा नाम खोजने जाकर ग्रपने पहले वाले नाम 'पापक' से ही संतुष्ट होकर लीट म्राया (६७)। नामेति, क्रिया, भुकाता है। नामेसि, ग्रतीत० किया, भुकाया । नामित, कुदन्त, भुकाया गया। नामेत्वा, पूर्वं शिया, भुका कर। नायक, पु॰, नेता, मार्ग-दशंक । नायिका, स्त्री०, मार्ग-दशिका।

नारङ्ग, पु॰, नारंगी का पेड़। नाराच, पु०, लोहे की छड़, एक प्रकार का तीर। नारी, स्त्री०, ग्रीरत। नालं, ग्रव्यय, ग्रपयांप्त, प्रतिकृत । नालंदा, राजगृह के पास का प्रसिद्ध स्थान, जहां मगवान् बुद्ध कई बार ठहरे ये ग्रीर जहां बाद की सदियों में बोद्ध विश्वविद्यालय बना । नाल, पु॰, मालिका, नाली। नालागिरि, राजकीय हस्तिशाला का हाथी, जिसे देवदत्त की प्रेरणा से गीतम बुद्ध को शारीरिक हानि पहुँ-चाने के लिए उन पर छोड़ा गया था। नालि, स्थीं , माप-विशेष । नालिमत्त, वि॰, नालिमात्र, सिफं एक नाति । नालिका, स्त्री०, नाली। नालिका-यन्त, नपुं०, घड़ी। नालिकेर, पु॰, नारियल। नालि-पट्ट, पु०, टोपी। नावा, स्त्री०, जहाज। नावा-तित्य, नपुं०, नौका का पत्तन। नावा-संचार, पु०, नौकामों का माना-जाना । नाविक, पु॰, मल्लाह, मौभी। नाविकी, स्त्री॰, मल्लाहिन, मांभी की स्त्री । नावतिक, वि०, नव्दे वर्ष का। नास, पु०, नाश, मृत्यु। नासन, नपुं०, नाश करना, त्याग देना, निकाल बाहर कर देना। नासा, स्त्री०, नाक, नासिका। नासा-रज्जु, स्त्री०, नकेल ।

नासिका, स्त्री०, नाक। नासेति, किया, नष्ट करता है, खराब कर देता है, मार डालता है। नासेसि, ग्रतीत • क्रिया, नष्ट किया। नासित, कृदन्त, नष्ट किया हुआ। नासेत्वा, पूर्व ०- फिया, नप्ट करके। नासितब्ब, नष्ट करने योग्य। निकट, नपुं०, पड़ोस; वि०, पास। निकट्ठ, वि०, निकृष्ट, गिरा हुमा। निकटि, स्त्री०, ठगी। निकत, वि०, काटी। निकति, स्त्री ०, टगी। निकन्त, कृदन्त, कटा हुमा। निकन्तति, किया, काटता है। निकन्ति, प्रतीत • किया, काटा; स्त्री •, इच्छा। निकन्तित, कृदन्त, कटा हुमा। निकन्तित्वा, पूर्व ०-किया, काटकर। निकर, पु०, समूह। निकस, पु॰, कसीटी। निकामना, स्त्री ०, इच्छा (= निकन्ति)। निकामलाभी, वि०, विना कठिनाई से प्राप्त करने वाला। निकामेति, किया, इच्छा करता है, चाहता है। निकामेसि, ग्रतीत ॰ किया, इच्छा की। निकामित, कृदन्त, इच्छा किया हुमा। निकामेन्त, इच्छा करता हुआ। निकाय, पु॰, समूह, सम्प्रदाय, संग्रह। निकास, पु०, पड़ोस । निकिट्ठ, वि०, निकृष्ट । निकुञ्ज, पु॰ तथा नपुं॰, वृक्षों तथा भाड़ियों से ढका घना स्थान। निक्जिति, किया, क्जता है।

निक्जि, स्रतीत । किया, शब्द किया। निक्जित, कृदन्त, शब्द किया हुमा। निकजमान, कृदन्त, यदद करता हुआ। निकेतन, नप्ं, निवास-स्थान, घर। निक्काङ्क, वि०, ग्रसंदिग्ध। निक्कडून, नपुं०, बाहर खींच लाना। निवकण्टक, वि०, निष्कण्टक, कौटों या शत्र प्रों से रहित। निक्कद्दम, वि०, कदंम-रहित, कीचड़-रहित । निक्कम, पू०, प्रयत्न । निक्करण, वि०, करणा-विहीन। निक्कसाव, वि०, ग्रपवित्रता से मुक्त। निक्काम, वि०, कामना-रहित । निक्कारण, विव, बिना कारण के। निक्कारणा, किया-विशेषण, कारण-रहित । निक्किलेस, वि०, विकार-रहित। निक्कुज्ज, वि०, फेंका गया। निक्कुज्जेति, क्रिया, उलट देता है। निक्कुज्जेसि, ग्रतीत० क्रिया, उलट दिया । निक्कुजित, कृदन्त, उलट दिया गया। निक्कुज्जेत्वा, पूर्व ०-क्रिया, उलट कर। निक्कृज्जिय, उलट देने योग्य । निक्कुह, वि०, विना ढोंग के। निक्कोध, वि०, कोध-रहित । निक्केस-सीस, पु०, गंजा सिर। निकल, पु०, निकप, स्वर्ण-मुद्रा । निक्लन्त, कृदन्त, (घर से) बाहर निकला हुया। निक्लम, पु०, निष्क्रमण। निक्समण, नपुं०, निष्क्रमण, विदाई। निक्लमित, क्रिया, (घर से) बाहर

जाता है। निक्लमि, धतीत । किया, निकला। निक्खमन्त, कृदन्त, निकलता हुमा। निक्लिमित्वा, पूर्व ० - क्रिया, निकलकर। निक्लम्म, पूर्वं श्रिया, निष्क्रमण कर। निक्लमितव्व, निष्क्रमण करने योग्य। निदलमितं, निप्कमण करने के लिए। निक्खमनीय, पु०, सावन का महीना। इस महीने में बच्चे को बाहर निकाल कर मुयं का दशंन कराया जाता है। निक्खामेति, किया, निकाल बाहर करता है। निक्लामेसि, अतीत • किया, निकाला। निक्लामित, कूदन्त, निकाला हुमा। निक्खामेन्त, कृदन्त, निकालता हुमा। निक्लामेत्वा, पूर्व ०-किया, निकाल कर। निविखक, पु०, कोपाध्यक्ष, खजांची। निक्खित्त, कृदन्त, रखा गया। निक्लिपति, किया, एक ग्रोर रल देता है। निविखपि, भतीत । क्रिया, रसा। नि विखपन्त, कृदन्त, रस्तता हुमा। निक्खिपत्वा, पूर्व । किया, रख कर। निक्खिपतब्ब, रखने के योग्य। निक्सेप, पु॰, निश्नेप, रख देना। निक्खेपन, नपुंज, निक्षेपण, घर देना। निखणति (निखनति मी), किया, खनता है, खोदता है। निखनि, प्रतीत० ऋिया, खोदा । निलात, कृदन्त, सोदा हुमा। निसनन्त, कृदन्त, सोदते हुए। निखनित्वा, पूर्व०-क्रिया, खोद कर। निखादन, नपं०, छेनी। निखिल, वि०, समस्त ।

निगच्छति, किया, धनुमव करता है, सहन करता है। निगण्ठ, निग्रंन्य, जैन सम्प्रदाय का संन्यासी । निगण्डनायपुत्त, बुद्ध के समकालीन छह प्रसिद्ध माचायों में से एक। जैनों के प्रन्तिम तीयंकर वर्धमान महावीर । निगति, स्त्री॰, माग्य, भवस्या, भाच-निगमं, पु०, कस्बा। निगमन, नपुं०, व्याख्या, उद्धरण, ब्ष्टान्त । निगल, पु॰, हायी के पैर की जंजीर। निग्हति, किया, ढकता है, छिपाता है। निगृहि, ग्रतीत । किया, छिपाया । निगूहित, कृदन्त, छिपाया हुम्रा । निगूळ्ह, कृदन्त, छिपाया हुग्रा। निगृहित्या, पूर्व ०-क्रिया, छिपाकर। निगूहन, नपुं०, छिपाना । निग्गच्छति, क्रिया, बाहर जाता है। निगाण्ठ, वि०, ग्रन्थ-रहित। निग्गण्हन, नपं०, निग्रह करना, डाटना-डपटना । निगण्हाति, क्रिया, दोषारोपण करता है, डांटता-डपटता है। निगाण्ह, मतीत • किया, निग्रह किया। निग्गहोत, कृदन्त, निग्रह किया गया; नपुं०, मनुस्वार। निगगण्हन्त, कृदन्त, निग्रह करता हुमा। निग्गय्ह, पूर्व ०- त्रिया, निग्रह करके। निग्गहित्वा, पूर्व ०-िक्रया, निग्रह करके। निग्गम, पु०, बाहर जाना, बाहर निक-सना।

निग्गमन, नपुं॰, बाहर जाना, विदा होना । निग्गयह-वादी, पु०, निग्रह करने वाला, दोप दिखाने वाला। निग्रोध मिग जातक, निग्रोध मृग ने श्रपनी जान देकर भी अपने पक्ष की मृगी ग्रीर उसके बच्चे की प्राण-रक्षा करनी चाही। वह सभी के प्राण बचाने में सफल हुआ (१२)। निग्गह, पु०, निग्रह, दोषारोपण करना। निग्गहेतब्ब, कृदन्त, निग्रह करने योग्य। निग्गाहक, पु०, निग्रह करने वाला। निग्गुण्ड (निग्गुण्डी भी), स्त्री०, बूटी-विशेष। निग्गुम्ब, वि०, जहाँ भाड़-भंखाड़ न निग्घातन, नपुं०, हत्या, विनाश। निग्घोस, पू०, निर्घोष, चिल्लाना । निग्रोध, पु०, वट वृक्ष, बरगद का पेड़। निग्रोध-पक्क, नपुं ०, वट का पका फल। निग्रोध-परिमण्डल, वि०, वट का घेरा। निघंस, पू॰, रगड्ना। निघंसन, नपुं०, रगड्ना । निघंसति, क्रिया, रगड़ता है। निघंसि, ग्रतीत० किया, रगड़ा। निधंसित, कृदन्त, रगड़ा हुमा। निघंसित्वा, पूर्व ०-क्रिया, रगड्कर। निघण्ड, पु॰ निघंट, पर्याय वचनों का कोश। निघात, पु॰, मारना। निचय, पु०, संग्रह, घन। निचित, कृदन्त, संग्रहीत। निचुल, नपुं०, एक प्रकार का पौधा, मुचलिदो ।

निच्च, वि०, नित्य, लगातार। निचवं, ऋिया-विशेषण, नित्य, सदैव, लगातार। निच्च-कालं, क्रिया-विशेषण, सदैव। निच्च-दान, नपुं०, स्थायी दान । निच्व-भत्त, नवुं०, सतत मोजन-दानः। निच्च-सील, नपुं०, सतत शील-पालन, पंचशील। निच्चता, स्त्री०, नित्यता । निच्चम्म, वि०, चमं-रहित। निच्चल, वि०, निश्चल, स्थिर। निच्चोल, वि०, निवंस्त्र, नंगा। निच्छय, पु०, निश्चय। निच्छरण, नगुं०, बाहर भेजना, बाहर निकलना । निच्छरति, क्रिया, बाहर जाता है। धतीत॰ किया, बाहर निच्छरि. निकला। निच्छरितं, कृदन्त, बाहर निकला निच्छरित्वा, पूर्वं ऋया, बाहर निकल कर। निच्छात, वि०, बिना भूस के। निच्छारित, कुदन्त, प्रकट किया हुआ। निच्छारेति, क्रिया, प्रकट करता है, बोलता है। निच्छारेत्वा, पूर्वं किया, प्रकट करके। निच्छारेसि, भतीत० क्रिया, प्रकट किया, बोला। निच्छित, कृदन्त, निश्चित, विचारित, मीमांसित । निच्छनाति, किया, विचार करता है, विमर्षण करता है !

निज, वि०, स्वकीय, भ्रपना। निज-वेस, पु०, ग्रपना देश। निच्यट, वि०, सुलेका हुमा। निज्जर, वि०, जरा-रहित, रहित, जिसे बुढ़ापा न व्यापे । निज्जरेति, क्रिया, नष्ट करता है, विनाश करता है। निज्जिण्ण, कृदन्त, जरा-प्राप्त, ह्रास-निज्जिन्ह, वि०, जिह्वा-विहीन, बिना जीम के; पु०, जंगली मुर्गा। निज्जीव, वि०, निर्जीव। निज्झान, नपुं०, भन्तरं ष्टि । निज्ञायति, क्रिया, घ्यान लगाता है। निट्ठा, स्त्री०, अन्त, सारांश, निष्ठा। निट्ठाति, किया, समाप्त होता है, समाप्त करता है। निट्ठान, नपुं०, समाप्ति । निट्ठासि, भतीत । क्रिया, समाप्त किया। निट्ठापित, कृदन्त, पूरा कराया हुमा। निटठापेति, क्रिया, पूरा कराता है, समाप्त कराता है। निट्ठापेत्वा, पूर्व ० किया, पूरा करके। निट्ठापेन्त, कृदन्त, पूरा करता हुमा। निट्ठापेसि, धतीत० किया, कराया, समाप्त कराया। निट्ठित, कुदन्त, समाप्त, सम्पूर्ण। निट्ठुभति, किया, युकता है। निट्ठभन, नपुं०, युकना, युक । निट्ठुभि, पतीतं । किया, युका । निट्ठुभित, कृदन्त, युका हुमा। निट्ठुभित्वा, यूक करके। निट्ठूर, वि०, निष्ठूर, कठोर.

निदंयी। निट्ठुरिय, नपुं०, निष्ठुरता, निदंयता। निष्ट, नपुं , नीड़, घोंसला, विश्वाम-स्थल। निरुहेति, किया, घास-पात हटाता है। निण्णय, पु०, निणंय। नितम्ब, प्०, चूतड्, पवंत का किनारा। निसण्ह, वि०, तृष्णा-रहितं। निसल, वि०, गोल। नित्तिण्ण, कृदन्त, पार हुन्ना, तीणं हुमा । नित्त् दन, नपुं०, घोंपना, चुमाना । निसंज, वि०, तेज-रहित। नित्यरण, नपुं०, पार हो जाना, तर जाना, समाप्ति । नित्यरित, किया, पार होता है। नित्यरि, भतीत० क्रिया, पार हुमा। नित्यरित, कृदन्त, पार हुआ। नित्यरित्वा, पूर्वं विक्या, पार होकर। नित्यनन, नपुं०, कराहना। नित्यनाति, किया, कराहता है। नित्युनन्त, कृदन्त, कराहता हुया। नित्युनि, भतीत् किया, कराहा। नित्युनित्वा, पूर्वं किया, कराह करके। निवस्सन, नपुं०, उदाहरण, तुलना। निदस्सित, कृदन्त, दरसाया हुमा। निबस्सिय, पूर्व ० क्रिया, दरसाकर। निवस्सितब्ब, दरसाने योग्य। निबस्सेति, श्रिया, दरसाता है। निबस्सेसि, भतीत० किया, दरसाया। निवस्सेत्वा, पूर्वं किया, दरसा करके। निबहति, किया, खजाना गाइता है। निदहि, यतीत • किया, गाडा। निवहित, कृदन्त, निहित, खजाना गाड़े हए । निवहित्या, पूर्वं क्रिया, खजाना गाड़ कर। निदाघ, पू॰, सूखा, ग्रीध्म-काल, गरमी। निदान. नपुं॰, मूल, कारण, उत्पत्ति । निवान-कथा, जातकट्ठकथा का ग्रारं-भिक ग्रंश (भूमिका)। निद्य, वि०, निदंय। निहर, वि०, दुख-रहित, भय-रहित। निद्दा, स्त्री०, निद्रा, नींद। निहारामता, स्त्री०, निद्रा-त्रियता । निद्दालु, वि०, निद्रालु। निद्दासीली, वि०, निद्रालु। निद्दायति, ऋिया, सोता है। निद्दायन, नपुं०, सोना। निद्यन्त, कृदन्त, सोता हुमा। निद्दायि, निद्दायित्वा, पूर्व । क्रिया, सोकर। निद्दिट्ठ, कृदन्त, निर्दिष्ट, निर्देश किया हुमा । निद्दिसति, किया, निदंश करता है। निहिसि, प्रतीत ० किया, निर्देश किया। निद्दिसितब्ब, निर्देश करने योग्य। निद्दिसित्वा; पूर्वं किया, निर्देश करके। निद्द्र बस, वि०, दुस-रहित। निद्देस, पु०, विश्लेषणात्मक व्याख्या, खुइक निकाय के प्रन्तगंत गिना जाने वाला एक टीका-ग्रन्थ। निहोस, वि०, निर्दोष, निर्मल ।

'निद्यन, वि०, निर्धन । निद्धन्त, कृदन्त, फूंक मारते हुए। निद्धमित, फूंक मारता है, बाहर निका-लता है। निद्धमि, प्रतीत • किया, फूंक मारी। निद्धमित्वा, पूर्व । क्रिया, फूंक मारकर। निद्धमन, नपुं०, नाली, नहर। निद्धमन-द्वार, नपुं०, तालाव के पानी का निकास। निद्धारण, नपुं०, निश्चित करना। निद्धारित, कृदन्त, निश्चित किया हम्रा। निद्धारेति, क्रिया, निश्चय करता है। निदारेसि, ध्रतीतः क्रिया, निश्चित किया। निद्धारेत्वा, पूर्वं किया, निश्चित करके। निद्धुनन, त्रपुं०, धुनना । निद्ध नाति, किया, धुनता है। निद्ध नि, रानीत किया, धुना। निद्ध नित्वा, पूर्वं शिया, धुनकर। निद्धोत, कृदन्त, घोया हुम्रा, साफ किया हम्रा, तेज किया हुमा। निधन, पु॰ तथा नपुं॰, मृत्यु, मौत। निघान, नपुं॰, छिपा खजाना । निघापित, कृदन्त, रखवाया हुमा। निधापेति, क्रिया, रखवाता है, गड़-वाता है। निघापेसि, ग्रतीत । क्रिया, रखवाया, गड्वाया। निघाय, पूर्व । क्रिया, रखकर, गाइकर। निधि, पु॰, छिपा खजाना। निधि-क्रिम, स्त्री०, खजाने का घड़ा। निषीपति, क्रिया, रखवाता है, गड़-

वाता है। निघेति, किया, रखता है, गाइता है। निचेसि, प्रतीत > किया, गाड़ा। निन्दति, ऋया, निन्दा करता है। (निन्दि, निन्दित, निन्दन्त, निन्दित्वा, निन्दितब्ब)। निन्दन, नपुं०, भपमान, भगौरव। निन्दना, स्त्री०, भपमान, भगौरव। निन्दिय, वि०, निन्दनीय। निन्न, वि०, निम्न; नपुं०, निम्न भूमि। निन्नता, स्त्री०, निम्नता। निन्नगा, स्त्री० नदी। निन्नहुत, नपुं०, संस्या-विशेष । निन्नाद, पु॰, स्वर-माधुर्य, लय, राग। निन्नादी, वि०, ऊँची भ्रावाज वाला। निन्नामेति, किया, भुकता है। (निन्नामेसि, निन्नामेत्वा, निन्ना-मित)।. निन्निमत्त, नपुं०, इच्छानुसार। निन्नेजक, पु०, घोबी। निन्नेतु, पु०, निणंय करने वाला, निर्णायक । निपक, वि०, दक्ष, बुद्धिमान। निपच्च, पूर्वं शिक्षा, गिरकर। निपच्चाकार, पु०, नम्रता। निपज्ज, पूर्व ० किया, लेटकर। निपज्जित, किया, लेटता है। (निपन्जि, निपन्न, निपज्जन्त, निपज्ज, निपज्जिय, निपज्जित्वा)। निपज्जन, नपुं०, लेटना। निपठ, पुर, पाठ। निपाठ, पु०, पढ़ना। निपतित, किया, गिरता है। (निपति, निपतित, निपतित्वा) ।

निपन्न, कृदन्त, लेटा। निपात, पु॰, गिरना, उतरना, ग्रव्यय-प्रत्यय । निपातन, नपुं०, गिरना, नीचे गिरना। निपाती, वि०, गिरने वाला, सोने वाला। निपातेति, क्रिया, गिरने देता है, गिराता है। (निवातेसि, निपातित, निपातेन्त, निपातेत्वा)। निपान, नपुं०, पशुग्रों की जल पीने की जगह। नियुण, वि०, दक्ष, होशियार। निपक्क, वि०, उबला हुमा। निष्पदेस, वि०, सर्व-व्यापक । निष्पपञ्च, वि०, प्रपञ्च-रहित। निष्पभ, वि०, निष्प्रम। निप्परियाय, वि०, बिना किसी भेद के। निप्पलाप, वि०, प्रलाप-रहित । निष्पाप, वि०, निष्पाप। निष्पाव, पु॰, सूप, छाज। निप्पितिक, वि०, पिता-विहीन। निप्पीळन, नपुं०, पीड़ना, दबाना, निचोड्ना । निप्पीळेति, किया, निचोड़ता है। (निष्पोळेसि, निष्पोळित, निष्पी-ळेत्वा) । निष्पुरिस, वि०, पुरुष-विहीन, स्त्रियाँ ही स्त्रियां। निष्पोचन, नपुं०, पीटना । निष्फज्बति, क्रिया, निष्पादन करता है, देखी निप्पज्जित । (निष्फिज्जि, निष्फिन्न, निष्फिज्जमान, निष्फिज्जित्वा)।

निष्फज्जन, नपुं०, परिणाम, प्रमाव, प्राप्ति । निष्फत्ति स्त्री ०, निष्पत्ति, प्राप्ति । निष्फल, वि०, निष्फल। निष्फादक, वि०, निष्पादक, उत्पन्न करने वाला। निष्फादन, नपुं०, उत्पत्ति। निष्फांदेति, क्रिया, उत्पन्न करता है। (निष्फादेसि, निष्फादित, निष्फादेन्त, निप्फादेत्वा)। निष्फादेतु, पु०, उत्पन्न करने वाला, उत्पादक । निष्फोटन, नपुं ०, पीटना । निष्फोटेति, किया, पीटता है। (निष्कोटेसि, निष्फोटित, निष्फोटेन्त, निप्फोटेत्वा)। निबद्ध, वि०, नियमित, लगातार। निबन्ध, पुर, बंधन। निबन्धन, नपु०, बंधन । निबन्धति, किया, बांधता है, प्रेरिक क़रता है। (निबन्धि, निबद्ध, निबद्धित्वा)। निब्बट्ट, वि०, बिना वीज के। निब्बट्टे ति, ऋिया, हटाता है। (निब्बट्टे सि, निब्बट्टित, निब्बट्टे त्वा)। निब्बत्त, कृदन्त, जिसका पुनर्जन्म हुमा हो। निब्बत्तक, वि०, उत्पन्न करने वाला। निब्बत्तनक, वि०, उत्पादक। निब्बत्तति, क्रिया, उत्पन्न होता है, परिणत होता है, जन्म ग्रहण करता (निब्बत्ति, निब्बत्त, निब्बत्तन्त, निस्वत्तित्वा)।

निब्बत्तन, नपुं०, उत्पत्ति । निब्बत्ति, स्त्री०, जन्म-प्रहण, प्रकट होना । निब्बत्तापन, नप्०, पूनर्जन्म । निब्बत्ते ति, किया, उत्पन्न करता है। (निब्बत्तेसि, निब्बत्तित, निब्बत्तेन्त, निब्बत्तेतब्ब, निब्बत्तत्वा) । निब्बन, वि०, तृष्णा-रहित, वन-रहित। निब्बनथ, वि०, तुष्णा-मूक्त। निब्बसन, वि०, निवंसन, बिना वस्त्र के। निब्बाति, क्रिया, बुक्त जाता है, ठण्डा पड़ जाता है, उत्तेजना-रहित हो जाता है। (निब्बायि, निब्बुत, निब्बायन्त, निब्बायित्वा)। निब्बान, नपुं ०, निर्वाण, (ग्राग्नि का) बुक्त जाना, मोक्ष । निब्बान-गमन, वि०, निर्वाण-गामी। निब्बान-धाः स्त्री०, निर्वाण-क्षेत्र । निच्वान-पत्ति, स्त्री०, निर्वाण-प्राप्ति । निब्बान-सच्छिकिरिया, स्त्री०, निर्वाण का साक्षात् करना। निब्बान-सम्पत्ति, स्त्री०, निर्वाण की प्राप्ति । निख्वानाभिरत, वि०, निर्वाण-प्राप्ति में अनुरक्त। निब्बापन, नपुं०, शान्त होना, बुक्तना। निब्बावेति, किया, बुक्ता देता है। (निब्बापेसि, निब्बापित, निब्बापेन्त, निब्बापेत्वा)। निब्बायति, किया, निर्वाण-प्राप्त होता है। निस्वायितं, निर्वाण प्राप्त करने के

लिए। निब्बाहन, नपुं ०, हटाना; वि०, बाहर किये हुए, बाह्य-कृत। निव्विकार, वि०, निविकार, भ्रपरि-वतंनशील। निध्विविकिच्छ, वि०, सन्देह-रहित। निब्बज्ज, कृदन्त, निर्वेद-प्राप्त । निव्विज्जति, किया, निवेंद प्राप्त करता (निश्विज्जि, निश्विन्न, निब्ब-जिजत्वा)। निब्विज्भति, किया, बींघता है। (निव्विज्ञि, निव्विद्ध)। निब्बदा, स्त्री०, निर्वेद । निब्बिन्बति, क्रिया, निर्वेद-प्राप्त होता है। (निव्विन्व, निब्बिन, न्दित्वा)। निव्विस, नपुं , मजदूरी ; वि , निर्विष । निब्बिसेस, वि०, समान, एक जैसा। निब्बुति, स्त्री०, शान्ति, सुख। निब्ब्यहित, किया, तैरता है। निब्बेठन, नप्ं, उघेड़ना, व्यास्या। निब्बेठेति, किया, उधेड्ता है। (निब्बेठेसि, निब्बेठित, निब्बेठेत्वा) । निब्बेध, पु०, घुसाना, घुसेड्ना । निब्बेमतिक, वि०, एकमत। निब्भय, वि०, निमंय। निब्भोग, वि०, व्यर्थ, वेकार। निभ, वि०, समान। निभा, स्त्री०, प्रकाश, चमक-दमक। निभाति, किया, चमकता है। निभासि, मतीत • किया, चमका । निमन्तक, वि०, निमंत्रण देने वाला ।

निमन्तन, नपुं०, निमंत्रण। निमन्तेति, किया, निमंत्रण देता है। (निमन्तेसि, निमन्तित, निमन्तेत्वा, निमन्तिय, निमन्तेन्त)। निमि जातक, सिर का सफेद बाल दिलाई देने पर प्रपने प्रनेक पूर्वजों की तरह निमि राजा ने भी सिहासन का त्याग कर दिया (४४१)। . निमित्त, नपुं०, चिह्न, शकुन, कारण। निमित्तगाही, वि०, ऊपरी चिह्नों से मांकवित । निमित्त-पाठक, पु॰, शकुनों की व्याख्या करने वाला, भविष्य-वक्ता। निमिनाति, किया, भादान-प्रदान करता है। (निम्मिनं, निमिनित, निमिनित्वा)। निमिस, (निमेस भी), पु०, ग्रांख का क्रपकना । निमिस्प्रित, किया, ग्रांस अपकता है, र्याख मारता है। निमीलेति, शांख अपकता है, शांख बंद करता है। (निमीलेसि, निमीलित, निमीलेत्वा)। निमीलन, नपुं०, ग्रांख ऋपकाना, ग्रांख मारना। निमुज्ज, कृदन्त, हुवकी लगाई हुई। निमुज्जति, क्रिया, इबकी लगाता है। निमुज्जित्वा, (निमुज्जि, ज्जितुं)। निमुज्जा, स्त्री०, ड्वकी मारना, ड्बकी। निमुज्जन, नपुं०, हुबकी लगाना। निमेस, पु॰, देखो निमिस । निम्ब, पु॰, नीम का वृक्ष ।

निम्मविखक, वि०, मक्खी-रहित । निम्मज्जन, तपुं०, निचोड्ना । निम्मथन, नपुं०, पीसना। निम्मयति, किया, पीस डालता है। (निम्मथि, निम्मथित, निम्मथित्या) । निम्मथेति, किया, पीस डालता है, दबा देता है। निम्मद्दन, नपुं०, मदित करना, दबा देना । निम्मल, वि०, निर्मल। निम्मंस, वि०, मांस-रहित। निम्मात-पितिक, वि०, ग्रनाथ, माता-पिता रहित। निम्मातिक, वि०, माता-विहीन। निम्मातु, पु॰, निर्माण करने वाला, रचियता। निम्माण, नपुं०, रचना, कृति। निम्मान, नपुं॰, रचना, कृति; वि॰, मान-रहित। निम्मित, कृदन्त, निर्मित। निम्मिणाति, (निम्मिनाति भी), ऋिया,. उत्पन्न करता है, निर्माण करता है, रचता है। (निम्मिण, निम्मिणन्त, निम्मि-णित्वा, निम्माय)। निम्मूल, वि०, निर्मूल। निम्मोक, पु॰, सांप की केंचुल। नियक, वि०, स्वकीय, निय, भपना । नियत, वि०, निश्चित, स्थिर। नियति, स्त्री, भाग्य, किस्मत, भाव-श्यकता । नियम, पु॰, मर्यादा, निश्चित होना, स्थिर होना ।

नियमन, नपुंक, स्थिरता, नियमाधीन होना । नियमेति, किया, नियमित करता है। (नियमेसि, नियमित, नियमेत्वा)। नियाम, पु०, नियम होना, तरीका। नियामता, स्त्री॰, नियमित होना। नियामक, पू०, जहाज का कप्तान, सेनापति, नियम में चलाने वाला। नियुज्जति, क्रिया, नियुक्त होता है, कायं-रत होता है। नियुज्जि, प्रतीत । क्रिया, कार्य-रंत हथा। नियुत्त, कृदन्त, नियुक्त। नियोग, पुं॰, ग्राज्ञा, हुनम, ग्रावश्य-कता। नियोजन, नपुं०, नियुक्त करना, प्राज्ञा देना। नियोजित, कृदन्त, प्रतिनिधि । नियोजेति, किया, नियुक्त करता है, प्रेरित करता है। (नियोजीस, नियोजेन्त, नियोजेत्वा)। निय्यति, (नीयति मी), क्रिया, ले जाया जाता है। निय्यातन, नपुं०, समपंण, सौंपना। निय्याति, क्रिया, बाहर जाता है। (निय्यासि, निय्यात) । निय्यातु, पु०, नेता, मागंदशंक, बाहर जाने वाला। (निय्यादेति, निम्यातेति नीयावेति भी), किया, सीनता है, समप्ति करता है। (निय्यातेसि, निय्यातित, निय्यादित, निय्यातेत्वा, निय्यादेत्वा) । निय्यान, नपुं०, बहिगंमन, विदाई,

मुक्ति। निय्यानिक, वि०, मुक्ति औकी भौर प्रयसर करने वाला। निय्यास, पु॰, पेड़ों से निकलने वाला रस, गोंद घादि । निय्युह, पूर्व, शिखर, द्वार। निरंकरोति, (निराकरोति भी), किया, तिरस्कार क्रिकरता है, उपेक्षा करता है। (निरंकरि, निरंकत, निरंकत्वा)। निरग्गल, वि०, वाघा-रहित, मुक्त। निरत, वि०, लगा हमा। निरत्य, वि०, निरयंक। निरत्यक, वि०, निरयंक निरन्तर, वि०, लगातार निरन्तरं, किया-विशेषणं, लगातार। निरपराष, वि०, निर्दोष। निरपेक्स, वि०, धपेक्षा-रहित, जिसको परवाह न हो। निरब्दुद, वि०, वाघा-रहित, दुख-रहित, एक विशाल संख्या, निरंय-विशेष। निरय, पु०, नरक। निरय-गामी, वि०, नरक-गामी। निरय-दुक्ख, नपुं०, नरक का दुख। निरय-पाल, पु॰, नरक का ग्रिषपित । निरय-भय, नपुं०, नरक का भय। निरय-संवत्तनिक, वि०, नरक की मोर ले जाने वाला। निरवसेस, वि०, सम्पूर्ण । निरसन, वि॰, निराहार। निरस्साद, वि, वे-स्वाद। निराकति, स्त्री॰, दूर करना। निराकुल, वि॰, जलमन-रहित, बाबा-

रहित । निरासकु विक, योग-रहित, स्वस्य । निरामय, वि०; निरोगः। निरामिस, वि०, मांस-रहित, प्रमी-तिक। निरारम्भ, वि०, बिना पशुप्रों की हत्या किये। निरालम्यः वि०, निराधार । निरालय, वि॰, ग्रासक्ति-एहित, गृह-रहितं। निरास, वि॰, ग्राशा-रहित, इच्छा-रहित। निरासङ्क, वि०, शंका-रहित। निरासंस, वि०, इच्छा-रहित, ग्राशा-रहित। निरासब, वि॰, प्रांसव-रहित, चित्त-मैल रहित। निराहार, वि०, बाहार-रहित, व्रती। निरिन्धन, वि०, इंबन-रहित। -मिद्रुक्तिः वि॰, निरोध को प्राप्त होता है। (निरुक्ति, निरुद्ध, निरुक्तित्वा)। निक्ज्सन, नपुं०, तिरोध। निक्तर, वि०, उत्तर-विहीन, सर्वोत्तम। निवत्ति, स्त्री॰, निव्कत-शास्त्र, बोली, व्याकरण सम्बन्धी विश्लेषण। निवत्ति-पदिसम्भिवा, निवन्तं का ज्ञान। निवदक, वि०, जल-रहितं। निषद, कृदन्त, निरोध को प्राप्त हुमा । निषपद्द, वि०, उपद्रव-रहित। निरुपि, विक, राग-रहित, मासक्ति-रहित । निवयम्, विक् उपयान्दित ।

निरुस्सास, वि०, म्राख्वास-प्रथ्वाख-रहित। वि०, ग्रीत्सुक्य-रहित, निरस्मुक, उपेक्षा-युक्त । निरोग, वि०, स्वस्थ । निरोज, वि०, स्वाद-रहित, वे-मजा। निरोध, पु॰, पुनरुत्पत्ति का रुक जाना। निरोध-धम्म, वि०, निरोध-स्वमाव। निरोध-समापत्ति, विज्ञान के निरुद्ध होने की स्थित। निरोघेति, क्रिया, निरोध को प्राप्त करता है। (निरोधेसि, निरोधित, निरोधेत्वा)। निलय, पू॰, घर, निवास-स्थान। निलीयति, क्रिया, छिपता है। (निलीय, निर्लीन, निलीयत्वा)। निल्लज्ज, वि०, निलंज्ज, बेशरम। निल्लेहफ, वि०, चाटने वाला । निल्लोप, पु०, लूटना, डाका डालना । निवत्त, कृदन्त, एक जाना। निवत्तति, किया, एक जाता है, लीट पड़ता है। (निवत्ति, निवत्तन्त, निवत्तित्वा, निवत्तितुं) : निवत्तन, नपुं०, रुकना, वापिस होना । निवत्ति, स्त्री०, रुकना, वापिस होना। निवत्तेति, क्रिया, रोकता है, लौटाता है। (निवत्तेसि, निवत्तित, निवत्तेन्त. निवत्तेत्वा)। निवत्य, ऋदन्त, वस्त्र पहने हुए। नियसति, किया, रहता है, वास करता है।

(निवसि, निवृत्य, निवसन्त निव-सित्वा)। निवह, पु०, ढेर, संग्रह। निवातक, नपुंट, सुरक्षित स्थान निवातवुत्ति, वि०, विनम्र । ग्राहार, निवाप, पू०, पशुग्रों का श्राद्ध। निवारण, नपुं०, रोकना। निवारिय, वि०, रोकने योग्य। निवारेति, किया, रोकता है। (निवारेसि, निवारित, निवारेत्वा)। निवारेतु, पु०, रोकने वाला। निवास, पू॰, रहना, रहने की जगह। निवास-मूमि, स्त्री ०, रहने की जगह। निवासन, नपुं०, ग्रन्तवंसन, ग्रन्दर पहनने का कपड़ा, रहने की जगह। निवासिक, पु०, रहने वाला। निवासेति, क्रिया, वस्त्र पहनता है। (निवासेसि, निवासित, निवत्य, निवासेन्त, निवासित्वा)। निविट्ठ, कृदन्त, स्थिर हुमा। निविसति, किया, घुसता है, रकता निवृत, कृदन्त, घिरा हुग्रा। निवृत्य, कृदन्त, रहा हुमा। निवेदक, वि०, निवेदन करने वाला। निवेदेति, ऋिया, निवेदन करता है। निवेदित, निवेदित्वा, (निवंदेसि, निवेदिय)। निवेस, पु०, निवास-स्थल, घुसना, रुकना । निवेसन, नपुं०, घर, घुसना। निवेसेति, किया, स्यापित करता है, घुसाता है, निर्घारित करता है।

(निवेसेसि, निवेसित, निवेसित्वा)। निसग्ग, पु॰, देना, प्रकृति, निसगं। निसज्ज, पूर्वं किया, बैठकर। निसज्जा, स्त्री॰, बैठना, बैठने का धवसर, बैठने की जगह, सीट। निसद, पु०, चनकी (विशेषत: चनकी का निधला पाट)। निसद-पोत, पु०, चक्की का ऊपर का पाट। निसभ, पु०, वृषम। निसम्म, पूर्वं क्रिया तथा क्रिया-विशे-षण, विचार करके। निसम्मकारी, वि०, सोच-विचारकर करने वाला। निसा, स्त्री॰, निशा, रात्रि । निसाकर, पु०, चग्द्रमा । निसाण, पुट, सान चढ़ाने का पत्यर, सिल्ली। निसाद, सात स्दरों में से एक, एक गैर-म्रायं जाति-विशेष, चोर-डाक् । निसानाय, पु०, चन्द्रमा । निसामक, वि०, द्रष्टा, दशंक, ध्यान लगाकर सुनने वाला। निसामन, नपुं ०, देखना तथा सुनना। निसामेति, किया, सुनता है। (निसामेसि, निसामित, निसामेन्त, निसामेत्वा)। निसित, वि०, तेख । निसिन्न, कृदन्त, बैठा हुमा । निसिन्नक, वि०, बैठा हुमा। निसीय, पु॰; मध्य-रात्रि । निसोदति, किया, बैठता है। (निसोवि, निसोवितम्ब, निसोवित्वा, निसीविय)।

निसीदन, नपुं०, बैठना, बैठने की चटाई वगरह। निसीबापन, नपु०, बैठाना । निसीबापेति, ऋया, बैठाता है। (निसोबापेसि, निसीबापित, निसीबा-वेत्वा)। निसूदन, नपुं०, हत्या करना। निसेष, पु०, रोकं-याम । निसेषक, वि०, निषेष करने वाला। निसेषेति, क्रिया, निषेध करता है। (निसेधेसि, निसेधित, निसेधेन्त, निसेघेत्वा)। निसेवति, क्रिया, संगति करता है। (निसेवि, निसेवित, निसेवित्वा)। निसेबन, नपुं०, संगति करना, उपयोग करना, ग्रम्यास करना। निस्सङ्गः, पु॰, परित्याग । निस्सग्निय, वि०, परित्याग करने योग्य। निस्सङ्ग, वि •, संग-रहित । निस्सज्जित, किया, ढीला छोड़ता है, त्याग देता है, देता है। (निस्सज्जि, निस्सट्ठ, निस्सज्ज, निस्सज्जित्वा)। निस्सट्ठ, कृदन्त, बाहर निकला हुगा, दिया हुमा, परित्यक्त । सत्त्व (प्राणी)-वि०, निस्सत्त, विहीन। निस्सद्द्रनिक, निःशब्द, शान्त । निस्सन्द, पु॰, परिणाम, रिसना । निस्सय, पु॰, ग्राश्रय, संरक्षण। निस्सयति, किया, प्राथय ग्रहण करता है; सहारा लेता है। निस्सरण, नपुं॰, बाहर जाना, विदाई।

निस्सरित, किया, विदा होता है। (निस्सरि, निस्सट, निस्सरित्वा)। निस्साय, भ्रव्यय, उसके द्वारा. उससे । निस्सार, वि०, सार-रहित। निस्सारज्ज, वि०, विश्वस्त, दावे के निस्सारण, नपुं०, बाहर निकालना। निस्साव, पु०, चावल का मौड़। तिस्सित, कृदन्त, ग्राश्रित। निस्सितक, वि०, ग्राश्रय ग्रहण करने वाला, अनुयायी, शिष्य। निस्सिरीक, वि०, श्रमाग्यपूर्ण, दुखी, वैभव-हीन। निस्सेणि (निस्सेणी भी), स्त्री०, सीढ़ी। निस्सेस, वि०, सम्पूर्ण । निस्सेसं, वि०, सम्पूर्ण रूप से। निस्सोक, वि०, शोक-रहित। निहत, कृदन्त, निरहकारी, जिसकी मान-मर्यादा कुचल दी गई हो। निहतमान, वि०, विनम्र। निहनति, किया, जान से मार डालता (निहनि, निहंत्वा)। निहीन, वि०, नीच, तुच्छ, थोड़ा, महत्त्वहीन। निहीन-कम्म, नपुं०, नीच-कमं, पाप-कमं। निहोन-पञ्ज, वि०, दुर्वृद्धि । निहीन-सेबी, वि॰, कुसंगति में रहने निहोयति, किया, नाश को प्राप्त होता है। (निहीयि, निहीन, निहीयमान)।

नोघ, पु॰, दुस, प्रव्यवस्या। नीच, वि०, निकृष्ट। नीचकुल, नपुं०, नीच जाति। नीचकुलीनता, स्त्री०, नीच कुल में जन्म ग्रहण करने का माव। नीचासन, नपुं०, नीचा ग्रासन । नीत, कृदन्त, ले जाया गया। नीतत्य, पु॰, ग्रनुमानित ग्रयं। नीति, स्त्री०, कानून, मार्ग दर्शन। नीति-सत्य, नवुं०, नीति-शास्त्र। नीप, पु०, कदम्ब-त्रुक्ष । नीयति, क्रिया, ले जाया जाता है। नीयाति, वेखो निय्याति । नीर, मपुं०, जल। नील, वि०, नीला। नील-कसिण, नपुं०, घ्यान लगाने के लिए नील-वणं गोलाकार। नील-गीव, नपुं०, नील-ग्रीवा, मोर। नील-मणि, पु०, नीलम । नील-वण्ण, वि०, नील-वर्ण, नीले रंग का। नील-वल्ली, स्त्री०, नील-वर्ण लता । नील-सप्प, पु०, नीला साँप। नीलिनी, नीली, स्त्री॰, नील वोघा। नोल्पल, नपुं०, नील कमल। नीवरण, नपुं ॰, बाघा। नीवार, पु०, धान्य-विशेष । नीहट, कृदन्त, बाहर निकला हुआ। नीहरण, नपुं०, बाहर निकालना। नीहरति, किया, बाहर ले जाता है। (नीहरि, नीहरन्त, नीहरित्वा)। नीहार, पु॰, बाहर निकालना, पय, ढंग न

नीहित, कृदन्त, रस्ना हुमा, व्यवस्थित। नीळ, नपुं०, नीड़, घोंसला । नीसज, पु॰ पक्षी। नुव, वि >, निकास बाहर करने वाला, दूर करने वाला। नुबक, देखी नुद। नुवति, किया, दूर हांक देता है, मगा, देता है। (नुदि, नुदित्वां)। नुन्न, कृदन्त, हौंका गया, मगाया गया। नूतन, वि०, नया। नुन, घञ्यय, निश्चय से। नुपुर, नपुं , पैजनी, पैर में पहनने का स्त्रियों का गहना। नूही, स्त्री०, समन्तदुग्धा, सहुड़ । नेक, वि०, ग्रनेक। नेकाकार, वि०, भ्रनेक प्रकार का। नेकतिक, पु०, ठग; वि०, (मादमी)। नेकायिक, वि०, सुत्तपिटक के पांचों निकायों का जानकार, स्मृतिकार। नेक्स, नपुं०, निकष, स्वणं-मुद्रा । नेक्लम्म, नपुं , संसार-त्याग । नेक्लम्म-वितक्क, नपुं ०, श्रमिनिष्क्रमण सम्बन्धी विचार। नेक्सम्म-सङ्कृष्प, पु०, ग्रमिनिष्कमण सम्बन्धी संकल्प। नेक्सम्म-सुस, नपुं०, प्रमिनिध्कमण का मुख। नेगम, वि०, निगम सम्बन्धी; पु०, निगम का बाशिदा, निगम-समा। नेति, किया, ने जाता है। (नेसिं, नीत, नेन्त, नेतब्ब, नेत्वा)। नेतु, पु०, नेता। नेत्त, पु०, पथ-दर्शक; नपुं०, नेत्र, नेत्त-तारा, स्त्री॰, गांख का तारा। नेत्ति, स्त्री०, तृष्णा । नेत्तिक, पृ०, खेत सींचने के लिए नाली बनाने वाला । नेत्तिस, पू॰, तलवार । नेपक्क, नपुं०, बुद्धिमानी, सूभ-बूभ । नेपच्छ, नपुं०, पहनावा । नेपुञ्ज, नपुं०, निपुणता, दक्षता। नेमि, स्त्री॰, पहिये की हाल। नेमितिक, पू०, ज्योतिषी। नेमिघर, प्०, पर्वत-विशेष का नाम । नेय्य, वि०, ले जाया गया। नेरञ्जरा, बुद्धत्व-प्राप्ति के बाद मगवान् बुद्ध इसी नदी के तट पर थे।

नेरियक, वि०, निरय में उत्पन्न। नेह, पू॰, ऊँचे से ऊँचे पर्वत का नाम; देखों मेह। नेष जातक, स्वणं-वणं नेष (मेष) पवंत की चमक-दमक के कारण किसी ने भी स्वर्ण-वर्ण राजहंस की ग्रोर घ्यान नहीं दिया (३७१)। नेवासिक, पू०, रहने वाला। नेसज्जिक, वि०, बैठा रहने वाला। नेसाद, पु०, निषाद, शिकारी;देखो निसाद। नो, ग्रव्यय, नहीं। नोनीत, नप्ं, मनखन न्यास, प्०, घरोहर। न्हात, देखो नहात। न्हान, देखो नहान। न्हार, देखो नहार ।

q

पंसु, पु॰, घृति ।
पकट्ठ, वि॰, ग्रति श्रेष्ठ ।
पकत, वि॰, कृत, निर्मित ।
पकतत, वि॰, सदाचारी ।
पकति, स्त्री॰, प्राकृतिक या मूल रूप,
स्वामाविक या मूल स्थिति ।
पकति-गमन, नपं॰, स्वामाविक चाल ।
पकति-वित्त, नपुं॰, स्वामाविक चित्तः
वि॰, स्वामाविक चित्त वाला ।
पकति-सील, नपु॰ स्वामाविक शील ।
पकतिक, वि॰, प्राकृतिक ।
पकतिक, पु॰ तथा नपुं॰, प्रकृति से
उत्पन्न ।

पकप्ता, स्त्री०, तकं, योजना,
व्यवस्था।
पक्ष्पेति, किया, विचार करता है,
योजना बनाता है, व्यवस्था करता
है।
(पक्ष्पेसि, पक्ष्पित, पक्ष्पेत्वा)।
पक्ष्पित, किया, कांपता है।
(पक्ष्पित, किया, कांपता है।
(पक्ष्पित, नपुं०, प्रवसर, साहित्यिक
कृति या व्याख्या।
पक्षार, पु०, ढंग, पद्धति।
पक्षास, पु०, चमक, कथन, व्याख्या।
पक्षासक, पु०, प्रकाशक, घोषणा

करने वाला, व्याख्या करने वाला। पकासति, किया, प्रकट होता है, प्रकाशित होता है। (पकासि, पकासित)। पकासन, नपुं०, प्रकाशन, घोषणा । पकासेति, किया, प्रकट करता है, प्रकाशित करता है। पकासेन्त, (पकासेसि, पकासित, पकासेत्वा)। पिकण्णक, वि०, प्रकीणं, विखरा हुग्रा। पिकत्तेति, क्रिया, प्रशंसा करता है, व्याख्या करता है। (पिकत्तेसि, पिकत्तित, पिकत्तेन्त, पक्तित्वा)। पिकरति, किया, विखेरता है, गिरने देता है। (पकिरि, पकिण्ण)। पकुध-कच्चायन, बुद्ध के समकालीन छह तैथिक सम्प्रदायों में से एक का मुखिया । पकुष्पति, किया, कोधित होता है। पक्टबति, क्रिया, करता है। प्कुटबमान, कृदन्त, करता हुमा। पकोटि, स्त्री०, संख्या-विशेष। पकोट्ठन्त, पु०, कलाई। पकोप, पु॰, क्रोघ, विद्वेष । पकोपन, नपुं०, क्रोधित करना। पक्क, कृदन्त, पका हुग्रा, उबाला हुग्रा (मात); नपुं०, पका (फल)। पवकट्ठित, कृदन्त, बहुत उवला हुआ। पक्कम, पु०, चले जाना, प्रारम्भ करना। पक्कमन, नपुं०, विदाई। पक्कमति, क्रिया, विदा होता है।

(पक्किम, पक्कन्त, पक्कमन्त, पवकमित्वा)। पवकामि, कृदन्त, चला गया। पवकोसति, क्रिया, बुलाता है। (पक्कोसि, पक्कोसित, पक्कोसित्वा)। पक्कोसन, नपुं०, बुलावट। पक्कोसना, स्त्री०, बुलावट । पक्ख, पु०, पक्ष, पहलू, पखवारा, (शुक्ल या कृष्ण) वि०, जो साफ दिलाई दे, सम्बन्धित; पु०, लगड़ा' ग्रादमी। पक्खन्दति, किया, कूदता है, छलांग लगाता है। (पवसन्दि, पवसन्ति, पवसन्दित्वा)। पक्खन्दन, नपुं०, कूदना, छलाग मारना, पीछा करना। पक्लन्दिका, स्त्री०, ग्रतिसार, दस्त लग जाना, भाव पड़ना। पक्लन्दी, पु०, कूदने वाला, छलांग मारने वाला। पबल-बिलाल, पु॰, चिमगादड़। पब्खलित, क्रिया, लड़खड़ाता है, साफ करता है, घोता है। (पक्खलि, पक्खलित, पक्खलित्वा)। पक्सलन, नपुं०, लड़खड़ाहट, घोना, साफ करना। पक्खालेति, घोता है, साफ करता है। (पब्लानेसि, पक्खालित, पक्खालेत्वा)। पविखक, वि०, पाक्षिक। पविसक-भत्त, नपुं०, एक पखवारे में एक बार दिया जाने वाला मोजन। पिबस्त, कृदन्त, प्रक्षिप्त, फेंका गया। पश्चिपति, किया, फेंकता है।

(पक्खिप, पिष्णपन्त, पिक्खिपत्वा)। पश्चिपन, नपुं०, फॅकना। पक्लि-भेद, पु०, पक्षियों का प्रकार। पिस्सिय, वि०, देस्रो पिनस्तक । पक्सी, पु॰, पक्षी, पक्ष वाला। पक्खेप, पु॰, देखो पिक्खपन। पख्म, नपुं , बरोनी। पगब्भ, वि०, प्रगल्म, साहसी, दुस्सा-इसी। पगाळ्ह, कृदन्त, डूबा हुमा। पगाहति, इवकी मारता है। (वगाहि, पगाहन्त, पगाहित्वा) । पगिद्ध, कृदन्त्, घत्यन्त लोभी। पगुण, वि०, भ्रम्यस्त, ज्ञान से परि-पूर्ण । पगुणता, स्त्री०, दक्षता । पगुम्ब, पु०, माड़ी। पर्गेव, भव्यय, समय से भ्रति पूर्व, कहना ही स्या। पग्गण्हाति, क्रिया, ग्रहण करता है, घारणं करता है, धनुबल देता है। पागंण्हन्त, पग्गहत्वा, (पागणिह, पगगरह, पगगहेतब्ब)। परगह, पु०, प्रयत्न, सामध्यं, उठाना, पकड़ना, प्रनुबल देना । पग्गहण, नपुं ०, ग्रहण करना, प्रनुबल देना । पग्गहित, कृदन्त, गृहीत, घरा हुमा, पकड़ा हुपा। पागाह, पु॰, पराक्रम, उत्साह। पग्घरण, नपुं०, चूना, रिसना। पग्धरणक, वि०, चूता हुमा, रिसता हुमा। पाचरति, किया, चूता है, बूंद-बूंद

गिरता है, रिसता है। पघण, पु॰, घर के सामने का छज्जा। पघाण, पु०, भ्रलिन्द, बरामदा। पङ्क, पु॰, कीचड़, गारा, मैला। पङ्कज, नपुं ०, कमल । पङ्के वह, देखी पंक्रज । पङ्ग, वि०, लॅगड़ा। पङ्गल, देखो, पंङ्ग्रा पचति, किया, पकाता है। (पचि, पचित, पक्क, पचन्त, पचि-तब्ब, पचित्वा)। पचन, नपुं०, पकाना। पचरति, किया, भ्रम्यास करता है, देखता है, चलता है। पचरि, ग्रतीत० क्रिया, चला। पचलायति, ऋया, ऊँघता है। पचलायिका, स्त्री०, ऊघना। पचा, स्त्री०, पकाना। पचापेति, क्रिया, पकवाता है। (प्रचापेसि, पचापेत्वा) । पंचारक, पु०, प्रचारक, विज्ञापक। पचारेति, किया, प्रचारं करता है, जाता है। पचालक, वि०, भूलता, द्विलता। पचालक, क्रिया-विशेषण, भूलते हुए के रूप में। पचिनति, क्रिया, चुगता है, (फूल) तोड़ता है, संग्रह करता है। पचिनाति, किया, देखो पचिनति। पचुर, वि०, बहुत, नाना प्रकार का। पच्चवल, वि०, प्रत्यक्ष । पच्चक्ख-कम्म, नपुं०. प्रत्यक्ष करना। पच्चक्लाति, किया, प्रत्याख्यान करता है, निषेध करता है।

(वच्चवसासि, वच्चवसात, क्लाय)। पन्चक्खान, नवं ०, प्रत्याख्यान, निषेध, इनकार। पच्चाध, वि०, नया, सुन्दर, मूल्यवान, महँगा। पच्चङ्ग, नपुं०, प्रत्यंग । पच्चति, क्रिया, पकाया जाता है, कष्ट पाता है। (पिच्च. पिच्चत्वा, पच्चमान)। पच्चत, वि०, पृथक्, व्यक्तिगत। पञ्चतां, क्रिया-विशेषण, पृथक्-पृथक्, व्यक्तिगत तोर पर। पच्च त्थरण, नपुं०, ग्रास्तरण, विछाने की चादर। पच्चित्यक, पु०, शत्रु, विरोधी। पच्चन, नपुं०, उबलना, कष्ट पाना । पच्चनिक, वि०, उल्टा, निषेधातमक; प्०, विरोधी, शत्रु। पच्चनुभवति, किया, प्रनुभव करता है। (पच्चनुभवि, पच्चनुभवित्वा)। पच्चन्त, पू०, प्रत्यन्त-देश सीमा-प्रदेश। पच्चन्त-जनपद, मजिभम-देश की सीमा से बाहर का प्रदेश। पच्चन्त-वासी, पु०, प्रत्यन्त-देश का वासी, देहाती। पच्चन्त-विसय, पु०, प्रत्यन्त-देश। पच्चिन्तम, वि०, बहुत दूर स्थित। पच्चय, पु॰, हेतु, कारण, उद्देश्य, प्रावश्यकता, साधन, प्राश्रय। पञ्चयता, स्त्री॰, हेतुत्व। पच्चयाकार, पु॰, कारणों का प्रकार।

पच्चयुष्पन्न, वि॰, कारण से उत्पन्न। पच्चियक, दि॰, विश्वसनीय। पच्चरी, देखी महापच्चरी (प्रविध-मान महकया)। पच्चवेक्खति, किया, विचार करता है, विवेचन करता है। (पच्चवेक्खि, पच्चवेक्खित, पच्च-वेक्खित्या, पच्चवेक्खिय) । पच्चवेरखना, स्त्री०, विचार, विवे-पञ्चस्सोसि, प्रतीतः क्रिया, प्रतिश्रुति दी, वचन दिया। पच्चाकत, कृदन्त, परित्यक्त, परा-जित। पच्चाकोटित, कृदन्त, चिकना किया हुमा, स्त्री किया हुमा। पच्चागच्छति, किया, वापिस माता है, पीछे हटता है। (पच्चागिच्छ, पच्चागत, गन्त्वा)। पच्चागमन, नपुं०, वापसी, लौटना। वच्चाजायति, ऋिया, पुनर्जन्म ग्रहण करता है। (पच्चाजापि, पच्चाजात, पच्चा-जायित्वा)। पच्चावेस, पु०, प्रतिक्षेप करना, प्रस्वी-कृति। पच्चामित्त, पु॰, शत्रु, विरोधी। पच्चासिसति, किया, पाशा करता है, इच्छा करता है, इन्तजार करता है। पच्चाहरति, क्रिया, वापिस लाता है। पच्चाहट, (पच्चाहरि, हरित्वा)।

पच्चाहार, पु॰, बहाना, क्षमा-याचना। पच्चुग्गच्छति, क्रिया, स्वागत करने जाता है। (पच्चगान्त्वा)। पच्चुग्गमन, नपुं॰, स्वागत करना। पचबुट्ठाति, किया, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए खड़ा होता है ! पच्चुट्ठित, (पच्चुट्ठासि, पच्चट्ठाय)। पच्चट्ठान, नपुं०, मादर। पच्चपकार, पु॰, प्रत्युपकार, उपकार का बदला। पच्चपट्ठाति, किया, उपस्थित रहता है, सेवा में रहता है। पच्चुपट्ठित, (पच्चुपट्ठासि, पच्चपट्ठत्वा)। पच्चपट्ठान, नपुं०, सेवा में उनस्थित रहना। पच्चपट्ठापेति, किया, सम्मुख उप-स्थित करता है। पच्चुप्पन्न, वि०, वर्तमान, मौजूदा। पञ्चूस, पु॰, प्रत्यूष, बहुत सुबह। पच्चूस-काल, पु॰, प्रातःकाल। पच्चूह्, पु०, बाघा, रुकावट । पच्चेक, वि०, प्रत्येक, पृथक्-पृथक् । पच्चेक-बुद्ध, पु॰, जिसने बोधि तो प्राप्त की हो लेकिन दूसरों को उस बोधि का उपदेश न दे। पच्चेति, ऋया, परिणाम पर पहुँचता पच्चोरोहति, क्रिया, नीचे उतरता है। (पच्चोरोहि, पच्चोरूळ्ह, पच्चोरो-हित्वा, पच्चो इम्ह) ।

पच्चोसक्कति, ऋिया, वापिस लौटता

(पच्चोसिक, पच्चोसिकत, पच्चो-सक्कित्वा)। पच्चोसक्कना, स्त्री०, वापिस लौटना। पच्छतो, ग्रव्यय, पीछे से । पच्छन्ना, कृदन्त, ढका हुआ। पच्छा, ग्रन्यय, बाद में, पीछे । पच्छा-जात, वि०, बाद में पैदा हुग्रा। पच्छाताप, पु॰, पश्चाताप। पच्छा-निपाती, पु॰, बाद में सोने वाला। पच्छानुताप, पु०, पश्चाताप। पच्छाबन्ध, पु०, नाव का डाँडा। पच्छा-बाहं, ऋिया-विशेषण, पीछे हाय वंघा। पच्छा-भत्तं, ऋया-विशेषण, अपराह्न; नपुं०, ग्रपराह्न-भोजन। पच्छा-भाग, पु०, पिछला माग । पच्छाभाव, पु०, पश्चात्-माव। पच्छा-समण, पु०, घनुगामी श्रमण। पच्छाद, पु०, रथ का भोल। पच्छानुतप्पति, क्रिया, पश्चाताप करता पच्छाया, स्त्री अ, सायादार हिस्सा । पिन्छ, स्त्री०, हाथ की टोकरी। पिच्छज्जित, ऋिया, छीजता है, बाधित होता है। (पच्छिज्जि, पच्छिन्न, जिजत्वा है। पच्छिज्जन, नपुं०, बाघा, रुकावट । पिन्छन्दति, क्रिया, छाँटता है, काट डालता है। (पिच्छन्दि, पिच्छन्न, पिच्छन्दिरवा)। पिन्छम, वि०, भंतिम, सबसे पीछे

का। पिच्छमक, वि०, ग्रंतिम, सबसे निम्न स्तर का। पच्छेदन, नपुं०, काटना, तोड़ना। पजरवित, किया, जोर से हँसता है। पजप्पति, क्रिया, बक-बक करता है, उत्कट इच्छा करता है। (पजिंप)। पजहति, क्रिया, छोड़ देता है, त्याग देता है। (पजिह, पजिहत, पजिहत्वा, पहाय, पजहन्त)। पजा, स्त्री॰, सन्तान, प्राणी, मनुष्य। पजानना, स्त्री०, ज्ञान, समभा पजानाति, किया, स्पष्ट रूप से जानता है। पजापति, १. पु०, सृष्टि का मालिक, २. स्त्री०, जिसके सन्तान हो। पजायति, किया, उत्पन्न होता है। पजायन, नपुं ०, जन्म, उत्पन्न होना । पज्ज, नपुं०, एदा। पज्ज-बद्ध, पु०, काव्य। पज्जलति, किया, जलता है। (पज्जलि, पज्जलित, पज्जलन्त, पज्जलित्वा)। पज्जलन, नपुं०, जलना । पज्जुन्न, पु०, वर्षा के बादल, इन्द्र । पज्जोत, पु०, प्रदीप, प्रकाश, चमक-पज्कायति, क्रिया, जलता है, क्षीण होता है, शोकाकुल होता है। (पज्कायि, पज्कायन्त)। पञ्च, वि०, पाँच। पञ्चक, नपुं०, पाँच का समूह ।

पञ्च-कल्याण, नपुं , सीन्दयं के पाँच चिह्न। पञ्च-कामगुण, पु०, पाँच इन्द्रियों के मोग। पञ्चनखत्तं, क्रिया-विशेषण, पाँच वार। पञ्चक्लन्घ, पु०, पांच स्कन्ध। पञ्च गर जातक, प्रत्येक बुद्ध का उपदेश माननेवाला राजकुमार राजा बना (१३२)। पञ्च-गोरस, पु॰, दूध, यही आदि पांच गोरस पदार्थ। पञ्चङ्क, वि०, पाँच ग्रंगों (हिस्सों) से युक्त। पञ्चिङ्गक, देखो, पञ्चङ्ग । पञ्चङ्ग लिक, वि०, पाँच ग्रेंगुलियों का निशान। पञ्च-चक्ख्, वि०, पाँच चक्षुश्रों वाला। पञ्चवत्तालीसति, स्त्री॰, पैतालीस। पञ्च-चूळक, वि०, सिर में बालों के पौच जूड़ों वाला। पञ्चतिसति, स्त्री ०, पैतीस । पञ्चदस, वि०, पन्द्रह । पञ्चवसो, स्त्री०, पूर्णिमा। पञ्च-घरण, नपुं०, तोल-विशेष। पञ्चधा, ग्रन्यय, पाँच तरह से। पञ्चनवृति, स्त्री ०, पंचानवे । पञ्च-नीवरण, पांच बंधन । पञ्चपञ्जासति, स्त्री०, पचपन । पञ्च पण्डित जातक, यह जातक महा-उम्माग जातक के एक ग्रंश के रूप में दिया गया है (५०८)। पञ्च-पतिद्ठत, नपुं०, पौच मंङ्गों से

प्रणाम । पञ्चपकरण, धम्मसङ्गणि व विमङ्गः को छोड़कर ममिघम्मिपटक की शेष पौच पुस्तकों का सामूहिक नाम । पञ्च-बन्धन, नपुं०, पाँच प्रकार का बन्धन । पञ्च-बल, नपुं॰, पांच बल। पञ्च-महापरिच्चाग, पु॰, पांच प्रकार के त्याग। पञ्च-महानदी, स्त्री०, गंगा, ग्रचि-रवती, यमुना ग्रादि पाँच महा-नदियाँ । पञ्च-महाविलोक, नपुं०, पांच प्रकार का ग्रन्वेषण। पञ्च-बिगाय, बुद्ध के प्रथम पांच शिष्यों का सामृहिक नाम । वे पाँच शिष्य ये-कोण्डञ्ज, महिय, वप्प, महानाम, ग्रस्सजि । पञ्च-वण्ण, वि०, पांच वणं। पञ्चविघ, वि०, पाँच गुना। पञ्चवीसति, स्त्री०, पच्चीस । पञ्चसद्ठि, स्त्री॰, पैंसठ। पञ्चसत, नपुं०, पांच सो। पञ्चिसस, पु०, देव-गत्धवं। पञ्च-सील नपुं०, पांच शील। पञ्च-मुबंण्य, पु०, पांच सुवणं मर (एक तील)। पञ्चसो, म्रव्यय, पांच तरह से। पञ्च-हत्य पु०, पाँच हाथ लम्बा। पञ्चानन्तरिय, नपुं०, जो पांच दुष्कमं त्रन्त फल देते. हैं : १. भात्-हत्या, २. पितु-हत्या, ३. महंत्-हत्या, ४. बुद्ध के शरीर को जल्मी करना त्या ४. संघ की एकता नष्ट

करना। पञ्चाभिञ्जा, स्त्री०, पाँच दिव्य शनितयां: १. प्रातिहायं या करिक्मे रखने की शक्ति, २. दिव्य चक्षु, ३. दिव्य श्रोत्र, ४. दूसरों के विचार जान लेने की शक्ति तथा ५. पूर्व जनम की अनुस्मृति। पञ्चाल, सोलह महाजनपदों में से एक । उत्तर-पंचाल तथा दक्षिण-पंचाल नामक दो हिस्सों में विभक्त था। पञ्चालिका, स्त्री०, गुड़िया, पुतली । पञ्चाव्ध, नपुं०, तलवार, कुल्हाड़ा ग्रादि पाँच शस्त्र । पञ्चाव्ध जातक, पांच हथियारों से युक्त राजकुमार का सिलेसलोम यक्ष से मयानक संघर्ष हुग्रा। ग्रन्त में यक्ष ने क्मार को विजयी स्वीकार किया (५५)। पञ्चासीति, स्त्री०, पचासी । पञ्चाह, नपं ०, पाँच दिन । पञ्चपोसथ जातक, कबूतर, सांप, गीदड़ ग्रीर मालू के परस्पर मैत्री-पूर्ण ढंग से रहने की कथा 1 (038) पञ्जर, पु॰ तथा नपुं॰, पिजरा। पञ्जलिक, वि०, नमस्कार करने के लिए हाथ जोड़े हुए। पञ्ज, वि॰, (समास में), प्रज्ञावान । पञ्जाता, स्त्री०, (समास में), प्रज्ञा-वान होना। पञ्जत, कृदन्त, बनाया गया नियम, की गई घोषणा, बुद्धिमानी। पञ्जत्ति, स्त्री॰, संज्ञा, नियम, घोषणा।

पञ्जावन्तु, वि०, बुद्धिमान घादमी। पञ्जा, स्त्री०, प्रज्ञा, ज्ञान, ग्रन्त-दंष्टि । पञ्जाक्खन्य, पु०, प्रज्ञा-स्कन्य । पञ्जा-चक्खु, नपुं०, प्रज्ञा-चक्षु । पञ्जा-धन, नपुं०, प्रज्ञा-धन । पञ्जा-बल, नप्ं, प्रज्ञा-बल। पञ्जा-भेद, पु०, प्रज्ञा के प्रकार। पञ्जा-विमुत्ति, स्त्री०, प्रज्ञा-विमुन्ति । यञ्जा-सम्पदा, स्त्री०, प्रज्ञा-सम्पत्ति। पञ्जाण, नपुं०, चिह्न, निशान। पञ्जात, कृदन्त, प्रकट हुया। पञ्जापक, वि०, नियुक्त करने वाला। पञ्जापन, नपुं०, घोषणा, (बैठने के लिए ग्रासनों की) व्यवस्था। पञ्जापेति, किया, नियम बनाता है, व्यवस्था करता है, घोषणा करता (पञ्जापेसि, पञ्जापित, पञ्जत, पञ्जापेल पञ्जापेत्वा) । पञ्जापेतु, पू०, नियम-बद्ध करने वाला, घोषणा करने वाला। पञ्जायति, किया, प्रकट होता है, स्पष्ट होता है। (पञ्जायि, पञ्जात, पञ्जायमान, पञ्जायित्वा)। यङह, त्रिलिङ्गी, प्रश्न, जिज्ञासा । पञ्ह-विस्सज्जन, नपुं०, प्रश्नों का उत्तर देना। पञ्ह-व्याकरण, नपुं०, प्रश्नों का समा-घान करना। पट, पु॰ तथा नपुं॰, वस्त्र, पहनावा। पटिगा, पु०, प्रति-प्रिग्न, भाग के जवाब में घाग।

पटङ्ग, पु०, भींगुर। पटल, नप्ं०, भावरण। पटलिका, स्त्री॰, ऊनी कढ़ी हुई चादर, दुशाला। पटह, पु॰, नगाड़ा। पटाका, स्त्री॰, पताका, भंडा। पटि (पति भी), एक उपसर्ग (विरुद्ध, यनुक्ल)। पटिकङ्क्षाति, किया, इच्छा करता है। (पटिकङ्कि, पटिकङ्कित) । पटिकण्टक, वि०, विरोधी; पु०, शत्रु। पटिकम्म, नपुं०, प्रति-कर्म, श्चित । पटिकत, कृदन्त, प्रायश्चित गया । पटिकर, वि०, प्रतिकार। पटिकरोति, किया, प्रतिकार करता है, मार्जन करता है। (पटिकरि, पटिकरोन्त)। पटिकस्सति, क्रिया, पीछे हटता है, पीछे खिचता है। (पटिकस्सि, पटिकास्सित) । पटिकार, पु०, प्रतिकार, इलाज। पटिकुज्जति, किया, भुकता है। (पटिकुज्जेसि, पटिकुज्जित, पटि-पटि-कुज्जेत्वा, पटिकुज्जित्वा, कुन्जिय)। पटिकुज्जन, नपुं०, भूकना, उलट देना । पटिकुल्फति, किया, बदले में कोघित होता है। पटिकुट्ठ, कृदन्त, घृणित, सदोष, डाँट खाया हुमा। पटिक्कन्त, कृदन्त, वापिस लौटा हुमा। पटिक्कम, पु०, एक घोर हट जाना,

पीछे लीटना। पटिक्कमति, क्रिया, पीछे हटता (पटिक्कमि, पटिक्कमन्त, पटिक्क-मिरवा)। पटिक्कमन, नपुं॰, प्रतिक्रमण, पीछे हटना । पटिककमन-साला, स्त्री०, विश्राम-शाला। पटिक्कल, वि०, प्रतिकृत । पटिककूलता, स्त्री॰, प्रतिकूलता। पटिक्कुल-सञ्जां, स्त्री०, शरीर की गंदगी से सम्बन्धित चेतना। पटिक्कोसना, स्त्री०, विरोध-प्रदर्शन। पटिक्कोसति, किया, बुरा-मला कहता है, दोषारोपण करता है। (पटिक्कोसि, पटिक्कुट्ठ, पटिको-सित्वा)। पटिक्खिपति, किया, प्रतिक्षेप करता (पटिक्खिप, पटिक्खित, पटिक्खि-पित्वा, पटिषिखत्वा)। पटिक्लेप, पु॰, प्रतिक्षेप, निषेघ। पटिगच्च, ग्रव्यय, पहले से, देखो पटिकच्च। पटिगिज्अति, किया, इच्छा करता है, लोम करता है। (पटिगिष्मि, पटिगिछ, जिमत्वा)। पटिगूहति, किया, छिपाता है, पीछे रहता है। पटिग्गु-पटिग्गूहित, (पटिग्गृहि, हित्वा)। पटिग्गण्हन, नपुं॰, प्रतिग्रहण, स्वागत ।

पटिग्गण्हक, वि०, स्वागत करने वाला, प्रतिग्रहण करने में समर्थ। पटिगण्हाति, किया, लेता है, प्राप्त करता है, स्वीकार करता है। (पटिगण्हि, पटिग्गहित, पटिग्गण्हन्त, पटिगहेत्वा, पटिगण्हिय, पटिगगम्ह) । पटिग्गह, पु०, जो ग्रहण करे, पात्र (पानी वगैरह का), पीकदान । पटिग्गहण, देखो, पटिगण्हन । पटिग्गहेतु, पु०, स्वीकार करने वाला, स्वागत करने वाला। पटिघ, पु०, कोघ, विरोघ, द्वेष। पटिघात, पु०, प्रतिघात, टक्कर। पटिघोस, पु०, गुँज। पटिचरति, किया, प्रश्नों का जवाब देने से कतराना, घूमना। पटिचोदेति, ऋया, बदले में इलजाम लगाना। (पटिचोदेसि, पटिचोदित, चोदेत्वा)। (भ्रव्यय, पूर्व विभया), हेतु पटिच्च, से। पटिच्च-समुप्पन्न, वि०, हेत् उत्पन्न । पटिच्च-समुप्पाद, पु०, हेतु से उत्पत्ति का नियम। पटिच्छति, ऋया, स्वीकार करता है, ग्रहण करता है। पटिच्छन्न, कृदन्त, ढका हुमा। पटिच्छादक, वि०, छिपाने वाला। पटिच्छादनिय, नपुं०, मांस का सूप, टखनी। पटिच्छादेति, क्रिया, दकता है, छिपाता है।

(पटिच्छादित, पटिच्छन्न, पटिच्छा-देन्त, पटिच्छादेत्वा, पटिच्छादिय) । पटिजागक, पू०, पालन-पोषण करने वाला। क्रिया, पालन-पोषण पटिजग्गति. करता है। पटिजिंग्गत, पटि-(पटिजिंग, जिंगत्वा, पटिजिंगिय)। पालन-पोपण नपं0, पटिजग्गन, करना। पटिजग्गनक, वि०, देख-माल रखने वाला, पालन-पोषण करने वाला। पटिजिंग्य, वि०, पालन-पोषण करने योग्य, मरम्मत करने योग्य। पटिजानाति, किया, स्वीकार करता है, वचन देता है, सहमत होता है। (पटिजानि, पटिञ्जात, पटिजानन्त, पटिजानित्वा)। पटिञ्जा, वि०, विश्वास दिलाने वाला, समण-पटिञ्ज = भूठ-मूठ श्रमण होने की वात करने वाला)। परिञ्जा, स्त्री॰, प्रतिज्ञा, सहमति, श्रनुमति । परिञ्ञात, कृदन्त, प्रतिज्ञात, सह्मत हमा। पटिददाति, किया, वापिस देता है। (पटिबदि, पटिदिन्न, पटिदत्वा) । परिदण्ड, पु०, प्रतिकार। पटिदस्सेति, क्रिया, ग्रपने धापको प्रकट करता है। (पटिवस्सेसि, पटिवस्सित, पटि-दस्सेत्वा)। पटि-दान, नपुं ०, पुरस्कार। पटिविस्सति, किया, दिखाई देता है।

पटि दिस्सि, कृदन्त, दिखाई दिया। पटिदेसेति, किया, स्वीकार करता है, मान लेता है, कबूल कर लेता है। (पटिवेसेसि, पटिवेसित, पाटवेसेत्वा)। पटिघावति, किया, पीछे की मोर दोडता है, समीप दोड़ता है। (पटिघावि, पटिघावित्वा)। पटिनन्दति, किया, प्रसन्त होता है। (पटिनन्दि, पटिनन्दित, पटि-नन्दित्वा)। पटिनन्दना, स्त्री०, ग्रानन्दित होना । पटिनासिका, स्त्री०, बनावटी नाक। पटिनिघि, प्०, प्रतिमूर्ति । पटिनिवत्त, कृदन्त, लौटा हुग्रा, वापिस ग्राया हुग्रा। पितनिवत्तति, किया, वापिस लोटता है (पटिनिवत्ति, पटिनिवत्तित्वा) । पटिनिस्सग्ग, पु०, परित्याग । पटिनिस्सज्जित, क्रिया, त्याग देता है, छोड़ देता है। (पटिनिस्सज्जि, पटिनिस्सट्ठ, पटि-निस्सजित्वा, पटिनिस्सज्जिय)। पटिनेति, किया, नापिस ले जाता है। (पटिनेसि, पटिनीत, पटिनेत्वा) । पतिपक्ख, वि०, विरोधी, प्०, शत्रु। पटिपक्लिक, वि०, विरोधी पक्ष का। पटिपज्जित, किया, मार्ग हद होता है। (पटिपज्जि, पतिपन्न, पटिपज्जमान, पटिपज्जित्वा)। पटिपज्जन, नपुं०, पद्धति, ग्रम्यास, ग्राचरण। पटिपण्ण, नपुं०, पत्र का उत्तर। पटिपत्ति, स्त्री॰, घाचरण, घामिक

त्रिया-कलाप । पटिपय, पु॰, उल्टा रास्ता, सामने का रास्ता । पटिपदा, स्त्री०, ग्राचरण, जीवन-मागं। पटिपन्न, कृदन्त, मार्गारुढ़। पटिपहरति, क्रिया, उल्टा प्रहार करता है। (पटिपहरि, पटिपहट, पटिहरित्वा)। पटिपहिणाति, किया, वापिस भेजता है। (पटिपहिणि, पटिपहित, पटिपहि-णित्वा)। पटिपाटि, स्त्री॰, ऋम। पटिपाटिया, किया-विशेषण, कमशः। पटिपाद, पु॰, पलंग या चारपाई का सहारा। पटिपादक, पु०, व्यवस्थापक। पटिपादन, नपुं०, प्रतिपादन, शिक्षण देना । पटिपादेति, किया, व्यवस्था करता है, सामग्री पहुँचाता है। (पटिपादेसि, पटिपादित, पटिपा-देत्वा)। पटिपीळन, नपुं०, त्रास देना, पीड़ा देना। पटिपीळेति, किया, त्रास देता है, पीड़ा देता है, दमन करता है। (पटिपोळेसि, पटिपोळित, पटि-पीळेत्वा)। पटिपुग्गल, पु०, प्रतिस्पर्धी । पटिपुच्छति, ऋिया, बदले में प्रश्न पूछता है। (पटिपुन्छि, पटिपुन्छित) ।

पटिपुच्छा, स्त्री०, बदले में पूछा गया प्रक्न, प्रक्न के उत्तर में पूछा गया प्रश्न । पटिपुजना, स्त्री०, भादर प्रदशित करना, गीरव करना। पटिपुजेति, किया, ग्रादर करता है, गीरव करता है। (पटिपूजेसि, पटिपूजित, पटि-पुजेत्वा)। पटिपेसेति, किया, वापिस भेजता है। पटिपस्सद्ध, कृदन्त, शान्त हुम्रा। पटिपस्सद्धि, स्त्री०, शान्ति। पटिपस्सम्भति, किया, शान्त होता है। पटिपस्सम्भना, स्त्री०, देखो पटि-पस्सद्धि। पटिबद्ध, कृदन्त, बँघा हुआ, भ्राक-पित । पटिबद्ध-चित्त, वि०, ग्रनुरक्त। पटिवल, वि०, योग्य, सामध्यंवान । पटिबाहक, वि०, विरोध करने वाला, रुकावट डालने वाला, हटाने वाला। पटिबाहति, किया, दूर करता है, हटाता है, बचाता है। (पटिबाहि, पटिबाहित, पटिबाहन्त, पटिबाहित्वा, पटिबाहिय) । पटिबिम्ब, नपुं , प्रतिबिम्ब, छाया । पटिबिम्बित, वि०, जिसकी छाया पड़ी हो। पटिबुज्कति, किया, समभता है, जागता है.। (पटिबुज्भि, पटिबुज्भित्वा)। पटिबुद्ध, कृदन्त, ज्ञानी, जागा हुमा। पटिभय, नपुं , डर, मय। पढियान, वि॰, समान, एक जैसा।

पटिभाग, पु॰, समानता, एकरूपता, मुकाबले का माग। पटिभाति, किया, सुभता है, स्पष्ट होता है। पटिभासि, ग्रतीत० क्रिया, सूभा। प्रत्युत्पन्न-मति, पटिभाण, नपुं०, हाजिरजवावी। पटिभाणवन्तु, नपुं०, प्रत्युत्पन्न-मति (वाला), क्षिप्र-प्रज्ञ। पटिभासति, किया, उत्तर देता है। पटिभासि, ग्रतीत । किया, उत्तर दिया। पटिभू, पु०, जामिन। पटिमग्ग, पु०, विरुद्ध मार्ग । पटिमण्डित, कृदन्त, सजा हुग्रा। पटिमल्ल, पु०, मुकावले का पहल-वान। पटिमा, स्त्री॰, प्रतिमा, मूर्ति । पटिमानेति, क्रिया, गौरव करता है, प्रतीक्षा करता है। (पटिमानेसि, पटिमानित, पटिमा-नेत्वा)। पटिमुक्क, कृदन्त, वस्त्र पहने, बँघा हुमा । पटिमुञ्चति, क्रियां, वस्त्र घारण करता है, बांघता है। (पटिमुञ्चि, पटिमुञ्चित्वा)। पटियादेति, किया, तैयार करता है, व्यवस्था करता है, सामग्री पहुँचाता (पटियादेसि, पटियादित, पटियत्त, पटियावेत्वा)। पटियोध, पु॰, मुकाबले का योधा। पटिरव, पु॰, प्रतिरव, गूंज। पटिराज, पु॰, मुकाबले का राजा।

पटिकप, (पतिरूप भी), वि०, योग्य, ठीक, ग्रनुकूल। ्रिटरूपक, (पतिरूपक भी), मिलती-जुलती शक्ल का। पटिरूपता, (पतिरूपता भी) स्त्री॰, स्वरूप की साम्यता। पटिलंब, कृदन्त, प्राप्त । पटिलभति, किया, प्राप्त करता है। (पटिलभि, पटिलभन्त, पटिलभित्वा, पटिलद्धा)। पटिलाभ, पु॰, प्राप्ति। पिंट लीयति, किया, पीछे हटता है, दूर रहता है। (पटिलीयि, पटिलीन, पटिलीयित्वा) । पटिलीयन, नपुं०, दूर रहना, पीखे हटना । पटिलोम, वि०, विरुद्ध । पटिलोम-पन्छ, विरोधी पक्ष। पटिवचन, नपुं॰, उत्तर, जवाब । पटिवत्तन, नपुं०, पीछे की मोर मुड़ना । पटिवत्तिय, वि०, पीछे लीटाने योग्य, लपेटने योग्य। पटिवत्तु, पु॰, विरुद्ध माषण करने वाला, खण्डन करने वाला। पटिवत्तेति, ऋया, लपेटता है, पीछे हटता है। (पटिवलेसि, पटिवत्तित, वत्तेत्वा, पटिवत्तिय)। पटिवबति, किया, उत्तर देता है, विरुद्ध, बोलता है। (पटिवर्बि, पटिवृत्त, पटिवत्वा, पटिवदित्वा)। पटिवसति, ऋिया, रहता है, निवास

करता है। (पटिवसि, पटिघृत्य, पटिवसित्वा) । पटिवाक्य, नपुं०, उत्तर। पटिवातं, किया-विशेषण, हवा विरुद्ध । पटिवाब, पु॰, प्रतिवाद, ग्रारोपित दोष का खण्डन। पटिबिस, पु०, हिस्सा। पटिविजानाति, क्रिया, पहचानता है, जानता है। (पटिविजानि, पटिविजानेत्वा)। पटिविच्मति, ऋिया, प्रवेश करता है, समभता है। (पटिविजिम, पटिविजम, विज्भित्वा)। पटिविदित, कृदन्त, ज्ञात, सुनिश्चित । पटिविद्ध, कृदन्त, प्रविष्ट हुग्रा, समभ लिया गया। पटिविनोदन, नपुं०, हटाना, निकाल बाहर करना। पटिविनोदेति, किया, हटाता है, निकाल बाहर करता है। (पटिविनोबेसि, पटिविनोदित, पटिविनोदेत्वा, पटिविनोदय)। पटिविभजति, ऋिया, बाँटता है। (पटिविभाज, पटिविभत्त, पटिविभ-जित्वा)। पटिविरत, कृदन्त, रुका हुआ। पटिविरमति, ऋिया, रुकता है, विरत रहता है। (पटिविरमि, पटिविरमन्त, पटिविर-मित्वा)। पटिविकामित, क्रिया, विकद होता है, भगड़ा करता है।

(पटिविरुजिस, पटिविरुजिसत्या)। पटिबिरुद्ध, कृदन्त, विरुद्ध । पटिविरूहति, क्रिया, फिर से उगता (पटिविक्हि, पटिविक्ळ् ह, पटिविक्-हित्वा)। पटिविरोध, पु०, विरोध-माव, दुश्मनी, शत्रुता । पटिविस्सक, पु०, पड़ोसी। 'पटिवेदेति, क्रिया, जनाता है, जात कराता है। (पटिवेदेसि, पटिवेदित, पटिवेदेत्वा) । पटिवेघ, पु०, मीतर घुसना। पटिसङ्कत, कृदन्त, चुकता कर दिया गया। पटिसंयुत्त, कृदन्त, सम्बन्धित । पटिसंवेदेति, क्रिया, सहन करता है, भन्मव करता है। (पटिसंवेदेसि, पटिसंविदित, पटिसं-वेदित, पटिसंवेदेत्वा)। पटिसंहरण, नपुं०, सिकोड़ना, त्याग देना, हटा लेना। पटिसंहार, पु०, सिकोड़ना, देना, हटा लेना। पटिसंहरति, सिकोड़ता है, त्याग देता है, हटा लेता है। (पटिसंहरि, पटिसंहरित, पटिसंहत, पटिसंहरित्वा)। पटिसंकरण, नवुं०, प्रतिसंस्करण, मर-म्मत । पटिसंकरोति, क्रिया, प्रतिसंस्कार करता है, मरम्मत करता है। पटिसंखरण, वर्षेत्र, देखो पटिसंकरण। पटिसंसरोति, देखो पटिसंकरोति।

पटिसंसा, स्त्री॰, विचार, फैसला। पटिसंखान, नपं०, विचार मीमांसा करना । पटिसंखाय, पूर्वं श्रिया, विचार कर। पटिसंखार, देखी पटिसंखरण। पटिसंचिक्लति, क्रिया, विचार करता है, मीमांसा करता है। (पटिसचिवित्व, पटिसंचिवित्वत, पटि-संचिक्खितवा)। पटिसंयार, पु०, मैत्रीपूणं स्वागत। पटिसंदहति, ऋिया, पुनमिलन होता हैं। [पटिसंदहि, पटिसंदहित (पटिसंचित)] पटिसंघातु, पु०, मेल कराने वाला, शान्ति-संस्यापक । पटिसंघान, नपुं०, पुनमिलन । वटिसंधि, स्त्री०, प्नजंनम ग्रहण करना। पटिसम्भिदा, स्त्री०, मीमांसापुणं ज्ञान। पटिसम्भिदामग्ग, खुद्दक निकाय का बारहवां प्रन्य। वास्तव में इसकी गणना ग्रमिधम्म ग्रन्यों में की जानी चाहिए। पटिसम्मोदति, किया, मैत्रीपूर्ण बात-चीत करता है। (पटिसम्मोदि, पटिसम्मोदित, पटि-सम्मोदित्वा)। यटिसरण, नपुं ०, शरण-स्यान, सहायता, संरक्षण। पटिसल्लान, नपुं०, एकान्त जीवन । पटिसल्लान-सारूप्प, वि०, एकान्त जीवन या योगाम्यास के लिए अन्-क्ल। परिसस्तीयति, क्रिया, एकान्त जीवन

व्यतीत करता है, योगाम्यास करता है। (पटिसल्लि, पटिसल्लीन, पटिसल्ली-यित्वा)। पटिसमेति, किया, व्यवस्थित करता है, दूर रहता है। (पटिसमेसि, पटिसमित, पटि-समित्वा)। पटिसासन, नपुं०, प्रत्युत्तर। पटिसेथ, पु॰ प्रतियेघ, इनकार। नपुं० प्रतिपेध करना, इनकार करना। पटिसेघक, वि०, प्रतिपेध वाला। पटिसेघेति, किया, दूर रखता है, दूर हटाता है, मना करता है। (पटिसेसेसि, पटिसेधित, पटिसेधित्वा, पटिसेधिय)। पटिसेवति, किया, अनुकरण करता है, सेवन करता है, उपयोग में लाता है। (पटिसेवि, पटिसेवित, पटिसेवन्त, पटिसेविस्वा, पटिसेविय)। पटिसेवन, नपुं०, ग्रम्यान करना, मनु-करण करना, उपयोग में लाना। पटिसोत, वि०, स्रोत (= बहाब) के विरुद्ध । पटिस्सत, वि०, विचारवान। पटिस्सव, पु०, वचन, स्वीकृति। पटिसुजाति, वचन देता है, सहमत होता है। (पटिसुणि, पटिसुत, पटिसुणित्वा) । पटिहञ्जति, क्रिया, चोट माता है। (परिवृद्धिः वरिवृद्धिन्नत्या) ।

पटिहत, कृदन्त, चोट खाया हुआ।

पटिहनन, नपुं०, विरोध, संघपं। पटिहनति, त्रिया, रगड़ खाता है। (पटिहनि, पटिहत, पटिहन्त्वा)। पटिहार, पुं०, द्वार। पटु, वि०, होशियार, कुशल (ग्रादमी)। पट्ता, स्त्री॰, दक्षता । पटोल, पु०, पटोल। पट्ट, नपुं॰, तस्ता, वस्त्र, रेशमी वस्त्र, पट्टी। पट्टक, देखो पट्ट । पट्टन, नप्०, नदी तट के पास का नगर। पट्टिका, स्त्री०, पट्टी। पट्ठपेति, क्रिया, स्थापित करता है। (पट्ठपेसि, पट्ठपित, पट्ठपेत्वा) । पट्ठान, नपं०, प्रस्थान। पट्ठानप्पकरण, श्रीमधम्म पिटक का ग्रन्तिम ग्रन्य। इसमें मौतिक तथा ग्रभौतिक चीजों के २४ प्रकार के पच्चयों प्रथवा हेतुग्रों का विस्तृत विवेचन है। पट्ठाय, ग्रव्यय, ग्रारम्म करके, तव सं, उस समय से। पठति, क्रिया, पढ़ता है। (पठि, पठित, पठित्वा)। पठन, नपुं०, पढ़ना। पठम, वि०, पहला। पठमं, क्रिया-विशेषण, पहली बार। पठमज्ञान, नपुं॰, प्रथम घ्यान । पठमतरं, ऋया-विशेषण, सबसे पहले, ययासम्भव जल्दी। पठवी, स्त्री०, भूमि, पृथ्वी । पठवी-म्रोज, (पठबोच भी), पृथ्वी का

पठवी-कम्पन, नपुं०, भूकम्प। पठवी-कसिण, नपुं०, योगाम्यास करने के लिए मिट्टी का बना केन्द्र-बिन्दु। पठवी-चलन, नपुं०, भूकम्प । पठवी-चाल, पु०, भूकम्प। पठवी-घातु, स्त्री०, पृथ्वी-धातु । पठवी-सम, वि०, पृथ्वी-समान। पण, पु०, शतं, दुकान। पणक, पु०, शैवाल-विशेष, सिवाल । पणमति, क्रिया, प्रणाम करता है, भुकता है, पूजा करता है। पणमित, पणत, पण-(पणमि, मित्वा)। पणय, पु०, विश्वास, याचना, प्रणय। पणव, पू०, ढोल। पणाम, पु०, प्रणाम, नमस्कार। पणामेति, किया, चलता करता है, मगा देता है, फैला देता है, भुकाता (पणामेसि, पणामित, पणामेन्त, पणामेत्वा) । पणालि, स्त्री०, नाली। पणिबहति, क्रिया, इच्छा करता है। श्राकांक्षा करता है। पणिहित, पणिदहित, (पणिदहि, पणिवहित्वा) नपुं०, ग्राकांक्षा, हढ़ पणिघान, संकल्प। पणिधि, स्त्री०, ग्राकांक्षा, निश्चय । पणिघाय, पूर्व ० क्रिया, संकल्प करके । पणिपात, पु., दण्डवत् लेट जाना, पूजा। पणिय, नपुं•, पण्य, बेचने की चीज;

पु॰, व्यापारी। पणिहित, कृदन्त, संकल्प-युक्त। पणीत, वि॰, श्रेष्ठ, बढ़िया। पणीततर, वि०, श्रेष्ठतर, घीर मी बढ़िया। पणेति, क्रिया, दण्डित करता है, निकालता है, रास्ते पर ले जाता (पणेसि, पणेत्वा)। पण्डक, पु०, हिजड़ा। पण्डर, वि०, इवेत, सफेद, फीका, हल्का पीला। पण्डर जातक, सांपों की, गरुड़ों से ग्रपने-ग्रापको बचाये रखने की युक्ति (48=) 1 पण्डव, पु०, पवंत-विशेष । पण्डिच्च, नपुं०, पाण्डित्य । पण्डित, वि०, विद्वान् । पण्डितक, पुठं, बनावटी पण्डित, पाण्डित्य-दम्भ वाला । पण्डु, वि॰, पीला, पीलापन लिये हुए। पण्डुकम्बल, नपुं०, पाण्डु रंग का कम्बल। पण्डु-पलास, पु०, सूखा पत्ता । पण्डु-रोग, पु०, पाण्डु-रोग । पण्ड-रोगी, पु०, पाण्ड-रोग वाला। पण्डकम्बल सिलासन, देवेन्द्र शक के बैठने का भ्रासन। पण्डू, दक्षिण मारत की एक जाति-पाण्ड्य। पण्ण, नपुं॰, पत्ता, पत्रं, चिट्ठी । पण्णक, देखी, पण्ण। पण्ण-कुटि, स्त्री०, पणं-कुटी।

पण्ण-छत्त, नपुं॰, पत्तों का छाता, पतों का पंखा, पत्तों की छत। पण्ण-सन्यर, पु०, पत्तों का विछोना। पण्ण-साला, स्त्री०, म्राश्रम, कुटिया। पण्णत्ति, देखो, पञ्जत्ति (प्रज्ञप्ति)। पण्णरस, वि०, पन्द्रह । पण्णाकार, पु॰, मेंट। पण्णास, स्त्री०, पचास । पण्णिक, पु०, पत्ते वेचने वाला। पण्णिक जातक, पिता ने लड़की के सतीत्व की परीक्षा ली (१०२)। पण्य, देखी, पणिय। पण्हि, पु॰ तथा स्त्री॰, एड़ी। पतङ्गः, पु॰, पक्षी। पतित, किया, गिरता है, फिसलता (पति, पतित, पतन्त, पतित्वा)। पतन, नपुं०, गिरावट। पतनु, वि २, ग्रत्यन्त दुवला-पतला । पताका, स्त्री०, भण्डा। पताप, पु॰, प्रताप, तेजस्विता । पतापवन्तु, वि०, प्रतापी, तेजस्वी। पतापेति, ऋिया, तपाता है। (पतापेसि, पतापित)। पति, पू॰, स्वाभी, खाविन्द । पतिक्टिठ, वि०, निकृष्ट । पति-कुल, नपुं०, पति का खानदान। पतिट्ठहति, ऋिया, प्रतिष्ठित होता है, स्यापित होता है। (पतिट्ठहि, पतिट्ठहन्त, पतिट्ठ-हित्वा)। वितट्ठा, स्त्री॰, प्रतिष्ठा, सहायता, धाश्रय-स्थान। पतिट्ठातब्व, (पतिट्ठितस्य भी),

कृदन्त, प्रतिष्ठा के योग्य, स्थापित करने योग्य। पतिट्ठाति, देखो पतिट्ठहति । (पतिट्ठासि, पतिट्ठित, पतिट्ठाय, पाल्युठातुं)। पतिट्ठान, नपुं०, प्रतिष्ठान, स्यापना। पतिट्ठापित, कृदन्त, प्रतिष्ठापित. स्यापित किया हमा। पतिट्ठापेति, किया, प्रतिष्ठित कराता है। पतिट्ठापेन्त, (पतिट्ठापेसि, पतिट्ठापेत्वा, पतिट्ठापिय)। पु॰, स्थापित करने पतिट्ठापेतु, वाला। पतित, कृदन्त, गिरा हुआ। पतितिट्ठति, किया, खड़ा होता है, द्वारा खड़ा होता है। पतिदान, नपुं॰, प्रतिदान, दान का बदला दान। पतिबोघ, पु०, जागरण, ज्ञान। पतिब्बता, स्त्री॰, प्रतिव्रता । 'पतिरूप, देखो, पटिरूप। पतिस्तत, देखो, पटिस्सत। पतीचि, स्त्री॰, पश्चिम दिशा। पतीत, वि०, प्रसन्त-चित्त । पतीर, नपुं०, किनारा। पतोब, पु०, बैलों को हाँकने की लकडी, पंणी। पतोदक, नपु०, प्रेरणा; वि०, प्रेरक। पतोदक-लट्टि, स्त्री॰, बैलों को हाँकने की लाठी। पत्त, कृदन्त, प्राप्त, प्राप्त हुमा; पु॰, पात्र, भिक्षा-पात्र; नपुं०, पत्ता, पंख ।

पत्तक्खन्ध, वि०, गिरे हुए कन्धों वाला, निराश, बुका-बुका-सा। पत्तगत, वि०, पात्र-गत, पात्र में पड़ा हम्रा। पत्त-गन्ध, पु०, पत्तों की गन्ध। पत्त-गाहक, पु०, (दूसरे का) मिक्षा-पात्र लेकर चलने वाला। पत्त-यविका, स्त्री०, मिक्षा-पात्र लट-काने की भोली। पत्त-पाणि, वि०, जिसके हाथ में मिक्षा-पात्र हो। पत्त-पिण्डिक, वि०, एक ही पात्र में से साने वाला। पत्त-दान, पु०, पक्षी-विशेष। पत्तन, देखो पट्टन । पत्तब्ब, कृदन्त, प्राप्त करणीय। पत्ताघारक, पु॰, पात्र का ग्राघार। पत्तानीक, नपुं०, चार-चार जनों की पैदल सेना । पत्तानुमोदना, स्त्री०, प्राप्त पुष्य का मनुमोदन (=देवताम्रों तथा स्वगंस्य सम्बन्धियों को दान)। पत्ति, पु॰, पैदल सैनिक; स्त्री॰, पत्ती, पेड का पत्तों वाला भाग। पत्तिक, वि०, हिस्सेदार, पैदल चलने वाला, पैदल सैनिक, पात्रवाला। पत्ति-दान, नपुं०, पुण्य ग्रथवा हिस्से का प्रदान। पत्ती, पु॰, तीर, धनुष का तीर। पत्तुन्न, नपुं०, वस्त्र-विशेष । पत्तुं, कृदन्त, प्राप्त करने के लिए। पत्य, पु॰, प्रस्य, धान्य प्रथवा किसी तरल पदार्थ का माप, एकान्त स्थान ।

पत्यट, कृदन्त, ज्ञात, विख्यात, फैलाया हमा। पत्यद्ध, वि०, कठोर, चट्टान की तरह सीघा । स्त्री॰, प्रायंना, कामना, पत्यना, इच्छा । पत्थयति, क्रिया, इच्छा करता है, कामना करता है, प्रायंना करता (पत्थिय, पत्थयन्त, पत्थित, पत्य-) यित्वा)। पत्यपान, वि०, इच्छा करते हुए, कामना करते हुए। पत्यर, पु०, पत्यर, शिला, पत्यर का सामान । पत्यरति, किया, फैलाता है। (पत्यरि, पत्यट, पत्यरन्त, पत्य-रित्वा)। पत्थिव, पु॰, पाणिव, राजा। पत्थेति, देखो पत्थयति । पत्थेन्त, पत्थित, (पत्थेसि, पत्थेत्वा)। पत्वा, पूर्वं शिक्या, प्राप्त करके। पय, पु॰, मार्ग, रास्ता (गणन-पय, गिनती)। पथवी, देखो पठवी। पयावी, पु॰, पथिक, पैदल यात्री। पियक, पु॰, राही, यात्री। पथित, वि॰, प्रसिद्ध । पद, नपुं॰, कदम, वचन, पदवी, स्थान, हेत्, कविता का अनुच्छेद । पद-चेतिय, नपुं॰, पवित्र पद-चिह्न । पद-जात, नपुं॰, नाना प्रकार के पद-चिह्न।

पदट्ठान, नपुं०, निकट कारण, नज-दोकी वजह। पद-पूरण, नपुं॰, जिससे पद-पूर्ति हो । पब-भाजन, नपुं०, शब्दों का विमाग। पव-भाणक, वि०, धर्म-ग्रन्य के पदों का पाठ करने वाला। पद-वण्णना, स्त्री०, पदों की व्यास्या। पद-वलञ्ज, नपुं०, पद-चिह्न, पद-निह्नों वाला रास्ता। पद-विभाग, पु०, शब्दों का विमाग। पद-वोतिहार, पु०, कदमों का परि-वतंन । पद-सद्, पु०, पैरों की ग्राहट। पदकुसल माणव जातक, वारह साल के गुजर जाने के बाद भी पद-विह्नों का पता लगा सकने की कथा (833) 1 पदक्खिणा, स्त्री॰, प्रदक्षिणा । पदग, पू०, पैदल मैनिक। पदत्त, कृदन्त, दिया गया, बाँटा गया। पदर, नपुं०, दरार, फटाव, छेद। पदवि, स्त्री॰, मार्ग । पदहति, क्रिया, प्रयत्न करतां है, किसी के बिलाफ लड़ता है। (पदहि, पदहित, पबहित्वा)। पदहन, देखो पघान । पदातवे, कृदन्त, देने के लिए। पदाति, पु॰, पैदल सैनिक ; क्रिया, देना, लेना, पाना। पदातु, पु॰, दाता, देने वाला। पदान, नपुं॰, प्रदान, देना। पदाळन, नपुंट, चीरना, फाड़ना, चिपटना । पदाळेति, ऋया, चिपटता है, चीरता

है, फाड़ता है। पबाळेसि, पबाळित, पदाळन्त, पबाळेत्वा)। पदाळेतु, पु॰, चीरने वाला, तोड़ने वाला। पदिक, वि०, काव्य-पंक्तियों से युक्त, पैदल यात्री। पदिप्पति, जलता है। (पविष्य, पविष्यमान, पवित्त) पिंदस्सति, क्रिया, दिखाई देता है। पदिट्ठ, कृदन्त, देखा गया। पदिस्समान, कृंदन्त, देखा जाता हुग्रा। पबीप, पु०, प्रदीप, दिया, चिराग, प्रकाश। पदीप-काल, पु॰, लैम्प जलाने का समय। पदीपिय, नपुं०, प्रदीप-सामग्री। पदीपेति, ऋया, प्रदीप जलाता है, सम-भाता है, तेज करता है। (पदीपेसि, पदीपित, पदीपेन्त, पदी-पेत्वा)। पदीपेय्य, देखो पदीपिय। पदीयति, क्रिया, दिया जाता है, प्रदान किया जाता है। (पदीयि, पदिन्न)। पदुट्ठ, कृदन्त, प्रदुष्ट, विकृत, खराव। पदुब्भति, त्रिया, पड्यन्त्र करता है, साजिश करता है, गलत करता है। (पद्बिभ, पदुव्भित, पदुव्भित्वा)। पदुम, नपुं , कमल, नरक-विशेष, एक बहुत बड़ी संस्या। पबुम-कण्णिका, स्त्री०, कमल का बीज-कोष। पदुम-कलाप, पु॰, कमल-समूह।

पदुम-गडभ, पु०, कमल का मीतरी पबुम-पत्त, नपुं०, कमल का पत्ता। पदुम-राग, पु॰, लाल रंग की मणि। पदुम-सर, पु० तथा नगुं०, कमल का तालाव। पद्म जातक, बोधिसत्व को तालाव से कमल-गुच्छ लाने में सफलता मिली (२६१)। पदुमिनी, स्त्री०, कमल का पौघा, कमल का तालाव। पदुमिनी-पत्त, नपुं०, कमल के पौघे का पदुमी, वि०, कमल वाला, (हाथी)। पदुस्सति, क्रिया, दुष्कृत करता है, कोधित होता है, भ्रष्ट करता है। (पदुस्सि, पदुट्ठ, पदुस्सित्वा) पदुस्सन, नपुं०, विरोधी कार्यं, पड-यन्त्र, साजिश। पदूसेति, किया, भ्रष्ट करता है, दुष्कृत करता है। (पदूसेसि, पदूसित, पदूसेत्वा)। पदेस, पु॰, प्रदेश, स्थान। पदेस-ञाण, नपुं०, सीमित ज्ञान । पदेस-रज्ज, नपुं ०, प्रदेश राज्य । पदेस-राजा, पु०, धनु-राजा। पदेसन, नपुं ०, मेंट या परित्याग। पदोस, पु॰, १. प्रदोष (रात्रि), २. क्रोध, ३. दोप। पबोसेति, देखो पदूसेति । पच, देखो पदुम । पद्यंस, पु॰, प्रघ्वंस, विनाश। पषंसन, नपुं०, लूट-मार।

कृदन्त, लूट-पाट पघंसित, किया गया। वि ०, लूट-पाट किये जाने पधंसिय, की सम्भावना वाला। पधंसेति, किया, लूट-पाट करता है, धाकमण करता है। पघंसित, वधंसेत्वा, (पघंसेसि, .पधंसेन्त) पचान, वि०, प्रधान, मुरूप; नपुं०, प्रयास, प्रयत्न । पषान-घर, नपुं०, योगाम्यास करने का स्यान । पधानिक, वि०, योगाम्यास के लिए प्रयत्न करने वाला । पद्मावति, किया, दौड़ता है। (पद्यावि, पद्यावित, पद्यावित्वा) । पघावन, नपुं०, दौड़। पध्येति, ऋया, धुमाँ देता है, घुमाँ फॅकता है; देखो घूपेति। (पच्चेसि, पघूपित, पघूपेन्त) । पवोत, कृदन्त, अच्छी तरह धोया गया या तेज किया गया। पन, प्रव्यय, ग्रीर, ग्रभी, लेकिन, इसके विरुद्ध, ग्रव, इसके ग्रतिरिक्त। पनस, पु०, कटहल का पेड़; नपुं० कट-हल का फल। पनस्सति, किया, विनाश को प्राप्त होता है, गायब हो जाता है। (पनिस्स, पनट्ठ, पनिस्तत्वा)। पनाळिका, स्त्री०, नाली, पाइप, नली। पनुवति, ऋिया, दूर करता है, हटा देता है, घकेल देता है। (पनुबि, पनुबित, पनुबित्वा, पनुबिय,

पनुबमान)। पनुदन, (पनूबन भी), नपुं०, हटाना, दूर करना, मस्वीकृत कर देना। पन्त, वि०, दूर, एकान्त। पन्त-सेनासनं, नपुं ०, एकान्त स्थान । पन्ति, स्त्री०, पंनित, कतार। पन्य, पु०, मार्ग, सड़क। पन्यक, पु०, यात्री, राही। पन्य-घात, पु०, बटमारी। पन्य-घातक, पु॰, रास्ता चलते डाका डालने वाला। पन्य-दूहन, नपुं०, रास्ता चलते डाका डालना। पन्यिक, देखो, पन्यक । पन्न, कृदन्त, गिरा हुम्रा, पतित । पन्नक्खन्घ, देखो पत्तक्खन्घ । पन्त-भार, वि०, जिसने अपना भार नीचे उतारकर रख दिया। पन्न-लोम, वि०, जिसके वाल गिर पड़े, पराजित । पन्नग, पु०, सांप। पप, नपुं०, जल, पानी । पपञ्च, पु॰, प्रपंच, हकावट, ऋगड़ा, भंभट, विलम्ब, भ्रम, वहम। पपञ्चेति, किया, व्याख्या करता है, विलम्ब करता है। (पपञ्चेसि, पपञ्चित, पपञ्चेत्वा) । पपटिका, स्त्री॰, पेड़ की छाल, पपड़ी । पपतित, किया, गिर जाता है। (पपति, पपतित, पपतित्वा)। पपतन, नपुं॰, गिरना, गिरावट। पपद, पु॰, पाँव का पंजा। पषा, स्त्री॰, प्याऊ, कुम्री।

पपात, पु॰, गिरना, प्रपात, भंरना। पितामह, पु॰, दादा के पिता। पपुत्त, पु॰, पौत्र, पोता । पपुन्नाट, पु०, फल्गु फल। पप्पटक, पु०, कुकुरमुत्ता, पत्यर का दुकड़ा। पप्पोठेति, क्रिया, पीटता है। (पप्पोठेसि, पप्पोठित, पप्पोठेत्वा) । पप्पोति, क्रिया, प्राप्त होता है, पहुँचता है। (पम्पूरम)। पप्कास, नपं०, फेफड़े। पवन्ध, पु॰, साहित्यिक रचना; वि॰, सिलसिलेवार। पवल, वि०, प्रवल। पवुज्कति, किया, जागता है, समकता है। पव्जिक, ध्रतीत० किया, समका। पबुद्ध, कृदन्त, प्रबुद्ध, जाग्रत । पबोधन, नपुं०, जागरण। पबोधेति, किया, जगाता है, प्रबुद्ध करता है। (पबोधेंसि, पबोधित, पबोधत्वा, पबोधेन्त) । पदब, नपुं०, गाँठ, उँगली का पोर, विमाग, हिस्सा। पब्बंजित, किया, प्रविजत होता है, निकल पड़ता है, संन्यास के लिए घर छोड़ता है। पटबजित, पच्चजित्वा, (पब्वजि, पञ्च जन्त)। पब्बजन, नपुं०, प्रवज्या, गृहस्थ-जीवन का त्याग।

पव्यक्ता, स्त्री०, प्रव्रज्या । पञ्चिजत, कृदन्त, प्रव्रजित हुमा; पु०, प्रविजत, साधु । पन्बत; पू०, पहाड़। पन्यत-कूट, नपुं०, पवंत-शिखर, पहाड़ की चोटी। पब्बत-गहन, नपुं ०, पर्वत-मरा प्रदेश। पब्बतट्ठ, वि०, पर्वत-स्थित । पब्बत-पाद, पू॰, पर्वत की तराई। पब्बत-शिखर नपुं०, पवंत की चोटी। पब्बत्पत्यर जातक, एक राजदरबारी ने राजा के रिनवास को दूषित किया। राजा ने उसकी उपेक्षा की (१६५)। पढबतेय्य, वि०, पर्वत पर रहने वाला। पब्बाजन, नपुं०, प्रव्रजित करना, देश-निकाला देना। पब्बाजनिय, वि०, निकाल बाहर करने पब्बाजेति, किया, निकाल बाहर करता है, प्रव्रजित करता है। (पब्बाजेसि, पब्बाजित, पब्बाजेत्वा) । पन्भार, पु०, पर्वत की ढलान। पभग्ग, कृदन्त, नष्ट हुम्रा, टूटा हुम्रा । पभञ्जर, प्०, प्रमाकर, सूर्य। पभद्भ , वि०, भ्रतित्य, नाशवान् । पभङ्ग र, वि०, देखो पमञ्ज । पभव, पु॰, उत्पत्ति, मूल स्रोत। पभवति, ऋिया, उत्पन्न होता है; देखो पहोति । (पभवि, पभवित, पभवित्वा)। पभस्सर, वि०, प्रभास्वर, घत्यन्त चमकदार।

पभा, स्त्री०, प्रमा, प्रकाश। पभात, कृदन्त, स्वष्ट हुम्रा, चमकता हुप्रा; नपुं॰, प्रमात, सवेरा। पभाव, पु॰, प्रमाव, सामध्यं, तेज-स्विता । पभावित, कृदन्त, प्रमावित । पभावेति, किया, प्रमावित करता है। पभास, पु०, चमक, प्रकाश। पभासति, किया, चमकता है। (पभासि, पभासित्वा, पभासन्त) । पभासेति, किया, प्रकाशित कराता है। पभासित, पभासेन्त, (पभासेसि, पभासेत्वा)। पभिज्जति, किया, टूटता है, दुकड़े-दुकड़े हो जाता है। पभि-(पभिज्जि, पभिज्जान, ज्जित्वा)। पभिज्जन, नपुं०, पृथक्-पृथक् होना, टूटना । पिनन, कुदन्त, "रा हुमा, मिन्न हुमा, दुकड़े-दुकड़े हुम्रा। पभु, (पभूभी), स्वामी, प्रभु। पभुति, अन्यय, प्रमृति, इत्यादि । (ततो-पभुति = तव से)। पभुत्त, नपुं०, प्रमुत्व । पमेद, पू॰, प्रभेद, प्रकार। पनेदन, नपुं०, बँटवारा; वि०, विनाश करने वाला। पमज्जित, क्रिया, लापरवाही करता है, प्रमाद करता है, नशे में होता है, साफ कर देता है। पमत्त, पमज्जित्वा, (पमज्जि, पमज्ज, पमज्जिय, पमज्जितुं)। पसज्जना, स्त्री०, प्रमाद, विलम्ब ।

पमत्त, कृदन्त, प्रमादी, प्रालसी। पमत्त-बन्धु, पु॰, प्रमादियों का मित्र, मर्यात् मार। पमयति, किया, ग्रधीन करता है। (पमित्य, पमित्यत, पमित्यत्वा) । पमदा, स्त्रीव, ग्रीरत। पमदा-वन, नपुं०, महल के समीप का उद्यान । पमइति, क्रिया, मर्दन करता है, नष्ट करता है, पराजित करता है। (पमद्दि, पमद्दित, पमद्दित्वा)। पमइन, नपुं॰, मदंन, जीत लेना। पमद्दी, पु०, मदंन करने वाला, विजयी होने वाला। पमा, स्त्री०, माप। पमाण, नपुं०, माप । पमाणक, वि०, मापने वाला। पमाणिक, वि०, माप के अनुसार। पमाद, पु०, प्रमाद, लापरवाही। पमाद-पाठ, नपुं०, पुस्तक का सदीय पाठ: पिमणाति, क्रिया, मापता है, अन्दाजा लगाता है। (पमिणि, पमित, पमिणित्वा, पमित्वा)। पमुख, वि०, प्रमुख; नपुं०, (घर के) धागे का माग। पमुच्चति, किया, मुक्त करता है। (पमुच्चि, पुमुत्त, पमुच्चित्वा)। पमुच्छति, ऋिया, मूछित होता है। (पमुच्छि, पमुच्छित, पमुच्छित्वा) । पमुञ्चित, ऋिया, छोड़ता है, मुक्त करता है। (पमुञ्चि, पमुञ्चित, पमुत्त, पमु-

ञ्चिय, पमुञ्चितवा) । पमुट्ठ, कृदन्त, भूला हुन्ना। पमुत्त, देखो, पमुञ्चति । पमुत्ति, स्त्री०, मोक्ष, मुक्ति। पमुदित, कृदन्त, प्रमुदित, ग्रति प्रसन्न। पमुरहति, किया, मोह को प्राप्त होता है, चिकत होता है। पम्ळ्ह, पमुव्हित्वा, (पमुप्हि, पमुय्ह)। पमुस्सति, किया, भूल जाता है। (पमुह्सि, पमुट्ठ, पमुह्सित्वा)। पमूळ्ह, कृदन्त, मोह को प्राप्त हुमा। पमेय्य, वि०, मापा जा सके, सीमित किया जा सके। पमोक्ख, पु॰, मोक्ष, मुक्ति। पमोचन, नपुं०, मुक्त करना। पमोचेति, किया, मुक्त करता है। (पमोचेसि, पमोचित, पमोचेत्वा)। पमोद, पु०, भ्रानन्द, प्रीति, खुशी। पमोदति, किया, भ्रानन्दित होता है, खुश होता है। (पमोवि, पमोदित, पमोदमान, पमो-दित्वा)। पमोदना, स्त्री॰, देखो पमोद। पनोहन, नपुं०, घोखा । पमोहेति, ऋिया, घोला देता है। (पमोहेसि, पमोहित, पमोहेत्वा)। पम्पक, पु॰, छिपकली जैसा प्राणी। पम्पटक, पु॰, एक प्रकार की छिपकली। पम्ह, नपुं०, बरौनी। पय, पु॰ तथा नपुं॰, दूघ, पानी। पयत, कृदन्त, संयत । पयतन, नपुं॰, प्रयत्न, कोशिश। पयाग, गङ्गा-अमुना के संगम पर भ्राघु-

निक इलाहाबाद। पयाग-तित्य, देखो पयाग । पयाग-पतिट्ठान, देखो पयाग । पयाति, ऋया, ग्रागे बढ़ता है। (पयासि, पयात)। पियरपासति, किया, संगति करता है, सेवा में रहता है। (पियरपासि, पियरपासित, पियर-पासित्वा)। पयिष्पासना, स्त्री०, सेवा में रहना, संगति करना। पयुञ्जति, क्रिया, नियुक्त करता है, लगाता है। (पयुञ्जि, पयुत्त, पयुञ्जमान, पयुञ्जितवा)। पयुत्तक, वि०, चर-पुरुष। पयोग, पु०, प्रयोग, साधन, क्रिया। पयोग-करण, नपुं०, प्रयास, प्रयत्न । पयोग-विपत्ति, स्त्री०, ग्रसफलता । पयोग-सम्पत्ति, स्त्री०, सफलता । पयोजक, पु०, व्यवस्थापक, निर्देशक । पयोजन, नपुं०, प्रयोजन, कार्य। पयोजेति, ऋिया, कार्य में लगाता है। (पयोजेसि, पयोजित, पयोजेन्त, पयोजेत्वा, पयोजिय)। पयोजेतु, देखो पयोजक । पयोघर, पु०, बादल, स्तन। पय्यक, पु॰, प्रपितामह। पर, वि०, दूसरा। पर-कत, वि०, परकृत, दूसरे का किया हुमा । पर-कार, (परक्कार मी), दूसरापन, (ग्रहंकार का उलटा)। पर-जन, पु॰, ग्रंपरिचित जन, बाहर

का ग्रादमी। परत्यः, पु०, परोपकारः म्रव्यय, मन्यत्र, मरणान्तर। परदत्तूपजीवी, वि०, दूसरों के दान पर जीने वाला। पर-दार, पु०, किसी दूसरे की स्त्री। पर-दार-कम्म, नपुं०, पर-स्त्री-गमन। पर-दारिक, पु०, पर-स्त्री-गमन करने वाला। परनेय्य, वि०, दूसरे द्वारा ले जाया जाने वाला। पर-जातक, रानी ने राजा तया पुरोहित की प्रनुपस्थिति में परन्तप नाम के नौकर से सहवास किया (885) 1 पर-पच्चय, वि०, दूसरे पर निर्भर। पर-पटिय, वि०, दूसरे पर ग्राथित। पर-पुट्ठ, वि०, दूसरे द्वारा पोषित । पर-पेस्स, वि०, दूसरों की सेवा करने पर-भाग, पु०, पीछे का हिस्सा, बाहर का हिस्सा। पर-लोक, पु०, मरणान्तर लोक। पर-वम्भन, नपुं०, दूसरों को नीची नजर से देखना। पर-वाद, पु॰, विरोधी मत। परवाबी, पु॰, विरोधी मत रखने पर-विसय, पु०, विदेश, दूसरे का राज्य। पर-सेना, स्त्री ०, विरोधी सेना। पर-हत्यगत, वि०, शत्रु-गृहीत। पर-हित, पु॰, दूसरों का उपकार। पर-हेतु, वि०, दूसरों के लिए।

परक्कम, पु०, पराक्रम, प्रयत्न । परक्कमन, नपुं०, प्रयास । परक्कमति, क्रिया, पराक्रम करता है, साहस दिखाता है। (परक्कमि, परक्कन्त, परक्कमन्त, परक्कमित्वा, परक्कम्म)। परम, वि० श्रेष्ठतम । परमता, स्त्री॰, श्रेष्ठत्व, पराकाष्ठा का भाव। परमत्थ, पु०, परमाथं, ग्रादशं। परमत्य-जोतिका, खुद्दक-पाठ, घम्मपद, मुत्तनिपात तथा जातक पर बुद्ध-घोष की ग्रट्ठकया। परमत्य-दीपनी, उदान, इतिवृत्तक, विमानवत्थु, पेतवत्यु, थेरगाया तया थेरीगाया पर धम्मपाल की ग्रट्ठकथा। परमाणु, पु॰, ग्रणु (कण) छत्तीसवौ हिस्सा। परमाय, नपुं०, ग्रायु की सीमा। परम्परा, स्त्री०, (वंदा-)परम्परा, सिलसिला। परम्मुख, वि०, मुंह दूसरी ग्रोर। परम्मुला, किया-विशेषण, अनुपस्थिति परसुवे, ग्रव्यय, परसों। परं, क्रिया-विशेषण, बाद में, मर-णान्तर। परंमरणा, क्रिया-विशेषण, मरने के बाद। परा, उपसर्गं, परिहानि व पराजय मादि मयों में। पराग, पु०, पुष्प-रेणु ।

पराजय, पु०, हार। पराजियति, क्रिया, पराजित होता है। (पराितिय, पराजियत्वा)। पराजेति, किया, हराता है। पराजित, पराजेन्त, (पराजेसि, पराजित्वा)। पराधीन, वि०, दूसरे के ग्रधीन। पराभव, पु॰, ग्रवनति, ग्रपमान। पराभवति, किया, ग्रवनत होता है, पतित होता है। (पराभवि, पराभूत, पराभवन्त)। परामट्ठ, कृदन्त, छुम्रा हुम्रा । परामसति, किया, स्पर्श करता है, पकड़े रहता है। (परामित, परामित, परामट्ठ, परामसन्त, परामसित्वा)। परामास, पु०, स्पर्श । परामसन, नपुं०, स्पर्श करना, हाथ में लेना। परायण (परायन भी), नपुं०, आधार, सहारा; वि०, परायण। परायत्त, वि०, दूसरों का (माल)। परि, उपसर्ग, चारों स्रोर से सम्पूर्ण रूप से। परिकड्ढति, किया, खींचता है। परिकड्ढि, परिकडि्दत, परि-कड़िंदत्वा)। परिकड्ढन, नपुं०, खींचना। परिकथा, स्त्री०, व्याख्या, भूमिका । परिकन्तित, क्रिया, काट डालता है। परिकन्तित, परि-(परिकन्ति, कन्तित्वा)। परिकप्प, पु॰, इरादा। परिकप्पेति, ऋिया, इरादा करता है,

सार निकालता है, कल्पना करता है। (परिकप्पेसि, परिकप्पित, कप्पेत्वा)। परिकम्म, नपुं०, व्यवस्था, तैयारी। परिकम्म-कत, वि०, लेप किया गया। परिकम्म-कारक, पु०, मरम्मत करने वाला, तैयारी करने वाला। परिकस्सति, क्रिया, खींचता है। (परिकस्सि, परिकस्सित, परि-कस्सित्वा)। परिकिण्ण, कृदन्त, विखरा हुग्रा। परिकित्तेति, क्रिया, व्याख्या करता है। (परिकित्तेसि, परिकित्तित, परि-कित्तेत्वा)। परिकरित, ऋिया, विखेरता है, घेरता (परिकिरि, परिकिण्ण, परिकिरिय, परिकिरित्वा)। परिकिलन्त, कृदन्त, थका हुमा। परिकिलमित, क्रिया, थकता है। (परिकलिम, परिकलिमत्वा)। परिकिलिट्ठ (परिविकलिट्ठ मी), धब्बा लगा हुम्रा, दाग लगा हुम्रा। परिकिलिन्न, कृदन्त, दाग्रदार, मैला। परिकिलिस्सित, क्रिया, घब्बा लगता है, मैला हो जाता है। (परिकिलिस्सित्वा, परिकिलिस्सि)। परिकिलिस्सन, नपुं०, गन्दगी। परिकृप्पति, किया, उत्तेजित होता है। परिकृपित, (परिकृष्पि, कुप्पित्वा)। परिकोपेति, किया, कुपित करता है। (परिकोपेसि, परिकोपित, परि-कोपेत्वा)।

परिक्कमन, नपुं०, परिक्रमा। परिष्लक, पु०, परीक्षक, परीक्षा लेने वाला, खोज करने वाला। परिक्खण, नपुं०, परीक्षण। परिक्खत, कृदन्त, खोदा हुग्रा, जरूमी, तैयार किया हुग्रा। परिक्खति, किया, परीक्षा लेता है, देख माल करता है। (परिविख, परिविखत, परिविखत्वा)। परिक्लय, पु०, क्षय, हानि, ह्लास । परिक्ला, देखो, परिक्लण। परिक्लार, नपुं०,परिष्कार, ग्रावश्यक-ताएँ, वस्तुएँ । परिक्खित, कृदन्त, घेरा हुमा। परिक्लिपति, किया, घेरता है। (परिक्लिप, परिक्लिपन्त, परि-विखत, परिविखापित्वा, परिविख-पितच्ब)। परिक्लिपापेति, किया, घिरवाता है। परिक्लीण, न्त, क्षीण हुन्ना, नष्ट हुग्रा, समाप्त हुग्रा। परिक्लेप, पु०, घेरा, परिधि। परिक्किलेस, पु०, कठिनाई, बाधा, ग्रपवित्रता । परिखणति, (पळिखणति मी), किया, चारों ग्रोर खोदता है। (परिखणित्वा, परिखत, परिखणि)। परिला, स्त्री०, खाई। परिगण्हन, नपुं०, खोजबीन करना, ग्रहण करना। परिगण्हाति, खोजबीन करता है, परीक्षा करता है, ग्रहण करता है। (परिगण्ह, परिगगहित, परिगण्हन्त, परिगण्हित्वा, परिगहेत्वा, परिगग्रह)।

परिगिलति, निगलता है। परिगिलित, परि-(परिगिलि, गिलित्वा)। परिगृहति, किया, छिपग्ता है। (परिगृहि, परिगृहित, परिगूळ्ह. परिगृहित्वा, परिगृहिय)। परिगूहना, स्त्री०, छिपाना । परिग्गह, पु॰, परिग्रह, हड़पना, सम्पत्ति । परिग्गहित, कृदन्त, परिगृहीत। परिचय, गु॰, ग्रम्यास, पहचान। परिचरण, नवुं०, देख-माल करना, मोग मोगना । परिचरति, किया, घूमता-फिरता है, देख-माल करता है, मोग मोगता है। (परिचरि, परिचिष्ण, परिचारित्वा)। परिचारक, वि०, परिचर्या करने वाला, सेवा करने वाला; पु०, नौकर, सेवक । परिचारणा, स्त्री०, देख-माल करना, खाना-पीना। परिचारिका, स्त्री०, सेविका, पत्नी । परिचारेति, सेवा कराता है। (परिचारेसि, परिचारित, चारेत्वा)। परिचिण्ण, कृदन्त, ग्रम्यस्त, संगृहीत, पहचाना हुम्रा। परिचित, कृदन्त, देखो परिचिण्ण। परिचुम्बति, क्रिया, चूमता है, चुम्बन लेता है। (परिचुम्बि, परिचुम्बित, परि-च्मिवत्वा)। परिच्च, पूर्वं किया, समभकर। परिच्चजति, किया, परित्याग करता

है। (परिच्चजि, परिच्चत, परिच्चजन्त, परिचवजित्वा, परिचवजितुं)। परिच्चजन, नपुं०, परित्याग। एरिच्चाग, पु०, परित्याग। परिच्छन्न, कृदन्त, छिपा हुमा। परिच्छादना, स्त्री॰, ग्रोढ्ना। परिच्छिन्दति, किया, सीमित करता है, (परिच्छेदों में) विमक्त करता (परिच्छिन्दि, परिच्छिन्न, परि-च्छिन्दिय, परिच्छिञ्ज)। परिच्छिन्दन, नपुं०, सीमा, निशान, विश्लेषण । परिच्छेद, पु॰, माप, सीमा, सगं। परिजन, पु०, ग्रनुयायी-गण। मरिजानन, नपुं०, ज्ञान, परिचय। परिजानना, स्त्री०, ज्ञान, परिचय। परिजानाति, क्रिया, निश्चयात्मक रूप से जानता है। (परिजानि, परिज्ञात, परिजानान्त, परिजानित्वा, परिञ्जाय)। परिजिण्ण, कृदन्त, ह्रास को प्राप्त हुआ, जीणं हो गया। परिज्ञा, स्त्री ०, स्थिर ज्ञान । परिञ्जात, देखो परिजानाति । परिञ्जाय, पूर्वं किया, पूर्णं रूप से जानकर। परिञ्जेय, वि०, ठीक से जानने योग्य। परिश्रम्हति, किया, जलता है। परि-(परिडय्ह, परिडड्ड, डिंग्हत्वा) परिडय्हन, नपुं०, जलना। परिणमति, ऋया, पकता है, परिवर्तित

होता है। (परिणन, परिणमि, परिणमित्वा) । परिणय, पु॰, शादी, विवाह । परिणाम, पु०, पकना, परिवर्तन, विकास। परिणामन, नपुं०, किसी के उपयोग में भ्राना। परिणामेति, किया, परिवर्तित करता (परिणामेसि, परिणामित, परि-णामेत्वा)। परिणायक, पु॰, मार्ग-दर्शक, परामर्श-दाता । परिणायक-रतन, नपुं०, चक्रवर्ती नरेश का सेनापति। परिणायिका, स्त्री०, ग्रन्तरं विट । परिणाह, पु०, परिधि, लम्बाई-चौड़ाई। परितप्पति, किया, ग्रनुतप्त, होता है, चिन्ता करता है। (परितिष्य, परितत्त, परितिष्पत्वा)। परितस्त्रति, किया, उत्तेजित होता है, चिन्तित होता है, कामना करता है। (परितस्सि, परितस्सित, तस्सित्वा)। परितस्सना, स्त्री॰, चिन्तित होना, उत्तेजना। परिताप, पु०, ग्रनुताप, पञ्चाताप। परितापन, नपुं०, अनुताप, पश्चाताप। परितापेति, क्रिया, त्रास देता है। (परितापेसि, परितापित, परि-तापेत्वा)। परितुलेति, ऋिया, तोलता है, विचार करता है।

परि-परितृतित, (परितुलेसि, तुलेत्वा)। परितो. प्रव्यय, चारों ग्रोर से। परिनोसेति, किया, प्रसन्न करता है, संतोष देता है। (परितोसेसि, परितोसित, तोसेत्वा)। परित्त, (परित्ता मी), खुइक पाठ, श्रंगुत्तर निकाय, मििक्रम निकाय, स्निपात के कुछ सूत्रों का संग्रह, जिनका विशेष ग्रवसरों पर पाठ किया जाता है। 'परित्त' शब्द का ग्रयं है संरक्षण। पाठ का उद्देश्य राग ग्रादि से संरक्षण माना जाता है। वि०, योड़ा, ग्रल्पमात्र, तुच्छ; नप्०, तावीज। परित्तक, वि०, थोड़ा, ग्रल्पमात्र, त्च्छ। परित्त-सुत्त, नपुं०, ग्रमिमंत्रित धागा। नपं०, संरक्षण, शरण, परित्ताण, म्रक्षा। परितायक, वि०, संरक्षक। परिदहति, किया, परिधान घारण करता है, वस्त्र पहनता है। (परिवहि, परिवहित, परिवहित्वा)। परिदहन, नपुं०, वस्त्र धारण करना। परिदीपक, वि०, व्याख्यात्मक, प्रकाश डालने वाला। परिदीपन, नपुं०, व्याख्या, उदाहरण। परिदीपेति, किया, स्पष्ट करना है, व्याख्या करता है, प्रकाशित करता है। (परिदीपेसि, परिदीपित, परिदीपेन्त, परिदीपेत्वा)।

परिदूसेति, किया, दूपित करता है। (परिदूसेसि, परिदूसित, परिदूसेत्वा)। परिदेख, पू०, रोना-पीटना । परिदेवना, स्त्री०, देखो परिदेव। परिदेवति, किया, रोता-पीटता है। (परिदेवि, परिदेवित, परिदेवित्वा, परिदेवन्त, परिदेवमान)। परिदेवित, नपुं०, रोना-पीटना। परिघंसक, वि०, ध्वंसक, नष्ट करने परिघावति, क्रिया, इघर-उधर दोड़ता है। (परिघावि, परिघावित, परिधा-वित्वा)। परिधि, पु०, सूर्य-मंडल। परिघोत, कृदन्त, घोया हुमा। परिधोवति, क्रिया, सम्पूर्ण रूप से धोता है, ग्रच्छी तरह साफ करता (परिधोवि, परिघोवित्वा)। परिनिट्ठान, नपुं०, ग्रन्तिम सिरा, परिसमाप्ति । परिनिट्ठापेति, किया, समाप्त करता है। (परिनिट्ठापेसि, परिनिट्ठापित, परिनिट्ठापेत्वा)। परिनिब्बान, नपुं०, जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति। ग्रहंत् की ग्रन्तिम मृत्यु । परिनिब्बापन, नपुं०, राग-द्वेषारिन,का सम्पूर्ण रूप से बुक्त जाना। परिनिब्बाति, किया, परिनिर्वाण को प्राप्त होता है। (परिनिब्बायि, परिनिब्बुत, परिनि-

ब्बायित्वा)। परिनिब्बायी, वि०, परिनिर्वाण-प्राप्त। परिपक्क, कृदन्त, ग्रच्छी तरह पका हमा, प्रौढ़। परिपतित, क्रिया, गिर पड़ता है, विनाश को प्राप्त होता है। (परिपति, परिपतित, परिपतित्वा)। परिपन्य, पु॰, खतरा, बाधा, किनारा। परिपन्यिक, वि०, बाधक । परिपाक, प्०, पका होना, प्रौढ़ होना, हाजमा। परिपाचन, नपुं०, पकना, प्रौढ़ होना, विकसित होना, हजम होना। परिपाचेति, किया, पकाता है, प्रौढ़ होता है, विकसित होता है। (परिपाचेसि, परिपाचित, परिपा-चेत्वा)। परिपातेति, किया, ग्राक्रमण करता है, गिराता है, मार डालता है, नाश कर डालता है। (परिपातेसि, परिपातित, परिपा-तेत्वा)। परिपालेति, क्रिया, पालन करता है, पहरा देता है, संरक्षण करता है। (परिपालेसि, परिपालित, परिपा-लेत्वा)। परिपोळेति, किया, पीड़ित करता है। (परिपोळेसि, परिपोळित, परिपी-ळेखा) । परिपुच्छक, वि०, प्रश्न पूछने वाला। परिपुच्छति, किया, पूछताछ करता है। (परिपुच्छि, परिपुच्छित, परिपुट्ठ, परिपुच्छित्वा) :

परिपुच्छा, स्त्री०, पूछताछ, प्रश्न। परिपुण्ण, कृदन्त, सम्पूर्ण। परिपुण्णता, स्त्री०, सम्पूर्णता । परिपूर, वि०, सम्पूणं। परिपूरक, वि०, पूर्ति करने वाला । परिपूरकारिता, स्त्री०, पूर्ति का माव। परिपूरकारी, पु०, पूरा करने वाला। परिपूरण, नपुं , पूर्ति । परिपूरति, किया, पूरा करता है। (परिपूरि, परिपुण्ण, परिपूरित्वा) । परिपूरेति, किया, पूरा कराता है। (परिपूरेसि, परिपूरित, परिपूरेन्त, परिपूरेत्वा, परिपूरिय, परिपूरेतब्ब)। परिष्कुट, कृदन्त, भरा हुम्रा, ब्याप्त । परिप्लव, वि०, चंचल, ग्रस्थिर। परिप्लवति, किया, कांपता है, इधर-उघर घुमता है। परिफन्दति, किया, कांगता है, धड़-कता है। (परिफन्दि, परिफन्दित, परिफ-न्दित्वा)। परिवाहिर, वि०, वाह्य, बाहरी। परिव्वजित, किया, घूमता है। (परिवर्गज, परिव्वजित, परिव्व-जित्वा)। परिव्वय, पू०, खर्च । परिव्वाजक, पु॰, परित्राजक, घूमने-फिरने वाला साधु। परिव्वाजिका, स्त्री०, परिव्राजिका, वूमने-फिरने वाली साघ्वी। परिब्बूळ्ह, कृदन्त, घिरा हुमा। परिस्मात, क्रिया, इघर-उघर भट-कता है, भ्रमण करता है। (परिक्रमा, परिक्रथन्त, परिश्रमान्त,

परिभिमत्वा)। परिवसमन, नपुं०, परिश्रमण। परिव्भमेति, किया, परिश्रमण कराता है। (परिव्भमेसि, परिव्भमित, परिव्भ-मेत्वा)। परिभट्ठ, कृदन्त, परिभ्रष्ट, पतित। परिभण्ड, पू०, लीपना, घेरना, कमर-बन्द; वि०, घेरते हुए। परिभण्ड-कत, वि०, लीपा हुम्रा। परिभव, पु०, घृणा, अपशब्द। परिभवन, नपुं०, घृणा करना, निन्दा करना। परिभवति, किया, घृणा करता है, भ्रपशब्द कहता है, निन्दा करता है। (परिभवि, परिमूत, परिभवन्त, परि-भवमान, परिभवित्वा)। परभावित, कृदन्त, शिक्षित, प्रमा-वित । परिभास, पु०, दोषारोपण। परिभासक, वि०, निन्दा करने वाला, ग्रपशब्द कहने वाला। परिभासति, किया, ग्रपशब्द कहता है, बूरा-मला कहता है। (परिभासि, परिमासित, परिमास-मान, परिभासित्वा)। परिभासन, नपुं०, निन्दा, उपहास । परिभिन्न, कृदन्त, टूटा हुम्रा, गिरा हुमा, विरुद्ध हुमा। परिभुञ्जित, किया, खाता है, उप-योग में लाता है, भोग मोगता है। (परिभुञ्जि, परिभुत्त, परिभुञ्जन्त, परिभुञ्जमान, परिभुञ्जित्वा, परि-भूत्वा, परिभुङ्जि, परिभुङ्जिय-

तब्व)। परिभूत, कृदन्त, खाया हुमा, मोगा हमा । परिमूत, कृदन्त, निन्दा-कृत। परिभोग, पु०, उपयोग, भोग, मोग-सामग्री। परिभोग-चेतिय, नपुं॰, तथागत द्वारा उपयुक्त वस्तु होने से पवित्र वस्तु । परिभोजनीय, वि॰, उपयोग में लाने योग्य। परिमञ्जक, पु॰, रगड़ने वाला या यपयपाने वाला। परिमञ्जति, ऋिया, रगड़ता है. यप-यपाता है, पोंछता है। (परिमञ्जि, परिमञ्जित, परि-मट्ठ, परिमञ्जित्वा) । परिमञ्जन, नपुं०, रगड़ना, पोंछना, मालिश करना। परिमण्डल, वि०, गोलाकार। परिमण्डलं, ऋिया-विशेषण, चारों मोर से (ढक कर)। परिमद्दति, क्रिया, रगड़ता है, मदन करता है, मालिश करता है। (परिमद्दि, परिमद्दित, पंरिमद्दित्वा)। परिमाण, नपुं०, माप, सीमा। परिमित, कृदन्त, मापा गया, सीमा किया गया। परिमुखं, क्रिया-विशेषण, सामने । परिमुच्चति, ऋिया, मुक्त होता है, बच निकलता है। (परिमुच्चि, परिमुत्त, चिवत्वा)। परिमुच्चन, नपुं०, मुक्ति, बच निक-लना ।

परिमुत्त, कृदन्त, मुक्त, बच निकला हमा। परिमुत्ति, स्त्री०, मुक्ति, बचाव। परिमोचेति, किया, मुक्त करता है। (परिमोचेसि, परिमोचित, परिमो-चेत्या)। परियत्ति, स्त्री०, धार्मिक ग्रन्थों को याद करना, घमं-प्रन्यों के प्रध्ययन में उपलब्धि। परियत्ति-घर, वि०, तिपिटक को कण्टस्य करने वाला। परियत्ति-घम्म, पूर्व, तिपिटक-धर्म । तिपिटक नपुं ०, परियत्ति-सासन, (ग्रीर उसकी ग्रट्ठकथाएँ)। परियन्त, पु॰, ग्राखरी सिरा, सीमा। परियन्त-कत, वि०, सीमित, वाधित। परियन्तिक, वि॰, समाप्त, सीमा-बद्ध । परियाति, किया, चारों ग्रोर घुमता परियादाति, किया, ग्राधक मात्रा में ग्रहण करता है, खाली कर देता है। (परियादिन्त, परियादाय)। परियादियति, किया, कावू कराता है, ख़ाली करा देता है। (परियादियि, परियादिन्न, परि-यादिवित्वा)। परियापन्न, कृदन्न, सम्मिलित, सम्ब-न्धित । परियापुणन, नपुं०, ग्रध्ययन करना। परियापुणाति, क्रिया, मली मांति ग्रध्ययन करता है। (परियापुणि, परियापुत, परिया-पूणित्वा)।

कृदःत, कष्ठस्य किया परियापुत, हुग्रा, जाना हुग्रा। परियाय, पु०, कम, गुण, ब्रादत, परियाय-कथा, स्त्री०, गोल-मोल बात-चीत। परियाहत, कृदन्त, चोट खाया हुम्रा। परियाहनति, किया, चोट करता है, सटंसटाता है। (परियाहनि, परियाहत)। परियुट्ठाति, किया, उठता है, सब जगह फैल जाता है। (परियुट्ठासि, परियुट्ठित) । परियुद्ठान, नपुं०, उदान, पूर्व-संकल्प। परियेट्ठ, स्त्री०, खोज। परियेसति, किया, स्रोजता है। (परियेसि, परियेसित, परियेसन्त, परियेसनान, परियेसित्वा)। परियेसना, स्त्री०, खोज। परियोग, पु०, भाजन, देग, हण्डा। परियोगाळ्ह, कृदन्त, कसा हुआ, गहरे गया हुआ। परियोगाहति, किया, डुबकी मारता है, पानी की गहराई तक जाता है। (परियोगाहि, परियोगाहित्वा)। परियोगाहन, नपुं०, डुबकी मारना, भीतर जाना। (परियोदपन भी), परियोदपना, श्द्धि, साफ करना। परियोदपेति, किया, शुद्ध करता है, साफ करता है। (परियोदपेति, परियोदपित, परि-योवपेत्वा)।

परियोदात, वि०, शुद्ध, परिशुद्ध। परियोनढ, कृदन्त, वंघा हुग्रा, ढका हम्रा । परियोनन्धति, किया, बांधता है, ढकता है। (परियोनन्घ, परियोनद्ध, परियो-नन्धित्वा)। परियोनन्धन, नप्ं, ढकना । परियोनाह, पु०, ढक्ता। परियोसान, नपुं०, समाप्ति, सारांश। परियोसापेति, किया, समाप्त करता है। परियोसापित, (परियोस)पेसि, परियोसापेत्वा)। परियोसित, कृदन्त, समाप्त, सन्तुष्ट। परिरक्खति, किया, रक्षा करता है, संरक्षण करता है। परिरक्खण, नपुं०, रक्षा करना, संर-क्षण। परिवच्छ, नपुं०, तैयारी। परिवज्जन, नपुं०, वचाव, टरकाना। परिवज्जेति, ऋिया, दूर-दूर रखता है। टरकाता है। (परिवज्जेसि, परिवज्जित, परिव-ज्जेन्त, परिवज्जेत्वा)। परिवट्ट, नपुं०, घेरा। परिवत्त, कृदन्त, लोटता-पोटता हुग्रा। परिवत्तक, वि०, लोटता-पोटता हुम्रा; पू॰, गोला। परिवत्तति, क्रिया, लोटता-पोटता है। (परिवत्ति, परिवत्तित्वा, वत्तमान)। परिवत्तन, नपुं , परिवर्तन, उलटना-पलटना, ग्रनुवाद ।

परिवत्तेति, त्रिया, उलटता है। (परिवत्तेसि, परिवत्तित, परिव-त्तरवा, परिवत्तिय, परिवत्तेन्त)। परिवसति, किया, शागिदं बनकर रहता है। (परिवसि, परिवृत्य, परिवसित्वा) । परिवार, पु॰, ग्रनुयायी, ग्रनुगामी, नौकर-चाकर। परिवारक, वि०, ग्रनुवर, साथी। परिवारण, नगुं , घेर लेना । परिवार-पालि, विनय पिटक का एक ग्रन्थ। परिवारेति, त्रिया, घेर लेता है। (परिवारेसि, परिवारित, परिवा-रेत्वा)। परिवासित, कृदन्त, सुगन्धित। परिवितक्क, पु॰, विचार-विमर्श । परिवितक्केति, त्रिया, विचार करता है, मनन करता है। (परिविवकेसि, परिवितविकत, परि-वितक्केत्वा)। परिविसति, किया, भोजन कराता है, सेवा में रहता है। (परिविसि, परिविसित्वा)। परिवोमंसति, क्रिया, विचार करता है, मनन करता है। (परिवोमंति, परिवोमंसमान, परि-बोमंसित्वा)। परिवृत, कृदन्त, थिरा हुगा। परिवेण, नपुं०, मिक्षुग्रों का निवास-स्यान, मिस्त्रीं का विद्यालय। परिवेसक, वि॰, भोजन परोसने वाला। परिवेसना, स्त्री०, भोजन परोसना ।

परिसक्कति, किया, सहन करता है, कोशिश करता है, प्रयत्न करता है। (परिसक्कि, परिसक्कित, परि-सक्कित्वा)। परिस-गत, विं, परिषद् में सम्मिलित, मण्डली के अन्तगंत। परिसङ्कृति, किया, सन्देह करता है। (परिसङ्कि, परिसङ्क्ति, परि-सङ्कित्वा)। परिसङ्का, स्त्री०, सन्देह । परिस-रूसक, पु०, परिषद् को दूपित करने वाला। परिस-पति, क्रिया, रेंगता है। (परिसप्पि, परिसप्पित, परिस-व्पित्वा)। परिसप्पना, स्त्री०, रॅगना, कांपना, सन्देह, हिचकिचाहट। परिसमन्ततो, ऋया-विशेषण, चारों ग्रोर से। परिसहति, किया, जीत लेता है। (परिसहि, परिसहित्वा)। परिसा, स्त्री०, परिपद्। परिसावचर, वि०, समा-समिति में विचरने वाला। परिसिञ्चति, किया, सर्वत्र छिड्कता (परिसिञ्च, परिसित्त, परिसि-ञ्चित्वा)। परिसुज्कति, क्रिया, परिशुद्ध होता है। (परिमुक्ति, परिमुक्तन्त, परिमु-ञ्चित्वा)। परिसुद्ध, कृदन्त, साफ, पवित्र । परिसुद्धि, स्त्रींं, सफाई, पवित्रता। परिसुस्तत, ऋया, सूख जाता है, व्ययं

जाता है। (परिसुस्सि, परिसुक्ख, स्सित्वा)। परिसुस्तन, नपुं०, पूर्ण रूप से सूख जाना। परिसेदित, कृदन्त, वाष्प से उबाला गया। परिसेदेति, किया, वाष्प-स्नान करता है, सॅकता है, (ग्रण्डे) सेता है। परिसोधन, नपुं०, शुद्धि । परिसोघेति, किया, शुद्ध करता है, साफ करता है। (परिसोधेसि, परिसोबित, परिसो-घित्वा, परिसोधिय)। परिसोसेति, किया. सुखाता है। (परिसोसेसि, परिसोसित)। परिस्साजति, किया, गले मिलता है। (परिस्सजि, परिस्सजित, परिस्स-जन्त,परिस्सजित्वा)। परिस्सजन, नपुं०, गले मिलना। परिस्तन्त, कृदन्त, परिश्रान्त, थका हुम्रा । परिस्सम, पु॰, परिश्रम, मेहनत। परिस्सय, पु॰, खतरा, परेशानी। परिस्सावन, नपुं०, पानी छानने का साधन । परिस्सावेति, किया, पानी छानता है। (परिस्सावेसि, परिस्सावित, परि-स्सावेत्वा)। परिहरण, नपुं०, ले जाना, संरक्षण। परिहरणा, स्त्री॰, रखना, ले जाना, संरक्षण। परिहरति, किया, संमालता है, रक्षा करता है, ले जाता है।

(परिहरि, परिहरित, परिहत, परि-हरित्वा)। परिहसति, ऋिया, हँसता है। (परिहसि, परिहसित, परिह-सित्वा)। परिहानि, स्त्री॰, हानि । परिहानिय, वि०, हानिकर। परिहापेति, किया, अवनत होता है, लापरवाही करता है। (परिहापेति, परिहापित, परिहा-पेत्वा)। परिहायति, किया, अवनत होता है, नुकसान उठाता है। (परिहायि, परिहीन, परिहायमान, परिहायित्वा)। पारंहार, पुं॰, संरक्षण, बचाव। परिहारक, वि०, संरक्षक, पहरेदार। परिहार-पथ, पु०, चनकरदार रास्ता। परिहारिक, वि०, (जीवित) रखने वाला। परिहास, पु०, हँसी-मजाक। परिहोन, कृदन्त, हानिग्रस्त, ग्रनाय। परूपक्कम, पु०, शत्रु का मात्रमण। परूपघात, पु॰, दूसरों का घात। परूपवाद, पु०, दूसरों द्वारा किया गया दोषारोपण। परूळ्ह, कृदन्त, उगा हुया। परूळ्ह-केस, वि०, लम्बे बालों वाला। परेत, वि०, युक्त, संयुक्त। परो, ग्रव्यय, मरणान्तर, ग्रागे, ऊपर। परोक्स, वि०, परोक्ष, ग्रांस से मोभल। परोक्खे, प्रव्यय, परोक्ष में, प्रनुप-स्थिति में।

परोदति, ऋया, रोता है। (परोदि, परोदित्वा) । परोवर, वि०, ऊँच-नीच। परोवरिय, वि०, ऊँचे-नीचे। परोसत, वि०, सौ से प्रधिक। परोसहस्स, वि०, हजार से प्रधिक। पर्रोसहस्स जातक, तपस्वी के हजार शिष्य, 'माकिञ्चञ्जायतन' यथायं मावायं नहीं सम्क सके 1 (33) पल, नपुं०, तोल का माप-विशेष। पल-गण्ड, पु०, राज (मकान बनाने वाला)। पलण्ड, पु०, प्याज। पलण्डक, देखी पलण्ड । पलपति, किया, बकवास करता है। (पलपि, पलपित, पलपित्वा)। पलपन, नपुं ०, व्यथं की बातचीत। पलपित, नपुं०, देखो, पलपन। पलय, पु॰, प्रलय, कल्प-विनाश। पलवङ्ग, पु०, काला मुंह व लम्बी पुंछ वाला लंगूर। पलात, कृदन्त, मागा हुमा। पलाप, पु०, (धान की) भूसी, व्ययं का बकवास। पलापी, पु॰, वकवास करने वाला। पलापेति, किया, मगा देता है, बक-वास करता है। (पलापेसि, पलापित, पलापेत्वा)। पलायति, किया, भागता है, बच निक-लता है। (पलायि, पलात, पलायन्त, पला-यित्वा)। पसायन, नपुं , भाग जाना ।

पलायनक, वि०, भागता हुमा। पलायी, पु॰, मागा हुमा। पलायो जातक, बनारस-नरेश तक्ष-शिला पर प्राक्रमण करने गया, किन्तु नगर की भेंटारियों के शिखरों को देखकर ही वापिस माग भाया (378) 1 पताल, नपुं॰, पुपाल (धान का), भूसा, पोघों का डंठल । पलाल-पुञ्ज, पु०, पुप्राल का ढेर। पलास, पु॰ तथा नपुं॰, पत्ता, ईर्षा, द्वेष, तिरस्कार। पतास-साद, वि०, पत्तों का भोतन। पलास जातक, ब्राह्मण को पलास-वृक्ष के नीचे गड़ा घन मिला (३०७)। पलास जातक, पलास-वृक्ष में वट-वृक्ष उग प्राया, जिसने घीरे-घीरे पलास-वृक्ष को ही नष्ट कर दिया (oe) 1 पतासाद, पु॰, गेंडा। पतासी, वि०, ईर्षालु । पलिघ, पु॰, घगंला, बाघा, रुकावट। पलित, वि०, प्रौढ़, सफेद (बाल); नपुं०, सफेद बाल। पतिप, पु०, दलदल। पितपय, पु॰, खतरनाक रास्ता, खतरा, बाघा। पिलपन्न, कृदन्त, गिरा या डूबा हुपा। पतुगा, कृदन्त, नीचे गिरा हुमा, टूटा पलुज्जति, नीचे गिरता है, दूट जाता (पलुडिब, पजुम्बमान, पसुन्बिरवा)। पतुम्बन, नर्•, सहब्रहाना ।

पलुख, कृदन्त, अत्यन्त आसक्त । पलेति, त्रिया, चला जाता है। पलोभन, नपुं०, प्रलोमन, लालज । पलोभेति, क्रिया, लालच देता है। (पलोमेसि, पलोभित, पलोमेत्वा)। पल्लङ्ग, पु०, पलंग, दीवान; वि०, पालची मार कर बैठा हुआ। पल्लित्यका, स्त्री०, पालकी । पल्लल, नपुं०, छोटा तालाब या भील, दलदल जमीन। पल्लव, पु०, कोंपल। पवक्खति, ऋया, कहेगा, बता देगा। पवड्ढ, (पवद्ध भी), वि०, विधत, शक्तिशाली। पयड्ढति, किया, बढ़ता है। (प्विड्ढ, पविड्ढत, पविड्ढत्वा) । पवड्ढन, नपुं०, वृद्धि। पबत्त, वि०, चालू रहा, नीचे गिरा; नप्ं, वह जो चालू रहे, यानी मव-चकै, जन्म-मरण का चक्कर। पवत्तति, ऋिया, चालू रहता है, विद्य-मान रहता है। (पवत्ति, पवत्तित, पवत्तित्वा)। पवत्तन, नपुं०, प्रस्तित्व, चालू रखना। पवत्तापन, नपुं०, लगातार चालू रखना। पवत्ति, स्त्री० प्रवृत्ति, घटना । पवलेति, किया, चालू करता है। (पवत्तेसि, पवत्तित,, पवत्तेन्त, पव-त्तेत्वा, पवत्तेतुं)। पवत्तेतु, पु॰, चालू करने वाला। पवद्ध, देखो, पवड्ढ । पवन, नपुं॰, धनाज पछोरना, पहाड़ का किनारा, हवा।

पवर, वि०, श्रेष्ठ। पवसति, किया, रहता है, वास करता है। (पवसि, पवत्य, पवसित्वा)। पवस्सति, ऋिया, बरसता है। (पवस्सि, पबृट्ठ, पवस्सित्वा)। पवस्सन, नपुं०, वर्षा। पवात, नपुं०, ऐसी जगह, जहां हवा चलती हो, ठंडी हवा। पवाति, सुगन्धि फैलती है, हवा चलती है। पवायति, क्रिया, (हवा) चलती है, बहती है, सुगन्धि फैलाता है। (पवायि, पवायित, पवायित्वा)। पवारणा, स्त्री॰, निमंत्रण, वर्षावास के बाद किया जाने वाला एक धार्मिक संस्कार, सन्तोष। पवारित, कृदन्त, निमंत्रित, पवारणा मनाई गई। पवारेति, ऋिया, निमंत्रण देता है, सींपता है, 'पवारणा' करता है। (पवारेसि, पवारेत्वा)। पवाल, पु॰, प्रवाल, मूंगा, कोंपल। पवास, पु॰, प्रवास, घर से दूर रहना। पवासी, पु॰, प्रवासी। पवाह, पु०, प्रवाह, बहाव। पवाहक, वि०, ले जाने वाला। पवाहेति, क्रिया, प्रवाहित करता है, बहा देता है। (पवाहेसि, पवाहित, पवाहेत्वा) । पवाळ, देखो पवाल। पवाळ्ह, कृदन्स, रह् कर दिया गया। पविज्ञति, क्रिया, बींघता है। (पविज्ञिक, पविद्य, पविज्ञिक्तवा)।

पविट्ठ, कृदन्त, प्रविष्ट । पविवित्त, वि०, पृथक् कृत, एकान्त (स्यान)। पविवेक, पु०, एकान्त । पविसति, ऋिया, प्रवेश करता है। (पविसि, पविसन्त, पविसित्वा, पविसित्ं)। पवीण, वि०, प्रवीण, होशियार। पव्चित, किया, कहलाता है, कहा जाता है। प्रवृत्त, कृदन्त, कहलायां गया। पवृत्य, कृदन्त, रहा। पवेणि, स्त्री०, परम्परा, उत्तरा-घिकार, (सिर के बालों की) वेणी। पवेदन, नपुं०, घोषणा । पवेदियमान, कृदन्त, घोषित किया जाता हमा । पवेवेति, किया, विज्ञापित करता है, प्रगट करता है। पवेवित, (पवेदेसि, पवेबेन्त)। पवेषति, किया, कांपता है, हरा हुमा होना । (पवेधि, पवेधित, पवेधित्वा, पवेध-मान)। पवेस, पु॰, प्रवेश । पवेसन, नपुं०, दाखला, घुसना। पवेसक, वि०, प्रवेश करने वाला या कराने वाला। पवेसेति, किया, प्रवेश कराता है, परि-चय कराता है। पबेसित, (पबेसेसि, वबेसेस्वा, पबेसेन्त, पबेसेतुं)।

पवेसेतु, पु॰, प्रवेश कराने वाला। पसंसक, पु॰, प्रशंसा करने वाला या ख्शामद करने वाला। पसंसति, किया, प्रशंसा करता है। (पसंसि, पसंसित, पसत्य, पसंसन्त, पसंसित्वन, पसंसिय, पसंसितुं) । पसंसन, न्युं॰, प्रशंसा । पसंसा, स्त्री॰, स्तुति। मवस्था, पसङ्ग, go, प्रसङ्ग, ग्रासक्ति। पसटं, कृदन्त, प्रशस्त, फैला हुमा। पसत, पु॰, प्रंसर, गहरी की हुई ग्रंजली। पसत्य, (पसट्ठ भी) कृदन्त, प्रशस्त । पसद, पु॰, मृग-विशेष । पसन्न, कृदन्त, प्रसन्न, स्पष्ट, तेज-युक्त । पसन्त-चित्त, वि०, प्रसन्त-चित्त । पसन्न-मानस, वि०, प्रसन्न-मन । पसरह, पूर्वं किया, जबदंस्ती करके। पसव, पुर, सन्तान, (बच्चा) पदा करना। पसवति, क्रिया, उत्पन्न करता है। (पसवि, पसवित, पसवन्त, पस-वित्वा)। पसहति, ऋिया, दबाता है, जीत लेता है, मदंन करता है। (पसिंह, पसिंहत्वा, पसरम्ह) पसहन, नपुं०, प्रधिकार करना, मधीन करना। पसारव, नपुं॰, शाखाएँ फूट निकलने का स्यान। पसारवा, स्त्री , छोटी-छोटी शासाएँ। यसार पु॰, प्रसन्नवा, भद्रा, स्पष्टता,

[(इन्द्रिय-)पसाव, इन्द्रियों कायं।] पसादनिय, वि०, विश्वासोत्पादक। पसादेति, क्रिया, प्रसन्न करता है, पवित्र करता है, श्रद्धावान् बना लेता है। (पसादेसि, पसादित, पसादेन्त, पसादेत्वा, पसादेतव्व) । पसायन, नपुं०, गहना, सजावट। पसाचेति, किया, गहना पहनता है, सजता है। (पसाधेसि, पसाधित, पसाधेत्वा, पसाधिय)। पसारण, नपुं०, प्रसारण । पसारित, कृदन्त, प्रसारित, फैलाया गया । पसारेति, किया, फैलाता है। (पसारेसि, पसारित, पसारेत्वा)। पसासति, किया, अनुशासन करता है, शिक्षा देता है, राज्य करता है। (पसासि, पसासित, पसासित्वा) । पिसति, स्त्री०, बन्धन । पसिद्ध, वि०, प्रसिद्ध । पसिन्बक, पु०, रुपयों की बाँसनी,, थैली। पसोदति, क्रिया, प्रसन्न होता है, श्रद्धावान होता है। पसीवित्वा, (पसीवि, पसन्न, पसीदितब्ब)। पसीदन, नपुं०, श्रद्धा, प्रसन्नता। पसीदना, स्त्री०, श्रद्धा, संतीष । पसु, पु॰, पशु, चौपाया। पसुत, वि०, लगा हुमा, प्रासक्त । पसूत, कृदन्त, प्रसूत, उत्पन्न हुमा,

बच्चा दिया। पसूति, स्त्री०, प्रसूति, जन्म । पसूतिका, स्त्री०, प्रसूतिका, वह स्त्री जिसने किसी बच्चे को जन्म दिया हो। पसूतिका-घर, नवुं०, प्रसूतिका-गृहं। पसेनिव, बुद्ध का समकालीन, कोसल-नरेश। पस्स, पु॰, पाइवं, पासा, एक तरफ। पस्सति, क्रिया, देखता है, पता लगता है, समभता है। (पहिस, दिट्ठ, पस्तन्त, पस्तमान, पहिसत्वा, विस्वा, पहिसय, पहिसत्ं, पस्सितब्ब)। पस्सद्ध, कृदन्त, शान्त । पस्ति हि, स्त्री०, शान्ति, गाम्मीयं। पस्सम्भति, ऋिया, शान्त होता है। (पस्तिम्भ, पस्तिम्भत्वा) । पस्सम्भना, स्त्री०, शान्ति। पस्सम्भेति, किया, शान्त करता है। (पस्तम्मेसि, पस्तम्भित, पस्सम्भेत्वा, पस्सम्भेन्त)। पस्ससति, किया, प्रश्वास खेता है। (पस्सति, पस्ससित, पस्ससित्वा, पस्ससन्त)। पस्ताव, पु०, पेशाव। पस्ताव-माग, पु०, योनि, पेशाव का मागं । पस्तास, पु०, सौस निकालना । पस्सासी, पु॰, साँस निकालने बाला। पहट, कृदन्त, प्रहार-प्राप्त, चोट खाया पहट्ठ, कृदन्त, घत्यन्त प्रसन्न-चित्त । पहरण, नपुं०, पीटना, प्रहार करना,

प्रहार करने के लिए शस्त्र । पहरणक, विक, पिटाई क छोवाला । पहरति, किया, पीटता है। (पहरि, पहरन्त, पहरित्या, पहरितुं)। पहाण (पहान भी), नपुंक, हटाना, छोड़ना, त्यागना । पहाय, पूर्व किया, छोड़ कर । पहायी, पु०, छोड़ने नाला। पहार, पू०, प्रहार, चोट, (एक-प्पहारेन, एक ही प्रहार से, एक ही बार)। पहार-दान, नपुं०, चोट पहुँ बाना । पहास, पु॰, ग्रत्यन्त प्रीति । पहासेति, क्रिया, हुँसाता है, धानन्दित करता है। पहासेनि, प्रहॉयत किया । पहासित, कृदन्त, प्रह्मित । पहिणन, नपुं०, भेजना । पहिण-गमन, नपंक, दूत की तरह जाना । पहिणति, त्रिया, भेदना है। (पहिणि, पहिणन्त, पहिणिन्दा) । पहित, कृदन्त, श्रेषित, सेत्रा गया । पहीन, कृदन्त, प्रहीण, रहित, त्यस्त, नष्ट । पहीयति, त्रिया, प्रहीण होता है, नहीं रहता है, त्यामा जाता है। (पहीषि, पहीन, पहीयमान, पही-पित्वा)। पह, वि०, योग्य। पहुत, वि०, बहुत संविक । पहुत-जिब्ह, वि०, बड़ी जीम बाला। पहत-मन्त, वि०, प्रचुर खाद-पदार

वाला या प्रचुर खाने वाला। पहेजक, नपुं०, किसी को भेजने योग्य मॅट । पहोति, किया, समयं होता है, देखो पमवति । पहोनक, वि०, पर्याप्त। पळिगुण्डेति, किया, उलभाता ढकता है। (पळिगुण्ठेसि, पळिगुण्ठित) । पळिघ (पलिघ भी), पु०, भरगल, बाघा। पळिबुज्भति, किया, प्रमाद करता है, मैला होता है, बाधित होता है। (पळिबुज्भि, पळिबुढ, पळि-बुजिमत्वा)। पळिबुज्यत, नपुं०, मैला होना । पळिषोघ, पु०, बाधा। पळिवेठन, नपुं०, लपेटना, घेर लेना। पळिवेटेति, किया, लपेटता है, घेर लेता है। (पळिवेठेसि, पळिवेठित) । पंसु, पु०, घूल। पंसु-कूल, नपुं०, घुल का ढेर। पंसुकूल-चीवर, नपुं०, कूड़े-करकट के ढेर पर से इकट्ठे किये हुए चीयड़ों का चीवर। पंसुकूलिक, वि०, चीयड़ों का चीवर पहनने वाला। पाक, पु॰, पकाना, पकाया हुमा। पाक-बट्ट, नपुं०, मोजन-सामग्री की लगातार प्राप्ति । पाकट, वि०, प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात। पाकट्ठान, नपुं०, रसोईघर। पाकतिक, वि०, प्राकृतिक, कुदरती।

पाकार, पु॰, प्राकार, चारदीवारी। पाकार-परिविखल, वि०, दीवार से घिरा। पागिक्स्य, नपुं०, प्रगत्मता, वाचा-पागुञ्जता, स्त्री॰, प्रगुणता । पाचक, वि०, पकाने वाला। पाचन, नपुं०, पकाना, पशु हाँव ने की छड़ी। पाचरिय, नपुं०, प्राचायं। पाचापेति, किया, पकवाता है। (पाचापेसि, पाचापित, पेत्वा)। पाचिका, स्त्री०, पकाने वाली । पाचित्तिय, विनयपिटक का ग्रन्थ। पाचीन, वि०, पूर्वीय। पाचीन-दिसा, स्त्री॰, पूर्व दिशा । पाचीन-मुखा, वि०, पूर्व दिशामिमुख। पाचेति, किया, पकवाता है। पाजन, नपं०, हौकना । पाजेति, किया, हांकता है। (पाजेसि, पाजित, पाजेन्त, पाजेत्वा, पाजापेति)। पाटल, वि०, गुलाब, गुलाबी। पाटलिपुत्त, मगध की प्राचीन राज-घानी (पटना)। पाटली, पू०, वृक्ष-विशेष । पाटव, पू० तथा नपुं०, पदु-माव, दक्षता । पाटिकङ्क, वि०, ग्राशान्वित । पाटिक्ङ्को, वि०, ग्राशा करनेवाला। पाटिकम्म (फाटिकम्म भी), नपुं०, प्रतिकमं, मरम्मत । पाटिका, स्त्री०, प्रधंगोलाकार चान्द्र-

प्रस्तर। पाटिक्ल्य, नपुं०, प्रतिकूलता। पाटिपव, पु॰, प्रतिपद, चान्द्र मास के शुक्ल-पक्ष का प्रथम दिन। पाटिभोग, पु०, जिम्मेदार। पाटिमोक्स (पातिमोक्स भी), पु॰, भिक्ष-विनय के दो सी सत्ताईस नियमों का संग्रह। पाटियेक्क, वि०, प्रत्येक, पृथक्-पृथक् । याटिहार (पाटिहीर, पाटिहेर, पाटि-हारिय मी), नपुं०, करिश्मा। पाटिहारिय-पक्ख, पु०, भ्रतिरिक्त छुट्टी । पाटेक्क, देखो पाटियेक्क। पाठ, पु०, ग्रन्थ-विशेष का धनुच्छेद, पाठ । पाठक, वि०, पाठ करने वाला। पाठीन, पू॰, मछली का एक प्रकार। पाण, पु॰, जीवन, साँस, प्राणी । पाण-घात, पु०, प्राणि-हत्या । पाण-घाती, पु०, जीव हत्या करने वाला। पाणद, वि०, प्राण-रक्षक। पाण-भूत, पु०, जीवित प्राणी। पाण-वध, पु॰, जीव-हत्या । वि०, प्राण के समान पाण-सम, (प्रिय)। पाण-हर, वि०, प्राण हरण करने वाला। पाणक, पु०, कीड़ा। पाणि, पु०, हाथ, हथेली। पाण-तल, नपुं०, हाथ की हथेली। पाणिग्गह, पु॰, पाणि-ग्रहण, विवाह । पाणिका, स्त्री॰, हाथ ज्सी वस्तु,

तौलिया। पाणी, पु०, प्राणी। पातु, पु०, गिरना, फेंकना। पातन, नपुं०, गिराना, फेंकना। पातब्ब, कृदन्त, पीने योग्य। पातरास, पु०, कलेवा, सुबह का नाश्ता, बेककास्ट। पाताल, पु॰, पाताल (-लोक), पृथ्वी के नीचे का माग। पाति, स्त्री०, पात्र, याली; किया, रक्षा करता है। पातिक, नपुं ०, तश्तरी । पातिमोक्स, देसो पाटिमोक्स । पाती, वि०, फॅकने वाला, छोड़ने वाला। ग्रव्यय, सामने, दिखाई देने पातु, वाला, प्रकट। पात्कम्म, नपुं०, प्रकट करना। पातुकरण, नपुं०, प्रकट करना। पातुभाव, पु॰, प्रादुमवि, प्रकट होना। पातुमूत, कृदन्त, प्रकट हुमा। पातुकम्यता, वि०, पीने की इच्छा। पातुकरोति, किया, प्रकट करता है। पातुकरि, प्रकट किया। पातुकत, प्रकट हुमा । पातुकरित्वा, प्रकट करके। पातुकत्वा, प्रकट करके। वि०, पीने की इच्छा पातुकाम, पातुभवति, किया, प्रादुर्भूत होता है, प्रकट होता है। (पातुभवि, पातुमूत, पातुभवित्वा)। पातुरहोसि, प्रादुर्मूत हुमा। पातुं, पीने के लिए।

पातेति, किया, गिराता है, फेंकता है, हत्या करता है। (पातेसि, पातित, पातेत्वा)। पातो, ग्रव्यय, प्रातःकाल। पातोब, ग्रन्यय, सुबह, सवेरे, तड़के। पाथेम्य, नपुं०, रास्ते के लिए खुराकी। पाद, पु॰, तथा नपुं॰, पाँव, टाँग, किसी लम्बाई का चौथा हिस्सा, किसी छन्द की चार पंक्तियों में से एक। पादक, वि०, ग्राधार-सहित, नींव वाला। पादकज्ञान, नपुं०, साधार घ्यान-भावना। पाद-कठलिका, स्त्री०, पाँव रगड़ने के लिए लकड़ी का दुकड़ा। पादङ्गंट्ठ, नपुं०, ग्रंगूठा। पादङ्गुलि, स्त्री०, पंजा। पादट्ठिक, नपुं०, टाँग की हड्डी। पाव-तल, पांव का तल्ला। पाद-परिचारिका, स्त्री०, पत्नी। पाद-पीठ, तपुं ०, पौव रखने की चौकी। पाद-पुंछन, नपुं०, पाँव पोंछने का कपड़ा। पाद-मूले, चरणों में। पाद-मूलिक, पु०, नौकर। पाद-लोल, वि०, घूमने-फिरने का इच्छक । पाद-सम्बाहन, नपुं०, पैरों का दबाना, पैरों की मालिश। पादञ्जलि-जातक, राजा का पादञ्जलि नामक भावारागदं पुत्र नरेश नहीं बन सका (२४७)। पावप, पु॰, वृक्ष ।

पादासि, ऋया, (उसने) दिया। पादका, स्त्री॰, खड़ाऊँ। पादूबर, पु०, सांप। पादोदक, पू०, पौव घोने का जल। पान, नपुं॰, पीना, पेय पदार्थ । पानक, नपुं०, पेय पदार्थ । पान-मण्डल, नपुं०, सुरापान करने का स्थान । पानागार, नपुं०, शराबखाना । पानीय, नवुं०, पानी, पेय पदार्थं । पानीय-घट, पु॰, पानी का घड़ा। पानीय-चाटी, स्त्री॰, पानी की चाटी। पानीय-यालिका, स्त्री०, पीने प्याला । पानीय-भाजन, नपुं ०, पीने का बतंन। पानीय-मालक, नपुं०, प्याऊ। पानीय-साला, स्त्री॰, प्याऊ। पानीय-जातक, ग्रपना पानी बचाकर पानी पीने दूसरे का कया (४५६)। पाप, नपुं०, ग्रकुशल-कर्म; वि०, बुरा। पाप-कम्म, नपुं०, अपराघ, पाप-कमं। पाप-बम्मन्त, वि०, पापी। पापकर (पापकारी भी), वि ०, पापी। पाप-करण, नपुं०, दुष्कमं करना । पाप-घम्म, वि०, पापी। पाप-मित्त, पु०, बूरा दोस्त । पाप-मित्तता, स्त्री०, कुसंगति । पाप-सङ्क्ष्प, पु०,बुरे विचार । पाप-सुपिन, नपुं०, बुरा सपना। पापक, वि०, पापी। पापणिक, पु॰, दुकानदार। पापिका, स्त्री०, पापिन। पापित, फ़दन्त, जिसने बुरा किया हो,

पहुँचा हुमा। पापिमन्तु, वि०, पाप करने वाला। पापियो, वि०, (तुलनात्मक) उससे बड़ा पापी। पापुणन, नपुं०, प्राप्ति, पहुँच। पापुणाति, ऋिया, पहुँचता है। पापुणन्त, पापुणित्वा, (पापुणि, (पत्वा), पापुणितुं, पत्तुं) । पापुरण, नपुं०, धोढ़ना, कम्बल। पापुरति, किया, लपेटता है, ग्रोढ़ता है। पापेति, किया, पहुँचाता है, प्राप्त कराता है। (पापेसि, पापित, पापेन्त, पापेत्वा)। पाभत, नपुं०, भेंट । पाम, नपुं०, खाज, खुजली। पामङ्ग, नपुं०, छाती पर बौधने की पट्टी । पामुज्ज, नपुं०, प्रसन्नता, ग्रानन्द । पामेति, किया, तुलना करता है। पामोक्ख, वि०, प्रमुख, पु०, नेता, नायक। पामोज्ज, देखो पामुज्ज। पाय, वि॰, (समास में) भरा हुमा, प्राय: । पायक, वि०, चूसने वाला या पीने वाला। पायाति, क्रिया, चल देता है। (पायासि)। पायास, पुं०, दूध की खीर। पायित, कृदन्त, पिया गया। पायी, वि॰, पीने वाला। पायु, पु॰, गुदा। पायेति, ऋिया, चुसवाता है, पिलाता

है। (पायेसि, पायित, पायेन्त, पायमान, पायेत्वा)। पायेन, कि॰ वि॰, प्राय: । पार, नपुं॰, (नदी के) पार, दूसरा तट । पार-गत, वि०, पार पहुँचा हुआ। पार-गवेसी, वि०, उस पार जाने का इच्छुक । पार-गामी, पुं•, उस पार जाने वाला। पारगू (पारङ्गत, पारपत्त), वि०, उस पार पहुंचा हुमा। पारलोकिक, वि०, परलोक सम्बन्धी। पारद, पु०, पारा। पारदारिक, पु॰, पराई स्त्री के पास जाने वाला। पारमिता (पारमी भी), स्त्री०, सम्पूर्णता, गुणों की पराकाष्ठा । पारम्परिय, नपुं॰, परम्परा। पारं, कि॰ वि॰, पार, उस पार, भागे। पाराजिक, वि०, मिक्षुग्रों द्वारा किये जा सकने वाले चार प्रधान दोषों में से किसी एक का दोषी; (नाम) विनय-पिटक के सुत्तविमंग के दो भागों में से पहला भाग। (पारावत भी), पु॰, पारापत, कबूतर। पारायण (पारायन भी), नपुं॰, मन्तिम उद्देश्य, प्रधान उद्देश्य । पारिचरिया, स्त्री०, सेवा-सुश्रूषा । पारिच्छत्तक, त्रयोत्रिश देव-लोक के नन्दन वन में जगा हुआ वृक्ष, मूंगे का वेड ।

पारिजातक, पु०, पारिच्छत्तक । पारिपन्यिक, वि०, खतरनाक, बट-मार । पारिपूरि, स्त्री ०, पूर्ति, सम्पूर्णता । पारिम, वि॰, उघर, आगे, भीर भागे। पारिभोगिक, वि०, उपयोग में लाने योग्य, उपयोग में लाया हुआ। पारिलेय्य, (पारिलेय्यक मी) कोसम्बी के समीप का वन या कोई छोटा पारिवट्टक, वि०, ग्रदला-बदली किया पारिसज्ज, वि०, परिषद् का सदस्य। पारिसुद्धि, स्त्री०, पवित्रता । पारिसुद्धि-सील, नपुं०, जीविका के साधनों की शृद्धि। पारुत, कृदन्त, भ्रोढ़ा हुम्रा। पारपति, ऋिया, भ्रोदता है, पहनता है। (पारुपि, पारुपित्वा, पारुपन्त)। पारुपन, नपुं०, वस्त्र, चीवर। पारेवत, देखो पारापत, पारावत। पारोह, पु०, वट-वृक्ष की भाति किसी पेड की शाखा से लटकने वाली दाढी। पाल, पु॰, पालक, संरक्षक। पालक, पु॰, पालने वाला, संरक्षक। पालन, नपुं॰, संरक्षण। पालना, स्त्री०, ग्रारक्षा, सुरक्षा । पालि (पाली, पाळि, पाळी मी), स्त्री॰, पंक्ति, बौद्ध तिपिटक ग्रयवा तिपिटक की मापा। पालिस्च, नपुं०, सिर के बालों की सफेदी।

पालेति, ऋया, पालन करता है। (पालेसि, पालेन्त, पालित, पालेतम्ब, पालेत्वा, पालेतुं)। पालेतु, पु०, पालने वाला, संर-क्षक। पावक, पू०, ग्रग्नि। पावचन, नपुं०, प्रवचन, बुढोपदेश। पावळ, पु॰, नितम्ब, चूतड़। पावस्सि, बरसा। पावा, मल्लों का एक नगर, जहाँ भगवान् बुद्ध ग्रपने जीवन के ग्रन्तिम दिनों में गये थे। पावार, पू०, चोगा। पावारिक, वि०, चोगा बेचने वाला। पावस, पू॰, वर्षा ऋतु, मछली-विशेष । पावस्सक, वि०, वर्षा-ऋतु सम्बन्धी। पास, पू॰, पाश, ढेलवांस, जाल, बटन का छेद। गसक, पु॰, पासा। पासण्ड, नपुं०, मिथ्या-दृष्टि । पासण्डिक, पु०, मिच्या-दृष्टि वाला, पाखण्डी। पासाण, पु०, पत्थर, चट्टान । पासाण-गुळ, पु॰, पत्थर की गोली। पासाण-चेतिय, नपुं०, पत्थर का देवा-लय या चैत्य । पासाण-पिट्ठ, स्त्री०, चट्टान का ऊपरी तल। पासाण-फलक, पु०, पाषाण-फलक। पासाण-लेखा, स्त्री०, चट्टान पर उत्कीणं लेख । पासाद, पु॰, प्रासाद, महल। पासाब-तस, नपुं०, महल का उपरी

तल्ला । पासादिक, वि०, प्रियकर, मच्छा लगने वाला। पाहुण, पु॰, ग्रतिथि; नपुं॰, ग्रतिथि-मोजन, मेंट। पाहुणेय्य, वि०, ग्रातिच्य करने के योग्य। पाहेति, किया, मिजवाता है। (पाहेसि)। पि, ग्रन्यय, ग्रपि, मी। पिक, पु०, कोयत । पिङ्गान, वि०, ताम्र-त्रणं। पिङ्गल-नेत्त, वि०, पिगल-वर्ण नेत्रों वाला। पिङ्कत-पविखका, स्त्री०, गोमन्त्री। पिच, नगुं०, कपास । पिच-पटल, कपास की तह। पिच्छ, नपुं०, मोर का पिछला पंख। पिच्छिल, वि॰, फिसलने वाला । पिञ्ज, नपुं०, पक्षियों का पिछला माग। पिञ्जर, वि०, रक्त वर्ण । पिञ्जाक, नपुं०, खली। पिटक, नपुं॰, पिटारी; पालि तिपिटक में से कोई एक पिटक। तीन पिटक हॅ—(१) सुत्तपिटक, (२) विनय-पिटक, (३) ग्रभिधम्मपिटक। पिटक-घर, वि०. जिसे समस्त पिटक कण्ठस्थ हो। पिट्ठ, नपुं०, पीठ, पीछे का हिस्सा, भाटा। पिट्ठ-बादनिय, नपुं०, ग्राटे की मिठाई। विट्ठ-बीतलिका, स्त्री॰, ब्राटे की

गुड़िया। पिट्ठ-पिण्डी, स्त्री०, ग्राटे की पिण्डी। पिट्ठ, स्त्री॰, पीठ। पिट्ठि-कण्टक, नपुं०, रीढ़ की हड्डी। पिटिठ-गत, वि०, किसी पशु या धन्य किसी की पीठ पर चढना। पिटिठ-पस्स, नपुं०, पिछला हिस्सा। पिट्ठि-पासाण, पु०, चौड़ी चट्टान । पिटिठ-मंसिक, वि०, चुगली साने वाला। पिट्ठ-वंस, पीठ की हट्डी, इमारत की कोई शहतीर। पिठर, पु॰, मिट्टी का बड़ा मटका। पिण्ड, पु०, म्राहार-पिण्ड। पिण्ड-चारिका, वि०, मिक्षाटन करने वाला। पिण्ड-दायक, पु०, भिक्षा देने वाला। पिण्ड-पात, पु॰, मिलाटन, मिला-दान। पिण्ड-पातिक, वि०, मिक्षाटन करने-वाला या मात्र मिक्षाटन से प्राप्त मोजन ग्रहण करने वाला। पिण्डाचार, पु॰, मिक्षाटन । पिण्डक, पु० तथा नपुं०, मिक्षा में मिला ग्राहार। पिण्डाय, (चतुर्थी विमक्ति), मिक्षाटन के लिए। पिण्डि, स्त्री०, गुच्छा। पिण्डिक-मंस, नपुं ०, नितम्ब, चूतड् । पिण्डित, कृदन्त, पिण्डी-कृत। पिण्डियालोप-भोजन, नपुं०, मिक्षाटन से प्राप्त मोजन। पिण्डेति, क्रिया, पिण्ड बनाता है। (पिण्डेसि, पिण्डेत्वा) ।

पिंण्डोल-मारद्वाज, कोसम्बी के राजा उदेन के पूरोहित का पुत्र। वह भारद्वाज-गोत्रीय या। पिण्डोल्य; नपुं ०, मिक्षाटन । पितामह, पु॰, पितामह, दादा । पितिक, वि०, जिसका पिता हो। पिति-पक्ल, पु०, पिता की भ्रोर से। पितु, पु॰, पिता । पितु-किच्च, नपुं०, पिता का कर्तव्य । पितु-घात, पु॰, पितृ-हत्या। पितु-सन्तक, वि०, पिता की सम्पत्ति । पितुच्छा, स्त्री॰, पिता की बहन, बुग्रा, कुफी । पित्च्छा-पूत्त, पुल, फूफी का लड़का। पित्त, नपुं०, पित्त (वात, पित्त, कफ में से)। पित्ताधिक, वि०, जिसमें पित्त का भाधिक्य हो। पियीयति, किया, बन्द किया जाता है, छिपा दिया जाता है। (पिथीयि, पिथीयित्वा)। पिदहति, किया, बन्द करता है, दकता है। (पिवहि, पिवहित, पिहित, पिव-हित्वा, पिघाय)। पिवहन, नपुं०, बन्द करना, ढकना। पिघान, नपुं०, ढक्कन। पिनास, पु०, जुकाम। पिपासा, स्त्री०, प्यास। 'पिपासित, कृदन्त, प्यासा । पिपिल्लिका (पिपीलिका भी), स्त्री०, चींटी। विष्फलक, नपुं०, केंची। पिप्फली, स्त्री० पिप्पली। पिबति, किया, पीता है।

(पिबि, पीत, पिबन्त, पिबमान, पिवित्वा, पातुं, पिवितुं) पिय, वि०, प्रिय, प्यारा; पु०, पति; नपुं०, प्यारी वस्तु। पियकम्यता, स्त्री०, प्रिय वस्तुम्रों की या स्वयं प्रिय बनने की इच्छा। पियतर, वि०, प्रियतर। पियतम, वि०, प्रियतम, सर्वाधिक प्रिय। पिय-दस्सन, वि०, प्रिय-दर्शन, देखने में प्यारा। पिय-रूप, नपुं०, प्रिय रूप, ग्राकपंक ह्य। पिय-बचन, नपुं०, प्रिय बचन, मीठी बोली; वि॰, मीठी बोली बोलने वाला। पिय-भाणी, वि०, मधुर वचन माषी। पियवादी, वि॰, मीठा बोलने वाला। पियविष्पयोग, पु॰, प्रिय से विप्रयोग या विछोह। पियङ्गः, पु॰, दवाई में काम ग्राने वाला पौघा-विशेष। पियता, स्त्री॰, प्रिय माव। पिया, स्त्री०, पत्नी। पियापाय, वि॰, प्रिय-विप्रयोग, प्रिय से बिछड़ना। पियायति, क्रिया, प्रेम करता है। (पियायि, पियायित, पियायन्त, पियायमान, पियायित्वा)। पियायना, स्त्री०, प्रेम करना। पिलक्ल, पु०, ग्रंजीर का पेड़। पिलन्धति, किया, सजता है, सजाता है। (पिलन्बि, पिलन्घित, पिलन्बिय,

पिलन्घित्वा)। पिलन्धन, नपुं०, गहना । पिलवति (प्लवति मी), क्रिया, तैरता है। (प्लिव, प्लियत, प्लिवत्वा)। पिलोतिका, स्त्री॰, चीयड़ा, फटा-पुराना कपड़ा। पिल्लक, पु०, (कुत्ते का) पिल्ला। पिवति, देखो पिवति। पिवन, नपुं०, पीना। पिसति, किया, पीसता है। (पिसि, पिसित, पिसित्वा)। पिसन, (पिसन मी), नपुं०, पीसना। पिसाच, पिसाचक, पु०, (भूत-) पिशाच । पिसित, नपुं०, मांस । पिसुण, नपुं०, चुगली; वि०, चुगली खाने वाला। पिसृणावाचा, स्त्री०, चुगल-खोरी। पिहक, नपुं०, प्लीहा। पिहयति, क्रिया, स्पृहा करता है, इच्छा करता है, प्रयत्न करता है। (पिहिंग, पिहायित)। पिहायना, स्त्री०, प्रिय करना। पिहालु, वि०, ईर्पालु । पिहित, कृदन्त, दका हुम्रा। पिसति, देखो विसति । बीठ, नपुं०, ग्रासन। पीठक, नपुं०, बैठने का पीढ़ा या ग्रासन । पीठ जातक, एक तपस्वी एक दानी व्यापारी के घर मिक्षायं गया। कोई घर पर नहीं या। उसे साली हाय लीट ग्राना पड़ा (३३७)। पीठसप्पी, पू॰, लूला-लंगड़ा।

पीठिका, स्त्री॰, बैठने का पीढ़ा या ग्रासन । पीणन, नपुं ०, संतोप । पीणेति, किया, प्रसन्न संतुष्ट करता है। (पीणेसि, पीणित, पीणत्वा, पीणेन्त)। पीत, कृदन्त, पिया हुम्रा; वि०, पीत-वणं, पीला रंग। पीतक, वि०, पीत-वणं। पीतन, नपुं ०, पीला रंग। -पीति, स्त्री०, प्रसन्नता, ग्रानन्द ।-पीति-पामीज्ज, नपं०, प्रसन्नता तथा ग्रानन्द । पीति-भक्ख, वि०, प्रीति ही माहार हो जिसका। पीति-मन, वि०, प्रसन्न-चित्त । पोति-रस, प्रीति-रस। पीति-सम्बोजसङ्गः, पु०, सम्बोधि का 'प्रीति' ग्रङ्ग । पीति-सहगत, वि०, प्रीति-सहित । पीण, वि॰, मोटा, फूला हुम्रा। पीळक, वि०, पीड़ा देने वाला; नपुं०, फोड़ा-फुंसी, फफोला। पोळन, नपुं०, पीड़ित करना। -पोळा, स्त्री॰, पीड़ा। पीळेति, किया, पीडित करता है। (पीळेसि, पीळित, पीळेत्वा) । पुक्कस (पुक्कुस भी), पु॰, एक निम्न जाति जिसके बारे में कहा गया है कि वे कड़ा या मैला साफ करते थे। -प्रगल, पु॰, पुद्गल, व्यक्ति । वागल-पञ्जाति, स्त्री॰, पुद्गलों का

वर्गीकरण; (नाम) ग्रमिषम्मपिटक के सात प्रकरणों में से चौथा प्रकरण। पुग्गतिक, वि.०, व्यक्तिगत । पुरु, नपुं०, तीर का पंख वाला हिस्सा। पुद्भव, पु०, वृषम, श्रेष्ठ पुरुष । पुचिमन्द, पु०, नीम का वृक्ष । पुचिमन्द-जातक, नीम के वृक्ष पर रहने वाले. वृक्ष देवता ने लूट का माल लाये चोरों को मगा दिया (328) 1 पुच्चण्ड, नपुं०, सड़ा हुमा मण्डा। पुच्छ, नपुं०, पूँछ। पुच्छक, पु॰, प्रश्न पूछने वाला। पुच्छति, किया, प्रश्न पूछता है। (पुच्छि, पुट्ठ, पुच्छित, पुच्छन्त, पुन्छित्वा, पुन्छितब्ब, पुन्छित) । पुच्छन, नपुं०, पूछना। पुच्छा, स्त्री०, प्रश्न । पुज्ज, वि०, पूज्य, गौरवाहं। पुञ्छति, किया, पोंछता है, साफ कर देता है। (पुञ्छि, पुञ्छित, पुञ्छित्वा, पुञ्छन्त, पुञ्छमान)। पोंछने का वस्त्र, पुञ्छन, नपुं०, तौलिया। पुञ्छनी, स्त्री०, पोंछने का वस्त्र, तौलिया। पुञ्ज, पु०, ढेर। पुञ्जकत, वि०, ढेर लगा हुमा। पुञ्ञा, नवुं०, पुष्य । पुञ्ञा-कम्म, नपुं ०, पुण्य-कमें। पुञ्जा-काम, वि०, पुष्य चाहने वाला । पुञ्ज-किरिया, स्त्री॰, पुष्य क्रिया।

पुञ्जाबस्वन्ध, पु०, पुण्य-स्कन्ध, पुण्य का ढेर । पुञ्जाबखय, पु०, पुण्य का क्षय, पुण्य की हानि। पुञ्जापेक्ख, वि०, पुण्य की प्रपेक्षा रखने वाला । पुञ्जा-फल, नपुं०, पुण्य का फल। पुञ्डा-भाग, पु०, पुण्य का हिस्सा। पुञ्जा-भागी, वि० पुण्य का हिस्सेदार । पुञ्जावन्तु, पु०, पुण्यवान् । पुञ्जानुभाव, पुण्य का प्रताप। पुञ्जाभिसन्द, पु०, पुण्यों का राशी-क्रण। पुट, पु॰ तथा नपुं॰, (पत्तों का)दोना। पुट-बद्ध, वि०, दोने में वैधा हुग्रा। पुट-भत्त, नपुं०, मात का दोना, रास्ते के लिए खाने का पैकेट। पुट-भेदन, नपुं० दोनों का खोलना। पुटक, नपुं०, पत्तों का दोना। पुट दूसक जातक, पत्तों के दोनों को नष्ट करने वाले बन्दर की कथा (250) 1 पुट-भत्त जातक, राजकुमार ने मात के दोने में से अपनी मार्या को मात नहीं दिया (२१६)। पुट्ठ, कृदन्त, पूछा गया। पुणाति, क्रिया, शुद्ध करता है, साफ करता है। (पुणि, पुणित्वा)। पुण्डरीक, नपुं०, श्वेत कमल। पुण्ण, कृदन्त, सम्पूर्ण। पुण्ण-घट, पु०, पूर्ण-घट। पुण्ण-चन्द, पु०, पूर्ण चन्द। पुण्ज-पत्त, नपुं ०, पूर्ण-पात्र (मेंट) ।

पुण्णमासी, स्त्री०, पूर्णिमा । पुण्ण नवी जातक, राजा ने पुरोहित को पत्ते पर पत्र लिखकर वापिस बुला भेजा (२४१)। पुण्ण पाति जातक, शराब के घड़ों के मरे रहने की कथा (५३)। पुण्णता, स्त्री०, पूर्णता। पुण्णमी, स्त्री०, पूर्णिमा । पुत्त, पु०, पुत्र, बेटा । पुत्तक, पु०, छोटा बेटा। पुत्त-दार, पुत्र तथा पत्नी। पुत्त-धोतु, स्त्री०, वेटा-बेटी। पुत्तिम, वि०, पुत्रवाला। पुत्तिय, वि०, पुत्रवाला । पुरु, भ्रव्यय, पृथक्-पृथक्, व्यक्तिगत, दूर-दूर। पुथुज्जन, पु०, सामान्य प्रशिक्षित-ग्रादमी। पुथु-मूत, वि०, सर्वत्र फैला हुग्रा। पूयु-लोम, पु०, मछली-विशेष। पुचुक, नपुं०, चिड्डा, '२-जानवर का वच्चा। पुयुल, वि०, पृयुल, चौड़ा, विशाल। पुथुवी, स्त्री०, पृथ्वी । पुथुसो, कि०वि०, उल्टी तरह से, ग्रलग-घलग। पुन, ग्रव्यय, फिर। पुन-दिवस, पु०, ग्रगले दिन। युनप्पुनं, ग्रव्यय, फिर-फिर। पुनब्भव, पु०, पुनर्जन्म । पुनवचन, नपुं । दोहराना । पुनरुत्ति, स्त्री ०, पुनरुक्ति । पुनागमन, नपुं०, फिर माना। पुनाति, देखो पुणाति ।

पुनेति, किया, पुनः घाता है। पुन्नाग, पु०, जायफल का पेड़। पुष्फ, नपं०, पुष्प, मासिक धर्म । पुष्फ-गच्छ, पु०, फूलने वाला पोघा। पुष्क-गन्ध, पु०, फूलों की सुगन्धि। पुष्फ-चुम्बटक, नपुं०, फूलों का गुच्छा। पुष्फ-छड्डक, कुम्हलाये फूलों को फॅकने वाला, पालाना साफ करने वाला। पुष्फ-दाम, फूलों की माला। पुष्फ-धर, वि०, फूलदार । पुष्फ-पट, पु॰ तथा नपुं॰, बेल-बूटे-दार कपड़ा। पुष्फ-मुट्ठ, पु॰, फूलों की मूठो। पुष्फ-रासि, पुः, फूलों का ढेर। पुष्फवती, स्त्री , पुष्पवती, मासिक धमं वाली स्त्री। पुष्फरत्त जातक, स्वामी ने स्त्री की इच्छा पूरी करने के लिए राजा के केसर-वाग में से केसर चुराने का प्रयत्न किया। वह पकड़ा गया (280) 1 पुष्कति, पुष्पित होता है, फूलता है। (पुष्फि, पुष्फित्वा, पुष्फित) । पुरव, पु०, पीप (जहम में पड़ने वाली); वि०, पहला, पूर्व दिशा का। .(गत-पुब्ब, गुजर गया) । पुरवन्त, पु०, अतीत-काल, पूर्व का सिरा। पुडव-कम्म, नपुं०, पूर्व-जन्म का कर्म। पुरुव-किञ्च, नपुं ०, पूर्व-कृत्य । पुरबङ्गम, वि०, पूर्व गामी। नपुं०, पूर्व-चरित-वुष्व-चरित, (जीवन)। पुम्ब-बेब, पु॰, प्राचीन देवता-गण।

पुड्य-निमित्त, नपुं ०, पूर्व लक्षण । पुन्ब-पृरिस, पु०, पूर्व-पुरुष । पुरुष-पेत, पु०, पूर्व-प्रेत । पुम्बङ्ग, पु॰, पहला हिस्सा । पुब्ब-योग, पु०, पूर्व-सम्बन्ध । पुन्य-विदेह, पूर्वीय महाद्वीप का नाम । पुम्बण्ह, पु॰, पूर्वाह्न, दोपहर से पहले। पुम्बन्न, नपुं , चावल, गेहूँ घादि सात प्रकार के घान। पुन्बा, स्त्री०, पूर्व । पुरवाचरिय, पुर, पूर्वाचार्य। पुम्बापर, वि०, पहले का ग्रीर वाद का। पुग्बाराम, श्रावस्ती के पूर्व की ग्रोर स्यित उद्यान । ग्रनाथिपिण्डिक के घर पर योजन कर चुकने के ध्रनन्तर भगवान् बुढ इसी उद्यान में विश्राम करते थे। पुःबुट्टायो, वि०, किसी दूसरे से पहले उटने वाला। पुरबे, पहले, पूर्व-काल में। पुरुवेकत, वि०, पूर्व-कृत, पिछले जन्म में किये कमें। पुब्बे-निवास, पु०, पूर्व-जन्म । युब्बेनिवास-ञाण, नपुं०, पूर्वजन्म का षुढवेनिवासानुस्सति, स्त्री०, पूर्व-जन्म की समृति। पुम, पु., पुरुष । पुर, नपुं ०, नगर या शहर। पुरक्लत, कृदन्त, पुरस्कृत, सम्मानित । पुरक्सरोति, त्रिया, पुरस्कृत करता है, सम्मानित करता है। (पुरक्लार, पुरक्लत, पुरक्लत्वा) । पुरतो, भव्यय, सामने । पुरत्या, प्रव्यय, पूर्व-दिशा। पुरत्थामिमुख, वि०, पूर्वामिमुख। पुरित्यम, वि०, पूर्व की (दिशा)। पुरा, भव्यय, पूर्व का। पुराण, वि०, प्राचीन। पुराण-दुतियिका, स्त्री०, जो पहले पत्नी रही हो (खास कर किसी मिक्षु पुराण-सालोहित, वि०, पूर्व का रक्त-सम्बन्धी। पुरातन, वि०, प्राचीन। पुरिन्दद, पु०, इन्द्र। पुरिम, वि०, पूर्व का, पहला। पुरिम जाति, स्त्री ०, पूर्व-जन्म । पुरिमत्तभाव, पु०, पूर्व-जन्म। पुरिमतर, वि०, पूर्वतर । पुरिस, पु०, पुरुष, म्रादमी। पुरिसकार, पु॰, पुरुपत्व। पुरिस-याम, पु०, पुरुष सामध्यं । पुरिस-दम्म, पु०, शैक्ष मनुष्य। पुरिस-दम्म-सारयी, पु०, शैक्ष मनुष्यों का सारयी, बुद्ध। पुरिस-परक्कम, पु०, पुरुष-पराक्रम। पुरिस-मेघ, पु०, मनुष्य-बलि । पुरिस-तिङ्गः, पुरिस व्यञ्जन। पुरिस-ध्यञ्जन, नपुं०, पुरुष-लिंग । पुरिसाजञ्जा, पु॰, थेप्ठ ग्रादमी । पुरिसादक, पु०, ग्रादम-स्रोर। पुरिसाधम, पु०, ग्रधम पुरुष, नीच ग्रादमी। पुरिसिन्द्रिय ,नपुं ०, पुरुष-माव । वरिसुत्तम, पु॰, श्रेष्ठतम मनुष्य। बरे, कि॰ वि॰, पूर्व, पूर्वतर।

पुरेचारिक, वि०, धागे-धागे चलने वाला। पुरेजव, विट, ग्रागे-मागे दौड़ने वाला। पुरेतरं, कि॰ वि॰, ग्रन्य सबसे ग्रागे या पहले। पुरेभत्त, नपुं०, सबेरे का नास्ता, कलेवा। (भागे पुरेक्खार, पु॰, पुरस्कार मनित बढ़ाना), भ्रादर करना, करना। पुरेजास, वि०, पूर्वोत्पन्न । पुरोगामी, पु०, ग्रागे चलनेवाला । पुरोहित, पु॰, पुरोहित। पुलवक, पु०, कीड़ा। पुलिन, नपुं०, बालू, बालू-सहित किनारा। पूग, पु॰, (पेशों की) परिषद्; नपुं॰, ढेर। पूग-रुपख, पु०, सुपारी का पेड़। पूजना, स्त्री०, पूजा, मन्ति-पूर्ण मेंट। पुजनेय्य, वि०, पूजा के योग्य। पूजिय, वि०, पूज्य। पूजियमान, कृदन्त, पूजा किया जाता हुम्रा । पूजित, कृदन्त, गोरवान्वित। पूजेति, क्रिया, पूजा करता है। (पुजेसि, पूजेन्त, पूजियमान, पूजेत्वा, पूजेतुं) पूर्ति, वि०, सड़ा हुमा, दुगॅन्ध-युक्त । पूति-काय, पु॰, गन्दा शरीर। पूर्ति-गन्ध, पु०, गन्दगी। पूर्ति-मच्छ, पु०, सड़ी मछली। पूर्ति-मुक्त, वि०, दुर्गन्धयुक्त मुंह बाला।

पूति-मुत्त, नपुं०, गो-मूत्र । पूर्ति-लता, स्त्री ०, लता-विशेष । पूर्तिक, वि०, सड़ा हुग्रा। पूर्तिमंस जातक, पूर्तिमंस शृगाल ने वकरियों को मार खाने की साजिश की (४३७)। पूप, पु॰ तथा नपुं॰, पूमा। पूपिय, पु॰, पूए बेचने वाला। पूय, पु॰, वीप। पूर, वि०, पूर्ण। पूरक, वि०, पूर्ति करनेवाला। पूरापेति, किया, पूर्ण करता है। (पूरापेसि, पूरापित, पूरापेत्वा) पूरेति, किया, पूर्ति करता है। (पूरेसि, पूरित, पूरेन्त, पूरेत्वा, पूरेतं)। पूब, पु॰ तथा नपुं॰, पुमा। पूर्विक, पु०, पूए बेचने वाला। पेक्खक, वि०, देखने वाला। वेक्खण, नपुं ०, दृश्य देखना । पेक्खति, ऋिया, देखता है। (पेक्खि, पेक्खित, पेक्खित्वा, पेक्ख-मान)। पेखुण, नपुं०, मोर का पिछला पंस । पेच्च, ग्रव्यय, मरणान्तर। पेटक, नपुं०, टोकरी, पिटारी; वि०, पिटक सम्बन्धी। पेत, वि॰, मृत; पु॰, भूत-प्रेत। पेत-किच्च, नपुं०, भ्रन्त्येष्टि। वेत-योनि, स्त्री०, प्रेत-योनि । पेत-लोक, पु०, प्रेत-लंक। वेत-बत्यु, नपुं०, प्रेत-कथा, खुद्दक निकाय का सात्वा ग्रन्थ जो प्रेत-लोक की कथाओं से समन्वित है।

वेत्तिक, वि०, पैतृक। पेत्तणिक, वि०, पिता की सम्पत्ति पर जीने बाला। पेत्ति-विसय, पु०, पितर-लोक। पेलेय्य, वि॰, पिता का सम्मान करने वाला । पेत्रेयता, स्त्री॰, पितृ-मनित । वेम, नपुं०, प्रेम। पेमनीय, वि०, प्रेम-पात्र। पेट्य, विव, पीने योग्य; नपुंव, पेय पदायं । पेयवज्ज, नपुं , प्रिय वाणी। पेयाल, नपुं , बीच में से वानयांश छोड़ दिये रहने का संकेत। पेलक, पु०, खरगोश। पेलव, नपुंब, कोमल, बारीक। पेसक, पु०, प्रेषक, भेजने वाला। पेसकार, पु॰, बुनने वाला, बुनकर, जुलाहा । पेसन, नपुं०, भेजना। वेसन-कारक, पु०, नौकर। वेसन-कारिका, स्त्री०, नौकरानी। पेसल, वि०, सदाचरण-युक्त। वेसि (पेसिका मी), स्त्री०, वेशी । पेसित, कृदन्त, प्रेपित, भेजा गया। वेसीयति, ऋया, भेजा जाता है। (पेसियमान)। वेमुण, नपुंठ, चुगली खाना। पेसण-कारक, वि०, चुगलखोर। वेतुणिक, पु०, चुगल-स्रोर, निन्दक। वेमुङ्ज, नवुं०, चुगली, निन्दा । वेसेति, किया, भेजता है। (वेसेसि, वेसित, वेसेन्त, वेसेत्वा, वेसे-

तब्ब)। पेस्स (पेस्सिय, पेस्सिक मी), पु॰, नौकर भयवा दूत। पेळा, स्त्री॰, पेटी । पोक्खर, नपुं०, कमल। पोक्खरता, स्त्री०, सौन्दयं। पोक्खर-पत्त, नपुं०, कमल-पत्र। पोक्खर-मधु, नपुं०, कमल-मधु। पोक्खर-बस्स, नपुं०, ग्रोलों की वर्षा, पूष्प-वर्षा । पोक्खरणी, स्त्री०, तालाव । पोङ्ख, देखो पुर्ह्छ । पोटगल, पू०, काश तृण। पोट्ठपाद, पु॰, ग्राश्विन मास; (नाम) मगवान बुद्ध के साथ 'म्रात्मा' को लेकर प्रश्न पूछने वाला परिव्राजक। पोठन, नपुं , पीटता है, चोट पहुँचाता है। पोठेति, किया, पीटता है, चोट पहुँ-चाता है, उंगलियां चटलाता है। (पोठेसि, पोठित, पोठेत्वा) । पोण, वि०, भुका हुमा। पोत, पु०, १. जानवर का बच्चा २. कोंपल ३. नौका। पोतक, पु॰, जानवर का बच्चा। पोतिका, स्त्री॰, जानवर की बच्ची। पोतवाह, पु०, नाविक। पोत्यक, पु॰ तथा नपुं॰, पुस्तक, चित्र का फलक। पोश्यनिका, स्त्री०, वर्छी। पोत्थलिका, स्त्री०, गुड़िया। पोत्युज्जनिक, वि०, सामान्य ग्रादमी से सम्बन्धित । पोयियमान, कृदन्त, पिटता हुमा।

पोथेति, देखो पोठेति । पोनोभविक, वि०, पुनमंव का कारण। पोराण, वि०, पुराना । पोराणक, वि०, प्राचीन । पोरिस, नपं०, पुरुषत्व; वि०, पुरुष के लायक, पुरुष से सम्बन्धित । पोरिसाद, वि०, ग्रादम खोर। पोरी, पु॰, नागरिक, शहरी, शिष्ट। पोरोहिच्च, नपुं०, पुरोहित-कमं। पोस, वि०, जिसका पोषण किया जाय। ~पोसक, वि०, पोषण करनेवाला। करनेवाली, वोसिका, स्त्री॰, पोषण दायी । पोसय, देखो उपोसय।

पोसिषक, पु०, उपोसय व्रत करने वाला। पोसन, नपुं०, पोषण। पोसाविनक, नपुं०, पालने-पोसने का खर्च। पोसित, कृदन्त, पोषण किया गया, पाला गया। पोसेति, किया, पोसता है, पोषण करता है। (पोसेसि, पोसेन्त, पोसेतब्ब, पोसेत्वा, पोसेतुं)। प्लव, पु०, तैरना, डोंगी। प्लवन, नपुं०, कूदना, तैरना। प्लवङ्गम, पु०, बन्दर।

फ

फागव, पु॰, शाक का एक प्रकार। फागू, पू०, निराहार रहने का समय। फागुण, महीने का नाम, फाल्गुण, फागुन । फरगुणी, स्त्री०, फाल्गुणी नक्षत्र । फण, पु॰, सांप का फन। फणक (फनक मी), नपुं०, सौंप के कन जैसा। फणिज्जक, पु०, जम्बीर विशेष। फणी (फनी भी), पु॰, सपँ। फन्दति, क्रिया, कांपता है, धड़कता है। फन्दित, फन्दमान, (फन्दि, फन्दित्वा)। फन्दन, नपुं०, स्पन्दन, हिलना-डुलना । फन्दना, स्त्री०, स्पन्दन। फन्दन जातक, स्पन्दन वृक्ष के नीचे पड़े शेर पर स्पन्दन वृक्ष की शाला

टूट पड़ी। वह चोट सा (YUX) 1 फन्दित, नपुं०, स्पन्दित । फरण, नपुं०, व्याप्ति। फरणक, वि०, ब्याप्त। फरति, किया, व्याप्त होता है, पूरा करता है। (फरि, फरित, फरित्वा, फरन्त)। फरसु, पु॰, कुल्हाड़ी, फरसा। फरस, वि॰, परुष, कठोर। फरत-वचन, नपुं०, कठोर वचन । फरुसा-बाचा, स्त्री०, कठोर वाणी। फल, नपुं०, फल, परिणाम, चाकू झादि का फलक। फल-चित्त, नपुं०, (स्रोतापत्ति-) मार्ग मादि का (स्रोतापत्ति-) फल। फलट्ठ, वि०, फल-स्थित।

फलित्यक, वि०, फलार्थी । फलदायी, वि०, फल देनेवाला, लाम-प्रद। फलरह, वि०, फलोत्पन्न । फलवन्तु, वि०, फलदार। फलाफल, नपुं॰, नाना प्रकार फल। फलासव, पु॰, फलों का ग्रासव। फल-जातक, जंगल में से गुजरते हुए सार्यवाहं ने प्रपने कारवा को कहा कि बिना उसकी भनुमति के कोई भी किसी फल-फूल को न खाये (48) 1 फलक, पु॰ तथा नपुं॰, तस्ता, ढाल । फलित, किया, फल देता है, फाड़ता है। (फलि, फलित, फलित्वा, फलन्त)। फली, पु॰, फलदार वृक्ष । फलु, नपुं०, सरकण्डे की गाँठ। फलु-बीज, नपुं०, गाँठ्। फस्स, पु॰, स्पर्श । फस्सेति, किया, स्पशं करता है, प्राप्त करता है। (फस्सेसि, फस्सित, फस्सित्वा)। फळु, नपुं०, वांस म्रादि की गांठ। फाटिकम्म, देखो पाटिकम्म। फाणित, नपुं०, सीरा। काणित-पुट, पु०, सीरे का दोना। फाति, स्त्री०, बढ़ना, समृद्धि, बढ़ो-तरी। फारुमक, नवुं॰, फालसा (?)। फाल, पु॰, हंल की फाल। फालक, पु॰, फाड़ने वाला या तोड़ने वाला।

फालन, नपुं०, फाड़ना। फालेति, किया, फाइता है, तोड़ता है। (फालेसि, फालित, फालेन्त, फालित्वा, फालेतुं)। फासु, पु०, ग्रासानी, ग्राराम; वि०, भारामदेह । फासुक, वि०, सुखद, ग्रासान। फासुका (फासुलिका भी), स्त्री ०, पसली। फिय, नपुं०, चप्पु। फीत, वि०, स्फीत, समृद्ध। फुट, कृदन्त, स्पृष्ट, व्याप्त। फुटन (पुटन भी), नर्पुं०, चीरना, फाड़ना। फुट्ठ, कृदन्त, स्पृष्ट । फुल्ल (फुल्लित), कृदन्त, पूर्ण रूप से खिला हुग्रा। फुसति, क्रिया, स्पशं करता है, पहुँचता है, प्राप्त करता है। (फुसि, फुसन्त, फुसमान, फुसित, फुट्ठ,फुसित्वा)। फुसन, नपुं०, स्पर्शं करना। फुसना, स्त्री०, स्पर्श करना। फुसित (फुसितक), नपुं०, बूंद, स्पर्श । फूसीयति, क्रिया, स्पर्श किया जाता फुस्स, पु॰, पौष मास, नक्षत्र-विशेष; वि०, वर्णयुक्त; नपुं०, शकुन, शुम मुहूतं। फुस्स-रथ, पु०, राज्य-रथ, राज्य का उत्तराधिकारी खोज निकालने के लिए छोड़ा गया रथ। फुस्स-राग, पु॰, पुष्प-राग, पुखराज।

केग्यु, नपुंठ, छाल । केण, नपुंठ, काग । फेण-पिण्ड, पुठ, काग-पिण्ड । फेणुद्देहक, विठ, काग उठाता हुमा । फेणिल, पुठ, काग देने वाला पौदा । फोट, पु॰, फफोला । फोटक, नपुं॰, फफोला । फोट्टब्ब, नपुं॰, स्पर्श का विषय । फोसित, कृदन्त, छिड़का हुमा ।

स

बक, पु०, वगुला। बक जातक, वगुले ने मछलियों को ठगा। अन्त में एक केकड़े ने उसकी जान ली (३८८)। बक जातक, बगुले की बगुला-मन्ति। (२३६)। वक-ब्रह्म जातक, भगवान् वुद्ध की बक-ब्रह्मा से मेंट (४०५)। बज्भति, किया, बँधवाता है, पकड़-वाता है। बत्तिसति, स्त्री०, बत्तीस। बदर, नपुं०, बेर। वदरमिस्स, वि०, बेर-मिश्रित। बदरा, स्त्री०, कपास । बदरी, स्त्री०, बेर का पेड़। बदालता, स्त्री०, लता-विशेष। बद्ध, कृदन्त, बँघा हुम्रा, फँसा हुम्रा, हद्र । जोड़े बद्धञ्जलिक, वि०, हाथ हुए। बद्ध-राव, पुर, पकड़े गये, या फैसे जानवर की चिल्लाहट। बद्ध-बेर, नपुं०, दृढ़ वैर। वधिर, वि०, बहरा। बन्ध, पु०, बंधन, श्रासक्ति। बन्धति, क्रिया, बांधता है। (बन्धि, बद्ध, बन्द्धन्त, बन्धित्वा,

बन्धितुं, वन्धिय, बन्धितब्ब, बन्धनीय) बन्धन, नपुं ०, बन्धन । वन्धन मोक्ख जातक, राजा ने रानी का कूशल-समाचार जानने के लिए युद्ध-भूमि से दूत भेजे। रानी ने समी दूतों के साथ सहवास (१२०)1 बन्धनागार, नपुं०, जेलखाना। बन्धनागार जातक, दो बच्चों की माता को छोड़ पति तपस्या करने चला गया (२०१)। बन्धनागारिक, पु०, कदी। बन्धव, पु०, सगा-सम्बन्धी, माई-बन्धापेति, किया, बंधवाता है। (बन्धापेसि, बन्धापित) । बन्धु, देखां बन्धव । बन्धु-जीवक, पु०, पौधा विशेष । बन्धुमन्तु, वि०, रिश्तेदारों वाला। बन्धुल, कुसी नगर के मल्लों के सेना-पति का पुत्र। बप्प, पु०, ग्रांसू। बब्बज, नपुं०, बब्बढ़ तृण। वब्बु, बब्बुक, पु॰, विलार, बिल्ली। बब्बु जातक, धन की लोभी पत्नी मर कर चुहिया बनी (१३७)।

बरिह, नपुं॰, मोर का पिछला पंख। बरिहिस, नपुं०, कुश घास । बल, नपुं०, शक्ति, सैनिक शक्ति। बलक्कार, पु०, जबदंस्ती। बलट्ठ, (बलत्थ मी) पु०, सैनिक। बल-त्यास, पु०, सेना की कतार। बलाका, स्त्री०, सारस। बलि, पु०, बलि, भूमि-कर। बलिकम्म, बलि, भाहति। बलि-पटिग्गाहक, वि०, माहति महण करने वाला। बलि-पुट्ठ, पु०, कीवा। बलिबद्द, पु॰, वृषम, वैल । बलि-हरण, नपुं०, कर (टैक्स) उगा-हना। बली, वि०, शक्तिशाली। बळिस, पु०, मछली पकड़ने का काँटा। बव्हाबाध, वि०, रोग-बहुल। बहल, वि०, मोटा, गहरा। बहलत्त, नपुं०, मोटापन, गहराई। बहि, भ्रव्यय, बाह्य, बाहर। बहिगत, वि०, बाहर गया। बहि-नगर, नपुं०, नगर के बाहर या बाहर का नगर। बहि-निक्लमन, नपुं०, ग्रमिनिध्कमण, बाहर जाना । बहिद्धा, प्रव्यय, बाहर। बहु, वि०, बहुत, प्रनेक । बहुक, वि०, धनेक। बहुकरणीय, वि०, बहुकृत्य। बहुकार, वि०, बहुत उपयोगी। बहुरसत्तुं, वि०, धनेक बार। बहु-जन, पु०, धनेक जन। बहु-जागर, वि०, बहुत जागृत।

बहु-षन, वि०, धनी। बह-पद, वि०, ग्रनेक पैरों वाला। बहु-बीहि, बहुब्रीहि समास । बहु-भण्ड, वि०, बहुत सामान वाला । बहु-भाणी, वि०, बहुत बोलने वाला। बहु-भाव, पु०, विपुलता। बहु-मत, वि०, बहु-मान्य। बहु-मान, पु०, सम्मान। बहुमानन, नपुं०, सम्मान, गौरव। बहुमानित, वि०, सम्मानित। बहु-वचन, नपुं०, भ्रनेक वचन। बहु-विघ, वि०, भ्रनेक प्रकार का। बहुस्सुत, वि०, बहु-श्रुत, पण्डित । बहुत्त, नपुं०, बहुत्व। बहुघा, ऋ० वि०, नाना प्रकार से। बहुल, वि०, विपुल। बहुलता, स्त्री०, विपुलता। बहुलत्व, नपुं०, बहुत्व। बहुलीकत, वि०, भ्रम्यस्त, करके। बहुलीकरण, नपुं०, लगातार ग्रम्यास। बहुलीकम्म, नपुं०, सतत ग्रम्यास । बहुलीकार, पु०, निरन्तर ग्रम्यास। बहुलीकरोति, किया, बढ़ाता है। (बहुलोकरि, बहुलीकत)। बहुसो, कि॰ वि॰, अधिक करके, प्राय: । बहुपकार, वि०, बहुत उपकार करने वाला। बाकुची, स्त्री०, सोमराजी वृक्ष। बाण, पु॰, बाण, तीर। बाणिष, पु०, तूणीर। बायक, वि०, रोकने वाला । बायकत्त, नपुं ०, बाधकत्व ।

बाघति, क्रिया, बाघक होता है। (बाधि, बाधित, बाधित्वा)। बाघन, नपुं०, बाघा, रुकावट । बाघा, स्त्री०, रुकावट । बाधित, कृदन्त, बाधा-युक्त। वाघेति, किया, बाघा डालता है, दबाता है। (बाधेसि, बाधेन्त, बाधेत्वा) । बारस, वि०, बारह। वाराणसी, स्त्री॰, वाराणसी, काशी जनपद की राजधानी। बाराणसेय्यक, वि०, वाराणसी का वासी, वाराणसी-निर्मित। बाल, वि०, ग्रायु में कम, ग्रज्ञानी, श्रबोध; पु०, वच्चा, मूखं। बालक, पु०, बच्चा। बालता, स्त्री०, मूखंता। बाला, स्त्री०, लड़की। बालिका, स्त्री०, वालिका। बालिसिक, पु०, मछुग्रा। बाल्य, नपुं०, बचपन, मूखंता। बाबोसति, स्त्री०, बाईस। बावेरू जातक, वाराणसी से बावेर गये व्यापारियों की कथा (३३६)। बाहा, स्त्री०, बाजू। बाह-बल, नपुं०, बाहुबल। बाहित, कृदन्त, दूर रखा, बाहर रखा। बाहिर, वि०, वाह्य। बाहिर, नपुं०, बाहर की घोर; वि०, बाहर वाला। बाहिरक, वि०, दूसरे मत का। बाहिरक-पब्वज्जा, स्त्री०, दूसरे मतों के मनुसार प्रवज्या। बाहिरत्त, नपुं०, बाहिर का भाव।

बाहिय जातक, राजा ने प्रसव-वेदना के अनन्तर शिशु जनने वाली देवी को ग्रपनी पटरानी बनाया (१०८)। बाहु, पु०, बाजू। बाहुज, पु०, क्षत्रिय। बाहुजङ्डा, वि०, मावंजनिक । बाह्यमूल, नपुं०, बग़ल। बाहुलिक, वि॰, विपुलता में निवास करने वाला। बाहुल्ल (बाहुत्य भी), नपुं०, प्रचुरता, कामोपभोगी जीवन। बाहुसच्च, नपुं०, ग्रधिक विद्वता। बाहेति, किया, दूर रखता है, दूर करता है। (बाहेसि, बाहित, बाहेत्वा)। बाळ्ह, वि०, मजवूत। बाळ्हं, ऋि॰ वि॰, जोर से, ग्रधिकता स। बिदल, नपुं०, बांस। बिन्दु, नप्ं विन्दु, बूद । बिन्दुमत्त, वि०, विन्दुमात्र। बिन्दुमत्तं, ऋ० वि०, बिन्दुमात्र । बिन्दुसार, ब्रशोक के पिता मगध-नरेश। बिम्ब, नपुं०, छाया । बिम्बा, स्त्री॰, सिद्धार्थ गौतम की पत्नी बिम्बा (यशोधरा)। बिम्बिका, बिम्बी, स्त्री०, लता-विशेष । बिम्बिसार, मगध-नरेश विम्बिसार। बिम्बोहन, नपुं०, तकिया। बिल, नपुं०, सूराख, (चूहे का) बिल। बिलङ्ग, पु०, सिरका। विलक्क-यातिका, स्त्री०, एक प्रकार

की यन्त्रणा। बिलसो, कि॰ वि॰, पृथक्-पृथक् देरी करके। बिल्ल, पु०, बिल्ध, बेल (फल)। विळार, पु॰, विल्ला, नर बिल्ली। बिळार-भस्ता, स्त्री॰, (लोहार की) माथी। बिळार जातक, ढोंगी गीदड़ प्रति दिन एक-एक चुहा मारकर ला जाता या। चूहों के नेता ने गीदड़ की मार डाला। शेष चूहों ने उसका मांस खाया (१२८)। बिळारिकोसिय जातक, विलारकोसिय सेठ की कथा, जिसने ग्रपने कंजूसपन के कारण परम्परागत दानशाला नप्ट करा दी थी (४५०)। बिळाली, स्त्री०, विल्ली। वीज, नपुं॰, बीज। बीज-कोस, पु०, फूलों का बीज-कोष। बोज-गाम, पु०, बीजों का समूह। बीज-जात, नपुं०, बीजों के प्रलग-ग्रलग विभेद। बोज-बोज, नपुं०, बीजों से उगाये जा सकने वाले पौधे। बोभच्च, वि० बीमत्स । बोरण, नपुं०, बीरण घास। बोरण-यम्भ,पु०, बीरण घास का खम्बा। बुज्भति, किया, जानता है, समभता है, बुभता है। (बुजिम, बुद्ध, बुजमन्त, बुजिमत्वा)। बुज्भन, नपुं०, बूभना, ज्ञान प्राप्त करना। बुज्भनक, वि०, समभदार। बुविसतु, पु०, जागनं वाला, बूमने

वाला, ज्ञानी। बुब्ह, वि०, वृद्ध । बुड्ढतर, वि०, वृद्धतर। बुढ, सम्पूर्ण ज्ञान के प्रतीक बुढत्व-पद का लाभी। बुद्धकारक-धम्म, पु०, बुद्धत्व-प्राप्ति में सहायक चर्या। बुद्ध-काल, पु॰, बुद्धोत्पत्ति का काल। बुद्ध-कोलाहल, पु०, बुद्ध के आगमन की पूर्व-सूचना। बुद्धक्खेत्त, नपुं०, बुद्ध की शक्ति का सीमा-क्षेत्र। बुद्ध-गुण, पु०, युद्ध के गुण। बुद्धंकुर,पु०, जिसका बुद्ध वनना स्थिर है। बुद्ध-चक्खु, नपुं०, बुद्ध की अन्तद् ध्टि। बुद्ध-ञ्राण, नपुं०, ग्रनन्त ज्ञान । बुद्धन्तर, नपुं०, एक वुद्ध ग्रीर दूसरे बुद्ध के बीच का काल। बुद्ध-पुत्त, पु०, बुद्ध-पुत्र । बुद्ध-चल, नपुं०, बुद्ध की शक्ति। बुद्ध-भाव, पु॰, युद्ध-माव, बुद्धत्व। धुद्ध-मूमि, स्त्री०, बुद्ध-भूमिका। बुद्ध-मामक, वि०, बुद्धमक्त। बुद्ध-रस्मि, बुद्ध-रंसि, स्त्री०, बुद्ध के शरीर से निकलने वाली रिंमया। बुद्ध-लोळ्हा, स्त्री०, बुद्ध-लीला। बुद्ध-वचन, नपुं०, बुद्ध की शिक्षा। बुद्ध-विसय, पु॰, वुद्ध-क्षेत्र। बुद्ध-वेनेय्य, वि०, बुद्ध के द्वारा ही विनीत बनाया जा सकने वाला। बुद्ध-सासन, नपुं०, बुद्धों की शिक्षा। बुद्धानुभाव, पु०, बुद्धों का प्रताप। बुद्धानुस्सति, स्त्री०, बुद्ध का प्रनुस्मरण। बुद्धारम्मण, बुद्धालम्बन, नपुं , बुद्ध के

गुणों का ध्यान । युद्धपट्ठाक, वि०, बुद्ध सेवक। बृद्धुप्पाद, पु०, बुद्ध-युग । त्रिपिटक का सर्वश्रेष्ठ चुद्धघोस, व्यास्याकार ग्रट्ठकथाचार्य। कंद्वत्रोसुष्पत्ति, इस नाम का एक ग्रन्थ। ्द्वत्त, नपुं०, बुद्धत्व - प्राप्ति की भवस्था। बुद्ध-वंस, खुद्क निकाय का चौदहवाँ य्रन्य । बुद्धि, स्त्री०, प्रज्ञा । बुद्धिमन्तु, वि०, बुद्धिमान । बुद्धि-सम्पन्न, बुद्धिमान । बुध, पु०, बुद्धिमान आदमी, बुध=प्रह. बुध(-वार)। बुब्बुल, बुब्बुलक, नपुं०, बुलवुला। बुभुक्खति, क्रिया, खाने की इच्छा करता है। (बुभुक्खि, गभुक्खित)। बुन्द, पु०, ज । बेलुव, पु०, बिल्व-फल का पेड़। बेलुव-पक्क, पका बेल। बेलुव-लट्ठि, स्त्री०, बेल का गाछ। बेलुव-सलाटुक, नपुं०, बेल का कच्चा फल। बोरुभङ्ग, नपुं०, बोधि-प्राप्ति के लिए ग्रावश्यक सहायक गुण। बोध, पु०, बोधन; नपुं०, बुद्धत्व, ज्ञान। बोधनीय, बोधनेय, वि०, बुद्धत्व लाभ कर सकने वाला। बोघि, स्त्री०, श्रेष्ठतम ज्ञान। बोधि-श्रङ्गण, नपुं०, बोधि वृक्ष का ग्रांगन। बोधि-पक्लिक, वि०, बोधिपक्षीय धर्म।

बोधि-पादप, बोधि-रुक्ख, पु०, बोधि-वृक्ष, पीपल। बोधि-पूजा, स्त्री०, बोधि-वृक्ष की पूजा। बोध-मण्ड, पु०, बोध-वृक्ष के नीचे का वह स्थान जहां सिद्धार्थं गीतम वज्रासन लगाकर बुद्ध-प्राप्ति के लिए कृत-संकल्प होकर बैठे थे। बोधि-मह, पु०, बोधि वृक्ष के सम्मान में उत्सव। बोधि-मूल, नपं०, बोधि-वृक्ष की जड़। बोधिसत्त, बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए कृत-संकंल्प प्राणी, बुद्धत्व-प्राप्ति से पूर्व का सिद्धार्थं गीतम बुद्ध का परि-चायक नाम। बोधेति, क्रिया, ज्ञान प्राप्त कराता है। बोधित, (बोघेसि, बोधेत्वा)। बोधेतु, पु०, जाग्रत होने वाला, ज्ञान लामी। बोन्दि, पु०, शरीर। ब्याघ, पु॰, व्याघ्र। ब्यञ्जन, नपुं०, स्वरों के प्रतिरिक्त वणंमाला के शेष ग्रक्षर, सालन, कढ़ी, पकवान। ब्यापाद, पु०, क्रोध, द्वेष । ब्याम, पु०, ब्याम-मात्र (माप) । ब्यामप्पभा, स्त्री॰, बुद्ध के शरीर से निकलने वाली प्रमा। ब्यूह, पु॰, सेना की रचना-पद्धति । बहन्त, वि०, विशाल। बहा, बहा, पु०, स्विट-कर्ता। बहा-कायिक, वि०, ब्रह्माओं की मण्डली का।

बहा-घोस, वि०, बहाा सद्श घावाज। बह्मचर्या, स्त्री०, श्रेष्ठ जीवन । बह्मचारी, मैयून-धमं से विरत रहने वासा ! ब्रह्मजच्च, वि०, ब्राह्मण-जन्मा। बहाञ्ज, बहाञ्जता, स्त्री०, श्रेष्ठ-जीवन। बह्म-दण्ड, पु०, दण्ड विशेष, जो छन्न को दिया गया था। बहा-देय्य, नपुं०, राजकीय भेंट। ब्रह्मप्पत्त, वि०, श्रेष्ठतम ग्रवस्या को प्राप्त । ब्रह्म-बन्ध्, पु०, ब्रह्म का सम्बन्धी, ब्राह्मण। बहाभूत, वि०, सर्वश्रेष्ठ। बह्य-लोक, पु०, ब्रह्म-लोक। बह्य-विमान, नपुं०, ब्रह्मा का निवास-स्थान। बहा-विहार, चित्त की वाञ्छनीय

स्थिति; मैत्री, करुणा, मुदिता तथा उपेक्षा का सम्मिलित नाम । बह्मदत्त जातक, तपस्वी ने राजा से विदा लेते समय केवल पत्तों का एक छाता और खड़ाऊँ की जोड़ी मांगी (३२३) 1 बाह्मण, पु॰, ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति। ब्रह्म-कञ्जा, स्त्री०, ब्राह्मण-कन्या । ब्रह्म-वाचनक, नपुं०, ब्राह्मणों द्वारा किया जाने वाला वेद-पाठ। बाह्मण-वाटक, पु०, ब्राह्मणों के एकत्र होने का स्थान। ब्रुति, किया, बोलता है। (भ्रव्यवि, बुवन्त, बुवित्वा)। ब्रूहन, नपुं०, वृद्धि। ब हेति, किया, बढ़ाता है, वृद्धि करता (ब्रहेसि, ब्रहित, ब्रहेन्त, ब्रहेत्वा) । ब हेतु, पु०, बढ़ाने वाला ।

भक्ख, वि०, खाने योग्य; नपुं०, मोजन, खाद्य-पदार्थं।
भक्खक, पु०, खाने वाला।
भक्खित, किया, खाता है।
(भक्खि, भक्खित, भक्खितुं)।
भक्खिन, नपुं०, खाना।
भक्खेति, किया, खाता है।
भग, नपुं०, माग्य, योनि।
भगन्दल, मगन्दर रोग।
भगवन्तु, वि०, माग्यवान्; पु०, मगवान्
(बुद्ध)।
भगिनो, स्त्री०, बहन।
भगु, (नाम), मृगु ऋषि।

भग, कृदन्त, टूटा हुआ।

मङ्ग, पु०, टूटना; नपुं०, पटुमा।

मङ्ग-लण, नपुं०, टूटने का क्षण।

मङ्गानुपस्सना, स्त्री०, वस्तुम्रों के

विनाश के सम्बन्ध में मन्तदृंष्टि।

भन्त, पु०, मृत्य, नौकर; वि०, पालित-पोषित।

भन्नति, क्रिया, संगति करता है।

(भन्नि, भन्नित, भन्नमान, मन्नित्वा,

मजितन्व)।

भन्न, नपुं०, संगति।

भन्नति, क्रिया, मूंजता है।

(भन्नि, भन्नत, भन्नमानः

भ जिजत्वा)। भञ्जक, वि०, तोड़ने वाला, खराव करने वाला। भञ्जति, किया, तोड़ता है, नष्ट करता (भक्ति, भग्ग, भक्तित, भक्तन्त, भञ्जमान, भञ्जितवा) । भञ्जन, नपुं०, तोड़, विनाश। भञ्जनक, नप्ं०, तोड्ना, नष्ट करना। भट, पू०, सैनिक, सिपाही, नौकर। भट-सेना, स्त्री०, पैदल सेना। भट्ठ, कृदन्त, भुना हुग्रा, गिरा हुग्रा। भणति, किया, बोलता है। (भणि, भणित, भणन्त, भणितब्ब, भणित्वा, भणितुं) । भणे, ग्रव्यय, सम्बोधन-विशेष । भण्ड, नपुं०, सामान। भण्डक, नपुं०, सामान, चीजें। भण्डागार, नपुं०, भण्डार, खजाना। मंडारी. भण्डागारिक, go, खजानची भण्डति, क्रिया, भगड़ा करता है। मण्डि, भण्डेसि, (भण्डेति, भण्डेत्वा)। भण्डन, नपुं०, कलह, भगड़ा। भण्डिका, स्त्री०, बण्डल, गठड़ी। भण्ड, पु०, सिरम्ँडा। भण्डु-कम्म, नपुं०, हजामत बनाना । भत, कृदन्त, पालित-पोषित; पु०, नोकर। भतक, पु०, मृत्य, कुली। भति, स्त्री०, मजदूरी। भत्त, नपुं०, भात। भत्त-कारक, पु०, रसोइया ।

भत्त-किच्च, नपुं०, मात खाना, मोजन करना। मत्त-किलमय, 90, मोजनानन्तर ग्रालस्य । go, मोजनानन्तर भत्त-सम्मब, तन्द्रा। भत्त-गाम, पु०, मेंट या सेवा देने वाला भत्तगा, नपुं०, भोजनालय । भत्त-पुट, नपुं०, भात का दोना । भत्त-विस्साग, पु०, भोजन परोसना। नपुं०, मोजन भत्त-वेतन, तनस्वाह। मत्त-वेला, स्त्री०, मोजन का समय। भत्ति, स्त्री०, मक्ति। भत्तिक, भत्तिमन्तु, वि०, मनत। भत्तु, पु॰, मतृं, पति । भदन्त, वि०, गौरवाहं, पूज्य। भद्द (भद्र भी), वि०, शुम (मुहतं)। भद्दक, नपुं०, भाग्य-सम्पन्न वस्तु; वि०, भाग्य-सम्पन्न (वस्तु)। भद्दकच्चाना, स्त्री०, यशोधरा (राहुल माता) का एक भीर नाम। भद्दकुम्भ, पु०, पानी का मरा घड़ा। भद्द-बार, पु०, देव-दार की जाति का भद्द-पवा, स्त्री०, माद्रपद नक्षत्र । मद्द-पीठ, नपुं०, मद्रासन । भइ-मुख, वि०, सुन्दर मुख, शिष्ट सम्बोघन । भद्द-युग, नपुं०, श्रेष्ठ जोड़ा। भइसाल जातक, राजा के उद्यान के श्रेष्ठ मद्रशाल वृक्ष के काटे जाने की कथा (४६४)।

भद्रघट जातक, शराबी लड़के ने इन्द्र-प्रदत्त मद्र-घट मी फोड़ डाला (335) भद्दा, भद्दिका, स्त्री०, एक शिष्ट स्त्री। महिय, प्राञ्ज जनपद का एक नगर। भगवान बुद्ध म्रनेक बार वहाँ पधारे भन्त, कृदन्त, भ्रान्त, भ्रमित। भन्तत्त, नपुं०, भ्रान्त-भाव, गड्बड़ी। भन्ते, मदन्त का सम्बोधन-रूप। भव्ब, वि०, मृज्य, योग्य। भव्बता, स्त्री०, भव्यता, योग्यता । भम, पु०, घुमने वाली चीज। भमकार, पु॰, घुमाने वाला। भमति, किया, घूमता है। (भिम, भन्त, भमन्त, भिनत्वा)। भमर, पु०, भ्रमर, मौरा। भमरिका, स्त्री॰, लट्टु। भमु, भमुका, स्त्री०, भौ। भय, नपं०, डर। भयङ्कर, वि०, भयानक। भय-दस्सावी, वि०, मयदशी। भय-बस्सी, वि०, मयदर्शी। भयानक, वि०, मयावह । भर, वि०, (समास में) पोषण करने माता-पेत्त-भर, माता-पिता का पोषण करने वाला। भरण, नपुं•, मरण-पोषण । भरत कुमार, दसरय-पुत्र। राम का सोतेला माई। देखी दसरथ जातक (858) 1 भरति, क्रिया, भरण-पोषण करता है। (भरि, भत, भरित्वा)।

भरित, कृदन्त, भरा हुआ। भरिया, स्त्री०, मार्या, पत्नी। भक्कच्छ, मरु प्रदेश का वन्दरगाह। भरु जातक, मरु देश के राजा ने तपस्वियों के मुकद्दमे में निर्णय दिया (283) 1 भल्लाटक (भल्लातक मी), पु०, वृक्ष-विशेष, लोघ। मल्लाटिक जातक, मल्लाटिय नरेश के शिकार की कथा (५०४)। भल्ली, स्त्री०, मल्लातक, मिलावा । भव, पु॰, ग्रस्तित्व, संसार। भवगा, पु०, संसार का शिखर। भवद्भ, नपुं०, ग्रचेतन मन । भव-चक्क, नपुं०, भव-चक । भव-तण्हा, स्त्री०, भव-तृष्णा। भव-नेत्ति, स्त्री०, भव-तृष्णा। भवन्तग, भवन्तगू, वि०, भव के अन्त तक पहुँचा तुमा। भव-संयोजन, नपुं ०, पुनर्जनम का बन्धन । मवाभव, पु॰, यह या वह जीवन। भवेसना, स्त्री०, भवेषणा, भवेच्छा । भवोघ, पू०, पूनजंनम रूपी बाढ़। भवति, क्रिया, होता है। (भवि, मूत, मवन्त, भवमान, मवि-तब्ब, भवित्वा, भृत्वा, भवितुं) । भवन, नपुं०, होना, निवास-स्थान । भस्ता, स्त्री०, घोंकनी। भस्म, नपुं०, राख। भस्मच्छन्न, वि०, राख से दका हुआ। मस्स, नपुं०, बेकार बातचीत । मस्सारामता, स्त्री०, बेकार बातचीत में रुचि।

भस्सति, किया, गिर पड़ता है। (भस्सि, भट्ठ, बसन्त, भसमान, भसित्वा)। भस्सर, वि०, प्रकाशमान । मा, स्त्री०, प्रकाश की चमक । भाक्टिक, वि०, भाक्टिक, मुक्टि टेढी करने वाला। भाग, पु॰, हिस्सा। भागवन्तु, वि०, हिस्से वाला. हिस्सेदार। भागदेव्य, भागघेव्य, नपुं०, भाग्य । मागसो, कि॰ वि॰, हिस्सों के प्रनु-सार। भागिनेय्य, पु०, मानजा। मागिनेय्या, स्त्री०, मानजी। भागीय, वि०, (समास में) सम्ब-न्धित । भागी, वि०, हिस्सेदार। भागीरथी, गङ्गा नदी का एक नाम। भाग्य, नपुं०, सीमाग्य। भाजक, भाजेतु, बाँटने वाला। भाजन, नपुं०, बँटवारा, बतंन, पात्र । भाजन-विकति, स्त्री०, नाना प्रकार के बतंन। भाजेति, क्रिया, बांटता है। (भाजेसि, भाजित, भाजेन्त, भाजेत्वा, भाजेतब्ब, भाजीयति)। भाणक, पु०, धर्म-ग्रन्थों का पाठ करने वाला, बड़ा मटका। भाणवार, पु॰, त्रिपिटक के अनेक भागों में से एक। एक माणवार भाठ सहस्र ग्रक्षरों से समन्वित माना जाता है। भाणी, वि०, बोलने वाला। भाति, किया, चमकता है।

(भासि)। मातिक, भातु, पु०, माई। भानु, पु०, प्रकाश, सूर्य । भानुमन्तु, वि०, प्रकाशवान; पु०, सूर्य। भायति, किया, डरता है। भाषितस्ब, (भायि, भायन्त, भायित्वा)। भायापेति, किया, डराता है। (भायापेसि, भायापित, भायापेत्वा)। भार, पु॰, बोमा। भार-निक्खेपन, नपुं०, भार उतार कर रख देना। भार-मोचन, नपुं ०, मार-मुक्ति। भार-वाही, पु॰, भार ढोने वाला। भार-हार, पु॰, बोक्त ढोने वाला। भारिक, वि०, मार-युक्त। भारिय, वि०, मारी। भाव, पु॰, स्वमाव। भावना, स्त्री॰, विकास, योगाम्यास । भावनानुयोग, पु॰, योगाम्यास में लगना । भावनामय, वि०, भावनायुक्त। भावना-विधान, नपुं०, योगाम्यास की पद्धति । भावनीय, वि०, ग्रम्यास करने योग्य, सम्माननीय। भावित, कृदन्त, ग्रम्यस्त, विकसित । भावितत्त, वि०, विशेष ग्रम्यासी, संयत । भावी, वि॰, होने वाला, मनिवायं। भावेति, ऋया, वृद्धि करता है, घम्यास करता है। (भावेसि, भावित, भावेन्त, भावय-मान, भावेतम्ब, भावेत्वा, भावेतुं।

भांसति, ऋया, बोलता है, चमकता है। (भासि, भासित, भासन्त, भासित्वा, भासितव्ब)। भासन, नपुं , मावण। भासन्तर, नवुं०, दूसरी माया। भासा, स्त्री, माषा, बोली। भासित, नपुं०, कथन। भासितु, भासी, पु०, बोलने वाला, कहने वाला। भाग्र, वि०, चमकदार। भिषलक, पु॰, मिलमंगा। भिक्खति, क्रिया, भीख माँगता है। (भिक्सि, भिक्सन्त, भिक्समान, भिक्सित्वा)। भिक्खन, नपुं ०, भीख मौगना । भिक्ला, स्त्री०, मिक्षा। भिक्लाचरिया, स्त्री०, भिक्षाटन । भिवलाचार, पू०, मिक्षाटन। भिक्लाहार, पु०, मिक्षु द्वारा प्राप्त याहार। भिवला-परम्पर जातक, राजा को प्राप्त मोजन क्रमशः प्रत्येक बुद्ध को प्राप्त हमा (४६६)। भिरुख, यु०, बौद्ध मिक्षु। भिषलुणी, स्त्री॰, बौद्ध मिक्षुणी। भिवख-भाव, पु०, मिक्द्व। भिषल-नेद, पू०, मिक्षु विशेष। भिवलु-संघ, पु०, मिक्षुश्रों का संघ। भिड्यु, पु॰, हाथी का बच्चा। भिङ्कार, पु॰, पानी की भारी। भिज्जति, किया, टूट जाता है, नष्ट हो जाता है। (পিডিজ, भिग्न, भिज्जमान,

भिज्जित्वा)। भिज्जन, नपुं ०, टूटना । भिज्जन-धम्म, विल, टुटने के स्वमाव वाला। भित्ति, स्त्री०, दीवार। भित्ति-पाद, पु०, दीवार की नींव। भिन्दति, किया, तोड़ता है, फाड़ता है, प्थक्-प्यक् कर देता है। (भिन्दि, भिन्दित, भिन्न, भिन्दित, भिन्दित्वा, भिन्दित्ं)। भिन्दन, नपुं ०, टूटना । भिन्न, कृदन्त, टूटा हुम्रा। भिन्नत्त, नपुं०, भिन्नत्व। भिन्न-भाव, पु०, पार्थक्य। भिन्न-नाव, वि०, ट्टा जहाज। भिन्न-पट, नपुं०, फटा वस्त्र। भिग्न-मरियाद, वि०, सीमोल्लंघित। भिन्न-सील, वि०, शील-भ्रष्ट । भिय्यो, भिय्योसो, ग्रब्यय, ग्रत्यधिक । भिय्योसी मत्ताय, ग्रत्यधिक, ग्रपनी योग्यता से ग्रधिक। भिस, नपुं ०, कमल-नालिका। मिस-पूष्फ, नपं ०, कमल-पुष्प । भिस-मुळाल, नपुं०, कमल मृणाल । भिस जातक, पिता के मरने पर समी माई तथा उनकी बहिन हिमालया-मिमुख हुए (४८८)। भिसक्क, पु॰, मियक्, चिकित्सक । भिसपुष्फ, जातक, देवी ने बोधिसत्व को फूल की गन्ध मात्र सूंघने के लिए गन्ध-चोर कहा (३६२)। भिसि, स्त्री ०, गद्दा। भिसन, भिसनक, वि०, मयानक। भीत, कृदन्त, डरा हुम्रा।

भीति, स्त्री०, भय। भीम, भीसन, वि०, मयानक। भीमसेन जातक, मीमसेन का उपयोग कर बीने धनुषधारी ने यश प्राप्त किया (८०)। भीपो, वि०, बहुत । भीरु, भीरुक, वि०, डरपोक । भीरुत्ताण, नपुं०, डरपोक का संरक्षण। भूयकरण, नपुं, (कुत्ते का) मौकना। भुंकार, भुक्कार पु॰, (कुत्ते का) मौंकना। भुंकरोति, किया, भौंकता है। (मुंकरि, भुंकत, भुंकरोन्त, भुंकत्वा, भुंकरित्वा)। भुज, पु॰, हाथ; वि॰, मुड़ा हुम्रा। भुज-पत्त, पु०, भोज-पत्र। भुजग, भुजङ्ग, भुजङ्गम, पु०, साँप। भुजिस्स, पु० स्वतन्त्र ग्रादमी। भुज्जक, पु०, खाने वाला या मोगने वाला। भुञ्जित, किया, खाता है, मोगता है। (भुञ्जि, भूत, भुञ्जन्त, भुञ्जमान, भुङ्गितब्ब, भुङ्गितबा, भुङ्गिय, भुत्वा, भुञ्जितं, भोत्तं)। भुङ्जन, नपुं०, खाना। भुञ्जन-काल, पु०, भीजन का समय। भुत्त, कृदन्त, खाया हुग्रा, मोगा हुग्रा। भुत्तावी, वि०, खाने वाला। भुम्म, वि०, तल्लों वाला (मकान)। भूम्मट्ठ, ब्रि॰, भूमि-स्थित। भूम्मत्यरण, नपुं०, दरी, बिछावन। भुम्मन्तर, नपुं०, मिन्न भूमियाँ। भुवन, नपुं०, संसार। भुस, नपुं ०, भूसा ; वि ०, बहुत, प्रधिक । भुसं, ऋ॰ वि॰, प्रधिकांश रूप से। भुसति, किया, भौकता है। (भृस्सि, भूस्सन्त, भुस्समान, भुस्सित्व)। भुसत्य, पु०, माधिवय का मर्य । मू, स्त्री, पृथ्वी । मूत, कृदन्त, हुमा, उत्पन्न हुमा; पुं० तथा नपुं०, (महा-)भूत, भूत (-प्रेत), प्राणी, भूतायं (ययायं)। मूत-काय, पु॰, महाभूतों से उत्पन्न शरीर। मूत-गाम, पु०, वनस्पति । मूत-गाह, पु॰, भूत-प्रेत द्वारा प्रसित। मूत-बादी, वि०, सत्यवादी। मूत-वेज्ज, पु॰, भूत-प्रेत उतारने वाला ग्रोभा। मूतत्त, नपुं०, होने का भाव। मूतिक, वि०, मीतिक। मू-तिण, नपुं०, भू-तृण। मु-घर, पु०, पहाड़। मू-नाथ, पु०, राजा। भू-भुज, पु०, भूपति । मुमक, वि०, तल्लों वाला (मकान)। मूमि, स्त्री०, पृथ्वी। मूमि-कम्पा, स्त्री०, भू-कम्प । मूमि-गत, वि०, पृथ्वी-स्थित । मूमि-तत, नपुं०, पृथ्वी-तल । मूमिप्पदेस, भूमि-भाग, पु०, जमीन का टुकड़ा। मूरि, स्त्री॰, प्रज्ञा; वि॰, विपुल। मूरिक्त जातक, तपस्वी के नाग-कन्या द्वारा लुमाये जाने की कया (\$ x x) 1 भूरि-पञ्ज, वि॰, बहुत प्रज्ञा वाला।

मूरिपञ्ह जातक, महाउम्मग्ग जातक का एक ग्रंश (४५२)। मूरि-मेघ, वि०, बहुत मेघा वाला। भूसन, नपुं०, भूषण। भसा, स्त्री०, सजावट। भसापेति, त्रिया, सजवाता है। (भूसापेसि, भूसापित, भूसापेत्वा)। भूसेति, क्रिया, सजाता है। (भूसेसि, भूसित, भूसेन्त, भूसेत्वा) । मेक, पू०, मेंढक। मेज्ज, वि०, भूरभुरा, जो टूट सके; नपुं०, टूटना या काटना । मेण्डिवाल, पू०, ग्रस्त्र-विशेष । मेण्डक, खेलने की गेंद। नेत्, पु॰, तोड़ने वाला। मेद, पू०, मेल का ग्रमाव, ग्रनेकता। भेदक, वि०, एकता नष्ट करने वाला। भेदकर, वि०, भेद पदा करने वाला। भेदन, नपं ० टूटना। भेदनक, वि०, तोड डालने योग्य, फुटने योग्य । मेदन-घम्म, वि०, ट्टने के स्वमाव वाला। मेदित, कृदन्त, टूटा हुमा। भेंबति, किया, तोड़ता है। (भेदित, भेदेत्वा)। भरण्ड, पु०, गीदड़ । नेरण्डक, नपुं०, गीदड़ की मावाज। मेरव, वि०, भयानक। भेरि, स्त्री०, ढोल। मेरि-चारण, नपुं०, ढोल बजाकंर मुनादी कराना। मेरि-तल, नपुं०, ढोल का तल्ला। मेरि-वादक, पु०, ढोल बजाने वाला।

मेरि-वादन, नपुं०, ढोल का बजाना 1 भेरि-सद्, पु०, ढोल की ग्रावाज। मेरिवाद-जातक, लड़के ने पिता का कहना न मान ढोल को बार-बार वजाया । डाक्यों ने ग्राकर पिता-पुत्र को लूट लिया (५६)। भेसज्ज, नपुं ०, दवाई। मेसज्ज-कपाल, नपुं०, दवाई का बतंन । भो, म्रब्यय, सम्बोधन-विशेष। मोग, पु०, धन, सम्पत्ति। भोगक्खन्घ, पु०, घन का ढेर। भोग-गाम, पू॰, करदाता गाँव। मोग-मद, पु०, धन का ग्रमिमान। भोगवन्तु, वि०, धनी। भोगी, पु॰, सपं, धनी ग्रादमी; वि॰ (समास में) मोग भोगने वाला। भोग्ग, वि०, भोग्य। भोजक, पु०, खिलाने वाला, कर उगाहने वाला। गाम-भोजक, पु०, गाँव का मुखिया। भोजन, नपुं०, खाद्य-सामग्री। भोजनिय, वि०, खाने योग्य, नरम खाद्य-सामग्री। भोजाजानीय जातक, श्रेष्ठ घोड़े की कया, जिसने जरूमी होने पर मी शत्रु पर धाक्रमण किया (२३)। भोजापेति, खिलाता है। (भोजापेसि, भोजापित, भोजा-पेत्वा)। भोजी, वि०, भोजन करने वाला। भोजेति, किया, खिलाता है। (भोजेसि, भोजित, भोजेत्वा, भोजेन्त, भोजेतं)।

भोज्ज, नपुं०, खाने योग्य बस्तु । भोति, सम्बोधन, मवति । भोत्तब्ब, देखो मोज्ज । भोत्नं, खाने के लिए। भोवादी, पु॰, ब्राह्मण।

म

मंस, नपुं०, मांस, गोश्त । मंस-चक्खु, नपुं०, दिव्य चक्षु प्रादि से मिन्न मौतिक ग्रांखें। मंस जातक, शिकारी से मांस मांगने की कथा (३१५)। मंस-पुञ्ज, पु०, मांस का ढेर। मंस-पेसि, स्त्री०, मांस-पेशी। मकचि, पु०, धनुष की डोरी का पटुग्रा। मकचि-वाक, नपुं०, पटुए का छिलका। मकचि-वत्थ, नपुं०, पदुए का बुना वस्त्र। मकर, पु॰, मगरमच्छ । मकर-दन्तक, नपुं०, मगरमच्छ के दौतों के समान। मकरन्द, पु०, पुष्प-रेणु । मकस, पु०, मच्छर। मकस-वारण, नपुं॰, मसहरी। मकस जातक, बेटे ने बाप के सिर पर बैठा मच्छर हटाने जाकर कुल्हाड़ी से उसका सिर चीर डाला (४४)। मकुट, पुं वया नपुं , मुकुट, ताज । मकुल, नपुं०, फूल की कली। मक्कट, पु०, बंदर। सक्कटक, पु०, मकड़ी। मक्कटक-सुत्त, नपुं०, मकड़ी का जाल। मक्कट जातक, बन्दर ने तपस्वी का वल्कल-चीर घारण कर कुटी में रहने वाले एक तपस्वी की कुटी में प्रवेश करना चाहा। उसे सफलता नहीं

मिली (१७३)। मक्कटी, स्त्री०, बंदरी। मक्स, पु॰, दूसरे के गुण का मूल्य घटाना । मक्खण, नपुं०, (तेल) माखना। मक्सली-गोसाल, बुद्ध के समकालीन छह मिन्न मतावलम्बी माचार्यों में से एक। मविखका, स्त्री०, मक्ली। मिंखत, कृदन्त, माला हुमा । मक्सी, पु०, दूसरे के गुणों का मूल्य घटाने वाला। मक्खेति, किया, मासता है, चुपड़ता (मक्खेसि, मक्खित, मक्खेत्वा) । मलादेव जातक, राजा ने सिर में उगे सफेद बाल को 'देव-दूत' समझा, प्रवच्या ग्रहण की (१)। मग, पु०, चीपाया । मगसिर, मागंशीषं, नक्षत्र-विशेष। मगष, कोसल, वंस, ध्रवन्ति के समान ही भगवान् बुद्ध के समय का एक प्रधान राज्य। मग्ग, पु॰, रास्ता, सड़क, पय। मग्ग-किलन्त, वि०, चलने से पका हमा। मग्ग-कुसल, वि०, रास्ते का जानकार। मगगस्तायो, वि०, रास्ता बताने वाला।

मग्गङ्ग, नपुं०, सम्यक् दृष्टि मादि मायं-मागं के माठ मञ्ज । माग-जाण, नपुं०, मागं के बारे में ज्ञान। मग्गञ्जू, मग्गविदू, वि०, मार्ग का जानकार। मगगट्ठ, वि०, मार्ग-स्थित । मगा-दूसी, पु०, मुसाफिरों को लूटने वाला डाक् । मग्ग-देसक, वि०, मार्ग-दशंक। मग्ग-पटिपन्न, वि०, यात्री, मार्गारूढ। मग्ग-भावना, स्त्री, द्यायं-मागं का ग्रम्यास । मग्ग-मूळ्ह, वि०, मार्ग-भ्रष्ट, रास्ता-भूला। मन्ग-सच्च, नपुं०, भ्रायं-मागं नामक सत्य । मग्गति, किया, सोजता है, पता लगाता है। (मांग्ग, माग्गित, माग्गित्वा)। मग्गन, नपुं॰, स्रोज, तलाश। मग्गना, स्त्री०, खोज, तलाश। मिगक, पु॰, मार्गास्ट । मिगत, कृदन्त, सोजता हुग्रा। मगुर, पु०, एक प्रकार की मछली। मग्गेति, किया, देखो मग्गति । मग्धवन्तु, पु॰, शक्र (इन्द्र) का एक भीर नाम। मघा, स्त्री०, मघा नक्षत्र । मङ्कु, वि०, उत्साहहीन। मङ्कू-भाष, पु॰, नैतिक दौबंल्य, उत्साह-मन्दता । मञ्जू-मूत, वि०, मन्दोत्साह । मञ्जल, वि॰, शुम मुहुतं।

मञ्जल-किच्च, नपुं०, मञ्जल-कृत्य, उत्सव । मङ्गल-कोलाहल, पु०, शुम-मुहूर्त ग्रादि को लेकर भगड़ा। मञ्जल-दिवस, पु॰, उत्सव का दिन, शादी का दिन। मञ्जल-घरस, पु०, राजकीय ग्रवन । मञ्जल-सिन्धय, पु०, राजकीय घोड़ा। मङ्गल-पोक्सरणी, स्त्री०, मङ्गल-पुष्करणी L मङ्गल-सिलापट्ट, नपुं०, राज्यासन। मङ्गल-सुपिन, नपुं०, ग्रच्छा स्वप्न । मङ्गल-हत्यी, पु०, राजकीय हाथी। मङ्गल-जातक, चूहे द्वारा काट डाले गये कपड़ों को घर में रखना अशुम समक ब्राह्मण ने उन्हें इमशान-भूमि में फिकवाना चाहा (८७)। मङ्ग्र, पु०, नदी की मछली-विशेष; वि॰, पीत-वर्णी। मच्च, पु०, ग्रादमी, मनुष्य। मच्द्र, पु॰, मृत्यु, मौत। मच्चुतर, वि०, मृत्युजयी। मच्चु-घेड्य, नपुं०, मृत्यु-क्षेत्र । मच्च-परायण, वि०, मरणाधीन । मच्चु-पास, पु॰, मृत्यु-पाश। मच्च-मुख, नपुं०, मृत्यु-मुख ! मच्चु-राज, पु०, मृत्यु-राज। मच्चु-वस, मृत्यु की सामय्यं। मच्चु-हायी, वि०, मृत्यु को जीतने वाला। मन्छ, पु॰, मछली। मच्छण्ड, नपुं०, मछली का प्रण्डा। मच्छण्डि, स्त्री॰, गुड़, शक्कर बादि की तरह गन्ने की विकृति।

मच्छ-मंस, नपं०, मत्स्य ग्रीर मांस । मच्छ-बन्ध, पू०, मछुवा। मच्छ-जातक, मछली की सत्य-क्रिया से वर्षा हई (७४)। मच्छ-जातक, कया उक्त कया से मिलती-जुलती है (२१६)। मच्छर, चरिया, नवुं०, मात्सयं। मच्छरचारी, पु०, कंजूस। मच्छरायति, किया, कंजुसी करता है। मच्छरिय, नपुं०, मात्सयं, कंजूसपन। मच्छा, सोलह जनपदों में से एक जन-पद मत्स्य के वासी। मच्छिक, पू॰, मछलीमार। मच्छी, स्त्री०, मछली। मच्छुद्दान जातक, मछली के पेट में से ह्पयों की थैली वापिस मिली (२५६)। मच्छेर, देखो मच्छरिय। मज्ज, नपुं०, मद्य। मज्जन, नपं०, नशा। मज्जप, वि०, मद्यप, शरावी। मज्जपान, नपं०, शराब पीना । मज्जपायी, देखो मज्जप। मज्ज-विक्कयी, पु०, मद्य-विकेता। मज्जति, किया, मांजता है, साफ करता है, पालिश करता है। मज्जित, (मजिज, मत्त, मट्ठ, मज्जन्त मज्जित्वा)। मज्जना, स्त्री०, मांजना। मज्जार, पु०, मार्जार, विल्ला। मज्जारी, स्त्री॰, मार्जारी, विल्ली। मज्झा पु०, मध्य-नाग; वि०, बीच का। मज्भद्ठ, मज्भत, वि०, मध्यस्य, पक्षगात रहित ।

मज्भण्ह, प्०, मध्याह्न । मज्झत्तता, स्त्री०, मध्यस्यता । मज्भ-देस, पु०, मब्य-देश। मज्अन्तिक समय, पू०, मध्याह्म, दोप-हर। मज्कत्तिक (थेर), ग्रशोक-पुत्र महेन्द्र स्यविर को उपसम्पदा देने वाले महा-स्यविर । बाद में वे धमं-प्रचाराथं काइमीर-गन्धार की मोर गये। मज्भिम, वि०, मध्यम, केन्द्रीय । मजिभम पुरिस, पु०, मध्याकार का ग्रादमी, मध्यम पुरुष । मिकिम-याम, पु०, प्रघंराति । मज्भिम-वय, पू०, प्रौड़। मज्भिम-निकाय, मुत पिटक के पाँच निकायों में से मध्यमाकार के सुत्रों का संग्रह। मजिमाम-देस, मध्य मण्डल, जिसकी पूर्वी-सीमा वर्तमान कंकजोल मानी जा सकती है, जिसके मध्य में वर्तमान सिलई नदी थी, जिसके दक्षिण नाग में हजारी बाग जिले का सेतकण्णिक नाम का कोई कस्बा रहा, जिसकी पश्चिमी सीमा हरियाणा प्रदेश के कर्नाल जिले का थानेसर नाम का कस्वा या ग्रीर जिसकी उत्तरी सीमा उशीरव्वज नाम का हिमालय का कोई पवंत-भाग रही। मञ्च, पू॰, चारपाई। मञ्चक, प्०, छोटी चारपाई। मञ्च-परायण, वि०, चारपाई पर मञ्च-पीठ, नपुं , चारपाई तथा कुर्सी चादि ।

मञ्च-बान, नप्०, चारपाई का बुनना। मञ्जरी, स्त्री०, गुच्छा। मञ्जिट्ठ, मञ्जेट्ठ, वि०, मजीठिया रंग । मञ्जिट्ठा, स्त्री०, वृक्ष-विशेष । मञ्जिर, नपं०, पौव के ग्रामरण। मञ्जु, वि०, ग्राक्षंक, प्रियकर। मञ्ज-भाणक, वि०, प्रियंवद। मञ्जुस्सर, वि०, प्रियमाणी। मञ्जूसक, पु०, देवताघों का वृक्ष । मञ्जूसा, स्त्री॰, पेटी। मञ्जेट्ठी, स्त्री०, मजीठ (लता) । मञ्जाति, त्रिया, कल्पना करता है, संकल्प करता है, विचार करता है। मञ्जित, (मञ्जि, मञ्जमान, मञ्जिला)। मञ्जना, स्त्री॰, मान्यता, कल्पना । मञ्जित, नपुं०; मान्यता, कल्पना। मञ्जे, भ्रव्यय, में कल्यना करता हूं। मट्ट, मट्ठ, वि०, चिकना, घिसा हुमा, पालिश किया हुंगा। मट्ट-साटक, नपुं०, चिकना वस्त्र । मट्टकुण्डलि जातक, ब्राह्मण के पुत्र-द्योक से मुक्त होने की कथा (388) मणि, पु०, मणि, जवाहिर। मणि-कुण्डल, नपुं०, मणियों की वाली। मणिक्लन्घ, पु॰, बड़ी मारी मूल्यवान मणि। मणि-पल्लक्क, पु०, मणि-जड़ा सिहा-सन। मणि-बन्ब, पु०, कलाई। मणि-मय, पू०, मणि-निमित । मिन-रतन, नपुं •, मूल्यवान मणि ।

मणि-वण्ण, वि०, मणि के रंग का। मणि-सप्प, पु०, मणि वाला सपं। मणिक, पु०, बड़ा वर्तन । मणिकण्ठ जातक, मणिकण्ठ नाम के सर्प से उसकी मणि भागने पर सपं ने तपस्वी को हैरान करना छोड़ दिया (**२** १३) । मणि-कृण्डल जातक, राजा ने प्रपना रिनवास दूपित करने वाले मन्त्री को बाहर किया देश से निकाल (348) 1 मणिचोर जातक, राजा ने अपनी मणि गृहस्य की गाड़ी में छिपा, उसे चोर घोषित करा, उसकी सुन्दर पत्नी को हथियाना चाहा (१६४)। मणिसूकर जातक, सूत्ररों ने मणि को जितना ही रग़ड़ा, उतनी ही वह ग्रधिकाधिक चमकी (२८४)। मण्ड, पू०, मांड; वि०, अति स्पष्ट। मण्डन, नप्ं, सजावट । मण्डन-जातिक, वि०, सजावट-प्रिय। मण्डप, पु०, मण्डप। मण्डल, नपुं०, घेरा, गोल-वेदिका। मण्डल-माल, पु०, गोलाकार मण्डप। मण्डलिक, वि०, प्रदेश (मण्डल) से सम्बन्धित । मण्डलिस्सर, पु०, मण्डल का शासक। मण्डली, वि०, मण्डल वाला । मण्डित, कृदन्त, सुसज्जित। मण्डक,, प्०, मेंढक । मण्डेति, किया, सजाता है। (मण्डेसि, मण्डित, मण्डेत्वा)। मत, कृदन्त, मृत । मत-किच्ब, नपुं०, मृत व्यक्ति के

सम्बन्ध में करणीय। मतक, पु॰, मृतक, मरा हुमा। मतक-भत्त, नपुं ०, मृत व्यक्ति के सम्ब-न्धियों द्वारा दिया जाने वाला दान। श्राद्ध । मतक-वत्य, नपुं०, मृत व्यक्ति के सम्ब-निधयों द्वारा दान दिया गया वस्त्र। मतकभत्त जातक, श्राद्ध करने के इच्छुक ब्राह्मण ने बकरी की बलि देने से पूर्व ग्रपने शिप्यों से कहा कि उसे नहला लाग्रो (१८)। मतरोदन जातक, भाई तथा पिता के मरने पर भी धनित्यता का स्मरण कर 'वोधिसत्व' ने एक भी ग्रांसू नहीं गिराया (३१७)। मति, स्त्री०, प्रज्ञा, विचार। मतिमन्तु, वि०, बुद्धिमान् । मति-विष्पहीन, वि०, मूर्ख । मत्त, कृदन्त, नशे में चूर; (समास में) मात्रा । मत्त-हत्थी, पु०, नशे में चूर हाथी। मत्तञ्जू, वि०, मात्रज्ञ, मात्रा का जान-कार। मत्तञ्जुता, स्थी०, मात्रज्ञ होना । मत्ता, स्त्री०, मात्रा। मत्तासुख, नपुं०, सीमित सुख । मत्तिका, स्त्री॰, मिट्टी। मितका-दिण्ड, पु०, मिट्टी का पिण्ड। मत्तिका-भाजन, नपुं०, मिट्टी का बर्तन। मतिघ, पु॰, मातृहंता। मत्तेय्य, वि०, माता की सेवा करने वाला। मत्तेव्यता, स्त्री०, मातृ-मनित । मत्यक, पु॰, मस्तक, शिखर, दूरी

पर । मत्य-लुङ्ग, नपुं०, दिमाग । मत्यु, नपुं०, दही से पृथक् मथा हुमा जल। मचित, क्रिया, मयता है। (मयि, मयित, मयित्वा)। मयन, नपुं०, मयना । मद, पु॰, ग्रहंकार। मदन, पु॰, कामदेव; नपुं॰, नशा। मदनीय, वि०, नशीला। मदिरा, स्त्री॰, सुरा, धान्य-निर्मित शराव। मह, देश विशेष, मद्र। मद्दित, किया, दवाता है, निचोड़ता है, रॉदता है। (मिंह, मिंहत, महन्त, महित्वा, मद्दिय)। मद्दन, नपुं०, मदंन करना, रौंदना। मद्दल, पु०, वाद्य-यंत्र विशेष। मद्दव, नपुं०, मादंव, कोमलता; वि०, कोमल। मह्ति, कृदन्त, मदंन किया गया, रोंदा गया। मधु, नपुं , शहद, सुरा। मधुक, पु॰, वह वृक्ष जिससे मधु तैयार होती है। मघुकर, पु०, शहद की मक्ली। मधु-गन्ध, पु०, शहद का छता । मधु-पटल, पु॰, शहद का छता। मधुप, पु॰, भ्रमर। मघु-पिण्डिका, स्त्री०, शहद-पिण्ड । मघुडबत, पु॰, शहद की मक्खी। मधु-मक्सित, वि०, शहद से मासा हुमा ।

मधु-मेह, पू०, मधु-मेह, बहुमूत्र रोग। मघु-लिट्ठका, स्त्री॰, मुलहठी। मघु-लाज, पु०, शहद-मिथित खील। मध्-लोह, पु०, मक्ली। से चूता मधुस्सव, वि०, शहद हमा । मधुका, स्त्री०, मुलहटी, ग्रीपधि-विशेष। मघ्र, वि०, मीठा; नपुं०, मीठी चीज। मध्रत, नपं ०, मध्रता। मधुरस्सर, पुं • मधुर स्वर; वि०,मधुर-भाषी। मधुरा, यमुना-तट पर स्थित सूरसेन जनपद की राजधानी, दक्षिण मारत का प्रसिद्ध मदुरा नगर। मध्वासव, पु॰, सुरा। मन, पु॰ तथा नपुं, चित्त, विज्ञान। मनसिकार, पु०, मनो-मनक्कार, संकल्प। मनता, स्त्री॰, मनोमाव, [अत्त-मनता, स्त्री०, ग्रानन्दपूर्णं मनोभाव]। मनन, नपुं०, विचार करना। मनसिकरोति, किया, मन में रखता है। (मनसिकरि, मनसिकत, मनसिकरोन्त, मनसिकत्वा, मनसिकातब्ब)। मनं, ग्रव्यय, लगमग। मनाप, मनापिक, वि०, मनोनुकूत ग्राकर्षक। मनुज, पु०, मनुष्य। मनुजाधिप, पु०, राजा। मनुजिन्द, पु०, नरेन्द्र, राजा। मनुञ्ज, वि०, मनोज्ञ, सुन्दर। मनुस्स, पु०, मनुष्य। मनुस्सत्त, नपुं ०, मनुष्यत्व ।

मनुस्स-भाव, पुं०, मनुष्य-माव। मनुस्स-मूत, वि०, जो ग्रादमी होकर उत्पन्न हुम्रा। मनुस्स-लोक, पु०, मनुष्य-लोक । मनेसिका, स्त्री०, दूसरे के विचार की जानकारी। मनो, (समास में) मन। मनोकम्म, नपुं०, मानसिक कर्म। मनोजव, वि०, मन के समान तीव गति । मनोदुच्चरित, नपुं०, मानसिक दुष्कर्म। नपं०, मन रूपी द्वार मनोद्वार, (इन्द्रिय)। मनोघातु, स्त्री०, चित्त । मनोपदोस, पु०, द्वेंप। मनोपसाद, पु॰, मनित । मनोपुडबङ्गम, वि०, जिसका पुर्वगामी मन हो। मनोमय, वि०, मन से उत्पन्न । मनोरथ, पु०, इच्छा, संकल्प। मनोरम, वि०, ग्रानन्ददायक। मनोविजाण, नपुं०, मनोविज्ञान। मनोविञ्जेय, वि०, मन के द्वारा जानने योग्य। मनोवितक्क, पु०, विचार। मनोहर, वि०, सुन्दर, ग्राकपंक। मनोज जातक, मनोज ने राजकीय ग्रद्वों पर ग्राक्रमण किया। राजा के घनुर्घारियों द्वारा मारा गया (३१७)। मनोसिला, स्त्री०, संखिया। मन्त, नपुं०, मन्त्र । मन्तज्भायक, वि ०, मन्त्रों का ग्रध्ययन . करने वाला। मन्तन, नपुं०, मन्त्रणा, विचार-विमर्श।

मन्तना, स्त्री०, मन्त्रणा, विचार-विमशं करना। मन्ता, स्त्री०, प्रज्ञा। मन्ती, पु०, मन्त्री। मन्तिणी, स्त्री०, मंत्रिणी। मन्तु, पु०, कल्पना करने वाला। मन्तेति, किया, मन्त्रणा करता है, विचार-विमशं करता है। (मन्तेसि, मन्तित, मन्तेन्त, मन्तय-मान, मन्तेत्वा, मन्तेतुं)। मन्थ, पू०, मथानी, च्यूडा । मन्थर, पु०, कछुवा। मन्द, वि०, मन्द (-बुद्धि), आलसी। मन्दता, स्त्री०, मन्द-भाव, मूर्खता । मन्दत्त, नपुं०, मन्द भाव, जड़ता। मन्दं, मन्दमन्दं, कि॰ वि॰, घीरे-घीरे। मन्दाकिनी, स्त्री०, भील तथा नदी का नाम। मन्दामुखी, स्त्री०, ग्रंगीठी । मन्दार, पु०, पवंत-विशेष। मन्दिय, नपुं०, मूर्खता, ग्रालस्य । मन्दिर, नपुं०, भवन, महल । मन्धातु जातक, मान्धाता नरेश की कथा (२४८)। ममङ्कार, पु०, ममत्व। ममायना, स्त्री०, स्वार्थं परता, ग्रासक्ति। ममायति, क्रिया, ग्रासक्त होता है। (ममायि, ममायित, ममायन्त, ममा-यित्वा)। मम्म, मम्मट्ठान, नपुं०, ममं-स्थान । मम्मच्छेदक, वि०, ममं-स्थान को चोट पहुँचाने वाला। मम्मन, वि०, हकलाने वाला। मयं, सर्वनाम, हम।

मय्हक जातक-माई ने मतीजे को नदी में ड्वाकर मार डाला (३६०)। मयूख, पु०, प्रकाश की किरण। मयूर, पु॰, मोर। मरण, नपुं०, मृत्यु, मौत । मरण-काल, पु०, मरने का समय। मरण-चेतना, स्त्री॰, मार डालने का इरादा। मरण-धम्म, वि०, मरण-स्वमाव। मरणन्त, वि०, जीवन जिसका मन्त मृत्यू हो। मरण परियोसान, देखो मरणन्तः। मरण-भय, नपुं०, मृत्यु-भय। मरण-मञ्चक, पू०, जिस चारपाई पर किसी की मृत्यु हुई हो या होने वाली हो। मरण-मुख, नपुं०, मृत्यु का मुँह। मरण-लिङ्ग, नपुं०, मृत्यु के चिह्न। मरण-सति, स्त्री ०, मरणानुस्मृति, मृत्यु का समरण। मरण-समय, पु०, मृत्यु का समय। मरति, किया, मरता है। (मरि, मत, मरन्त, मरमान, मरि-तब्ब, मरित्वा, मरितुं)। मरिच, नपुं०, मिर्च । मरियादा, स्त्री॰, सीमा, नियम। मरीचि, स्त्री०, प्रकाश-किरण। मरीचिका, स्त्री०, मृगतृष्णा । मरीचि-घम्म, वि०, मृगतुष्णा सद्श। मरु, स्त्री॰, कान्तार; पु॰, देवता। मरुम्ब, नपुं०, बिलीर। मल, नपुं०, मैल, मैला। मल-तर, वि०, प्रधिक मैला।

मलय, पु॰, मलय पवंत । मलयज, पु॰, चन्दन। मलिन, वि०, घब्बेदार, मैला। मल्ल, पु०, पहलवान, मल्ल जाति से सम्बन्धितं । मल्ल-युद्ध, नपुं०, कुरती। मल्लक, पु०, बर्तन, थैला। मल्लिका, स्त्री०, चमेली। मसारगल्ल, नपुं०, बहुमूल्य पत्थर-विशेष। मसि, पु०, कालिख। मस्सु, नपुं ०, दाढ़ी। मस्सुक, वि॰, दाढ़ी वाला। मस्सु-कम्म, नपुं ०, हजामत । मस्सु-करण, नपुं०, हजामत बनाना। मह, पु॰, धार्मिक उत्सव। महग्गत, वि०, बहुत ऊँचा। महग्घ, वि०, ग्रत्यन्त मूल्यवान् । महग्घता, स्त्री०, कीमतीपन। महग्धस, वि०, बहुत खाने वाला, म्बखड़। महण्णव, पु०, विशाल समुद्र। महति, किया, भादर करता है, गौरव करता है। (महि, महित, महित्वा)। महत्त, नपुं ०, महत्त्व । महद्धन, वि०, भ्रत्यन्त धनवान् । महनीय, वि०, ग्रादरणीय। महन्त, वि०, महान्, बड़ा। (महन्तर, महन्तता, महन्त-भाव)। महप्फल, वि०, महान् फल वाला। महब्दल, वि०, महान् बलशाली; नपुं॰, बड़ी भारी सेना।

महश्भय, नपुं०, महान् मय । महल्लक, वि०, वूढ़ा; पु०, बूढ़ा मादमी। महल्लकतर, वि०, वृद्धतर। महल्लिका, स्त्री०, वृद्धा स्त्री । महा, समास पदों में 'महन्त' का 'महा' हो जाता है, ग्रीर 'ा' का हस्य हो जाता है। महान्। महाउपासक, पु०, बुद्ध का श्रदा-सम्पन्न ग्रनुयायी। महाउपासिका, स्त्री०, महान् श्रदा-सम्पन्न उपासिका। महाकरुणा, स्त्री०, महान् दया । महाकाय, वि०, बड़े शरीर वाला। महागण, पु०, बड़ी मण्डली, बड़ा समूह। महागणी, पु०, ग्रनेक ग्रनुयायियों सहित। महाजन, पु०, जनता। महातण्ह, वि०, बहुत लोभी। महातल, नपुं०, भवन के ऊपर की खुली छत। महादीप, पु०, जम्बुद्दीप, उत्तर कुरु ग्रादि चार महाद्वीप। महाघन, नपुं०, विशाल घन । महानरक, पु०, भयानक नरक। महानस, नपुं०, रसोई-घर। महानुभाव, वि०, महान् प्रतापी। महापञ्ज, वि०, ग्रत्यन्त प्रज्ञावान् । महापय, पु०, महामार्ग । महापितु, पु॰, पिता का बड़ा भाई, ताया, ताऊ। महापुरिस, पु०, महापुरुष ।

महामूत, नपुं०, पृथ्वी, जल म्रादि चार महाभूत। महामोग, वि०, ऐश्वर्यशाली। महामति, पु०, महान् बुद्धिमान् । महामत्त, (महामच्च मी), पु॰, मुख्य-मन्त्री। महामुनि, पु०, महान् मुनि । महामेघ, पु०, वर्षा की तेज बीछाड़। महायञ्ज, महायाग, पु०, महान् यज्ञ। महायस, वि०, महान् यशस्वी। महारह, वि०, ग्रत्यन्त मूल्यवान् ! महाराजा, पु०, महान् नरेश। महालतापसाधन, नपुं०, स्त्रियों के शृंगार में सहायक होने वाली लता। महासत्त, महान् सत्व। महासमुद्द, पु॰, महासमुद्र । महासर, नपुं ०, एक बड़ी भील। महासार, महासाल, विशाल घन के स्वामी। महासावक, पु०, वड़ा शिष्य। महा प्रस्तारोह जातक, युद्ध में हारकर राजा घोड़े पर चढ़कर माग गया (३०२)। महाउक्कुस जातक, मित्रों ने मित्र की सहायता की (४८६)। महा-उम्मग्ग जातक, महोषध पण्डित के पाण्डित्य की कथाएँ (५४६)। महाकण्ह जातक, शक (इन्द्र) ने महा-कण्ह नाम के अपने कुत्ते को साथ ले दुराचारी मनुष्यों को बुरी तरह भय-मीत किया (४६९)। महाकपि जातक, बन्दर ने नदी पर ग्रपने शरीर का पुल बना, भपनी

सारी जाति को प्रपने शरीर पर से गुजरने देकर यथायं नेता का धर्म निमाया (४०७)। महाकपि जातक, कृतघ्न भादमी ने बन्दर का सिर फोड़ दिया। परहित-कामी बन्दर ने ऐसे ब्रादमी की मी जान बचाई (५१६)। महाकस्सप थेर, भगवान् बुद्ध के प्रधान शिष्यों में से एक प्रभुख शिष्य । महाजनक जातक, मिथिला के महा-जनक नाम के राजा के दो पुत्रों के संघषं की कथा (५३६)। महाजानपद, ध्रनेक स्थलों पर नामां-कित सोलह जनपद (राज्य)। वे थे कासी, कोसल, ग्रङ्ग, मगध, विज, मल्ल, चेतिय, वंस, कुरु, पञ्चाल, मच्छ, सूरसेन, ग्रस्सक, ग्रवन्ति, गन्धार तथा कम्बोज। इनमें से प्रथम चौदह मजिभम-देस (मध्य-मण्डल) में हैं, अन्त के दो उत्तरापथ में। महातक्कारि जातक, देखो तक्कारि जातक। महायूप, राजा दुट्ठग्रामणी द्वारा निर्मित ग्रनुराघपुर स्थित महान् चैत्य । महाधम्मपाल जातक, चिरंजीवी होने का रहस्य (४४७)। महाधम्मरिक्सत थेर, तृतीय संगीति के बाद भशोक भीर मोग्गलिपुत्त तिस्स स्थविर द्वारा महाराष्ट्र में भेजे गये धमं-प्रचारक महास्यविर। महानारवकस्सप जातक, नारद कस्सप ब्रह्मा ने भंगति नरेश को परलोक का विश्वास दिलाया (५४४)।

महानेक, महामेक, सुमेक पर्वत का ही एक ग्रीर नाम।

महापजापित गौतमी, सिढा थं गौतम की माता महामाया का देहान्त होने पर, मौसी महाप्रजापित गौतमी ने ही सिढा थं को दूघ पिलाकर पाला या। मिश्रुणी संघ की स्थापना का सारा श्रेय महाप्रजापित गौतमी को ही है।

महापदुम जातक, विमाता ने पुत्र पर भूठा लांछन लगाया (४७२)।

महापनाद जातक, इसकी कथा मुरुचि जातक में प्राई है (२६४)।

महापलोभन जातक, इसकी कथा चुल्ल-पलोमन जातक की कथा के ही समान है (४०७)।

महापिङ्गल जातक, दुष्ट महापिङ्गल नरेश के मरने पर उसकी प्रजा ने खुशियाँ मनाई (२४०)।

महाबोध जातक, राजा ने बोधि की न्याय-प्रियता के कारण उसे न्याया-घीश नियुक्त किया (१२८)।

महामञ्जल जातक, शकुनों की व्याख्या। वास्तविक महामञ्जल कीन-कीनसे हैं (४५३)।

महामाया, देखो माया ।

महामोग्गल्लान थेर, मगवान् बुद्ध के

दो प्रधान शिष्यों में से एक । दूसरे
थे धर्म-सेनापति सारिपुत्त ।

महारिक्सित थेर, तृतीय संगीति के भनन्तर यवन-देश में धर्म-प्रचारार्थं जाने वाले महास्थिवर।

महारट्ठ, तृतीय संगीति के प्रनन्तर महाधम्मरिक्सत महारट्ठ (महा- राष्ट्र) में ही घमं-प्रचाराथं गये।
महावंस, सिंहल-द्वीप का प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य। इसके प्रथम
खण्ड की रचना चौथी शताब्दी में
महानाम स्थिवर के द्वारा हुई।
उसके बाद से इसके उत्तर-कालीन
खण्डों की भी रचना बराबर होती
रही।

महावग्ग, विनय-पिटक के पाँच ग्रन्थों में से एक, जो ग्रागे खन्धकों में विमक्त है।

महावाणिज जातक, वट वृक्ष की एक शाखा से व्यापारियों को पानी मिला, दूसरी से मोजन, तीसरी से सुन्दर लड़ कियां ग्रीर चौथी से ग्रनेक दूसरी मूल्यवान वस्तुएँ (४६३)।

महाविहार, ग्रनुराधपुर (सिहल-द्वीप) का प्रसिद्ध विहार । शताब्दियों तक यही बौद्ध धर्म का प्रधान केन्द्र बना रहा ।

महावेस्सन्तर जातक, देखो वेस्सन्तर जातक।

महासंधिक, द्वितीय संगीति के ही समय स्थिवरवाद से पृथक् हो जाने वाला एक बौढ सम्प्रदाय।

महासार जातक, एक बंदरी रानी की मोतियों की माला उठा ले गई (६२)।

महासीलव जातक, मन्त्री ने राजा के रिनवास को दूषित किया। राजा ने उसे देश-निकाला दे दिया (५१)। महासुक जातक, गूलर के वृक्ष के फल-रिहत हो जाने पर मी तोते ने उसका परित्याग नहीं किया (४२६)।

महासुतसोम जातक, मनुष्य-मांस मोजी राजा की कथा (५३७)। महासुदस्सन जातक, महासुदस्सन की मृत्यु का वृत्तान्त (१५)। महासुपिन जातक, कोसल-नरेश प्रसेन-जित् द्वारा देखे गये सोलह महान् स्वप्नों की व्याख्या (७७)। महाहंस जातक, रानी की बलवती इच्छा हई कि स्वणं-वणं राजहंस उसे सिहासन पर बैठ धर्मोपदेश दे (X 3 x) 1 महिसासक, स्योवरवाद से पृथक् हो जाने वाला एक ग्रीर वौद्ध सम्प्र-दाय। महिका, स्त्री०, धुंघ। महिच्छ, वि०, ग्रत्यन्त लोभी। महिच्छता, स्त्री०, ग्रत्यधिक लोम । महित, कृदन्त, पूजित। महिद्धिक, वि०, महाऋदिवान् । महिन्द, महान् इन्द्र; मिक्षणी संघ-मित्रा के माई तथा महाराज प्रशोक के सूप्त्र, जो महामोग्गलिपुत्त तिस्स की प्रेरणा से घंमं-प्रचारायं सिहल पहुँचे थे। महिला, स्त्री०, स्त्री। महिलामुख जातक, महिलामुख नामक राजकीय हाथी की कथा (२६)। महिस, पु०, भैंस । महिस जातक, मैंसे ने बन्दर द्वारा की गई सभी शरारतों को सहन किया। वह बन्दर एक दूसरे मैंसे द्वारा मारा गया (२७८)। महिस-मण्डल, महादेव स्थविर का घमं-प्रचारक्षेत्र।वर्तमान मैसूर।

महिस्सर, पू०, महेश्वर, महादेव। महो, स्त्री॰, पृथ्वी, नदी-विशेष । मही-तल, नपुं०, जमीन की सतह। मही-घर, पू॰, पवंत । महीपति, महीपाल, पू०, राजा। महीभाग, पु०, कान्तार। महोरूह, पु०, वृक्ष । महेसवल, वि०, महाप्रतापशाली। महेसि, पु०, महर्षि; स्त्री०, रानी। महोघ, पु०, महान् बाढ़। महोदधि, वि०, सम्द्र। महोदर, वि०, बड़े पेट वाला। महोरग, पू॰, सांपों (नागों) राजा। महोसध, नपुं०, सोंठ, सुला भदरक । मा, ग्रंव्यय, निषेघार्थक, मत; प्०, चन्द्रमा । मागघ, मागघक, वि०, मगध सम्बन्धी। मागधी, स्त्री॰, पालि भाषा कार्ष्ट्रपार-म्मिक नाम। मागविक, पु०, शिकारी । मागसिर, पु०, मार्गशीवं महीना। माघ, पु॰, महीना-विशेष। माघात, पु॰, हत्या-विरत रहने की माजा। माणव, माणवक, पु०, तरुण, ब्रह्म-चारी। माणविका, स्त्री॰, तरुणी, चारिणी। मातङ्ग, पु०, हाथी का नाम; नीची मानी जाने वाली जाति। मातली, इन्द्र के सारयी का नाम। माताषित्, पू॰, माता-पिता । मातापेत्तिक, बि॰, माता-पिता छे

घागत। मातापेत्ति-भार, माता-पिता की सेवा में रहना। मातामह,.पु॰, नाना। मातामही, नानी। मातिक, वि०, माता सम्बन्धी। मातिका, स्त्री०, जल-मार्ग, श्रमिषमं सम्बन्धी विषयों के शीषंस्थान, प्राति-मोक्ष-नियमावलि। मातिपक्ल, पु०, मातृपक्ष । मातु, स्त्री॰, मा । मातु-कुच्छि, पु॰, माता की कोख। मातु-गाम, प्०, स्त्री। मातु-घात, पु०, मात्-हत्या । मातु-घातक, पु॰, मात्-हत्यारा। मातुन्छा, स्त्री०, मौसी। मातुपट्ठान, नपुं०, माता की सेवा। मातुपोसक, वि०, माता का पोषक । मातुपोसक जातक, हाथी ने अपनी भन्धी माता की सेवा की (४५५)। मातु-भगिनी, स्त्री ०, मातुच्छा, मौसी। मातु-भातु, पु॰, मामा। मातुल, पु॰, मामा। मातुसानी, स्त्री०, मामी। मातुलुङ्ग, पु॰, चकोतरा। माबिस, वि०, मेरे जैसा। मान (माण मी), नपुं०, माप; पु०, घहंकार। मानकूट, पु०, खोटा माप। मानत्यद्ध, वि०, ग्रहंकार से जड़ीमूत। मानद, वि०, गौरवाहं, मादरणीय। मानन, नपुं०, मादर करना, सम्मान करना। भानव, पु०, मनुष्य।

मानस, नपुं०, मन, चित्त, विज्ञान; (समास में) संकल्प लिये हए। मानित, कृदन्त, सम्मानित । मानी, पु०, प्रिममानी। मानुस, वि०, मनुष्य सम्बन्धी; पु०, मनुष्य । मानुसक, वि०, मनुष्य सम्बन्धी। मानुसी, स्त्री॰, मानुषी, स्त्री। मानेति, ऋिया, भादर करता है, सत्कार करता है। (मानेसि, मानेन्त, मानेत्वा)। मापक, पू॰, रचयिता, निर्माण करने वाला। मापित, कृदन्त, रचित, निर्मापित। भाषेति, किया, निर्माण करता है। (मापेसि, मापेत्वा)। मामक, वि०, श्रद्धावान्, प्रेमी, ममत्व-युक्त। माया, ठगी, जादू। माया, महामाया, सिद्धार्थ गीतम (बुढ) की माता। उसका पिता या देवदह का भञ्जन शाक्य भीर उसकी माता थी जयसेन की लड़की यशोधरा। मायाकार, पु०, जादूगर। मायाबी, वि०, मायाकरने वाला. ढोंगी, जादूगर। मायु, पु॰, पित्त। मार, पु॰, चित्त की अकुशल वृत्तियों की साकार मूर्ति, लुमाने वाला, साक्षात् यमराज। मार-कायिक, वि०, मार-लोक सम्बन्धी। मार-घंट्य, नपुं०, मार का क्षेत्र। मार-बन्धन, नपुं०, मृत्यू का बंधन ।

मार-सेना, स्त्री०, मार की सेना। मारक, वि०, मारने वाला। मारण, नपुं०, मार डालना। मारापित, कृदन्त, मरवाया। मारापेति, क्रिया, मरवाता है। (मारापेति, मारापित, मारापेत्वा, मारापेन्त)। मारित, कृदन्त, मारा गया। मारिस, वि०, सम्बोधन-विशेष, मित्र, मान्यवर। मारुत, पु०, हवा। मारेति, किया, मारता है। (मारेसि, मारेन्त, मारेत्वा, मारेतुं)। मारेतु, पु०, मारने वाला। माल, मालक, पु०, घेरेदार जगह, गोल ग्रांगन। माळ, पु॰, एक तल्ले वाला मकान। मालती, स्त्री॰, मालती-लता। माला, स्त्री॰, (फूलों की) माला। माला-कम्म, नपुं०, माला गूँथने का काम, दीवार पर उत्कीणं फूल। मालाकार, पु०, माली। माला-गच्छ, पु०, फूल देने वाला पौघा। माला-गुण, पु०, माला गूंधने का घागा। माला-गुळ, नपुं०, फूलों का ढेर। माला-चुम्बटक, पु०, फूलों का गजरा। माला-दाम, पु०, माला गूँथने का धागा। माला-घर, वि०, मालाधारी। माला-भारी, वि०, मालाघारी। माला-पुट, पु०, फूलों का दोना । मालावच्छ, नपुं०, पुष्पोद्यान, पुष्प-शैया ।

मालिक, माली, वि०, मालाघारी। मालिनी, स्त्री॰, मालाघारिणी। मालुत, पु॰, ह्वा । मालुत जातक, तपस्वी ने निणंय दिया कि जब कभी भी हवा चलती है, तब ग्रधिक ठण्ड पड़ती है (१७)। मालुवा, स्त्री०, माकाश-वेल । मालूर, पु०, वृक्ष-विशेष। माल्य, नपुं०, पुष्प-माला । मास, पु॰, महीना, माश की दाल। मासिक, वि०, माइवार। मासक, पु०, मासा (सिक्का)। मिग, पु०, पशु, चौपाया, हिरण। मिग-चापक, मिग-पोतक, पु०, हिरण का बच्चा। मिग तण्हिका, स्त्री०, मृगत्ष्णा । मिग-दाय, पु०, मृगोद्यान । मिग-मद, पु०, कस्तूरी। मिग-मातुका, स्त्री ०, मृग-विशेष। मिग-लुद्दक, पु०, शिकारी। मिग-पोतक जातक, तपस्वी ने बड़े स्नेह से हिरण के बच्चे का पालन-पोषण किया। उसके मरने पर तपस्वी बहुत संतप्त हुमा (३७२)। मिगव, नपुं०, शिकार। मिगार-मातु-पासाद, श्रावस्ती के पूर्व के पूर्वाराम में विसाखा मिगारमाता द्वारा बनवाये गये विहार नाम। मिगालीप जातक, मिगालीप ने अपने विता गृध का कहना न मान जान गंबाई (३८१)। मिनिन्द, पु०, पशुद्रों का राजा, सिह।

मिगी, स्त्री ०, हरिणी । मिच्छत्त, नप्ं०, मिध्यात्व। मिच्छा, प्रव्यय, मिच्या, भूठ। मिच्छा-कम्मन्त, पू०, मिच्याचरण, दुराचरण। मिच्छा-गहण, नपुं०, गलत समभा। मिच्छाचार, पू०, कदाचार, मिथ्या-चरण। मिच्छाचारी, वि०, कदाचारी, दुरा-चारी। मिच्छा-बिट्ठ, स्त्री०, मिथ्याद्दिः; वि॰, मिच्या-मंतघारी। मिच्छा-पणिहित, वि०, गलत घोर मुका हमा। मिच्छा-बाचा, स्त्री०, मिथ्या वाणी। मिच्छा-वायाम, पु०, मिथ्याप्रयत्न । मिच्छा-सङ्कृत्प, पू०, मिथ्या संकल्प। मिज्ज, नपं०, मज्जा। मिणन, नपुं०, माप । मिणति (मिनाति मी), क्रिया, मापता है; तोलता है। (मिणि, मित, मिणन्त, मिणित्वा, मिणितुं, मिणीयति)। मित, कृदन्त, मापा गया, तोला गया। मित-भाषी, पु०, संयत-माषी। मितचिन्ती जातक, बहुचिन्ती, भ्रप्यचिन्ती तथा मितचिन्ती मछलियों की कया (११४)। मित्त, पु॰ तथा नपुं॰, मित्र। मित्तदू, मित्तबुब्भि, मित्तबूभी, पु०, मित्र-द्रोही। मित्त-पतिकपक, वि०, मूठा मित्र। मिल-भेब, पु०, मैत्री-विच्छेद । मिल-सन्यव, पु०, श्रेषी-सम्बन्ध ।

मित्तविग्वक जातक, चतुद्वार जातक में वर्णित मित्तविन्द जातक-कथा का एक श्रंश (८२)। मित्तविन्द जातक, चतुद्वार जातक का ही एक ग्रीर ग्रतिरिक्त ग्रंश (१०४)। मित्तविन्द-जातक, चतुद्वार जातक का ही एक ग्रीर दूसरा ग्रतिरिक्त ग्रंश 1 (335) मित्तामित्त जातक, तपस्वी ने हाथी के बच्चे का पोषण किया । उसने बड़े होने पर तपस्वी को मार डाला 1 (039) मितामित जातक, सच्चे मित्र के लक्षण (४७३)। मियिला, विदेह जनपद की राजधानी। नेपाल की सीमा के अन्दर वर्तमान जनकपूर। मिय, म्रव्यय, एक के बाद एक, छिप कर। मिय-मेद, पू०, मैत्री-विच्छेद। मियुन, नपुं , पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग, युगल, जोड़ा। मियो, ग्रव्यय, परस्पर। मिद्ध, नपुं०, ग्रालस्य । मिद्धी, वि०, ग्रालसी। मिय्यति, मीयति, क्रिया, मरता है। मीयमान, कृदन्त, मृतमान्, हुमा। मिलक्ख, पु०, बबंर जाति का। मिलक्ल-देस, पु०, ववंर-देश। मिलात, कृदन्त, म्लान हुआ। मिलातता, स्त्री०, म्लान-माव, कुम्ह-लायापन। लिसायति, ऋया, जुम्ह्लाता है।

(मिलायि, मिलायमान) । मिलिन्द, सागल का राजा मिनाण्डर। उसका जन्म भ्रलसन्दा (भ्रलेक्जे-ण्ड्रिया) के समीप कलसी में हुआ था। मिलिन्द-पञ्ह में उसी के साथ का नागसेन स्थविर का शास्त्रायं दर्ज है। मिलिन्द-पञ्ह, मिक्षु नागमेन तथा राजा मिलिन्द के प्रश्नोत्तरों से समन्वित ग्रन्थ। मिस्स, मिस्सक, वि०, मिश्रित। मिस्सेति, ऋिया, मिश्रित करता है। (मिस्सेसि, मिस्सेन्त, मिस्तेत्वा) । मिहित, नपुं०, मुस्कराहट। मीन, पु०, मछली। मीळ्ह, नपुं ०. गूंह। मुकुल, नपुं०, कली। मुल, नपुं०, मुँह, चेहरा, प्रवेश-द्वार; वि॰, प्रमुख। मुख-तुण्ड, नपुं०, चोंच । मुख-द्वार, नपुं०, मुँह। मुख-घोवन, नपुं०, मुँह का घोना । मुख-पुञ्छन, नपुं०, मुंह पोंछने का वस्य। मुख-पूर, नपुं०, मुँह मरना; वि०, मुँह भरने वाला। मुख-बट्टि, स्त्री०, किनारा। मुख-वण्ण, पु०, चेहरे का रंग। मुस-विकार, पु०, चेहरे का रंग-ढंग। मुख-संकोचन, नपुं०, चेहरे की विकृति। मुख-संयत, वि०, वाणी का संयमी। मुखर, वि०, वाचाल। मुखरता, स्त्री०, वाचालता। मुखाचान, नपुं ०, लगाम ।

मुखुल्लोकक, वि०, भादमी के चेहरे की ग्रोर देखने वाला। मुखोदक, नपुं ०, मुँह घोने का जल। मुख्य, वि०, प्रमुख, प्रधान, ग्रति महत्त्व-पूर्ण । मुगा, पु०, मूँग। मुगगर, पु०, मुगदर। मुंगुस, पु०, नेवला। मुचलिन्द, पु॰, वृक्ष-विशेष, (नाम) उरूवेल में अजपाल न्यग्रोध के पास का एक वृक्ष, जिसके नीचे बुट्रव-प्राप्ति के प्रनन्तर भगवान् बुद्ध ने तीसरा सप्ताह मनाया। मुच्चित, किया, स्वतन्त्र होता है, मुक्त होता है। (मुच्चि, मुत्त, मुच्चित, मुच्चमान, मुच्चित्वा)। मुच्छति, किया, मूछित होता है। (मुञ्छि, मुच्छित, मुच्छन्त, मुच्छित्वा; मुच्छिय)। मुच्छन, नपुं०, मूर्छा। मुच्छना, स्त्री०, मूर्छा। मुञ्चक, वि०, मुक्त करने वाला। मुञ्चति, किया, मुक्त करता है, ढीला करता है। (मुञ्चि, मुक्ति, मुञ्चित, मुञ्चन्त मुञ्चमान, मुञ्चित्वा, मुञ्चिय) । मुञ्चन, नपुं०, छोड़ना, मुक्त करना। मुज्ज, नपुं०, मूंज, तृण का एक प्रकार। मुट्ठ, कृदन्त, विस्मृत। मुट्ठसच्ब, वि०, विस्मृति । मुट्ठस्सती, पु॰, विस्मृत करने वाला। मृद्ठि, पु॰ तथा स्त्री॰, मृट्ठी, मूठ । शुद्दिका, पु॰, पहलवान ।

मुट्ठि-मल्ल, पु०, मुक्केबाज। मुद्ठ-युद्ध, नपुं०, मुक्का-मुक्की। मुण्ड, वि०, बाल-रहित। मुण्डक, पु॰, वाल-रहित (मुण्डित) सिर वाला। मुण्डच्छद, पु०, चौड़ी छत वाला मकान। मुण्डत्त, मुण्डिय, नपुं०, मुण्ड-माव । मुण्डेति, किया, मूंडता है, सिर की हजामत बनाता है। (मुण्डेसि, मुण्डित, मुण्डेत्वा) । मुणिक जातक, मालिक की बेटी के विवाह के भवसर पर वैलों की उपेक्षा कर सूप्रर को बहुत खिल।या-पिलाया गया, उसे मोटा कर उसकी हत्या करने के लिए (३०)। मृत, नपुं ०, नाक, जीम तथा स्पर्शेन्द्रिय द्वारा होने वाला इन्द्रियानुभव। मृतिङ्ग, मृदिङ्ग, पु०, मृदङ्ग । मृतिमन्तु, वि०, बुद्धिमान् । मुत्त, कृदन्त, मुक्त, नपुं०, मूत्र। ाुत्ताचार, वि०, शिथिलाचार। मुत्तकरण, नपुं०, पेशाब करना। मुत्तवत्य, स्त्री ०, ग्रण्डकीश । मुत्ता, स्त्री॰, मोती। मुत्तावलि, स्त्री०, मोती-माला। मुताहार, पु॰, मोतियों का हार। मृता-जाल, नपुं०, मोतियों का जाल। मृत्ति, स्त्री०, मुक्ति। मुदा, स्त्री०, प्रसन्नता । मुबित, वि०, प्रसन्न। मुदित-मन, वि०, प्रसन्त-चित्त । मुबिता, स्त्री०, दूसरों की समृद्धि देख-कर मानन्दित होना।

मुदु मुदुक, वि०, कोमल। मुदु-चित्त, वि०, मृदु-चित्त । मुदु-जातिक, वि०, मुदु-स्वमाव वाला। मुदुता, स्त्री०, मृदु-माव। मुदुत्त, नपुं०, मृदुत्व। मुदु-भूत, वि०, कोमल। मुदुलक्खण जातक, मुदुलक्खण नामक तपस्वी राजा की रानी पर मोहित हो गया (६६)। मुद्दङ्कन, नपुं०, छपाई। मुद्दा, स्त्री॰, मुद्रा, संकेत (हस्त-मुद्रा) मुद्दापक, पु०, मुद्रक । मुद्दापन, नपुं०, मुद्रण। मुद्दायन्त, नपुं०, मुद्रणालय । मुद्दापेति, क्रिया, छापता है, मुद्रित करता है। (मुद्दापेसि, मुद्दापित, मुद्दापेत्वा) । मुद्दिका, स्त्री०, ग्रंगूठी, ग्रंगूरी शराव। मुद्दिकासव, पु॰, ग्रंगूरी ग्रासव। मुद्ध, वि०, मूर्ख, चिकत । मुद्धातुक, वि ०, मूखं-स्वभाव। मुद्धता, स्त्री०, मूखंता । मुद्धा, पु०, शीपं, शिखर। मुद्धज, पु०, मूर्घा से उत्पन्न ग्रक्षर, वाल। मुद्धाधिपात, पु॰, सिर का गिरना। मुद्धावसित्त, वि०, राज-तिलक किया हुम्रा नरेश। मुधा, ग्रव्यय, मुपत । मुनाति, किया, जानता है। (मुनि, मुत)। मुनि, पु०, मुनि, मनन करने वाला साघु । मुनिन्द, पु॰, मुनियों में प्रधान (बुद्ध) ।

मुम्हति, किया, भूल जाता है, मन्द-बुद्धि होता है। (मुदिह, मूळ्ह, मूय्हमान, मुदिहत्वा)। मुब्हन, नपुं०, भूल, विस्मति । मुरख, पु०, चंग या फीफ। मुरमुरायति, ऋया, मुर-मुर शब्द करके काट डालता है। मुसल, पु०, मुसल। युसली, वि०, मूसल वाला । मुला, जञ्यय, मृवा, मूठ। मुसाबाब, पु॰, मुषावाद, भूठ। भुस्सति, किया, भूल जाता है, यन्त-र्वान हो जाता है। (जुल्लि, जुट्ठ, मुस्सित्वा)। मुहुत्त, पु॰ तथा नपुं॰, मूहूतं । युव्वलेन, कि॰ वि॰, क्षण-मर में। मुहुत्तिक, वि०, मुहूतं-भर रहने वाला; पु०, ज्योतिषी । युळाल, नपुं०, मृणाल, कमल-नाल। युळाल-युष्फ, नपुं॰, कमल का फूल। म्य, वि०, गूंगा। मूगत्रक्त बातक, (५३८), देखी तेमिय जातक। मूल, नपुं०, जड़, मूल (-धन), नकद, तल्ला, कारण, नींव, उत्पत्ति, घारम्भ। मूल-कन्य, पु०, कन्द-विशेष। मूल-बीज, नपुं०, कोंपल निकले मूल-बीज। मूलपरियाय जातक, 'काल सबको खाता है, अपने-आपको भी। सभी को खाने वाले काल को कीन खा सकता है?' प्रश्न का समाधान (38X) I

मुलक, वि०, (समास में) कारणी-म्लिक, वि०, महत्त्वपूर्ण । मूल्य, नपुं०, कीमत, मजदूरी। मुसा, स्त्री॰, घातु पिघलाने की घरिया। मूसिक, पु०, चूहा। मुसिका, स्त्री॰, चुहिया। मूसिक-छिन्न, वि०, चूहों द्वारा काटा मूसिक-बच्च, नपुं०, चूहे की मेगन। मूसिक जातक, पुत्र ने पिता की हत्या करने की चेष्टा की (३७७)। मूळ्ह, कृदन्त, मूढ । मे, सर्वनाम, मुक्ते, मेरा। मेखला, स्त्री०, करधनी। मेघ, पु०, बादल, वर्षा। मेघनाद, पु०, गर्जना । मेघ-पासाण, पु०, घोले । मेघ-यण्ण, वि०, बादलों के वर्ण का। मेचक, वि०, काला या गहरा नीला। मेज्भ, वि०, पवित्र। मेण्ड, मेण्डक, पु०, मेंढा या भेड़ । मेण्डक, विशाला मिगारमाता वितामह। मेत्त-चित्त, मैत्रीपूणं चित । मेत्ता, स्त्री०, मैत्री-मावना, उदारता। मेत्ता-कम्मट्ठान, नपुं०, मेत्री कर्म-स्थान। मेत्ता-भावना, स्त्री०, मैत्री का ग्रम्यास करना। मेत्तायना, स्त्री०, मैत्री-माव। मेत्ताविहारी, वि०, मैत्री-माव में रमता हुमा।

मेत्तायति, किया, मंत्री करता है। (मेत्तावि, मेतावित्वा, मेतायन्त) । मेत्रेय-नाय, पु०, भावी बुढ, मेत्रेय्य। मेचून, नपुं०, मैथुन। मेयून-घम्म, पु०, मैयून-किया। मेद, पु०, चर्वी। मेदक-तालिका, स्त्री०, चर्बी भूनने का भाजन। मेद-वण्ण, वि०, चर्बी के रंग का। मेदिनी, स्त्री०, पृथ्वी । मेघ, पु०, यज्ञ। मेघग, पु०, भगड़ा। मेधा, स्त्री०, वुद्धि, प्रज्ञा। मेघावी, वि०, प्रज्ञावान् । मेरप, नपुं०, शराव। मेह, पू॰, उच्चतम पवंत का नाम। मेलक, नपुं॰, मेल, लोगों की परिषद्। मेलन, नपुं०, मिलना। मेस, पु॰, मेप, भेड़ा। मेह, पु०, मूत्र-रोग। मेहन, नपुं०, पुरुषेन्द्रिय प्रथवा स्त्री की इन्द्रिय। मोक्ल, पु०, मोक्ष, मुक्ति। मोक्लक, वि०, मोक्षदाता। मोक्ख-मग्ग, पु०, मोक्ष का मार्ग। मोक्लति, किया, मुक्त होता है। मोग्गल्लान, मगवान् बुद्ध के दो प्रधान शिष्यों में से एक। मोग्गिलपुत्त तिस्स थेर, तृतीय संगीति के प्रधान, धशोक-गुह। मोघ, वि०, व्ययं। मोघपुरिस, पु०, बेकार ग्रादमी, मूखं। मोच, पू॰, केला।

मोचन, नपुं०, मुक्त करना। मोचापन, नपुं०, मुक्त कराना। मोचापेति, किया, मुक्त कराता है। मोचेति, किया, मुक्त करता है। (मोचेसि, मोचित, मोचेन्त, मोचेत्वा, मोविय, मोवेन्तुं)। मोदक, पु०, लड्डू। मोदति, किया, ग्रानन्दित होता है। मोदित, मोदमान, (मोदि, मोदित्वा । मोदन, नपुं०, ग्रानन्दित होना । मोदना, स्त्री०, प्रमुदित होना । मोन, नपुं०, बुद्धि, मौन। मोनेय्य, नपुं ०, नैतिक सम्पूर्णता । मोमूह, वि०, जड़-वृद्धि, मूर्ख । मोर, पू॰, मोर पक्षी। मोर-पिञ्ज, नपुं०, मोर की पूंछ। मोर जातक, सूर्य तथा बुद्ध की प्रशंसा में स्तोत्र गाने वाला मोर हर तरह से मुरक्षित रहा (१५६)। मोस, पु॰, चोरी। मोसन, नपुं०, चोरी। मोसवज्ज, नपुं०, ग्रसत्य। मोह, पु॰, मोह, मूखंता। मोहब्खय, पु०, भ्रविद्या का नाश। मोह-चरित, वि०, मूढ़-चरित। मोहतम, पु०, मोहांधकार। मोहनीय, वि०, मोहने वाला, मूर्ख वनाने वाला। मोहन, नपुं०, मोहना, मूर्ख बनाना । मोहक, वि०, मोह उत्पन्न करने वाला। मोहेति, किया, मोह उत्पन्न करता है, घोबा देता है।

(मोहेसि, मोहित, मोहेत्वा) ।

मोति, पु॰ तया स्त्री॰, मोली, सिर का उच्चतम भाग।

य

य, सर्वनाम, जो, जो कौन, जो पया, जो कुछ मी। यकन, नवं०, यकृत। यक्ख, प्०, यक्ष । यक्ल-गण, पू०, यक्ष-गण। यक्ल-गाह, पु०, यक्षाधिकृत। यक्लत्त, नपुं०, यक्षत्व। होकर पैदा यक्खमूत, वि०, यक्ष हुमा । यक्ल-समागम, पु०, यक्षों का सम्मेलन । यक्लाधिप, पु॰, यक्षों का राजा। यविखनी, यवखी, स्त्री०, यक्षिणी। यखे, वि०, ग्रादरसूचक सम्बोधन। यजति, किया, यज करता है, दान करता है। (यजि, विट्ठ, यजित, यजित्वा, यजमान)। यजन, नपुं०, यज्ञ करना, दान देना। यजु, नपं०, यजुर्वेद । यञ्ज, पु०, यज्ञ । यञ्ज-सामी, पु०, यज्ञ-स्वामी । यञ्जावाट, पु०, यज्ञ-वेदिका (यज्ञ-गतं)। यञ्ज-उपनीत, वि०, यज्ञ (-बलि) के लिए लाया गया। यद्ठ, पु॰ तया स्त्री॰, लकड़ी। यदिठ-कोटि, स्त्री०, लकड़ी का सिरा। यदिठ-मधुका, स्त्री०, मुलहठी। यत, कृदन्तं, रोका गया, संयत किया गया।

यतित, किया, प्रयत्न करता है। यतन, नपुं०, प्रयत्न । यति, पु०, मिझु, साधु, बह्मवारी। यती, ग्रव्यय, जहां से, जब से। यत्तक, वि०, जितना। यत्य, यत्र, कि॰ वि॰, जहाँ कहीं। ययत्त, नपुं०, ययार्थावस्या । ययरिय, भ्रव्यय, जैमा । यया, कि० वि०, जैसे। ययाकम्मं, कि॰ वि॰, यया कमं। यया कामं, कि । वि०, यथेच्छ। ययाकारी, वि०, प्रपनी मर्जी मे करने वाला। ययकालं, कि॰ वि॰, योग्य समय, उपयुक्त समय । ययाक्कमं, कि ० वि०, क्रमानुसार। ययाठित, वि०, ययास्थित । यथातथ, वि०, यथा-तथ्य, सत्य । यथातथं, कि॰ वि॰, यथा-सत्य। ययाधम्मं, कि॰ वि॰, धमं के मताबिक, नियमानुसार। ययाधीत, वि०, जैसे धुला हो। ययानुसिट्ठं, कि॰ वि॰, उपदेशानुसार। यथानुभावं, ऋ० वि०, योग्यतानुसार। यथापसादं, कि॰ वि॰, प्रसन्नता के धनुसार। ययापूरित, वि०, भरे होने के प्रनु-सार, पूरी तरह मरा हमा। ययाफासुक, वि०, सुविधाजनक। ययाबलं, कि॰ वि॰, यथाबल, शक्ति के

मनुसार। यपाभतं, त्रि॰ वि॰, जैसे लाया गया। ययाभिरतं, कि॰ वि॰, जब तक इच्छा हो। ययामृत, वि०, ययायं। ययामृत, कि॰ वि॰, यथार्थ रूप से। ययारहं, कि॰ वि॰, योग्यतानुसार। यपार्शेच, कि॰ वि॰, दिन के अनुसार। ययावतो, कि॰ वि॰, ययावत्। यथाविधि, कि॰ वि०, यथा विधि, विधि-भन्सार। ययाविहितं, ऋ॰ वि०, व्यवस्था के घनुसार। ययावुड्ढं, कि॰ वि॰, ज्येष्ठपन के भनुसार। ययावृत्तं, कि॰ वि॰, ययोक्त। ययासक, कि॰ वि॰, मिल्कियत के धनुसार। ययासति, कि॰ वि॰, शक्ति के मनु-सार। यथासद्धं, ऋ॰ वि ०, भद्धा के अनुसार। ययामुखं, कि० वि०, मुलपूर्वक । यथिच्छितं, कि॰ वि॰, इच्छानुसार। यदा, कि॰ वि॰, जब। यदि, ग्रव्यय, ग्रगर। यदिच्छा, स्त्री०, इच्छा, प्रवृत्ति । यन्त, नपु०, यन्त्र, मशीन । यन्त-नाळि, स्त्री०, पाइप । यन्त-मृत्त, वि०, मशीन द्वारा फेंका-यन्तिक, पु०, यान्त्रिक, मशीन बनाने या सुवारने वाला, टेकनीशियन। यम, पु॰, यमराज। यम-बूत, प्०, यमराज का दूत।

यम-पुरिस, पु०, नरक में यन्त्रणा देने वाले। यम-लोक, पु०, प्रेत-लोक । यमक, वि०, जुड़वाँ, दोहरा; नपुं०, जोडा। यमक, ग्रमिधम्म पिटक का छठा प्रकरण (ग्रन्य)। यमक-साल, पु०, शाल-वृक्षों की जोड़ी। यमना, जम्बुदीप की पांच बड़ी नदियों में से एक। यव, पु०, जी। यव सुक, पु॰, जो की रोटी। यबस, पू०, घास-विशेष । यस, पु॰ तथा नपुं॰, यश, प्रसिद्धि। यस-दायक, वि०, ऐश्वयंदाता । यस-महत्त, नपुं ०, ऐश्वयं अथवा प्रसिद्धि की विशालता। यस-लाभ, पु०, यश प्रथवा ऐवर्यं का लाम। यस थेर, वाराणसी सेठ का पुत्र यश, जिसके सन्तप्त हृदय को बुद्ध की ग्रम्त-वाणी ने शान्ति प्रदान की थी। यसोघर, वि०, प्रसिद्ध। यसोलद्ध, वि०, यश के द्वारा प्राप्त। यहि, कि॰ वि॰, यहाँ। यं, नपं०, जो, जो कौन (वस्तु)। या, स्त्री०, जो कोई भी (स्त्री) । याग, पु०, यज्ञ। यागु, स्त्री०, यवागु । याचक, पु०, मांगने वाला । याचित, किया, मांगता है। (याचि, याचित, याचन्त, याचमान, याचितुं, याचित्वा)।

याचन, नपुं०, याचना । याचयोग, वि०, दानशील। याचित, कृदन्तं, मांगा गया । याचितक, वि०, मांगी गयी; नणुं, मांगी हुई वस्तु या चीज। याजक, पु०, यज्ञ कराने वाला। यात, कृदन्त, गया। याति, किया, जाता है। यात्रा, स्त्री॰, गमन, मुसाफरी। याथाव, वि०, ठीक-ठीक । यादिस, वि०, जिसके समान, जिस-यान, नपुं०, गाड़ी, रथ। यानक, नप्०, छोटी गाड़ी। यानगत, वि०, गाड़ी में बैठा। यान-भूमि, स्त्री०, गाड़ी जा सकने लायक भूमि। यानी, पु०, गाड़ी हांकने वाला। यानीकत, वि०, ग्रम्यस्त । यापन, नपुं०, गुजारा, श्राहार। यापनीय, वि०, जीवन-ग्राधार। यापेति, किया, गुजारा करता है। (यापेसि, यापित, यापेन्त, यापेत्वा) । याम, पु०, रात्रि का पहर। याम-कालिक, वि०, भिशु द्वारा ग्रपराह्न तथा रात के समय ग्रहण की जा सकने वाली वस्तु। यायी, वि०, जाते हुए। याव, प्रध्यय, तक (याव-तितयं== तीसरी बार तक)। याव-कालिक, वि०, ग्रस्थायी। याव जीव, वि०, जीवन-पर्यन्त याव-जीवं, ऋ० वि०, जीवन-मर। याव-जीविक, वि०, जीवन-पर्यन्त बने

रहने वाला। यावतक, वि०, जितना। याबदत्यं, कि॰ वि॰, ग्रावश्यकता नुसार। यावता, ग्रव्यय, जहाँ तक । यावतायुक्तं, कि॰ वि॰, जीवन बना रहने तक। यावतावतिहं, कि॰ वि॰, जितने दिन तक। यिट्ठ, कृदन्त, म्राहुति दी गई। युग, नपुं०, जोड़ा, जुग्रा, युग, जमाना। युगन्त, पु०, युग का अन्त। युगग्गाह, पु०, ईर्पा, काबू,। युगच्छिद्द्, नपुं०, जुए का छेद । युगनद्ध, वि०, जुए में जुता। युगमत्त, वि०, युग-मात्र, जुए की लम्बाई भर की दूरी। युगन्धर, हिमालय के पर्वतों में से एक। युगल, युगलक, नपुं०, ओड़ा। युज्भति, किया, युद्ध करता है। (युज्भि, युजिभत, युज्ञन्त, युजिभत्वा, युजिभय, युक्समान, युजिभतुं)। युज्भन, नपुं०, युद्ध करना। युञ्जति, क्रिया, शामिल होता है, प्रयत्न करता है। (युञ्जि, युत्त, युञ्जन्त, युञ्जमान, युञ्जितवा, युञ्जितब्ब) । युञ्जन, नपुं०, जोड़ना, सम्मिलित होना। युत्ति, स्त्री०, न्याय । युद्ध, नपुं०, संग्राम, लड़ाई। युद्ध-मूमि, स्त्री०, संग्राम-भूमि।

युद्ध-मण्डल, नवुं०, संग्राम-भूमि । युव, पु०, तहण, नीजवान। युवती, रत्री०, तरुणी। युवञ्जय जातक, ग्रोस की बूंदों का मूल जाना देख राजकुमार को संसार की ग्रनित्यता का बोघ हुमा (४६०)। यूच, पु॰, समूह, पशु-समूह। यूय-जेट्ठ, पु०, पशुग्रों के भुण्ड का मुखिया । यूप, पु०, यज्ञ-स्तम्म। यूस, पु०, (मांस का) सूप। येन, कि० वि०, जिसके कारण से। येभ्य, वि०, अनेक। 🕶 येव, ग्रव्यय, ही। 🗻 यो, सर्वनाम, जो, जो कोई (पुरुष) । योग, पु०, सम्बन्ध । योगक्लेम, पु०, ग्रासक्ति से मुक्ति। योग-युत्त, वि०, ग्रासनित से बँघा। योगावचर, पु०, योगी। योगातिग, वि०, पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त। योग्ग, वि०, योग्य; नपुं०, गाड़ी, रथ। योजक, पु॰, सम्मिलित होने वाला। योजन, नपुं०, 'नियुक्त होना, दूरी का माप-विशेष (=करीब दो मील)।

योजना, स्त्री॰, निर्माण। योजनिक, वि०, योजना वृनाने वाला। योजित, कृदन्त, मिला हुमा। योजेति, किया, जोड़ता है। (योजेसि, योजेन्त, योजेत्वा, योजिय)। योत्त, नवुं०, घागा, रस्सी। योघ, पु॰, योघा। योघाजीव, पु०, संनिक। योधेति, किया. लड़ता है, युद्ध करता है। (योधेसि, योधित, योधेत्वा) । योनकधम्मरिक्खत थेर. तृतीय संगीति के बाद मोग्गलिपुत्त 'तिस्स द्वारा अपरन्तक जनपद की ग्रोर धर्म-प्रचारायं भेजे गये स्यविर। योना (युवाना, योनका भी), यवन, ग्रीस (यूनान) के निवासी। योनि, स्त्री०, मूल, (मनुष्य-)योनि, (स्त्री-)योनि। योनिसो, कि० वि०, यथार्थं ढंग से, बुद्धिपूर्वक । योनिसो मनसिकार, पु०, विचार। योब्बन (योबञ्ज भी), नपुं ०, योवन । योब्बन-मद, पु०, योवन-मद।

रक्लक, पु॰, रक्षक, पहरेदार ।
रक्लित, क्रिया, रक्षा करता है।
(रिक्ल, रिक्लित, रक्लिन्त, रिक्लित्वा,
रिक्लितब्ब)।
रक्लिन, नपुं॰, रक्षण।

₹

रक्लनक, वि०, रक्षण करता हुग्रा। रक्लस, पु०, राक्षस। रक्ला, स्त्री०, ग्रारक्षा। रक्लित, कृदन्त, संरक्षित। रक्लित थेर,तृतीय संगीति की समाप्ति

पर वनवासि प्रदेश में भेजे गये स्यविर । रिषक्षय, वि०, रक्षण करने योग्य। रगा, मार की तीन कन्याश्रों में से एक, जिसने बुद्ध को प्रलोमित करने की चेष्टा की थी। रङ्कु, पु०, मृगों की एक जाति। रङ्ग, पु०, रंग। रङ्गकार, पु०, रँगने वाला, नाटक के रङ्गजात, नपुं०, नाना प्रकार के रंग। रङ्गरत्त, वि०, रंग से रेंगा। रङ्गाजीव, पु०, चित्रकार या रंग-साज। रचयति, क्रिया, रचता है, व्यवस्था करता है, तैयार करता है। (रचिय, रचित, रचित्वा)। रचना, स्त्री०, व्यवस्था। रच्छा, (रथिया, रथिका मी), स्त्री०, गली, बाजार। रज, पुट तथा नपुंठ, घूलि। रजक्ल, वि०, रज (=चित्त-मैल) से युक्त। रजक्लन्घ, पु०, धूल का ग्रंबार। रजक, पु०, घोबी। रजत, नप्ं, चांदी। रजित, किया, रंगता है। (रज्जि, रजित्वा, रजितव्व)। रजन, नपुं०, रंगना । रजन-कम्म, नपुं०, रंगना। रजनी, स्त्री०, रात्रि। रजनीय, वि०, ग्राक्यंक। रजस्सला, स्त्री॰, मासिक धमं वाली स्त्री।

रजोजल्ल, नपुं०, कीचड़। रजोहरण, नपुं०, घूल का हटाना, धुल का पोंछना। रज्ज, नपुं०, राज्य। रज्ज-सिरि, स्त्री०, राज्य-श्री। रंज्ज-सीमा, स्त्री०, राज्य-सीमा। रज्जति, किया, भानन्दित होता है, प्रसन्न होता है, मजा करता है। (रजिज, रत्त, रज्जन्त, रज्जिन्वा)। रज्जन, नवं०, ग्रनुरंजन। रज्जू, स्त्री०, रस्सी। र्ज्जुगाहक, पु०, जमीन मापने वाला। रञ्जित, किया, ग्रानन्दित होता है। (रञ्जि, रञ्जित, रत, रञ्जन्त, रञ्जमान, रञ्जित्वा) । रञ्जेति, क्रिया, ग्रानन्द देता है, रॅंगता (रञ्जेसि, रञ्जित, रञ्जेन्त. रञ्जेत्वा)। रट्ठ, नपुं०, राष्ट्र। रट्ठ-विण्ड, पु०, राष्ट्र-विण्ड, लोगों का दिया हुमा भोजन। रट्ठवासी, रट्ठवासिक, पु०, राष्ट्र का ग्रधिवासी। रदिठक, वि०, राध्ट्रिक, राष्ट्र-विशेष का, सरकारी ग्रफतर। रण, नपुं०, युद्ध, लड़ाई। रणञ्जह, वि०, राग-मुक्त। रत, कृदन्त, धनुरक्त, ग्रानन्द लेता हमा। रतन, नपुं०, रतन, लम्बाई का माप। रतनत्तय, नपुं०, रतन-त्रय--दुढ, धर्म तथा संघ। रतनवर, नपुं॰, श्रेष्ठ रतन।

रतनाकर, पु०, समुद्र। रतनिक, वि॰, (इतने) रतन लम्बा-चौड़ा। रति, स्त्री॰, प्रासनित, प्रेम। रति-कोडा, स्त्री ०, मैथुन-कीडा । रती, मार की कन्यायों में से एक। रत्त, वि०, लाल; नपुं०, रक्त, खून। रत्तक्ख, वि०, लाल, ग्रीख वाला। रत-चन्दन, नपुं०, लाल चंदन। रत्त-फला, स्त्री॰, लाल फलों वाली वता । रत्त-पदुन, नपुं०, लाल कमल। रत्त-मणि, पु०, लाल मणि। रत्त-म्रतिसार, पु॰, रक्त ग्रतिसार। रत्तञ्ज, वि०, दीर्घकालीन । रतन्यकार, पु०, रात का ग्रंधेरा । रत्तवा, स्त्री०, जोंक । रति, स्त्री०, रात्रि। रतिक्खय, पृ०, रात्रि-क्षय। रत्तिविखत्त, वि०, रात्रि में फेंका गया। रति-भाग, पु०, रात्रि का समय। रत्ति-भोजन, नपुं०, रात्रि का मोजन। रत्तपरत, वि०, रात्रि-मोजन से विरत। रथ, पूठ, गाड़ी। रथकार, पू०, रथ बनाने वाला। रथङ्ग, नपुंठ, रथ के ग्रङ्ग। रथ-गुत्ति, स्त्री०, रथ की रक्षा। रय-चक्क, नपुं०, रथ का पहिया। रथ-पञ्जर, पू०, रथ का ढाँचा। रथ-यूग, नपुं०, रथ की बल्ली। रथ-रेणु, पु०, रथ-धूलि। रयाचरिय, पु०, रय हाँकने वाला। रवानीक, नपुं०, युद्ध-रथों का समूह। रथारोह, पु॰, रथ में बैठा योदा।

रय-लट्ट जातक, पुरोहित की पैणी से उसके ग्रपने सिर में चोट लगी (337)1 रियक, पु॰, रथ में बैठकर युद्ध करने वाला। रियका, स्त्री०, देखी रच्छा। रद, पु०, (हाथी-)दांत। रदन, नपुं०, दांत। रन्ध, नपुं०, रन्ध्र, छेद । रन्ध-गवेसी, पु०, छिद्रान्वेषी । रन्धक, पू०, रांधने वाला, रसोइया । रन्धन, नपुं , राँधना, पकाना। रम्धेति, किया, पकाता है, उबालता है, रांधता है। (रम्धेसि, रन्यित, रन्धित्वा)। रमन, (रमण भी), नपुं०, मजा लेना। रमनी, (रमणी मी), स्त्री०, भ्रीरत। रमनीय, (रमणीय मी). वि०, आक-पंक। रमति, क्रिया, ग्रानन्दित होता है। (रसि, रत, रमन्त, रममान, रमित्वा, रमितुं)। रम्भा, स्त्री०, केले का गाछ। रम्म, वि०, रम्य, सुन्दर। रम्मक, चंत्र मास का नाम। रय, पु०, वेग। रव, पू०, म्रावाज। रवन, नपुं ०, चिल्लाना । रवति, किया, शोर करता है, ऊँची श्रावाज निकालता है। (रवि, रवन्त, रवमान, रवित्वा, रवित, रुत)। रवि, पु०, सूयं। रिव-हंस, पु०, पक्षी-विशेष।

रस, पु॰, स्वाद। रसक, पु॰, रसोइया। रसग्ग, ग्रत्यन्त स्वादिष्ट । रसञ्जन, नपुं०, ग्रांख में लगाने का एक प्रकार का ग्रंजन। रस-तण्हा, स्त्री०, रस-तृष्णा। रसना, स्त्री०, स्त्रियों की मेखला। रसवती, स्त्री०, रसोईघर। रसवाहिनी, वेदेह नाम के एक मिक्षु द्वारा संगृहीत पालि कथा-ग्रन्य। रसातल, नपुं०, पाताल लोक। रसाल, पु०, ऊन्न। रसित नपुं०, मेघ-ध्वनि, गर्जन। रस्मि, स्त्री॰, (घोड़े के मुँह की) लगाम, सूर्य की किरण। रस्स, वि०, ह्रस्व, बीना। रस्सत्त, नपुं०, ह्रस्वत्व, दौनापन। रह, नपुं०, एकान्त स्थान। रहद, पु०, तालाव। रहस्स, नपुं०, रहस्य। रहाभाव, पु०, रहस्य के ग्रमाव की स्थिति । रहित, वि०, विना। रहो, भ्रव्यय, रहस्यमय ढंग से। रहो-गत, वि०, एकान्त जगह पर स्यित । रंसि, देखो रस्मि। रंसिमन्तु, पु०, सूर्य; वि०, प्रकाशमान। राग, पु०, रंग, बासक्ति। रागक्लय, पु०, ग्रासक्ति का नाश। रागिग, पु०, रागािन । राग-चरित, वि०, राग-प्रवृत्त। राग-रत्त, वि०, राग से अनुरक्त। रागी, वि०, घनुरागी, कामुक ।

राज, पु०, राजा। राजककुधभण्ड, नपुं०, राजकीय विह्न । राजकथा, स्त्री०, राजाग्रों के बारे में वातचीत। राज-कम्मिक, पु०, सरकारी ग्रकसर। राजकुमार, पु०, राजपुत्र। राजकुमारो, स्त्री०, राजकन्या । राज-कुल, नप्०, राज्य-कुल, महल । राज-गेह, राज-भवन, राज-मन्दिर, नपुं०, राजा का महल। राजङ्गण, नवुं०, राजमहल का ग्रांगन। राज-दण्ड, पु०, राजा द्वारा दिया गया दण्ड । राज-दाय, पु०, राजा द्वारा दी गई भॅट । राज-दूत, पु०, राजा का दूत। राज-देवी, स्त्री०, राजा की रानी। राज-धम्म, पु०, राजा का कर्तथ्य। राजधानी, स्त्री०, राजकीय नगर। राज-धीतुं, राजपुत्ती, स्त्री०, राज-पुत्री। राज-निवेसन, नपुं०, राजभवन। राजन्तेपुर, नपुं०, रनिवास। राज-परिसा, स्त्री०, राज्य-परिषद्। राज-पूत्त, पु०, राजकुमार। राज-पुरिस, पु०, सरकारी नौकर। राज-बलि, पु॰, राज्य-कर, टैक्स। राज-भट, पु०, सैनिक। राज-भय, नवुं०, राजा का भय, सर-कार का उर। राज-भोगा, वि०, राजा के लिए योग्य । राज-महामत्त, पु॰, प्रधान मंत्री। राज-महेसी, स्त्री०, पटरानी।

राज-मुद्दा, स्त्री ०, राजकीय मुद्रा । राजवर, पु॰, श्रेष्ठ रांजा। राज-वल्लभ, वि०, राजा का प्रिय पात्र, प्रेम-माजन। राज-सम्पत्ति, स्त्री०, सरकारी ठाट-बाट, राजकीय ऐक्वयं। राजगह, मगध जनपद की राजधानी, माधुनिक राजगिर। राजञ्ज, पु०, क्षत्रिय-जन। राजति, क्रिया, चमकता है। (राजि, राजित, राजमान)। राजत्त, नर्पु०, राजत्व। राजहंस, पु०, राजकीय हंस। राजाणा, स्त्री०, राजाजा। राजानुभाव, पु०, राजा का प्रताप या ठाट-बाट। राजामच्च, पु०, राजामात्य। राजायतन, पु०, वृक्ष-विशेष । तपस्सु-मन्लिक नाम के दो व्यापारियों ने हेंग ही एक वृक्ष के नीचे मगवान् बुद्ध की मधु-विण्ड से सेवा की थी। राजि, स्त्री०, पंवित। राजित, कृदन्त, चमक वाला। राजिद्धि, स्त्री०, राजकीय मिति। राजिनी, स्त्री०, रानी। राजिसि, पु॰, राजिष । राजुपट्ठान, नपुं०, राजा की सेवा में रहना। राजुय्यान, नपुं०, राजकीय उद्यान । राजुल, पु०, राजल सांप, दोमुहाँ साँग । राजोरोध, पु॰, राजा का रनिवास। राजीवाद जातक, काशी तथा कोसल नरेश अपने अपने राज्यें को सीमा

लौघकर भपने भवगुणों का पता लगाने चले (१५१)। राजीवाद जातक, राजा का भ्रन्याय-पूर्ण शासन फलों की कड़वाहट का कारण (३३४)। राघ जातक, पोट्ठपाद तथा राघ नाम के दो तोतों की कथा (१४५)। राघ जातक, पोट्ठपाद तथा राघ नाम के दो तोतों की कथा (१६८)। राधित, कृदन्त, तैयार किया गया। राम, राजा दशरथ का ज्येष्ठ पुत्र। राम का ही दूसरा नाम राम पण्डित था। उसने अपनी बहन सीता से विवाह किया। रामगाम, गंगा के तट पर बसा हुआ एक कोलिय-ग्राम। इसके बाशिन्दों ने भी बुद्ध के शरीर की पवित्र धातु का एक ग्रंश प्राप्त कर उस पर चैत्य बनवाया था। रामञ्ज, बर्मा देश का पालि नाम। रामणेय्यक, वि०, सुन्दर, ग्राकषंक। राद, पु०, शब्द, चिल्लाहट, भ्रावाज। रासि, पु॰, ढेर, मात्रा। रासि-वड्दक, पु०, राज्य-कर का व्यवस्थापक। राहसेय्यक, वि०, रहस्य या एकान्त में रहने वाला। राहु, एक ग्रसुर-राजा, चांद को ग्रसने वाला राहु। राहु-मुख, नपुं०, राहु का मुँह, दण्ड-विशेष। राहुल थेर, गीतम बुद्ध के एकमात्र पुत्र, जिनका जन्म सिद्धार्थ गौतम के गृह-त्याग करने के दिल ही तुआ था अ राहुल-माता, गौतम बुद्ध की पत्नी तथा राहुल-जननी । उसके दूसरे नाम हैं मद्कच्चाना, यशोधरा, बिम्बा देवी ग्रीर सम्मवतः बिम्बा सुन्दरी रिञ्चित, ऋिया, छोड़ देता है, खाली कर देता है। (रिञ्च, रित्त, रिञ्चित्या, रिञ्च-मान)। रित्त, कृदन्त, रिक्त। रित्त-मुट्ठि, वि०, साली मुट्ठी। रित्त-हत्य, वि०, खाली-हाथ (आदमी)। रिषु, पुठ, शत्रु । रुक्स, पु०, वृक्ष । र क्ख-गहण, नपुं०, वृक्षों का भुण्ड। रुष्ख-देवता, स्त्री०, वृक्ष-देवता। चयख-मूल, नपुं०, वृक्ष की जड़। रवल-मूलिक, वि०, वृक्ष के नीचे रहने वाला। वक्ख-सुसिर, नपुं०, पेड़ का स्रोडर (स्रोखला)। इक्खधम्म जातक, वृक्ष-देवताम्रों की कथा (७४)। रुचि, स्त्री०, पसन्द, पसन्दगी। रुचिर, वि०, सुन्दर, रुचिकर, ग्रनु-क्ल। वच्चति, किया, ग्रच्छा लगता है। (रुच्चि, रुच्चित, रुच्चित्वा)। इच्चन, नपुं०, हचि, ग्रानन्द । वच्चनक, वि०, प्रच्छा लगने वाला। रुजति, किया, ददं होता है, पीड़ा होती (दिज, इजित्वा)।

चजन, नपुं ०, पीड़ा। च्या, स्त्री०, पीड़ा। रजक, वि०, दुखता हुमा। रुक्रित, किया , स्वता है, रकावट पैदा होती है। (रुजिंश, रुख)। रुट्ठ, कृदन्त, रुष्ट । रुण्ण, कृदन्त, रोता हुमा, चिल्लाता हमा। रुत, नपुं०, किसी जानवरका शब्द। वबति, किया, रोता है। (वदि, वदित, वत्, वदन्त, वदमान, चदित्वा)। व्हम्मुल, वि०, ग्रश्रु-मुल। रुद्ध, कृदन्त, भवरुद्ध, रुंका हुआ। रुधिर, नपुं०, रक्त, खून। इन्धति, किया, रोकता है, बाधा डालता है, जेल में डालता है। (रुन्धि, रुन्धित, रुद्ध, रुन्धित्वा) इन्धन, नपुं०, रोक, जेल में डालना। क्पति, किया, परिवर्तित होता है, चिढ़ता है। (रुप्पि, रुप्पमान)। रुप्पन, नपुं०, लगातार परिवर्तन । रुर, पु॰, मृग-विशेष। रुव (मिग) जातक, ग्रयोग्य पुत्र ने माता-पिता की सारी सम्पत्ति नष्ट कर दी भीर ऋणी हो गया (8=5) 1 रह, वि०, (समास में) उगने वाला, वृद्धि को प्राप्त होने वाला। रहक जातक, रहक की पत्नी ने अपने पुरोहित पति को उल्लू बनाया (888) 1

हिंद, नपुं०, रुधिर रक्त, खून। कप, नपुं , चक्षुरेन्द्रिय का विषय, भौतिक पदार्थ, ग्राकार, मूर्ति। क्ष्पक, नपुंं, एक छोटा भाकार-प्रकार, उपमा । रूप-तण्हा, स्त्री०, रूप-तृष्णा। रूप-दस्सन, नपुं०, रूप-दर्शन। रूप-भव, पु०, रूप-लोक । रूप-राग, पु०, रूप-लोक में उत्पन्न होने की इच्छा। रूपवन्तु, वि०, सुन्दर। रूप-सम्पत्ति, स्त्री०, सौन्दर्य । रूप-सिरि, स्त्री०, लावण्य। रूपारम्मण, नपुं०, चक्षुरेन्द्रिय का विषय। रूपावचर, वि०, रूप-लोक से सम्ब-निधत । रूपिय, नपुं०, चाँदी। रूपियमय, वि०, रजतमय। रूपिनी, स्त्रीं०, सुन्दरी। रूपी, वि०, रूप वाला। रूपूपजीविनी, स्त्री०, वेश्या। खळ्ह, कुदन्त, उगा हुमा। रूहति, किया, उगता है, चढ़ता है, (जरुम) ग्रच्छा करता है। (रूहि, रूळ्ह, रूहित्वा)। रूहन, नपुं०, उगना, चढ़ना, वृद्धि, (जरूम का) मरना। रेचन, नपुं॰, बाहर निकलना, पेट साफ होना । रेणु, पु० तथा नपुं०, धूलि, रेणु। रेणुक, पु॰, रेणुक नाम का सुगन्धित द्रव्य। रेवती, स्त्री॰, एक सी बीस नक्षत्रों में से एक।

रोग, पु०, रोग, बीमारी। रोग-निड्ड, रोग-नीळ, नपुं०, रोग-स्थान। रोग-हारी, पु०, वैद्य। रोगातुंर, वि०, रोगी। रोगी, पु॰, बीमार। रोचित, किया, चमकता है। (रोचि, रोचित्वा)। रोचन, नपुं०, चुनाव, पसन्द, चमक। रोचेति, किया, पसन्द करता है। (रोचेसि, रोचित, रोचेत्वा)। रोदति, किया, चिल्लाता है, रोता है। (रोदि रोदित, रोदन्त, रोदमान, .रोदित्वा, रोदितुं)। रोदन, नपं०, रोना। रोध, पु०, रुकावट। रोघन, नपुं०, रोक। रोप, पु०, पौधे लगाने का कार्य। रोपित, कृदन्त, रोपा हुमा। रोपेति, त्रिया, रोपता है। (रोपेसि, रोपेन्त, रोपयमान, रोपेत्वा, रोपिय)। रोम, नपुं०, शरीर के वाल। रोमक, वि०, रोम-निवासी। रोमञ्च, नपुं॰, रोमाञ्च, बालों का उठ खड़े होना । रोमन्थति, किया, जुगाली करता है। (रोमन्यि, रोमन्यित्वा)। रोमन्थन, नपुं०, जुगाली करना। रोहव, पु०, रोरव-नरक। रोस, पु०, कोघ। रोसक, वि०, रोषक, कोधित करने वाला।

रोसना, स्त्री॰, रोष का माव। रोसेति, क्रिया, कोधित करना है। (रोसेसि, रोसित, रोसेत्वा)। रोहति, देखो कहित। रोहन, रूहन, नपुं॰, उठना, उगना। रोहिणी, स्त्री॰, रोहिणी नक्षत्र। रोहित, वि॰, लाल; पु॰, म्ग-विशेष। रोहित-मच्छ, रोहित मछली।

ल

लकार, पु॰, (नाव की) पाल। लकुण्टक, वि०, बीना। लक्ख, नपुं०, निज्ञान, लक्ष्य, लाख (संस्या, सी हजार)। लक्खण, नपुं०, निशान, लक्षण, गुण । लक्खण-पाठक, पु०, ज्योतिषी। लक्खण-सम्पत्ति, स्त्री०, घच्छे तक्षण। लंबल-सम्पना, वि०, ग्रच्छे लक्षणों वाला। लक्खण जातक, लक्खण तथा काळ मृगों की कथा (११)। लिखक, वि०, भाग्यवान्। लिखत, कृदन्त, लिक्षत, चिह्नित। लक्खी, स्त्री०, लक्ष्मी, भाग्य, ऐरवयं । लक्षेति, क्रिया, चिह्न लगाता है। (लक्खेसि, लक्खित, लक्खेरवा) । लगुळ, प्०, डण्डा। लग्ग, वि०, लगा हुपा, जुड़ा हुपी। लग्नकेस, पुरु; जटाएँ, उलभे बाल । लग्गति, किया, लगता है, जुड़ता है, लटकता है। (सम्गि, लग्गित)। लग्गन, नपुं०, लगना,जुड़ना, लटकना। लग्गेति, क्रिया, लगता है, जुड़ता है, लटकता है। (सगोति, समित, सगोत्वा) । लङ्गी, स्त्री०, द्वार-दण्ड। लक्क त, नगुंक, पुंछ।

लङ्क्षक, पु॰, लौधने वाला, बाजीगर। लक्क्षति, क्रिया, लोघता है, क्दता है। (तङ्घि, तङ्घित्वा) । लङ्कन, नपुं >, लीघना, कृदना । लङ्गापेति, क्रिया, लेंघाता है, कृदवाता है। सङ्घी, पु॰, लांघने वाला, कुदने वाला, बाजीगर। लञ्जे ति, किया, कृतता है, छलांग मारता है, उल्लंघन करता है। (लङ्गेसि, लङ्गित, लङ्गोत्वा) । लज्जति, किया, लज्जा करता है। (लज्जि, लज्जित, लज्जन्त, लज्जमान, लज्जित्वा)। लज्जन, नपुं०, लज्जा । लज्जापन, नपुं०, लज्जित करना'। लज्जापेति, किया, लज्जित करता है। (लज्जापेसि, लज्जापित)। लज्जितब्बक, वि०, लज्जा करने योग्य, वह जिसके कारण लिजत होना पड़े। लज्जी, वि०, लज्जा प्रतुमव करने वाला, शर्मीला। लड्छति, (लब्भिस्सति मी), किया, प्राप्त करता है, प्राप्त करेगा। सञ्च, पू०, रिज्वत । लञ्च-सादक, वि०, रिश्वतसीर। लञ्ब-बान, नपुं०, रिश्वत, धूस देना ।

सञ्ख, पु॰, बिह्न, निशान। सञ्छन, नंपुं०, चिह्न, निशान। सञ्छक, प्०, निशान लगाने वाला। सञ्छति, सञ्छेति, क्रिया, निशान लगाता है। (लञ्चि, लञ्चेति, लञ्चित्वा, लञ्छेत्वा)। लिङ्कत, कृदन्त, चिह्नित। लट्किक जातक, बटेरनी ने उसके बच्चों को शेंद डालने वाले हाथी से बदला लिया (३५७)। लट्किका, स्त्री०; बटेरनी। लटिठ, लटिठका, स्त्री०, लाठी। सण्ड, प्०, लेंडी। लिंडका, स्त्री०, लेंडी। लता, स्त्री०, बेल। लता-कम्म, नपुं०, बेल-बूटे का काम । सद्ध, कृदन्त, प्राप्त। लद्धक, वि०, ग्राकपंक, ग्रच्छा लगने वाला। लब्बब, कृदन्त, प्राप्तव्य। लढ-भाव, पु०, प्राप्ति। लहस्साव, वि०, दु:स ते मुक्त । सद्धा-सद्धान, पूर्व ऋ०, प्राप्त करके। लढि, स्त्री ०, लिंघ, दृष्टिकोण, मत । लढिक, वि०, जिसका मत हो, सम्प्रदाय वाला। लडं, प्राप्त करने के लिए। लपति, किया, बोलता है। (लिप, लिपत, लिपत्वा)। लपन, नपुं०, बोलना, बकना, मुँह। लपनज, पु॰, दांत । सपना, स्त्री०, जन्नान की सपलप, ख्शामद।

सबुब, पु०, कटहल । लक्भित, किया, प्राप्त करता है, प्राप्त होता है। (लढ, लब्भभान)। लब्भा, प्रव्यय; सम्भव । लभति, प्राप्त करता है। (लभि, लंब, लभन्त, लभित्वा लढ़ा, लिभतुं, लढ़ं)। सम्ब, वि०, लटकता हुमा। सम्बक, नपुं०, लटकने वाला । सम्बति, किया, लटकता है। (लम्ब, लम्बन्त, सम्बमान, लम्बत्वा)। लय, पू॰, समय का बहुत ही छोटा भाग। ललना, स्त्री०, स्त्री। ललित, वि०, सुन्दर, कोमल, ग्राकषंक; नपुं॰, लीला, खेल। लव, पु०, बुंद । लवङ्ग, नवुं०, लींग। लवण, नपुं०, निमक, नमक । लवन्, नृपुं०, काटना । लसति, किया, चमकता है, खेलता है। (लक्ष, लिसत्वा, लिसत)। लिसका, स्त्री०, शरीर के जोड़ों को तर रखने वाला पदार्थ। लसी, स्त्री०, मस्तिष्क । लसुण, नपुं०, लहसुन्। लह, वि०, हलका, शीघ: नपुं०, ह्रस्व स्वर! लहक, वि०, हलका। लहकं, कि॰ वि॰, शीघ्रता से। सहता, स्त्री॰, हलकापन। लहु-परिवत्त, वि०, शीघ्र बदलने

सहं, सहसो, ऋ० वि०, जल्डी से। लाखा, स्त्री॰, लाख (मुहर लगाने की लाख)। लाखा-रस, पु०, लाख का सार, जो रंगने के काम प्राता है। लाज, पु॰, स्रील। लाखपञ्चमक, वि०, ग्रन्य चार वस्तुपों सहित पांचवी चीज खील। लाप, पु०, बटेर। लापु, लाबु, स्त्री०, लौकी। लाबु-कटाह, पु०, तुम्बा। लाभ. पु॰, फायदा, प्राप्ति। लाभ-कम्यता, स्त्री०, लाम की इच्छा। लाभग्ग , पू॰, श्रेष्ठतम लाम । लाभ-मच्छरिय, नपुं०, लाम मात्सयं। लाभ-सक्तार, पु०, लाम ग्रीर सत्कार। लाभगरह जातक, शिष्य ने दुनिया में 'लाम' कमाने का रास्ता बताया (2=0) 1 लाभा, प्रव्यय, 'यह लाभ की बात है,' 'यह फायदे की बात है.' इन प्रयों में प्रयुक्त होता है। लाभी, पु॰, जिसे बहुत लाम होता है। लामक, वि०; निकृष्ट । लायक, पु॰, काटने वाला। लायति, किया, काटता है। (लायि, लायित, लायित्वा)। सालन, नपुं०, लाड । लालपति, किया, ग्रधिक बोलता है। (लालपि, लालपित)। सालसा, स्त्री॰, बलबती इच्छा। लालेति, किया, लाड करता है। (लालेसि, लालित, सालेत्वा)।

साळ, (साट भी), विजय राजकुमार का जम्म-प्रदेश, वर्तमान ग्जरात। लास, पु॰, नृत्य । लासन, नपुं ०, नृत्य, लास (-विलास) । लिकुच, पु०, कटहल। लिक्खा, स्त्री॰, जुं का प्रण्डा, लीख, माप-विशेष। तिखति, किया, तिखता है। (लिखि, , निबित, सिखन्त, तिखित्वा, तिखितुं)। तिखन, नप्ं॰, लेखन्, तिखावट। लिखापेति, त्रिया, लिखवाता है। (लिखापेसि, लिखापेत्वा)। लिखितक, पु॰, जिसे विद्रोही घोषित कर दिया गया। लिङ्ग, नपुं०, चिह्न, निशान। लिङ्ग-विपल्लास, पु०, लिङ्ग-परिवर्तन। लिङ्गिक, वि०, (व्याकरण) लिङ्ग सम्बन्धी प्रथवा स्त्री-पृष्प, लिङ्ग सम्बन्धी। लिच्छवि, बुद्ध की समकालीन, वैशाली जनपद की लिच्छवि जाति। लित्त, कृदन्त, लेप किया हुमा। लित जातक, छली जुयारी मुंह में गोटी छिपा लेता था (११)। लिपि, स्त्री०, लेखाक्षर। लिपि-कार, पू॰, लेखक। लिम्पति, किया, लेप करता है। (लिम्पि, लित्त, लिम्पित्वा)। लिम्पन, नपुं , लेप करना। लिम्पेति, किया, लेप करता है। लिम्पित्, (लिम्पेसि, तिम्पेन्द लिम्पेत्वा)। लिम्यापेति, किया, लिपवाता है।

सिहति, किया, चाटता है। (तिहि, निहित्या, निहमान)। सीन, कृदन्त, संकोची, शर्मीला। सीनता, स्त्री०, संकोच, लज्जा। सीनस, नपुं०, संकोच, लज्जा। भीवति, किया, संकोच करता है। (सीयि, सीन, सीयमान, सीयत्वा)। लीयन, नपं 0, संकुचित होना, बिसरना। लीला, स्त्री०, हाव-माव। नुज्ज़ित, क्रिया, ट्टता हुमा है, तोड़ा जाता है। (लुज्जि, लुग्ग, लुज्जित्या) । सुज्जन, नपं ०, गिरना। चुञ्चति, किया, लंचन करता है, बाल नोचता है। (लुञ्चि, लुञ्चित, लुञ्चित्वा) । सुत, कृदन्तः, काटा । नुत्त, कृदन्त, टूटा हुमा, कटा हुमा। तुइ, वि०, निदंयी। लुहक, पु०, शिकारी। सुड, कृदन्त, लोमी। नुनाति, किया, काटता है। लुक्भति, किया, लोम करता है। (लुस्भि, लुद्ध)। सुबभन, नपुं०, लोम, लोम करना । लुम्पति, किया, लूटता है, टूटता (तुम्पि, तुम्पित, तुम्पित्वा)। सुम्पन, नपुं ०, सूटना । लुम्बिनी, कपिलवस्तु तथा देवदह के मध्य स्थित लुम्बिनी नाम का उद्यान, जहाँ सिद्धार्थं गीतम (बुद्ध) का बन्म हुमा था।

चुळ्ति, कृदन्त, हिलाया गया। लुख, वि०, रूखा। लूख-चीवर, वि०, मोटा - भोटा चीवर। नुसता, स्त्री ०, रक्षता, मोटा-मोटा-लुखप्पसन्न, वि०, मोटा-फोटा पहनने वाले के प्रति श्रद्धावान। लुण, लून, कृदन्त, काटा गया। लेखक, पु०, लिपि-कारक । लेखिका, स्त्री॰, लिखने वाली। लेखन, नपुं ०, लिखना। लेखनी, स्त्री०, कलम। लेखनी-मुख, नवुं०, निव। लेखा, स्त्री०, लेख, पत्र, (शिला-) लेख, रेखा, लकीर, लेखन-कला। लेड्ड, पु॰, मिट्टी का ढेला। लेड्ड्-पांत, पु०, ढेला फेंक सकने की दूरी-मर। लेण, नपुं०, संरक्षण, गुफा। लेप, पु॰, लेप। लेपन, नपुं०, लेप करना। लेपेति, किया, लेप करता है। (नेपेसि, लेपित, लित्त, लेपेन्त, लेपेत्वा)। लेय्य, वि०, जो चाटा जा सके। लेस, पू०, बहाना, लेश (-मात्र)। लोक, पु०, दुनिया, लोग। लोकग्ग, पु०, लोकाग्र, यानी बुद्ध। लोकनायक, पु॰, लोक-स्वामी, यानी बुद्ध'। लोकन्त, पु०, लोक का अन्त । सोकन्तगू, पु०, लोक के प्रन्त को पहुँचा हुमा।

लोकन्तर, नपुं०, दूसरा लोक, प्रन्य लोक। लोकन्तरिक, वि०, दो लोकों के बीच स्थित । लोक-निरोध, पु०, लोक-विनाश। लोक-पाल, पु०, लोक-संरक्षक। लोक-वज्ज, नपुं०, दुनिया की दुष्टि में दोष। लोक-विवरण, नपुं०, लोक-उद्घाटन । लोक-बोहार, पु०, सामान्य व्यवहार। लोकाधिपच्च, नपुं०, लोकाधिपत्य, लोक पर ग्रधिकार। लोकानुकम्पा, स्त्री०, लोगों पर दया। लोकायतिक, वि०, लोकायत-वृध्टि वाला, मौतिकवादी। लोकिक, लोकिय, वि०, लोकिक, दुनियावी। नोकुत्तर, वि०, नोकोत्तर। लोचक, वि०, (बालों को) नोचने वाला, जड़ से उलाइने वाला । लोचन, नपुं०, ग्रांख। लोण, नपुं०, निमक; वि०, नमकीन। लोणकार, पु०, नमक बनाने वाला। लोण-ध्यन, नपुं०, नमक से छौंकना । लोण-सक्खरा, स्त्री॰, नमक के छोटे-छोटे ट्कड़े। लोगिक, वि०, क्षार। सोप, पु०, लुप्त होना, काटना । लोभ, पू॰, लालच। लोभनीय, वि०, लोम करने योग्य। लोभ-मूलक, वि०, जिसके मूल में लोम हो। लोम, नपं०, बदन का बाल। सोम-कप, पू॰, लोम-छिद्र।

सोम-हट्ठ, वि •, त्रिसे नोमहुषं (बालों का सीधा खड़ा होना) हुया हो। लोम हंस, पु॰ तथा नपुं॰, लोम हवं। भोमस, वि०, बालों वाला। मोमसकस्सप जातक, बदन पर बढ़े-बड़े वाल होने के कारण तगस्वी का नाम लोमसकस्सप पड़ा (४३३)। लोमस पाणक, पु॰, भिनगा। लोमहंस जातक, ग्राजीवक ने सभी प्रकार के काय-क्लेश सहन किये 1 (83) लोल जातक, कबुतर तथा लोभी कौबे की कया (२७४)। तोत, वि॰, लोगी, चंबत । लोलता, स्त्री०, तत्मुकता, लोभ, चंत्रलता। सोत्प, वि०, लोमी, लानची। लोतुप्प, नपुं॰, लोम, लालच। तोतेति, क्रिया, हिलाता है। लोसक बातक, नेवासी मिश्रु ग्रायन्तुक मिक्षु के प्रति ईपीलु हो गया (28) 1 लोह, नपं०, तांवा, लोहा ।। लोह-कटाह, पु०, लोहे का कड़ाहा। लोहकार, पु॰, लोहार। लोह-कुम्भो, त्त्री०, गागर। लोह-पिट्ठ, पू॰ तथा नपुं॰, सारस, बगुला। लोह-पिण्ड, पु॰, लोहे का गोला। लोह-जास, नपुं०, लोहे की जाली। सोह-यातक, पु॰, लोहे की पाली। शोह-पासाद, (नाम) श्रीलंका के धनुराधपुर का प्रसिद्ध विहार। सोह-भण्ड, नवुं०, लोहे का सामान ।

सोह-मासक, पु॰, तांचे का सिक्का।
सोह-सताका, स्त्री॰, सोहे की सलाई।
सोह-कुम्भि जातक, पुरोहित के
शिष्य ने यज्ञ में बिल दिये जाने
बाले पशुम्रों की जान बचाई
(३१४)।
सोहित, नपु॰, रक्त; वि॰, रक्त वणं।
सोहित, वि॰, लाल मौसों वाला।

लोहित-चन्दन, नपुं०, रक्त-वर्ण चन्दन।
लोहित-पक्खन्दिका, स्त्रो०, रक्ताति-सार।
लोहित-भक्ख, वि०, रक्त-मक्षक।
लोहित-भक्ख, वि०, रक्त-मक्षक।
लोहितुप्पादक, पु०, बुद्ध के घरीर का रक्त बहाने वाला।
लोहितक, नपुं०, लाल वर्ण मणि वि०, लाल वर्ण।

व

ब, इव (जैसा) या एव (ही) का संक्षिप्त रूप। वक, पु॰, (वृक्) भेड़िया। वक जातक, भेड़िये ने वकरे को देखा। उसका भूठ-मूठ का वत उसी समय ख़ण्डित हो गया (३००)। बकुल, पु०, वृक्ष-विशेष। वक्क, नपुं०, गुर्दा। वस्कल, नपुं०, वत्रत-नीर, पेड़ की छात का बना वस्त्र। वि०, वत्कल-चीर पहनने वक्कली, वाला। वक्लति, क्रिया, कहेगा। बाग, पु०, समूह, पुस्तक का परिच्छेद; वि०, भिन्न, पृथक्-पृथक् । वाग-बन्धन, नपुं०, वर्ग में संगठित करना। बिग्गय, वि०, (समास में) वर्ग से सम्बन्धित । बागु, वि०, प्रिय, मधुर। बागु-बद, वि०, प्रियं-वद, मधुर माणी। बागुसि, पु॰ तथा स्त्री॰, विमगादइ।

वडू, वि०, टेढ़ा, बेईमान; नपुं०, (मछली पकड़ने का) काँटा। बङ्ग-घस्त, वि०, जो कांटा निगल गयी हो (मछली)। बङ्कता, स्त्री०, टेढ़ापन । बङ्ग, पुर, बङ्ग-प्रदेश, बंगाल। वच, पु॰ तथा नपुं॰, कहावत। वचन, नपुं०, शब्द, वाणी, व्याख्या। वचन-कर, वि०, ग्राजाकारी। वचनक्लम, वि०, कहने के प्रनुसार चलने वाला। वचनत्य, पु॰, शब्द का ग्रथं। वचनीय, वि०, कहने-सुनने योग्य। वचन-पथ, प्०, वचन-मार्ग। वचा, स्त्री ०, वच नाम की श्रोपधि। वची, स्त्री॰, माषण, वाणी। वची-कम्म, नपुं०, वाणी कमं । वची-गुत्त, वि ०; वाणी का संयत। वची-दुच्चरित, नपुं०, वाणी का ग्रसंयम । वची-परम, वि०, बोलने में बहादुर, वाणी का शुर।

वची-मेव, पु॰, मुंह से निकले शब्द । वची-विञ्जज्ञि, स्त्री०, वाणी द्वारा सूचना। वची-सङ्घार, पु०, वाणी का संस्कार (चेतसिक)। वची-समाचार, पु०, शुभ वचन बोलना। वची-सुचरित, नपुं०, वाणी का संयम। वच्च, नपुं०, मल, गृह। बच्च-कुटि, स्त्री०, पाखाना । वच्च-कूप, पु०, पासाना करने का कुएँ जैसा गड्ढा । वन्च-मग्ग, पु॰, गुदा । वच्च-सोधक, पु०, मंगी। वच्छ, पु०, वत्स, बछड़ा । वच्छक, पु॰, छोटा बछड़ा। वच्छगिद्धिनी, स्त्री०, वछड़े के लिए लालायित । वच्छतर, पु०, बड़ा बछड़ा। वच्छनख जातक, वच्छनख तपस्वी ने के गृहस्थ-जीवन दोप बताये (२३४) । वच्छर, नपुं०, वत्सर, वर्ष । बच्छल, वि०, वत्सल, स्नेह-पात्र । वज. पु॰, वज, पशुभों का घड्डा। बजति, किया, जाता है। (वजि, वजमान)। वजिर, नपुं०, वज्र। वजिर-पाणी, पु०, शक । वजिर-हत्य, पु०, इन्द्र। वज्ज, नपुं०, वद्य (दोष), बाद्य (बाजा); वि०, वद्य (मकरणीय), वद्य (कयनीय)। वज्जनीय, वि०, वजंनीय, न करने योग्य। वज्जन, नपुं०, वजंन, नहीं करना।

वज्जिय, पू॰ कि॰, छोड़कर, बजित करके। वज्जी, बुद्ध के समय के सोलह जनपदों में से एक बज्जी-जनपद । वज्जेति, किया, मना करता है। (वज्जेति, वज्जेतब्ब, वज्जेत्वा, यज्जेत्)। वज्भ, वि०, वध्य, मार डालने योग्य। यज्भ पत्त, वि०, वध्य, प्राण-दण्ड दिया गया । वज्भ-भेरि, स्त्री॰, प्राण-दण्ड की डोण्डी या मुनादी। बञ्चक, पु॰, ठग। बञ्चन, नपुं०, ठगी। वञ्चना, स्त्री०, ठगी। बञ्चनिक, वि०, ठग, ठगने वाला। बञ्चेति, ऋया, ठगता है। (वञ्चेसि, वञ्चित, वञ्चेन्त, वञ्चेत्वा)। वञ्जु, पु०, ग्रशोक वृक्ष । वञ्झ, वि०, वंध्या, बांम । बञ्भा, स्त्री०, बांभ स्त्री। बट, पु०, बट-वृक्ष, बड़ का पेड़। बटंसक, पु॰, सिर के लिए पुष्प-माला। बट्म, नपुं०, रास्ता, सड़क । बट्ट, वि०. गोल; नपुं०, चक्कर, घेरा, का चक्कर, जन्म-मरण व्यवस्या । वट्टक जातक, बटेर की सत्य-किया से माग बुभी (३४)। षट्ट जातक, बटेर ने ग्रपने-ग्रापको भूला रस मुन्ति पाई (११८)। बट्टक जातक, बटेर ने कीवे को अपने मोटापे का रहस्य बताया (३६४)। बहुक जातक, देखो सम्नोदमान जातक। बद्रका, स्त्री०, बटेर। बहुति क्रिया, घुमाना, उचित होना, वाजिब होना। बद्दन, नपुं॰, घूमना । बट्टि, बट्टिका, स्त्री०, बत्ती, किनारा। बट्टून, वि॰, वर्तुल, गोलाकार। बट्टोत, क्रिया, घूमता है, घुमाता है। (बट्टे सि, बट्टित, बट्टे त्वा) । बट्ठ, कृदन्त, बरसाहग्रा। बठर, वि०, स्थूल, मोटा । बढ, बढक, वि०, बढ़ता हुमा। बद्धन, नपुं०, वर्धन। बद्धनक, वि॰, बद्धित होता हुमा, बढ़ता हमा । बड्दकी, पु॰, बढ़ई। बड्ढकी, सूकर जातक, सूग्ररों ने शेर को मार डाला (२८३)। षड्ढति, किया, बढ़ता है। (वड्ढि, वड्ढित, वड्ढन्त, वड्ढ-मान, वडिदत्वा)। वडि्ढ, स्त्री॰, वृद्धि, सूद। बड्ढेति, क्रिया, बढ़ाता है। वड्डित, वड्देन्त, (बड्डेसि, वड्ढेत्वा)। वण, नपुं०, वण, जरूम। वण-बोळक, नपुं०, जरूम पर बौधने की पट्टी। वण-पटिकम्म, नपुं०, जरूम चिकित्सा । वण-बन्बन, नपुं०, जहम के लिए पट्टी। वणिज्जा, स्त्री०, वाणिज्य, व्योपार । विनत, कृदन्त, वण-युक्त, जरूमी। विजयम, पु०, व्योपार का देश।

विजिब्दक, पू०, दरिद्र, याचक। वण्ट, वण्टक, नपुं०, डंठल । विष्टक, वि०, इंठल वाला। वण्ण, पुर, वर्ण, रंग, चमड़ी का रंग । वण्णक, नपुं०, रंग (कपड़े रँगने का)। वण्ण-कसिंण, नपुं०, चित्त की एका-प्रता का ग्रम्यास करने के लिए रंगीन चक्कर। श्रणव, वि०, वर्ण-दान करने वाला, सीन्दयं प्रदान करने वाला। बण्ण-घातु, स्त्री०, रंग। वण्ण-पोक्खरता, स्त्री०, वणं का निसार। वण्णवन्तु, वि०, वर्णवान । वण्णवादी, पु॰, म्रात्म-प्रशंसक। वण्ण-संपन्न, वि०, वर्ण-युक्त, सुन्दर। वण्ण-दासी, स्त्री०, वेश्या, नगर-वधु। वण्णना, स्त्री०, व्याख्या। वण्णनीय, वि०, प्रशंसनीय। वण्णारोह जातक, गीदड़ ने शेर ग्रीर चीते में मनमुटाव पैदा करने की कोशिश की (३६१)। विश्वत, कृदन्त, व्याख्यात, प्रशंसित। वण्णी; वि०, (समास में) वणं का, शक्ल का । वण्णु, स्त्री०, बाल्, रेत । वण्ण-पथ, पु०, बालू की जमीन। वण्णुपय जातक, सार्थवाह के अप्रमाद से सभी के प्राण बचे (२)। वण्णेति, क्रिया, वणंन करता है। (वण्णेसि, वण्णित, वण्णेन्त, वण्णेतब्ब, वण्णेत्वा)। वत, ६ व्यय, निश्चय से, नपुं , इत । बत-पद, नपुं०, व्रत-पद।

वतवन्तु, वि०, व्रती । वत-समादान, नपुं०, व्रत ग्रहण करना। वति (वतिका भी), स्त्री०, वाड़, चारदीवारी। वितक, वि०, (समास में) ग्रम्याशी। वत्त, नपुं०, कर्तव्य, सेवा-कार्य। वत्त-पटिवत्त, नपुं०, समी कतंब्य। वत्त-सम्पन्न, वि०, कतंव्य का पालन करने वाला। वत्तक, (वत्तेतु मी), पु॰, वरतने वाला । वत्तति, किया, घटित होता है। (वति, वतित्वा, वत्तन्त, वत्तमान, वत्तितुं, वत्तित्व्व)। वत्तन, नपुं०, वर्तन, ग्राचरण। वत्तना, स्त्री०, बतंना, व्यवहार, ग्राच-रण। वत्तनी, स्त्री०, सड़क, रास्ता। वत्तद्व, कृदन्त, कहने योग्य। वतमान, वि०, विद्यमान; पु०, वतमान काल। वत्तमान्क, वि०, विद्यमान । वत्तमाना, स्त्री०, वर्तमान काल। वितका, स्त्री०, वत्ती। वत्तितद्व. कृदन्त. जारी रखने योग्य। वती, दि॰, (समास में) ग्रम्यासी। वत्, पु॰, बोलंने वाला। वतुं, कहनं को। वत्तेति, किया, जारी रखता है। (वहोसि, वत्तित, वहोन्त, वहोत्वा, वहोतदव वहोतुं)। वत्य, नवं ०, वस्त्र । बत्य-मूरह, नपुं०, गुह्य-स्थान ।

वत्यन्तर, नपुं०, वस्त्र का नमूना। वत्य-यूग, नवं०, कपड़ों का जोड़ा। वत्य, स्त्री ०, वस्ति, मूत्राशय। वत्थ-कम्म, नपुं०, वस्ति-क्रिया (पेंट की सफाई। वत्यु, नपं०, वस्तु, स्थान, भूमि । वत्युक, वि॰, (समास में) स्थानीय। वत्यु-कत, वि०, ग्राधार-कृत। बत्यु-गाया, स्त्री०, भूमिका के पद। वत्थु-देवता, स्त्री •, स्यानीय देवता । वत्यु-विज्जा, स्त्री०, गृहनिर्माण शिल्प। वत्य-विसद-किरिया, स्त्री०, महत्त्वपूर्ण माग की शृद्धि। बत्वा, पूर्वं किया, कहकर। वदञ्जू, वि०, उदार। वदञ्जूता, स्त्री०, उदारता। वदति, क्रिया, बोलता है। (वंदि, वृत्त, बदन्त, वदमान, वत्तस्त्र, वत्वा, वदित्वा)। वदन, नपुं०, चेहरा, वाणी। वदानिय, वि०, त्यागी, दान-वीर, उदार। वदापन, नपुं०, बुलवाना। वदापेति, किया, बुलवाता है, कहल-वाता है ! बदेति, किया, कहता है। वहतिका, स्त्री०, घनं बादल। बद्धापचायत, नपुं०, वड़ों का सम्मान । वध, प्०, दण्ड, प्राण-दण्ड। वधक, पु०, जल्ला र। वयुका, स्त्री०, तक्ग पत्नी, पुत्र-वधु । वध्, स्त्री॰, ग्रोरत, पत्नी। वधेति, किया, जान सं मार डानता है, चिढ़ाता है, केब्ट पहुंचाता है।

(वधेसि, वधेन्त, वधित्वा) । बन, नपुं०, जंगल। वन-कम्मिक, पु॰, जंगल से लकड़ी लाने वाला। बन-गहन, नपुं०, घना जंगल। वन-गुम्ब, पु०, धने पेड़। धन-चर, वि०, वनवासी। बन-चरक, वि०, वन में रहने वाला। वन-बारी, वि॰ वन में विचरने वाला। वनथ, पु०, तृष्णा। वन-दुःग, नपुं ०, कान्तार। दन-देयता, स्त्री०, वन का देवता। बनप्पति, बिना फूलों के फल देने वाला व्स । बनप्पयं, नपुं०, जंगल में दूर की जगह। वनवास, दक्षिण में सम्भवतः उत्तर-कन्नड़ (जिला)। तीसरी संगीति के बाद-रिक्लत स्थविर को वहीं धर्म-प्रचाराथं भेजा गया था। वनवासी, वि०, जंगल में रहने वाला। वन-सण्ड, पु०, वन-खण्ड। वनिक, वि०, (समास में) वन-सम्बन्धी। वनिता, स्त्री०, नारी। वनिन्दक, पु०, मिलारी। बन्त, कृदन्त, वमन किया गया, परि-त्यवत । वन्त-कसाव, वि०, दोय-विरहित। बन्त-मल, वि०, निर्मल। बन्दक, वि०, बन्दना करने वाला। बन्दति, किया, वन्दना करता है, नमस्कार करता है। (वन्दि, वन्दित, वन्दन्त, वन्दमान, वन्दितस्व, वन्दित्वा, वन्दिय)।

बन्दन, नवुं०, नमस्कार। बन्दना, स्त्री०, नमस्कार। बन्दापन, नपुं०, वंदना कराना। बन्दापेति, क्रिया, वंदना कराता है। (बन्दापेसि, बन्दापित, बन्दापेत्वां) । वपति, क्रिया, बोता है, मुण्डन करता (वपि, वपित, वृत्त, वपित्वा)। षपन, नपुं०, बोना। षपु, नपुं०, शरीर। षप्प, पु०, बोना, मांस-विशेष। वप्प-काल, पु०, बीज बोने का समय। बप्प-मङ्गल, नपुं०, हल चलाने का उत्सव। बप्प थेर, पंचवर्गीय स्थविरों में से वमति, किया, वमन करता है। (विम, वन्त, विमत, विमत्वा)। बमयु, पु॰, वमन, विमत पदार्थ। बम्भन, पु०, घृणा। बम्भी, पु०, घृणा करने वाला। बम्भेति, किया, घृणा करता है। वम्भिन्त, वम्भित, (बम्भेसि, वम्मेत्वा)। बम्म, नवुं०, कवच। बम्मी, पु०, कवचधारी। विम्मक, पु०, दीमक की बांबी। यम्मित, कृदन्त, कवच धारण किया। वम्मेति, किया, कवच धारण करता है। (वम्मेसि, वम्मित्वा)। रय, पु० तथा नपुं०, प्रायु, हानि, खर्च ।

वय-करण, नपुं०, खर्च । वय-कल्याण, नवं ०, तरुणाई का ग्राक-वंण । वयट्ठ, वि०, श्रीढ़ होना । वयप्पत्त, वि०, ग्रायु-प्राप्त, विवाह करने के योग्य। वयस्स, पु०, मित्र। वयोवुद्ध, वि०, वयोवृद्ध । वयोहर, वि०, ग्रायुका हरण। वय्ह, नपुं०, बाहन, गाड़ी वर, वि०, श्रेष्ठ; पु०, वरदान। वरञ्जना, स्त्री०, वरांगना, विदुषी। वरद, वि०, वर देने वाला। वरदान, नपुं०, वर का देना। वर-पञ्ज, वि०, थेष्ठ-प्रज्ञ। वर-लक्खण, नपुं०, श्रेष्ठ चिह्न। वरक, पु०, धान्य-विशेष । वरण, पू०, वृक्ष-विशेष । वरण जातक, ग्रालसी लड्का जलाने के लिये गीली लकड़ी ले ग्राया, . जिसके कारण ग्राग न जल सकी (98)1 बरत्ता, स्त्री०, चमड़े की पट्टी। वराक, विं, वेचारी या वेचारा, दया करने लायक। वरारोहा, स्त्री०, सुन्दर स्त्री। वराह, पु०, सुग्रर। वराही, स्त्री०, सुम्ररी। बलञ्ज, नपुं ०, मार्ग, उपयोग, मल-त्याग। वलञ्जनक, वि०, उपयोग में लाने योग्य । बलञ्जियमान, वि०, उपयोगी। वलञ्जेति, किया, मार्ग जलता है.

उपयोग में लाता है, खर्च करता है। (बलञ्जेसि, बलञ्जित, बलञ्जेन्त, वलञ्जेत्वा, वलञ्जेतन्व)। बलय. नपुं०, कंगन। बलयाकार, वि०, गोलाकार। वलाहक, पु॰, बादल। वलाहस्स जातक, वलाहक ग्रश्व ने दो सी पचास व्यापारियों की रक्षा की (724) 1 बिल, स्त्री०, भुरी। विलक, वि०, जिसके बदन पर भूरियां पड़ी हों। बलित, कृदंन्त, भुरी पड़ा हुआ। वित-त्तच, वि०, भूरी पड़ी चमड़ी। वितर, वि०, ऐंची ग्रांख वाला। वली, वि०, भूरियों वाला। वलीमुख, पु०, बन्दर, जिसके चेहरे पर भूरियां पड़ी हों। वल्लकी, स्त्री०, सारङ्गी, बीणा। बल्लभ, वि०, प्रिय। वल्लभत्त, नपुं०, प्रिय होना । बल्तरी, स्त्री०, गुच्छा। बल्लि-हारक, पु०, लताओं का संग्रा-हक। बल्लिभ, पु०, कदू । बल्ली, स्त्री०, लता। वल्लूर, नपुं०, सूखी मछली। ववत्थपेति, ऋिया, व्यवस्था करता है, निश्चित करता है, तै करता है। (ववत्यपेसि, ववत्यापित, ववत्य-पेत्वा)। वबत्योपन, नपुं०, स्धिर निश्चित करना। ववत्येति, क्रिया, विश्लेपण करता है।

(ववत्थेसि, ववत्थित, ववत्थेत्वा)। वस, पु०, प्रधिकार, प्रमाव। वसग, (वसङ्गत मी), वि०, जो किसी के ग्रथिकार में हो। वसवत्तक, (वसवती भी), वि०, शक्ति-शाली, प्रमावशाली। वसवत्तन, नपुं , वशवर्ती होना । वसानुग, (वसानुवत्ती भी), वि०, ग्राज्ञा-कारी। वसति, किया, वास करता है। (बांस बुत्य, बुसित, बसन्त, वसमान, विमाना, विसत्व) ।. वसन, नपुं०, वस्त्र, रहना, रहने का स्यान। वसनक, वि०, रहते हुए। वसन्द्ठान, नपुं०, वास-स्थान। वसन्त, पु०, वसन्त-ऋतु। वसल, पु॰, वृपल, ग्रन्थज। वसवत्ती, पु॰, वशवर्ती मार। वसा, स्त्री०, चर्बी। वसापेति, ऋिया, बसाता है। (वसापेसि, वसापित, वसापेत्वा)। वसिता, स्त्री॰, वश में होना, दक्षता। वसितुं, रहने के लिए। वसिष्पत्त, वि०, जिसने वश में कर लिया। वसी, वि०, वश वाला, शक्तिशाली। वसीकत, वि०, वशीकृत। बसीभाव, पु॰, वश में होना। बसीभूत, वि०, वश में हुमा। वसु, नपुं०, धन । बसुधा, वसुन्धरा, वसुमति, स्त्री०, पृथ्वी। बहस, नपुं नथा पुर, वर्ष, साल, वर्षा । बस्त-काल, पु॰, वर्षाकाल।

वस्सग्ग, नयुं०, भिक्षुप्रों का ज्येष्ठपन। वस्सवर, पु०, नपुंसक। वस्सति, किया, बरसता है, ग्रावाज निकालता है। (बहिस, बहिसत, बुत्य, वस्सित्वा)। बस्सन, नपुं०, बरसना, जानवर की ग्रावाज। वस्साटिका, भिक्षुम्रों का वर्षा-कालीन ग्रतिरिक्त वस्त्र । वस्सान, पुञ, वर्षा ऋतु । वंस्सापनक, वि०, बरसाने वाला। वस्सापेति, क्रिया, बरसाता है। (वस्सापेसि, वस्सापित, वस्सापेत्वा)। वस्सिक, वि०, वर्षा ऋतु सम्बन्धी, वर्षं से सम्बन्धित। वास्सिका, स्त्री०, चमेली। वस्तित, कृदन्त, मीगा हुमा। वंहति, किया, धारण करता है, सहन करता है, बहता है। (बहि, बहित, बहन्त, बहित्वा, बहि-तब्ब)। वहन, नपुं०, ढोना, ले जाना, बहना। वहनक, वि०, लाता हुग्रा। वहितु, पु॰, धारण करने वाला, ले जाने वाला, सहन करने वाला। बळवा, स्त्री॰, घोड़ी। वळवा-मुख, नपुं , समुद्र के भीतर की ग्राग। बंस, पु॰, जाति, नस्ल, वंश-परम्परा, बांस, बांस की मुरली; (नाम) कोसल जनपद के दक्षिण का प्रदेश। किनारे स्थित यम्ना नदी के कोसम्बी इसकी राजधानी थी।

वंस-कळीर, पु०, बांस की कोंपल। वंसज, वि०, वंश-विशेष में उत्पन्न । वंस-वण्ण, पु०, वैड्यं, बहमूल्य नीला रतन । वंसागत, वि०, वंश-परम्परा से प्राप्त । वंसानुपालक, वि०, वंश-परम्परा का रक्षकः। वंसिक, वि०, वंश सम्बन्धी। वा, ग्रव्यय, या, ग्रथवा। वाक, नपुं ०, पेड़ की छाल। वाक-चीर, नपुं०, वल्कल-चीर। वाकमय, वि०, वल्कल-छाल निर्मित । वाकरा, (वागुरा भी), स्त्री०, हिरण पकड़ने का जाल। बाक-करण, नपुं०, बात-बीत। वाक्य, नवुं०, शब्दों का सार्थंक समूह, फिक़रा। वागुरिक, पु०, जाल का उथयोग करने वाला। वाचक, पु॰, शिक्षक ग्रथवा पाठक। वाचनक, नपुं ०, पाठ। वाचना-मग्ग, पु०, पाठ करने की पद्धति । वाचिसक, वि०, वाणी से सम्बन्धित। वाचा, स्त्री०, शब्द, वाणी। वाचानुरक्ली, वि०, वाणी का संयमी। वाचाल, वि०, व्यथं बातचीत करने नाला, वकवासी। वाचुगगत, वि०, कण्ठस्थ। बाचेति, क्रिया, पढ़ता है, पढ़ाता है, पाठ करता है। (वाचेसि, वाचित, वाचेन्त, वाचे-तव्ब, वाचेत्वा)। बाचेतु, पु०, पढ़ने बाला या पढ़ाने

वाला। वाज, पु॰, तीर का पंस, पेय-पदायं विशेष.। वाजपेय्य, नवुं०, यज्ञ-विशेष। वाजी, पु०, घोड़ा। बाट, (बाटक मी), प्०, थेरा। वाणित्र, (वाणिजक भी). 90, व्यापारी। वाणिजज, नप्ं, व्यापार। वाणी, स्त्री०, शब्द। वात. पु॰, हवा। वात-घातक, पु०, वृक्ष-विशेष। वात-जव, वि०, वायु-वेग। वातपान, नपुं०, खिड्की, भरोखा। वात-मण्डलिका, स्त्री०, भंभावात । वात-रोग, पू॰, वातज रोग। वाताबाध, पु॰, वायु के कारण उत्पन्न बीभारी। वात-बुट्ठि, स्त्री०, हवा तथा वर्षा। वात-वेग, पु॰, वायु का जोर। वातग्ग-सिन्धव जातक, गधी न प्रपने प्रेम-पात्र घोड़े को लितयाया ग्रीर बाद में उसके वियोग से मर गई (२६६)। वातिमग जातक, वातिमग रस-तृष्णा के कारण पकड़ निया गया (१४)। वातातप, पू०, हवा तथा ध्पा बाताभिहत, वि०, वायु से हिलाया हुआ, वायु-ताड़ित। बातायन, नपुं०, भरोखा। वाताहत, वि०, वायु द्वारा लाया गया। बाति, किया, बहता है, चलता है। वातिक, वि०, वायु से सम्बन्धित। वातेरित, वि०, वाय्-सञ्चालित।

बाब, पु०, सिद्धान्त । बाद-काम, वि०, वाद-विवाद का इच्छक, शास्त्रायं-कामी। वादिष्वत, वि०, वाद-विवाद उखड़ा हुमा। वाद-पय, पु॰, वाद-विवाद का कारण, वाद-विवाद का ग्रापार। वादक, पु०, किसी वाद्य-यन्त्र को बजाने वाला। बाबित्त, नपुं०, बजाना । वादी, पु॰, मत-विशेष की स्थापना करने वाला। बादेति, ऋिया, वाद्य-यन्त्र को वजाता ते। वान, नपुं०, तृष्णा, चारपाई का ब्नना । बानरं, पु०, बन्दर। वानर जातक, वन्दर ने मगरमच्छ को वेवक्फ बनाया (३४२)। बान ी, स्त्री ०, बन्दरी। वानरिन्द, पु०, बन्दरों का राजा। वानरिन्व जातक, बन्दर ने मगरमच्छ को छकाया (५७)। वापी, स्त्री०, तालाव, पुष्करणी। वापित, कृदन्त, बोया गया। वाम, वि०, वायां। बाम-परस, नपुं०, बाई मोर। बामन, पू०, बोना; वि०, बोना। वामनंक, वि०, बीना । बाय, पु॰ तथा नपुं॰, बुनना । बायति, किया, बहता है, चलता है, स्गन्धि फैलाता है। वायन्त, (वायि, वायमान, वाधित्वा)।

वायति, क्रिया, (कपड़ा) बुनता है। वायन, नपुं ०. (हवा का) चलना, सुगन्धि का फैलना । वायन-दण्डक, पु०, करघा। वायमति, क्रिया, प्रयास करता है, कोशिश करता है। (बायमि, वायमन्त, वायमित्वा)। वायस, पु०, कीवा। वायसारि, नपं०, उल्लू। वायाम, पु॰, प्रयास, प्रयत्न । बायित, कृदन्त, बुना गया, (हवा) चला हुगा। वायिम, वि०, बुना हुमा। बायेति, किया, युनवाता है। वायु : नपुं ०, हवा । वायो, समास में वायु का ही रूपान्तर। वायो-कसिण, नपुं०, चित्तेकाग्रता के लिए 'वायु' को ध्यान का विषय बनाना । वायो-धातु, स्त्री०, वायु-तत्त्व। वार, पु॰, बारी, मौका। वारक, पु॰, मटका, बड़ा बर्तन। वारण, पु०; हायी, वाज की एक जाति; नपुं०, वारना, रोकना, हटाना। वारि, नपुं०, जल। वारि-गोचर, वि०, पानी में रहने वाला। वारिज, वि०, पानी में उत्पन्न; पु०, मछली; नपुं०, कमल। वारिद, वारिधर, वारिवाह, बादल। वारि-मग्ग, पू०, नाली। बारित, कृदन्त, हटाया गया, रोका गया ।

वारित्त, नपुं०, न करना, न करने योग्य कायं। वारियमान, वि०, रोका जाता हुपा, बाघा डाली जाती हुई, मना किया जाता हुआ। वारुणी, स्त्री०, शराव। वारणी जातक, शिष्य ने शराव में नमक मिलाया (४७)। बारेति, किया, मना करता है, वाघा डालता है, रोकता है। (वारेसि, वारेन्त, वारियमान, वारे-तब्ब, वारेत्वा)। वाल, पु०, पुंछ के वाल; वि०, मया-नक, ईपालु। वाल-कम्बल, नपुं०, (घोड़े के) वालों का कम्बल। वालग्ग, नपुं०, बाल का सिरा। वालण्ड्पक, पु० तथा नपुं०, घोड़े के बालों की बनी कूँची या ब्रश। वाल-बीजनी, स्त्री०, चँवरी। वाल-वेधी, पु०, बाल को बींध सकते वाला घनुर्घारी। वालघी, पु॰, पूंछ। वालिका, (वालुका भी), स्त्री०, वालू। बालुका-कन्तार, पु०, बाल् का रेगि-स्तान। वालुका-कुञ्ज, पु०, बालू का देर। बालुका-पुलिन, नपुं०, बालू-तट। वालोटक जातक, घोड़ों ग्रीर गदहों को ग्रंगूरी पिलाये जाने की कया (8=3)1 वास, पु॰, रहना, प्रवास. वस्त्र, सुगन्धि । बास-चुण्ण, नवुं०, सुगन्धित चूणं।

बासट्ठान, नपुं ०, रहने का स्थान। वासन, नपुं ०, सुगन्धित करना, बसाना। स्त्री०, पूर्व-संस्कार, पूर्व-वासना, स्मृति । वास-योग, पु०, स्नान-चूणं। बासर, पु॰, दिन। बासव, पु०, इन्द्र । वासि, स्त्री॰, (बद्रई का)बसूला या वसूली। वासि-जट, नपुंज, बसूले की मूठ। वासि-फल, नपं०, बसूले का लोह-श्रंश। वासिक, (वासी भी), पु॰, (समास में) रहने वाला। वासितक, नपुं०, सुगन्धित चूणं। वासेति, किया, वसाता है, (सुगन्धि) वसाता है। (वासेसि, वासित, वासेत्वा)। बाह, वि०, ले जाता हुन्ना, मार्ग दिलाता हुमा; पु॰, नेता, गाड़ी, गाड़ी का मार, माल ढोने वाला पश्, जल-धारा। वाहक, पु०, भार ढोने या ले जाने वाला। वाहन, न गुं०, गाड़ी। वाहसा, ग्रंब्यय, कारण से। वाहिनी, स्त्री०, सेना, नदी। वाही, वि०, ले जाता हुमा। वाहेति, क्रिया, ले जाता है। विकच, वि०, विकसित हुमा, खिला हुआ। विकट, वि०, परिवर्तित, बदला हुग्रा; नपुं०, गंदगी। विकण्णक जातक, राजा को जब यह

मालूम हुमा कि ग्छलिया मीर कछवे उसके संगीत पर मोहित हैं, तो उसने उनको रोज खान। खिलाये जाने की व्यवस्या की (२३३)। विकति, स्त्री०, विकृति, प्रकार, किस्म। विकतिक, वि०, नाना ग्राकार-प्रकार के। विकत्यक, (विकत्यी भी),, पु०, शेखी बघारने वाला। विकत्यति, किया, शेखी वघारता है। (विकत्थि, विकत्थित, विकत्थित्वा)। विकत्थन, नपुं०, शेखी वघारना। विकन्तति, ऋया, काटता है। (विकन्ति, विकन्तित, विकन्तित्वा)। विकन्तन, नपुं॰, काटना, काटने का चाक् । विकप्प, पू०, विचार, विकल्प, ग्रनि-इचय। विकप्पन, नपुं०, ग्रस्थिरता। विकप्पेति, क्रिया, संकल्प करता है, व्यवस्था करता है, इरावा करता है, परिवर्तित करता ह। (विकप्पेसि, विकप्पित, विकप्पेन्त, विकप्पेत्वा)। विकम्पति, किया, कौपता है। (विकम्पि, विकम्पित, त्रिकम्पित्वा, विकम्पमान)। विकम्पन, नपुं०, कौपना । विकरोति, त्रिया, परिवर्तन करता है। (विकरि, विकत)। विकल, वि०, सदोष, श्रमाव'पूर्ण। विकलक, वि०, जो प्रमावपूर्ण हो, जो कम हो। विकसति, किया, विकसित होता है। (विकसि, विकसित, विकसित्वा)।

विकार, पु०, परिवर्तन, तबदीली, विकृति। विकाल, पु०, अनुचित समय, मध्याह्नो-त्तर तथा रात्र। विकाल-भोजन, नपुं०, मध्याह्नोत्तर तथा रात्रि का मोजन। बिकास, पु॰, फैलाव। विकासेति, क्रिया, चमकता है, विकसित करता है। (विकासेसि, विकासित, सेत्वा)। विकिण्ण, कृदन्त, विकीणं, ह्या। विकेसिक, वि०, विखरे हुए वाल वाला। विकिरण, नप्ं०, विखरा हुआ। विकिरति, क्रियां, विखेरता है, छिड़कता है, फैलाता है। (विकिरि, विकिरन्त, विकिरमान, विकिरित्वा)। विकिरीयति, क्रिया, विखेरा जाता है। विकुणित, कृदन्त, विकृत। बिक्डवति, क्रिया, परिवर्तन करता है, प्रातिहायं (=करिश्मे) करता है। (विकृध्वि, विकृध्वित)। विकुटबन, नपुं०, ऋद्धि-बल का प्रदर्शन। विक्जिति, किया, कुजता है, शब्द करता है, चह्चहाता है। (विक्जि, विक्जित)। विक्जन, नपुं०, पक्षियों का कुजना, चहचहाना । विकृत, वि०, ढलान। विकोपन, नपुं०, कुपित करना, हानि पहुंचाना ।

विकोपेति, किया, कुपित करता है, हानि पहुँचाता है। (विकोपेसि, विकोपित, विकोपेत्वा, विकोपेन्त)। वियकन्त, नपं ०, विकान्त-माव, वीरता। विवकन्वति, ऋिया, **चिल्लांता** चीखता है। विषकम, पु॰, विक्रम, शक्ति। विक्कमन, नपुं॰, प्रयास, गमन। विक्कय, पूर्, विकी। विक्कय-भण्ड, नपु ०, बिकी का सामान। विक्कियक, (विक्केतु मी), पु०, बिकी करने वाला। विकिकणाति, त्रिया, वेचता है। (विक्किणि, विक्किणित, विक्किणीत, विविकणन्त, विविकणित्वा, विविक-णितुं)। विक्लम्भ, पु०, व्यास, गोलाकार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मध्य-विन्दु में से होकर गुजरती हुई रेखा। विक्खम्भन, नपुं०, रोकना, त्यागना, मथना, दबाना। विक्लम्भेति, किया, त्यागता है, दबाता है, दूर करता है। (विक्लम्भित, विक्लम्भेन्त, विक्ल-म्भेत्वा)। विक्लालेति, त्रिया, धोता है। (विक्लालेसि, विक्लालित, विक्ला-लेत्वा)। विवित्त, कृदन्त, दिक्षिप्त। विक्लित्त-चित्त, वि०, ग्रस्वस्य-चित्त, पागल। विविद्धतःक, वि०, सर्वत्र विखरा हुमा;

नपं॰, सर्वत्र विखरा हथा मृतक गरीर। विक्सिपति, किया, विशेष उतानन करता है। (विक्सिपि, त्रिक्सिपन्त, विक्सि-पित्वा)। विक्लिपन, नपुं०, गहवड़ी। विक्लेप, पु॰, विक्षेप, गड़बड़ी। विषक्षेपक, वि०, गड़बड़ी उत्पन्न करने वाला। विक्खोभन, नप् ०, विक्षोभ, गड़वड़ो। विक्लोभेति, किया, हिलाता-डलाता है, क्षःघ करता है। (विक्खोभेसि, विक्खोभित, विक्खो-मेत्वा)। विगच्छति, क्रिया, विदा होता है। (विगच्छि, विगच्छन्त, विगच्छ-मान)। बिगत, कृदन्त, चला गया, विरहित हो विगत-खिल, वि०, दोष-रहित । विगत-रज, वि०, रज-रहित । विगास, वि०, तृष्णा-रहित। विगासव, वि०, चित्तमैल-रहित, घहत्। विगम, प्०, विदा, प्रस्थान । विगमन, नवुं०, विदा, प्रस्थान । विगय्ह, पूर्व किया, प्रविष्ट होकर, गोता लगाकर। विगरहति, किया, निन्दा करता है, गाली देता है। (विगरहि, विगरहित्वा)। विगलित, कृदन्त, स्थान से च्यूत, पतित ।

विगाहति, किया, प्रविष्ट होता (; डबकी लगाता है। (विगाहि, विगाळ्ह, विगाहमान, विगाहित्वा, विगाहेत्वा, विगाहितुं)। विगाहन, नपुं०, इनकी मारना, प्रविष्ट होना । विगगरह, पूर्व किया, विग्रह करके, विक्लेपण करके। विगाह, पू०, ऋगड़ा, विवाद, शरीर, शब्द-ब्युत्पत्ति। विगाहिक-कथा, स्त्री०, भगड़े की बातचीत। विघटन, नप्०, प्रहार देना । विघाटन, नपुं०, उद्घाटन, विवृत करना, ढीला करना। विघाटेति, क्रिया, खोलता है, तोड़ता (विघाटेसि, विघाटित, विघाटेन्त, विघाटेत्वा)। विधात, प्०, विनाश, दुरवस्था, विद्वेष । विघातेति, किया, हत्या करता है, नष्ट करता है। (विघातेसि, विद्यातित, विधा-तेत्वा)। विधास, पु०, वचा हुम्रा भोजन। विधासाद, पु०, ग्रवशिष्ट मोजन खाने वाना। विधास जातक, तपस्वी ने तपस्वी-जीवन का स्वरूप स्पष्ट किया (३६३)। विचक्खण, वि०, विचक्षण, चन्र; प्०, वृद्धिमान् घादमी । विचय, पू॰, (धमं-)विवेचन, धमं-विनार। विचरण, नपुं०, विचरना,

ग्राना-जाना। विचरति, किया, घुमता है, ग्राता-जाता है। विचरित, (विचरि, विचरन्त, विचरमान, विचरित्वा, विचरितुं)। विचार, पू०, विचारण, नपुं०, विचा-रणा, स्त्री॰, खोजना, चिन्तन करना, व्यवस्था करना, योजना वनाना। विचारक, पु०, विचार करने वाला, खोज-बीन करने वाला, व्यवस्था-पक। विचारेति, किया, सोचता है, व्यवस्था करता है, योजना बनाता है। (विचारेति, विचारित, विचारेन्त, विचारेत्वा) ' विचिकिच्छति, क्रिया, सन्देह करता है, हिचिकचाता है, ग्रागा-पीछा करता है। (विचिकिच्छि, विचिकिच्छित, विचि-किच्छित्वा)। विचिकिच्छा, स्त्री०, सन्देह। विचिण्ण, कृदन्त, चुना हुआ। विचित, कृदन्त, चुना गया। वि०, विचित्र, ग्रलंकृत, विचित्त, सजाया गया। विचिनन, नपुं॰, विवेचन करना, चुनाव करना। विचिनाति, किया, विचार करता है, चुनाव करता है, संग्रह करता है। (विचिति, विचित, विचिनन्त, विचि-नित्यां)। विचिन्तिय, पूर्वं ० किया, विचार करके। विचिन्तेति, क्रिया, विचार करता है, मनन करता है।

(विचिन्तेसि, विचिन्तित, विचेन्तेन्त, विचिन्तेत्वा)। विचुण्ण, वि०, चूणं किया गया, दुकड़े-दुकड़े किया गया। विचण्णेति, किया, पीसता है, चूणे बनाता है, दुकड़े-दुकड़े करता है। (विचुण्णेसि, विच्णित, ण्णेत्वा)। विच्छिक, पु०, बिच्छु । विच्छिद्दक, दि॰, छिद्रों से मरा हग्रा। विच्छिन्वति, किया, काटता है, रोकता है, बाधक होता है। (विच्छिन्दि, विच्छिन्दन्त, विच्छिन्द-मान, विच्छिन्दित्वा)। विच्छिन्न, कृदन्त, कटा हुग्रा, पृथक् किया हुमा। विच्छेद, पु०, काट, पाथंवय। विजटन, नपुं०, सुलभावट। विजटेति, किया, सुलभाता है। (विजटेसि, विजटित, विजटेत्वा)। विजन, वि०, जन-रहित, शून्य-स्थान। विजन-वात, वि०, एकान्त, सूनापन लिये। विजम्भति, क्रिया, ग्रॅगड़ाई नेता है,। (विजिम्भ, विजिम्भत्वा)। विजम्भना, स्त्री०, ग्रॅगड़ाई लेना। विजिम्भका, स्त्री०, जंमाई, उवासी। विजय, पु०, जीत। विजय, सिहल-द्वीप का प्रथम आयं-नरेश, सिह-बाहु तथा सिह-सीवली की सन्तान। विजयति, किया, जीतता है। (विजयि, विजयित्वा)।

विजहति, क्रिया, छोड़ता है, त्याग देता . (विजिहि, विज्ञहन्त, विअहित्वा, विहाय, विजहितम्ब)। विजहन, नपुं०, परित्याग । विजहित, कृदन्त, परित्यक्त। विजाता, स्त्री०, जननी, शिशु-माता। विजातिक, वि॰, विदेशी, दूसरी जाति का। विजानन, नपुं ०, ज्ञान, पहचान। विजानाति, ऋिया, जानता पहचानता है। (विज्ञानि, विञ्ञात, विजानन्त, विजानितब्ब, विजानित्वा, विजानिय, विजानितुं)। विजायति, क्रिया, जन्म देती है। (विजायि, विजायित्वा)। विजायन, नपुं०, जन्म देना । दिजायन्ती, स्त्री०, जनम देती हुई। विजायमाना, स्त्री ०, जन्म देती हुई। विजायिनी, स्त्री॰, बच्चे को जन्म दे सकने वाली। विजित, कृदन्त, जीत लिया गया; नपं०, राज्य। विजित-सङ्गाम, वि॰ विजयी। विजिनाति, देखी जिनाति । विजितावी, पु॰, विजयी। विज्ज-ट्ठान, नपुं०, ग्रध्ययन विषय। विज्जति, क्रिया, विद्यमान होता है। (विज्जन्त, विज्जमान)। विज्जन्तरिका, स्त्री०, विजली कड्कने के बीच का समय। विच्या, स्त्री०, विद्या।

विज्जाचरण, नपुं०, विद्या तथा ग्राच-रण। विज्ञाचर, वि०, ग्रोक्सा, जादू-टोना करने वाला। विज्जा-विमृत्ति, स्त्री॰, विद्या (-जान) द्वारा विमुक्ति। विज्ज, (विज्जुता, विज्जुत्लता भी), स्त्री०, विजली। विज्जोतति, क्रिया, चमकता है। (विज्जोति, विज्जोतित, विज्जोत-मान)। विज्ञाति, क्रिया, बींघता है, छेद करता है। (विकिस, विद्र, विक्सन्त, विक्स-मान, विजिभत्वा, विजिभय)। विज्ञान, नप्ं, बींधना, निशाना लगाना। विज्ञायति, किया, बुभता है। विज्ञापेति, किया, (माग) बुआता बिञ्जल, कुदन्त, सूचित । विञ्जलि, स्त्री॰, सूचना। विञ्जाण, नपुं०, विज्ञान, चेतना । विज्ञाणक, वि०, सचेतन। विञ्जाणक्लन्घ, पु०, विज्ञान-स्कन्घ। विञ्ञाणट्टित, स्त्री०, विज्ञान-स्थिति, चेतना की ग्रवस्था। स्त्री०, विज्ञान= विज्ञाण-घातु, चेतना = चित = मन । विष्ठजात, कृदन्त, विज्ञात, जात, जाना गया। विञ्जातस्य, कृदन्त, जानने योग्य, समभने योग्य। विञ्जातु, पु॰, जानने वासा ।

विञ्ञापक, पु॰, जनाने वाला, शिक्षक। विज्ञापन, नटं०, विज्ञापन, जान-कारी। विज्ञापय, वि॰, शैक्ष, जिसे सिखाया जा सके। विञ्जापित, कृदन्त, सूचित हमा। विञ्जापेति, किया, सूचित करता है, शिक्षा देता है। (विज्ञापेसि, विज्ञापित, विज्ञा-पेश्वा, विज्ञापेन्त)। विज्ञापेतु, पु०, सूचना देने वाला, शिक्षक। विञ्जाय, पूर्वं किया, सीखकर। विज्ञायति, किया, जाना जाता है। विञ्जू, वि॰, बुद्धिमान, ज्ञाता, विज; प्०, वृद्धिमान ग्रादमी। विञ्जूता, स्त्री॰, विज्ञता, विवेक । विज्ञ प्पसत्थ, वि०, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित । विञ्जेय, वि०, जानने योग्य। विटङ्क, पु॰ तथा नपुं॰, कवूतर का दरवा। विटप, पु०, शाला। विटपी, पु॰, शासा वाला, वृक्ष । विड्डभ, पंसेनदि (प्रसेनजित्) तथा वासम खंत्तिया का पुत्र, प्रसिद्ध सेनापति। विडोज, पु०, इन्द्र। वितक्क, पु॰, वितकं। वितक्कन, नपुं ०, विचार, मनन। वितक्केति, किया, विचार करता है, मनन करता है।

(वितक्केसि, वितक्कित, वितक्केन्त, वितयकेरवा)। वितच्छिका, स्त्री०, खुजली। वितच्छेति, किया, छिलका उतारता है, चिकना करता है। (वितच्छेसि, वितच्छित) । वितण्ड-याद, पु०, व्ययं का वाद-विवाद । वितत, कृदन्त, फैलाया हुग्रा, विस्तृत किया गया। वितय, वि०, ग्रसत्य, ग्रयथार्थ; नपुं०, वितनोति, किया, फैलाता है। (वितनि)। वितरण, नपुं०, बांटना । वितरति, किया, बांटता है। (वितरि, वितरित, वितिण्ण)। वितान, नपुं०, चँदवा। वित्दति, किया, चुमोता है। वितुदन, नपुं०, चुमोना। वित्त, नपुं ०, घन, सम्पत्ति । वित्ति, स्त्री॰, प्रीति। वित्य, नपुं०, शराब पीने का पात्र। वित्थम्भन, नपुं०, विस्तार। वित्थम्मेति, किया, फैलाता है। (वित्यम्भेसि, वित्यम्भित, वित्य-म्भेत्वा)। वितथार, पु०, व्यास्या, विस्तार। वित्थार-कयाः स्त्री०, टीका । वित्यारतो, कि॰ वि॰, विस्तार से। वित्यारिक, वि०. विस्तारित, जिसका नाम दूर तक फैला हो। वित्यारेति, किया, विस्तार करता है, फैलाता है।

(वित्यारेसि, वित्यारित, वित्यारेन्त, वित्यारेत्वा)। विदित्य, स्त्री॰, बालिश्त । विदहति, क्रिया, व्यवस्था करता है। (विवहि, विदहित, विहित, विद-हित्वा)। विदारण, नप्०, चीरना-फाड़ना। विवारेति, किया, चीरता है, फाइता (विदारेसि, विदारित, विदारेन्त, विदारेत्वा)। विदालन, नपुं०, चीरना-फाड़ना। विदालित, कुदन्त, चीरा गया, फाड़ा गया। विदालेति, देखो विदारेति । विदित, कृदन्त, ज्ञात । विदितत्त, नपुं०, जान लिये जाने का विदिसा, स्त्री०, कुतुबनुमा का मध्य-बिन्दु । विदुग्ग, नपुं०, कठिन स्थल, कठिनाई से पहुँचा जा सकने वाला किला। विदू, वि०, बुढिमान्; पू०, बुढिमान् ग्रादमी। विदूर, वि०, धति दूर। विदूर जातक, देखो सुचिर जातक। विद्रसित, कृदन्त, दूषित, भ्रष्ट । विदूसेति, देखो दूसेति । विवेस, पु०, विदेश। विदेसिक, वि०, वैदेशिक। विदेसी, वि०, विदेशी। विदेह, विज्ञ जनपद का एक माग विदेह या, जिसकी राजधानी थी मिथिला नगरी।

बिह्सु, वि०, बुद्धिमान । बिद्देस, पु०, शत्रुता। बिद्ध, कृदन्त, बींघा गया। विदंसक, वि०, विघ्वंस करने वाला। विद्वंसन, नपुं०, विघ्वंस करना, विनष्ट करना। विद्वसेति, किया, विष्वंस करता है, विनष्ट करता है। (विद्वंसेसि, विद्वंसित, विद्वस्त, विद्वं-सेत्वा, विद्वंसेन्त) । विष, वि०, (समास में) प्रकार (नाना। विध, वि०, नाना प्रकार का)। विधमक, वि०, विघ्वंस करने वाला। विधमति, किया, विघ्वंस करता है। (विधमि, विधमित, विधमित्वा)। विधमन, नप्०, विनाश। विधमेति, देखो विधमित । विधवा, स्त्री॰, जिसके पति का देहान्त हो गया हो। विधा, स्त्री॰, प्रकार, ढंग, ममिमान, घहंकार। विधातु, पु॰, विधाता, सृष्टि रचयिता। विधान, नपुं०, व्यवस्या, घाजा, पद्धति । विधायक, वि०, व्यवस्था करने वाला। वियावति, कि ०, दौड़ता-मागता है। (विधाबि, विधावित्वा)। विधाबन, नपुं०, दोड़ना-मागना । विधि, पु॰, ढग, माग्य, प्रकार। विधिना, ऋ० वि०, विधि-पूर्वक । विधुनाति, किया, धुनता है। (विधुनि, विधुत, विधुनित, विधु-नित्वा)। विषुर, वि०, तनहा, एकाकी।

विघुर-पंडित जातक, विघुर पण्डित ने, चारों राजाग्रों में से कौन सबसे ज्यादा शीलवान है, इस प्रश्न का उत्तर दिया (५४५)। विघत, कृदन्त, घुना गया। विधूपन, नपुं०, पंसा, पंसा करना, छोंकना, घुप्रा देना। विघ्षेति, किया, छोंकता है, घुमी देता है, बिखेरता है। (विध्येसि, विध्यित, विध्येन्त, विघ्षेत्वा)। विधूम, वि०, धूम्र-रहित, राग-रहित। विधेय्य, वि०, ग्राजाकारी। विनट्ठ, कृदन्त, विनष्ट। विनत, कृदन्त, भुका हुम्रा। विनता, (नाम) गरुड़ों की माता। विनद्ध, कृदन्त, घेरा हुम्रा, लपेटा हुआ। विनन्धति, किया, घेरता है, लपेटता है। (विनन्धि, विनन्धित्वा) । विनन्धन, नपुं०, लपेटना । विनय, प्०, मिक्ष-जीवन के नियम-उपनियम । विनयन, नपुं०, नियमवद्ध शिक्षित करना। विनय-घर, वि०, विनय का विशेषज्ञ। विनय-पिटक, भिक्षुग्रों के नियम-उप-नियमों का संग्रह। विनय-वादी, पु०, विनय के नियमों के समयंन में बोलने वाला। विनळीकत, कृदन्त, नष्ट किया हुमा। विनस्सति, क्रिया, नष्ट होता है। (विनस्सि, विनट्ठ, विनस्सन्त,

विनस्समान, विनस्सित्वा)। विनस्सन, नप्०, नष्ट होना । विना, ग्रन्यय, रहित। विना-भाव, ग०, पार्थक्य। विनाति, किया, बुनता है। (विनि, वीत)। विनामन, नपु०, शरीर का भुकाना। विनामेति, किया, भुकाता है। (विनामेसि, विनामित, विनामेत्वा)। विनासका, पु०, महान नेता, बुद्ध । विनास, पू॰, विनाश। विशासक, वि०, विनाश करने वाला। विशासन, नपुं०, विनाश करना। विनासेति, त्रिया, नष्ट कराता है। (दिनासेसि, विनासित, विनासेन्त, विनासेत्वा) । विनिगत, कुटन्त, वाहर निकला हुआ। विनिच्छय, पू०, विनिश्चय, फंसला। विनिच्छय-कया, स्त्री०, विश्लेपणात्मक वार्ता । विनिच्छयट्ठान, नपुं०, न्यायालय, कचहरी। विनिच्छय-साला, स्त्री०, न्यायालय, कचहरी। विनिच्छित, कृदन्त, निश्चय हुग्रा, फैसला हम्रा। विनिच्छिनन, नपुं०, फैसला देना। विनिच्छिनाति, किया, सोज-बीन करता है। (विनिच्छिनि, विनिच्छित, विनि-च्छिनित्या) । विनिच्छेति, किया, खोज-बीन करता है, फंसला देता है। (विनिच्छेसि, विनिच्छित,

च्छेत्वा, विनिच्छेन्त) । विनिधाय, पूर्वं किया, अनुचित व्यवस्या करके, प्रनुचित स्थापना करके। विनिपात, पू॰, दु:स मोगने का स्थान। विनिपातिक, वि०, नरक में गिरने वाला । विनिपातेति, क्रिया, नाश का कारण होता है। विनिबद, कृदन्त, सम्बन्धित। विनिबन्ध, पु०, बन्धन, ग्रासक्ति। विनिब्भुजति, किया, पुराक-पृथक करता है, बांटता है। (विनिब्मुजि, विनिब्भुजित्वा) । विनिब्भोग, पु०, पृयक्करण। विनिमय प्०, भदला-बदली। विनिमोचेति, किया, प्रपने-प्रापको मुक्त करंता है। (विनिमोवेसि, विनिमोचित, विनि-मोचेत्वा)। विनिम्मुत्त, कृदन्त, विमुक्त . विनिवट्टोत, किया, लोट-गोट होता है, फिसलता है। (विनिवट्टोस, विनिवट्टित, विनि-बट्टत्वा)। विनिविज्भ, कृदन्त, बींधा गया। विनिविज्अति, क्रिया, बींध डालता है। (विनिविज्ञि, विनिविद्ध, विनि-विजिभत्वा)। विनिविज्ञन, नपुं ०, बींधना । विनिविद्ध, कृदन्त, बीधा गया। विनिवेठेति, क्रिया, बन्धन-मुक्त करता है।

(विनिवेठेसि, विनिवेठित, विनि-वेठेत्वा)। विनिवेठन, नप्ं, बन्धन-मुक्त होना या करना। विनीत, कृदन्त, नियमित जीवन का भ्रम्यस्त । वित्रीलंक जातक, हंस ग्रीर कीवे के मेल मे विनीलक का जन्म हुमा (१६०)। विनीवरण, वि०, चित्त-मलों से मुक्त। विनेति, किया, शिक्षित करता है। विनेतब्ब. (विनेसि. विनेन्त, विनेत्वा)। विनेतु, पु०, शिक्षक । विनेय-जन, बुद्ध द्वारा विनीत किये जाने वाल लोग। विनेक्त, पूर्व किया, इटाकर; विक, शिक्षित किये जाने योग्य । विनोद, पु०, प्रीति, मानन्दं। विनोदन, नपुं॰, हटाना, दूर करना। विनोदेति, किया, दूर करता है, हटाता है। (विनोदेसि, विनोदित, विनोदेत्वा)। विन्दक, पु०, अनुभव करने वाला। विन्दति, क्रिया, ग्रनुमव करता है। (विन्दि,विन्दित, विन्देन्त, विन्दमान, विन्दित्वा विन्दितक्व)। विन्दियमान, कृदन्त, ग्रनुभव किया जाता हुमा। बिन्यास, पुरं, (चक्र)ब्यूह। विपक्ल, वि०, विपक्ष। विपविलक, वि०, विरोधी का पक्ष-पाती । विपच्चति, किया, पकता है, फल देता है।

(विपन्चि, विपयक, विपच्चमान)। विपज्जति, किया, व्ययं सिद्ध होता है, विनष्ट होता है। (विपण्जि, विपन्न)। विपज्जन, नपुं०, व्यथं सिद्ध होना, नष्ट होना। विपत्ति, स्त्री॰, ग्रसफलता, युसीबत । विपय, पु०, कुमार्ग। विपन्न, कृदन्त, विपद्-ग्रस्त । विपन्न-दिद्ठि, वि०, मिच्या-देष्टि वाला। विपन्न-सोल, वि०, शील-भ्रष्ट । विपरिणत, कृदन्त, परिवर्तित, रागी विपरिणाम, पू॰, परिवर्तन । विपरिणामेति, क्रिया, परिवर्तितं कःता है, बदलता है। ('विविरणामेसि, विविरणामित)। विपरियय, (विपरियाय मी), विरुद्ध माव। विपरियेस, पू०, प्रतिकृत होना। विपरिवत्तति, किया, उलट देता है। (विपरिवत्ति, विपरिवत्तित) । विपरिवत्तन, नपं०, परिवर्तन, उलट देना . विपरीत, वि०, उलटा, बदल दिया विपरीतता, स्त्री०, विरोधी माव। विपल्लत्थ, पलट दिया गया। विपत्लास, पु०, पलटा ला जानः, स्थानान्तर होना। विपस्सक, वि०, ग्रन्तहं ध्टि वाला । विषस्सति, क्रिया, देखता है, भन्तदं ध्टि प्राप्त करता है। (विपश्सि, विपश्सित्वा)।

'विपस्सना, स्त्री०, विपश्यना, मन्त-रंष्टि । विपस्सना-आण, नपुं०, विपश्यना-जान। विपस्तना-धुर, नपुं०, विपश्यना-पच। विपस्सी, पु०, विपश्यी, अन्तर्दं ध्टि-युक्त। विपाक, पू०, परिणाम, फल। विपातिका, स्त्री॰, वेवाय। विपिट्ठिकत्वा, पूर्व ० - क्रिया, (किसी की ग्रोर) पीठ करके, मुँह फेरकर। विपन, नपुं०, जंगल। विवुल, वि०, विशाल। विवुलता, स्त्रो॰, विशालता। वियुलत्त, नपुं ०, विशालत्त्र । विष्प, पू॰, विप्र, ब्राह्मग। बिप्प-कुल, नपुं०, ब्राह्मण-कुल । विष्पकत, वि०, ग्रध्रा। विष्पकार, पु॰, परिवर्तन, बजाय। विष्पिकण्ण, कृदन्त, बिखेरा हुमा। विष्पिकरति, किया, चारों तरफ विश्वेरना, नष्ट करना। (विष्पिकरि, विष्पिकरित्वा, विष्प-किण्ण)। विष्पजहति, क्रिया, छोड़ देता है, त्याग देता है। (विष्पजहि, विष्पजहित्वा)। विष्पटिपज्जति, किया, गलती करता है, दोप-मागी होता है। (विष्पटिपिज्ञ, विष्पटिपिज्जित्वा)। विष्पटिपत्ति, स्त्री॰, दुराचरण-। विष्पटिपन्न, कृदन्त, कुपय-गामी। विष्पटिसार, प्•, पश्चात्ताप। विष्पमुत्त, कृदन्त, विमुक्त।

विष्ययुत्त, कृदन्त, पृथक् किया हुमा। विष्पलपति, किया, विनाप करता है। विष्पलाप, पु०, प्रलाप। विष्पलुज्जति, किया, दुकड़े-दुकड़े हो जाता है। विष्यवसति, किया, अनुपस्थित होता है, प्रवास करता है। विष्पवास, पु०, अनुपस्यिति, प्रवास । विष्पबृत्य, कृदन्त, प्रनुपस्यित, प्रवासी। विष्पसन्न, कृदन्त, मृति स्पष्ट । विष्पसीदति, क्रिया, स्पष्ट होता है। विष्पहान, नपुं०, प्रहाण, त्याग देना । विष्फर्दति, क्रिया, फड्फड़ाता है, हाथ-पर मारता है। (विष्फिन्दि, विष्फिन्दित, विष्फिन्दि-त्वा)। विष्फन्दन, नपुं०, संघषं करना, या फड़फड़ाना, हाय-पैर मारना। विष्फार, पु॰, विस्तार। विष्कारिक, वि०, फैलाया हुमा। विष्कारित, कृदन्त, फैलाया हुमा। विष्कुरण, नपुं०, व्याप्ति । विष्फ्ररति, किया, ब्याप्त होता है, हलचल मचाता है, कॅपा देता है। (विष्कुरि, विष्कुरित, विष्कुरन्त) । विष्कुलिङ्ग, नपुं०, स्फूलिंग, प्रग्नि-विफल, वि०, व्ययं, निष्फल। विबन्ध, पु॰, बन्धन । विबाधक, वि०, बाधा डालने बाला, हानि पहुँचाने वाला। विवाधति, किया, बाघा डालता है, क्कावट डालता है। विश्राधन, नपुं०, बाघा, रुकावट।

वियुष, पूर, देवतागण। विश्मन्त, कृदन्त, विभ्रान्त। विक्भन्तक, वि०, मिक्षु-जीवन परि-त्यक्त। विक्भमति, किया, कुपयगामी होता है, मटक जाता है, मिक्ष जीवन त्याग देता है। (विक्भमि, विक्भमित्वा)। विभङ्ग, पु०, बँटवारा, विमाग, वर्गी-करण। विभक्त, विनय-पिट के पाराजिक तथा पाचित्तिय दोनों ग्रंथों का सामुहिक नाप। विभक्षत्पकरण, प्रमिधम्मपिटक के सात प्रकरणों में से दूसरा प्रकरण या ग्रन्य। विभजति, किया, वंटवारा करता है, वर्गीकरण करता है। विभजित, (बिभजि, विभत्त, विभजन्त, विभजित्वा)। विमज्ज, पूर्व े किया, विमक्त करके भ्रयवा विश्लेषण करके। विभज्जवाद, पु०, युक्तिवाद। विभज्जवादी, पु०, धेरवाद मनुयायी। विभक्त, कृदन्त, विमक्त, बँटा हुमा। विभत्ति, स्त्री॰, वर्गीकरण, विभक्ति (-每4) 1 विभव, पु०, धन, ऐश्वयं। बिभाग, पु॰, बँटवारा। बिभाजन, नपुं०, बँटवारा । विभात, कृदन्त, चमका। विभाति, किया, चमकता है। विभावन, नप्ं, व्याख्या।

विभावना, स्त्री०, माध्य। विभावी, वि०, प्रज्ञावान् ; पु०, प्रज्ञावान् मादमी। विभावेति, क्रिया, स्पष्ट करता है। (विभावेति, विभावित, विभावेन्त, विभावेत्वा)। विभीतक, पू०, बहेडा । विभीतकी, स्त्री०, बहेड़ा। विमु, वि०, सर्व-व्यापक । विमृत, क्रंपन्त, स्पष्ट। विमृति, रूनी०, प्रताप। विमुसन, नप्ं, विभूषण, गहने, सजा-विमुसित, कृदन्त, विभूपित। विभूसेति, किया, सजाता है. अलंकृत करता है। (विभूसेसि, विभूसेत्वा)। विमति, स्त्री०, सन्देह, शक। विमतिच्छेदक, वि०, सन्देह की निवृत्ति करने वाला। विमन, वि०, ग्रसन्तुष्ट । विमन, वि०, निमंल, स्वच्छ । विमान, नपुं ०, मंबन । विमान-पेत, पु०, प्रेत-विशेष। विमान-वत्यु, नपुं०, दिव्य भवनों की कहानियों का ग्रन्थ, खुदकनिकाय का एक ग्रन्य। विमानन, नपुं०, ग्रपमान । विमानेति, किया, भनादर करता है। (विमानेसि, विमानित, विमा-नेत्वा)। विमुख, वि०, लापरवाह । विमुच्चित, ऋया, मुक्त होता है। (विमुच्चि, विमुत्त, विमुच्चित्वा,

विमुच्चन्त)। विमुञ्चित, किया, मुक्त होता है। (विमुञ्चि, विमुञ्चित, विमुञ्चन्त, विमुङ्चित्वा)। विमुत्त, कृदन्त, विमुक्त। ∨विमुत्ति, स्त्री°, विमुक्ति । विवृत्ति-रस, पु०, मुक्ति-रस। विवृक्ति-सुख, नपुं०, मुक्ति-सुख। विमोषख, पु०, विमुक्ति, विमोक्ष । विमोचक, पु॰, मुक्त करने वाला। विमोचन, नपुं०, मुक्ति। विमोचेति, ऋया, मुक्त करता है। विमोहेति, किया, मोह में डालता है, भ्रम उत्पन्न करता है। (विमोहेसि, विमोहित, विमोहेत्वा)। विम्हय, पु०, ग्राश्चर्य । विम्हापक, वि०, ध्राश्चयं में डालने वाला, चिकत करने वाला। विम्हापन, नपुं०, ग्राश्चयं में डालना। विम्हापेति, क्रिया, ग्राइचयं उत्पन्न करता है, चिकत करता है। (विम्हापेसि, विम्हापित, विम्हा-पेत्वा)। विम्हित, श्राइचर्यान्वित, कृदन्त, चिकत। विय, समान, जैसा (तुलनार्थंक) । वियत्त, वि०, व्यक्त, पण्डित, सुयोग्य। वियुहति, क्रिया, हटाता है, विखे-रता है। (वियूहि, वियूळ्ह, वियूहित, वियू-हित्वा)। वियूहन, नपुं०, हटाना, विखेरना। वियूळ्ह, (ब्यूळ्ह भी), कृदन्त, एक-त्रित।

वियोग, पु०, पृथक् होना । विरचित, कृदन्त, रचा हुमा। विरचयति, किया, रचना करता है, निर्माण करता है। (विरचि, विरचियत्वा, विरचित)। विरज, वि०, निमंल, गुद्ध। विरज्जति, किया, वैराग्य को प्राप्त होता है, ग्रनासकत होता है। (विरिज्ज, विरत्त, विरिज्जत्वा, विरज्जमान)। विरञ्जन, नपुं०, विरक्त होना। विरज्भति, किया, चूक जाता है। (विरक्ति, विरद्धं, विरक्तित्वा)। विरत, कृदन्त, जो रत न हो। विरति, स्त्री॰, रति का ग्रमाव, बचाव, दूर-दूर रहना। विरत्त, कृदन्त, विरक्त, ग्रनासक्त। विरद्ध, कृदन्त, चूक गया। विरमन, नपुं०, रुकना, विरत रहना। विरमति, किया, विरत रहता है। (विरमि, विरमन्त, विरमित्वा)। विरल (विरळ मी), वि०, बिरला, पतला, जो घना न हो। विरव, (विराव मी), पु०, चीख-चिल्लाहट। विरवति, किया, चीखता है, विल्लाता (विरवि, विरवन्त, विरवित्वा)। विरवन, नपुं०, देखो विरव। विरह, पु॰, पायंक्य, शून्यता। विरहित, वि०, खाली, शून्य, बिना। विराग, पु॰, वैराग्य, ग्रासक्ति का ग्रमाव, इच्छा का न होना। विरागता, स्त्री॰, राग का न होना।

विरागी, वि०, राग-रहित। विराजति, क्रिया, चमकता है। (विराजि, विराजित, विराजमान)। विराजेति, त्रिया, दूर करता है, हटाता है, नष्ट करता है। (विराजेसि, विराजेत्वा)। विराधना, स्त्री०, ग्रसमथंता, चूक जाना। विराघेति, किया, चूक जाता है। विराधित, (विराधेसि, विरा-घेत्वा)। क्रिया, विरेचन किया विरिच्चति. जाता है। विरिच्चमान, कृदन्त, विरेचन करता हमा। विरित्त, कृदन्त, विरेचन हुपा। विरिय, नपुं ०, शक्ति, सामध्यं। विरिय-बल, नपुं०, वीयं-बल। विरियवन्तु, वि०, वीयंवान् । विरिय-समता, स्त्री॰, न कम ग्रीर न ग्रधिक प्रयत्न। विरियारम्भ, पु०, प्रयत्न का भारम्म। विरियिन्द्रिय, नपुं०, वीयं, प्रयास, प्रयत्न । विरुज्कति, किया; विरुद्ध होता है, प्रतिकृल होता है। (विविक्स, विवद, विविक्सन्त, विव-ज्झित्वा)। विरुद्ध, कृदन्त, विरोधी। विरुद्धता, स्त्री०, विरोधी-भाव। विरूप, वि०, कुरूप। विरूपक्स, पु॰, नागों का मधिपति। विरूपता, स्त्री०, कुरूपता। विरुळ्ह, कुदन्त, उगा हुमा, बढ़ा

हमा। विकळिह, स्त्री०, वृद्धि। विरुहति, क्रिया, उगता है, बढ़ता है। (विरुहि, विरुहन्त, विरुहित्वा)। विरेक, पु०, विरेचन, जुलाव। विरेचेति, किया, पेट की सफाई करता है। (विरेचेसि, विरेचित, विरेचेत्वा)। विरोचित, किया, चमकता है। (विरोचि, विरोचमान, चित्वा)। विरोचन, नपुं०, चमकना। विरोचन जातक, गीदड़ ने हायी पर म्राक्रमण किया। वह उसके पांच तले रौंदा गया (१४३)। विरोचेति, किया, प्रकाशित करता है। विरोचित, विरो-(विरोचेसि, चेत्वा)। विरोध, पु॰, प्रतिकूल होना। विरोधन, नपुं०, प्रतिकृतता । विरोधेति, क्रिया, विरोध कराता है। (विरोधेसि, विरोधित, विरो-षेवता)। विलग्ग, कृदन्त, चिपका हुम्रा, लगा हुमा। विलङ्गति, किया, कृदता है, फाँदता है, कलाबाजी खाता है। विलङ्गेति, किया, उल्लंघन करता है। (विलङ्के सि, विलङ्कित, विलङ्के त्वा)। विलपति, क्रिया, त्रलाप करता है। (विलिप, विलयन्त, विलपमान, विलिपत्वा)। विलम्बति, ऋया॰, विलम्ब करता है,

देर लगाता है, लटकता रहता है। (विलम्ब, विलम्बित, विल-म्बित्वा)। विलम्बन, नपुं०, मटरगश्ती करना, देर लगाना। विलम्बेति, किया, मुंह चिढ़ाता है, शक्ल बनाता है, नीची नजर से देखता है। विलय, पुर, विलीन हो जाना, घुल-मिल जाना। विलसति, किया, चमकंता है, खेलता (विलसि, विलसित्वा, विलसित)। विलसित, कृदन्त, प्रसन्न-चित्त, शान-दार। विलाप, पु॰, रोना-पीटना, व्ययं की वकवास। विलास, पु., सीन्दयं, (हास-) विलास, नखरा। विलासिता, स्त्री०, नखरा। विलासिनी, स्त्री०, स्त्री। विलासी, पु०, विलास-युक्त पुरुष । विलिखति, क्रिया, खुरचता है, रगड़ कर चमकाता है। विलिखित, कृदन्त, खुरचा हुआ। विलित्त, कृदन्त, लेप किया गया। विलिम्पति, किया, लेप करता है। विलिम्पेति, किया, लेप करता है, ग्रमियेक करता है। (विलिम्पेसि, विलिम्पेन्त, विलि-म्पेत्वा)। विलीन, कृदन्त, धुल-मिल गया, लीन हो यया।

विलीयति, किया, पिघल जाता है, घुल जाता है, नष्ट हो जाता है। विलीयमान, विली-(विलीयि, यित्वा)। विलीयन, नपुं ०, घुलना । विलीव (विलिव मी), नपुं॰, बौस वा सरकण्डे की खपवी। विलीवकार, पु॰, टोकरी बनाने वाला। विलुग्ग, कृदन्त, टूटा, दुकड़ें-टुकड़े हो विलुत्त, कृदन्त, लूटा गया। विलून, कृदन्त, काटा गया। विलेख, पु॰, उलभन, काटना-पीटना, खरोंच। विलेपन, नपुं०, उबटन, लेप, सुगन्धित चूणं म्रादि। विलेपित, कृदन्त, सुगन्यित लेप किया गया। विलेपेति, किया, सुगन्धित लेप करता (विलेपेसि, विलेपेत्वा)। विलोकन, नपुं०, देखना, स्रोज-बीन करना। विलोकेति, किया, देखता है, सोज-बीन करता है। (विलोकेसि, विलोकित, विलोकेन्त, विलोकयमान, विलोकेत्वा)। विलोचन, नपुं०, प्रांख। विलोपन, नपुं॰, लूट-मार। विलोपक, पु॰, लूटमार करने वाला। विलोम, वि॰, विरुद्ध, प्रतिकृत । विलोमता, स्त्री०, प्रतिक्लता,-न्यूनता।

विलोमेति, किया, प्रसहमत होता है, विवाद करता है। (विलोमेसि, विलोमेत्वा)। विलोक्टन, नपं०, विलोना, मथना। विलोळेति, किया, विलोता है, मयता है। विवरजन, नपुं०. त्याग, दूर-दूर रहना। विवज्जेति, ऋया, बचाता है, त्यागता है, छोड देता है। (विवज्जेति, विवज्जित, विवज्जेन्त, विवज्जेत्वा, विवज्जिय)। विवट, कृदन्त. विवृत, खुला, नंगा। विवद्ग, नप्ट, उत्तरोत्तर बढ़ते हुए कल्पों के सम्बन्ध में 'पलट'। विबद्ध-कप्प, उत्तरोत्तर बढ़ता हुमा कल्प (समय विभाग)। विवट्टति, किया, पीछे की ग्रोर हटता है, फिर से ग्रारम्म करता है। (ि:वट्टि, विवट्टित, विवट्टित्वा) । विबट्टन, नपुं०, पीछे हटना, मुड़ जाना। विवट्टोत, किया, पीछे हटता है, दूसरी ग्रोर जाता है, नष्ट कर देता (विवट्टे सि, विवट्टित, विवट्टे त्वा) । विवण्ण, वि०, बदरंग, दुबंल। विवण्णेति, क्रिया, निन्दा करता है, वदनामी करता है। विवण्णित, (विवण्णेसि, विव-ण्णेत्वा)। विवदति, क्रिया, विवाद करता है, भगड़ा करता है। (विविद, विवदन्त, विवदमान, विव-दित्वा)।

विवदन, नपुं०, विवाद। विवर, नपुं०, दरार, सुराग। विवरण, नपुं०, उघाड़ना, खोलना, व्याख्या करना, व्याख्या। विवरति, क्रिया, विवृत करता है, उघाड़ता है, स्पष्ट करता है, विश्ले-षण करता है। (विवरि, विवट, विवरन्त, विवर-मान, विवरित्वा, विवरितुं)। विवस, वि०, बे-वश, ग्रसंयत। विवाद, पु०, कलह, भगड़ा। विवादी, पू॰, विवाद करने वाला। विवादक, पू०, भगड़ालु । विवाह, पु०, शादी। विवाह-मङ्गल, नपुं०, शादी-मङ्गल । विविच्च, ग्रव्यय, पृथक्, ग्रलहदा । विवित्त, वि०, भ्रकेला, एकान्त में। विवित्तता, स्त्री०, एकान्त का माव। विविध, वि०, नाना प्रकार के। विवेक, प्०, एकान्त, श्रकेले में। विवेचन, नप्ं, ग्रालोचना । विवेचेति, किया, पृथक्-पृथक् करता है, ग्रालोचना करता है। (विवेचेसि, विवेचित, विवेचेत्वा)। विस, नपुं०, विष । विस-कण्टक, नपुं०, विपेला कण्टक। विस-घर, पून, सौप। विस-पीत, वि०, विष में बुक्ता हुन्ना। विस-रुक्ल, प्०, विप-वृक्ष। विस-वेज्ज, प्०, विप-वैद्य। विस-सल्ल, नपुं०, विष में बुआ तीर। विसञ्ज, वि०, वे-होश, अवतन । विसञ्जी, वि०, बे-होश, धचेतन। विसट, (विसत भी), कृदन्त, फंला

हमा । विसति, देखो पविसति । विसत्त, वि०, विशेष रूप से ग्रासनत, उलभा हमा। विसत्तिका, स्त्री॰, तृष्णा, ग्रासक्ति । विसद, वि०, स्तब्ट, साफ, व्यक्त। विसद-किरिया, स्त्री०, स्पष्ट करना। विसदता, स्थी॰, स्पष्टता । विसद-भाव, पु०, स्पष्टता । विसभाग, वि०, भिन्न, विरोधी, ग्रसा-धारण। विसम, वि०, विषम, ऊवड्-खावड् । विसय, पु०, स्थान, प्रदेश, क्षेत्र, (इन्द्रियों का) विषय। विसय्ह, वि०, जो सहन किया जा सबे, सम्भव । विसयह जातक, उदार दानी विसह्य सेठ के दान से शक का ग्रासन गर्म हो उठा (३४०)। विसर, पु०, समूह। विसवन्त जातक, सपं-विप वैद्य ने सपं को पुन: अपना विष चुसने को कहा (5 8) विस-लित्त, वि०, विष में बुभा हुग्रा (तीर)। विसल्ल, वि०, शोक-मुक्त। विसहति, क्रिया, समयं होता है, साहस करता है। (विसहि, विसहमान, विसहित्वा)। विसंयुत्त, कृदन्त, जो जुता नहीं, जो पृथक् किया गया। विसंयोग, प्०, पार्थंक्य । विसंवाद, पु॰, धोखा, भूठ। विसंवादक, वि०, धविष्वसनीय।

विसंवादन, नपुं०, ऋठ बोलना, ऋठा 🚅 व्यवहार करना। विसंवादेति, किया, वचन-मंग करता है, भूठ बोलता है। (विसंवादेसि, विसंवादित, विसंवा-देन्त, विसंवादेत्वा)। विसंसट्ठ, वि०, पृथक् हुग्रा। विसङ्कित, वि०. सन्दिग्घ। विसङ्घार, प्०, सङ्घार-निरोध। विसङ्क्षित, कृदन्त, नष्ट किया गया। विसाला, स्त्री०, विशाला नक्षत्र । विसाला, मगवान बुद्ध की उदार-चेता उपासिकाओं में प्रमुख, मिगारमाता विसाखा। विसाण, नपु०, विषाण, सींग । विसाणमय, वि०, सींग का बना। विसाद, पू॰, विपाद, मेद, उल्लास का विसारद, वि०, विशारद, दक्ष, मंयत विसाल, वि०, विशाल। विसालक्ली, स्त्री०, विशालाक्षी । विसालता, स्त्री०, विशालता। विसालत्त, नपुं०, विशालत्व। विसिला, स्त्री०, गली, सड़क। विसिट्ठ, वि०, विशिष्ट, प्रमुख, ग्रसा-धारण। विसिट्ठतर, वि०, विशिष्टतर। विसिब्बेति, त्रिया, उधेड्ता है, सिलाई उखाड़ता है। (विसिब्बेसि, विसिब्बेत्वा) । विसीवति, ऋिया, हतोत्साह होता है। (विसोबि, विसीबित्वा)। विसीदन, नपुं , हतोत्साह होना । विसीवन, नपुं०, अपने-आपको गर-

माना । विसीवेति, क्रिया, भपने-भापको गर-माता है। (विसीवेसि, विसीवेन्त, विसीवेत्वा)। विसुक्ऋति, किया, स्वच्छ होता है। (विसुजिक, विसुज्भमान, विसु-जिमत्या)। विसुद्ध, कृदन्त. विशुद्ध, परिशुद्ध। विसुद्धता, स्त्री०, विशुद्धि-माष । विसुद्धि, स्त्री०, पवित्रता। विमुद्धि-देव, पु०, सच्चरित्र व्यक्ति। विसुद्धि-मग्ग, पु०, विशुद्धि का मार्ग । विसुद्धिमग्ग, संघपाल स्थविर की प्रार्थना पर भाचार्य बृद्धघोष द्वारा रचित बौद्ध धर्म का विश्वकोश। विसं, कि० वि०, पृथक्-पृथक्। विसंकरण, नपुं०, पार्थवय । विसंकत्वा, पूर्वं शिया, पृथक् करके। विसुक, नपुं ०, तमाशा । विसूक-दस्सन, नपुं०, नाटक प्रादि का देसना । विसुचिका, स्त्री०, हैजा। विसेस, पु०, विशेष, भेद-प्राप्ति । विसेसक, पु०, विशेष चिह्न। विसेस-गामी, वि०, विशेषता की घोर भग्रसर। विसेस-मागिय, वि०, विशेषता की धोर धप्रगामी। विसेसाधिगम, पु०, विशेष पद भी प्राप्ति । विसेसता, स्त्री०, विशेषता । विसेसतो, कि० वि०, विशेष रूप से। विसेसन, नपुं ०, विशेषण। बिसेसिय, विसेसितब्ब, वि०, विशेष

व्यवहार का पात्र। विसेसी, वि०, विशेषता-युक्त। विसेसेति, किया, विशेष करता है। (विसेसेसि, विसेसित, विसेसेत्वा)। विसोक, वि०, शोक-रहित। विसोधन, नपुं०, शुद्धिकरण। विसोधेति, ऋया, शुद्ध करता है। (विसोधेसि, विसोधित, विसोधेन्त, विसोघेत्वा, विसोघिय)। विसोसेति, क्रिया, मुखाता है, बिखेर देता है। (विसोसेति, विसोसित, विसोसेन्त, विसोसेत्वा)। विस्सगन्ध, पु०, कच्चे मांस की-सी गन्ध। विस्सग्ग, पु०, दान। विस्सज्जक, वि०, देने वाला, बाँटने वाला. प्रश्न का उत्तर देने वाला । विस्सज्जित, ऋया, देता है, बाँटता है, प्रक्नों का उत्तर देता है। (बिस्सज्जि, विस्सज्जित्वा, विस्स-ज्जित ब्ब, विस्सज्जिय)। विस्सज्जन, नपुं०, भेजना, प्रत्युत्तर, खर्चा। विस्सज्जनक, वि०, प्रत्युत्तर देने वाला, दान देने दाला। विस्सज्जनीय, वि०, बाँटने योग्य, उत्तर देने योग्य। विस्सज्जेति, क्रिया, उत्तर देता है, है, बाँटता है, भेजता है, खर्च करता है; बाहर करता है, जाने देता है। (विस्सन्जित, विस्सन्जेत्या, विस्स-ज्जेन्त)। विस्सट्ठ, कृदन्त, भेजा गया, उत्तरित। विस्सद्ठि, स्त्रीं, बाहर निकलना

[सुषक-विस्सद्ठि, शुक्र-मोचन, स्वप्न-दोष]। विस्सत्य, कृदन्त, विश्वस्त, विश्वस-नीय। विस्सन्द, पु०, उमड्ना, उफान ग्राना। विस्सन्दन, नपुं०, उमड्ना । विस्सन्दति, ऋिया, उफन जाता है। (विस्सन्दि, विस्सन्दित, विस्सन्दमान विस्सन्दित्वा)। विस्समति, किया, विश्राम करता है। (विस्समि, विस्समन्त, विस्स-मित्वा)। विस्सन्त, कृदन्त, विश्रान्त, विश्राम-प्राप्त । विस्सर, वि०, दुखपूर्णं स्वर। विस्सरति, किया, भूल जाता है। (विस्सरित, विस्सरित्वा)। विस्ससति, ऋिया, विश्वास करता है। (विस्सिस, विस्सत्य, विस्सिसत्वा)। विस्सास, पु०, विश्वास, घनिष्ठता। (विस्सासक, विस्सासिक, विस्सासी, विस्सासनीय)। विस्सास-भोजन जातक, सिंह ने हिरनी की देह को चाटा। उस पर विष चुपड़ा था १ वह मर गया, 1 (83) 'विस्सुत, वि॰, विश्रुत, प्रसिद्ध । विहग, पु०, पक्षी। बिहङ्गम, पु०,)पक्षी, चिड़िया। विहञ्जति, किया, दुखित होता है। (विहञ्जि, विहञ्जमान)। विहत, कृदन्त, मारा गया, घुनी गई (कपास)। विहनति, क्रिया, मारता है।

(विहनि, विहनित्वा, विहत्वा)। विहरति, किया, जीता है, (किसी स्थान पर) रहता है। (विहरि, विहरन्त, विहरमान, विहरित्वा)। विहाय, पूर्वं विक्या, छोड़कर। विहार, पु॰, निवास-स्थान, मिक्षुमों के रहने की जगह, बौद्ध प्रतिमा-विहार देवी, दुट्ठगामणी की माता। विहारिक, वि०, रहने वाला या विच-रने वाला। विहारी, वि०, रहने वाला, विचरने वाला। विहिसति, किया, कष्ट पहुँचाता है। (विहिसि, विहिसित, विहिसित्वा)। विहिसना, (विहिसा मी), स्त्री॰, निदं-यता। विहित, कृदन्त, योग्य, उचित, ध्यव-स्थित । विहोन, कृदन्त, त्यक्त, विरहित। विहेठक, वि॰, कष्ट देने वाला, हानि पहुँचाने वाला। विहेठ-जातिक, वि०, तंग करने वाला। विहेठन, नपुं०, कष्ट देना। विहेठियमान, कृदन्त, दुस पहुँचाया जाता हुमा। विहेठेति, किया, कष्ट देता है। (विहेठेसि, विहेठित, विहेठेन्तं, विहे-ठेत्वा)। विहेसक, वि०, कष्टप्रद। विहेसा, स्त्री॰, हैरानी। बिहेसियमान, देखी विहेठियमान। विहेसेति, देसो विहेठेति ।

बीचि, स्त्री०, लहर। बीच्छा, स्त्री॰, बार-बार एक ही बात कहना। बीजति, किया, पंखा करता है। (बीजि, बीजित, वीजित्वा, बीजय-मान)। बीजन, नपुं०, पंखा करना। बीजनी, स्त्री०, पंखा। बीजयमान, कृदन्त, पंखा किया जाता हमा। बीजेति. पंखा करता है। (बीजेन्नि, वीजेन्त, वीजेत्वा)। बीणा, स्त्री०, वीणा, सारंगी। बीणा-दण्डक, पु०. वीणा-दण्ड। बीणा-दोणि, स्त्री०, बीणा-द्रोणि । बीणा-बादन, नपुं०, बीणा-बादन । वीणायूण जातक, बनारस के सेठ की लड़की कूबड़े के साथ माग गई, बाद में समभा-वुभाकर वापस लाई गई। बीत, कृदन्त, १. रहित, २. बुना हुम्रा (वायित)। बीति चिक, वि०, ली रहित (चमक)। बीत-गेघ, वि०. लोम-रहित। बोत-तण्ह, वि०, तृष्णा-रहित । बीत-मल, वि॰, मल-रहित। बोत-मोह, वि०, मोह-रहित, मज्ञान-रहित । बोत-राग, वि०. राग-रहित; पु०, ग्रहंत। बीतिकमम, पु०, व्यतिकम, नियम का उल्लंघन । वीतिक्कमति, किया, व्यतिक्रमण करता है। (बोतिक्इमि, बोतिक्कन्त, बोति-

क्कमन्त, वीतिक्कमित्वा)। बीतिच्छ जातक, प्रति-प्रश्न पूछकर प्रक्नकर्ता को हराया, (२४४)। बीतिनामेति, किया, समय बिताता है। (बीतिनामेसि, बीतिनामित, बीति-नामेत्वा)। वीतिवत्त, कृदन्त, गुजर गया, खर्च हो गया, जीत लिया गया। बीतिवत्तेति, किया, जीत लेता है, समय व्यतीत करता है। (बोतिवस्रेसि, बीतिवत्तित, बीति-वत्तेत्वा)। बीतिहरण, नपुं०, लम्बे-लम्बे डग घरना। बीतिहार, पु०, डग। बीतिहरति, ऋिया, चलता है, टहलता हे। (बीतिहरि, बीतिहरित्वा)। बीथि, स्त्री॰, गली, रास्ता। बीथ-चित्त, नपुं०, ऋयाशील चित्त। बीमंसक, वि०, विमशं करने वाला, परीक्षा करने वाला। बोमंसन, नपुं॰, विमशं करना, खोज-बीन करना। बीमंसा, स्त्री॰, छान-बीन, परीक्षण । बीमंसति, किया, विमर्श करता है, स्रोज-बीन करता है, परीक्षण करता है। वीमंसित, वीमंसन्त, (बीमंसि, बोमंसित्वा, बोमंसिय) । बीमंसी, पु०, स्रोज-बीन करने वाला, परीक्षणं करने वाला। बीर, द्रि०, बहादुर; पु०, वीर (प्रादमी)।

बीरक जातक, साविद्ठिक नाम का कौवा वीरक नाम के कीवे का नीकर बन, वीरक की मारी हुई मछलियाँ बाता रहा (२०४)। बीवति, क्रिया, बुनता है। बीच, स्त्री०, लता। बीसति, स्त्री॰, बीस। बोसतिम, वि०, बोसवां। बीहि, पु॰, घान। बुच्चति, क्रिया, कहा जाता है। वच्चमान, कृदन्त, कहा हुमा । बुट्ठ, कुदन्त, बारिश का मीगा। (बुट्ठाति मी), किया, बुट्ठहति, उठता है। 🗣 (बुट्ठहि, बुट्ठासि, बुट्ठहित, बुट्ठ-हन्त, बुट्ठहित्वा, बुट्ठाय)। बुट्ठान, नपुं०, उत्थान। बुट्ठापेति, किया, उठवाता है। (बुट्ठापेसि, बुट्ठापित, बुट्ठा-पेत्वा)। बुद्ठि, स्त्री॰, वर्षा। बुद्ठिक, वि०, वर्षा वाला । वुड्ढ, वि०, वृद्ध, ज्येष्ठ । बुड्ढतर, वि०, वृद्धतर, ज्येष्ठतर। बुडि्ड, स्त्री०, वृद्धि, ऐश्वयं। वृत्त, कृदन्त, कहा गया, गया; नपुं०, कहा गया वचन, बोया गया बीज ' वुत्तप्पकार, वि०, कथनानुसार। बुत्तप्पकारेन, कि॰ वि॰, उन्त कथना-नुसार। वृत्त-वाबी, पु॰, दोहराने वाला, कथित बात को कहने बाला।

बृत्त-सिर, मुण्डित सिर। वृत्ति, स्त्री०, व्यवहार, ग्राचरण, जीविका । बुत्तिक, वि०, प्रम्यस्त। युत्तिका, स्त्री॰, वृत्ति का माव। वती, वि०, ग्रम्यस्त । बुत्य, कि०-वि०, रहकर, समय विता-बुत्य-बस्स, वि०, जिसने 'वर्षा-त्रास' किया हो। वृद्ध, देखी वृड्ढ । वृद्धि, देसो वृद्धि । बुद्धिप्पत्त, वि०, ग्रायु-प्राप्त, विश्राह करने योग्य। बुद्धियुत्त, वि०, समृद्ध । वुद्धिरोग, पु०, प्रण्डकोश की वृद्धि। बुय्हति, क्रिया, ले जाया जाता है। (वृद्धि, वूळ्ह, वृद्धमान) । बुय्हन, नपुं०, ढोया जाना । वुस, पु॰, बेल। व्सित, कृदन्त, वास किया। वृसितत्त, नपुं ०, रहना। बुसित-भाव, पु०, निवास का माव। बुस्सति, क्रिया, रहा जाता है। बुपकट्ठ, वि०, एकान्त-सेवी। व्यसन्त, कृदन्त, शान्ति-प्राप्त। बूपसमन, नपुं०, शान्ति। व्यसमेति, क्रिया, शान्त करता है। (व्यसमेसि, व्यसमित, व्यसमेन्त, व्यसमेत्वा)। व्यसम्मति, किया, उपशमित होता है, शान्त होता है। वूळ्ह, कृदन्त, ले जाया गया। वे, प्रव्यय, वास्तव में, स्थिर रूप से। बेक्टल, नपुं ०, विकल-माव । बेकल्लता, स्त्री०, भंग-विकृति। बेग, पु०, शक्ति, गति, जोर। बेजयन्त, पू०, इन्द्र के महल का नाम। बेज्ज, पु॰, वैद्य। वैद्य-कर्म, नप् ०, चेन्ज-कम्म, चिकित्सा । बेठक, वि०, लपेटने वाला, घेरने वाला। बेठन, नपुं०, लपेट, पगड़ी । बेठियमान, कृदन्त, लपेटे जाते हुए या मरोड़े जाते हुए। बेठेति, किया, लपेटता है। (बेठेसि, बेठित, बेठेग्त, बेठेत्वा) । बंग, पू०, टोकरी बनाने वाला। वेणविक, पु०, वंशी बजाने वाला। बेणिक, पुर, बीणा बजाने वाला। बेणी, स्त्री॰, बालों की लट। बेणी-कत, वि०, गुंधा हुम्रा सिर। बेजी-करण, नपुं०, गूंथना, गट्ठर बीघना। बेणु, पु॰, बीस। बेण्-गुम्ब, पु॰, बांसों का भुंड। वेण-बलि, पु०, बौस के रूप में कर (=टंक्स) चुकता करना। येणु-वन, नपुं०, बांसों का वन । बेतन, नपुं०, मजदूरी, तनस्वाह, फीस। बेतनिक, नपुं०, वैतनिक, वेतन पर काम करने वाला, किराये का टट्टू। नरक की त्रास-बेतरणी, स्त्री०, दायिनी नदी। बेतस, पु॰, सरकण्डा, नरकट। बेतालिक, पु॰, राजदरबारी कलाकार, संगीतज्ञ, गायक।

बेति, किया, लुप्त हो जाता है, अन्त-र्घान हो जाता है। वेत्त, नपुं ०, बेंत। वेत्तगा, नपुं०, बेंत का सिरा। वेत्त-लता, स्त्री०, बेंत की छड़ी। बेद, पु॰, घामिक मावना, अनुभूति, ब्राह्मणों के 'स्वयं-प्रमाण' माने जाने वाले चार ग्रन्थ। बेदगू, पु॰; उच्चतम ज्ञान-प्राप्त । वेदजात, वि०, ग्रानन्दित। वेदन्तगू, पु॰, ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुमा) वेदन्त-पारगू, पु॰, ज्ञान के दूसरे छोर तक गया हुआ। वेदक, पु०, ध्रनुभव करने वाला या भोगने वाला। वेदनट्ट, वि॰, कष्ट से पीड़ित। बेदना, स्त्री॰, पीड़ा, इन्द्रिय-जनित धनुभूति । वेदनाक्खन्ध, पु०, वेदना-स्कन्ध, वेदना-समूह । वेदब्भ जातक, वेदब्म-मन्त्र के जान-कार ब्राह्मण की कथा। लोमी डाक्यों ने प्राण गैवाये, (४८)। वेदियत, नपुं ०, प्रनुभूति, प्रनुभव । बेदिका (बेदी भी), स्त्री॰, वेदिका, प्लेट-फामं। बेदित, कृदन्त, ज्ञात। बेदियति, ऋया, प्रनुभवं किया जाता बेदियमान, कृदन्त, ग्रनुमव किया जाता हुमा । बेदेति, मनुभव करता है, जानता है। (बेबेसि, बेबेन्स, बेबेत्वा) ।

वेदेह, वि०, विदेह देश का। वेदेहीपुत्त, पु॰, विदेह की राजकुमारी का पुत्र । वेघ, पु०, बींघना। वेधन, नपुं०, तीर मारना। बेघात, किया, कांप्रता है। (वेचि, वेचित, वेचित्वा)। वेघी, पू०, बींघने वाला। वेनियक, पु॰, 'विनय' का विशेषज्ञ। वेनेच्य, वि॰, 'विनीत' बनाया जा सकने वाला, शिक्षणीय। वेपुल्ल, नपुं ०, विपुलता । वेपुल्ल, राजगृह के ग्रासपास के पांच पवंतों में से उच्चतम पवंत । वेभिद्भिय, वि०, बाँटने योग्य। वेभार, राजगृह के चारों घ्रोर के पवंत-शिखरों में से एक। वेम, पु०, ढरकी। वेमज्भ, नपुंठ, बीच, मध्य। वेमतिक, वि०, सन्दिग्ध । वेमल, नपुं॰, सन्देह, भेद । वेमत्तता, स्त्री०, द्वैध-माब, दुविधा। वेमातिक, वि०, विमाता वाला, सौतेला । वे मानिक, वि॰, 'विमान' वाला, दिव्य-भवन का स्वामी। वेमानिक-पेत, पु॰, विमान-पेत । वेय्याघ, वि०, बाघ-सम्बन्धी, बाघ के चमडे से ढका हुमा। वेय्यत्तिय, नपुं०, स्पष्टता । वेय्याकरण, नपुं०, व्याख्या; व्याकरण का जानकार, व्याख्याकार। वेय्याबाधिक, वि॰, कष्टप्रद। वेय्यायिक, नपुं०, खर्च । बेटपावच्य, नपुं०, सेवा, कर्तव्य ।

वेय्यावच्चकर, पु॰, सेवक, नौकर। वेय्यावतिक, पु॰, सेवक, नौकर। बेर, नपुं॰, वैर। वेरज्जक, वि०, नाना राज्यों का। वेरञ्जा, नगर-विशेष, जहाँ मनवान बुद्ध ने अपना एक वर्षा-वास विताया । वेरमणी, स्त्री॰, विरति। वेरम्भ-वात, प्०, पर्वत-प्रदेशों में चलने वाली हवा। वेरिक, वि०, शंत्रुमाव लिये, द्वेषी। बेरी, वि०, शत्रु। वेरी जातक, डाकुमों के डर से वैलों को देज मगाया घौर घनी व्यापारी सकुशल घर लीट ग्राया (१०३)। वेरोचन, पु०, सूर्य। वेला, स्त्री०, समय। वेलातिकम, पु०, समय की सीमा को लांघ जाना। वेल्लित, वि०, टेढ़ा, धुंधराले (बाल)। वेल्लितग्ग, वि०, घुंघराले बालों का सिरा। वेवचन, पर्याय-वचन, समानार्थी वचन। वेविणय, नपुं०, विवरण करना, बद-रंग करना। वेस, पु०, वेश, भेष। वेसम्म, नपुं०, विषमता। वेसाल, पु॰, वैशास महीना । बुद्ध का जन्म, ज्ञान-प्राप्ति, परिनिर्वाण-सभी वैशास में हुए माने जाते हैं। वेसारज्ज, नपु॰, विशारदता, मात्म-विश्वास । वेसाली, लिच्छवियों की प्रसिद्ध राज-घानी वैशाली। वेसिया, (वेसी मी), स्त्री॰, वेस्या ।

बेस्म, नपुं॰, निवास-स्यान, घर। वेस्स, पु॰, वैश्य। वेस्सन्तर जातक, वेस्सन्तर राजा की दानशीलता की कथा (५४७)। वेहास, पु॰, घ्राकाश। बेहास-कुटी, स्त्री ०, ऊपर के तल्ले पर हवादार कमरा। वेहास-गमन, नपुं०, प्राकाश-गमन। बेहासट्ठ, वि०, ग्राकाश-स्थित। बेळ, देखी वेणु। बेळ्रिय, नपुं०, वेंडूर्य। वेळ्क जातक, बांस में रखे, पोषित सौप ने सपेरे को काटा (४३)। बेळुवन, राजगृह के समीप राजा विम्बसार का प्रमोद-उद्यान, जो बाद में बुद्ध-प्रमुख मिक्षु-संघ को ग्रपित कर दिया गया था। बो, तुम्ह का पर्याय, तुम । वोकार, पु॰, रूप, वेदना मादि पाँच स्कन्ध। बोकिण्ण, कृदन्त, मिला-जुला, ढका हुआ। वोक्कमति, क्रिया, एक ग्रोर हो जाता है। वोक्कन्त, वोक्कम्म, (बोक्कमि, वोक्कमित्वा)। बोच्छिज्जति, क्रिया, कटता है। (वोच्छिजिज, बोच्छिन्न, वोच्छि-ज्जित्वा)। बोत्यपन, नपुं०, परिमापा। बोवक, वि०, जल-रहित। बोदपन, नपुं०, शुद्धि। बोदपेति, क्रिया, शुद्ध करता है। बोबन, नपुं०, शुद्धि।

बोमिस्सक, वि०, मिश्रित। बोरोपन, नपुं०, वञ्चित । वोरोपेति, किया, वञ्चित करता है। (बोरोपेसि, बोरोपित, बोरोपेन्त, वोरोपेत्वा)। बोलोकेति, क्रिया, परीक्षा करता है। बोसित, वि०, समाप्त, पूरा हुम्रा। बोस्सग्ग, पु०, दान। वोस्सजन, नपुं०, परित्याग । वोस्सजित, क्रिया, परित्याग करता (वोस्सजि, वोस्सट्ठ, वोस्सजित्वा, वोस्सज्ज)। बोहरति, किया, व्यवहार में लाता है, प्रकट करता है। (बोहरि, बोहरित, बोहरन्त, बोह-रित्वा)। बोहरियमान, कृदन्त, वुनाया जाता बोहार, पु०, बुलाना, प्रकट करना, उपयोग, व्यापार, कानून। बोहारिक, पु०, व्यापारी, न्यायाधीश। वोहारिकामच्च, पुर, मुख्य न्याया-धीश। व्यग्घ, पू०, बाघ। ध्यग्य जातक, वाघ ग्रीर सिंह के जंगल से चले जाने पर लोग जंगल के पेड़ काटने लगे। वृक्ष देवता कुछ न कर सके (२७२)। ब्यञ्जन, नपुं०, दाल-सब्जी, चिह्न । व्यञ्जेति, किया, प्रकट करता है, संकेत करता है। (व्यञ्जिय, 'व्यञ्जित)। व्यत्त, वि०, पण्डित।

व्यत्ततर, वि०; बहा पण्डित, प्रधिक होक्यार। व्यत्तता, स्त्री०, पाण्डित्य, होशियारी। ब्ययति, किया, कष्ट देता है, दबाता है। (ब्याय, ब्ययित, व्यथित्वा)। व्यन्तिकरोति, क्रिया, नष्ट करता है। (व्यन्तिकरि, व्यन्तिकत, व्यन्ति-करित्वा)। व्यन्तिभवति, किया, रोकता है, रुकता है। (व्यन्तिभवि, ध्यन्तिभूत)। ब्यपगच्छति, क्रिया, विदा होता है। (व्यपगमि, व्यपगत)। क्यम्ह, नपुं , विमान, महल । व्यसन, नपुं०, दुर्माग्य। ब्यारुत, कृदन्त, व्याख्यात । व्याकरण, नपुं०, व्याकरण, व्याख्या । व्याकरियमान, कृदन्त, व्याख्या किया जाता हुमा। व्याकरोतिं, क्रिया, व्याख्या करता है। (ब्याकरि, ब्याकत, ब्याकरित्वा)। व्याकुल, वि०, गड़बड़ाया हुमा। व्याख्याति, किया, सूचित करता है। (व्याख्यासि, व्याख्यात)। व्याघ, पू०, शिकारी। व्याधि, पू०, रोग।

स, वि०, स्वकीय, ग्रपना, सहित । स, सो, कर्ता एकवचन का एक रूप । स-उपादान, वि०, ग्रासक्ति-सहित । स-उपादिसेस, वि०, शरीर रहते (निर्वाण) ।

व्याधित, वि०, रोगी। ण्यापक, वि०, व्याप्त । ध्यापज्जति, क्रिया, प्रसफल होता है। ब्यापज्जना, स्त्री०, धसफलता, कोघ। व्यापन्न, कृदन्त, मागं-भ्रष्ट । व्यापाव, पु०, द्वेप । ध्यापादेति, किया, विगाइता है। व्यापार, पु०, पंशा । व्यापारित, कृदन्त, उत्तेजित। ब्यापित, कृदन्त, पूरित। व्यापेति, किया, व्याप्त होता है, सवंत्र फैलता है। (ब्यापेसि, ब्यापेन्त, ब्यापेत्वा) । ष्याबाधेति, क्रिया, हानि पहुँचाता है। (व्यावाधेसि, ब्याबाधित, ब्याबा-घित्वा)। व्याभङ्की, लाठी लिये जाते हुए। व्याम. प्र, लम्बाई या गहराई का माप । ध्यावट्ट, वि०, व्यावृत्त, संलग्न। ध्यासत्त, वि०, ग्रासक्त। ब्यासेचन, नपुं ०, सींचना, छिड़कना । ब्याहरति, ऋिया, बोलता है, बातचीत करता है। (ब्याहरि, व्याहट, व्याहरित्वा)। ब्यूह, पु॰, सैनिक व्यवस्था, ब्यूह-रचना।

स

सक, वि०, स्वकीय; पु०, सम्बन्धी; नपुं०, अपनी निजी सम्पत्ति । सक-मन, वि०, आनन्दित । सकक्ष्म, वि०, कक्ष्मा सहित, सन्देह सहित । सकट, पु॰ तथा नपुं॰, गाड़ी। सकट-भार, पु०, गाड़ी का मार। सकट-वाह, पू॰, गाड़ी का भार। सकट-ब्यूह, पु०, गाड़ियों का (चन्न-) व्युह्न । सकण्टक, वि०, कंटक-सहित। सकदागामी, पु०, धर्म-पथ का ऐसा पिक, जिसके पुनः एक ही बार भीर इस संमार में जन्म लेने की संभावना हो। सक-बल, वि०, ग्रपना बल। स-कवल, वि०, सहितं-कीर। सं-कम्म, नपुं ०, स्वकीय कर्म । स-कम्मक, वि०, सकर्मक (किया)। स-करणीय, वि०, जिसके लिए 'कर-णीय' शेष है। स-कल, वि०, सम्पूर्ण, तमाम । स-कलिका, स्त्री॰, खमाची। स-कास, पु०, पड़ोस। स-किच्च, नपुं०, स्वकीय कार्य। स-किञ्चन, वि०, दुनियावी वस्तुग्रों का मालिक, भासवितयुक्त 』 सकि, कि॰ वि॰, एक वार। सकीय, वि०, स्वकीय, अपना सकुण, पु०, पक्षी। सकुणग्घी, पु०, वाज। सकुणी, स्त्री०, पक्षी। सकुण जातक, पक्षिराज ने पक्षियों कि उनके को सावधान किया घोंसलों में ग्राग लगने वाली है (34)1 सकुणग्घी जातक, बटेर ने भ्रपनी चतु-राई से बाज की जान ली (१६०)। सकुन्त, पु०, पक्षी ।

सक्क, वि०, योग्य, समयं, संमव; पु०, शाक्य वंश, देवेन्द्र शक । सक्कच्च, पूर्वं श क्रिया, मली मौति तैयारी करके। सक्कच्चकारी, पु०, सावघानी बरतने वाला। सक्कच्चं, कि० वि०, सावधानी से। सक्कत, कुदन्त, सत्कृत, सम्मानित। सकत्त, नपुं ०, शकत्व, देवेन्द्र शक की-सी स्विति। सक्करोति, किया, सत्कार करता है, म्रादर करता है, म्रातिय्य करता है। (संक्करि, सक्कत, सक्करोन्त, सक्क-रितब्ब, सक्कातब्ब, सक्कत्वा, सक्क-सक्करीयति, सक्करितुं, रित्वा. सक्कातुं)। सबका, ग्रव्यय, शक्य, सम्भव। सक्काय, पु०, विद्यमान शरीर, सत्-काय। सक्काय-दिद्ठि, ग्रात्म-दृष्टि । सक्कार, पु०, सत्कार। सक्कूणाति, किया, समयं होता है। (सक्कुणि, सक्कुणन्त, सक्कुणित्वा)। सक्कूणेय्यत्त, सम्मावना । सक्कोति, किया, समयं होता है। (सक्कि, सक्खि, सक्कोन्त)। सरबर, नपुं०, मुहरवाली अंगूठी। सक्खरा, स्त्री०, शकंश, शक्कर। सक्खलि, (सक्खलिका भी), स्त्री०, छिद्र । सक्खि, ग्रामने-सामने। सक्लिक, (सक्ली मी), वि०, साक्षी, गवाह। सक्ति-दिट्ठ, वि०, धामने-सामने

दिखाई दिया। सिष्ख-पुट्ठ, वि०, गवाह के रूप में पूछा गया। सक्क-पुत्तिय, शाक्य-पुत्र, बोद्ध-मिक्षुग्रों को दिया गया नाम। सक्क-मुनि, मगवान् बुद्ध का ही एक नाम, शावय मुनि । सक्क-सीह, पु०, गीतम बुद्ध का एक ग्रधिवचंन । सख, (सखि मी), पु०, मित्र। सिखल, वि०, मधुर माषी। सस्य, नपुं०, सखा-माव, मैत्री। सगढभ, वि०, गमंवती। सगाह, (सगह भी), वि०, भयानक जन्तु प्रों (घड़ियालों) से युक्त । सगामेय्य, वि०, एक ही ग्राम के। सगारवः वि०, गौरव सहित । सगारवं, कि॰ वि॰, गौरव सहित। सगारवता, स्त्री०, ग्रादर, गौरव, सम्मान । सगोत्त, वि०, एक ही गोत्र के। सरगं, पु०, स्वगं । सग्ग-काय, पू०, स्वर्गीय समा । साग-माग, पु०, स्वगं-मार्ग । सग्ग-लोक, पु०, स्वग-प्रदेश। साग-संवत्तनिक, स्वर्गामिमुख । सःग-वासी, पु०, देवतागण। सग्गुण, पु०, सद्गुण। सङ्कर, नवुं०, तंग स्थान । सङ्कृरीर, नगुं०, कूड़े-कवरे का ढेर। सङ्कड्ढिति, किया, एकत्र करता है। (सङ्काड्ड, सङ्काड्डत्वा) । सङ्क्षति, किया, संदेह करता है, शंका करता है।

सङ्क्ति, (सङ्क्रि, सङ्ग्मान, सङ्कितवा)। सङ्कलति, किया, चारों घोर से काटता है। (सङ्क्षान्ति, सङ्क्षान्तित, सङ्क्षान्तित्वा) । सङ्कृत्तिक,वि०, सांक्रान्तिक, एक प्रवस्या में से दूसरी में जाना। सङ्कन्तिक-रोग, पु०, छूत की बीमारी। सङ्कृष्प, पु॰, इरादा । सङ्कृष्प जातक, राजा के बाहर गए रहने पर तपस्वी रानी के शरीर का नग्न ग्रंश देख, उस पर ग्रासक्त हो गया (२४१)। सङ्कृष्पेति, किया, संकल्प करता है। (सङ्क्ष्पेसि, सङ्कृष्पित, सङ्कृष्पेत्वा)। सङ्क्रमित, किया, संक्रमण करता है। (सङ्क्षीम, सङ्कन्त, सङ्क्षीमत्वा) । सङ्कमन, नपुं०, रास्ता, पुल। सङ्कम्पति, किया, कांपता है। (सङ्क्षम्प, सङ्क्षम्पत, सङ्क्षम्पत्वा)। सङ्कर, वि०, भ्रानन्द-दायक, मिश्रित। सङ्कलन, नपुं ०, संग्रह। सङ्क्रस्स, स्वगं में ग्रमिधम्म का उपदेश देने के बाद भगवान बुद्ध की स्वर्गा-वतरण भूमि। सङ्का, स्त्री०, शंका, सन्देह । सङ्कायति, किया, शंका करता है। सङ्कार, पु०, कूड़ा-करकट। सङ्कार-कूट, पु०, कूड़े-करकट का ढेर। सङ्कार-चोळ, नपुं०, कूड़े-कचरे के ढेर पर से उठाया गया चीकड़। सङ्कारट्ठान, नपुं०, कूड़ा-कचरा फेंकने की जगह।

सञ्जास, वि०, समान, एक जैसा। सङ्कासना, स्त्री०, व्यास्या। सिंकुच्च जातक, संकिच्च न राजक्मार को पितृ-हत्या के संकल्य से विरंत रखने का प्रयास किया (५३०)। सङ्कित्तन, नपुं०, संकीतंन, प्रचारित करना। सङ्क्रिलिट्ठ, कृदन्त, मैला हुमा। सिङ्कालिस्सति, किया, प्रशुद्ध होता है, मैला होता है। (सङ्कितिस्सि, सङ्कितिस्सित्वा)। सङ्क्रिलिस्सन, न्युं०, ग्रगुद्धि, मैल । सङ्किलेस, पु०, चित्त-मैल। सङ्किलेसिक, वि०, हानिकारक। सङ्की, वि०, सन्देह करने वाला। सङ्ग , पु॰, ख्टा। सङ्क -पय, खूंटों की सहायता से चलने लायक मार्ग। सङ्कुचित, किया, संकोच करता है। (सङ्कृ चि, सङ्कृ चित, सङ्कृ चित्वा)। सङ्कु चन, नपुं०, सिकोड़ना। सङ्क चित, वि०, सिकुड़ा। सङ्कु पित, कृदन्त, कृद । सङ्कुल, वि०, मरा हुआ, मीड सहित। सङ्क्रोत, पु० तथा नपुं०, निशान, चिह्न। सङ्केत-कम्म, नपुं०, समभौता। संकोच, पु०, हिचिकचाहट। सङ्कोचेति, हिचकिचाता है, सिक्ड़ता है। सङ्कोप, पु०, कुपित करना, विघ्न उप-स्थित करना। सङ्ख, पु०, शंस। सङ्खद्ठी, पु॰, कुच्ठ-रोगी, कोढ़ी।

सङ्घ-याल, पु०, शंख-याली। सङ्घ-घम, पु०, शंख बजाने वाला। सङ्घ-नख, प्०, छोटा शंख । सङ्घ-मुण्डिक, नगुं०, त्रास देने की विधि विशेष। सङ्घ-जातक, मणिमेखला ने सप्ताह-मर तक समुद्र में तैरते वीर की सहा-यता करनी चाही, जिसे उसने ग्रस्वी-कार किया (४४२)। सङ्घ जातक, सुसीम के पिता ने मृत पुत्र का सम्मान किया। यह कया जातकट्ठकथा में नहीं है। सङ्ख्यत, कृदन्त, संस्कृत, समुत्पन्न । सङ्ख्यम्म जातक, पुत्र ने पिता को वार-बार शंख बजाने से मना किया (40) 1 सङ्ख्याल जातक, तपस्वी ने शंखपाल नाग को धर्मोपदेश दिया (५२४)। सङ्ख्य, पु०, हानि। सङ्ख्रारण, नपुं०, मरम्मत, तैयारी। सङ्खरोति, मरम्मत करता है, संस्कार करता है। (सङ्घरि, सङ्घत, सङ्घरोन्त, सङ्घ-रित्वा)। सङ्घला, स्त्री०, हाथी के पाँव की शृंखला। सङ्ख्वालिका, स्त्री०, बेड़ी। सङ्खा, (संख्या मी), स्त्री॰, गिनती। सङ्घात, (संस्थात मी), कृदन्त, (अमुक) नाम का। सङ्घादति, किया, चबाता है। (सङ्घादि, सङ्घादित, सङ्घादित्वा) । सङ्घान, (संस्थान मी), गिनती।

सङ्खाय, पूर्वं श्रिया, विचार करके, मनन करके। सङ्घार, पु०, संस्कार। सङ्घारक्खन्ध, पु०, संस्कार-स्कन्ध। सङ्घार-दुक्ख, नवुं०, (उपादान) संस्कार-दुख। सङ्घार-लोक, पु०, सम्पूर्ण प्रकृति । सिङ्गिन्त, कृदन्त, संक्षिप्त। सङ्घिपति, किया, संक्षेप करता है। (सङ्घिप, सङ्घिपन्त, सङ्घिपमान, सङ्घिपितब्ब, सङ्घिपित्वा, सङ्घि-पितुं)। सङ्ख्यात, किया, क्षुब्ध होता है। (सङ्ख्रीभ, सङ्ख्र भित, सङ्ख्र भित्वा) । सङ्ख्रभन, नपुं०, क्षोम। सह्वेप, पु०, संक्षेप, सारांश। सङ्खे य्य, वि०, ज़िसकी गिनती की जा सङ्खेय परिवेण, सागल का वह विहार, जिसमें राजा मिलिन्द के साथ शास्त्रार्थं करने वाले मिक्षु नागसेन रहते थे। सङ्खोभ, पु०, क्षोम, हलचल। सङ्घोभेति, किया, शुब्ध करता है। (सङ्घोभेसि, सङ्घोभित, सङ्घोभेन्त, संङ्घोभेत्वा)। संख्या-भेद, पु०, संख्या-विशेष जैसे एक लाख। सङ्ग, पु॰, ग्रासक्ति। सङ्गच्छति, क्रिया, साय-साथ चलता है। (सङ्गान्छ, सङ्गत, सङ्गन्त्वा)। सङ्गणिका, स्त्री०, समाज। सङ्गणिकाराम, वि०, जिसे समाज में

रहना पसन्द हो। सङ्गणिकारत, वि०, जिसे लोगों में रहना पसन्द हो। सङ्गण्हाति, किया, संग्रह करता है, शालीनता का व्यवहार करता है। (सङ्गण्हि, सङ्गण्हन्त, सङ्गहत्वा, सङ्गहित्वा, सङ्गण्हत्वा, सङ्गयह) । सङ्गम, पु०, मेल। सङ्गर, पु॰, मित्रता, द्रिश्वत, युद्ध, प्रतिज्ञा यं।दि यथौं में। सङ्गह, पु०, संग्रह, ग्रातिय्य। सङ्गति, स्त्री०, साथ रहना। सङ्गाम, पु॰, संग्राम, युद्ध। सङ्गामावचर, वि०, प्रायः युद्ध-रत । सङ्गामावचर जातक, पीलवान के वचनों ने ग्राकामक हाथी को उत्साहित किया (१=२)। सङ्गमेति, किया, संग्राम करता है। (सङ्गामेति, सङ्गामित, सङ्गामेत्वा)। सङ्गायति, किया, संगायन करता है। (सङ्गाय, सङ्गीत, यित्वा)। सङ्गाह, पु॰, संग्रह । सङ्गाहक, वि०, संग्रह करने वाला। सङ्गीति, स्त्री०, तिपिटक के वचनों का संगायन करने के लिए महंतों का सम्मेलन । सङ्गीत-कारक, पु॰, संगीति करने वाले ग्रहंत् गण। सङ्घ, पु०, समूह, परिषद्, मिक्षुयों की मण्डली। सञ्च-कम्म, नपुं ०, मिक्षु-संघ के सदस्यों द्वारा किया गया घामिक कायं। सङ्घ-गत, वि०, संघ को दिया गया

(दान)।

सङ्घ-येर, पु०, संग का ज्येष्ठतम मिक्षु।

सङ्घ-भत्त, नपुं०, संघ को कराया गया मोजन।

सङ्घ-भेद, पु॰, संघ में फूट। सङ्घ-भेदक, पु॰, संघ में भेद पैदा करने

वाला । सङ्घ-मामक, वि०, संघ के प्रति ममत्व

सङ्घ-मामक, वि०, संघ के प्रति ममत्व रखने वाला।

सङ्घटेति, किया, संघटन करता है। (सङ्घटेति, सङ्घटित, सङ्घटेत्वा)। सङ्घट्टन, नपुं०, संगठन, चोट पहुँ-चाना।

सञ्जट्टेति, क्रिया, चोट पहुँचाता है, उत्तेजित करता है।

(सङ्घट्टेसि, सङ्घट्टित, सङ्घट्टेत्वा)।
सङ्घितता थेरी, प्रशोक-पुत्री तथा
महास्थिविर महिन्द की बहन।
उसका जन्म उज्जेनी में हुमा था।
वही बुद्ध गया से बोधि वृक्ष की
शांना लेकर सिहल-द्वीप पहुँची थी।
सङ्घाट, पु०, जोड़, मेल, बेड़ा।

सङ्घाटी, स्त्री०, बौद्ध प्रिक्षु के तीन चीवरों में से एक ।

सङ्घात, पु०, ग्राक्रमण, उँगलियों का चटलाना, संग्रह।

सङ्क्ति, वि०, संघ सम्बन्धी. संव की मिलकियत ।

सङ्घी, वि०, संघ या समूह का नेता।
सङ्घी, वि०, संघ या समूह का नेता।
सङ्घ ट्ठ, ऋदन्त,घोषित, गूंजता हुमा।
सचित, नपुं०, प्रपना चित्त।
सचितक, वि०, चित्त वाजा।
सचित, पु०, राजा का मन्त्री।

सचे, भ्रव्यय, यदि, भगर । सचेतन, वि०, चेतना-युनत, प्राणवान् । सच्च, नपुं०, सत्य, सच; वि०, सत्य (वचन)।

सच्च-प्रभिसमय, पु०, सत्य का ज्ञान । सच्चकार, पु०, प्रतिज्ञा ।

सच्च-किरिया, स्त्री०, किसी सत्य बात की बाजी लगाकर कोई कामना करना।

सच्चिङ्किर जातक, दुष्ट राजकुमार ग्रकृतज्ञ निकला (७३)।

सच्च-पटिवेघ, पु०, सत्य का साक्षात्-कार।

सच्चबद्ध, श्रावस्ती तथा सूनापरन्त के बीच का कोई पवंत । सच्च-वाचा, स्त्री०, सत्य वाणी । सच्चवादी, पु०, सत्य वोलने वाला । सच्च-सन्ध, वि०, विश्वसनीय । सच्चापेति, क्रिया, शपथ दिलाता है । (सच्चापेति, सच्चापित, सच्चा-पेत्वा) । सच्छिकरण, नपुं०, साक्षात् करना ।

सिन्छकरण, नपुं०, साक्षात् करना । सिन्छकरणीय, वि०, साक्षात् करने योग्य ।

सिन्छकत, कृदन्त, साक्षात् कृत । सिन्छकरोति, किया, साक्षात् करता है।

(सिन्छकरि, सिन्छकरोन्त, सिन्छ-कातब्ब, सिन्छकत्वा, सिन्छकरित्वा, सिन्छकातुं, सिन्छकरितुं)।

सिन्छिकिरिया, स्त्री०, देखो सिन्छ-

सजित, किया, गले लगाता है। (सजि, सजमान, सजित्वा)।

सजन, पु॰, रिश्तेदार, स्वकीय जन। सजातिक, वि०, उसी जाति या नस्ल का । सजीव, वि०, प्राणवान्, जीवन-युक्त । सजोति-मूत, वि०, प्रज्वलित । सज्जित, किया, चिपटता है, ग्रासक्त होता है। (सज्जि, सट्ठ, सज्जमान, सज्जित्वा)। सज्जन, नपुं०, ग्रासक्ति, सजावट, तैयारी; पु०, सत्पुरुष । सज्जित, कृदन्त, तैयार हुआ। सज्जु, भ्रव्यय, तुरन्त, उसी समय। सज्जुकं, कि॰ वि॰, शीघ्रता से। सज्जु-हुम, पु०, शाल-वृक्ष । सज्जलस, पू०, राल। सज्जेति, क्रिया, तैयारी करता है, सजाता है। सज्जेन्त, (सज्जेसि, सज्जेत्वा, सज्जिय)। सज्भाय, पु०, ग्रध्ययन, पाठ। सज्भायति, क्रिया, ग्रध्ययन करता है, दोहराता है, मिलकर पाठ करता है। (सज्कायि, सज्कायित, सज्ञा-यित्वा, सज्भायमान)। सज्भायना, स्त्री०, मिलकर करना, ग्रध्ययन करना। सज्भु, नपुं०, चीदी। सज्भूमय, वि०, चांदी का बना। सञ्चय, पू०, एकत्रीकरण, इकट्ठा करना । सञ्चरण, नपुं०, विचरना। सञ्चरति, विचरता है, घूमता है। (सञ्बरि, सञ्बरित, सञ्बरन्त,

सञ्चरित्वा)। सञ्चरित्त, नप्ं, सन्देशों का ले जाना । सञ्चार, पु०, रास्ता, हलचल, संच-रण। सञ्चारण, नपुं०, चलने के लिए ग्रयवा कुछ करने के लिए प्रेरित सञ्चारेति, किया, संदार कराता है। (सञ्चारेसि, सञ्चारित, सञ्चा-रेत्वा)। सञ्चलति, किया, ग्रस्थिर होता है, उत्तेजित होता है। (सञ्चलि, सञ्चलित, सञ्चलित्वा)। सञ्चलन, नपुं०, हलचल, उत्तेजना । सञ्चिच्च, ग्रज्यय, जान-बुभकर। सञ्चित, कृदन्त, एकत्रित । सञ्चिनन, नवं०, एकत्रीकरण, इकट्ठा करना। सञ्चिनाति, किया, इकट्ठा करता है, चयन करता है। (सञ्चिन, सञ्चिनन्तः सञ्चिनित्वा)। सञ्चिण, कृदन्त, संगृहीत, भ्रम्यस्त, भाचरित । सञ्चुण्णेति, क्रिया, पीस डालता है, चुणं बना देता है। (सञ्चुण्णेसि, सञ्चुण्णित, सञ्चु-ण्णेत्वा)। सञ्चेतना, स्त्री०, चेतना, इरादा। सञ्चेतनिक, वि०, जान-बुभकर। सञ्चेतेति, किया, सोचता है, सुम-बुक्त दिखाता है।

(सञ्चेतेसि, सञ्चेतेत्वा) । सञ्चोदित, कृदन्त, प्रेरित, उत्तेजित, उत्साहित । सञ्चोपन, नपुं०, हटाना, स्थानान्तरित करना । सञ्छन्न, कृदन्त, दका हुमा, मरा हमा। सञ्छादेति, दकता है, छत डालता है। (सञ्छादेसि, सञ्छादित, सञ्छा-देत्वा)। सञ्छिन्दति, किया, काट डालता है, नष्ट कर डालता है। (सञ्छिन्त, सञ्छिन, सञ्छ-न्दित्वा)। सञ्जन्घति, किया, हंसता है, मजाक करता है। (सञ्जिंध, सञ्जिग्धित्वा, सञ्जग्धन्त)। सञ्चयन, नप्ं, उत्पत्ति । सञ्जनेति, किया, उत्पन्न करता है, पंदा करता है। (सञ्जनेसि, सञ्जनित, सञ्ज-नेत्वा)। सञ्जय, वेलट्ठपुत्त, भगवान् बुद्ध के समकालीन छह प्रमुख प्राचार्यों में से एक । वह सम्पूर्ण रूप से प्रनिश्चय-वादी या। सञ्जात, कृदन्त, उत्पंत्न, उठा, पदा हमा। सञ्जाति, स्त्री०, उत्पत्ति, जन्म ग्रहण करना। सञ्जानन, नपुं०, पहचानना, जानना। सञ्जानाति, किया, पहचानता है, धनुभव करता है।

(सञ्जानि, सञ्जानित्वा, सञ्जा-नन्त)। सञ्जानित, कृदन्त, पहचान लिया गया, जान लिया गया। सञ्जायति, क्रियां, जन्म ग्रहण करता है, पैदा होता है, उत्पन्न होता है। (सञ्जायि, सञ्जात, सञ्जायमान, सञ्जायित्वा)। सञ्जीव जातक, सञ्जीव मुदों को जिलाना जानता था, फ़िर मारना नहीं (१५०)। सञ्जीवन, वि०, पुनर्जीवन, प्राण-संचार । सञ्भा, स्त्री०, सन्ब्या-काल। सञ्का-धन, पू०, शाम के बादल। सञ्भातप, पु॰, शामकी घूप। सञ्जत, कृदन्त, प्रेरित, सूचित । सञ्जत्ति, स्त्री०, सूचना, शान्त-माव। सञ्जा, स्त्री०, जानने की मानसिकः क्रिया, नाम, इशाराः। सञ्जा-बलन्ध, पांच स्कन्धों में से तीसरा, संज्ञा-स्कन्ध। सञ्जापक, पू०, सूचना देने बाला। सञ्जापन, नपुं०, जानकारी देना, सुचित करना। सञ्जाण, नपुं०, संकेत, इशारा। सञ्जापेति, क्रिया, प्रकट करता है, सूचित करता है। (सञ्जापेति, सञ्जापित, सञ्जा-पेत्वा)। सञ्जित, वि०, संज्ञा वाला, नाम वाला। सञ्जी, वि०, होश में सद्ठि, स्त्री०, साठ।

सद्ठिहायन, वि०, साठ वर्ष का । सट्ठूं, त्याग देने के लिए, छोड़ देने के लिए। सठ, वि०, शठ, दुष्ट, ठग। सठता, स्त्री०, शठता। सणित, किया, शोर मचाता है। सण्ठपन, न्युं॰, स्थापित करना। सण्ठपेति, किया, स्थापित करता है। (सण्ठपेसि, सण्ठपेत्वा) । सण्ठहन, नपुं०, दुबारा पदाइश, दुवारा उत्पत्ति। सण्ठाति, किया, ठहरता है, स्थित होता है। (सण्ठासि, सण्ठहित्वा, सण्ठहन्त) । सण्ठान, नपुं०, ग्राकार-प्रकार, संस्थान, स्थिति । सण्डित, कृदन्त, स्थित, संस्थापित । सण्ठित, स्त्री०, स्थिरता, संस्थिति । सण्ड, पु०, भुण्ड, समूह। सण्डास, पु०, सण्डासी । सण्ह, वि०, चिकना, नमं, मृदु। सण्हकरणी, स्त्री०, चनकी, खरल। सण्हेति, किया, पीसता है, चूणें बनाता है। (सण्हेसि, सण्हित, सण्हेत्वा)। सत, वि०, चेतन, जागरूक; न्पू०, सतक, नपुं०, सीजने या सी चीजें। सतक्ककु, वि०, सी लकीरों वाला। सतक्बत्ं, ऋ॰ वि॰, सी बार। सतवा, कि॰ वि॰, सी तरह से। सत-पाक, नवुं०, सी बारं पकाया हुआ (तेल)। सतपुञ्जनक्सण, वि०, ग्रनेक पुष्य-

चिह्नों वाला। सत-पोरिस, वि०, सौ मादिमयों की ऊँवाई जितना। सत-सहस्स, नपुं०, लाख । सतत, वि०, लगातार। सततं, कि॰ वि॰, लगातार, निरन्तर, सतघम्म जातक, सतघम्म ब्राह्मण ने भूख से पीड़ित होने पर चाण्डाल का जुठा मात खाया (१७६)। सत-पत्त, नपुं०, कमल; पु०, कठ-फोड़वा। सतपत्त जातक, मौ का कहना मान लड़का बापं द्वारा दिए गए हजार वसूल करने गया (२७६)। सतयदी, पु॰, कनखजूरा। सत-भिसज, पू॰, सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। सतमूली, स्त्री०, सतावर। सतरंसी, पु॰, सूर्य। सत-वंक, पु॰, मछली विशेष। सतावरी, पु॰, शतावरी। सति, स्त्री०, स्मृति, जागरूकता। सतिन्द्रिय, नपुं०, जागरूकता। सति-पट्ठान, नपुं०, स्मृति-उपस्थान। सतिमन्तु, वि०, स्मृतिमान, विचार-वान्। सति-बोसग्ग, पु॰, प्रमाद। सति-सम्पञ्ज, नपुं ०, जागरूकता। सति-सम्बोज्मङ्ग, पु०, सम्बोध-प्रङ्ग स्वरूप समृति। सति-सम्मोस, पु॰, विस्मृति । सति-सम्मोह, पु०, विस्मृति। सती, स्त्री॰, पतिवता स्त्री।

सतेकिच्छ, पु०, जिसकी चिकित्सा हो सके, जिसे क्षमा किया जा सके। सत्त, पु०, सत्व, प्राणी; कृदन्त, ग्रासक्त; वि०, सात (संख्या)। सतक, नपुं , सात का समूह, सप्तक। सत्तवसत्ं, कि॰ वि॰, सात बार। सत्त-गुण, वि०, सात-गुना। सत्त-तन्ति, वि०, सात तारों वाली (वीणा)। सत्त-ताल-मत्त, वि०, ताड़ के सात पेड़ों की ऊँचाई जितना। सत्त-तिसा, स्त्री०, सेंतीस। सत्त-पण्णी, पु०, संतपणी-वृक्ष । सत्तपण्णी गुहा, राजगृह की प्रसिद्ध गुफा, जिसमें प्रथम बौद्ध संगीति हुई थी। सत्त-भूमक, वि०, सात तल्ले वाला (मवन)। सत्त-महासर, पु०, ग्रनोतत्त ग्रादि सात महान् ताल। सत्त-रतन, नपुं०, सोना, चाँदी ग्रादि सांत मूल्यवान् पदार्थ। सत्त-रत्त, नपुं०, सप्ताह। सत्तरस, (सत्तदस भी), वि०, सत्रह। सत्तला, स्त्री०, नवमल्लिका। सत्त-वंक, पुर, मछली विशेष। सत्त-बस्सिक, वि०, सात वर्ष का। सत्त-बीसति, स्त्री०, सत्ताईस। सत्त-सर्इठ, स्त्री०, सड़सठ। सत्त-सत्तति, स्त्री०, सतहत्तर। सत्तति, स्त्री॰, सतहत्तर। सत्तम, वि , सातवी। सत्तमी, स्त्री॰, सातवा दिन, सप्तमी विमन्ति।

सता, स्त्री०, ग्रस्तित्व। 'सत्ताह, नपुं०, सप्ताह। सत्ति, स्त्री॰, शक्ति, योग्यता, सामर्थं, वर्छी । सत्ति-सूल, नपुं०, बर्छी की नोक। सत्तिपुम्ब जातक, डाक्य्रों के पास रहने वाले तोते ने राजा को मार डालने की बातें कीं, तपस्वियों के पास रहने वाले तोते ने राजा का स्वागत कियां (X03) 1 सत्तु, पु०, शत्रु, सत्तु। सत्तु-भस्ता, स्त्री०, सत्तु की थैली। सत्ता जातक, एक सांप बाह्मण की सत्त्रों की यैली में घुस गया (805)1 सत्य, नपुं०, शास्त्र, शस्त्र; पु०, सार्थ, कारवां। सत्यक, नपुं०, छुरी। सत्य-कम्म, नपुं०, शल्य-क्रिया। सत्यक-वात, पु०, तीव वेदना। सत्य-गमनीय, वि०, कारवां के साथ जाने लायक रास्ता। सत्य-वाह, पु०, कारवा का मुखिया। सित्य, स्त्री ०, जांघ। सत्यु, पु॰, शास्ता। सत्र, नपुं , नियमित दान। सत्वादि, सत्, रज, तम ग्रादि गुण। सदृत्य, पु०, सदर्थ, ग्रात्म-कल्याण। सदन, नपुं०, घर। सदर, वि०, दु:खद, हरावना, भया-नक। सदस, वि०, किनारी वाली (चटाई)। सवस्स, पु०, प्रच्छा घोड़ा, प्रच्छी नस्त का घोड़ा।

सदा, ऋि० वि०, हमेशा। सदातन, वि०, सदैव बना रहने वाला। सदार, पू०, ग्रपनी पत्नी। सदार-तुट्ठ, स्त्री०, ग्रपनी पत्नी से ही संतुष्ट रहना। सदिस, विव, सहश, समान। 'सदिसत्त, नवं०, बराबरी। सद्म, पु० तथा नपुं०, सदा, घर। सदेवक, वि०, देवताओं सहित। सद्व, पू०, शब्द, ग्रावाज। सद्दत्य, पु०, शब्द का प्रयं। सद्द-विदू, पु०, नानाविध प्रावाजों को समभ सकने वाला। सद्दवेघी, पु०, शब्दवेघी बाण चला सकने वाला। सद्दसत्थ, नपुं ०, शब्द-शास्त्र । सद्दल, पू०, नये चास से ढकी जगह। सददहति, किया, श्रद्धा करता है. विश्वास करता है। (सद्दृहि, सद्दृहित, सद्हृन्त, सद्व-हित्वा, सद्दृहितब्ब)। सब्दहन, नपुं०, विश्वास करना। सद्दहना, स्त्री०, विश्वास करना। सददहान, प्०, विश्वास करने वाला। सहायति, किया, शब्द करता है। (सद्दायि, सद्दायित्वा, सद्दायमान) । सद् ल, पु०, तेन्दुमा, सिंह। सद्ध, वि०, श्रद्धा करते हुए। सदम्म, पु॰, सत्-धमं। सद्धा, स्त्री०, श्रद्धा, मनित। सद्धातब्ब, कृदन्त, श्रद्धा करने योग्य। सद्धादेय्य, वि०, श्रद्धापूर्वक दिया हुमा (दान)। सद्धा-थन, नपुं०, श्रद्धारूपी वन ।

सदायिक, वि०, विश्वसनीय। सद्वाल्, वि०, श्रद्धाल् । सद्धि-विहारिक, (सद्धि-विहारी मी), पु०, सब्रह्मचारी। सद्धि, प्रव्यय, साथ । सद्धि-चर, वि०, साथी। सघन, वि०, घनी। सघम्मी, प्०, समान धर्मी। सनति, क्रिया, देखी सणति। सनंतन, वि०, सनातन, सदा से। सनाभिक, वि०, नामि सहित। सनित, कृदन्त, घ्वनित, जिसकी नाक बजती हो । सन्त, कृदन्त, शान्त, श्रान्त वि०, विद्यमान; पु०, हमा); सत्पुरुष । सन्त-काय, वि०, शान्त-शरीर। सन्त-तर, वि०, शान्ततर। सन्त-मानस, वि०, शान्त-चित्त। सन्त-भाव, पु०, शान्त-माव। सन्तक, वि०, स्वकीय, भपना, (स+ भन्तक) सीमित; नपुं०, सम्पत्ति । सन्तज्जेति, किया, त्रास देता है, डराता है। (सन्तज्जेसि, सन्तज्जित, सन्तज्जेन्त, सन्तज्जयमान, सन्तज्जेत्वा)। सन्ततं, कि॰ वि॰, देखो सततं। सन्तति, स्त्री०, सन्तति, परंम्परा। सम्तत्त, कृदन्त, सन्तप्त, तपा हुमा। सन्तप्पति, क्रिया, अनुतप्त होता है; दुस्तित होता है। (सन्तिष्प, सन्तप्पमान, सन्तत्त)। सन्तिप्पत, कृटन्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न । सन्तप्पेति, कि०, सन्तुष्ट होता है,

प्रसन्न होता है। (सन्तप्पेसि, सन्तप्पेन्त, सन्तप्पेत्वा, सन्तिप्पय, सन्तिप्पत) । सन्तर-वाहिर, वि०, मीतर बाहर। सन्तर-बाहिरं, कि॰ बि॰, भीतर-बाहर करके। सन्तरति, किया, शीघता करता है, जल्दी करता है। (सन्तरि, सन्तरमान)। सन्तसति, किया, हरता है, मयमीत होता है। (सन्तसि, सन्तसन्त, सन्तसित्वा)। सन्तसन, नपुं०, भथ, डर। सन्तान, नपुं०, सन्तति, परम्परा, मकडी का जाला। सन्तानेति, क्रिया, परम्परा बनाए रखता है। सन्ताप, पु॰, ताप, पश्चाताप। सन्तापेति, क्रिया, तपाता है, जलाता है, त्रास देता है। सन्तापित, (सन्तापेसि, पेत्वा)। सन्तास, पु०, डर, त्रास, कांपना। सन्तासी, वि०, कांपता हुआ, डरता हुआ। सन्ति, स्त्री०, शान्ति । सन्ति-कम्म, नपुं०, शान्ति स्थापित करना। सन्ति पद, नपुं०, शान्त-भ्रवस्था। सन्तिक, विट, समीप; नपुंठ, पड़ोस। सन्तिका, ग्रव्यय, (उसके पास) से। सन्तिकावचर, वि०, नजदीक रहने वाला।

सन्तिके निदान, जातकट्ठकथा का वह माग, जिसमें मगवान् बुद्ध के बुद्धत्व-लाम से लेकर परिनिवृत्त होने तक का वृत्तान्त संगृहीत है। सन्तिट्ठति, क्रिया, ठहरता है, निश्चल रहता है। सन्तीरण, नपुं०, खोज-बीन करना। सन्तुट्ठ, कृदन्त, सन्तुष्ट, प्रसन्त-चित्त । त्रन्तुट्ठता, स्त्री०, सन्तुष्ट रहना। सन्तुट्ठ, स्त्री०, सन्तोप, ग्रानन्द । सन्तुसित, देखो सन्तुट्ठ । सन्तुस्सक, वि० सन्तुष्ट, प्रसन्त । सन्तुस्सन, नपुं०, सन्तोप । सन्त्रसति, क्रिया, सन्तुष्ट रहता है। (सतुस्समान, सन्तुट्ठ, सन्तुसित) । सन्तोस, पु०, सन्तोप। सन्यत, कृदन्त, ढका हुमा। सन्थम्भेति, किया, कठोर बनता है। (सन्थम्भेसि, सन्थम्भित, मिभत्वा)। सन्यम्भना, स्त्री०, कठोर होना । सन्यर, पु॰, चटाई; नपुं॰, बिछाना । सन्यरति, किया, विद्याता है। (सन्यरि, सन्यरित्वा) । सन्थरापेति, किया, विखवाता है। सन्थव, पु॰, गहरी मित्रता, संसगं, समागम। सन्यवजातक, ग्राग्न को दी गई घाहति के कारण कुटिया में ग्रांग लग गई (१६२)। सन्यागार, पू॰ तया नपुं॰, समा-भवन। सन्यार, पु०, फशं, विछावन ।

सन्युत, कृदन्त, परिचित । सन्द, वि०, घना; पु०, बहाव। सन्दच्छाय, ति०, घनी छाया वाला। सन्दति, ऋिया, बहता है। (सन्दि, सन्दित, सन्दित्वा, सन्द-मान)। सन्दन, नपुं०, वहना; पु०, रथ। सन्दस्सक, पु०, दिखाने वाला। सन्दस्सन, नपुं०, शिक्षण, मार्ग-दर्शन । सन्दरिसयमान, वि०, शिक्षित । सन्दरसेति, ऋिया, समकाता है, व्याख्या करता है। (सन्दस्सेसि सन्बस्सित, स्सेत्वा)। सन्दहति, किया, मेल बिठाता है। (सन्दहि, सन्दहित, सन्दहित्वा) । सन्दहन, नपं०, मेल विठाना । सन्दान, नपुं०, जंजीर, परम्परा। सन्दालेति, क्रिया, तोड़ता है, चीरता है। (सन्दालेसि, सन्दालित, सन्दालेत्वा)। सन्दिट्ठ, कृदन्त, एक साथ देखे गये; पु०, मित्र। सन्दिट्ठिक, वि०, दिखाई देने वाला, इह-लोक सम्बन्धी। सन्दित, कृदन्त, बहा। सन्दिख, कृदन्त, विष-मिश्रित। सन्दिस्सति, किया, दिखाई देता है। सन्दीपन, नपुं०, स्पष्ट करना, प्रका-शित करना। सन्दीपेति, किया, प्रकाशित करता है। (सन्बीपेसि, सन्बीपित, सन्बीपेत्वा) । सन्वेस, पु०, सन्देश। सन्देस-हर, पु०, सन्देश-वाहक।

सन्देसागार, नपुं , डाकसाना । सन्वेह, पु०, शक, प्रपनी देह । सन्दोह, पु०, ढेर। सन्धन, नपुं०, निजी सम्पत्ति । सन्वमति, क्रिया, फ्रांकता है, बजाता (सन्धमि, सन्धमित्वा)। सन्घातु, पु०, मेल मिलाने वाला। सन्धान, नपुं ०, मेल, एकता। सन्वाय, पूर्वं > क्रिया, मेल होकर। सन्वारक, वि०, सहन करते हुए, रोकते हुए। सन्धारण, नपुं०, रोकना। सन्धारेति, किया, सहन करता है। (सन्धारेसि, सन्धारित, सन्धारेत्वा, सन्धारेन्त)। सन्धावति, किया, दौडता है। (सन्धावि, सन्धावित, सन्धावित्वा, सन्धावन्त, सन्धावमान)। सन्धि, स्त्री॰, मेल, समभौता। सन्धिच्छेदक, वि०, सेंघ लगाने वाला। सन्धिमेद जातक, गौ ग्रीर शेर की सन्तान के बीच स्थापित . हए मैत्री-सम्बन्ध को एक गीदड़ ने नष्ट किया (388) 1 सन्धिमुल, नपुंठ, संघ का मूँह । जन्धीयति, किया, मैल मिलाया जाता सन्ध्पायति, किया, धुम्रां बाहर निका-लता है। (सन्ध्यायि, सन्ध्यायित्वा) । सन्ध्येति, क्रिया, घुआँ देता है। (सन्ध्वेसि, सन्ध्वित, सन्ध्वेत्दा) । सन्नम्हति, किया, शस्त्र बीचता है।

(सन्निय्ह, सन्निय्हत्वा, सन्नय्ह,) । सन्नकद्दु, पु०, वृक्ष विशेष । सन्नद्ध, कृदन्त, बँघा हुग्रा, हथियार-बन्द । सन्नाह, पू०, कवच। सन्निकट्ठ, नपुं०, पड़ोस । सन्निकास, वि०, मेल खाता हुमा, समान । सन्निचय, पु०, संग्रह । सन्निचित, कृदन्त, संगृहीत। सन्निट्ठान, नयुं०, सारांश। सन्निधान, नपुं ०, सामीप्य । सन्निधि, पू०, एकत्र करना, जमा करना। सन्निध-कारक, पू०, जमा करके रखने वाला। सन्निध-कत, वि०, जमा किया हुग्रा (माल)। सिन्नपतित, किया, सम्मेलन होता है। (सन्निपति, सन्निपतित, सन्निपतित्वा, सन्निपन्त)। सन्निपात, पु०, सम्मेलन, वात-पित्त-कफ का मेल। सन्निपातिक, वि०, शारीरिक गुणों (वात-पित-कफ) का परिणाम। सन्निपातन, नपुं०, इकट्ठा करना । सन्तिपातेति, क्रिया, सम्मेलन बुलाता (क्षन्तिपातेसि, सन्तिपातित, सन्ति-पातेत्वा)। सन्तिभ, वि०, मेल खाता हुया। सन्नियातन, नपुं०, सौंपना, स्तीफा देना । सिन्तरम्भन, नपुं०, रोकना।

सन्नियम्भेति, किया, रोकता है, बाघा करता है। (सन्निवम्मेसि, सन्निवम्भित, सन्नि-रुम्भेत्वा)। सन्निवसति, क्रिया, एक साथ रहता सन्नियास, पु०, संगति । सन्निवेस, पु०, एक साथ रहना। सन्निसीदति, क्रिया, शान्त हो जाता है, स्थिर हो जाता है। (सन्निसीदि, सन्निसीदित्वा)। सन्निस्तित, वि०, ग्राश्रित, सम्बन्धित। सन्निहित, कृदन्त, रखा गया। सन्नेति, किया, मिश्रित करता है। (सन्नेसि, सन्नित, सन्नेत्वा) । सपच, पु०, चण्डाल, मंगी। सपजापतिक, वि०, पत्नी सहित। सपति, किया, शपय खाता है। (सपि, सपित, सपित्वा)। सपत्ता, पु०, विरोधी, शत्रु; वि०, विरोधी। सपरा-भार, वि०, ग्रपने परों के भार को लिये। सपत्ती, स्त्री ०, सपत्नी, सौत । सपथ, पु०, शपथ। सपदान, वि०, ऋमशः। सपदानं, ऋि० वि०, ऋमशः। सपवान-चारिका, स्त्री०, बिना मी घर छोड़े, हर घर से मिक्षाटन करना। सपदि, ग्रव्यय, तुरन्त। सपरिग्गह, वि०, ग्रपनी सम्पत्ति ग्रयवा पत्नी के साथ। सपाक, (सोपाक भी), पु॰, भन्त्यज,

कृते खाने वाला। सप्प, पु०, सपं, सांप। सप्प-पोतक, पु॰ सांप का बच्चा। सप्पच्चय, वि०, सहेतुक, सकारण। सप्पञ्ज, वि०, बुद्धिमान् । सप्पटिघ, वि०, जिससे सम्बन्ध स्या-पित किया जा सके, जिससे प्रति-किया हो। सप्पटिभय, वि०, भयानक। सप्पति, क्रिया, रेंगता है। सप्पन, नपुं०, रेंगना। सप्पाणक, वि०, प्राणी-सहित । सप्पाय, वि०, लाम-प्रद। सप्पायता, स्त्री०, कल्याणकारी होना। सप्पि, नपुंग, घी। सिंपनी, स्त्री०, सांपिन सिंपनी, (सिंपनिका भी), राजगृह के बीच से बहने वाली नदी। सप्पीतिक, वि०, प्रीति-युक्त। सप्परिस, पु०, सत्पुरुष । सफरी, स्त्री०, मछली-विशेष। सफल, वि०, फल-युक्त। सवंस, वि०, बलशाली। सब्ब, वि०, सब । सब्बकनिट्ठ, वि०, सबसे छोटा। सब्बकम्मिक, वि०, सर्वकामी (मंत्री)। सब्ब-चतुष्पद, पु०, सभी चतुष्पाद। सब्बञ्जू, वि०, सब जानने वाला; पु०, मगवान् बुद्ध । सब्बञ्ज्ञता, स्त्री०, सर्वज्ञ-माव । सब्बट्ठक, वि॰, सभी भाठ प्रकार की चीजें। सब्बतो, हर तरह से। सम्बत्य, किं वि०, सर्वत्र; हर जगह। सम्बन्न, देखी सन्बत्य। सब्बया, कि॰ वि॰, हर तरह से। सब्बदा, कि० वि०, सर्वदा, हमेशा। सब्बदाठ जातक, ग़ीदड़ ने ब्राह्मण से 'पृथ्वी-जय' नाम का मन्त्र सीख कर जंगल के सभी प्राणियों की वशीभूत कर लिया ग्रीर स्वयं उनका राजा वन वैठा (२४१)। सब्बधि, कि॰ वि०, सर्वत्र । सब्बपठम, वि०, सबसे प्रमुख । सन्बपठमं, कि॰ वि॰, सबसे भागे, सबसे पहले। सब्ब-विदू, विष्, सब जानने वाला। सब्ब-सत, वि०, सभी सी-सी प्रकार की चीजें। सब्बसो, कि॰ वि॰, सब तरह से। सब्ब-सोवण्ण, वि०, सम्प्रणं स्वर्ण-निर्मित । सब्बस्स, नवुं ०, तमाम सम्पत्ति । सब्बस्सहरण, नपुं०, सारी सम्पत्ति का हरण। सब्भ, वि०, गुणों वाला। सब्रह्मक, वि०, ब्रह्मलोक सहित। सब्रह्मचारी, पु॰, सहपाठी, गुरु-माई। सभग्गत, वि०, समा में गया हुया। सभा, स्त्री॰, परिषद्। सभाग, वि०, समान, एक ही विमाग से सम्बन्धित । समागट्ठान, नपुं०, प्रनुकूल स्थान, सुविधा का स्थान। सभागवुराी, वि०, परस्वर शालीनता पूर्वक रहने वाला। सभाय, नपुं०, समा-मवन । सभाव, पु०, स्वमाव, प्रकृति ।

समाव-घम्म, qo, स्वमाव सिद्धान्त । सभोजन, वि०, मोजन-सहित। सम, वि०, (सम)बरावर; पु०, (शम) निश्चलता, शान्ति, (श्रम) यकावट। समक, वि०, बराबर करने वाला। समं, कि॰ वि॰, बराबर वराबर। समेन, कि॰ वि॰, बिना पक्षपात के। समाग, वि०, समग्र-माव, एकता। समाग-करण, नप्ं, मेल कराना। समग्गला, नपं०, समग्र-माव, सम-भौता। समागरत, वि०, एकता में प्रसन्त । समग्गाराम, वि०, एकता में प्रसन्त। समङ्किता, स्त्री०, युक्त होना । समञ्जी, वि०, युक्त, समन्वित । समङ्गीभूत, वि०, युक्त। समचरिया, स्त्री॰, शान्त चर्या। समिचता, वि०, शान्त-चित्त। समचित्तता, स्त्री०, शान्त-चित्त होने का भाव। समजातिक, वि०, एक ही जाति का। समज्ज, नपुं०, मेले की भीड़। समज्जद्ठान, नपुं०, मेले की जगह । समज्जाभिचरण, नप्०, मेलों में घुमना । समञ्जा, स्त्री०, पद, नाम । समञ्जात, वि०, पद-प्राप्त, जाना हमा। समण, नपुं०, साधु। समण-कुत्तक, पु॰, बनावटी साधु। समणी, स्त्री०, साध्वी। समणुद्देसा, प्०, थामणेर । समण-धम्म, पू०, श्रमण-धमं ।

का ८समण-सारुप, वि०, श्रमण के योग्य। समता, स्त्री०, बराबरी। समतिक्कन्त, कृदन्त, लांघ गया, सीमा पार कर गया। समतिकाम, पू॰, सीमा लांघ जाना। समतिक्कमति, किया, सीमा लोघ जाता है। (समतिक्कमि, समतिक्कमित्वा)। समतित्तिक, वि०, किनारे तक मरा हम्रा । समतिवत्तति, ऋिया॰, सीमा लौघता है। (समतिवत्ति, समतिवत्तित्वा, समति-बत्तित)। समत्त, वि०, सम्पूर्ण; नपुं०, समत्व, बराबरी का माव। समत्य, वि०, सामध्यंवान । समत्यन, नपुं०, भगड़े का फैसला। समय, पु०, चित्त की शान्ति; कानूनी भगड़ों का निबटारा। समय-भावना, स्त्री०, चित्त-शान्ति का श्रम्यास । समधगच्छति, किया, प्राप्त करता है, मली प्रकार समभता है। (समधिगन्छि, समधिगत, समधि-गन्त्वा)। समनन्तर, वि०, तुरन्त बाद का। समनन्तरा, कि॰ वि०, ठीक बाद में। समनुगाहति, किया, कारणों का पता लगाता है। (समनुगाहि, समनुगाहित्वा)। समनुञ्ज, वि०, स्वीकृत। समनुञ्जा, स्त्री०, स्वीकृति। समनुञ्जात, वि०, स्वीकृत, प्रनुमत ।

समनुपस्सति, किया, देखता है, अनुभव करता है। (समनुपस्सि, समनुपस्समान, समनु-पस्सित्वा)। समनुभासति, क्रिया, बातचीत कर्ता है। (समनुभासि, समनुभासित, समनु-भासित्वा)। समनुभासना, स्त्री०, वार्तालाप, बात-चीत, पूर्वाम्यास । समनुयुञ्जति, ऋिया, प्रश्नोत्तर करता है। (समनुयुञ्जि, समनुयुञ्जित्वा) । समनुस्तरति, क्रिया, धनुस्मरण करता है। (समपुस्सरि, समनुस्सरन्त, समनु-स्सरित्वा)। समन्त, वि०, सव, सारा। समन्त-चक्ख, वि०, सब कुछ देखने वाला समन्त-पासादिक, वि०, सबको प्रसन्न रखने वाला। समन्त पासादिका, प्राचायं बुद्धघोष रचित विनय-पिटक की प्रट्ठकथा। समन्त-भद्दक, वि०, सबके लिए कल्याणकारक। सिंहल-द्वीप का समन्त-कूट पब्बंत, पवंत-शिखर विशेष, जो मगवान् बुद्ध के जरण-चिह्न से पूत हुआ माना-जाता है। समन्ता, (समन्ततो) भी, कि॰ वि॰, चारों मोर से। समन्नागत, वि०, युक्त।

समन्नाहरति, किया, इकट्ठा करता है। (समन्ताहरि, समन्ताहट, समन्ता-हरित्वा)। समपेक्खति, किया, मली प्रकार देखता (समपेक्ख, समपेविखत्या, सम-पेक्सित)। समप्पेति, किया, समपित करता है, सींवता है। (समप्पेसि, समप्पित, समप्पेत्वा, समप्पय)। . समय, पु०, काल, परिषद्, ऋतु, ग्रव-सर, घामिक मत। समयन्तर, नपं०, मिन्न-मिन्न सम्प्रदाय । समर, नपुं०, युद्ध। समल, वि०, ग्रपवित्र, मल-सहित। समलङ्कत, कृदन्त, ग्रलंकृत । समलङ्करोति, क्रिया, सजाता है। समलङ्करित्वा, (समलङ्करि, समलङ्कत) । समवाय, पु०, मेल, एकत्र होना। समवेक्खति, किया, मली प्रकार छान-बीन करता है, प्रतीक्षा करता है। समवेदिखत्वा, सम-(समवेक्खि, वेक्खित)। समवेपाकिनी, स्त्री०, हजम करने वाली। सम-सिप्पी, पु०, समान शिल्प वाले, हमपेशा । समस्सास, पु॰, सहायता, विश्वाम । समस्सासेति, ऋया, सहायता पहुँचाता है, प्राराम पहुँचाता है।

(समस्सासेसि, समस्सासेत्वा) । समा, स्त्री॰, वर्ष । समाकड्ढति, किया, सार निकालता है, खींचता है। (समाकडिंढ, समाकडिंढत्वा)। समाकड्ढन, नवुं०, खींचना, घसीटना, सार निकालना। समाकिण्ण, वि०, एकत्र किया हुआ, भरा हुमां, बिखेरा हुमा। समागच्छति, क्रिया, भाकर मिलता है, एकत्र होता है। (समागिच्छ, समागन्त्वा, समा-गम्म, समागत)। समागत, कृदन्त, एकत्रित। समागम, पु॰, परिषद्, समा। समाचरति, किया, ग्राचरण करता है, म्रम्यास करता है। (समाचरि, समाचरन्त, समा-चरित्वा)। समाचरण, नपुं०, भाचरण, व्यवहार। समाचार, पु०, ग्राचरण, व्यवहार। समादपक, (समादपेतु मी), पु०, उत्साहित करने वाला, प्रेरित करने वाला । समादपन, नपुं०, उत्साहित करना, प्रेरित करना, उत्तेजित करना। समादपेति, किया, उत्साहित करता है, प्रेरित करता है, उत्तेजित करता है। (समादपेसि, समादपित, समाव-पेत्वा)। समादहति, किया, जोड़ता है, एकाप्र करता है, (ग्रग्नि) जलाता है। (समादह, समावहन्त, हित्वा) ।

समादाति, किया, ग्रहण करता है, स्वीकार करता है। समादान, नपुं०, स्वीकार करना; ग्रंगी-कार करना, ग्राचरण करना। समादाय, पूर्वं किया, लेकर। समादियति, ऋिया, ग्रंगीकार करसा समादि-(समादियि, समादिन्न, यित्वा, समादियन्त)। समादिसति, किया, ब्रादेश देता है, म्राज्ञा देता है। (समादिसि, समादिट्ठ, समादि-सित्वा)। समाधान, नपुं०, एकत्र करना, एका-युता । भ्समाधि, पुo, योगाम्यास, चित्त की एकाग्रता । समाधिज, वि०, समाधि से उत्पन्न । समाधि-बल, नपुं०, समाधि का बल। समाधि-भावना, स्त्री०, समाधि का ग्रम्यास । समाधि-संवत्तानिक, वि०, में सहायक। समाधि-सम्बोज्भङ्गः, पु०, सम्बोधि के ग्रङ्ग-स्वरूप समाधि। समाधियति, किया, समाहित होता (समाधिय, समाधियत्वा)। समान, वि०, बराबर। समान-गतिक, वि०, समानगति वाला। समानत्त, नपुं, समानत्व; वि०, (समान + मत्त) शान्त वाला।

समानत्तता, स्त्री ०, निष्पक्षपात, शान्त समान-वस्सिक वि०, मिक्ष-घायू में समान । समान-संवासक, वि०, एक ही साथ रहने वाला। समानेति, किया, मेल मिलाता है, पास-पास लाता है। (संमानेसि, समानेत्वा) । समापज्जति, फिया, (कार्यं में)लगता है, रत होता है। (समापिज, समापज्जन्त, समा-वज्जमान, समापज्जित्वा)। समापज्जन, नपुं०, कार्य में लगना, रत होना । समापत्ति, स्त्री॰, प्राप्ति । समापनन, इदन्त, कायं-रत। समापेति, किया, समाप्त करता है। (समापेसि, समापित, समापेत्वा)। समायाति, कियां, समीप माता है, एकत्र होता है। समायुत, वि०, जुड़ा हुआ। समायोग, पूर, मेल, जोड़। समारक, वि०, मार (-देव) सहित। समारद्व, कृदन्त, भारम्म हुमा। समारब्भित, किया, ग्रारम्म करता है। (समारहिभ, समारहिभत्वा)। समारम्भ, पु॰, कायं, हानि, (जानवरों का) बध। समारुहति, किया, ऊपर चढ़ता है। (समार्वाह, समारळ्ह, समार्वाहत्वा, समाव्यह)। समारहन, नपुं०, चढ़ता।

समारोपन, नपुं०, चढ़ाना, उठाना। समारोपेति, क्रिया, चढाता है। (समारोपेसि, समारोपित, समा-रोपेत्वा)। समावहति, किया, लाता है। (समावहि, समावहन्त, वहित्वा)। समास, पु॰, समास, शब्दों का संक्षिप्त समासेति, किया, संगीति करता है। (समासेसि, समासित, समासेत्वा) । समाहत, कृदन्त, चोट खाया हुमा। समाहनति, किया, चोट पहुँचाता है। समाहार, पु०, संग्रह । समाहित, कृदन्त, एकाग्रचित्त । समिज्भति, किया, सफल होता है। (समिजिभ, समिद्ध, समिजिभत्वा)। समिज्झन, नपुं०, सफलता । समित, कृदन्त, शमित। समितत्त, नपुं०, शान्त-मावं। समिताबी, वि०, शान्त (पुरुष)। समित, कि॰ वि॰, निरन्तर, सदैव। समिति, स्त्री०, परिपद्। समिद्ध, कृदन्त, समृद्ध, सफल । समिद्धि, स्त्री०, समृद्धि, सफलता । समिद्धि जातक, तपस्वी सूर्योदय होने पर, स्नान के अनन्तर, एक ही वस्त्र पहने, प्रपना बदन घूप में सुखा रहा या। एक प्रप्सरा ने उसे प्रलोभित करने की चेष्टा की (१६७)। समीप, थि॰, नजदीक । समीपग, वि०, समीप गया हुना। समीपचारी, वि॰, समीप रहने

वाला। समीपट्ठ, वि०, समीप-स्थित। नपुं०, नजदीक समीपट्ठान, स्यान । समीर, पु॰, सुगन्धित वायु। समीरण, पु०, हवा। समोरति, ऋया, (हवा) चलती है। समीरेति, किया, धावाज निकालता है, बोलता है। (समीरेसि, समीरित, समीरेत्वा)। समुक्कन्सेति, किया, बड़ाई करता है। (ममुक्कन्सेसि, समुक्कन्सित, समु-वकन्सेत्वा)। समुग्ग, पु०, टोकरी, वाक्स। समुग्ग-जातक, ग्रसुर ने ग्रपनी सुन्दर स्त्री को मुरक्षित रखने के लिए एक डिविया में बन्द किया ग्रीर उसे निगल गया (४३६)। समुग्गच्छति, त्रिया, ऊपर उठता है। (समुग्गच्छि, समुग्गन्त्वा, समुग्गत) । समुग्गत, कृदन्त, मली प्रकार सीखा हुआ। समुग्गण्हाति, किया, पाठ को मली प्रकार ग्रहण करता है। (समुग्गणिह, समुग्गहित, समुग्गहीत, समुग्गहेत्वा)। समुग्गम, पु०, उत्पत्ति । समुग्गिरति, ऋया, बोलता है, वाहर निकालता है। समुग्गिरणं, नपुं, मुँह से निकले हुए शब्द । समुग्घात, पु॰, चोट पहुँचाना । समुग्धातक, वि०, उलाड़ फेंकने-वाला, हटानेवाला।

समुग्घातेति, किया, उसाइ फेंकता है, हटाता है, दूर करता है। (समुग्घातेसि, समुग्घातित, समुग्घा-तेत्वा)। समुचित, कृदन्त, संगृहीत, एकत्रित। समुच्चय, पु०, संग्रह । समुच्छिन्दतिं, किया, मूलोच्छेद करता है, नष्ट करता है। (समुच्छिन्दि, समुच्छिन्दिय, समुच्छि-न्दित्वा)। समुच्छिन्न, कृदन्त, मूलोच्छेद कृत, विनष्ट । समुच्छिन्दन, नपुं०, मूलोच्छेद, विनाश। समुज्जल, वि०, ग्रत्यन्त उज्ज्वल । समुज्जित, वि०, फेंका गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त । समुट्ठहति, (समुट्ठाति भी), किया, ऊपर उठता है। (समुट्ठहि, समुद्ठित, समुद्ठिता)। समुट्ठान, नपु०, उत्पत्ति। समुट्ठापक, वि०, उत्पन्न करने वाला। समुट्ठापेति, क्रिया, ऊपर उठाता है। (समुट्ठापेसि, समुट्ठापित, समुट्ठा-पत्वा)। समुत्तरति, किया, जपर से गुजरता (समुत्तरि, समुत्तिण्ण, समुत्तरित्वा, समुत्तरण)। समुत्तेजक, वि०, उत्तेजित करता हुमा । समुत्ते जन, नपुं०, उत्तेजना । समुत्ते जेति, किया, ऊपर उठाता है,

उत्ते जित करता है, तेज करता है। (समुत्ते जेसि समुत्ते जित, समुत्ते -जेत्वा)। समुदय, पु०, उत्पत्ति । समुदय-सच्च, नपुं०, उत्पत्ति सम्बन्धी सत्य । समुदागत, कृदन्त, उत्पन्न समुदागम, पु०, उत्पत्ति । समुदाचरित, किया, ग्राचरण करता है। (समुदाचरि, समुदाचरित, समुदा-चरित्वा)। समुदाचरण, नपुं०, ग्राचरण, ग्रम्यास, व्यवहार। समुदाचिण्ण, कृदन्त, ग्राचरित। समुदाय, पु॰, समूह। समुदाहरति, क्रिया, शब्द-उच्चारण करता है। (समुदाहरि, समुवाहत, समुदा-हरित्वा)। समुदाहरण, नपुं०, शब्दोच्चारण, बात-चीत। समुदाहार, पु०, शब्दोच्चारण, बात-चीत। समुदीरण, नपुं०, शब्दोच्चारण। समुदीरेति, क्रिया, हलचल करता है। (समुदीरेसि, समुदीरित, समुदी-रेत्वा)। समुदेति, किया, ऊपर उठता है। समुद्द, पु०, समुद्र, समुन्दर, जलनिधि। समुद्द्ठक, वि०, समुद्र-स्थित। समुद्द जातक, समुद्र देवता ने प्रत्यन्त लोभी कौवे को डराकर भगा दिया (784) 1

समुद्द वाणिज जातक, ऋणी व्यापारी द्वीपान्तर में पहुँचकर घनी हो गये (888) 1 समुद्धट, कृदन्त, उद्धृत, ऊपर उठाया गया । समुद्धरति, किया, ऊपर उठाता है, बाहर निकालता है। (समुद्धरि, समुद्धरित्वा)। समुपगच्छति, क्रिया, समीप रहुंचता (समुपगच्छि, समुपगत, समुपगन्दवा)। समुपगमन, नपुं०, नजदीक पहुँचाना। समुपगम्म, पूर्वं शिया, पास पहुँच-समुपब्बूळ्ह, वि०, मीड्-युक्त। समुपसोभित, वि०, शोमित, घलंकृत। समुपागत, वि०, नजदीक भ्राया । समुपज्जित, किया, उत्पन्न् होता है। (समुपज्जि, समुपज्जित्वा) । समुब्बहति, किया, सहन करता है। (समुब्बहि, समुब्बहन्त, समुब्ब-हित्वा)। समुब्भवति, क्रिया, उत्पन्न होता है। (समुब्भवि, समुब्मूत, समुब्भ-वित्वा)। समुल्लपति, किया, बातचीत करता (समुल्लिप, समुल्लिपत, समुल्ल-पित्वा)। समुल्लपन, नपुंब, बातचीत । समुल्लाप, पु॰, बातचीत । समृस्सय, पु०, जमाव, तमाम चीजों का इकट्ठा रूप। समुस्सापेति, त्रिया, ऊपर उठाता है।

(रागुस्सापेति, समुस्सापित, समुस्सा-पेत्वा)। समुस्साहेति, क्रिया, उत्साहित करता है, उत्तेजित करता है। (समुस्साहेसि, समुस्साहित, समुस्सा-हेत्वा)। समुस्सित, कृदन्त, ऊपर उठाया गया। सम्लक, वि०, जड्-सहित। समृह, पु०, भुण्ड। समूहनति, किया, जड़ से उलाड़ देता है। समेक्सति, किया, मली प्रकार देखता है । (समेक्खि, समेक्खित, समेक्खित्वा, समेक्खिय)। समेक्खन, नगुं०, देखना। समेत, कृदन्त, सम्बन्धित, जोड़ दिया गवा । समेति, किया, पास प्राता है, इकट्ठा होता है। (समेसि, समेत्वा)। समेरित, कृदन्त, चालू किया गया। समोकिरति, किया, छिड़कता है। (समोकिरि, समोकिरित्वा)। समोकिरण, नपुं०, छिड़कता। समोतत, कृदन्त, सवंत्र फैलाया गया। समोतरति, क्रिया, उतरता है। (समोतरि, समोतिण्ण, समोतरित्वा) । समोदहति, ऋिया, इकट्ठा करता है। (समोदहि, समोदहित, समोदहित्वा)। सभोदहन, नपुं०, इकट्ठा करना, एक स्थान पर रखना। समोधान, नपुं ०, मेल । समोबानेति, किया, मेल मिलाता है।

(समोघानेसि, समोघानेत्वा)। समोसरण, नपुं ०, एकत्र होना । समोसरति, किया, एकत्र होता है, एक स्यान पर सम्मिलित होता है। (समोसरि, समोसट, समोसरित्वा)। समोह, वि०, मोह-युक्त। समोहित, कृदन्त (समोदहति), अन्त-गंत, ढका हुमा, एकत्र किया हुमा। सम्पकम्पति, ऋिया, कांपता है। (सम्पक्रिम्, सम्पक्रिम्पत)। सम्पजञ्ज, नपुं०, विवेक । सम्पजान, वि०, जान-बूमकर। सम्पन्जति, ऋया, सफल होता है। सम्पन्न, सम्पज्जमान, (सम्पिज्ज, सम्पज्जित्वा)। सम्पज्जन, नपुं०, सफलता। सम्पन्जलित, कृदन्त, प्रज्वलित। सम्पटिच्छति, किया, प्राप्त करता है। (सम्पटिच्छि, सम्पटिच्छित, सम्पटि-च्छित्वा)। सम्परिच्छन, नपुं०, स्वीकृति । सम्पति, भ्रव्यय, सम्प्रति, भ्रमी । सम्पतित, कृदन्त, पतित, गिरा। सम्पत्त, कृदन्त, पहुँचा। सम्बत्ति, स्त्री०, धन, सम्पत्ति । सम्पदा, स्त्री०, धन, सम्पत्ति । सम्पदान, नपुं ०, देना, चतुर्थी विनिवत। सम्पदालन, नपुं०, चीरना। सम्पदालेति, (सम्पदाळेति मी), क्रिया, चीरता है, फाड़ता है। (सम्पदालेसि, सम्पदालित, सम्पदा-सत्वा)। सम्पदुस्सति, क्रिया, दूषित होता है।

(सम्पद्धस्स, सम्पद्टठ, सम्पद्-स्सित्वा)। सम्पदुस्सन, नपुं०, दूषण। सम्पवीस, पु॰, शरारत, बदमाशी। सम्पन्न, कृदन्त, सफल। सम्पयात, कृदन्त, गया। सम्पयुत्त, वि०, सम्प्रयुक्त, समन्वित, सम्बन्धित । सम्पयोग, पु०, मेल। सम्पयोजेति, किया, मिलाता है। (सम्पयोजेसि, सम्पयोजित, सम्पयो-जेत्वा)। सम्पराय, पु॰, भविष्य-काल, मावी ग्रवस्था। सम्पराधिक, वि०, परलोक सम्बन्धी। सम्परिकड्ढति, किया, घसीटता है। सम्परिवज्जेति, क्रिया, दूर-दूर रखता है, टाल देता है। (सम्परिवज्जेसि, सम्परिवज्जित, सम्परिवज्जेत्वा)। सम्परिवत्तति, किया, पलटता है, लोट-पोट होता है। (सम्परिवत्ति, सम्परिवत्तित्वा, सम्प-रिवत्तेतिं)। सम्परिवारेति, किया, धेरता है, सेवा में उपस्थित रहता है। सम्परिवारित, (सम्परिवारेसि, सम्परिवारेत्वा)। सम्पवत्तेति, श्रिया, प्रवर्तित करता (सम्पवत्रोसि, सम्पवत्तित)। सम्पवायति, क्रिया, बहुती है, चलती है, बाहर आती है। सम्पर्वेषति, अकभोरी जाती है।

सम्पवेषितं, (सम्पवेषि, सम्पवे-घेति)। सम्पसाव, पु॰, प्रसाद, ग्रानन्द । सम्पसावनिय, शान्ति-प्रद, वि०, ग्रानन्द-प्रद, सुखद। सम्पसावेति, ऋिया, प्रसन्न करता है। (सम्पसादेसि, सम्पसादित, सम्पसा-देत्वा)। सम्पसारेति, किया, फैलाता है। (सम्पसारेसि, सम्पसारित, 'सम्पसा-रेत्वा)। सम्पसीदति, किया, प्रसन्त होता है, ग्रानन्दित होता है। (सम्पसीदि, सम्पसीदित्वा) । सम्पसीदन, नपुं , भानन्द, श्रीांत । सम्परसति, किया, मली प्रकार देखता है। (सम्पहिस, सम्पह्सन्त, सम्पह्समान, सम्पस्सित्वा)। सम्पहट्ठ, कृदन्त, ग्रानन्दित, प्रसन्न-वित्त। सम्पहंसक, वि०, प्रसन्नता-दायक। सम्पहंसति, किया, प्रसन्न होता है। (सम्पहंसि, सम्पहंसित, सम्पहंसेति, सम्पहंसेसि)। सम्पहार, पु॰, प्रहार देना, भगड़ा होनां, लड़ाई होना । सम्पात, पु०, एक साथ गिरना, एक साय भा पड़ना। सम्पादक, विं०, तैयारी करने वाला, प्राप्त करने वाला। सम्पदान, नपुं०, प्राप्त करना, प्राप्ति । सम्पादियति, उसे प्राप्त किया जाता है, उस तक (सामान) पहुँचाया

जाता है। सम्पादेति, क्रिया, पूरा करने का प्रयास करता है। (सम्पाबेसि, सम्पादित, सम्पादेत्वा)। सम्पापक, वि॰, लाने वाला, (किसी म्रोर) ले जाने वाला। सम्पापन, नप्ं०, (कहीं) पहुँचाना । सम्पापुणाति, किया, पहुँचता है। (सम्पापुणि, सम्पापत्त, सम्पापुणन्त, सम्पापुणित्वा)। सम्पण्डन, नपुं०, मेल मिलाना, पिण्ड बनाना । सम्पण्डेति, क्रिया, मेल मिलाता है। सम्पिण्डित, सम्पि-(सम्पण्डेसि, ण्डेत्वा)। सम्पियायति, क्रिया, प्रेम करता है, प्रेम के साथ स्वागत करता है। (सम्प्यायि, सम्प्यायित, सम्प्या-सम्पियायमान, सम्पिया-यन्त, यिन-11 सम्पिध्यना, स्त्री०, प्रेम, ग्रत्यन्त निवट सम्बन्ध । सम्योणेति, किया, सन्तुष्ट करता है, खुश करता है। (सम्पीणेसि, सम्पीणित, सम्पो-णेत्वा)। सम्पीळेति, किया, पीड़ा देता है। (सम्पोळेसि, सम्पोळत, सम्पी-ळेत्वा) । सम्युच्छति, ऋया, पूछता है। (सम्युच्छि, सम्युट्ठ)। सम्पुट, पु०, दोना, ग्रंजलि । सम्युष्ण, कृदन्त, सम्यूणं ।

सम्युष्फित, कृदन्त, पुष्पित ।

सम्पूजेति, किया, सम्मान करता है। (सम्पूजेसि, सम्पूजित, सम्पूजेन्त, सम्यूजेत्वा)। सम्पूरेति, किया, पूर्ण करता है। (सम्पूरेसि, सम्पूरित, सम्पूरेत्वा) । सम्फ, नपुं ०, व्ययं, निष्प्रयोजन । सम्फप्पलाप, पु०, व्यथं-बक्तवास । सम्फस्स, पु०, स्पर्श । सम्फुल्ल, वि०, ग्रच्छी तरह खिला हुम्रा (फूल)। सम्प्रसति, किया, स्पर्श करता है। (सम्फुसि, सम्फुसित्वा)। सम्कूसना, स्त्री०, स्पर्श । सम्फ्रित, कृदन्त, स्पर्श कृत। सम्बन्ध, पु०, परस्पर का सम्बन्ध। सम्बन्धति, ऋया, सम्बन्ध जोड़ता है। (सम्बन्धि, सम्बन्धित्वा) । सम्बन्धन, नपुं०, सम्बन्ध जोड़ना । सम्बर, पु०, ग्रमुरों का एक राजा, जिसका नाम सम्बर या। सम्बरी, स्त्री०, माया-जाल। सम्बल, नपुं०, सामान (खाने-पीने का)। सम्बहुल, वि०, ग्रनेक, बहुत करके। सम्बाध, पु०, बाघा, रुकावट, मीड़-माड़। सम्बाधीत, क्रिया, बाधित होता है, भीड़-माड़ से घिरा रहता है। सम्बाहति, क्रिया, मालिश करता है। सम्बाहन, नपुं०, मालिश। सम्बुक, पु॰, सीप। सम्बुज्झति, किया, समभता है। (सम्बुज्झि, सम्बुद्ध, सम्बुज्भित्वा)। सम्बुद्ध, पु॰, सम्यक् सम्बुद्ध, सम्पूर्ण

जानी। सम्बुल जातक, सम्बुला ने जंगल में मी साथ जाक र प्रपने कोढ़ी पति की सेवा की (५१६)। सम्बोज्भङ्ग, प्०, सम्बोध-प्राप्ति में सहायक ग्रंग। नपुं०, प्रवोध, सम्बोधन, विमन्ति। सम्बोधि, स्त्री०, पूर्ण ज्ञान । सम्बोधेति, ऋया, ज्ञान देता है, शिक्षा देता है। सम्भग्ग, कृदन्त, टुटा हुम्रा। सम्भज्जित, किया, तोड़ता है। (सम्भिज्जि, सम्भिज्जित्वा)। सम्भत, कृदन्त, लाया गया। सम्भत्त, वि०, मित्र। सम्भम, पु॰, उत्तेजना। सम्भमति, किया, चक्कर खाता है। (सम्भमि, सम्भमित्वा)। सम्भव, पु०, उत्पत्ति । सम्भवति, किया, उत्पन्न होता है। (सम्भवि, सम्भूत) । सम्भवन, नपुं०, उत्पन्न होना । सम्भवेसी, पु०, उत्पत्ति की इच्छा करने वाला। सम्भार, पु०, सामग्री। सम्भावना, स्त्री०, सत्कार । सम्भावनीय, वि०, ग्रादरणीय। सम्मावेति, क्रिया, सत्कार करता है। (सम्भावेसि, सम्भावित, सम्भा-वेत्वा)। सम्भिन्दति, किया, मिलाता है, तोड़ता सम्भन्न, कृदन्त, टूटा हुमा।

सम्मोत, कृदन्त, मयमीत । सम्भुञ्जति, किया, मिलकर साता-पीता है। (सम्मुञ्जि, सम्भुञ्जित्वा)। सम्भूत, कृदन्त, उत्पन्न हुमा। सम्भेद, पु०, मिलावट । सम्भोग, पु॰, सहमोज, प्रेम । सम्म, निकटस्य व्यक्तियों के लिए सम्बोधन वचन; नपुं०, मंजीरा। सम्मव्खन, नप्ं, मासना। सम्मक्खेति, किया, मालता है। (सम्मक्खेसि, सम्मक्खित, सम्म-क्खेत्वा)। सम्मग्गत, वि०, सम्यक् मार्गो । सम्मज्जति, किया, भाड़ देता है। (सम्मिज्जि, सम्मिज्जित, सम्मट्ठ, सम्मज्जन्त, सम्मज्जित्वा, सम्मज्जि-तब्ब)। सम्मज्जनी, स्त्री०, भाडू। सम्मत, कृदन्त, जिसे सहमति प्राप्त हो । सम्मताल, पु०, मंजीरा। सम्मति, किया, शान्त होता है। सम्मत्त, कृदन्त, नशे में धृत्त। सम्मद, पु०, तन्द्रा। सम्मदक्खात, वि०, सम्यक् प्रकार से समभाया गया। सम्मदञ्जा, (सम्मदञ्जाय भी), पूर्व ० किया, बच्छी तरह समभकर। सम्मदेव, ग्रव्यय, ठीक तरह से। सम्मद्, पु॰, मीड़। सम्महति, किया, क्चल देता है। (सम्मद्दि, सम्मद्दित, सम्मद्दित्वा) सम्मद्दन, नपुं०, कुचलना ।

सम्मइस, वि०, सम्यक् द्ष्टि रखने बाला। सम्मन्तेति, किया, मंत्रणा करता है, परामशं, करता है। (सम्मन्तेसि, सम्मन्तित, न्तित्वा)। सम्मन्नति, किया, प्रधिकार देता है, सहमत होता है, स्वीकार करता है, चुनाव करता है। (सम्मन्नि, सम्मन्नित, सम्मत, सम्म-न्नित्वा)। सम्मप्पञ्जा, स्त्री०, सम्यक् प्रजा । सम्मध्यधान, नपुं०, सम्यक् प्रयत्न । सम्मसति, किया ग्रहण करता है, छता है। (सम्मसि, सम्मसित, सम्मसित्वा)। सम्मा, धव्यय, सम्यक् रूप से। सम्मा-प्राजीव, पु०, सम्यक् प्राजी-विका। सम्मा-कम्मन्त, पु०, सम्यक् प्राचरण। सम्मा-दिद्ठ, स्त्री ०, सम्यक् दृष्टि । सम्मा-बिट्ठिक, वि०, सम्यक् दृष्टि सम्मा-पटिपत्ति, स्त्री०, सम्यक् ग्राच-रण। सम्मा-पटिपन्न, सम्यक् प्रवृत्त । सम्मा-पास, पु०, यज्ञ विशेष । सम्मा-बत्तना, स्त्री०, सम्यक् व्यव-हार। सम्मा-वाचा, स्त्री०, सम्यक् वाणी। सम्मा-वायामो, पु॰, सम्यक् प्रयत्न । सम्मा-विमुत्ति, स्त्री॰, विमुक्ति। सम्मा-संकप्प, पु०, सम्बक् संकल्प ।

सम्मा-सति, स्त्री॰, सम्यक् स्मृति (जागरूकता)। सम्मा-समाधि, पू०, सम्यक् समाधि (एकाग्रता)। सम्मा-सम्बुद्ध, पु०, सम्पूणं जानी । सम्मा-सम्बोधि, स्त्री०, सम्यक् ज्ञान । सम्मान, पु०, सत्कार, गौरव। सम्मानना, स्त्री०, ब्रादर। सम्मिञ्जाति, क्रिया, पीछे भुकता है। (सम्मिञ्जि, सन्मिञ्जित, सम्मि-ञ्जान्त, सम्मिञ्जित्वा) । सम्मिस्स, वि०, मिथित। सम्बिस्सता, स्त्री०, मिश्रित माव। सम्मुख, वि०, ग्रामने-सामने । सम्मुखा, ग्रव्यय, सामने । सम्मुच्छति, त्रिया, मूछित होता है। सम्मुच्छित, (सम्मच्छ, च्छित्वा)। सम्मुज्जनी, स्त्री०, भाड़। सम्मृति, स्त्री०, सम्मति, सामान्य सम्मुदित, वि०, प्रसन्न-चित्त । सम्मुट्हति, किया, भूल जाता विस्मरण होता है। (सम्मृदिह, सम्मृळ्ह, सम्मृदिहत्वा, सम्मूटह)। सम्मुप्हन, नवुं०, भूलना। सम्मुस्सति, क्रिया, भूलता है। (सम्मुहिस, सम्मुट्ठ, सम्मुहिसत्वा)। सम्मोदक, वि०, प्रसन्नता-पूर्वक बोलने वालां, नम्र स्वमाव वाला । सम्मोदति, क्रिया, मानन्दित होता है। सम्मोदना, स्त्री॰, ग्रानन्दित होना । सम्मोदनीय, वि०, प्रसम्न होने योग्य । सम्मोदमान जातक, बटेर शिकारी के जाल को साथ लिये - उड़ गया (\$\$)1 सम्मोस, पु॰, मूढ़ता, घचम्मा, घवटाहट । सम्मोह, पु०, घवड़ाहट, मोह । सय, वि०, ग्रपना । सथित, किया, सोता है, लेटता है। ('सिंग, सयन्त, सयमान, सिंपत्वा)। सयप्, पु०, खुजली। सयन, नपुं०, शयन। नपुं०, शयनागार, सोने सयनघर, का कमरा। सयम्भू, पु०, स्वयंभू। सयं, भ्रव्यय, भ्रपने भ्राप । सयंकत, वि०, स्वयंकृत । सयंवर, पू॰, स्वयंवर, ग्रपने पति का चुनाव स्वयं करना। सयान, वि०, सोते हुए। सयापित, कृदन्त, लिटाया गया। सयापेति, किया, सुलाता है। सरह, वि०, सहन करने योग्य। सय्ह जातक, राजा ने प्रपने सहपाठी मित्र को राजपुरोहित बनाना चाहा (380)1 सर, पु० तथा नपुं०, शर, तीर, स्वर (म्रावाज), स्वर (म्र-व्यञ्जन यक्षर), भील, सरकण्डा। सरतुण्ड, नपुं०, तीर की नोक । सर-तीर, नपुं०, सरोवर का किनारा। सर-अ़ङ्ग, पु०, तीर को तोड़ डालना। सर-भञ्ज, नपुं०, गायन-विधि विशेष। सर-भाणक, पु०, धर्म-प्रन्थों का सस्वर पाठ करने वाला।

सर-मण्डल, नपुं०, स्वर-मण्डल। सरक, पु॰, कसोरा, सराव । सरज, वि •, धूल-सहित । सरट, प्०, गिरगिट। सरण, नपुं०, संरक्षण, याद। सरणागमन, नपुं०; शरण-ग्रहण। सरणीय, वि०, स्मरणीय। सरति, किया, याद रखता है। सरव, पु०, घरद् (समय)। सरभ, पु॰, मृग की जाति विशेष। सरभ जातक, देखों सरम मिग जातक। सरभ विग जातक, सरम मृग ने राजा को धर्मोपदेश दिया (४८३)। सरमू, पु०, छिपकली। सरभू, (सरयू भी), पाँच प्रधान नदियों में से एक । सरभञ्ज जातह, राजा ने जोतिपाल को प्रपनी धनुविद्या का प्रदर्शन करने के लिए कहा (४२२)। सरल, एक वृक्ष विशेष। सरलदृष, पु०, तारपीन का तेल। सरध्य, नपुं ०, लक्य। सरस, वि०, स्वादिष्ट । सरसी, स्त्री०, भील। सरसीवह, नपुं०, कमत। सरस्सति, सरस्वती नदी। सराग, वि०, रांगी। सराजक, वि॰, राजा के साव। सराव, प्०, सकोरा। सरासन, नपुं०, धनुष । सरिक्सक, वि०, एक जैसा। सरितब्ब, स्मरण करने योग्ये। सरिता, स्त्री०, नदी। सरितु, पूर, याद रखने बाला।

सरीर, नपुं०, वारीर। सरीर-किच्च, नपुं०, शीच-कमं। सरीरट्ठ, वि०, शरीर-स्थित। सरीर-धातु, स्त्री॰, बुद्ध के पवित्र शरीर-धातु। सरीर-निस्सन्द, पु०, शरीर का मल। सरीरप्यभा, स्त्री०, वारीर-प्रमा। सरीर-मंस, नपुं०, शरीर का मांस। सरीर-वण्ण, पु०, शरीर का वर्ण। सरीर-बलञ्ज, पु०, शरीर-मल। सरीर-वलञ्जट्ठान, नपुं०, शोच-स्थान । शरीर-संस्थान, सरीर-सण्ठान, नपुं०, वारीरिक माकार-प्रकार। सरीरी, पु॰, प्राणी। सरूप, वि०, उसी रूप का। सरूपता, स्त्री॰, समानता । सरोज, नपुं०, कमल। सरोरुह, नपुं०, कमल। सलब्खण, वि०, लक्षणों सहित। सलभ, पु०, पतिगा (दीपक पर जलने वाला)। सलळवती, सलिलवती, मध्य-मण्डल की दक्षिणी सीमा। सलळागार, जतवन का एक भवन। सलाका, स्त्री०, शलाका, तीर, छोटी लकड़ी, घास की पत्ती, चीर-फाड़ का ग्रोजार। सलाका-वृत्त, वि०, शलाका-मोजन बाकर रहने वाला। सलाकगा, नपुं०, दालाका-भोजन बाँटने का स्थान। समाका-गाह, पु., शलाकाभ्रों का ग्रहण करना।

सलाका-गाहापक, पु०, शलाका बाँटने गला। सलाका-भत्त, नपुं०, शलाकाश्रों के अनुसार बाँटा जाने वाला मोजन'। सलाट्क, वि०, कच्चा, ताजा। सलाभ, पु०, ग्रपना लाम । सलिल, नपुं०, जल, पानी । सलिल-घारा, स्त्री०, जल-घारा। सल्ल, पु०, तीर। सल्लक, पु॰, साही के पर की तीली। सल्लकत्त, पु॰, शल्य-कर्ता। सल्ल-कत्तिय, नपुं०, शल्य कमं। सल्लक्खन, नपुं०, विवेक। सल्लक्खना, स्त्री०, विचार, मनन। सल्लक्खेति, क्रिया, घ्यान देता है। (सल्लक्सेसि, सल्लिक्खत, सल्ल-बस्रेत्वा, सल्लब्सेन्त)। सल्लपति, ऋया, बातचीत करता है। (सल्लिप, सल्लपन्त, सल्लिपत्वा)। सल्लपन, नपुं०, बातचीत, बार्तालाप । सल्लहुक, वि०, हलका। सल्लाप, पु०, मैत्रीपूणं वातचीत । सिल्लात, त्रिया, दुकड़े-दुकट़े कर डालता है। सल्लिखत, सल्लि-(सल्लिख, खित्वा)। सल्लीन, कृदन्त, एकान्त-प्राप्त। सल्लीयति, क्रिया, एकान्त-वास करता है। (सल्लीय, सल्लीयत्वा) । सल्लीयना, स्त्री०, एकान्त । स़ल्लेख, पु॰, कड़ी तपस्या। सवद्भ, वि०, टेढ़ेपन-सहित। सवण, नपुं०, सुनना, कान।

सवणीय, वि०, कणं-प्रिय। सवन, नप्ं, कान, बहना। सवति, क्रिया, बहता है। (सवि, सवन्त, सवित्वा)। सवन्ती, स्त्री०, नदी । सविघात, वि०, विदेष के साथ। सविञ्जाणक, वि०, चेतन प्राणी, होश वाला । सवितक्क, वि०, सवितकं, संकल्प-विकल्प युक्त । सविभत्तिक, ति०, वर्गीकरण सहित। सवेर, वि०, वैर सहित। सब्यञ्जन, वि०, सालन-सहित, व्यञ्जन-ग्रक्षरों सहित । सस, पु॰, खरगोश। सस-लक्खण, (सस-लञ्छन भी), नपं , चन्द्रमा में खरगोश का चिह्न। सस-विसाण, नपुं०, खरगोश की सींग (ग्रसम्भव वात)। सस (पण्डित) जातक, खरगोश ने ध्रपना शरीर ही दान देने का संकल्य किया (३१६)। ससक्कं, कि॰ वि॰, निश्चय से, जितना हो सके उतना। ससङ्क, पु०, चन्द्रमा i ससति, किया, सांस लेता है। ससत्य, वि०, सशस्त्र। ससन, नपुं०, मार डालना । ससन्तान, पू॰, स्व चित्त-सन्तान । ससम्भार, वि०, ग्रचार-चटनी ग्रादि के साथ। ससी, पू०, चन्द्रमा । ससीसं, कि॰ वि॰, सिर के साय, सिर तक।

ससुर, पु॰, श्वशुर, पत्नी ग्रयवा पति का पिता। ससेन, नपं ०, सेना सहित । सस्स, नवं०, घान्य, फसल । सस्स-कम्म, नपुं ०, खेती । सस्स-काल, नपुं०, खेती काटने का समय। सस्सत, वि , शाइवत, सदैव रहने वाला । सस्सत-विटिठ, स्त्री ०, शाइवत-दृष्टि । सस्सत-वाद, पु०, शाश्वत-मत । सस्सत-वादी, प्०, ग्रात्मा को नित्य मानने वाला। सस्सतिक, वि०, प्रात्मा को प्रनन्त-कालिक मानने वाला। सस्समण-बाह्मण, वि०, श्रमणों तथा ब्राह्मणों सहित । सस्सामिक, वि०, जिसका पति हो, जिसका मालिक हो। सस्सरीक, वि०, श्री-सहित, ऐव्वयं-सहित । सस्सु, स्त्री ०, सास, पति ग्रयवा पत्नी की माँ। सह, उपसर्ग, साय; वि०, सहनशील। सहकार, पु०, ब्राम्न-फल। सह-गत, वि०, युक्त, समन्वित । सह-ज, (सहजात भी), वि०, एक साथ उत्पन्न । सहजाति, नगर-विशेष, जहां विजन पुत्तकों द्वारा उठाये गये दस प्रक्तों के बारे में सोरेप्य रेवत स्यविर का मत जानने के लिए यस काकण्डपतक स्यविर ने उनसे मेंट की थी। सहजीवी, वि०, साथ रहने वाला । सह-नन्दी, वि०, साथ-साथ प्रानन्द

मनाने बाला। सह-धम्मिक, वि०, अपने धर्म का मानने वाला। सह-मू, वि०, एक साथ उत्पन्न होने वाला। सह-योग, पु॰, सहायता । सह-वास, पु॰, साथ रहना। सह-सेय्या, स्त्री०, साथ-साथ सोना । सह-सोकी, वि०, साथ-साथ 'शोकाकुल होने वाला। सहति, क्रिया, सहन करता है, योग्य सिद होता है, जीत लेता है। (सहि, सहन्त, सहमान, सहित्वा)। सहत्य, पू०, प्रपना हाथ। सहन, नपुं०, सहन-शक्ति, करना। सहम्पति, पु०, धनेक 'ब्रह्माग्रों' में से एक 'ब्रह्मा'। सहव्य, नपुं०, मित्र। सहब्यता, स्त्री०, मैत्री। सहसा, कि॰ वि॰. ग्रचानक, जबदंस्ती से। सहस्स, नपं ०, हजार। सहस्सक्ल, पु०, सहस्राक्ष इन्द्र। सहस्सक्खत्ं, कि॰ वि॰, हजार बार। सहस्सग्धनक, वि०, हजार के मूल्य का। सहस्सत्यविका, स्त्री०, हजार की यंली। सहस्सवा, कि॰ वि॰, हजार तरह से। सहस्सनेस, देखो सहस्सक्ख । सहस्त-अध्डिका, स्त्री०, देखी सहस्त-त्यविका । सहस्त-रंसी, पु०, सूर्य ।

सहस्सार, वि॰, (पहिये की) हजार तीलियों वाला। सहस्सिक, वि०, हजार वाला। सहस्सि-लोक-थातु, स्त्री०, हजार गुना लोक घातु। सहाय, पु॰, मित्र, दोस्त । सहायक, वि॰, सहायता करने वाला, ंदोस्त । सहायता, स्त्री॰, मित्रता। सहित, वि०, साथ, साथ लिये। सहितब्ब, कृदन्त, सहन करने योग्य। सहितु, पु०, सहन करने वाला। सहेतुक, वि०, सकारण। सहोढ, वि०, चुराये गये माल के साथ। सळायतन, नपुं०, ग्रांख, कान, नाक म्रादि छह इन्द्रिया । संयत, वि०, ग्रात्म-जित्। संयतत्त, वि०, ग्रात्म-विजयी। संयतचारी, वि०, संयमी। संयम, पु॰, इन्द्रियों का वश में होना । संयमन, नपुं०, इन्द्रियों पर काबू। संयमी, पु०, इन्द्रिय-जयी। संयमेति, किया, संयम करता है। (संयमेसि, संयमित, संयमेन्त, संयमेत्वा)। संयुञ्जति, ऋिया, जुड़ता है, सम्बन्धित होता है। (संयुञ्जि, संयुञ्जित्वा) । संयुत, (संयुत्त मी), कृदन्त, जुड़ा हुमा, सम्बन्धित । संयुत्तनिकाय, सुत्त पिटक के पाँच निकायों में से एक। संयुष्ट्रति, ऋया, ढेरी बना देता है।

(संयूहि, संयूळ्ह, संयूहित्या)। संयोग, पु०, बन्धन, एकता, स्वर का ताल-मेल। संयोजन, नपुं०, सम्बन्ध, बन्धन । संयोजनिय, वि०, संयोजनों (बन्धनों) के ग्रनुकूल। संयोजेति, क्रिया, जोड़ता है, बौंघता (संयोजेसि, संयोजित, संयोजेन्त, सयोजेत्वा)। संरक्खित, क्रिया, पहरा देता है, रक्षा करता है। (संरिक्स, संरिक्सत, संरिक्सत्वा)। संरक्खना, स्त्री०, पहरा देना, संर-क्षण । संवच्छर, नपुं०, वर्ष । संबद्धकप्प, पु०, उच्छिन्न होने वाला कल्प। संवट्टति, किया, उच्छिन्न होता है। (संवट्टि, संवट्टित, संवट्टित्वा) । नपुं॰, संवर्तन, लौटना, संबट्टन, उच्छिन्न होना। संवडढ, कृदन्त, बढ़ा हुमा। संवड्ढित, ऋिया, बढ़ता है, वृद्धि को प्राप्त होता है। (संवड्ढि, संवड्डमान, संवड्ढित्वा)। संविड्डत, कृदन्त, संविधत, बढ़ा हुआ। संवड्ढेति, किया, बढ़ाता है, पोसता है, पालन करता है। (संवड्ढेसि, संवड्ढित, संवड्ढेत्वा)। संवण्णना, स्त्री०, व्याख्या। संबन्नेति, क्रिया, व्यास्या करता है। (संवण्णेसि, संवज्णित, संवण्णेतब्ब,

संवण्णेत्वा)। संवत्तति, क्रिया, विद्यमान रहता है। (संवत्ति, संवत्तित)। संवत्तनिक, वि०, प्रेरक। संवत्तेति, क्रिया, प्रवृत्त करता है। (संवत्तेसि, संवत्तित, संवत्तेत्वा) । संबर, पु०, संयम । संवर जातक, संवर राजकुमार ने ग्राचार्योपदेश के ग्रनुसार कार्य किया (४६२)। संवरण, नपुं०, रोक। संवरति, किया, रोकता है। (संवरि, संवृत, संवरित्वा) । संबरी, स्त्री०, रात्र। संवसति, किया, संगति करता है। (संबसि, संबसित, संबसित्वा)। संवास, पूर, साथ रहना। संवासक, वि०, मण्य-साथ रहने वाला। संविग्म, कृदन्त, संविग्न, उद्विग्न। संविज्जति, किया, विद्यमान रहता है। (संविज्जि, संविज्जमान)। संविवहति, क्रिया, व्यवस्था करता है। (संविदहि, संविदहित, सविदहित्वा, संविदहितव्व)। संविदहन, नपुं०, व्यवस्या । संविधान, नपुं०, व्यवस्या । संविधाय, पूर्वं किया, करके। संविधायक, वि०, व्यवस्थापक । संविधातं, व्यवस्था करने के लिए। संविभजति, किया, बांटता है। (संविभनि, संविभन्नित, संविभन्त् संविभन्न, संविभनित्वा)।

संविभजन, नपुं ०, बौटना । संविभाग, पु॰, बाँटना । संविभत्त, कृदन्त, ग्रह्छी तरह विभक्त। संविभागी, पु॰; उदार, दानी। संबुत, कृदन्त, संयत । संवृतिन्द्रिय, वि०, संयतेन्द्रिय । संवेग, पु०, व्ययता, वैराग्य। संवेजन, न्यं०, संवेग पैदा होना । संवेजनिय, संवेग पैदा करने वाला। संबेजेति, क्रिया, संवेग पैदा करता है। (संबेजेसि, सवेजित, संवेजेत्वा) । संसग्ग, पु०, संगति, सम्बद्ध । संसट्ठ, कृदन्त, ग्रासक्त । संसन्वति, किया, अनुकूल होता है। (संसन्दि, संसन्दित, संसन्दित्वा) । संसन्देति, किया, मिलान करता है। (संसन्देसि, संसन्दित्वा) । संसप्पति, किया, रेंगता है। (संसिंद्य, संसिंद्यत्वा) । संसप्पन, नपुंठ, रेंगना । संसय, पु०, सन्देह । संसरति, किया, चलता-फिरता है, संसरण करता है। (संसरि, संसरित, संसरित्वा) । संसरण, नपुं०, संचरण। संसावेति, किया, एक भ्रोर रखता है। संसार, पु॰, संसरण। संसार-चरक, नपुं०, जन्म-मरण का चक । संसार-दुष्ख, नपुं०, जन्म-मरण रूपी दुस । संसार-सागर, पु०, संसार-ह्पी समुद्र। संसिज्भति, किया, सफल होता है। (संसिज्भि, संसिद्ध)। संसित, कृदन्त, प्रतीक्षित, ग्राशान्वित। संसिद्धि, स्त्री॰, सफलता। संसिब्बित, कृदन्त, सिया, गूंथा। ससीदति, कियां, डूव जाता है, हिम्मत हार जाता है, दिल बैठ जाता है, ग्रसफल होता है। (संसीदि, संसीदमान, संसीदित्वा)। संसीदन, नपुं०, तह में जाना। संसीन, कृदन्त, गिरा, नष्ट। संसुद्ध, कृदन्त, परिशुद्ध, पवित्र । संसुद्ध-गहणिक, वि०, शुद्ध वंश पर-म्परा का। संसुद्धिः, स्त्री०, पवित्रता । संसूचक, वि०, सूनित करते हुए। संसेदज, वि०, पसीने में से उत्पन्न होने वाले जीव। संसेव, पु॰, संगति। संसेवति, किया, संगति करता है, सेवा में रहता है। (संसेवि, संसेवित, संसेवमान, संसेवित्वा)। संसेवना, स्त्री०, देखो संसेव। संसेनी, वि॰, सँगति में रहने वाला, सेवा में रहने वाला। संहट, कृदन्त, संहत, एकत्रित। संहत, वि०, दृढ़, कसा हुमा। संहरण, नपुं॰, एकत्र करना, तह विठाना । संहरति, किया, एकत्र करता है। (संहरि, संहरित, संहट, संहरन्त, संहरित्वा)। संहार, पु०, सक्षेप, संग्रह।

संहारक, वि०, एकत्र करता हुपा। संहित, वि०, युक्त । संहिता, स्त्री॰, मेल, स्वरीं का ताल-मेल । सा, पु०, कुत्ता; स्त्री०, वह (स्त्री)। साक, पू॰ तया नपुं०, शाक-सब्जी। साक-पन्न, नपुं०, शाक्त के पत्ते। साकच्छा, स्त्री०, परामशं, नर्चा। साकटिक पू०, गाड़ी वाला। साकल्य, नपुं०, सकल-भाव। साकिय, वि०, शाक्य जाति का। साकियानी, स्त्री०, शावय जाति की साकुणिक, पु०, चिड़ीमार। साकुन्तिक, पु०, चिड़ीमार। साकेत, कोसल जनपद का प्रसिद्ध नगर। वर्तमान फैजाबाद। साकेत जातक, ब्राह्मण भगवान बुद्ध को प्रपना 'पूत्र' बना घर ले गया (==) 1 साकेत जातक, देखो ऊपर की साकेत जातक कथा (२३०)। साबा, स्त्री०, शाखा। साखी-नगर, नप्ं, उपनगर। साखा-पलास, नपुं०, शाखा तथा पत्ते। साबा-भङ्ग, पु०, शाखा का टूटना । साला-मिग, पु०, बन्दर। साली, पु॰, वृक्ष । सागतं, ग्रव्ययं, स्वागत सागर, पु०, समुद्र। सागार, वि०, घर में रहने वाला। सागल, राजा मिलिन्द की राजधानी। साचरियक, वि०, भाचायं के साथ। साटक, पु०, वस्त्र ।

साटिका, स्त्री०, वस्त्र । साठेय्य, नपुं०, शठता । साण, नवं०, सन या सन का कपड़ा। साणि, स्त्री०, परदा। साणि-पसिब्बक, पु०, सन का थैला। साणि-पाकार, पु०, सन की दीवार। सात, नवं , मानन्द, माराम; वि , प्रानन्ददायक । सातकूम्भ, नपुं०, स्वणं, सोना। सातच्च, नपुं०, सातत्व, लगातार लगे रहना। सातच्चकारी, पुं०, लगातार कार्यरत । सातच्विकरिया, स्त्री॰, लगातार लगे रहना। साततिक, वि०, लगातार लगे रहने वाला। साति, स्त्री॰, सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। सातोदिका, सुरट्ठ (सूरत) में एक नदी । सात्थ, सात्यक, वि०, उपयोगी, मर्थ सहित । सायतिक, वि०, शियिल, ढीला-ढाला। सादर, वि०, भादर सहित। सादरं, कि॰ वि॰, मादर के साथ, प्रेम-पूर्वक । सादियति, क्रिया, स्वीकार करता है, धानन्द मनाता है, स्वीकार करता है, धनुमति देता है। (सादियि, सादित, सादियत, सादिय-मान, सावियत्वा)। साबियन, नपुं०, स्वीकृति। सारियना, स्त्री॰, ब्रङ्गीकार करना ।

सादिस, वि०, सद्श, समान। सादु, वि०, स्वादु, स्वादिष्ट जायके-दार । सादुतर, वि०, ग्रंधिक स्वादिष्ट, ग्रधिक मधुर। साबु-रस, वि०, स्वादिष्ट रस । साबक, वि॰, जो घटित हो सके, जो प्रमाणित हो सके। साधन, नृपुं ०, प्रमाण, सहायक-कृति, ऋण-मुक्ति। साधारण, वि०, सामान्य। साबिक, वि०, मधिकता लिये। साधित, कृदन्त, प्रमाणित, घटित, . ऋण-मुक्त । साधिय, वि०, जो सम्पन्न किया जा सके, जो प्रमाणित किया जा सके। साधीन जातक, मिथिला के साधीन नामक नरेश की दानशीलता का वर्णन (४६४)। साधु, वि०, ग्रच्छा, लामप्रद, शील-सम्पन्न; अव्यय, ही, बहुत अच्छा । साधुकं, कि॰ वि॰, मच्छी तरह। साध-कम्पता, स्त्री०, कार्य के मली प्रकार सम्पन्न होने की इच्छा। साधु-कार, पु॰, 'बहुत मच्छा किया' कहने का माव। साधु-कोळन, नपुं०, एक पवित्र त्योहार। साधु-रूप, वि०, प्रच्छे स्वमाव का। साधु-सम्मत, वि०, ग्राद्त, भले गाद-मियों द्वारा प्रशंसित। साधुतील जातक, ब्राह्मण ने ग्रामायं का उपदेश मानकर भपनी चारों सड़कियां धीक्ष-सम्पन्न व्यक्ति को

दीं। (२००)। साघेति, किया, (किसी कार्यं को) सिद्ध करता है, (किसी बात को) प्रमाणित करता है, ऋण उतारता (साधेसि, साधेत्वा, साधेन्त) । सानु, पु॰ तथा नपुं॰, ऊँची भूमि। सानुचर, वि०, धनुचरों सहित। सानुबज्ज, वि०, सदीप। साप, पु॰, शाप। सापतेय्य, नवं०, सम्पत्ति, धन । सापत्तिक, वि०, ग्रापत्ति-प्राप्त, जिसने विनय के नियमों का उल्लंघन किया हो । सापद, नपुं॰, ऐसा जानवर जिसका शिकार किया जाय। सापदेस, वि०, कारण सहित। सापेक्ख, (सापेख भी), वि०, प्रपेक्षा-सहितं, प्राशावान् । सा-बन्धन, नपुं०, कृते की जंजीर। साम, वि०, श्याम, काला; पु०, शान्ति, साम (-वेद)। साम जातक, राजा दशरथ द्वारा श्रवण कुमार की हत्या की कथा से मिलती-जुलती कथा (५४०)। सामं, प्रव्यय, स्वयं, भपने भाप। सामग्गी, स्त्री०, एकता, मेल-जोल । सामग्गिय, नपुं०, एकता का भाव। सामच्च, वि०, मन्त्रियों या मित्रों सहित । सामञ्ज, नपुं०, श्रमण-माव। सामञ्जता, स्त्री०, श्रमणों के प्रति घादर का माव। सामञ्ब-कस, नपुं ०, श्रमण-जीवन का

सामणक, वि०, श्रमण के लिए योग्य ग्रथवा ग्रावश्यक। सामणेर, पु०, श्रामणेर, किसी मिक्ष का शिष्य, मिक्षं बनने से पूर्व की ग्रवस्था वाला । सामणेरी, स्त्री०, किसी मिक्षुणी की शिष्या, मिक्षणी बनने से पूर्व की ग्रवस्था वाली। सामत्थिय, नपुं०, सामव्यं, योग्यता । सामन्त, नपुं०, पास-पड़ोस; वि०, पड़ोस-सम्बन्धी । सामयिक, वि०, घामिक कतंब्य, समय सम्बन्धी, ग्रस्थायी। सामल, पु०, इयामल रंग। सामा, स्त्री ०, श्यामा (तुलसी), काले रंग की स्त्री। सामाजिक, पू॰, संस्था विशेष का सदस्य । सामिक, पु०, स्वामी, मालिक। सामिनी, स्त्री०, स्वामिनी, मालकिन। सामिवचन, नपुं०, षष्ठी विमन्ति । सामिस, वि०, मांस सहित, ग्राहार सहित । सामी, पु॰, स्वामी, मालिक, पति । सामीचि, स्त्री॰, उचित, योग्य, मैत्री-पूर्ण ग्राचरण। सामीचि-कम्म, नपुं०, उचित कार्य, मैत्रीपूणं व्यवहार। सामीचि-पटिपन्न, वि०, उचित पथ पर ग्रारूढ। सामुद्दिक, वि०, समुद्र-पर रहने वाला, समुद्र की यात्रा करने वाला। सायक, वि०, चलने वाला।

सायण्ह, पु०, सन्ध्या समय, साँभा। सायण्ह-काल, पु०, साँभ । सायण्ह-समय, पु०, सन्ध्या सांभा। सायति, किया, चखता है। (सायि, सायित सायन्त, सायित्वा)। सायन, नपुं०, चलना, स्वाद लेना । सायनीय, वि०, चलने योग्य, स्वाद लेने योग्य। सार, पु०, तत्त्व, वृक्ष-विशेष का सार-माग: वि०. ग्रावश्यक, श्रेष्ठ, समयं । सार-गन्ध, पु०, वृक्ष-विशेष के सार-की सुगन्धि। सार-गवेसी, वि०, सार खोजने वाला। सारमय, वि०, (लकड़ी के) सार से निमित् । सार-सूचि, मजबूत लकड़ी की बनी सारवन्तु, वि०, सारवान् । सारक्स, वि०, ग्रारक्षा सहित। सारज्जित, किया, ग्रासक्त होता है। (सारज्जि, सारत्त, सारज्जित्वा)। सारज्जना, स्त्री०, ग्रासक्ति। सारत, कृदन्त, प्रनुरक्त। सारथि, (सारथी भी), पु॰, रथ हांकने वाला। सारद (सारदिक मी), वि०, शरत् ऋतु सम्बन्धी। सारद्ध, वि०, उत्साही। सारमेय, पु०, कुत्ता। सारम्भ, पु॰, कोघ, उत्तेजना, कलह, विवाद। सारम्भ जातक, नन्दि विसाल जातक

की ही पुनरुक्ति (८८)। सारस, पु॰, सारस पक्षी। साराणीय, वि०, याद कराने योग्य। सारिबा, स्त्री॰, सारसपरिल्ला नामक रक्तशोधक पौधा। सारिपुत्त, भगवान् बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों में से एक । उनका एक नाम उपतिस्स भी है। 'सारि' नाम की माता के पुत्र होने से ही वह 'सारि पुत्त' कहलाये। सारी, (समास में), विचरण करने वाला, धनुसरण करने वाला । , सारी, सारिपुत्त की माता का नाम। पूरा नाम था 'रूप-सारि'। सारीरिक, वि०, शरीर से सम्बन्धित। सारुप्प, वि०, योग्य, ठीक, उचित। सारेति, क्रिया, याद कराता है। सारित, (सारेसि, सारेतब्ब, सारेत्वा)। साल, पु०, श्याल, साला, शाल-वृक्ष । साल-रुक्ख, पु०, शाल-वृक्ष । साल-वन, नपुं०, शाल-वन। साल-लट्ठि, स्त्री०, शाल का पौधा। सालक जातक, एक सँपेरे ने सालक नाम का बन्दर पाला था। वह बन्दर सांप से खेलता था। यही सँपेरे की जीविका का साधन था (२४६)। सालय, वि०, धालय सहित, ग्रासक्ति सहित । साला, स्त्री०, शाला, भवन । सालाकिय, नपुं०, ग्रांख का चिकित्सा-शास्त्र, ग्रांस में सलाई डालना । साति, पु०, शालि, धान । सालिक्खेल, नपुं०, धान का खेत ।

सालि-गब्भ, पु०, पकती हुई शालि घान की फसल। सालि-भत्त, नपुं०, चावल का मोजन । सालिका, स्त्री०, सारिका, मैना। सालि-केदार जातक, तोता ग्रपने माता-पिता के लिए घान ले जाता था (828) 1 सालितक जातक, बातूनी पुरोहित की कया (१०७)। सालित्तक-सिप्प, नपुं०, गुलेल से पत्थर फेंकने की विद्या। सालिय जातक, गांव के वैद्य ने लड़के को साँप पकड़ने को भेजा। साँप ने वैद्य की ही जान ली (३६७)। सालुक, नपुं०, जल-कमल की जड़। साल्क जातक, साल्क सुग्रर को खिला-पिलाकर उसका वध किये जाने की कथा (२८६)। सालोहित, पु०, रक्त-सम्बन्धी, रिश्ते-सावक, पु॰, सुनने वाला, शिष्य। सांवकत्त, नपुं०, शिष्य-माव। सावक-सङ्घ, पु०, शिष्यों का समूह। साविका, स्त्री०, शिष्या। सावज्ज, वि०, सदोष; नपुं०, सदोष-सावज्जता, स्त्री०, सदीष होने का साबट्ट, वि०, मॅवर-सहित। सावण, नपुं०, घोषणा, सावन का महीना। सावत्वी, श्रावस्ती, कोसल जनपद की राजघानी। सावसेस, वि०, भवशेष सहित, भपूणं।

सावेति, क्रिया, सुनाता है, घोषणा करता है। (सावेसि, सावित, सावेन्त, सावय-मान, सावेतब्ब, सावेत्वा)। सावेतु, पु०, सुनाने वाला । वि॰, ग्राशंका-सहित, सासङ्क, सन्दिग्ध। सासति, किया, शिक्षा देता है, शासन करता है। (सासि, सासित, सासित्वा)। सासन, न्युं०, शिक्षण, ग्राज्ञा, सन्देश, सिद्धान्त। सासनकारक, सासनकर, कारी, वि०, ग्राज्ञाकारी, शिक्षा के ग्रनुसार चलने वाला। सासनन्तरधान, नपुं०, (बुद्ध) शासन का लोप। सासन-हर, पू०, संदेश-वाहक । सासनावचर, वि०, धर्मानुयायी। सासनिक, वि०, बुद्ध-शासन सम्बन्धी। सासप, पु॰, सरसों के दाने। सासव, वि०, ग्रास्रव-सहित, चित्त-मैल युक्त। साहित्यक, वि०, ग्रपने हाथ से किया। साहस, नपुं ०, हिसा, दुस्साहस, मन-मानी करना। साहसिक, वि०, हिसक या असम्य। साह, भ्रव्यय, भ्रच्छा । साळव, पु०, कच्ची साग-सब्जी का मोजन। सिकता, स्त्री०, बालू। सिक्का, स्त्री०, छीका। सिक्खति, क्रिया, सीखता है, अम्यास करता है।

सिविखत, (सिविख, सिक्सन्त, सिक्खत्वा, सिक्खमान, सिविखतब्ब)। सिक्लन, नपुं०, शिक्षण, ग्रम्यास । सिक्खमाना, स्त्री०, शिक्षण-प्राप्त करने वाली। सिबखा, स्त्री॰, शिक्षा, नियम-पालन। सिक्खा-काम, वि०, उपदेशानुसार चलने का इच्छक। सिबजापक (सिक्खापनक मी), पु०, शिक्षक । नपं०, शील सम्बन्धी सिक्खापद, नियम । सिक्दापन, नपुं०, शिक्षण। सिक्खा-समादान, नपुं०, शील ग्रहण करना। सिक्खित, कृदन्त, शिक्षित । सिखण्ड, पू०, मोर के सिर की कलगी। सिखण्डी, पू॰, मोर। सिखर, नपुं०, पर्वत का शिखर। सिखरी, पू०, शिखर वाला। सिखा, स्त्री॰, शिखा, (दीपक की) ली। सिखी, पू०, ग्राग, मोर। सिगाल, पु०, गीदड़। सिगालक, नपुं॰, गीदड़ की धावाज। सिगाल जातक, गीदड़ ने ब्राह्मण की चादर में मल-मूत्र त्यागा (११३)। सिगाल जातक, ग्रादमी ने मरे होने का नाटक किया। गीदड भाष गया। धादमी गीदड़ की जान न ले सका (१४२) 1 सिगाल जातक, गीदड़ हांथी के पेट

में जाक्र कैंद हो गया (१४८)। सिगाल जातक, गीदड़ ने शेरनी को भ्रपना प्रेम निवेदन किया। शेरनी ने इसे अपना अपमान समभा (१५२)। सिग्गु, पु०, वृक्ष-विशेष । सिङ्ग, नपुं०, सींग। सिङ्गार, पु॰, सिगार, शृंगार-रस । सिङ्किवर, नप्०, ग्रदरक। सिङ्गी, वि०, सींग वाला; नपुं०, सोना । सिङ्गी-नद, नपुं०, सोना । सिङ्गी-वण्ण, वि०, सुनहला। सिङ्घाति, ऋया, नस लेता है, स्वाता है। (सिङ्गि, सिङ्गित्वा, सिङ्गित)। सिङ्घाटक, पु॰ तथा नपुं॰, चौरस्ता। सिङ्घाणिका, स्त्री०, नाक की सींढ। सिज्मति, किया, घटित होता है, सफल होता है, लामान्वित होता है। (सिज्भि, सिद्ध)। सिज्भन, नपुं०, घटना का होना, सफल होना। सिञ्चक, वि०, सींचने वाला। सिञ्चन, नपुं०, सींचना। सिञ्चति, किया, सींचता है। (सिञ्चि, सित, सित्त, सिञ्चित; सिञ्चमान. सिञ्चित्वा, सिञ्चा-पेति।। सित, वि०, इवेत, निभूत, मासक्त; नपं०, स्मित, मुस्कराहट। सित्त, कृदन्त, सिञ्चित । सित्थ, नपुं०, मोम, मात का कण। सित्यावकारकं, कि॰ वि॰, भात के

दाने विश्वेर-विश्वेरकर सित्यक, नपुं०, मोम । सिथिल, वि०, ढीला-ढाला । सिथिलत्त, नवुं०, शिथिलता, ढीला-सिथल-भाव, नपुं०, ढीलापन । सिद्ध, कृदन्त, समाप्त, पूरा हुम्रा, उबला हुम्रा, पका हुम्रा; पु०, सिद्ध-पुरुष, जादूगर। सिद्धत्य, वि०, जिसका अर्थ सिद्ध हो गया; पु॰, शानय-मुनि गौतम बुद्ध का नाम। सिद्धत्यक, नपुं०, सरसों के दाने । सिद्धि, स्त्री०, सफलता। सिनान, नपुं ०, स्नान । सिनिद्ध, वि०, चिकना, नरम। सिनेह, सिनेह या सुमेह पर्वत । सिनेह, (स्नेह भी), पु०, प्रेम, तेल, चिकनाई। सिनेहन, नपुं०, चिकना करना। सिनेह-बिन्दु, नपुं०, तेल की व्द । सिनेहेति, किया, स्नेह करता है, तेल चुपड़ता है। सिन्दी, स्त्री०, खजूर। सिन्दूर, पु०, (माथे पर लगाने का) सिंदूर। सिन्घव, वि०, सिन्घ सम्बन्धी, पु०, सिन्घव नमक, सिन्घव घोड़ा। सिन्धु, पु०, समुद्र, नदी; स्त्री०, हिमा-लय से निकल कर ग्ररब सागर में गिरने वाली बड़ी नदी। सिन्यु-रट्ठ, नपुं०, सिन्यु-राष्ट्र। सिन्ध्-सञ्जन, पू०, जहां नदी समुद्र में

गिरती है। सिपाटिका, स्त्री०, फली, छोटी सन्द्रक । 'सिप्प, नपुं०, शिल्प, हुनर, धन्धा। सिप्पट्ठान, नपुं०, शिल्प की शासा। सिप्प-साला, स्त्री ०, शिल्प-शाला। सिप्पायतन, नपुं०, शिल्प की शाखा या ग्राघार। सिप्पिक, स्त्री०,-शिल्पी। सिष्पिका, स्त्री०, सीपी ! सिप्पी, पु०, शिल्पी, हुनरवाला। सिब्बति, किया, सीता है। (सिडिब, सिडिबत, सिडिबत्वा)। सिब्बन, नपुं०, सीना। सिब्बनी, स्त्री०, सियून, उत्कट अनु-सिब्बनी-मग्ग, पु०, खोपड़ी की हड्डी का जोड़। सिब्बापेति, ऋया, सिलवाता है। सिटबेति, किया, सीता है। (सिब्बेसि, सिब्बित, सिब्बेत्वा, सिब्बेन्त)। सिम्बलि, स्त्री०, सेमल का पेड़ । 'सिर, पु॰ तथा नपुं॰, सिर । सिरा, स्त्री०, शिरा, नस। सिरि, (सिरी भी), स्त्री०, माग्य, .ऐश्वयं, लक्ष्मी। सिरि-गब्भ, पु०, श्रीमान् आदमी का शयनागार। सिरिमन्तु, वि०, श्रीसम्पन्त । सिरि-विलास, पु०, ठाट-बाट। तिरि-सयन, नपुं०, राजकीय शय्या। सिरि-धर, वि०, शानदार। सिरिवातक, मूर्गे 'का मांस साने

वाला पोलवान राजा बना, उसकी पत्नी रानी बनी भीर तपस्वी राज-पुरोहित बना (२६४)। सिरिकालकण्णि जातक, सिरिकाळ-किण पञ्ह का ही एक भीर नाम 1 (535) सिरिकाळकण्णि जातक, बनारस के व्यापारी ने एक पलंग ऐसे ही किसी के लिए विछवाकर रखा था, जो उसकी ग्रपेक्षा ग्रधिक शुद्ध-पवित्र हो (३=२)। सिरिमन्दजातक, स्पष्ट ही सिरिमन्द पञ्ह के लिए ही एक भीर नाम (५००)। सेनक तथा महोसघ पण्डित के बीच लक्ष्मी तथा सरस्वती में से कीन अधिक शेष्ठ है, इस प्रश्न को लेकर जो विवाद हुआ था, वही सिरिमन्द पञ्ह कहलाता है। सिर्वास, पु॰, ताड़पीन (तेल)। सिरीस, पु॰, सिरस का पेड़। सिरोजाल, वि०, सिर ढकने की जाली। सिरोमणि, पु॰, सिर की मणि। सिरोरूह, पु॰ तथा नपुं॰, बाल (सिर के)। सिरोवेठन, नपुं०, पगड़ी। सिला, स्त्री॰, पत्यंर। सिला-गुळ, नपुं०, पत्थर का गोला। सिला-थम्भ, पु०, पत्यर का खम्मा। सिला-पट्ट, नपुं०, पत्थर की पटरी। सिला-पाकार, पू०, पत्थर की चार-दीवारी। सिलामय, वि०, शिला-निमित । सिलाघति, किया, प्रशंसा करता है,

डींग मारता है। (सिलाघि, सिलाघित, सिला-धित्वा)। सिलाघा, स्त्री०, प्रशंसा । सिलिट्ठ, वि०, चिकना। सिलिट्ठता, स्त्री ०, चिकनापन, चिक-नाह्ट। सिलुच्चय, पु॰, चट्टान । सिलुत्त, पु॰, छछ्दर। सिलेस, पु०, पहेली, श्लेषालंकार, लेसदार चीज। सिलेसुम, पु०, कफ, बलगंम । सिलोक, पु०, प्रसिद्धि, श्लोक । सिव, वि०, कल्याण (स्थल), सुरक्षित (स्थान); पु॰, शिव (महादेव), शिव की पूजा करने वाला; नपं०, मानन्द, खुशी। सिवि जातक, राजा शिवि की, अपना गरीर तक दान दे देने की कथा। (3338) सिविका, स्त्री०, पालकी। सिसिर, पु॰, शीत ऋतु, ठंडक; वि॰, ठंडा या ठंडी। सिस्स, पु॰, शिष्य, विद्यार्थी। सीकर, नपुं०, वृष्टि-कण, वर्षा की छोटी-छोटी बुंदें। सीघ, वि०, शीघ्र, जल्दी। सोघ-गामी, वि०, शीघ-गामी। सोघ-तरं, कि॰ वि॰, मिनक शीघता से। सीघसीघं, कि॰ वि॰, बहुत जल्दी। सीघ-सोत, वि॰, शीघ्र स्रोत। सीत, वि॰, ठंडा; नपुं॰, ठंड या ठंडक ।

सीत-भीरक, वि०, शीत से मयमीत। सीतल, वि०, ठंडा; नपुं०, ढंड या ठंडक । सीता, स्त्री०, हल की लकीर। सोति-भाव, पु०, शीतलता, शान्ति। सीतिमूत, कृदन्त, शान्ति माव को प्राप्त, शमध-प्राप्त। सीतोदंक. नपुं०, ठण्डा जल। सीदति, किया, डूब जाता है, नीचे बैठ जाता है, हार मान लेता है। (सीदि, सीन, सीदित्वा, सीदमान) । सीदन, नपुं०, डूबना। सीन, कृदन्त, ड्बा हुग्रा। सीपद, नपुं०, फील पांव। सोमट्ड, वि॰, सीमा के मीतर स्थित । सोमन्तिनी, स्त्री०, ग्रीरत। सीमा, स्त्री०, सीमा, ग्रन्तिम लकीर, मिक्षुग्रों का विनय-कर्म करने के लिए निर्घारित सीमा। सीमा-कत, वि०, सीमित। सीमातिग, वि०, सीमा को लांघ गया। सीमा-समुग्घात, पु॰, पहले की सीमा को तोड़ दिया जाना। सीमा-सम्युति, स्त्री०, नयी सीमा की स्थापना । सीर, पु॰, हल। सीरङ्ग, पु०, हल का मुख्य भाग। सील, नपुं॰, शील, सदाचार। सील-कया, स्त्री०, शील की व्यास्या। सोलक्खन्ध, पू०, शील-स्कन्ध, शील-परिच्छेद। सील-गन्ध, पू०, शील की सुगन्धि।

सीलब्बत, नपुं०, शील-व्रत । सील-मेब, पू०, शील-मङ्ग । सीलमय, वि०, शीलवान् । सीलवन्त, वि०, शील का पालन करने वाला । सील-विपत्ति, स्त्री०, शील की मर्यादा का उल्लंघन, दुराचार। सील-विपन्न, वि०, शील-मञ्ज करने वाला। सील-सम्पत्ति, स्त्री०, शील-पालन, सदाचार। सील-सम्पन्न, वि०, शीलवान्, सदा-चारी। सीलन, नपुं०, संयत रहना, विनय के ग्रधीन रहना। सीलवनाग जातक, सीलव नाग-राज ने पथ-भ्रष्ट ग्रादमी को उपकृत किया। दुष्ट ने सीलव नाग-राज के ही दातों को जड़ तक उखाड़ा (७२)। सीलवीमंस जातक, तपस्वी ने शील का महत्त्व समभा (३३०)। सीलबीमंस जातक, तपस्वी ने रुपये की चोरी कर इस बात को प्रत्यक्ष किया कि विद्या की अपेक्षा भी शील की ग्रधिक प्रतिष्ठा है (३६२)। सीलबीमंस जातक, पुरोहित ने उक्त ढंग से ही विद्या-बल से भी शील-बल का महत्त्व समका (८६)। सीलबीमंस जातक, प्रथम सीलवीमंस जातक के ही समान (२६०)। सीलवीमंस जातक, ब्राह्मण ने अपने पांच सी शिष्यों में से जी सचमूच शीलवान् या उसे ही प्रपनी कन्या प्रदान की (३०४)।

सीलानिसंस जातक, नाई ने प्राणि-हत्या की। शीलवान उपासक ने अपने पुण्य का कुछ हिस्सा नाई को दे, उसकी मी जान बचाई (१६०)। सीलिक, वि॰ स्वमाव वाला, प्रकृति वाला । सीली, (समास में), वि०, शीलवाना। सीवयिका, स्त्री०, कच्चा श्मशान। सीस, नपुं०, शीर्ष, सिर, उच्चतम शिखर, धान की बाली, लेख का शीवंक, सीसा। सीस-कपाल, पु॰, खोपड़ी। सीस-कटाह, पू॰, खोपड़ी। सीसच्छवि, स्त्री॰, सिर की चमड़ी। सीसच्छेदन, नपुं०, सिर का काट डालना । सोसप्पचालन, नपुं०, सिर का हिलाना-'डलाना । सीस-परम्परा, स्त्री०, एक सिर पर का भार दूसरे सिर पर लेना। सीस-बेठन, नपुं॰, पगड़ी। सीसाबाध, पु॰, सिर का ददं। सीह, पु॰, सिंह, शेर। सोह-चम्म, नपुं०, सिंह की चमड़ी। सीह-नाद, पु०, सिह गर्जना । सीह-नाविक, वि०, सिंह की तरह गर्जने वाला। सोह-पञ्जर, पु०, सिंह का पिजरा, ऋरोखा । सीह-पोतक, पु०, शेर का बच्चा। सीह-विक्कीळित, नपुं०, शेर का खेल। सीह-सेय्या, स्त्री॰, सिह-शया, दक्षिण-कुक्षी सोना। सीहस्सर, वि॰, सिंह के समान 'स्वर

वाला। सोह-हनु, वि०, सिंह के समान दाढ़ वाला; पु॰, शाक्य-मुनि गौतम बुद्ध के पितामह। सीह-कोट्ठक जातक, शेर ग्रीर गीदड़ी के संयोग से एक सिंह-बच्चा पैदा हुमा, जिसका स्वर गीदड़ का था-(१55) 1 सीहचम्म जातक, शेर की खाल श्रोढ़ कर चरते फिरते रहने वाले गधे को किसानों ने मार डाला (१८६)। सीह-बाहु, सिहल-द्वीप पर राज्य करने वाले प्रयम भायं-नरेश विजय का पिता । सीहल, सिहल-द्वीप में प्रथम मार्थ उप-निवेश बसाने वाले विजय तथा उसके साथियों के लिए व्यवहृत होने वाला शब्द। सोहल-बीप, जब से तम्बपण्णि द्वीप सीहलों का उपनिवेश बना, तमी से यह सीहल-द्वीप कहलाने लगा। सीहळ, वि०, सिहल-द्वीप का। सीहळ-बीप, सिहल-द्वीप। सीहळ-भासा, सिहल लोगों की माथा। सीहासन, नपुं०, सिहासन। सु, उपसर्ग, मच्छा । सुंसुमार जातक, बंदर ने मगरमच्छ को छकाया (२०८)। संसुमार गिरि, भग्ग जनपद का एक प्रसिद्ध नगर। सुक, पुरं, वोता । सुक बातक, सुक तोते ने पिता के उप-

देश की अवज्ञा की भीर जान गेंवाई

(244) 1

मुकट (मुकत भी), वि०; मुकृत, शुम सुकर, वि०, ग्रासान। सुकुमार, वि०, मृदु, कोमल। सुकुमारता, स्त्री०, मृदुभाव, कोमलता। मुकुसल, वि०, प्रत्यन्त दक्ष । मुक्क, वि०, शुक्ल, सफेद; नपुं०, शुम मुक्क-पक्स, पु०, महीने का शुक्त-पक्ष। सुक्ख, वि०, सूखा। मुक्बित, किया, सूखता है। (सुक्खि, सुक्खमान, सुक्खित्वा)। सुक्खन, नपुं०, सूखना। मुक्खापन, नपुं०, सुखाना । मुक्लापेति, किया, सुखाता है, या सुख-वाता है। (सुक्छ।पेसि, सुक्खापित, सुक्खापेत्वा)। मुख, नपुं०, सुख, प्राराम। सुल-काम, वि०, सुल की इच्छा वाला। मुखत्यिक, मुखत्यी, वि०, मुखार्थी। मुखद, वि०, सुखदायक। मुख-निसिन्न, वि०, सुखपूर्वक वैठा हुमा । मुख-पटिसंवेदी, वि०, सुख का ग्रनुमव करने वाला। मुखप्पत्त. वि०, सुख-प्राप्त । सुख-भागिय, वि०, सुख में हिस्सा बँटाने वाला। मुख-यानक, नपुं०, सुखद-यान, ग्राराम-देह गाड़ी। मुस-विपाक, वि०, सूस-फलदायी। मुख-विहरण, नपुं । सुखपूर्वक रहना। मुक्तविहारी जातक, राज्य-त्याग के धनन्तर सुखपूर्वक विचरने वाले तप्रस्वी

की कथा (१०)। बुख-संवास, पु०, सुखद संगति । सुख-सम्फस्स, वि०, सुखद स्पर्श । सुख-सम्मत, वि०, 'सुख' माना गया। सुखं, ऋ॰ वि॰, ग्रासानी से, ग्राराम से। सुलायति, किया, सुली होता है। सुखावह, वि०, सुखद। सुखित, कुदन्त, सुखी। सुखुम, वि०, सूक्ष्म, बारीक। मुखुमतर, वि०, बहुत सूक्म। सुखुमत्त, नपुं०, सूक्ष्मत्व, बारीकपन। मुखुमता, स्त्री०, सूक्ष्मता, वारीकपन। सुखुमाल, वि०, सुकुमार, कोमल-प्रकृति। सुखुमालता, स्त्री०, सुकुमारता। मुखेति, किया, सुखित करता है। (सुबेसि, सुबित)। मुखेषित, वि०, सुख से पालित-पोषित। सुगत, वि०, सुगति-प्राप्त; पु०, मगवान मुगतालय, पु०, तथागत का निवास-स्थान, सुगत की नकल। सुगति, स्त्री०, प्रच्छी प्रवस्था, स्वगं-लोक। सुगती, वि०, शुम-कर्म करने वाला। सुगन्ध, पु०, सुगन्ध; वि०, सुगन्ध। सुगन्धिक, सुगन्धी, वि०, सुगन्ध सहित। सुगहन, नपुं०, सुगृहीत, भली प्रकार ग्रहण किया गया। सुगुत्त, कृदन्त, सुरक्षित। मुगोपित, कृदन्त, देखो सुगुत । सुग्गहित, वि०, सुगृहीत, मली प्रकार घारण किया गया (पाठ)। सुक्टू, पु०, चुंगी, कर। सुकूघात, पु०, चुंगी-कर से बच

निकलना। सुङ्कट्ठान, नपुं०, चुंगी-घर। सुङ्किक, पु॰, कर उगाहने वाला। मुचरित, नपुं०, सदाचरण । मुचि, वि०, पवित्र। मुचिकम्म, वि०, शुम-कर्म करने वाला। मुचिगन्य, वि ०, शुम-कर्मों की गन्ध वाला। मुचि-जातिक, वि०, सफाई पसन्द करने मुचि-वसन, वि०, शुद्ध वस्त्रों वाला, साफ कपड़ों वाला। मुचित्त, वि०, प्रति विचित्र, सुचित्रित। मुचित्तित, वि०, देखो सुचित्त। मुच्चज जातक, रानी ने पूछा-"यदि यह पर्वत सोने का हो जाये, तो क्या इसमें से मुक्ते कुछ दोगे ?" राजा का उत्तर या—"कण मात्र नहीं।" (३२०) 1 सुच्छन्न, वि०, धच्छी तरह दका हुग्रा, या मच्छी तरह छाया हुमा। सुजन, पु०, मला घादमी, सज्जन । मुजा, स्त्री॰, यज्ञ में काम ग्राने वाली श्रुवा या लकड़ी की कडछी; शुक्र की पत्नी का नाम । मुजातं, कृदन्त, मुजन्मा, (ऊँची) जाति वाला। मुजात जातक, पुत्र ने कर्कश-माधी माता को सुघारा (२६६)। मुजात जातक, राजा ने मिठाई बेचने वाली लड़की की मधुर वाणी सुन, उसे बुलाकर अपनी रानी बना लिया (३०६)। सुजात बातक, सुजात ने प्रपने शोक-मग्न पिता के शोक को दूर

किया (३४२)। सुजाता, ऊष्वेला के पास के सेनानि गाँव के मुखिया की लड़की, जिसने गौतम-बुद्ध को वृक्ष-देवता मान सीर से संतपित किया था। मुज्झति, किया, शुद्ध होता है। (सुजिक्क, सुज्क्षमान, सुद्ध, सुज्भित्वा)। सुञ्ज, वि०, शून्य। सुञ्ज-गाम, पुर, शून्य-ग्राम, खाली गाँव। सुञ्जता, स्त्री०, शून्यता। मुञ्जागार, नपुं०, शून्यागार, एकान्त स्यल। सुट्ठ, ग्रव्यय, ग्रच्छा । सुट्ठूता, स्त्री०, घच्छापन। सुण, पु०, कुत्ता। सुणाति, क्रिया, सुनता है। (सुणि, सुत, सुणन्त, सुणमान, सोतब्ब. सुणितब्ब, सुत्वा, सुणित्वा, सोतुं, सुणितुं)। सुणिसा, (सुण्हा भी), स्त्री॰, पुत्र-सुत, पु॰, पुत्र, लड़का; कृदन्त, सुना हुमा; नपुंठ, धर्म-प्रत्य। मुत-घर, नपुं०, बहु-श्रुत, धर्म-प्रन्य को कण्ठस्य करने वाला। सुतवन्तु, वि०, बहु-श्रुत, विद्वान । सुतत्त. कृदन्त, मली प्रकार गर्म किया गया । चुतनु, वि०, सुन्दर शरीर वाला। सुतनो बातक, पुत्र ने बादमसोर यक्ष

के पास जाना स्वीकार किया

(\$52) 1

सुतप्पय, वि०, ग्रासानी से सन्तुष्ट हो सकने वाला। सुति, स्त्री॰, श्रुति, ग्रनु-श्रुति, वैदिक परम्बरा, भावाज। सुति-होन, वि०, बहरा। सुत्त, कृदन्त, सोया हुआ; नपुं०, धागा, बुद्धोपदेश, (व्याकरण का) सूत्र। सुत्तकन्तन, नपुं०, सूत कातना। सुत्त-कार, पु०, सूत्रों का रचयिता। मुत्त-गुळ, नवुं०, सून का गोला। सुत्त निपात, सुत्त पिटक के ज़ुद्क निकाय के १५ ग्रन्थों में से एक। मुत्त-पिटक, नपुं०, तीनों पिटकों में से एक पिटक। मुत्त-मयं, वि०, सूत्र-निर्मित। मुत्तन्त, पु॰ तथा नपुं॰, बुद्धोपदेश या प्रवचन। मुत्तन्त पिटक, देखो मुत्त पिटक, पांच निकायों से समन्वित सुत्तपिटक। पाँच निकाय हैं-(१) दीघ-निकाय, (२) मज्भिम-निकाय, (३) संयुत्त निकाय, (४) ग्रङ्ग्तर-निकाय, (५) खुद्दक-निकाय। मुत्तन्तिक, बि॰, सारे मुत्तपिटक या उसके एक हिस्से को कण्ठाग्र किये रहने वाला। सुत्ति, स्त्री०, सीप । सुदन्त, वि०, सुशिक्षित । सुदस्स, वि०, भासांनी से देखा गया। सुवस्सन, वि०, सुदर्शन, सुन्दरं-रूप वाला। सुवं, ग्रव्यय, निरयंक शब्द-प्रयोग। सुविट्ठ, वि॰, मली प्रकार देंसा गया।

सुदिन्न, वि०, मली प्रकार दिया गया । मुबुत्तर, वि०, जिससे बड़ी कठिनाई से पार पाया जा सके। सुदुक्कर, वि०, जो वड़ी कठिनाई से किया जा सके। सुदुइस, वि०, जो बड़ी कठिनाई से देखा जा सके। सुदुब्बल, वि०, ग्रत्यन्त दुवंल। सुदुल्लभ, वि०, भ्रत्यन्त दुलंम । मुदेसित, वि०, भली प्रकार उपदिष्ट। सुद्द, पु०, शूद्र। मुद्ध, वि०, शुद्ध, पवित्र, साफ। मुद्धता, स्त्री०, शुद्धता । मुद्धत्त, नपुं०, शुद्धता। सुद्धाजीव, वि०, शुद्ध ग्राजीविका वाला । मुद्धावास, पु०, शुद्ध निवास-स्थल। मुद्धावासिक, वि०, शुद्धावास में रहने वाला। मुढि, स्त्री॰, शुद्धि, पवित्रता । सुद्ध-मन्ग, पु॰, पवित्रता का मार्ग । सुद्धोवन, कपिलवस्तु का शाक्य नरेश तथा शाक्य मुनि गौतम बुद्ध का पिता । सुषन्त, कृदन्त, भच्छी तरह फूंका ग्या या साफ किया गया। सुधम्मता, स्त्री०, ग्रच्छा स्वमाव । सुषा, स्त्री ०, ग्रमृत, चूना । मुघाकम्म, नपुं०, चूना पोतना । मुधाकर, पु०, चन्द्रमा। मुधा भोजन जातक, कंजूस कोसिय की कथा (१३१)। सुषी, पू॰, बुद्धिमान ग्रादमी।

मुघोत, कृदन्त, ग्रच्छी तरह घोया गया। मुनल, पु॰, कुत्ता। सुनली, स्त्री०, कुत्ती। मुनख जातक, मालिक के सो जाने पर कुत्ता चम्पत हुम्रा (२४२)। सुनहात, कृदन्त, प्रच्छी प्रकार नहाया हमा। मुनिसित, कृदन्त, भली प्रकार तेज किया गया। सुन्दर, वि०, श्राकर्षक । मुन्दरतर, वि०, ग्रधिक मुन्दर। सुन्दरिका, कोसल जनपद की नदी। सुनापरन्त, सुप्पारक पत्तन (बंदरगाह) के ग्रासपास का प्रदेश। मुपक्क, वि०, मली प्रकार पका हुया। सुपटिपन्न, वि०, सुप्रतिपन्न, सुमागं पर मारूढ। सुपण्ण, पु०, गरुड । मुपत्त जातक, सुपत्त कौवे की कथा (253) मुपति, किया, सोता है। (मुपि, मुत्त, मुपन्त, मुपित्वा)। मुपरिकम्म-कत, वि०, ग्रच्छी तरह से मांजा हुआ या पालिश किया हुआ। सुपरिहोन, वि०, ग्रत्यन्त दुवला-सुपिन, (सुपिनक, सुपिनन्त भी), नपुं०, स्वप्न। सुपिन-पाठक, पु०, स्वप्नों की व्याख्या करने वाला। सुपुष्फित, वि०, फूलों से दका हुआ, पूरी तरह से खिला हुया। सुपोठित, कृदन्त, यली प्रकार पीटा

गया। सुपोत्यित, देखो सुपोठित। सुप्प. पु० तथा नपुं०, सूप या छाज। मुप्पटिविध, कृदन्त, मली प्रकार समक लिया गया। सुप्पतिद्ठत, कृदन्त, मली प्रकार प्रतिष्ठित । मुप्पतीत, वि०, ग्रच्छी तरह प्रसन्त । सुप्पधंस्यि, वि०, ग्रासानी से दवा दिया गया। सुप्पबुद्ध, माया तथा प्रजापति गौतमी का माई। . सुप्पभात, नपुं ०, सुप्रभात । सुप्पवेदित, वि०, मली प्रकार संतुष्ट । सुप्पसन्न, वि०, भली प्रकार प्रसन्न, श्रद्धावान् । सुप्पार, सुप्पारक, सुप्पारा वन्दरगाह । सुप्पारक जातक, ग्रंधे नाविक के मार्ग-दर्शन की कथा (४६३)। सुष्फिस्सित, वि०, ठीक तरह से लगा हुमा । सुबहु, वि०, ग्रत्यन्त। • सुब्बच, वि०, ग्राज्ञाकारी, विनम्र। सुब्बत, वि०, सदाचार-परायण। सुन्बुट्ठ, स्त्री०, पर्याप्त वर्षा । सुभ, वि०, शुम, शुम (मुहूर्त), ग्रच्था लगने वाला। सुमकिण्ण, पु॰, देवताओं की एक जाति। सुभनिमित्त, नपुं०, शुम शकुन, सुन्दर वस्तु । सुभग, वि०, सीमाग्य-पूर्ण । सुभद् बेर, मगवान बुद्ध परिनिव् त होने को थे। उस समय उन्होंने सुमद्र

परिव्राजक को उपदेश दिया। यह मगवान बुद्ध के जीवन काल में उन्हीं के द्वारा दीक्षित उनका प्रन्तिम शिष्य सुभर, वि०, जिसका धासानी से भरण-पोषण किया जा सके, जिसका किसी पर अधिक भार न हो। सुभिक्ल, वि०, जहां माहार की कमी न हो। सुमङ्गल जातक, सुमङ्गल माली ने प्रत्येक बुद्ध को हिरन समक तीर का निशाना बनाया (४२०)। सुमति, पु॰, बुद्धिमान ग्रादमी। सुमन, वि०, प्रसन्न । सुमनपुष्फ, नपुं०, चमेली का फूल। सुमन-मुकुल, नपुं०, चमेली का कोंपल । सुमन-माला, स्त्री०, चमेली की माला। सुमन सामणेर, मिक्षुणी संघमित्रा का पुत्र सुमन श्रामणेर । महास्यविर महिन्द के साथ यह भी सिंहल-द्वीप गया था। सुमना, स्त्री०, चमेली, प्रसन्न-बदन स्त्री । सुमनोहर, वि०, भ्रत्यन्त भाक्षक । सुमानस, वि०, प्रसन्न-चित्त । सुमापित, कृदन्त, सुनिमित । सुमुत्त, कृदन्त, सुविमुक्त, प्रच्छी तरह से विमुक्त। सुमेघ (सुमेघस मी), वि०, बुद्धिमान। सुमेर, पु॰, सुमेर पर्वत । सुविट्ठ, वि०, घच्छी तरह से प्राहृति दी गई। सुयुत्त, वि०, प्रच्छी तरह से नियुक्त किया गया।

की

सुर, पु॰, देवता।

सुर-नदी, स्त्री०,

नदी।

देवताग्रों

सुर-नाय, पु०, देवताग्रों का राजा। सुर-पथ, पु०, ग्राकाश। सुर-रिपु, पु०, देवताओं का शत्रु, ग्रस्र । सुरत, वि०, मनत, श्रासनत, प्रेमी। सुरत्त, वि०, ग्रच्छी तरह से रँगा हुग्रा, ग्रत्यन्त लाल। सुरसेन, सोलह महाजनपदों में से एक । इसकी गिनती मच्छ जनपद के साथ होती है। सुरभि, वि०, सुगन्धित । सुरभि-रम्ब, पु०, सुगन्छ। सुरा, स्त्री०, नशीली शराव। सुरा-घट, पु०, शराव का घड़ा। सुरा-धुत्त, पु०, शराव के नशे में मस्त । सुरा-पान, नपुं०, शराब का पीना । मुरा-पायिका स्त्री०, शराबी भीरत। मुरा-पीत, वि०, जिसने शराब पी ली हो। सुरा-मद, पु०, शराब का नशा। मुरा-मेरय, नपुं०, सुरा तथा अन्य नशीले पदायं। मुरा-सोण्ड, मुरा सोण्डक, पु०, शराबी। मुरापान जातक, तपस्वियों ने शराब पी ली भीर नंगे होकर नाचने लगे (58)1 मुरिय, पु॰, सूयं। सुरियन्गाह, पु०, सूर्य-ग्रहण। सुरिय-मण्डल, नपुं०, सूर्य के गिर्द का चक्कर।

मुरियत्यङ्गम, पु०, सूर्यास्त । सुरिय-रंसि, स्त्री०, सूर्यं की किरणें। सुरिय-रहिम, स्त्री०, देखी सुरिय-रंसि। सुरियुग्गमन, नपुं०, सूर्योदय । सुरुचि जातक, सुरुचि कुमार तथा सुमेधा के गृहस्य जीवन का वर्णन 1 (3=8) सुरुङ्गा, स्त्री०, जेलखाना । सुरुसुरुकारकं, ऋ० 'वि०, खाते समय सुर-सुर की ग्रावाज करना। सुरूप, सुरूपी, वि०, सुन्दर। सुरूपिनी, स्त्री०, सुन्दरी। सुलद्ध, वि०, सुलाम। सुलम, वि०, जो प्रासानी से मिल सके। सुलसा जातक, सुलसा वेश्या ने कृतच्य सत्तक डाकू को चट्टान से गिराकर मार डाला (४१६)। सुव, पु॰, तोता। सुवच, देखो, सुब्बच । सुवण्ण, नपुं०, स्वणं, सोना; वि०, ग्रच्छे रंग का, सुन्दर। सुवण्णकार, पु०, सोनार। सुवण्ण-गब्भ, पु०, सोना रखने के लिए सुरक्षित कमरा। सुवण्ण-गुहा, स्त्री०, सुनहरी गुफा। सुवण्पता, स्त्री०, सुवणंता । सुवण्ण-पट्ट, नपुं ०, स्वणं-पट्ट। सुवण्ण-पीठक, नपुं०, स्वणं-पीठिका। सुवण्णमय, वि०, सोने का वना। सुवण्ण-भिद्धार, पु०, सोने की आरी। सुवण्ण-वण्ण, वि०, सुनहरे रंग का। सुवण्ण-हंस, पु॰, सुनहरा हंस। सुवण्णकट्टक जातक, केकड़े ने सांप तथा कीवे की हत्या कर किसान के प्राणों

की रक्षा की (३८६)।

सुवण्ण-मूमि तृतीय संगीति के बाद

सोण तथा उत्तर स्थविरों की प्रचार-

भूमि । स्वण्णिमग जातक, शिकारी ने हिरणी के ग्रातम-त्याग की भावना से प्रमा-वित हो हिरण तथा हिरणी दोनों को मुक्त किया (३४६)। सुवण्णहंस जातक, लोमी पत्नी ने स्वणं-हंस के सभी पर एक साथ नोच लेने चाहे (१३६)। सुवत्यापित, वि०, सुनिश्चित । सुबत्य, स्वस्ति, कल्याण हो। सुविम्मत, कृदन्त, भली - प्रकार कवच पहने । स्वाग, पु०, कृता। सुवाण-दोणि, स्त्री०, कुत्ते की नांद या कठोती । स्विजान, वि॰ ग्रासानी से समक में ग्राने वाला। सुविञ्ञापय, वि०, जिसे ग्रासानी से शिक्षित किया जा सके। सुविभत्त, कृदन्त, भली प्रकार विभवत या व्यवस्थित। सुविलित्त, कृदन्त, भली प्रकार लेप किया गया, सुगन्धित ! सुविम्हित, कृदन्त, ग्रत्यन्त चिकत । सुविसद, वि०, साफ-साफ, अत्यन्त १ उभक्र सुबीर, पु०, पुत्र। सुबृद्ठिक, वि० पर्याप्त वर्षा-युक्त । सुवे, कि० वि०, कल (माने वाला)। सुसङ्ख्त, कृदन्त, सुसंस्कृत, भच्छी तरह तैयार किया गया।

सुसंञ्ञात, वि०, पूर्णं रूप से संयत । स्सण्ठान, वि०, भले धाकार-प्रकार मुसमारद्ध, कृदन्त, भ्रच्छी प्रकार से भारम्म किया गया। मुसमाहित, कृदन्त, पूर्ण रूप से संय-मित । सुसमुच्छित्न, कृदन्त, पूर्णरूप से उसाइ दिया गया। सुसान, नपुं०, श्मशान। सुसान-गोपक, पु०, श्मशान पालक। मुसिक्खित, कृदन्त, पूर्णरूप से शिक्षित। सुसिर, नपुं०, खोंडर; वि०, पोलवाला, छिद्र-युक्त । सुसीम जातक, सुसीम राजा के पुरोहित का पुत्र तीन दिन में बनारस से तक्ष-शिला ग्रा-जाकर हस्ति-दिद्या सीख म्राया (१६३)। मुसीम जातक, राजा ने राजमाता को अपने पुरोहित को सौंपा (४११)। मुसील, वि०, सुशील। सुसु, पु०, शिशु; वि०, शिशु-स्वभाव वाला। सुसुका, स्त्री०, एक प्रकार की मछली। सुसुक्क, वि०, ग्रत्यन्त सफेद। सुसु नाग, कालाशोक का पिता तथा मगध-नरेश। सुसुद्ध, वि०, श्रत्यन्त परिशुद्ध । सुस्सति, क्रिया, विखर जाता है, सूख जाता है। (सुस्सि,सुक्ख, सुस्समान, सुस्सित्वा)। सुस्सरता, स्त्री०, मधुर स्वर होना। सुस्सूसति, किया, सुनता है। (मुस्सूसि, सुस्सूसित्वा)।

सुस्सूसा, स्त्री०, सुनने की इच्छा, ग्राज्ञा-कारिता। सुस्सोन्दी जातक, सुस्सोन्दि रानी गरुड़ से प्रेम करने लगी (३६०)। सुहज्ज, नपुं ०, सुहृदता, मंत्री । सुहद, पु॰, मित्र। मुहनु जातक, महासोण तथा सुहनु प्रश्वों के बीच मित्रता स्थापित हो गई (१४=) 1 मुहित, वि०, संतुष्ट। सूक, पु०, जी की सींक। सूकर, पु०, सूग्रर। सूकर-पोतक, पु०, सूग्रर का बच्चा। सूकर-मंस, नपुं०, सूमर का मांस। मूकर जातक, सूग्रर ने शेर को युद्ध के लिए ललकारा (१५३)। सूकरिक, पु॰, कसाई। सूचक, वि०, सूचना देने वाला। सूचन, नपुं ०, सूचना । सूचि, स्त्री०, सुई, बालों में लगाने का काँटा, बंद दरवाजे के पीछे लगाई जाने वाली लकड़ी। सूचिका, स्त्री०, सुई, ग्रगला। सूचिकार, पु०, सुई बनाने वाला। सूचि-घटिका, स्त्री०, ग्रगंला को सँमा-लने वाली साकल। सूचि-घर, नपुं०, सुई रखने की डिबिया। सूचि-मुख, प्०, एक तरह का मच्छर। सूचि-लोम, वि०, सुई जैसे कड़े बालों वाला। सूचि-विज्ञान, नपुं०, मोची का टेक्ब्रा, सूजा। सूचि जातक, सुनार ने एक ऐसी सुई बनाई, जिसके एक के बाद एक सात घर

(स्रोल) बनाये (३८७)। सूजु, वि०, सीघा। सूत, पू॰, रय हाँकने वाला। सूति-घर, नपुं०, प्रसूति-घर। सूद, सूदक, पु०, रसोइया। सून, वि०, सूजा हुया, फूला हुया। सूना, स्त्री०, कसाई का यड़ा। सूना-घर, नपुं०, कसाईखाना। स्नु, पु०, पुत्र। सूप, पु॰, कढ़ी। सूपकार, पु०, रसोइया। सूपतित्य, ग्रच्छे पत्तन या प्रच्छे घाट वाला। सूपघारित, कृदन्त; सुविचारित। सूर्विक, पु०, रसोइया । सूपेय्य, वि०, सूप, (कढ़ी) के लिए योग्य। सूपेय्य-पण्ण, नपुंट, व्यञ्जन बनाने के लिए पत्ते । सूयति, किया, सुना जाता है। (सूयि, सूयमान, सूयित्वा)। सूर, वि०, शूर, वहादुर; पु०, सूरज, सूर्य । सूरत, वि०, मृद, करणा करने वाला। सूरता, स्त्री०, शूरता, बहादुरी। सूरत, नपुं ०, शूरता। सूर-भाव, पु॰, शूरता का माव। सूरिय, पु०, सूरज, सूर्य। सूल, नपुं०, शुल, बर्छी, माला। स्लारोपण, नपुं०, सूली पर चढ़ाना। सेक, पु०, छिड़काव। सेख, (सेक्स भी), पू०, सीखने वाला, उन्नति-पय पर ग्रारूढ़, वह जो भ्रमी म्रहंत नहीं बना।

सेखर, नपुं०, सिर पर घारण की जानी वाली पृष्प-माला। सेखिय, वि०, धार्मिक जीवन में ग्रम्यास-कम से सम्बन्धित। सेग्यु जातक, पिता ने सेग्यु नामक अपनी बेटी के शील की परीक्षा की (२१७) 1 सेचन, नपुं०, छिड़कना। सेट्ठ, वि०, श्रेष्ठ। सेट्ठतर, वि०, श्रेष्ठतर। सेट्ठ-सम्मत, वि०, श्रेष्ठ माना गया। सेट्ठ, (सेट्ठी मी), पु॰, सेठ। सेट्ठट्ठान, नंपुं०, सेठ का पद । सेट्ठ-जाया, स्त्री॰, सेठ की पर्तनी, सेठानी । सेट्ठ-भरिया, स्त्री॰, सेठानी। सेणि, स्त्री ०, श्रेणि, एक-एक पेशा करने वालों की पृथक्-पृथक् परिषद्। सेणिय, पु॰, श्रेणि का मुखिया। सेत, वि॰, स्वेत, सफेद; पु॰, सफेद रंग। सेत-कुट्ठ, नपुं०, सफेद कोढ़। सेतच्छत्त, नपुं॰, श्वेत छत्र, सफेद छात । सेत-पच्छाद, वि०, श्वेत घोढ़ावन। सेतकेतु जातक, जाति-प्रिममानी श्वेत-केतु को एक चाण्डाल ने नींचा दिखाया (३७७)। सेतट्ठिका, स्त्री०, वृक्षों का गेरुई रोग। सेति, ऋिया, सोता है। (सेवि, सेन्त, सेमान)। सेवु, पु॰, पुल। सेव, पु०, पसीना।

सेदक, वि॰, पसीना द्याते हुए। सेदन, नपुं , माप से उबालना । सेदाविखत्त, वि०, पसीने से तर। सेदेति, किया, पसीना या माप उत्पन्न कराता है। (सेदेसि, सेदित, सेदेत्वा) । सेन, (सेनक भी), पु०, चील, बाज। सेना, स्त्री०, फीज। सेना-नायक, सेनापति, सेनानी, पु०, सेना का संचालक। सेनापच्च, नपुं०, सेनापति का कार्या-सेना-ब्यूह, पु०, सेना का चक्र-ब्यूह। सेनासन, नपु॰, शयनासन, सोने के लिए स्थान, निवास-स्थान, सोने की व्यवस्था । सेनासन-गाहापक, पु०, सोने के स्थानों की व्यवस्था करने वाला। सेनासन-चारिका, स्त्री०, एक शयना-सन से दूसरे शयनासन पर मट-कना। सेनासन-पञ्जापक, पु०, शयनासनों का व्यवस्थापक। सेफालिका, स्त्री०, शेफालिका, नील सिध्वार का पौघा, निर्गुडी। सेम्ह, नपुं०, श्लेष्मा, कफ। सेय्य, नपं०, श्रेष्ठतर । सेव्य जातक, मंत्री ने राजा के रनि-वास में गड़बड़ी की। उसे देश-निकाला दे दिया गया (२८२)। सेव्ययापि, भ्रव्यय, जैसे । सेय्यचीदं, श्रव्यय, निम्नोक्त के शतु-सेय्या, स्त्री॰, शय्या ।

सेरिचारी. वि०, स्वेच्छाचारी, यथा-रुचि विचरने वाला। सेरिता, स्त्री॰, स्वरी-माव, स्व-तन्त्रता । सेरिवाणिज जातक, लोमी सेरिवा बनिये ने मुँह की खाई (३)। सेरिविहारि, वि०, जैसे चाहे वैसे रहने वाला। सेल, पू०, शैल, पवंत । सेलमय, वि०, पत्थर का बना। सेलेय्य, नपुं०, शिलाजीत । सेवक, पू०, नौकर, सेवा करने वाला; वि०, सेवा करता हुआ, संगति में रहता हुआ। सेवति, क्रिया, सेवा करता है, संगति करता है, उपभोग करता है, ग्रम्यास करता है। (सेवि, सेवित, सेवन्त, सेवित्वा, सेवितब्ब)। सेवन, नपुं , संगति, सेवा, उपमोग । सेवना, स्त्री॰, संगति, सेवा, उपभोग। सेवा, स्त्री॰, सेवा-टहल । सेवाल, पु०, काई। सेवित, कृदन्त, उपयोग में लाया गया, ध्रम्यस्त, संगति में रहा। सेवी, संगति करने वाला, अम्यास करने वाला। सेस, वि०, शेष, बचा हुमा। सेसेति, किया, शेष छोड़ता है। (सेसेसि, सेसित, सेसेत्वा)। सो, सर्वनाम, वह । सोक, पू०, शोक। सोकागा, पु॰, शोकागिन। सोक-परेत, वि॰, शोकामिभूत।

सोक-विनोबन, नपं०, शोक का दूर सोक-सल्ल, नप्०, शोक-शल्य। सोकी, वि०, शोक करने वाला। सोख्य, नपुं ०, स्वास्थ्य, सुख । सोख्म्म, नपुं०, सूक्ष्मता, बारीकी। सोगन्विक, नगुं०, श्वेत कमल। सोचति, क्रिया, सोचता है, चिन्ता करता है, परचाताप करता है। (सोचि, सोचित, सोचन्त, सोचमान, सोचितब्ब, सोचित्वा, सोचितुं)। सोचना, स्त्री॰, चिन्ता करना, अफसोस करना। सोचेय्य, नपुं०, पवित्रता। सोण, पु०, कुत्ता। सोणित, नपुं०, शोणित, रक्त। सोणी, स्त्री॰, कूत्ती, कटि-प्रदेश। सोण्ड, (सोण्डक मी), वि०, नशेबाज। सोण्डा, स्त्री०, हाथी की सुंड; वि०, नशेवाज भीरत। सोण्डिक, वि०, शराब वेचने वाला। लोण्डिका, (सोण्डी मी) स्त्री०, पर्वतीं में प्राकृतिक जलाशय। सोण्ण, नपुं०, स्वर्ण, सोना। सोण्णमय, वि०, स्वणं-निर्मित । स्रोत, नपुं०, कान; पु०, स्रोत, धारा। सोत-द्वार, नपुं०, कर्णेन्द्रिय। सोत-विल, नपुं०, कान का छेद। सोतबन्त्, वि०, कान वाला। सोत-विञ्ञाण, वि०, श्रोत्र-विज्ञान। सोत-विञ्ञोय्य, वि०, कान द्वारा प्राप्त किया जाने वाला विज्ञान । सोतायतन, नृपुं०, कर्णेन्द्रय। स्रोतब्ब, कृदन्त, सुना जाने योग्य ।

सोतापत्ति, स्त्री०, धर्म-पथ रूपी स्रोत में या पड़ना, वर्म-पथ की पहली मंजिल। सोतापन्न, वि०, घमं-पय रूपी स्रोत में मा पड़ा। सोतिन्द्रिय, नपुं०, श्रोत्रेन्द्रिय, कान । सोतु, पु॰, सुनने वाला। सोत्-काम, वि०, सुनने की इच्छा वाला। सोत्ं, सुनने के लिए। सोत्यि, स्त्री०, स्वस्ति, कल्याण, सुरक्षा, माशीवंचन। सोत्थि-कम्म, नपुं०, ग्राशीर्वचन । स्वस्ति-भाव, सोत्थि-भाव, पु०, कुशलता। सोत्य-साला, स्त्री०, हस्पताल । सोदक, वि०, मीगा हुम्रा, पानी चूता हमा। सोदरिय, वि०, एक ही माता की सन्तान, सहोदर। सोधक, वि०, सफाई करने वाला, शुद्ध करने वाला। सोधन, नगुं०, सफाई, शुद्धि। सोघापेति, किया, सफाई कराता है, शृद्धि कराता है। (सोघापेसि, सोघापित, सोघापेत्वा)। सोधित, कृदन्त, साफ किया गया, शुद्ध किया गया। सोघेति, किया, साफ करता है, शुद्ध करता है। (सोबेंसि, सोघेन्त, सोषयमान, सोघतन्य, सोघत्वा) । सोनक जातक, ग्ररिन्दम तथा सोनक की कथा (४२६)।

सोन-नन्द जातक, नन्द ने मांता-पिता को कच्चा फल लाँ दिया था। यह उसके माई सोन के रोष का कारण हुमा (५३२)। सोपाक, पु०, चाण्डाल। सोपान, पु॰ तथा नपुं॰, सीढ़ी। सोपान-पन्ति, स्त्री०, सीढ़ियों की कतार। सोपान-पाद, पु०, सीढ़ियों का ग्रारम्म। सोपान-फलक, नपुं०, एक सीढ़ी। सोपान-सोस, नपुं०, ऊपर की सीढ़ी। सोप्प, नपुं०, नींद। सोब्भ, नपुं०, गड्ढा, जलाशय। सोभग्ग, नवुं०, सोमाग्य, सीन्दयं । सोभग्ग-पत्त, वि०, सोमाग्यवान, सुन्दर सोभण, (शोभन भी), वि०, शोमन, चमकने वाला, सुन्दर। सोभति, किया, चमकता है, सुन्दर। लगता है। (सोभि, सोभित, सोभन्त, सोभमान, सोभित्वा)। सोभा, स्त्री०, शोमा, सौन्दर्य । सोभित, कृदन्त, शोमित, शोमा-सम्पन्न। सोभेति, त्रिया, चमकता है, सजाता है, (सोमेसि, सोमेन्त, सोमेत्वा)। सोम, पु०, चन्द्रमा। सोमदत्त जातक, ग्रग्निदत्त के पुत्र सोमदत्त की कथा (२११)। सोमदत्त जातक, तपस्वी ग्रपने पोषित सोमदत्त नाम के हाथी के बच्चे की मृत्यु पर दुखी हुमा (४१०)। सोमनस्स, नपुं॰, सोमनस्य, प्रसन्नता, सुख। सोमनस्स जातक, ठग तपस्वी ने राज-

कुमार सोमनस्स को दण्डित कराना चाहा (४०४)। सोम्म, वि०, सोम्य, धनुकुल । सोरच्च, नपुं०, विनम्नता। सोवग्गिक, वि०, स्वगं ले जाने वाला। सोवचस्तता, स्त्री०, ग्राज्ञाकारिता, विनम्रता। सोवण्ण, नप्ं, सोना । सोवण्णमय, वि०, स्वणं-निर्मित । सोवत्यिक, नपुं०, स्वस्तिक । सोवीरक, पू॰, कांजी, सिरका। सोस, पू॰, शोपण, सूखना। सोसन, नपुं॰, सुखाना । सोसानिक, वि०, इमजान में रहने वाला। सोसेति, किया, सुखवाता है।

हज्ज, वि॰ प्रियतम ।
हज्जाति, किया, मारा जाता है, नष्ट
किया जाता है ।
(हज्जि, हञ्जामान) ।
हज्जान, नपुं०, यातना देना, जान से
मार डालना ।
हट, कृदन्त, ले जाया गया ।
हट्ठ, कृदन्त, ह्रष्ट, संतुष्ट, धानन्दित ।
हट्ठ-लोम, वि०, रोमाञ्चित ।
हठ, पु०, हिंसा, जिद ।
हत, कृदन्त, मारा गया, जस्मी हुआ,
नष्ट कर दिया गया ।
हत-भाव, पु०, नष्ट किये जाने का
माव।

(सोसेसि, सोसित, सोसेन्त. सोसेत्वा)। सोस्सति, किया, सुनेगा। सोहज्ज, न्यं०, मित्रता। स्नेह, देखो सिनेह। स्वाकार, वि०, प्रनुकुल प्रकृति वाला, मली प्रकृति वाला। स्वाक्खात, वि०, भंली प्रकार व्याख्या किया गया, या उपदेश किया गया। स्दागत, वि०, स्वागत, कण्ठस्य। स्वागतं, ऋ० वि०, स्वागत । स्वातन, वि॰, (ग्राने वाले) कल से सम्बन्धित । स्वातनाय, चतुर्थी विभन्ति, कल के लिए। स्वे, कि॰ वि॰, (ग्राने वाला) कल।

ह

हतन्तराय, वि०, वाघा-रहित ।
हतावकासो, वि०, गुमागुम की सीमा
से परे ।
हत्य, पु०, हाय, हत्या, हाथ-मर का
माप ।
हत्यक, पु०, हत्या; वि०, हाथ वाला ।
हत्य-कम्म, नपुं०, शारीरिक श्रम ।
हत्य-गत, वि०, हस्तगत, जिस पर प्रपना
प्रविकार हो ।
हत्य-गहण, नपुं०, हाथ से पकड़ना ।
हत्य-गहण, नपुं०, हाथ से घरना ।
हत्य-छिड़न्न, वि०, जिसके हाथ कटे हों ।
हत्य-छेड, पु०, हाथों का कटना ।
हत्य-छेडन, नपुं०, हाथों का काटा
जाना ।

हत्य-तल, नपुं०, हथेली। हत्य-पसारण, नपुं०, हाथ फैलाना। हत्य-पास, पूठ, हाथ की लम्बाई। हत्य-वट्टक, पु॰, हाय की गाड़ी। हत्य-विकार, पु०, हाथ का सञ्चालन। हत्य-सार, पु०, मूल्यवान वस्तु, चल-सम्पत्ति । हत्यापलेखन, नपुं०, भोजनान्तर हाथ चाटना । हत्याभरण, नपुं०, बाजूबंद। हत्यत्यर, पु॰, हाथी का चोगा। हत्याचरिय, पु०, हाथी को सिखाने वाला। हत्यारोह, पु०, पीलवान, महावत । हत्य, (हत्थी का ह्रस्वीकरण), हायी। हित्य-फन्त-बीणा, स्त्री०, हाथियों को वकाने की वीणा। हत्य-कलभ, हाथी का वच्चा। हत्य-कुम्भ, पु०, हाथी का मस्तक। हत्य-कुल, नपुं०, हाथियों की जाति। हित्यक्लन्ध, पु०, हाथी की पीठ। हत्य-गोपक, पु०, महावत । हत्य-दन्त, पु॰ तथा नपुं॰, होथी का दांत। हत्य-दमक, पु॰, हाथी को संयत रखने वाला। हत्य-दम्म, पु०, सिखाया हुमा हाथी। हत्य-पद, नपुं०, हाथी का पांव या कदम। हत्य-पाकार, पु०, हाथियों की शक्ल उत्कीणं की हुई दीवार। हत्यप्पभिन्न, वि०, पगलाया हुमा

हाथी ! हित्य-बन्ध, पु०, महावत, हाथी-रख-हत्य-मेण्ड, पु०, महावत, हायी-रख-हित्य-मत्त, वि०, हाथी जितना बड़ा। हत्य-मारक, पु०, हाथियों का शिकारी। हित्य-यान, नपुं०, हाथी की सवारी। हत्य-युद्ध, नपुं०, हाथियों का युद्ध। हत्य-रूपक, नपुं०, हाथी का चित्र। हप्य-लेण्ड, पु०, हाथी की विष्ठा । हिंप्य-लिङ्ग-सकुण, पु०, हाथी की सूण्ड सद्दश चोंच वाला गीध। हत्थि-साला, स्त्री०, हस्ति-शाला। हत्य-सिप्प, नपुं०, हस्ति-शिल्प। हत्य-सोण्डा, स्त्री०, हायी की सूण्ड। हत्यिनी, स्त्री०, हथिनी। हत्थी, पु०, हायी। हदय, नपुं०, दिल, हृदय। हदयङ्गम, वि०, अनुकूल, आकर्षक । हृदय-मंस, नपुं०, हृदय का मांस। हदय-वत्थु, नपुं०, हृदय का सार। हदय-संताप, पु॰, हृदय का संताप या पश्वात्ताप। हदयस्सित, वि०, हृदय-सम्बन्धी। हदय-निस्सित, वि०, हृदय-ग्राश्रित। हनति, (हन्ति भी) किया, मारता है, चोट पहुँचाता है, जस्मी करता है। (हनि, हत, हनन्त, हनमान, हन्त्वा, हनित्वा, हन्तुं, हनितुं, हन्तब्ब, हनितब्ब)। हनन, नपुं, मारना, चोट पहुँचाना ।

हुनु, हुनुका, स्त्री॰, दाढ़। हन्तु, पु॰, जान से मारने वाला, चोट पहुँचाने वाला। हन्त्वा, पूर्वं किया, मार डाल कर। हन्द, अध्यय, अच्छा, अब मेरी बात पर घ्यान दो, इस अर्थ में अव्यय । हम्भी, अपने समान लोगों को सम्बोधन करने का ढंग। हम्मिय, नपुं०, भनेक तल्लों का मकान। हय, पु॰, घोड़ा। हय-पोतक, पु०, बछेड़ा। हय-वाही, वि०, घोड़ों द्वारा खींची गई (गाड़ी)। हयानीक, नपुं०, घुड़सवार सेना। हर, वि०, ले जाने वाला, लाने वाला। हरण, नपुं०, ले जाना। हरणक, वि०, ले जाता हुआ, ले जाया जा सकने वाला (पदार्थ)। हरति, किया, ले जाता है, चुरा लेता है, लूट लेता है। (हरि, हट, हरन्त, हरमान, हरित्वा, हरितुं)। हरायति, क्रिया, लिजत होता है, चिन्तित होता है। (हरायि, हरायित्वा)। हरापेति, किया, लिवा जाता है। (हरापेसि, हरापित, हरापेत्वा) । हरिण, पु०, मृग। हरित, वि०, हरा, ताजा; नपुं०, साग-सन्जी। हरितत्त, नपुं०, हरितपन, हरियाली। हरितब्ब, कृदन्त, ले जाये जाने योग्य। हरिताल, नपुं०, पीली हड़ताल । हरितु, पु॰, ले जाने वाला।

हरित्तच, वि०, सुनहरे रंग का। हरिस्सवण्ण, वि०, सुनहरी ऋलक वाला। हरीतक, नपुं०, हरड़। हरीतकी, स्त्री॰, हरड़। हरे, सम्बोधन शब्द । हल, नपुं॰, (खेत जोतने का) हल। हलं, ग्रव्यय, पर्याप्त । हलाहल, नपुं॰, हलाहल, विष । हिलद्दा, स्त्री०, हल्दी। हिलद्दी, स्त्री०, हल्दी। हवे, भ्रव्यय, निश्चय से। हन्य, नपुं ०, ग्राहुति । हसति, किया, मुस्कराता है, हँसता है। (हिंस, हिंसत, हसन्त, हसमान, हितवंब, हिसत्वां)। हसन, नपुं ०, हसी। हसित, छद्रन्त तथा नपुं , मुस्काया, हँसी। हसितुप्पाद, पु॰, मुस्कराहट। हस्स, नपुं०, हंसी, मजाक। हंस, पु॰, हंस। हंस-पोतक, हंस का बच्चा। हंसति, क्रिया, रोमाञ्चित होता है। (हंसि, हंसित्वा)। हंसन, नपुं०, रोमाञ्चित होना । हंसी, स्त्री०, हंसिनी। हंसेति, क्रिया, हँसाता है। हा, प्रव्यय, ग्रफसोस । हाटक, नपुं०, सोना, स्वर्ण। हातन्त्र, कृदन्त, त्याज्य। हातुं, त्याग देने के लिए। हानभागिय, वि०, छोड़ने के धनुकूल। हानि, स्त्री०, नुकसान ।

हापक, वि०, हानि का कारण, हानि पहुँचाने वाला। हापन, नपुं ०, हानि । हापेति, क्रिया, उपेक्षा करता है, विलम्ब करता है, कम कर देता है। (हापेसि, हापित, हापेन्त, हापेत्वा)। हायति, क्रिया, घटाता है, व्ययं नष्ट करता है। (हायि, हीन, हायन्त, हायमान, हायित्वा)। 'हायन, नपुं०, कमी, ह्रास, वर्ष । हायी, वि०, छोड़ देने वाला। हार, पु॰, फूलों या मोतियों मादि की की माला। हारक, वि०, हटाता हुमा, ले जाता हुमा। हारिका, स्त्री०, हटाती हुई, ले जाती हुई। हारिय, वि०, ले जाया जा सकने वाला। हास, पु॰, हँसी। हासकर, वि० भ्रानन्द-प्रद। हासेति, किया, प्रसन्न करता है, हँसाता है। (हासेसि, हासित, हासेन्त, हासयभान, हासेत्वा)। हि, प्रज्यय, निश्चय से, वास्तव में। हिक्का, स्त्री०, हिचकी। हिङ्ग , नपुं ०, हींग। हिन्द्र सक, नपुं ०, सिन्दूर। हित, नपुं॰, मलाई; वि॰, उपयोगी; पु॰, मित्र। हितकर, वि०, हित करने वाला। हितावह, वि०, हितकर।

हितेसी, पु०, हितंषी, हित चाहने वाला। हिताल, पु॰, खजूर। हिम, नपुं०, बफं। हिमवन्तु, वि०, हिमालय पर्वत । हियो, कि०, वि०, कल (गुजरा हुआ)। हिरञ्जा, नपुं०, सोना । हिरि, स्त्री०, लज्जा। हरि-कोपीन, नपुं॰, लँगोटी। हिरिमन्तु, वि०, शर्मीला। हिरीयति, क्रिया, लज्जा करता है। हिरीयना, स्त्री०, लज्जा। हिरोत्तप्प, नपुं०, लज्जा-मय (पाप से)। हिंसति, किया, हिंसा करता है, चोट पहुँचाता है, चिढ़ाता है। (हिंसि, हिंसित, हिंसन्त, हिंसमान, हिसित्वा)। हिसन, नपुं०, हिसा करना, चोट पहुँचाना, चिढ़ाना। हिंसना, स्त्री॰, हिंसा करना, चोट पहुँचाना, चिढ़ाना । हिंसा, स्त्री०, कष्ट पहुँचाना । हिंसापेति, किया, कष्ट पहुँचाता है। (हिंसापेसि, हिंसापित, हिसा-पेत्वा)। हीन, वि०, नीच। हीन-जच्च, वि०, हीन-जन्मा। होन-विरिय, वि०, हिम्मत हारे हुए। होनाधि मुत्तिक, वि०, मन्दोत्साह । हीयति, किया, हानि को प्राप्त होता है, त्याग दिया जाता है। (होयि, हीयमान) ।

हीयो, ग्रन्यय (गुजरा हुग्रा.) कल। होर, होरक, नपुं०, खमाची। होलन, नपुं०, घृणा करना। होलना, स्त्री०, घृणा करना। होळेति, क्रिया, घृणा करता है। (होळेसि, होळित, होळेत्वा, होळिय-मान)।

मान)। हुत, नपुं०, चाहुति । हुतासन, नपुं०, ग्रग्नि। हुत्त, नपुं०, होम किया गया। हुत्वा, पूर्वं शियां, होकर। हुरं, कि॰ वि॰, दूसरे लोक में। हुद्भार, पु०, 'हुँ' शब्द । है, अव्यय, सम्बोधन के लिए शब्द । हंट्टतो, (हेट्ठतो मी), कि॰ वि॰, नीचे से। हेट्ठा, कि०, वि०, नीचे। हेट्ठा-भाग, पु॰ नीचे का हिस्सा। हेट्ठा-मञ्चे, कि॰ वि॰, चारपाई के नीचे। हैट्ठिम, वि०, सबसे नीचे । हेट्ठक, वि०, कष्टदायक । हेठना, स्त्री०, कष्ट पहुँचाना है। हेठेति, किया, कष्ट पहुंचाता है (हेठेसि, हेठित, हेठेन्त, हेठयमान, हेठेत्वा)। हेति, स्त्रींं, हिथयार।

हेतु, पु०, कारण। हेतुक, वि०, कारण से सम्बन्धित। हेतुप्पभव, वि०, कारण से उत्पन्न, हेतु-हेतुवाद, पु॰, हेतु-फल का सिद्धान्त । हेम, नपुं०, सोना। हेम-जाल, नपुं०, स्वर्ण-जाल। हेमन्त, पु०, हेमन्त शीत ऋत्, ऋतु । हेमन्तिक, पु०, हेमन्त ऋतु सम्बन्धी । हेम-वण्ण, वि०, सुनहरे रंग वाला। हेमवतक, वि०, हिमालय में रहने वाला। हेरञ्जिक, पु०, सुनार। हेला, स्त्री०, हाव-भाव । . हेसा, स्त्री ०, घोड़े का हिनहिनाना । हेसा-रव, पु०, घोड़े के हिनहिनाने की ग्रावाज। होति, किया, होता है। (अहोसि, होन्त, होतब्ब, होतुं)। होम, नपुं०, म्राहृति । होम-दिब्ब, स्त्री०, यज करने की कड़छी । होरा, स्त्री॰, धंटा। होरा-पाठक, पु०, ज्योतिषी । होरा-यन्त, नपुं०, बड़ी घड़ी। होरा-लोचन, नपुं०, घड़ी।

The state of the s The second secon

